Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीहरिः ॥

रसराज महोदधि

पाँचों भाग

संग्रह कर्ता

पं० नारायणप्रसाद सीताराम मिश्र

प्रकाशक

बम्बई भूषण प्रेस, मथुरा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीहरिः ॥

रस राज महोदधि

पहला भाग

जिसको –

लखीमपुर निवासी पं० नारायणप्रसाद सीताराम मिश्र ने

अनेक ग्रन्थों के अधार से बनाया ।

उसको—

किशनलाल द्वारकाप्रसाद ने अपने

बम्बई भूषण यन्त्रालय में छापकर

प्रकाशित किया ।

———

समुद्र[illegible]

हिंगु श[illegible]वाधिकार सुरक्षित है ।

[illegible]

[illegible]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीः ॥

रसराज महोदधि के—

प्र म भाग की

क्रमणिका ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
स्वास्थ्य विचार	१	मोदकादिक व्यवहार विधि	१६
रोग परीक्षा के साधन	२	औषध मात्रा	१७
डी परीक्षा	२	वेग रोकने से हानि	१७
डी परीक्षा का समय	२	अनुपान विधि	१६
वातादि दोषों में नाडी परीक्षा	३	रोगी की सेवा संक्षेप नियम	२१
जिह्वा परीक्षा	४	भावना विधि	२३
दाँत परीक्षा	४	बारह पुट	२४
मूत्र परीक्षा	४	भांड पुट	२४
नेत्र परीक्षा	५	कुक्कुट पुट	२४
स्वप्न परीक्षा	५	कपोत पुट	२४
मल परीक्षा	६	गज पुट	२४
वर्ण परीक्षा	७	कुम्भ पुट	२५
स्पर्श परीक्षा	७	बालुका पुट	२५
[illegible]	७	भूधर पुट	२५
[illegible]पंट	१२	विद्याधर यन्त्र नं० १	२५
अफीम द्रव्य ग्रहण	१३	भूधर यन्त्र नं० २	२६
समुद्रफेन शो[illegible]	१४	स्वेदनी यन्त्र नं० ३	२६
हिंगुल शो[illegible] विधि	१५	डमरू यन्त्र नं ४	२६
[illegible]र विधि	१६	दोला यन्त्र नं० ५	२६
[illegible]	१६	बालुका यन्त्र नं० ६	२७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
गर्भ यन्त्र नं० ७	२७
हंस पाक यन्त्र नं०८	२८
कच्छप यन्त्र नं० ९	२८
दीपक यन्त्र नं० १०	२९
जारण यन्त्र नं० ११	२९
धूप यन्त्र नं० १२	३०
गौरी यन्त्र नं० १३	३१
अथ धातु नाम	३२
अथ संयोजक धातु	,,
अथ उप धातु	,,
अथ धातुशोधन-मारण प्रकार	,,
सुवर्ण परीक्षा	३३
सुवर्ण का विशेष शोधन	३४
सर्व धातु मारण विधि	३४
सुवर्ण मारण प्रकार	३५
सुवर्ण भस्म की दूसरी विधि	३६
बूंटी से सुवर्ण भस्म विधि	३७
सुवर्ण भस्म गुण	,,
चाँदी शोधन प्रकार	३८
चाँदी की परीक्षा	,,
रौप्य भस्म विधि	,,
बूंटी से रौप्य फस्म विधि	३९
रूप रस गुण	,,
तांबे का विशेष शोधन	४०
तांबे की परीक्षा	,,
ताम्र मारण विधि	,,
ताम्र भस्म गुण	४२
शीशा शोधन विधि	,,
शीशा मारण विधि	४२
नागेश्वर गुण	४३

विषय	पृष्ठ
वंग शो[illegible] विधि	४३
वंग प[illegible]क्षा	,,
वंग [illegible]म विधि	४४
वंग [illegible]स्म गुण	४५
जस[illegible]धन	४६
जस[illegible]ण विधि	
बू[illegible]स्त मारण विधि	४
ज[illegible]म गुण	,,
ल[illegible]धन विधि	४८
लोह भस्म विधि	,,
लोह सार गुण	,,
अथ उपधातु शोधन-मारणविधि,	
सोना मक्खी शोधन विधि	५
सोना मक्खो मारण विधि	
सोना मक्खी रस का गुण	,,
रूपा मक्खी शोधन विधि	,,
रूपा मक्खो मारण	५
रूपा मक्खी भस्म गुण	
नीलाथोथा शोधन	
हरताल शोधन विधि	५
हरताल-मारण विधि	
हरताल भस्म गुण	
सुरमा शोधन विधि	
अभ्रक शोधन विधि	
अभ्रक मारण विधि	,,
अभ्रक भस्म [illegible]	५३
मैनसि[illegible]धन [illegible]	५४
[illegible]नशील भस्म [illegible]ध त[illegible]	५४
खपरिया शोधन विधि [illegible]गु[illegible]	,,
खपरिया [illegible]	५५
	,,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
पारा शोधन विधि	५५
हिंगुल से पारा विधि	,,
पारा मारण विधि	५६
पारा रस गुण	५७
अथ विष शोधन विधि	,,
अथ उप विष शोधन वि	,,
संख्या मारण विधि	५८
संखिया भस्म गुण	,,
कुचिला शोधन	,,
गेरू शोधन	,,
गंधक शोधन	,,
हिंगुल शोधन	५९
हिंगुल मारण	,,
री यन्त्र नं० ८	,,
लाजीत शोधन	,,
सिंदूर शोधन	६०
शंख कौडी भस्म विधि	,,
शंख कौडी भस्म गुण	,,
फिटकरी शोधन	,,
धतूरा शोधन	,,
मालघोटा शोधन	,,
लावा शोधन विधि	६२
नाग शोधन	,,
हार) शोधन	,,
अफी न	,,
समुद्रफेन शोधन	६२
हिंगु शोधन	,,
गुञ्जा शोधन	,,
कनेर शोधन	६३
गुग	,,

विषय	पृष्ठ
अथस्थावरजंगम विष चिकित्सा	६४
स्थावर विष चिकित्सा	,,
संखिया विष निवारण	६६
जमालगोटा विष निवारण	,,
भांग विष निवारण	,,
अफीम विष निवारण	६७
गुञ्ज विष निवारण	,,
थूहर विष निवारण	,,
कनेर विष निवारण	६८
कोंच विष निवारण	,,
भिलावा विष निवारण	
वत्सनाग विष निवारण	,,
मद्य विष निवारण	,,
व्याघ्र का देश विष निवारण	,,
धतूरा विष निवारण	६९
सर्प दशन परीक्षा	,,
विषकी गतिव क्रियाकावर्णन	७३
सर्प विष बंधन व चिकित्सा	७५
अथ सर्प निवारण औषधि	७९
बीछू विष निवारण	८३
कुकुकुर विष निवारण	८५
मूषक विष निवारण	८८
खनखजूर विष निवारण	८९
मधुमक्खी विष निवारण	,,
मक्खी विष निवारण	,,
भंवर मक्खी विष निवारण	,,
मकरी विष निवारण	,,
वर्र विष निवारण	९१
मनुष्य विष निवारण	९२

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
बिडाल विष निवारण	६२
मर्कट विष निवारण	,,
मंडूक विष निवारण	,,
कान सलाई विष निवारण	,,
सर्व कीट विष निवारण	६३
सर्व विष निवारण	,,
अथ रोगाकर्षण नाम चतुर्थ तरङ्ग आरम्भ	
अजीर्ण उत्पत्ति	६५
अजीर्ण रोगोपद्रव	६६
अग्नि दीपन वटी	६७
कर्णादि चूर्ण	,
हिंग्वाष्टिक चूर्ण	६८
अजीर्ण नाशक उपाय	,,
शुण्ठादि चूर्ण	,,
तक्र हरीतकी	,,
जीरिकादि चूर्ण	६६
अथ ज्वर रोगोत्पत्तिः	१००
ज्वर स्वरूप	१०१
ज्वरोपद्रव	,,
ज्वर लक्षण	,,
पित्तज्वर लक्षण	१०२
कफ ज्वर लक्षण	,,
बात पित्त ज्वर लक्षण	,,
बात कफ ज्वर लक्षण	,,
कफ पित्त ज्वर लक्षण	१०३
सन्निपात ज्वर लक्षण	,,
आगन्तुक ज्वर लक्षण	,,
एकाहिक आदि अनेक ज्वर	,,
ज्वर का पूर्व रूप	१०४

विषय	पृष्ठ
ज्वर मुक्त लक्षण	१०४
निन्दित वैद्य लक्षण	१०५
सुयोग्य वैद्य लक्षण	,,
पथ्यापथ्य प्रशंसा	,,
साध्य लक्षण	,,
असाध्य लक्षण	१०६
सर्व गुण चिकित्सा	
बाधन विधि निवारण	१०६
शिरः शिर निवारण	११०
कफ ज्वर निवारण	,,
तिजारी ज्वर निवारण	,,
चौथैया ज्वर निवारण	१११
क्षुधा वृद्धि कारक यत्न	,,
विषम ज्वर निवारण	११२
शीत ज्वर निवारण	
एकतरा ज्वर निवारण	११३
बात पित्त ज्वर निवारण	,,
बात कफ ज्वर निवारण	,,
पित्त कफ ज्वर निवारण	११४
सन्निपात ज्वर निवारण	
जीर्ण ज्वर निवारण	,,
हृदय दाह निवारण	११७
हृदय शूल निवारण	११८
तृषा निवारण	,,
अन्नमलपित्त निवारण	५३
श्लेष्मा रोग निवारण	५ ,,
कफ निवारण	११८
कास निवारण	११६
श्वास निवारण	१२०
अतीसार निवारण	,,
संग्रहणी निवारण	१२३

धूप गौरी अथ अश्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
कुक्षिनाभिकटिशूलनिवारण	१२४	हस्त मैथुन गुद मैथुन	१४०
आमवात निवारण	,,	मूत्र कृच्छ्र निवारण	१४१
नेत्र रोग निवारण	१२५	उपदन्श रोग निवारण	१४५
शूल रोग निवारण	१२७	अर्श निवारण	१४६
गठिया रोग निवारण	१२८	क्षयी रोग निवारण	१४७ ,,
भगशूल व कुचपय रोग	,,	प्रमेह व पथरी निवारण	,,
प्रदर रोग निवारण	१२९	रक्त पित्त निवारण	१४८ ,,
प्रसूत रोग निवारण	,,	अण्ड वृद्धि निवारण	१४९ १८७
रजोधर्म प्रकाशन यत्न	लदी ३०	कोष्ट शोधन	,, ,,
सुख प्रसव यत्न	,,	बुद्धि दोष निवारण	१५१
बाल रोग निवारण	,,	बद पर लेप	,,
तपेदिक निवारण	१३३	कुष्ट रोग निवारण	१५२
कृमिरोग नाशन	,,	स्तम्भन उपाय	,,
णादि रोग निवारण	,,	शरीर निर्बलता निवारण	,,
ग्नि दुग्ध होने पर	१३५	सौभाग्य शुण्ठी पाक	१५३
नासिका रोग निवारण	१३६	मदनानन्द अवलेह	१५४
छाला निवारण	,,	मदन प्रकाश चूर्ण	१५५
बिवाई निवारण	,,	पुष्टि चूर्ण	,,
झांई निवारण	,,	शोथ निवारण	,,
नासूर निवारण	१३७	तिल्ली निवारण	१५६
जहर बाद	,,	उष्णता निवारण	,,
वाज निवारण	,,	मच्छर निवारण	१५७
दु निवारण	,,	केश कृष्णी करण	,,
ला	१३८	सर्व रोगौषधम	,,
कंठ निवारण	,,	हरड	१५९
स्वरभेद निवारण	,,	बहेडा	१६१
शिरो रोग निवारण	,,	आंवला	,,
अर्ध कपालो निवारण	३९	सोंठ	,,
कर्ण रोग निवारण	,,	मिर्च	१६२
दन्त रोग निवारण	१४०	पीपल	,,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
अदरख	१६२	मास पर्णी	१६९
पीपलामूल	,,	अरड रक्त अरड	,,
चव्य	१६३	साररिवा कृष्ण सारिवा	,,
चित्रक	,,	जवासा मुण्डी	,,
जीरा	,,	महा[illegible]ण्डी	१७०
सोंफ	,,	ओं[illegible]स्तल ओंगा	,,
हींग	,,	क[illegible]म गु	,,
धनियाँ	१६४	द[illegible]धनजयपाल	,,
नमक	,,	निशस्म	१७१
हलदी	१६५	कालीनिशोथ	,,
मुनक्का	,,	इन्द्रबारुणी किर काली	,,
अजवायन	,,	कुटकी अङ्कोल	,,
किसमिस	,,	सेहुण्ड निम्ब	१७[illegible]
भूमि आँवला	१६६	चिरायता कुण्डा	
बाँसा	,,	इन्द्रयव-मैनफल	,,
गिलोय	,,	ताडिका व कंकुष्ठ	१७३
बेल	,,	चाख-महानिम्ब	,,
अरणी	,,	शीतल-कचनार	,,
खंभारी	१६७	सम्भालू	१७४
पाडर	,,	मेढासिंगी-गदा मुरैना	,,
सोना	,,	रक्तपुनर्नवा-राई	,,
गौखरू	,,	असगन्ध	
सरिवन	,,	गन्ध प्रसारण-शताबरी	
पीठा	,,	बड़ी शतावर-खरैटी	,,
बड़ी छोटी खटाई	,,	सहदेवी	,,
काकोली क्षीर काकोली	१६८	वलिका	,,
मेदा महा मेदा	,,	गंगेश	१७६
जीवक ऋषभक	,,	तेजबल-मालकांगनी	,,
जीवती	,,	देवदारु-सरल	,,
मुलहटी	,,	पुष्कर मूल	,,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
कूट	१७७	कंदासी, हरमता	१८५
काकरासिंगी रोहेठा	,,	तालमखाना कपास	,,
जायफल	,,	करोंदा	,,
भारंगी पाषण भेद	,,	शरफाका	१८६
नागरमोथा-धावा	१७८	मोरशिखा, लक्ष्मण	,,
माची-विदारी कन्द	,,	हडसिंहारी, दोनों आक	,,
बाराही कन्द पाठ	,,	कनेर	,,
मुरहटी, मजीठ	१७९	घतूरा, कलिहारी	१८७
आंवाहलदी, दारुहलदी	,,	घीग्वार, भांग, कांचनी	,,
पंवार,	,,	दूब, मूज, नाड़ी	१८८
वाकुची	,,	बाँस, खुरा. अजवायन	,,
भांगरा	१८१	पोस्त, अफीम	,,
[illegible]त्त पापड़ा, अतीस	,,	चीता, सांपा, गजपीपल	१८९
[illegible]ाकमाची, काकजंघा	,,	मेथी, बनमेंथी, अजमोद	,,
बड़ी सोंफ,	,,	दोनों जोरी, कलोंजी	,,
विधारा	१८१	अजवायन, बिडंग	,,
देवदाली, हंसपादी	,,	धनियां, वंशलोचन	१९१
सोमबल्ली, मूसली	,,	जवाखार, सुहागा	,,
कोंचबीज, पोतजीआ	,,	कपूर, कस्तूरी	,,
ककोरी, बांझ ककोड़ी	१८२	चन्दन, रक्त चन्दन	१९२
बिष्णु क्रान्ता	,,	मलय चन्दन, काला अगर	,,
[illegible]वाहूली, दूधी	,,	केशर	,,
ऊ[illegible]होली, भिलावा	,,	प्लुवा, जायफल	१९३
चिरपोटा, गोमा	१८३	लोग, कंकोल	,,
ब्राह्मी, ब्राह्म मण्डकी	,,	बड़ी इलायची, छोटी इलायची	,,
मछेछी, जलपीपरी	,,	तज दालचीनी, तमाखू	१९४
गोभी, नागदोन, घुंघुची	१८४	नाग केशर, छड़	,,
बरवेली, वृन्दाक	,,	नेत्रवाला	,,
रोहेरु, मोचरस	,,	खसखस	,,
ब[illegible]	१८५	रेणुका, प्रियंगु	,,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
कुंदुर, गुग्गुल, राल	१६४	दोनों नख, षतंग	१६७
मुरा, कचूर, कचूरभेद	१६६	लाठो, पुरइन	,,
पद्माक, पुण्डरी	,,	सफेद कमल, नील कमल	,,
तगर, गोरोचन	,,	गुण[illegible]ण बिचार	१६८

Agamnigam Digital Preservation Foundation

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

* श्रीवृन्दावन विहारीजी नमः *

बृहद् रसराज महोदधि भाषा

प्रथम भाग।

दोहा।

जगनायक त्रिभुवनपती, रहै सदा शिव रूप।
अखिल लोक के ईश प्रभु, शोभा सदन अनूप॥
ये चरकादिक मुनि रचित, पढ़ पढ़ ग्रन्थ समूल।
रचूं ग्रन्थ सुख बोध यह, तिनही के अनुकूल॥

स्वास्थ्य विचार।

यह शरीर रोगों का अधिष्ठान है। किसी न किसी प्रकार के रोग से आक्रान्त हुआ ही करता है। इसके स्वास्थ्य की रक्षा करना बुद्धिमान् मनुष्य का परम कर्तव्य है। सांसारिक सुखभोग और पारमार्थिक धर्माचरण के लिये शरीर का स्वस्थ रहना ही एक मात्र साधन है। यदि शरीर रोग से पीड़ित हो तो चन्द्रमुखी, प्रियतमा प्रिय पुत्रादि, विपुल वैभव, यहाँ तक कि भूमंडल का आधिपत्य भी तुच्छ दिखाई देता है। इसलिये देह की रक्षा करनाही अभीष्ट कार्यों के साधन का उपाय है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुद्ध जल वायु सेवन, पथ्य भोजन, मित आहार व्यवहारादि स्वस्थ रहने के मूल कारण हैं, इन्हीं में गड़ बड़ होने से शरीर रोग पीड़ित होजाता है।

रोग परीक्षा के साधन।

नाड़ी, मूत्र, मल, नेत्र, जिह्वा, ओष्ठ, दांत, नख, शरीर की आकृति आदि की परीक्षा करने से रोग की परीक्षा की जाती है।

नाड़ी परीक्षा।

नाड़ी का देखना और उससे रोग बताना बड़ा कठिन काम है यह बिना बड़े अनुभव के कदापि समझ में नहीं आ सकता, परन्तु यहाँ संक्षेप से लिखा जाता है।

पुरुष के दाहिने हाथ में और स्त्री के बांये हाथ में अँगूठे की जड़ में जो नाड़ी है उसकी परीक्षा करनी चाहिये।

वैद्य को उचित है कि अपनी अंगूठे के पास वाली तीन अंगुलियों को रोगी की नाड़ी पर कई बार रख रख कर देखे तभी पूरी तरह से रोग का ज्ञान हो सकता है।

नाड़ी परीक्षा का समय।

रोगी और वैद्य दोनों ही शौचादि से निवृत होकर सुस्थ भाव में बैठे हों तब प्रातःकाल नाड़ी

Agamnigam Digital Preservation Foundation,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परीक्षा करनी चाहिये । अन्य समय शरीर में गर्मी बढ़ जाती है, इस लिये प्रातःकाल नाड़ी देखने का उचित समय है। तेल लगाने के पीछे, नींद की दशा में, भोजन करने के पीछे ही, भूख और प्यास की दशा में, कसरत करने के पीछे ही नाड़ी देखना उचित नहीं है।

वातादि दोष में नाड़ी परीक्षा ।

बात में नाड़ी की गति जोक वा सर्प की गति के समान टेढ़ी होती है, पित्त में कौआ, तीतर तथा मेंडक के समान सदा चंचल रहती है, कफ में नाड़ी की गति मोर, राज हँस, कबूतर वा मुर्गे की चाल के समान होती है।

दो दोषों की अधिकता में नाड़ी की गति में मिले हुए दो दोषों के लक्षण दिखाई देते हैं जैसे बात पित्त की अधिकता हो तो नाड़ी में कभी सर्प और कभी मेंडक की सी गति होती है। इसी तरह और दोषों में भी जानो । सन्निपात अर्थात् त्रिदोष में कभी कोमल, कभी शिथिल और कभी तीव्र होजाती है। कभी ठहर जाती है कभी चलने लगती है, कभी अपने स्थान से हट जाता है, कभी फिर अपने स्थान पर आजाती है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐसी दशा में रोगी के जीवन की आशा बहुत कम होती है।

जिह्वा परीक्षा।

वायु के प्रकोप में जीभ पीली, खरखरी और फटी सी होजाती है, पित्त की अधिकता में लाल तथा काली होजाती है, कफ में सफेद रंग की होती है। सन्निपात में तीनों दोषों के मिले हुए लक्षण दिखाई देते हैं, विशेष रूप से काली और गौ की जीभ के समान खुरखुरी कांटेदार और शुष्क होजाती है।

दाँत परीक्षा।

बचपन में दांत निकलने के समय बालकों के अनेक रोग हो जाते हैं उस समय दांत और मसूडों की परीक्षा करना बहुत आवश्यक है, बचपन में जब बालक अपने दाँतों को किड-किड़ाता है तब पेट में कीड़ों का अनुमान किया जाता है।

मूत्र परीक्षा।

यदि रोगी का मूत्र जलके समान पतला और नीलापन लिये होतो बात विकार होता है, जो टेसू के फूल के समान पीला या कसूम के समान लाल होतो पित्त विकार होता है। जो मूत्र सफेद

Agamnigam Digital Preservation Foundation

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और चिकना हो तो कफ विकार होता है। मूत्र में बकरी के मूत्र की सी गंध आती हो तो अजीर्ण रोग समझना चाहिये, मूत्र के पश्चात् चिकनी लार सी निकलती हो तो प्रमेह रोग होता है।

नेत्र परीक्षा।

जो रोगी के नेत्र धूम्रवर्ण, ललाई लिये हुए रूखे हों और पानी डबडबाता हो तो वात विकार होता है। जो आंखों में ललाई और पिलाई हो तो पित्त विकार होता है। जो आंखों में सफेदी, चिकनापन और पानी भर आता हो तो कफ का विकार होता है। दो दोषों की अधिकता में दो २ दोषों के मिले हुए लक्षण दिखाई देते हैं। जिस रोगी की आखें भीतर को गढ़ जाती हैं वह आसन्न मृत्यु होता है।

स्वप्न परीक्षा।

यदि रोगी स्वप्न में नग्न शरीर, मुंडित शिर, लाल, व काले वस्त्र पहिरे देखे, अथवा शस्त्र व फांसी हाथ में लिये भयानक यमदूत देखे, अथवा भैंसा, ऊंट, गधा इन पर चढ़ा दक्षिण ओर को जाता देखे, ऊंचे से नीचे गिरते, अग्नि में जलते, सिंह आदि पशु द्वारा अपने को खाता देखे, अथवा दीपक को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बुझता तेल व मदिरा पीते, पकवान खाते, कूप में गिरते देखे तो वह रोगी असाध्य जानिये।

ऐसा स्वप्न देखकर किसी से न कह कर प्रातः समय उठकर भस्म आदिक से स्नान करे और स्वप्न के समान हवन, दान, पाठ आदि करे, अथवा ब्राह्मण द्वारा करावे, तथा यदि रोगी स्वप्न में देवता, राजा, तीर्थ, ब्राह्मण, अग्नि, गौ, मित्र, साधु, आदि मंगल पदार्थ देखे तो वह रोगी शीघ्र अच्छा होजाय और कीचड़ को उल्लंघन करते, शत्रु को जीतते, ऊपर को चढ़ते, श्वेत वस्त्र पहिरते फल खाते अगम्या से गमन करते, विष्टा का लेप करते, रोदन करते, तथा जोंक, सर्प, भौंरा, मक्खी द्वारा अपने को काटते देखे तो रोगी अच्छा हो जाय। निरोग मनुष्य भी ये स्वप्न देखे तो शुभ जानना।

दूत परीक्षा।

वैद्य को बुलाने के निमित्त भेजा हुआ दूत यदि कांणा, कुबड़ा, अंगहीन, कुरूप हो तो रोगी शीघ्र अच्छा नहीं होवे और जो निर्मल वस्त्र पहिरे वैद्य के निमित्त कुछ भेंट लेकर वामें स्वर में वैद्य के समीप जाय तो रोगी शीघ्र अच्छा हो जावे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शकुन परीक्षा ।

रोगी को देखने के निमित्त जाते समय मार्ग में वैद्य को यदि उत्तम पदार्थ दीख पड़े तो शकुन शुभ जानना और यदि अमंगलीक पदार्थ दीख पड़ें तो अशुभ जानना ।

मुख परीक्षा ।

यदि रोगी का मुख मीठा रहे तो बात प्रकोप जानना, कडुवा रहे तो पित्त प्रकोप जानना और मीठा खट्टा रहे तो कफ प्रकोप जानना, सब लक्षणों वाला अर्थात् कभी कडुवा कभी खट्टा कभी मीठा हो तो त्रिदोष का कोप जानना ।

रात्रि में जिस रोगी के शरीर में दाह होवे, मरण होगा ॥१॥

काल ज्ञान ।

जिसका हृदय, नासिका, नाभि, और हाथ, पांव ठंडे हों और मस्तक गरम हो उसकी मृत्यु जानना ॥ २ ॥

जो रोगी स्वरहीन, गुदाबन्दन हीन, खांसी व श्वास से व्याकुल, हिचकी और सूजन से युक्त हो, कुक्षिमें पीड़ा हो तो ऐसा रोगी नही जीता है ॥३॥

हुँकार अर्थात् नासिका वायु जिसका शीतल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो, फुंकार अर्थात् मुख वायु बहुत गरम हो, पेट में दाह हो उस रोगी की मृत्यु जानना ॥ ४ ॥ तथा जिसको ज्वर पसीना वाला हो और नासिका के द्वारा न निकल कर मुख से श्वास निकले, आठों नाडिया का स्थान छूट जावे वह रोगी काल से देखा हुआ जानना ॥ ५ ॥

जिस रोगी के दांतों की पंक्ति में तीन अंगुल न प्रवेश हो तो सात दिन में निश्चय उसकी मृत्यु होवे ॥ ६ ॥ जिसके अंग काँपने लगें, गति भंग हो जाय, शरीर का रंग बदल जाय, सुगन्धी, दुर्गन्धि और भोजन के स्वाद का ज्ञान न रहे तो वह रोगी मर जाता है ॥ ७ ॥

जो रोगी सामर्थ्य रहित अर्थात् निर्बल, पीला व बहुत श्वास वाला हो, नित्य वीर्य निकल जाता हो तो वह एक महीना तक जीता है ॥८॥ तथा जो मेघ की धारा के समान भूमि पर गिर पड़े वह सात दिन में मर जावे ऐसा काल ज्ञानियों ने कहा है

जिसके शिर में पसीना आवे श्वास मुख से निकले आठों नाड़ी स्थान छोड़ने लगें वह भी थोड़े ही काल में मृत्यु पाता है ॥ १० ॥ जिसके उदर की अग्नि मन्द हो जावे, मुख से अग्नि के समान

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गर्म वायु निकले, और श्वास बहुत चलने लगे तो वह पांच रात भी नहीं जीवे ॥ ११ ॥

जो मनुष्य अकस्मात मोटा होकर दुबला हो जावे और अकस्मात् स्वभाव बदल जावे, तो वह छः महीना जीता है ॥ १२ ॥ तथा जिसको नाक का अग्रभाग, दोनों भौंह, मुख, जिह्वा, ये नहीं देख पड़ते हैं, और दोनों कान बन्द करने पर शब्द नहीं सुन पड़ता है वह थोड़े ही काल में मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ १३ ॥

जिन मनुष्य की जिह्वा काली हो जाय, मुख कुंकुम के समान लाल हो जाय, जिह्वा से थोड़ा बोल सके उसका जीना दुर्लभ जानना ॥ १४ ॥ तथा आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, शतभिषा, भरणी, तीनों पूर्वा, विशाखा, धनिष्ठा कृत्तिका, इन नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र हो, और पापवार अर्थात शनि, मंगल, रवि इनमें से कोई बार हो, तथा रिक्तातिथि चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, व द्वादशी षष्ठी, इनमें से कोई तिथि हो ऐसे योग में यदि रोग उत्पन्न हो तो उस रोगी की शीघ्र मृत्यु हो जावे ॥ १५ ॥

पंच तत्व मय शरीर रूपी दीपक चन्द्र स्वर (बाँया स्वर) रूप तेल से भरा हुआ है सूर्य (दाहिना) स्वर रूप पवन से इसकी रक्षा करे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिससे यह जीव स्थिर रहे ॥ १६ ॥ जो सर्वदा सूर्य स्वर चले अर्थात् दाहिना स्वर चलता रहे और बाँया स्वर चले नहीं तो पन्द्रह दिन में उसकी मृत्यु होवे, ऐसा कालज्ञानियों ने कहा है ॥१७॥

जिस मनुष्य का एक ही स्वर एक महीना, छः महीना एक पक्ष (१५ दिन) तीन महीना, वा पाँच दिन तक चले तो उसकी मृत्यु होगी ऐसा जानना ॥ १८ ॥ शुक्ल पक्ष में बाँया स्वर चले, कृष्णपक्ष में दहिना स्वर चले, और दोनों पक्षों में चन्द्र सूर्य दोनों स्वर तीन तीन दिन चलते दीख पड़ें तो ठीक जानना ॥ १९ ॥

अरुन्धती जीभ ध्रुव नासिका का अग्र भाग, विष्णु दोनों भौंह का मध्य भाग, मातृमण्डलम् दोनों भौंहें कहाती हैं ॥ २० ॥ अरुधन्ती, ध्रुव, विष्णु के तीनपद (श्रवण नक्षत्र के तीन तारे) चौथे मातृमण्डलम् (कृतिका के छः नक्षत्र) इन सबको हीन वायु वाले नहीं देखते ॥ २१ ॥

जिस की जिह्वा काली, कंटकित, कफ से लिप्त शून्य तथा कठोर हो जावें, वह थोड़े ही समय में मृत्यु को प्राप्त होवे ॥२२॥ जो मनुष्य सुगन्ध को दुर्गन्ध और दुर्गन्ध को सुगन्ध जाने अथवा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुगन्ध दुर्गन्ध दोनों में से एक को भी न जानसके, वह थोड़े ही दिनों में मरण पावे ऐसा जानना॥२३॥

जिसकी नासिका टेढ़ी, फटी सी, सूखी सी, और शब्द वाली वा भीतर को बैठी सी जाय तो वह मनुष्य नहीं जीवे ॥ २४ ॥

जिनके स्नान के उपरान्त प्रथम छाती सूखे और जिसके मुख में तीन अंगुली न समावें तथा स्नान के उपरान्त जिसके मस्तक में धुवाँसा उठने लगे, और फल तथा अन्नादि रहित चोंच वाला पक्षी मस्तक पर बैठ जाय तो अरिष्ट जानना॥२५॥

जो चन्द्रमा की छाया, ध्रुव नक्षत्र, नक्षत्र माला, और मातृमण्डल को नहीं देखे तथा कीच आदि में चरण रखने से खंडित देख पड़ें और उसका कफ जल में गिरने से नीचे बैठ जाय तो अरिष्ट जानना ॥ २६ ॥

जो निरोगी मनुष्य अकस्मात् थोड़ा भोजन, अथवा बहुत भोजन करने लगे, और जो उत्तम विषय तथा दुष्ट विषयों में आत्म भाव को छोड़ दे अर्थात् सुकर्मी नीचकर्म करने लगे कुकर्मी सुकर्म करने लगे, तथा नेत्रों को अंगुलियों से बन्द कर लेने पर मोर चन्द्रिका समान तिल युक्त अनुभव सिद्ध न देखे तो अरिष्ट जानना ॥ २७ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

औषध मान ।

श्लोक०—न माने न बिना युक्तिर्द्रव्याणां ज्ञायते क्वचित् ।
अतः प्रयोगकार्यार्थं मान मत्रोच्यते मया ॥२८॥
चरकस्य मतं वैद्यो ह्याद्यैरस्मान्मतं ततः ।
विहाय सर्वमानानि मागंध मानमुच्यते ॥२९॥

मान अर्थात् परिमाण ठीक न होने से औषधियों की योजना ठीक नहीं होती इस कारण प्रयोग कार्य निमित्त यहाँ मैंने मान परिभाषा करके तोल कहा है ॥ २८ ॥ पूर्व आचार्यों ने चरक का मत माना है इस कारण सब मानों को छोड़कर मागधमान आगे कहा जाता है ॥ २९ ॥

सूर्य की किरण झरोखे में पड़ती हैं उस में जो सूक्ष्म रज का कण देख पड़ता है उसके तीसवें भाग को परमाणु कहते हैं, तीस परमाणु की वंशी और छः वंशियों की एक मरीचि होती है, ६ मरीचि की १ राई, ३ राई का १ सरसों, ८ सरसों का १ जव, ४ जव की १ रत्ती, ६ रत्ती का १ माशा, ४ माशे का १ टंक, २ टंक का १ कोल, २ कोल का १ कर्ष, २ कर्ष की १ शुक्ति, २ शुक्ति का १ पल, २ पल की १ प्रसृति, २ प्रसृति की १ अंजलि (एक पाव २ अंजलि की एक ज्ञानिका (शराव) कहा है; २ शराव (आधसेर) का १ प्रस्थ (सेर) और ४ प्रस्थों का १ आढक, ४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आढकोंका १ द्रोण, २ द्रोणका १ शूर्प, २ शूर्पोंकी १ द्रोणी (गोणी), ४ द्रोणीकी १ खारी, और २००० पलोंका १ भार, १०० पलोंकी १ तुला यह मान सर्व प्रामाणिक हैं। वर्तमान अंग्रेजीराज्य में १२ माशेका १ तोला और ८० तोलेका १ सेर है, यहाँ मागध परिभाषामें १६ माशे १ तोला है, ६ रत्ती १ माशा, कहा है, १६।६ गुणा करने से ९६ रत्ती का तोला जानना और ८ रत्तीका १ माशा, १२ माशेका १ तोला इस रीतिसे भी १२।८ गुणा करने से ९६ रत्ती का तोला हुआ, बात एक ही है। १ रत्ती से अंजलि प्रमाण तक कच्ची वा सूखी अथवा कड़ी औषध समान लेना, पर प्रस्थसे अधिक वा प्रस्थभर कच्ची औषध को सूखी औषध से दूनी लेना, अर्थात् कोई कच्ची गीली, हरी औषध लेना होतो १ प्रस्थके स्थान में प्रस्थ लेना ॥

अभाव में द्रव्य ग्रहण ।

औषधियों में से कोई औषध न मिलने से उसके बदले उसी गुणकी दूसरी औषध ग्रहण करना, निघंटु ग्रन्थ में औषधियों का गुण यथा रोग में यथोचित रीति से वर्णन है, वहाँ देखना, जैसे मधुके अभाव में पुराना गुड़, तगर के अभाव में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हारसिंघारकी छाल, दाडिम के अभावमें वृक्षाम्ल चव्यके अभाव में पीपल वा पीपलामूल, सौराष्ट्र-मृत्तिका के अभावमें पंचपपेटी, रसौतके अभाव में दारूहलदी का काढ़ा, दारुहलदी के अभाव में हलदी,सोना रूपाके अभाव में लोहा, बाराहीकन्द के अभावमें आलू, पुष्कर मूलके अभाव में कुडा, सैंधालवण के अभाव में और लवण, फूल के अभाव में कच्चाफल, भेलावा के सहन न होने से लालचन्दन, सफेद सरसों के अभाव में लाल सरसों मेदके अभाव में असगन्ध, महामेद के अभाव में अनन्तमूल, जीवके अभाव में गिलोय, ऋषभ के अभाव में वंशलोचन, काकोली और क्षीर काकोली के अभाव में शतमूली लेना, इत्यादि यहाँ प्रमाण मात्र थोड़े द्रव्यों को लिख दिया।

पंचकषाय।

१ स्वरस, २ कल्क, ३ क्वाथ, ४ हिम ५ फान्ट, ये पांच प्रकारका कषाय कहा है।

(स्वरस) कच्ची औषध को कूटकर रस निकाल लेवै और कच्ची औषध न मिलने से सूखी औषध आठ गुणे पानी में औटाकर एक भाग रहने पर उतार लेवे उसको स्वरस कहा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[कल्क] कच्ची वा सूखी औषध पानीसे पीस कर गोली बनाने को कल्क कहा है।

(क्वाथ) औषधको पहले कूट लेवे अनन्तर १पल से १६ गुण जलमें औटाकर आठवां भाग रहने पर उतार लेवे उसको क्वाथ (काढ़ा) कहा है।

(हिम) कुटी हुई औषध १ पलसे ६ पल जल में रात भर भिगोकर छान लेने पर उसको हिम अथवा शीतकषाय कहा है।

(फान्ट) कुटी हुई औषध १ पल मिट्टी के पात्र में आधसेर जल में भिगोकर थोड़ी देर पीछे छान लेने पर फाण्ट कहाता है।

औषध व्यवहार विधि।

कोई कोई औषध गोली अथवा चूर्ण केवल जलके साथ कोई शहत के साथ कोई शहत में मिलाकर दूसरी औषधि के काढ़े के साथ सेवन करना पड़ता बहुतों का यह विचार है कि केवल औषध खाने ही से गुण होता है अनुपान की आवश्यकता नहीं है, यह बड़ी भूल की बात है, कारण यह कि अनुपान के साथ औषध सेवन करने से वह शीघ्र और अच्छे प्रकार शरीर में फैलकर गुण करती है, अन्यथा भली भाँति गुण नहीं करती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घृत व्यवहार विधि ।

प्रथम सप्ताह में आधा तोलाभर घी, चार आना भर मिश्री, और १ छटांक अथवा आधपाव गरम दूध मिलाकर पीना चाहिये, अनन्तर सहन होजाने से अर्थात् सुख पूर्वक पचजाने और अजीर्ण आदि रोग न रहने पर दूसरे सप्ताह से १ तोला घी, आधा तोला शक्कर एक छटाँक वा आधपाव गरम दूध में मिलाकर पीना चाहिये, यही पूरी मात्रा है बालक और गर्भिणी को इस से आधी मात्रा और बच्चों को चौथाई मात्रा देनी चाहिये ।

तेल व्यवहार विधि ।

बात रोग में सब तेल स्नान से एक घंटा पहले सब अंगोंमें मलकर बहती नदी अथवा बड़े तालाब में स्नान करना योग्य है, आरोग्य और बलिष्ठ पुरुष से तेलकी मालिश कराना, और शेष रोगों में जिस अंग में पीड़ा हो वहीं तेल लगवाना, जैसे कान का तेल कान में, घाव का घाव पर शिर पीड़ा का तेल कंठ कनपटी पर लगवाना, वा नाश लेना चाहिये इत्यादि ।

मोदक (लड्डू) आदि व्यवहार विधि ।

प्रथम सप्ताह में आधा तोला मात्रा, फिर क्रम पूर्वक एक तोला तक बढ़ाना चाहिये, काश और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शूल रोग में पूरी मात्रा आधा तोला, बालक को आधी मात्रा देना, रसायन और बजीकरण के मोदक, कामेश्वर मोदक, व रतिवल्लभ, ये चार आना भर मात्रा से आरम्भ करके गरमी न करने पर आधा तोला तथा एक तोला तक बढ़ाना चाहिये।

औषध मात्रा।

काढ़ा तोल में सदा आधपाव से अधिक न हो, बच्चों को १ तोला से अधिक न हो।

और चूर्ण प्रत्येक मनुष्य को आधा तोला से लेकर १ तोला तक, बच्चों को चूर्ण की मात्रा एक माशे से ३ माशे तक देना योग्य है, बच्चों को औषधि अवस्था का विचार देख के देना।

वेग रोकने से हानि।

अधोवायु (पाद) का वेग रोकने से पेट में गोला, अफरा, और दर्द होता है। मल के रोकने से पीनस, मस्तक पीड़ा, वायु के ऊपर नीचे आने जाने में बाधा होना आदि रोग होता है। मूत्र वेग रोकने से पथरी, मूत्रकृच्छ्र, हड़ फूटन, लिंग इन्द्रिय, और सन्धि में पीड़ा आदि रोग प्रगट हो जाता है। डकार का वेग रोकने से अरुचि,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शरीर में कम्प, हृदयावरोध, अफरा, खांसी आदि रोग उत्पन्न हो जाता है। छींक का वेग रोकने से मर्दन नहीं मुड़ती, इन्द्रिया निर्बल हो जाती हैं, मुख टेढ़ा हो जाता है। प्यास रोकने से मुख सूखना, हड़ फूटन, बहिरापन, मोह, भ्रम, हृदय-पीड़ा, आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। क्षुधा रोकने से सब अंगों का टूटना, अरुचि, सब पर ग्लानि, शरीर दुबला, शूल भ्रम, इन्द्रियों की शिथिलता आदि रोग प्रगट हो जाता है। खांसी का बेग रोकने से ठसका, गले में खरखराहट खांसी, श्वास, अरुचि, हृदयरोग, हिचकी आदि रोग प्रगट हो जाता है। श्वास का बेग रोकने से वायुगोला, हृदय रोग मोह वा प्रमेह रोग हो जाता है। नींद का वेग रोकने से मोह, मस्तक और नेत्र भारी हो जाते हैं और आलस्य, जंभाई, अंगपीड़ा ये रोग होते हैं। जंभाई रोकने से मस्तक पीड़ा, इन्द्रियों की दुर्बलता, और गर्दन मुख का टेढ़ापन, आदि रोग होता है। आंसू रोकने से नेत्र, मस्तक हृदय और ग्रीवा इनमें पीड़ा, अरुचि, भ्रम, वायुगोला, आदि रोग हो जाते हैं, वमन का वेग रोकने से रक्तपित्त, कोष, नेत्र रोग, श्वास, पांडुरोग, ज्वर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खांसी, श्वास हृदयशूल, व मुखच्छाया आदि रोग जानना। कामदेव का वेग रोकने से सुजाक प्रमेह, लिंगपीड़ा, लिंग में सूजन, जलन, तथा भोजन में अरुचि आदि रोग उत्पन्न होजाते हैं, उस कारण इन चौदहों वेगों का रोकना अयोग्य है।

अनुपान विधि।

अनेक औषधियां ऐसी हैं कि जो किसी न किसी औषध के साथ सेवन की जाती हैं, जिस औषध के साथ सेवन की जाय उसको अनुपान कहते हैं, अनुपान के योग से सेवन की हुई औषध रुधिर में प्रवेश करके शीघ्र अपना गुण दिखाती है, द्रव्यों के गुणों को विचार करके अनुपान की व्यवस्था करनी चाहिये। दस्त न उतरता हो तो बड़ी हर्डे गुलकन्द, सनाय आदि के काढ़े से देना, ज्वर में हार सिंगार, बेलपत्र आदि का रस, चिरायता गिलोय (गुर्च) नींव की छाल आदि के काढ़े में देना चाहिये। बमन (कै) बन्द करने के लिये माथे का रस, बड़ी इलायची भिगोया हुआ जल, कांस का अर्थ, बेल का काढ़ा आदि, देना। रुधिर बन्द करने में लाल कमल की जड़ दूर्वा, गूलर, कुरचीय आदि के रसमें देना, पित्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के विकार में गरम दूध के साथ देना, दाह दूर करने को परवल, गुर्च आंवला आदि के रस में देना। मूत्र कराने में शोरे का जल, कमल का रस पंचतृणों का काढ़ा देना मूत्र रोग में मोच का रस, गूलर का रस देना अग्नि मन्द हो तो जीरा अजवायन आदि की बुकनी वा काढा शहत और गुर्च, आदि के काढ़े में देना। कृमि निवारणार्थ विडंग का चूर्ण शहत मिलाय, वा विडंग आदि का काढा देना। खांसी के दूर करने के निमित्त तुलसी के पत्तों का रस. अडूसों के पत्ते, कटेली, जेठी मधुका काढ़ा, अदरख वा पान का रस. वा सोंठ का काढा, वा अष्टादशांग का काढा आदि देना। स्त्री के प्रदर आदि के रोग में अशोक वृक्ष की छाल का काढा कबाव चीनी की बुकनी गूलर का रस आदि अनुपान में व्यवहार होता है पोषणार्थ घी, दूध माखन आदि शेषणार्थ मिरच आदि का काढा इत्यादि अनुपान देना योग्य है।

अनुपान के बारे में किसी विशेष नियम की आवश्यकता नहीं है, रोग और रोगी की प्रकृति, तथा द्रव्य (औषध) का गुण विचार कर अनुपान स्थिर करना योग्य है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रोगी की सेवा संक्षेप नियम ।

जिस स्थान में चारों ओर से वायु का प्रवेश हो सके ऐसे साफसुथरे स्थानमें रोगीको रखना चाहिये शय्या और बिछोना साफ हो, अँधेरा न हो,किसी प्रकारकी दुर्गन्ध न आती हो, रोगीका बिछोना और वस्त्र दिनभर में दोवार बदलकर सुखा देना योग्य है, रोगी के, समीप अनेक पुरुषों का बैठा रहना ठीक नहीं, रोगी और रोगी की सेवा करने वालों को योग्य है कि रोगी की पीड़ा और रोग की अरिष्टता प्रत्येक के सन्मुख न कहै, रोगी को औषधी बहुत ही सावधानी के साथ देवे, रोगी के इच्छा के अनुसार खाने को न देवे जिस प्रकार वैद्य बतावे उसी अनुसार वर्ताव रोगी के साथ करे, रोगी को वही वस्तु देवे जो रोगी को हित हो इसके विरुद्ध वर्ताव करने से रोगी का रोग असाध्य हो तो भी रोगी की सेवा ध्यान धरके करनी चाहिये, जब तक श्वांस रहती है तब तक आश रखनी चाहिये, कालकी गति अपरम्पार है इस कारण रोगी की सेवा सर्वतो भाव करते रहना ही हितकारक है एक घरमें रोगी का बहुत

---

१ जिस रोग में हवा मना है वहाँ न आने देना चाहिये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिनों तक रहना श्रेष्ठ नहीं है इस कारण बीच २ में स्थान बदल देना चाहिये, यह विशेष नियम रोगी की सेवा के विषय में लिखे हैं इनमें कोई ऐसा नियम नहीं है जिसका पालन न हो सके।

इति श्री रसराज महोदधौ सर्वहित विचार तथा नाड़ी ज्ञानादि वर्णनं नाम प्रथमस्तरङ्ग ॥ १ ॥

अथ द्वितीयतरंगः प्रारम्भः

दोहा-धन्वन्तरि पद ध्यान धरि,अरुअश्वनीकुमार।
विश्वरोग भयहरणहितं,लीन्होंजिनअवतार॥

श्लो०—सद्वैद्येभ्यः श्रुता ये च येच ग्रन्थेषु विश्रुताः।
प्रकारास्ते प्रदृश्यन्ते धातु शोधन मारणे॥ २॥

उत्तम वैद्यों के मुख से जिस प्रकार सुना और वैद्यक ग्रन्थोंमें जो प्रसिद्ध है, वे सब प्रकार धातुओं के शोधन और मारण में यहां दर्शाते हैं॥ २॥

दोहा-धातु भस्मको रूपलखि, मराकहत सबकोय।
पर अनुभव कीन्हें बिना,व्यर्थ जानिये सोय॥

प्रायः वैद्य धातुओंका शोधन करते और मारण करते हैं परंतु यह काम बहुत ही कठिन है,जो वैद्य इस काम को करता रहता हो,और परीक्षा करके सब प्रकार गुण जान चुका हो,उस परशोत्तम वैद्य के द्वारा सीखा हुआ वैद्य धातु शोधन मारण में निपुण होता है अन्यथा शोधन किया वा मारा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुआ धातु, विष के समान व्याप्त होकर शरीर में नाना प्रकार के रोगों को प्रगट करती है, क्योंकि जब धातु कच्ची रह जाती है, तब खानेसे नाड़ियों में प्रवेश होकर अंगों को तोड़ के दाह उत्पन्न करता है, और शुद्ध पकी हुई धातु योग्य मात्रा खाने से धीरे २ गुण करके संपूर्ण रोगों का नाशकर स्वास्थ्य देती है, इस कारण धातुओं को अच्छे प्रकार शोधन कर मारे ।

भावना विधि ।

औषधियों का चूर्ण जल वा काढे में भिगोकर दिनको धूपमें और रातको ओसमें रखनेसे भावना होती है, भावना की विशेष विधि न रहने पर सात दिन भावना देना अवश्य योग्य है ॥ २२ ॥

धातुओं को भस्म करने के निमित्त नानाप्रकार के पुटों की आवश्यकता होती है, इस कारण यहां अनेक पुटों की विधि लिखते हैं ।

एक गढा चारों ओर से बराबर ३० अंगुल का खोदकर उसमें ५०० करडा रख उसपर पुट औषध स्थापित करे और ५०० कंडा पर रख आग लगा देवे, जब सब कंडा जलजाय और अग्निकी राख ठंडी होजावे तब और निकालले ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाराह पुट।

ऊपर कहे अनुसार गढ़े से एक मुष्टि अधिक गढ़ा खोद कर उसमें जो पुट दिया है उसको वाराह पुट कहते हैं।

(गोबरपुट) गोशाला का गोमय गौके खुरों से फैल कर सूख जाता है उसके चूर्ण को गोबर कहते हैं, एक बड़ी हांडी में औषध यंत्र रख कर उसमें गोबर का पुट देना।

(भांडपुट) भूसी से पूर्ण एक बड़ी हांडी में औषध यंत्र रखकर उसमें आग लगाय हांडी का मुख बन्द कर देना इसी को भांडपुट कहा है।

(कुक्कुटपुट) चारों ओर से १६ अंगुल के गढ़े में जो पुट दिया जाताहै उसको कुक्कुटपुट कहाहैं।

(कपोतपुट) विलस्त भर गहरे गढ़े में सात वा आठ आरने कंडों से जो पुट दिया जाता है, उसको कपोतपुट कहते हैं।

(गजपुट) बहुत पुष्ट चौकोन डेढ हाथ के गढे में औषधि रख के ऊपर नीचे कंडे भरकर आग देवे तो गजपुट कहाता है।

(कुंभपुट) मिट्टी के घड़े में अंगुली के समान चालीस छिद्र करके उसमें आधी दूर तक कोयला भर देवे, और औषधि को रख के फिर कोयला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुँहतक भरदे फिर उसका मुख सराई से ढक देवे, और कपड़ मिट्टी करके छाया में सुखाय अंगार डालकर चूल्हे पर अथवा ईंट पर आंच देवे फिर उतार कर तीन दिनमें ठण्डा कर औषधी को ले लेवे यही कुम्भपुट है।

(बालुका पुट) बहुत गरम बालू से रस आदिक की टिकिया को नीचे ऊपर ढँक देवे, इसको बालुकापुट कहते हैं।

(भूधरपुट) पृथ्वी में दो अंगुल का गड्ढा खोदकर उसमें घरिया रख ऊपर से जो आंच समेत पुट दी जाती है उसको भूधर पुट कहते हैं।

विद्याधर यन्त्र नं० १

एक पात्र पर दूसरे पात्र की पेंदी जमा कर मिट्टी से उसकी सन्धि बन्द करके दोनों पात्रों को चौमुख चूल्हे पर रखदेवे, पात्रों में औषध डालकर पात्रों का मुख बन्दकर देवे, यही विद्याधर यंत्र है।

भूधर यन्त्र नं० २

पृथ्वी में एक गढा खोदकर उसमें पारासे पूरित मूष को बन्द कर देवे फिर उपलों को उस पर जलाकर आंच देवे उसको भूधर यन्त्र कहते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वदेनी यन्त्र नं० ३

जल पूरित पात्र के मुख में बांधे हुए कपड़े में रस आदिक को रख देवे और बन्द करके पकावे इसको स्वदेनी यन्त्र कहते हैं।

डमरू यन्त्र नं० ४

एक पात्र के मुख पर दूसरे पात्र को औंधा ढक देवे अर्थात् दोनों का मुख एक में जोड़ देवे इसको डमरूयन्त्र कहते हैं, यह यन्त्र पारे के शोधन में बहुत ही हितकारी है।

दोला यन्त्र नं० ५

पतली औषध से आधी दूर तक भरे हुए पात्र के मुख के दोनों ओर दो छेद करके उन दोनों छेदों के बीच एक लकड़ी डाल देवे उस लकड़ी में पारे की पोटली को या किसी भी औषधिको बाँधकर लटका देवे कि जिससे पोटली पात्रकी पेंदी में न लगे, इसको दोलायन्त्र कहते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बालु का यन्त्र नं० ६

एक कांच की शीशी में पारा भरकर अंगुल भर गहिरी कपड़-मिट्टी सब ओरकरदेवेइसी प्रकार मुख भी बन्द कर देवे और धूप में रख कर सुखाय लेवे, फिर उस शीशी को विलस्त भर गहरे पात्र के भीतर रख देवे और मिट्टी अर्थात् बालू भर देवे और उस पात्र को मिट्टी से मुख बन्द कर चूल्हे पर काष्ठ की आंच देवे यही बालु का यन्त्र है।

गर्भ यन्त्र नं० ७

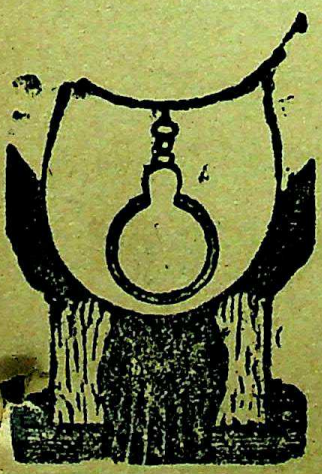

यह यंत्र अर्क, तेल, इत्र आदि के निकालने के काम आता है एक चौड़े मुख का बड़ा घड़ा लेकर उसके पेंदे में एक ईंट रखदी जाती है और उस पर एक दूसरा पात्र रख दिया जाता है और उसके चारों ओर वह द्रव्य भर दिया जाता है जिनका अर्कादि निकालना है। उस बड़े घड़े के मुख पर एक और घडिया रखदी जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसकी संधिको कपड़ मिट्टी करके बन्द कर देते हैं। नीचे मन्दी २ आग जलाते हैं और मुख के ढक्कन में पानी भर देते है । ढक्कन का पानी गरम होने पर निकाल दिया जाता है और उसकी जगह ठंडा पानी भर दिया जाता है। इसी तरह बार २ करते रहते हैं ऐसा करने से ऊपर वाले घड़े के पेंदे में भाफ जम जाती है, वही टपक टपक कर भीतर वाले कटोरे में गिरती रहती है । यही सावधानी से निकाल ली जाती है।

हंसपाक यन्त्र नं० ८

एक चौड़े मुख वाले मिट्टी के पात्र में बालू भरदे और इसके भीतर पंचक्षार, गोमूत्रादि, बिड नमक रखकर दूसरे पात्र से मुख बन्द करके नीचे मंदी मंदी आग जलावे। इसे हंसपाक यन्त्र कहते हैं।

कच्छप यन्त्र नं० ९

एक कढ़ाई के सदृश पात्र लेकर उसके बीचमें मूष के समान थांवला सा बनाकर उसमें औषध भरे, फिर उसके ऊपर एक और प्याला औंधा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगादे। नीचे आग लगावे। इससे दवा उड़कर ऊपर के पात्र में लगेगी। इसमें कपूर उड़ाया जाता है। ऊपर के प्याले पर पानी का पोता फेरता रहै।

दीपक यन्त्र नं० १०

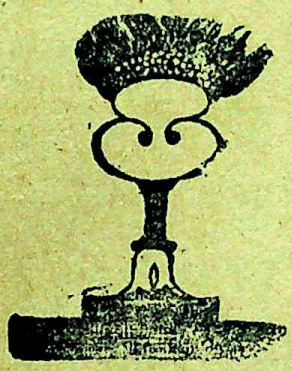

भीमसैनी कपूर, लोहवान, और संखिया का फूल निकालना हो तो इनमें से किसी को केला के रसमें आठ पहर घोट कर एक हांडी में भर देवे, इस हांड़ी के मुख पर एक औंधा कटोरा लगाकर कपड़ मिट्टी करदे। इस हांडी के नीचे दीपक जलादे इससे उड उड कर ऊपर के कटोरे में जो वस्तु लगेगी वही फूल है।

जारण यन्त्र नं० ११

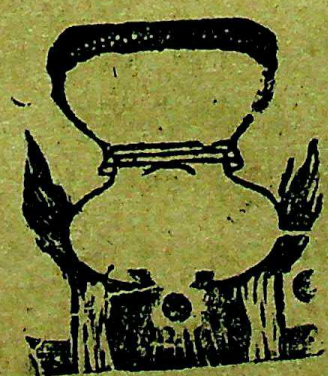

बारह बारह अंगुल लम्बी लोहे की दो मूष बनवावे। एक में छोटा छेद कराके उसमें होकर गंधक भरदे और दूसरी मूष में पारा भरदो उस पारे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाली मूष को गंधक वाली मूष के भीतर प्रवेश करदे पारे के नीचे जल रक्खे और ऊपर नीचे अग्नि जलावे। और लहसन के रसको कपड़े में छानकर गंधक और पारे दोनों को भिगोदे। फिर एक बड़ी हांडी के पेंदे में दोनों मूषों को रखकर दूसरी हांडी का मुख मिलाकर कपड़ मिट्टी करदे जिसमें संधि न रहै। नीचे वाली हांडी के तले उपलों की तीव्र आग देवे। और हांडी के भीतर कपोतपुट की आग देवे। तीन दिन तक इसी तरह करे, चौथे दिन स्वांग शीतल होने पर खोल देवे। इस तरह करने से पारे में गंधक जारण होता है।

धूप यन्त्र नं० १२

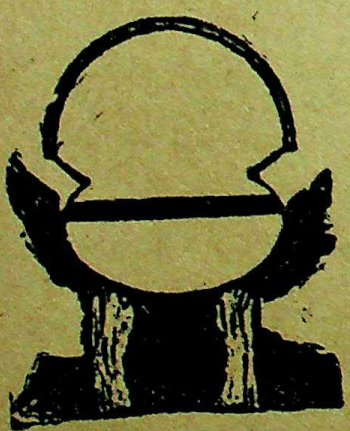

आठ आठ अंगुल लम्बा चौड़ा एक लोहेका पात्र लेकर उसके कंठ से दो अंगुल नीचे तक जल भर दे और उसके कंठसे लोहे की पतली पतली पत्तियां डालदे। उनके ऊपर सोने के पतले पत्र बिछादे। और उस पात्र के ऊपर एक दूसरा पात्र औंधा ढककर कपड़ मिट्टी करके संधि बन्द करदे और नीचे आग जलावे,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस आग से धूआं उठकर सोने के पत्र को काला कर देगा। इस किया से रस सोने का खाया जाता है। यह खाया हुआ सुवर्ण पारे में शीघ्र जीर्ण होजाता है। अथवा गंधक, हरताल, मनसिल की कजली और मृत शीशे की धूनी देवे। यह सुवर्ण पत्रों की पहिली धूनी है। यह धूप यन्त्र जारण द्रव्य के साधन के लिये कहा गया है।

गौरी यन्त्र नं० १३

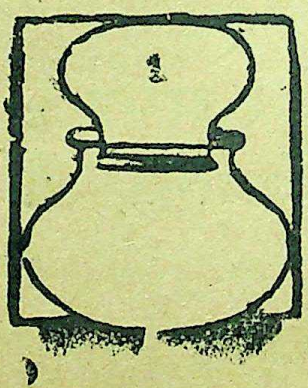

आठ अंगुल लम्बी चौड़ी और इतनी ही ऊंची एक ईंट लेकर उसके बीच में एक गड्ढा करें, इसे कांच से खुरच कर साफ करले फिर चूना पोतदे फिर अभ्रक सत्व वा सोने चांदी के सत्व में घोटा हुआ पारा ईंट के गड्ढे में भरदे उसके ऊपर नीचे गंधक बिछादे फिर उस गड्ढे पर एक खीपड़ा रख कर उसका मुँह कपड़ामिट्टी से बन्द करदे। फिर इसमें आरने ऊपलों की अग्नि देवे। इसे गौरी यन्त्र कहते हैं।

इस प्रकार धातुओं के शोधन और मारण में अनेक यन्त्र हैं परन्तु यहां केवल संक्षेप से लिख

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिये हैं। और किसी यन्त्र की जहां आवश्यकता होगी उसको वहां पर लिखकर प्रगट करेंगे।

अथ धातु नाम।

१ सोना, २ चांदी, ३ तांबा, ४ शीशा, ५ रांगा, ६ जस्ता, ७ लोहा, यही सात धातु पर्वतों से उत्पन्न हैं।

अथ संयोगज धातु।

जस्ता और तांबे से पीतल, और ताँवे व राँग से काँसा यह दो धातु मिलने से प्रगट हैं।

अथ उपधातु।

१ सोनामक्खी, २ नीलाथोथा, ३ हरताल, ४ सुरमा, ५ अभ्रक, ६ मैनसिल, ७ खपरिया, यही सातों उपधातु है।

अथ धातु शोधन मारण प्रकार।

सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, इन चार धातुओं में से जिस धातु का शोधन करना हो उसके पतले २ पत्र बनाय अग्नि में तपावे और तेल, मठा, काँजी, गौमूत्र, कुलथी का काढा इनमें तीन तीन बार बुझा लेवे तो शुद्ध होजावे। किसी किसी का मत एक २ हजार बार बुझाने का भी है परन्तु मौका देखना चाहिये।

और शीशा, राँगा, जस्ता इनका शोधन करना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो तो गलायके तेल, मठा, कांजी, गोमूल, कुलथी का काढा,इनमें बुझावे फिर आक के दूध में बुझावे क्योंकि यह धातुऐं नरम हैं । परन्तु धातुओं के शोधनमें यह ध्यान रक्खे कि सावधान होकर धातु को बुझावे,क्योंकि यह उड़कर देह को जला देताहै।

कच्चे तांबे को विष से भी बढ़कर विष जानना, विषमें एकही दोष है, कि प्राण हरलेता है, लेकिन कच्चा तांबा भ्रम,मूर्च्छा,दाह, वमन, शोथ, अरुचि चित्तसन्ताप आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करता है अतएव कच्चे तांबे का सेवन कदापि नहीं करना, कच्चे तांबे के पात्र में प्रत्येक चीज़ देर तक नहीं रखना,गुरुके समीप बिना सीखे धातुओं के शोधन मारण में कदापि कटिबद्ध नहीं होना, पुस्तक में लिखे अनुसार जानकर क्रिया में निपुण वैद्य से एकबार अवश्य समझ लेना चाहिये,कारण यह कि अनेक क्रिया सम्बन्धी ऐसी बातें हैं जो लिखने में नहीं आ सकती हैं बताने और देखने से समझने की बात लिखी होने पर ठीक ठीक समझ में नहीं आती, अतएव हमने यहां सूचना की है, असावधान रहना प्राणों की जोखम है।

सुवर्ण परीक्षा ।

जो सोना तपाने से लाल रंगका होजावे, काटने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से सफेद रंगका हो, कसौटी पर घिसने से कुंकुमके समान रेखाहो, चांदी तांबा जिसमें न मिला हो चिकना और नरमहो,तोल में भारी हो,इतने गुण जिसमें हों वह सोना शुद्ध जानना।

और इससे विपरीत गुण जिसमें पाये जावें अर्थात् जो सोना नरम न हो, कठिनता से उसमें छिद्र हो तपाने पर सफेद हो,हलका हो घन लगने पर फूटजावे, चांदी तांबे की मिलावट हो ऐसा सोना शोधन करने व मारने के योग्य नहीं होता है।

सुवर्ण का विशेष शोधन।

सुवर्णका पतला पत्र बनाय अग्निमें गरम करना लाल रहने पर क्रमशः तेल, मठा, कांजी, गोमूत्र, और कुलथी के काढामें बुझाना,तीन वार बुझाकर गरम करके तेलमें डुबानेसे सुवर्ण शोधित होताहै।

सर्व धातु मारण विधि।

पुस्तकों में लिखे अनुसार धातुओं का शोधन करना और मारना प्रायः सब जानते हैं, लेकिन अनुभव किये बिना जानना वृथा है, धातुओं के शोधन करने और मारने में रसेन्द्रसार, रसेन्द्रसार संग्रह, रसेन्द्र चिन्तामणिं, रस रत्नाकर, रसरत्न-समुच्चय,आदि बड़े २ ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं, यहां इस छोटे से ग्रन्थ में संक्षेप रीति से सब साधारण जनों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के सुगमार्थ पहले हम ऐसी क्रिया लिखते हैं, जो इस एक ही क्रिया से सब धातुओं की भस्म हो जाती है।

जिस धातु की भस्म करना हो उस धातु पर गन्धक और मनसिलको मदार के दूध में पीसकर लेप करना और बारम्बार क्रम पूर्वक गजपुट में फूंकने पर कोई भी धातुहो भस्म होजातीहै, लेकिन बूंटी की फूंकी हुई हो उसका गुण अधिक है।

सुवर्ण मारण प्रकार।

शुद्ध किये हुए सुवर्ण के पात्रको लेकर कैंची से छोटे छोटे टुकड़े करना, और सुवर्ण के समान भाग पारा मिलाकर एक गोला बनाना उस गोले को एक मिट्टी के कटोरे में रख उसके ऊपर और नीचे उसी के साथ गन्धक देना और दूसरे मिट्टी के कटोरे में बन्द करके ऊपर मिट्टी से लेपकर ३० अन्ने (आरने) उपलों की आग में फूंकना, शीतल होने पर सोना निकाल पारे के साथ घोटना, और ऊपर नीचे गन्धक रख पुटपाक करना, इसी प्रकार १४ बार करने से सुवर्ण भस्म होजाता है, उसको अनुपान के साथ देने से गुण करता है। सुवर्ण की भस्म को भीमराज के रसके साथ सेवन करने से वीर्य की वृद्धि होती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है, दूध के साथ सेवन करने से बल बढ़ता है, पुनर्नवा के रसमें नेत्रों की ज्योति बढ़ती है बचके साथ सेवन करनेसे बुद्धि, स्मृति, और मेधाकी वृद्धि होती है, कुंकुम (केसर) के साथ सेवन करने से कान्ति की वृद्धि होती है, निर्विषी के साथ सेवन करने से विषका नाश होता है।

सुवर्ण भस्म की दूसरी विधि।

शुद्ध सुवर्ण का चूरा एक भाग बहुत बारीक पीस कर दो भाग शुद्ध पारे के साथ खरल में डालकर कागजी नीबूके रसमें घोटे जब पारा सुवर्ण के चूरे पर चढ़ जावे, और गोलासा बंध जावे, तब शुद्ध किया हुआ आंवलासार गंधक बारीक पीस उस गोले के बराबर लेकर मिट्टी के दो सरवा लेकर पहले सरवा में आधा गंधक बिछाकर उस पर उस सुवर्ण और पारे के गोले को रख देवे, बाकी आधे गंधक को गोले पर बुरकाकर दूसरे सरवा से मूंद देवे, फिर उस पर सातबार कपड़ मिट्टी करके ४० अन्ने उपलों को नीचे ऊपर आधे २ रखकर बीच में सम्पुट धर फूंक देवे, जब स्वांगशीतल होजावे तब सम्पुट से उसको निकल कर पारे में घोटे, फिर इसी प्रकार १४ आँच देवे, तो सुवर्ण की ऐसी भस्म होजाती है, जो घी सुहागा डालने से भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं जाती है, ऐसे ही हरताल और संखिया के योग से भी १४ पुट में सुवर्ण की भस्म हो जाती है, परन्तु इसमें चार पुटतक सोने से आधी संखिया और दूना हरताल डालता जावे प्रत्येक पुट में सँखिया को निकालता जाय, सात पुट के उपरान्त बराबर हरताल डाले तो बहुत उत्तम सुवर्ण भस्म होवे।

बूटी से सुवर्ण भस्म विधि।

कचनार के एक सेर पत्तों के बीच एक तोला सोना रखकर गोला बनाय कपड मिट्टी करके सुखाय लेवे, गजपुट की दो आँच देवे तो बहुत उत्ताम भस्म सुवर्ण की होजाती है।

सुवर्ण भस्म गुण।

सवैया—रीति कही हमने मनसें तेहि जान सुवर्ण की भस्म बनावे। चावल एक प्रमाण ले तेहि साथ चिरौंजी में प्रातहि खावे। पुष्ट करे नित ही वपु को अरु भूख बढ़े पुनि काम जगावे। कासरु श्वास हरे तुरते अरु पेट के रोग को बेगि नशावे॥ १॥

दोहा—मधुर रूक्ष खावे नहीं, बहुत खटाई त्याग।
पथ्यलहे आरोग्य हित, बरणयो तबहितलाग॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रौप्य (चाँदी) शोधन प्रकार ।

जो विधि सुवर्ण के शुद्धि करने में लिखी है वही विधि चाँदीको शुद्ध करने में जानना। तथा चाँदी का विशेष शोधन इस प्रकार होता है कि चाँदी के पतले २ पत्र कर आग में तपाय अगस्त के रसमें तीन बार बुझावे, अथवा इमली और दाख के रसमें अलग २ तीन २ वार बुझावे तो चांदी बहुत ही शुद्ध होजाती है।

चांदी की परीक्षा ।

तोल में भारी, नरम, तपाने और छेद में सफेद चोट के सहारे, किसी धातुकी मिलाबट न हो ऐसी चांदी निर्मल होती है, इससे विपरीत दो धातुओं से मिली हुई कठोर, लाल, पीली वा काली, चमकदार, हलकी, काटने और फूँकने से बिगड़ जावे तो ऐसी चांदी उत्तम नहीं जानना।

रौप्य भस्म विधि ।

शुद्ध चांदी के पतले पत्र ले पारा मिलाय एक गोला बनावे और चांदीके बराबर हरताल व गंधक नीबू के रसमें मिलाकर जो रीति प्रथम सुवर्ण के मारण में लिखी है उसी रीति से पुट पाक करे, तो दो तीन पुट में चांदी भस्म हो जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बूटी से रौप्य भस्म विधि।

गेहूँ व चना के खेत में जो तितली का वृक्ष होता है उसके रसमें चांदीके शुद्ध पत्रको भिगोय तितली की आधसेर लुगदी में एक तोला चांदी रख कपड़ मिट्टी करके गजपुट में फूंक दे तो भस्म होजावे। तथा मेंहदी के रसमें आठवार बुझाकर मेंहदी की आधसेर लुगदी कर बीच में चांदी को रख कपड़ मिट्टी कर सुखायले, और गजपुट की आँच दे तो भस्म हो जावे। तथा छोटी दुद्धी के रस में शुद्ध चांदी को गरम कर सातवार बुझावे, फिर दुद्धी की लुगदी में रख ४ पाथियों में अग्नि देवे इस प्रकार सातवार करने से चांदी फूल कर खील हो जाती है फिर घोट कर दुद्धी के रस में दो लघु पुट देवे तो बहुत अच्छा भस्म हो जाती है इसी को रूप रस कहते हैं।

रूप रस गुण।

यह रूपरस एक रत्ती मात्र लेकर बलवान् मनुष्य शक्कर के साथ सेवन करे तो दाह नाश होता है, त्रिफला के साथ सेवन करने से वात, पित्त की शान्ति होती है इलायची, दालचीनी, और तेजपात के साथ सेवन करने से प्रमेह आदि रोगों का विनाश होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा सवैया ।

पान इलायची के संगमांहि प्रमाण रत्ती रस रूप धरे ।
श्वास रुकास हरे कफ नाशहि काम जगे और भूख करे ॥
पुनि दाहरु शीतकि हानि करे सब अन्न विकारको वेगि हरे ।
सेवन कीजिये याहि अवश्य शरीर को नित्यहि पुष्ट करे ॥१॥

तांबे का विशेष शोधन ।

थूहर का दूध, गौका दूध, इमली व नीबूका रस, घी ग्वार के पट्ठे का रस, नारियल का रस, गौका घी, जिमीकन्द, दही का पानी, दाखका रस और शहत इनमें तांबे को तपा तपाकर सात २ वार बुझावे, तो तांबा बहुत शुद्ध होजाता है ।

तांबे की परीक्षा ।

जपा के पुष्प समान लाल हो, कोमल, चिकना घनकी चोटको सहने वाला, सिक्का जिसमें मिला न हो, ऐसा तांबा व्यवहार के योग्य होता है, और जो कठोर, सफेद रंग, रूखा, व काला हो वह शोधन व मारण के योग्य नहीं होता है ।

ताम्र मारण विधि ।

पारे और गन्धकको नीबूके रसमें मिलाकर तांबे के पत्र पर लेप करे और सरवों के सम्पुट में रख तीन वार पुट देने से ही तांबा भस्म होजाता है । तथा शुद्ध तांबेके पत्रोंको बहुत महीन नख समान छोटे २ खंड करके नीबू के रस में डाल तीन वार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थोड़ा २ स्वेदन करके पचावे, अनन्तर पत्रों को निकाल उनका चौथाई पारा लेकर दोनोंको खरल में डाल नीबू के रस से एक पहर तक घोटे, फिर उसको खरल से निकाल, दूने गन्धक को नींबू के रससे घोटकर पत्रों पर लेप करे और गोला बना लेवे. अनन्तर चूका, मछेली, सांठी इनमें से जो मिले उसको पीसे उससे ताम्र पत्र पर एक अंगुल मोटा लेप करके उस गोले को किसी पात्र में रख उस पर मिट्टीका सरवा उलटा ढककर उसके ऊपर मुख पर्यन्त बालू भरे, फिर नमक और राख को जल में मिलाय उस पात्र के मुखपर उसकी मुद्रा देकर चूल्हे पर चढ़ाय धीरे धीरे चार प्रहर पर्यन्त मन्द मध्यम और तेज आंचदेवे, जब स्वांग शीतल होजावे, तब बाहर निकाल कर जिमींकन्द के रसमें एक दिन खरल करे, फिर गोला बनाय उस से आधे गन्धक को पानी में पीस कर गोले के चारों ओर लेप करे, अनन्तर मिट्टी के दो सरवा लेके एक में गोला को रख दूसरे से बन्द करके कपड़ मिट्टीकर अन्ने उपलों के गजपुट में रखकर फूंक देवे जब स्वांग शीतल होजावे, तब उस सम्पुट को बाहर निकाल उसमें से ताम्र भस्म की युक्ति से निकाल लेवे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताम्र भस्म गुण।

एक चांवल से एक रत्ती तक बल के अनुसार ताम्र भस्म लेकर पान में रख प्रातः समय और सायंकाल सेवन करे ऊपर से गौका दूध पीवे तो दाह, मूर्च्छा प्रमेह, रुधिर विकार, वमन और चित्तभ्रम आदि रोग कम हो, शरीर पुष्ट हो, दूध और भात का पथ्य करे। खटाई तेल आदि न खावे।

सीसा शोधन विधि।

सीसे को लोहे के पात्र में खैर की लकड़ी से गला कर घी ग्वार के पट्ठे का रस और त्रिफला (आंवला हर्र बहेड़ा) के काढ़े में सात वार बुझावे, तो सीसा शुद्ध होजाता है।

सीसा मारण विधि।

नाग (सीसा) को समान भाग जवाखार समेत कढ़ाही में चढ़ादे जब तक सीसा भस्म न होजाय तब तक बराबर जवाखार देते जाना, लाल लाल भस्म होजाने पर जलसे धोकर आंचपर सुखालेना इस प्रकार सीसा भस्म होकर पीले रंग का होजाता है। तथा नागर बेलके पानों का रस निकाल कर उसमें मैनसिल पीसे और मैनसिल के बराबर सीसेके शुद्ध पत्र लेकर उस पर मैनसिल का लेप-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करे फिर दो सरवा लेकर एकमें शीशे के पत्रोंको रखकर दूसरा ढक देवे, फिर कपड मिट्टी कर धूप में सुखाय एक गढ़ा खोदकर बिनौआ उपलों को नीचे ऊपर रखकर बीचमें सराव संपुट रख गजपुट का देवे इस प्रकार बत्तीस आंच देने पर (सीसा) ऐसा भस्म होजाता है कि फिर नहीं जोता इसी को नागेश्वर कहते हैं।

नागेश्वर गुण।

दो०—जाके सेवन मात्र से, सकल रोग नशिजाहिं।
करे नागसम नाम बल, मानुषके तनमाहिं॥

एक चांवल से एक रत्ती भर तक बलानुमान मिश्री व माखन के साथ धातुक्षीण तथा सुजाक रोग वाले को देना, बंशलोचन और छोटी इलायची के साथ तथा श्वेत जीरे में प्रदर रोग में देना, और पानमें रखकर कासश्वास और प्रमेह में देवे।

बंग (रांग) शोधन बिधि।

हलदी मिले हुए सँभालू के पत्तों के रसमें गला गला कर तीन बार बुझावे तो रांगा बहुत शुद्ध होजाता है।

बंग परीक्षा।

बंगकी उत्पत्ति पर्वत से है खुरक और मिश्रक यह दो भेद रांगे के हैं इसमें खुरक शोधन मारण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के योग्य होता है। मिश्रक में मिलावट होती है।

बंग भस्म विधि।

लोहे की कड़ाही में पहले रांगे को चढ़ाना फिर उसके बराबर हलदी का चूर्ण, अजबायन का चूर्ण, सफेद जीरे का चूर्ण, पीपल की छाल का चूर्ण, एक एक के उपरान्त दूसरा चूर्ण मिलाकर चलाना, जब सब जल जाय तब नीचे उतार कर ठंडा होने पर राँगे का भस्म तैयार हुआ जानना। तथा शुद्ध राँगा चार तोला लेकर गलावे राँगको चलाता जाय और इमली व पीपल की छाल का चूर्ण उस पर बुरकता जावे तो दो घड़ी में उत्तम बंगरस बनजाता है। तथा चूल्हे पर मिट्टी के खपरे में राँगा डाल कर गलावे जब रस रूप होजाय तब इमली की छाल का चूर्ण और पीपल की छाल का चूर्ण राँगे से चौथाई लेकर उस गले हुये राँगे पर थोड़ा थोड़ा डाल कर लोहे की कलछी से चलाता जाय ऐसा करने से दो प्रहर में राँगे की भस्म होजाती है फिर भस्म के बराबर हल-ताल ले दोनों को नीबू के रस में खरल करके दो सकोरों के संपुट में रख कपड मिट्टी कर, फिर एक गढ्ढा खोद बिनुआ कंडों के गजपुट में फूंक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवे, जब स्वांग शीतल होजावे तब बाहर निकाल ले फिर उस भस्म का दशवां हिस्सा हरताल ले नींबू के रस में दोनों को खरल कर दो सकोरों के सम्पुट में रख कपड मिट्टी करके सूर्य की धूप में सुखाय बिनौआ के कंडों के गजपुट में फूंक देवे इस प्रकार दश अग्निपुट देने से रांगा भस्म हो जाता है, इसी को बंगेश्वर कहते हैं, कच्चा रांगा कुष्ट आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करता है इस कारण ध्यान देकर बङ्ग की भस्म करे।

वंग भस्म गुण।

वंशलोचन, दालचीनी, लौंग, जायफल, इलायची, जावित्री, मुलहटी, अजमोदा, शतावरि, नागौरी असगंध, यह नव औषध एक एक वा दो दो तोला लेवे, इनका चूर्ण कर सबके बराबर मिश्री लेकर उसमें १ तोला बङ्ग मिलावे तथा दो दो तोला औषधि हो तो २ तोला बङ्ग मिलाय चार माशे वा छः माशे प्रमाण प्रातःकाल मक्खन के साथ और सायंकाल भैंसीके दूध के साथ खावे तो बल बीर्यकी वृद्धि हो। तथा इसे बरास कपूर, के साथ सेवन करने से मुखकी दुर्गन्धि दूर होती है,तुलसी पत्र के साथ प्रमेह, घी के साथ पांडुरोग फुलाये सुहागे के साथ गुल्मरोग, खांड के साथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पित्त रोग, पान या पीपल के साथ अजीर्ण, हलदी के साथ उर्ध्वश्वास, चना के रस के साथ दुर्गन्धि, नीबू के रस के साथ दाह, लशुन के साथ लकवा, समुद्रफेन के साथ कुष्ठरोग जाते रहते हैं।

कुण्डलिया।

जिमि घोड़े को तक्र रक्त रणमें दिखलावै।
तिमि नरके यह वज्र अङ्ग सबही फरकावै॥
तनमें बहु सुख होय वीर्य बल बुद्धि करीजै।
दो रत्ती भर खाय दुग्ध पीछे जो पीजै॥
कहत मुकुन्द बिचारि वज्र सबको हितकारी।
बिधि अनुपान प्रमाण याहि सेवै नरनारी॥ २॥

जस्त शोधन।

जस्त को पूर्वोक्त तेल छाछ आदि पाँच वस्तुओं से शुद्धि करके घी ग्वारका रस और त्रिफलाके काढ़े में सातबार बुझावे तो जस्त शुद्ध हो जाता है।

जस्तामारण बिधि।

जस्त के पतले पत्र अग्नि में तपाकर सातवार नीबू के रसमें बुझाकर शुद्ध करे फिर उन पत्रों के समान गन्धक लेकर आक के दूध में खरल कर पत्रों पर लेपे और मिट्टी की मूष से उसका मुख बन्द कर देवे, और कपड़ मिट्टी करके अन्ने कंडों के गजपुट में फूंक दे ऐसे दो अग्निपुट देने से जस्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भस्म हो जाता है इसी रीति से पीतल वा कांसे की भी भस्म हो जाती है।

बूटी से जस्त मारण विधि।

तांबे के पात्र में शुद्ध जस्त को गलावे उस पर बथुई का रस छोड़ता जाय कलछी से चलाता जाय तो तीन घड़ी में जस्त भस्म हो जाता है।

जस्त भस्म गुण।

छप्पय श्वेतरङ्ग यह जस्तभस्म रत्ती भर खावे।
माखन सों सचिलाय बीर्य बल बुद्धि बढ़ावे॥
नेत्ररोग सब हरे करे गुण कफ हरि लेवे।
पित्त प्रमेह विकार पांडु खोबन हित सेवे॥ १॥

लोह शोधन विधि।

पूर्वोक्त तेल आदि पाँचों वस्तुओं में लोहे के पत्रों को सात सात बार बुझाकर गायका दूध, थूहरका दूध, इमली का पानी, दाखका पानी, नींबूका रस जिमींकन्द का रस, शहत, इन सातों पदार्थों में सात २ बार बुझाने से लोहा शुद्ध होजाता है।

लोह भस्म विधि।

शोधित लोहेका चूर्ण गोमूत्र में घोलकर सौबार गजपुट में फूंके इस क्रिया से साधारण लोहभस्म होजाता है, लोहा जितने बार गजपुटमें फूंकाजाय उतना ही गुण अधिक होता है। तथा पोलाद अथवा खेरी लोहेको रेतीसे रेतवाय ब्राह्मी के पत्तों की लुगदी में रख गोली बनाय कपडामट्टी कर धूप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में सुखाय गजपुट में फूंक देवे तो बैंजनी रंगका रस बन जाता है। तथा शोधित लोह लेकर एक सेर अनार के रस में ४ तोला लोहा डाल पन्द्रह दिन धूपमें रख देवे, सोलहवे दिन बीस सेर देशी उपलों में फूंक दे तो लोहसार बन जाता है।

लोह सार गुण।

दोहा—लोहसार नर देहको, लोहा सम करि देय।
कासश्वांस आदिक सकल रोगतुरत हरलेय॥

त्रिफला, त्रिकुटा, जीरा मोथा, अकरकरा, शतावरि ये सब बराबर लेके तीसरा भाग शुद्ध रस ले, सबके बराबर मिश्री मिलाय दुग्धके साथ भक्षण करे २१ दिन खाने से बलवीर्य बृद्धि होवे।

[तथा] शूल रोग में घी शहत और हींग के साथ खावे, प्राचीन ज्वर में पीपल के साथ, वात रोग में लहसन और घी के साथ, दमा (क्षय) में सोंठ, मिर्च, पीपल और शहत के साथ, शीत में मिर्च के साथ, और प्रमेह में त्रिफला और शक्कर के साथ सेवन करे, सन्निपात में शहत और अदरक के रस के साथ, वातज्वर में घी के साथ, पित्त ज्वर में शहत के साथ, कफ ज्वर में और सब प्रकारके वात विकार में अदरक के रस के साथ सेवन करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ उपधातु शोधन मारण विधि ।

तत्र प्रथम सोनामक्खी शोधन विधि ।

तीन भाग सोनामक्खी, एक भाग सेंधा लवण इन दोनोंको पीसकर कड़ाई में डाल चूल्हे पर चढ़ा कर नीचे आग जलादेवे, फिर बिजौरा वा जँभीरी के रसको उसमें डालकर लोहे की कलछी से घोटे, जब लाल २ होजावे तब ठन्डा कर लेवे, अथवा सोनामक्खी को तपाकर त्रिफला के काढ़े में घोटे तो शुद्ध होजावे ।

सोना मक्खी मारण ।

कुलथी का काढा, तिल का तेल, छाछ, इनमें अथवा गोमूत्र में सोनामक्खी को खरल करके दो सकोरों के सम्पुटमें रख कपडमिट्टी करके विनुआ उपलों की अग्नि में फूंक देवे, तो सोनामक्खी की भस्म होजाती है ।

सोना मक्खी रस का गुण ।

होहा-सोनामक्खी रस करत, नरतनु स्वर्ण समान ।
उभय काल गोदुग्ध सों, सेवे बल अनुमान ॥

रूपामक्खी शोधन विधि ।

रूपा मक्खी को कपड़ेसे बांध एक हांडी में होला यंत्रके समान लटका देवे और उस हांड़ी में नीबू का रस, गोमूत्र, कांजी, अरणीका रस इनको भर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवे, फिर उसके नीचे तीन दिन आग जलावे तो शुद्ध होजावे, अथवा ककोड़ा, व मेढासींगी, व जँभीरी के रस में घोटकर सूर्य के ताप में सुखावे, तो शुद्ध होवे।

रूपामक्खी मारण।

तिलका तेल अथवा मट्ठा किंवा बकरी के मूत्रमें रूपामक्खी को मर्दन करे पुटपाक में फूंकने से भस्म होजायगी, अथवा रूपामक्खीको सोनामक्खी के अनुसार भस्म कर लेवे।

रूपामक्खी भस्म गुण।

दो०—रूपामक्खी रस करते, निर्मल गद तत्काल।
रत्तीभर नर दुग्धसों, सेवे नर दोउकाल॥

नीलाथोथा शोधन।

कबूतर और बिल्लीकी बीट नीलाथोथाके समान लेकर उससे दसवां भाग सुहागा लेके एक में मिलावे और खरल करे, फिर दो सकोरों के सम्पुट में रख कर कपड़ मिट्टी करके अन्ने कंडों की आंच में फूंक देवे तदनन्तर उसको निकाल दही में खरल कर सराव सम्पुट में रख कपड मिट्टी कर फिर अन्ने कंडों की आंच देवे फिर शहत में खरल कर पूर्वोक्त रीति से आंच देवे तो नीलाथोथा शुद्ध होवे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरताल शोधन विधि।

हरताल के छोटे छोटे टुकड़े कर दोलायन्त्र द्वारा प्रथम त्रिफला के काढ़ा में एक प्रहर पर्यन्त पकावे, फिर सफेद कुम्हड़ के रसमें, फिर कांजी में, फिर तेलमें एक एक प्रहर पर्यन्त इस प्रकार पकावे अथवा चार पहर पर्यन्त चूना के पानी में दोला यन्त्र द्वारा स्वेदन करे तो हरताल शुद्ध होजाताहै, अथवा एक कुम्हड़े पर चार अंगुलकी टांकी देकर उसमें हरताल को बांध कर रक्खो, और उसी टांकी से बन्द कर देवो, फिर एक खपरे में नीचे के भाग की ओर रखकर चार प्रहर तक आंच देवे, जब कुम्हडा गलकर चार अंगुल रह जाय तब हरताल की पोटली को निकाल कर फिर दूसरे कुम्हेड़े में पूर्वोक्त प्रकार से आंच देवे, इस प्रकार तीन आंच देवे और निर्मल जल से धो डाले तो हरताल शुद्ध होजाता हैं।

हरताल मारण विधि।

एक तोला भर हरताल की डेली को एक छटांक भंगरा के रसमें डाल एक कुंज्जे में रख ऊपर से एक सकोरा अच्छे प्रकार ढक कपडमिट्टी करके तीन सेर बिनुआ उपलों में फूंकदे तो हरताल भस्म हो जाता है। तथा हरताल की डेली एक तोला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रमाण लेकर सात तोले फटकरी के चूर्ण को उस के नीचे ऊपर डाल एक कुंजे में भली भांति सम्पुट कर तीन सेर बिनुआ कंडों में फूंकदे तो सफेद रङ्ग का होकर उत्तम भस्म हो जायगो।

हरताल भस्म गुण।

दो०-नारायण हरताल रस प्रात पान में खाय।
दूध भात भोजनकरे, कुष्ट आदि नशजाय॥१॥

सुरमा शोधन विधि।

सुरमा के चूर्ण को एक दिन जँभीरी के रस में खरल कर धूपमें सुखा लेवे तो शुद्ध हो जायगा, तथा सुरमा को एक प्रहर तक कांजीमें दोलायंत्र द्वारा पकावे तो शुद्ध हो जायगा, तथा सुरमा को जँभीरी के रस में पुट देके एक दिन धूप में सुखावे तो सुरमा शुद्ध हो जायगा। तथा सुरमा की बुकनी को बड़े नींबू के रसकी भावना देकर धूप में सुखावे तो सुरमा शुद्ध होजाता है।

अभ्रक शोधन विधि।

अभ्रक तपा तपा कर त्रिफला का काढ़ा, कांजी गौ मूत्र, गौ का दूध, इनमें पृथक २ तीन तीन बार बुझावे। तथा अभ्रक को अग्नि में तपाकर गौ के दुग्ध में बुझालेवे फिर पृथक २ पत्र कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के चौलाई व खटाई के रस में आठ प्रहर भिगो रक्खे, तो शुद्ध होजावे।

अभ्रक मारण विधि।

शुद्ध किये हुये अभ्रक के अलग २ पत्र करे फिर उनको कूट पीस महीन कर सुखावे अनन्तर कम्बल में काले बीचमें धान मिलाय दोनों मसल मसल पानी काले कंबल से अलग बासन में निकाले तब यह धान्याभ्रक मारने योग्य होवे, उस धान्याभ्रक को आक के दूध में एक प्रहर पर्यन्त खरल कर गोल २ चक्राकार एक टिकिया बनाय उसके सब ओर मदार के पत्ते लपेट दो सकोरों के सम्पुट में रख कपड़ मिट्टी करके धूप में सुखाय आरने कंडों रख गजपुट में फूंक देवे, फिर उसको निकाल मदार के दूध में एक दिन खरल करे रात भर पुट देवे इस प्रकार सात पुट देवे, फिर बरगद की जटा के काढ़े में एक २ दिन खरल करे और आंच देवे ऐसे तीन पुट दे तो अभ्रक की भस्म उत्तम होता है, तथा सफेद व काला अभ्रक लेकर उसको महीन करे और मूली के रस में तर करके मटकी में रख मुख मुद्राकर सात दिन तक धूप में रक्खे, अनन्तर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मूली के रस में खरलकर चार पुट देय तो अभ्रक भस्म चोखी होजावे।

अभ्रक भस्म गुण।

कैंचके बीज, तालमखाना, सेंधा लवण, असगंध, बंशलोचन, दालचीनी, बेलगिरी, बदाम, खस, भांग के बीच, इलायची, कमलगिरी, अजवायन, लोंग, गोखरू, मूसली इन्द्रजब, सबसे दूनी मिश्री मिलाय चूर्ण बनाय रक्खे, छः मासे चूर्ण के साथ दो रत्ती प्रमाण अभ्रक भस्म कच्चे गो दुग्ध के साथ सेवन करे, तो अकाल मृत्यु जरा आदि विकारों को दूर करके बल बीर्य को बढ़ाता है।

मैनशिल शोधन विधि।

मैनशिल की बुकनी को चूने के पानी की सात भावना देने से शुद्ध होता है। तथा दोला यंत्र द्वारा बकरी के मूत्र में तीन दिन पकाय करछुली, खपरा व गर्म तवा पर रखने से मैनशिल शुद्ध होजाता है।

मैनशिल भस्म विधि तथा गुण।

मैनशिल को हरताल भस्म की रीति अनुसार भस्म करके उसी प्रमाण सेवन करे तो कुष्ट आदि रोग नाशे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खपरिया शोधन विधि।

दोलायन्त्र पर सात दिन पर्यन्त गोमूत्र में पकाने से खपरिया शुद्ध होजाता है।

खपरिया भस्म विधि।

लोहे की कड़ाही में खपरिया को रख चूल्हे पर चढ़ाय आंच देवे गलजाने पर थोड़ा २ सेंधालवण की बुकनी छोड़े जब तक भस्म न होजाय तब तक ढाककी लकड़ी से चलाते जाना, तो उत्तमता से भस्म होजाती है।

पारा शोधन विधि।

स्वेदन मर्दन आदि भेदसे पारेके अनेक संस्कार हैं अनेक दोषों से युक्त होने के कारण पारे को ध्यान देकर शोधना चाहिये, शुद्ध किया हुआ पारा कुष्ट आदि रोगों का विनाश करता है और बिना शुद्ध किया हुआ पारा कुष्ट आदि रोगों को उत्पन्न करता है।

हिंगुल (शिंगरफ) से पारा निकालना।

जिस शिंगरफ में पारा अधिक हो उसको नीम के पत्तो का रस, अथवा जम्भीरी नीबू के रस में चार घंटा खरल करे, एक हांड़ी में रखना, और एक ढकना उलटी हांड़ी को ऊपर मिट्टी से लेप देना और ढकने के ऊपर थोड़ा पानी रख नीचे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आग जलाना, ढकने का पानी गरम होने पर वह निकाल के फिर ठंडा पानी देते जाना, इसी प्रकार तीसवार पानी बदलने से हिंगुल का पारा उस ढकने के ऊपर चारों ओर लग जायगा, अथवा अधिक पारे वाले हिंगुल को नीबू के रसमें एक दिन भर मर्दन करके डमरूयन्त्र से तीन प्रहर की आँच देवे, पूर्व शीतल होजाने पर ऊपर के पात्र के पेंदे में लगा हुआ पारा निकाल कर नीम अथवा नीबू के रस में एक प्रहर पर्यन्त मर्दन करे तो पारा बहुत शुद्ध होजाता है।

पारा मारण विधि।

पारे को एक शीशी में रख उसमें मकोई का रस डालकर एकदिन पर्यन्त हिलावे, अनन्तर निकालकर उसको गूलरके दूध में खरल करे फिर घिसी हुई हींगकी घरिया में पारेकी गोली रखकर मुलतानी मिट्टी की कपडौटी करके सुखावे फिर एक सेर उपलों की भूभल में पकावे, उसकी क्रिया यह है कि एक कोरा ठीकरा लेकर उसमें भूभल को डाल पारेकी गोलीको आधी नीचे ऊपर देकर ऊपर से किसी भांति दबाय नीचे आग जलावे जब देखे कि अब भूभल भली भांति गरम होगई है, तब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अग्नि बन्द करदे, जब स्वांग अच्छे प्रकार शीतल होजावे तब उतारले, परन्तु पूर्वोक्त गोली की यह युक्ति है यदि कपडौटी करै तो गजपुट में फूंकदे, तो पारा खील होजाता है। (अथवा)

पारा रस गुण।

दो०—पारा रस यह पान में, रत्ती एक प्रमान।
सेवे कुष्ट बिनास हित, होय क्लीब बलवान॥

अथ विष शोधन विधि।

वत्सनाग, हारिद्र, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृंगिक, कालकूट, हालाहल, ब्रह्मपुत्र, विषके ये नव भेद हैं। इनमें से जिस विषका शोधन करना हो उसके टुकड़े चने के समान करके गोमूत्र में दोला-यन्त्र द्वारा तीन दिन पकावे फिर उसके बराबर सुहागा मिलाकर खरल कर लेवे तो वह विष दोष रहित होजाता है।

अथ उपविष शोधन विधि।

थूहर का दूध, आक का दूध, कनेर करियारी, अफीम. गुंजा (घुंघची) धतूरा ये सात विष हैं। इनमें जिसका शोधन करना हो, उसको पंचगव्य अर्थात् गो दुग्ध, गोदही,, गोमूत्र व गोबरमें दोला यंत्र द्वारा शुद्ध कर लेवे, इनका विशेष शोधन आगे लिखेंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संखिया मारण विधि ।

चार तोला पापर खारके बीच एक तोला संखिया को रखकर मिट्टी की ढकनी में धर देवे, ऊपर से कपड़ मिट्टी कर छाया में सुखाय बीस सेर कंडों में फूंक देवे तो संखियाकी उत्तम भस्म होजाती है।

संखिया भस्म गुण ।

रोगी का बलाबल विचार आधे चांवल से एक चांवल प्रमाण बताशामें रखकर सेवन करे, ऊपरसे मिश्री दूध में डालकर पीवे, भोजन के समय घी अधिक खाय तो कास, श्वास, दमा, शीतज्वर, पित्तज्वर इनको मिटावे ।

कुचिला शोधन ।

घीमें भून लेनेसे कुचिला शुद्ध होजाता है, तथा गौके मूत्रमें कुचिला को दशदिन तक भिगो रक्खे फिर निकाल कर छीले और टुकड़ा २ कर डाले अनन्तर दूधमें पकावे तो कुचिला शुद्ध होजाता है।

गैरिक (गेरू) शोधन ।

गौके दूध में पीने से अथवा गौ के घी में भून लेने से गेरू की शुद्धि जानना ।

गन्धक शोधन ।

एक लोहे की कलछी में घी डाल कर आग पर तपाना फिर उसमें पिसा हुआ गन्धक डालना जब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गल जाय तब गौके दूध में बुझाना, यहां गन्धक और घी बराबर लेना और मन्द मन्द आंच करना, तो गन्धक शुद्ध होजाता है।

हिंगुल शोधन।

अम्लवर्ग और भैंसी के दूध की, अथवा मेंडी (भेडी, लरडी) दुग्ध, और नीबू के रसकी ७ पुट भावना देवे तो हिंगुल शुद्ध होजावे।

हिंगुल (शिंगरफ) मारण।

शिंगरफ चार तोला लेकर नीबू के पत्तों में पोट टिकिया बनाय गौरी यन्त्र में फूंकदे जब पारा ऊपर की हांडी पर उड़ने लगे तो जाने कि शिंगरफ ठीक बन गया।

गौरी यन्त्र नं० ८

(शिंगरफ गुण)—शरद ऋतु में सेवन करने योग्य शिंगरफ पान में खाने से पीलिया तिल्ली नेत्र रोग को हरे।

शीलाजीत शोधन।

शिलाजीत का छोटा छोटा टुकड़ा करके कुछ गरम जलमें भिगोवे फिर हाथ से घोल कर कपड़े से छाने और मिट्टी के पात्र में रख धूप में धरे, और पानी के ऊपर का पदार्थ किसी दूसरे पात्रमें निकाल लेवे इस प्रकार लगातार दो महीना पर्यन्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निकालता जाय, शुद्ध शिलाजीत आग पर रखने से उबलने लगता है यही परीक्षा है। तथा गाय का दूध, भंगरा का रस त्रिफला का काढ़ा इनमें शिलाजीत का एक एक दिन खरल करके धूप में रखता जाय तो शिलाजीत शुद्ध होजाता है।

सिन्दूर शोधन।

दूध और अम्लरस की भावना देने से सिन्दूर शुद्ध होजाता है।

शंखकौड़ी भस्म विधि।

शंख कौड़ी को लाल करके आठबार नीबू के रस में बुझावे तो शंख कौड़ी भस्म होजावे।

शंखकौड़ी भस्म गुण।

दो०—शंख कपर्दिक भस्म यह, प्रात पानमें सेय।
कास, श्वासविकार अरु,नेत्ररोग हरिलेय॥१॥

टङ्कन (सोहागा) फिटकरी शोधन।

फिटकरी वा सोहागा को लेकर नीबू के रस में खरल कर गोली बनाय गज पुट की आंच देने से शुद्ध हो जावे है, अथवा गोबर से सोहागा को लपेट रखने तथा आग पर लावा (फुलिया) बनाने से शुद्ध होता है।

धतूरा शोधन।

धतूरे के बीज की बकली त्याग कर गूदी (गिरी)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के खंड खंड कर गौ मूत्र में अथवा गाय के दूध में चार प्रहर पर्यन्त भिजो रक्खे फिर निकाल कर धो डाले तो शुद्ध हो जाता है, यह धतूरा नशा करता है, अग्नि को बढ़ाता है, बमन करता है और ज्वार आदि को दूर करता है।

जमाल गोटा शोधन।

जमाल गोटा की बकली निकाल उसके भीतर की एक पतली जीभसी होती है उसको भी निकाल कर फेंक देवे और फिर जमाल गोटा को ले एक कपड़े में बांध कर तीन दिन पर्यन्त भैंस के गोबर में दबा रक्खे, तदनन्तर उसको निकाल के गरम जल से धोवे, और बहुत बारीक वस्त्र में पोटली बांधे, फिर इस युक्त से खरल करे कि, उसका तेल वस्त्र ही में सूख जाय, और नये खपरे पर उसको लेप देवे जब तेल उसमें न रहे और वह धूल के समान हो जाय तब सूख जाने पर छीलकर नीबू के रसकी भावना देवे तो जमाल गोटा शुद्ध हो जावे। यह जमाल गोटा कफ और पित्त को हरता, दस्त लाता, विच्छू के विषको शांति करता और उदर रोग को दूर करता है।

भिलावा शोधन विधि।

ईंट वा खपरा को पीस कर कपड़े से छीन लेवे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसके चूरे में भिलावा के बीजों का नाका काट के भिलावे और कपड़े की एक थैली में भर कर एक दिन रात पर्यन्त रख छोड़े उपरान्त उसको निकाल गरम जल से धोकर दूध में दोलायन्त्र द्वारा शुद्ध कर लेवे। फोड़ा, खांसी, दमा, खाजको हरता है।

वत्सनाग शोधन।

एक वस्त्र में बच्छनाग के बारीक टुकड़ों को बांध कर बकर और गाय के दूध में दोलायन्त्र द्वारा एक प्रहर तक पचावे तो बच्छनाग शुद्ध हो जाता है।

अर्क (मदार) शोधन।

मदार का दूध खरल करने ही मात्र से शुद्ध हो जाता है। यह दस्त लाता, कुष्टरोग, कृमिरोग, बवासीर, कफरोग तापतिल्ली, वादी उदररोग और फोड़ा को दूर करता है।

अहिफेन [अफीम] शोधन।

अफीमका कचरा निकालके इक्कीस वार अदरखके रसकी भावना देने से अफीमकी शुद्धि जानना।

समुद्रफेन शोधन।

कागजी नीबू के रसमें पीस लेने से समुद्रफेन व्यवहार के योग्य होजाता है।

हिंग शोधन।

गरम कड़ाही में थोड़ा घी डालकर उसमें हींग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूंजने से लाल होजाने पर हींग को शुद्ध हुवा जानना।

गुंजा (घुंघुची) शोधन।

गुंजा को कांजी में एक प्रहर तक पचाये शीतल होजाने पर उतार ले, तो व्यवहार के योग्य जानना। यह गुंजा दाद, खाज, खांसी, कुष्ठ, पित्त कफ सम्बन्धी रोगों को दूर करती है और हलकी है शीतल है।

कनेर शोधन।

कनेर के टुकड़ों को गाय के दूध में दोला यंत्र द्वारा पचावे तो शुद्ध होवे, यह नेत्र रोग व खाज को गुणकारी है और गरम है। इसकी जड़ की छाल ली जाती हैं।

गुग्गुल शोधन।

दशमूल के काढ़े में निर्मल गूगल मिलाकर छान ले और धूप में सुखाव घी के सहारे से गोली बनाय रखने से गूगल शुद्ध होजाता है।

दोहा—नारायण विनवत सदा, कर्ता श्रीभगवान।
भूलचूककोदेखिके, क्षमिहैं वैद्य सुजान ॥१॥

इति श्रीरसराज महोदधी धातूपधात्वादि शोधन मारण वर्णन नाम द्वितीयस्तरङ्गः ॥ २ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ स्थावर जंगम विष चिकित्सा।

१ स्थावर २ जंगम नाम से दो प्रकार का विष होता है, इसमें स्थावर विष बूटी आदि के खानेसे शरीर में फैलता है, जैसे धातुओं में संखिया, हरताल सिंगी मोहरा आदि बूटियों में जमालगोटा भांग, अफीम आदि, यही स्थावर विष जानना, और सांप आदि जीवों के काटने से जो विष चढ़ता है उसको जंगम विष जानना, दोनों विषों का यत्न अब लिखते हैं, यहां प्रथम स्थावर विष की शांति का उपाय लिखा जाता।

दो०—मधु सैंधव घृत नीमके पात मिर्च ले खाय।
तोसबविषसबभांतिके, स्थावर जंगम जाय॥

तत्रादौ स्थावर विष चिकित्सा।

विष मात्र सब गरम हैं जो कोई भी विष खालिया हो तो औषधियों के द्वारा वमन करावे, और शीतल यत्न सब प्रकारसे करे, घी और शहत मिला औषधि देवे मिर्च खटाई आदि का त्याग कर देवे, लवणके स्थानमें सेंधा लवण देना। यदि कोई भी रस खालिया हो तो मिश्री घी दूध का सेवन करे तो शरीर निर्विघ्न हो जाता है। तथा विष अधिक खालेने से भी पथ्य से रहने के अतिरिक्त घी, दूध, मिश्री गेहूँ की रोटी, भात, खीर,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आदि पदार्थ खाने से विष की शान्ति होजाती है। वमन करना और जुलाव देना सब विषों की शान्ति करने में हितकारी है। तथा–

सिरसका पचांग कांगनी का पंचांग, गौमूत्र में पीसकर लेप करे, अथवा लोध, पीपल, इलायची छड, नेत्रवाला, कालीमिर्च, सोनागेरू इनको जल में बारीक पीसकर लेप करे तथा पीवे। तथा चौलाई की जड़ जल में बारीक पीसकर पीवे तो स्थावर जंगम विष उतर जावे।

दो०–पानी में ले फटकरी, अरु मूली पिसवाय।
सो प्यावे मदमत्तको नशावेग घटिजाय॥१॥
तालमखाना लायके, दूधमांहि पिसवाय।
मदमाते को प्याइये, नशा तुरत घटिजाय॥२॥

प्रत्येक नशामें शीतल जल शिर पर डालना हितकारी है, परन्तु नशा खाने वाला रोगी किसी अन्य रोग से पीड़ित न हो तथा कोई भी विष खा लिया हो तो हुलहुल के बीज १५ माशे पीसकर खाय, अथवा मौठकी जड़, कसौंदी की जड़ बराबर लेकर जलमें घोटकर पिलावे तो बमन होकर विष निकल जाता है। बमन के उपरान्त पतला मठ्ठा सौंठ मिलाकर पिला देवे, अथवा एक तोले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घी में आधसेर दूध पका कर मिश्री मिलाकर पिला देवे।

संखिया विष निवारण।

गौका घी गरम करके पीवे अथवा दूधमें मिश्री डालकर पीवे तो संखिया तथा सिंगीं मोहरा, हरताल आदि रसों के विषकी शान्ति होजाती है। अथवा संखिया से दूनी फटकरी जल में घोलकर पीवे, अथवा नमक और पिसी हुई राई ठण्डे अथवा गर्म जलमें मिलाकर पीवे।

जमाल गोटा विष निवारण।

जमालगोटा खाने से जिसको वमन दस्त हो तो बताशे मिलाकर आधसेर दही खिलाना, अथवा धनिया, मिश्री, दही इन सबको मिलाकर पीने से जमालगोटा का विष शान्ति होजाता है।

भांग विष निवारण।

नारीशाकके सूखे वा हरे पत्ते को घोटकर पिलावे तो भांग का नशा उतर जाय। अथवा अदरख का रस पैसा भर पिलावे। अथवा सौंठिका चूर्ण गायके दही में मिला र खिलावें, तथा गाय का कच्चा दूध बिना मीठा मिलाये पिलावे तो भांग का विष शान्त हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अफीम विष निवारण।

जिसने अफीम खालिया हो उसको प्रथम दूध पिलाकर बमन करा देना चाहिये। अथवा हींग के जलमें कुल काल रहने से अफीम भस्म हो जाती है, इस कारण जितनी अफीम खाई हो उतनी ही उत्तम हींग लेकर दूने जल में घोट छान कर पिलाना तो अफीम पेट में राख होजायगी। अथवा नारी शाक (करवुआ) का रस दो पल पिला देना। अथवा कुकुरौंदे का रस चौलाई का रस पिलावे, अथवा अंडे (एरंड) के पत्ते घोट कर पिलावे। अंडे के पत्तों का रस एक पल, और नोसादर चारमासा, सो जलमें घोल कर पिलावे। अथवा कटेली के रस में दूध मिलाकर पिलाना। इन अनेक औषधियों के लिखने का तात्पर्य यह है कि जो औषध समयानुसार रोगी को हित कर जान पड़े वह औषध देवे तथा एक यत्न से स्वास्थ न हो तो दूसरा प्रयत्न करे।

गुंजा विष निवारण।

घुँघचीका विष चौलाई के रस में मिश्री मिलाय दूध पिला देने से शांत होजाता है।

थूहर विष निवारण।

शीतल जल में मिश्री को घोल कर पीनेसे थूहर का विष शान्त हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कनेर विष निवारण ।

भैंसी के दही में मिश्री मिलाय खावे, अथवा हलदी को दूध में पीस कर मिश्री मिलाय पीवे तो कनेर का विष शान्त होजाता है।

कोंच विष निवारण ।

कोंच की फली का रोम लगने से शरीर में पीड़ा हो तो घी मलने से खुजलाहट दूर हो जाती है।

भिलावा विष निवारण ।

भिलावा लग जाने से जहां सूजन हो वहां पर मक्खन और चौलाई का रस मिलाय लेप करने से विष शान्त होजाता है, और भिलावा खाजाने से वेदना हो तो चौलाई के रस में मक्खन मिला कर पी लेना।

बच्छनाग विष निवारण ।

सोंठ को जल में पीसकर पिलाने से बच्छनाग का विष शांत हो जाता है।

मद्य [शराब] विष निवारण ।

एक तोला फटकरी दूध में घोल कर पिलाने से मद्य का विष शान्त होजाता है।

व्याघ्र का केश विष निवारण ।

व्याघ्र (शेर) का केश (बाल) खाजाने से मुख द्वारा सफेद रुधिर निकलने लगता है, बारम्बार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बमन होना चाहती है, पेटमें पीड़ा होती है अरंड के पत्ते पर पेशाब करने से पत्ता टुकड़ा टुकड़ा हो जाता है यह लक्षण मिलने पर जानलेवे कि व्याघ्र का केश भक्षण किया है, उसका यत्न यह है कि कसौंदी का अर्क तीन दिन पीवे अरंड की लकडी हलक में डालकर बमन करे, अथवा फिटकरी और मैनफल बराबर लेकर शीतल जल में घोलकर पीवे तो तुरन्त वमन होजाय और व्याघ्र का बाल निकल जावे।

धतूरे विष निवारण।

नीवकी निवोली घोटकर पीवे, अथवा बैंगन के बीजों का रस अथवा मिश्री मिलाय दूध पीने से धतूरे का विष शान्त हो जाता है, अथवा बैंगन के टुकड़े २ करके जलमें भली भांति मलकर छान लेवे फिर पी लेवे, अथवा बिनौले की मीगी तीन तोला जलमें पीसकर पीवे। अथवा जलमें लवण घोलकर पीवे। किंवा चौलाई की जड़ अथवा कपास का पंचांग वा गुर्च को जलमें पीसकर पीवे तो धतूरे का विष शान्त हो जाता है।

सर्प दंशन परीक्षा।

सांप के काटने के लक्षणों को जान लेना भी परम हितकारी है अतः यहाँ सांप काटने को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दर्शाते हैं, सांपके काटने के तीन लक्षण हैं १छूजाना २ छिलजाना ३ काटना। फन मारते ही सांपको झटककर फेंक दिया जाय और दाँत की नोंक से खाल में कुछ चिन्ह हो जाये तो उसको छूजाना कहते हैं, और सांप फन मार कर दाँत घुसादे परन्तु उसी समय झटककर फेंक दिया जाय सुई कुरेदने के समान छाला सा पड़ जाय तो उसको छिलजाना कहते हैं इन दो लक्षणों से मरने का भय नहीं है, क्योंकि विष रुधिर में मिलने नहीं पाया। तथा यदि सांपने फन मारकर अपने दांत भली भांति घुसादिये गये और झटक कर फेंका नहीं गया आपसे आप काटकर हटगया अथवा बलात्कार छुटाया गया तो ऐसे काटने को काटना कहते हैं, इस काटने का उपाय शीघ्र करना चाहिये। नहीं तो प्राणी मरजाता है, सपेरे लोग पहले कटने को छील, दूसरे को टान, तीसरे को टिप कहते हैं, और परीक्षा करके टिपही की चिकित्सा करते हैं। यदि सांप का दांत काटने योग्य एक होता है तो एक चिन्ह और दो होते हैं तो दो चिन्ह होते हैं। जब सांप अधिक दाव कर काटता है तो स्वाभाविक दांतों के लगाने से काटने के स्थान में अनेक चिन्ह देखने में आते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं। अच्छे प्रकार काट लेने पर औषध से कुछ लाभ नहीं होता, औषध से स्वास्थ्य होने पर जान लेना चाहिये कि सांप ने भली भांति नहीं काटा, क्योंकि औषध का गुण इतनी जल्दी नहीं होता जितनी जल्दी विष शरीर में प्रवेश कर जाता है विष रुधिर में मिलते ही ऊपर को चढ़ते चढ़ते फेंफड़े तक पहुँच जाता है और फेंफड़े का काम बन्द कर देता है, शरीर भर में विष प्रवेश कर जानेपर औषध देते देते मनुष्य मरजाता है, कभी कभी सांप के काटने का निश्चय करना कठिन हो जाता है, इस कारण अन्य यत्न परीक्षा करने के हम लिखते हैं, कि जैसी जलन सांप के काटने से होती है, वैसी ही चिनचिनाहट बिछू भिड़ और खनखजूरे के काटने में होती है, कभी कभी ऐसा भी होता है कि कानड सांप के काटने से अन्य किसी का काटना समझकर मनुष्य सो जाता है। प्रातःकाल होने पर उसकी दशा बिगड़ती है। परन्तु गोखुरा सांप के काठने से मनुष्य बहुत जड़ होजाता है। और पीड़ा भी अधिक होती है कभी कभी ऐसा भी होता है कि चिकित्सक के पूछने पर रोगी ठीक २ उत्तर नहीं दे सकता कि किस प्रकार काटा है। बीछू के काटने से एक छिद्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होता है, खन खजूर के काटने से दो होते हैं. और सांप के काटने से कभी एक कभी दो छिद्र होते है, इस कारण परीक्षा कर लेना बहुत ही योग्य है।

बीछू के काटने से छोटा सा छिद्र होता है जो काटने से थोड़ी ही देर में लोप होजाता है और सांप के काटने से छिद्र बड़ा होता है। और देर तक रहता है, बीछू और भिड़के काटने का स्थान लाल हो जाता है, सांप के काटने में स्थान काला और नीला हो जाता है, भली भांति काटने से कुछ रक्त निकल कर वहीं सूख जाता है, और बीछू का डंक घुसते ही बहुत रुधिर निकल पड़ता है, बीछू के दांत नहीं होते हैं, पूंछ के ऊपर काँटा होता है उसीसे झटका मार देता है। कभी कभी सांप के काटने के स्थान पर साँप के मुखकी राल लगकर सूख जाती है, सो चमकने लगती है। अन्य किसी के राल नहीं होती और काटते ही स्थान सूख जाता है, सांप के काटने से कुछ सूजन होती है परन्तु थोड़ी ही देर में लोप होजाती है, यदि इन लक्षणों से भी कदाचित परीक्षा न हो सके तो साँप से काटे हुए स्थान को चाकू की नोंक अथवा नश्तर से चीर कर रुधिर की परीक्षा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करे, यदि वहाँ रुधिर न निकले अथवा दूसरे रंग का निकले तो जान लेना चाहिये कि सांपने काटा है, परन्तु सन्देह दूर होने से पहले ही चिकित्सा आरम्भ कर देनी चाहिये।

विष की गति वा क्रिया का वर्णन।

विष जबतक काटने के स्थान पर रहता है तब तक वहाँ सूजन रहती है जब आगे बढ़ने लगता है तब सूजन कम हो जाती है, स्थान में सूजन देखकर जान लेना चाहिये कि विष अभी वहीं है, सूजन घट जाने से जान लेना चाहिये कि विष आगे बढ़ गया, आध घंटे के उपरान्त काटने के कारण उस स्थान पर सूजन फिर होती है, रुधिर में मिलते ही विष ऊपर बढ़ने को मार्ग ढूंढ़ता है यदि प्रधान नाड़ी से कुछ दूर काटा है तो विष को देर से मार्ग मिलता है, और ठीक नाड़ी पर काटने से विष बहुत जल्दी प्रवेश होकर शरीर में फैल जाता है ऐसी अवस्था में रोगी शीघ्र मर जाता है। यदि सांपने दो विष दाँतों से काटा है तो काटने के स्थान में दो छेद होंगे दोनों छेदों से विष बढ़कर शरीर में प्रवेश होगा, इनमें से एक की गति रोकदी जाय तो दूसरे से विष ऊपर को चढ़ जायगा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस कारण दोनों की गति बन्द करना उचित है, विष कहाँ तक चढ़ गया यह जानना हो तो भली भांति देखकर परीक्षा कर लेना चाहिये जिस रोम के नीचे विष आता है वह उसी समय चिपक जाता है और विष हटते ही खडा हो जाता है, ज्यों ज्यों विष आगे बढ़ता है त्यों त्यों रोम गिरते और उठते जाते हैं, यह जानने के लिये चिकित्सक की दृष्टि बहुत तेज होनी चाहिये यदि दृष्टि तेज न हो तो अच्छी ऐनक आदि दृष्टि वर्द्धक वस्तु के आश्रय से देखना चाहिये, इस देखने से यह प्रयोजन है कि यदि विष नाड़ी में हो तो वह निकाल लिया जा सकता है। अथवा जहाँ तक विष पहुँच गया है वहाँ तक पत्ता लगाकर बांध दिया जाय तो विष वहीं तक रहता है, और ऊपर न पहुँचने से नीचे को उतर आता है, फिर उसी समय बड़े बेगसे ऊपर को चढ़कर बन्धन से टक्कर मारता है, यदि बन्धन दृढ़ न हो, तो टक्कर मारते मारते बन्धन को ढीला करके वह विष बड़े बेग से आगे बढ जाता है, और यदि बन्धन दृढ़ है तो विष ऊपर को न चढकर बारम्बार नीचे ऊपर आता जाता रहेगा, परन्तु अन्त में विष की गति धीरे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धीरे घटकर बन्द होजाती, कारण यह कि मार्ग न पाकर विष सर्वत्र फैलजाने से बिषका निकलना कठिन हो जाता है, जहाँ जहाँ होकर विष जाता है वह स्थान शून्य हो जाते हैं, वह अंग रोगी को भारी जान पड़ते है और हिलने में बहुत कष्ट होता है। शरीर में विष प्रवेश होते ही रोगी की पांचों ज्ञान इन्द्रियां शिथिल होने लगती हैं, नेत्र लाल लाल और कुछ बड़े होजाते हैं, नासिका में गुनगुनाहट आजाती है जिव्हा में स्वाद लेने की शक्ति नहीं रहती और मीठा कड़वा जान पड़ता है कानों से सुनाई कम देता है, त्वचा में स्पर्श का ज्ञान नहीं रहता, शरीर भरमें पसीना आजाता है रोगी बारम्बार मूर्छित होता है कानड सांप के काटने से कभी कभी रोगी का सारा शरीर कभी कभी कोई अंग फूलजाता है जिससे आकार भयानक हो जाता है, कभी कभी लाल वा काला दस्त आ जाता है, बोड़ा सांप काटता है तो खाल गल जाती है, और तीन चार दिन रोगी ठहरता है।

सर्प विष बंधन चिकित्सा।

बंधन लगाने से प्रथम यदि हो सके तो सांप काटने के स्थान को चूसकर बंधन लगाना चाहिये यदि काटने के पीछे बहुत बिलम्ब हो चुका हो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो झटपट बंधन खगानेका प्रबंध करे,जो साँप छोटे होते हैं उनके दाँतभी छोटे ही होते हैं इस कारण बारीक छेद होने के कारण चूसा नहीं जासकता, और कभी कभी बारीक दाँतों का चिन्ह देख नहीं पड़ता,गोखुरा सांप का एकदिन का बच्चा भी काट खाय तो मनुष्य मरजाता है, परन्तु उसके दांतका चिन्ह देखना कठिन होजाता है, ऐसी दशा में बन्धन लगाना ठीक है, बन्धन लगानेमें दो बातो का बिचार रक्खे, एक तो ठीक स्थान पर बन्धन लगाना दूसरे कसकर वा ढीले बन्धन का ध्यान रखना, यदि कसकर बन्धन लगाया जाता है तो रोगी को क्लेश होता है, और यदि ढीला रहता है तो विष आगे को बढ़ कर हानि पहुँचाता है, सन अथवा सूत की डोरी किंवा बारीक वस्त्र की पट्टी बटकर उससे बन्धन लगाना चाहिये, बन्धन को दृढ़ करने को एक डंडा वा गोल पत्थर लगादेना चाहिये, उसके सहारे से बन्धन दृढ़ लगाया जा सकताहै,बन्धन देना प्रथमही से सीखलेना चाहिये, तब बन्धन लगानेमें प्रबृत्त होवे अथवा जो निपुण हो उसके हाथ से बन्धन लगबावे, बारीक डोरीसे बन्धन लगाया जाताहै तो रोगीको क्लेश होताहै,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहुत मोटी से विष ऊपर चढ़ जानेका भय रहता है इस कारण न मोटी हो न पतली हो पतले सेठा के समान डोरी से बन्धन लगाना चाहिये यदि सांप काटते ही बंधन लगाया जाय तो कटे स्थानसे अंगुल या दो अंगुल पर पहला और उसके दो अंगुल ऊपर दूसरा बंधन लगाना चाहिए, उसके ऊपर तीसरा बंधन लगाना चाहिये, ठीक बंधन लगाये बिना विष की गति नहीं रुकती, इसी कारण बंधन लगाना चाहिये, बंधन लगाते ही उस पर जल डाल देना चाहिये जिससे बंधन दृढ़ होजाय, यदि बंधन भली भाँति दृढ़ होजाता है तो चिकित्सा करने को समय मिलजाता है।

परंतु कभी कभी सांप ऐसे स्थान में काटता है कि बंधन नहीं लग सकता जैसे उदर, पीठ, मस्तक ये स्थान बंधन लगाने के योग्य नहीं है और न यहाँ ठीक बंधन लगही सकता है, कभी कभी ऐसा भी होता है, कि सांप काटनेको बहुत ही बिलंब हो जाता है तो चिकित्सक को ठीक नहीं जान पड़ता कि कहाँ तक विष चढ़ा है ऐसी अवस्था में बंधन सबसे ऊपर लगाना चाहिये जैसे पैर में काटा है तो जंघापर बंधन लगाना चाहिये तथा हाथ में काटा है तो बगलके समीप बंधन लगाना चाहिये अथवा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो बहुतही बिलम्ब होगया है अथवा बंधन लगाने का ठीक स्थान नहीं है तो उसकी चिकित्सा का प्रकार आगे लिखते हैं सो समझ लीजिये। यदि बन्धन न लग सके तो चूसकर विषको फेंक-देना चाहिये, प्रायः सब स्थान चूसे जा सकते हैं परन्तु जिसके दाँतों से रुधिर न आजाता हो वह मनुष्य काटने पर तुरंतही उस स्थान को चूसकर विषको निकाल दे, यहाँ बार बार चूसने की आ-वश्यकता नहीं है। तथा यदि काटने का छिद्र बारीक हो अथवा चूसने से रुधिर भली भाँति न निकलता हो, तो छुरी वा नश्तर से घावका मुख चीरकर बढ़ा देना चाहिये जिससे चूसनेमें सुबीता हो, अथवा वहाँ का मांस और चाम तीन अंगुल-की लम्बाई चौड़ाई तक काटकर फेंक दिया जाय, तो कटे मांसके साथ विषभी निकल जायगा, यदि कुछ रहभी जायगा, तो अधिक रुधिर निकलने से उसके साथ निकल जायगा। कटे हुए स्थानमें विष के रहते जलते हुए अंगार से अथवा गरम लोहे से दाग देना चाहिये, अंगार रखते ही पट शब्द होते ही जानलेना कि विष निकलगया, इसप्रकार आग से दागनेको थूहो कहते हैं, गर्म लोहा करने में कुछ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देर लगती है परन्तु लोहा देर तक गर्म रहता है इस कारण लोहा गर्म करके दागना चाहिये. चिकित्सक लोग काठ की डंडी लगा हुआ एक टुकड़ा लोहे का अपने पास रखते हैं, उस लोहे के टुकड़े का मुँह गोल होता है।

अथ सर्प निवारणौषध।

जमालगोटा का बीज घिसकर काटे हुए स्थान पर लगाना,और मूर्छित होजाने पर जमालगोटेका बीज घिसकर नेत्रों की पुतली बचाकर पक्षीके पंख से नेत्र में लगावे तो सर्प विष दूर होवे,जिसकोसर्प डसे उसको आधपाव सरसों का तेल पिलावे,रोगी के निर्बल होजाने पर ठंडे जलकी धार शिर पर गिराता रहे यह औषधी भी परीक्षित है बालक को एक छटांक सरसोंका तेल पिलानेका नियमहै। हलदी, दारू हलदी, मैनसिल, हरताल, कुंकुम, मोथा,यह सब औषध जल में पीसकर गोली बना रक्खे, सांप काटते ही इसको घिसकर लेप करदेवे तो विष जाता रहै। तथा—

श्लोक–शिरीष पुष्पं, सकरंज बीजं, काश्मीरजं
कष्टमनः शिला च। एषां प्रलेपोरगवृश्चि-
कानाँ सक्रान्तिकारो कथितो जलेन ॥ १ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिरस के फूल, कंजाके बीज, केशर, कूट, मनशिल इनको जलमें घोटकर घाव पर लेप करने से साँप और बीछू का विष दूर होजाता है।

श्लोक० —घृतमधु नवनीतं पिप्पलीशृंगवेरं मरिचमपि च कुष्ठं सैन्धवं चाष्टमं च। यदि दशति समीपोतक्षको वासुकी वा यमसदन गतवा जीवयेत्तत्क्षणाद्व ॥ १ ॥

घी, शहत, मक्खन, पीपल अदरख, मिर्च, कूट, सेंधालवण, इन आठ औषधियों का अवलेह बनाय चटावे अथवा जलमें घोलकर पिलावे तो तक्षक अथवा वासुकी नाग के काटने से मृत्यु समीपी पुरुष भी तत्काल जीवन धारण करता है।

भीतर का अंकुर दूर किया हुआ जमालगोटा नीबू के रसमें २१ बार घोट सुखाय गोली बनावे वह गोली मनुष्य को लार में घिसकर साँप काटे हुए के नेत्रों में अंजन करे तो विष दूर होवे।

कन्ना घास की पत्ती और ११ मिर्च घोटकर घंटा भर पीछे पिलावे तो साँपका विष दूर होजाता है।

साँप के काटे को सेंधालवण मिला हुआ घी गरम करके पिलावे और घावपर असगंध के पत्ते पीसकर लगावे।

अथवा कसौंदीकी जड़ १ तोला दूध आधसेर में घोटकर पिलावे तो साँपका विष निर्बल होजाताहै।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आक (मदार) वृक्षकी छाल ४ तोला, कालीमिर्च २ माशा, आधसेर शीतल जलमें घोट छानकर पिलादेवे तो वमन होगी अथवा दस्त आवेंगे और विषकी गति न्यून हो जायगी।

जहर मोहरा जलमें घिसकर पिलावे, अथवा इमली का व इमलीके पत्ते जलमें मलकर पिलावे, अथवा भँगरा घोट छानकर पिलावे तो वमन होवे और विष न्यून होवे।

जंगली गुम्मा ३ माशे काली मिर्च ढाई घोटकर पिलावे तो सांप और संखिया का विष दूर होवे, क्योंकि जंगली गुम्मा के रसमें घोटने से संखिया निर्विष होजाता है।

हींग और तजको कडुये तेलमें घोटकर नास देवे तो सांपका विष नष्ट होजावे।

हरताल सिरसके बीजकी मींगी, कंजा की मींगी केशर इनको बराबर लेकर सिरसके रसमें घोटकर गोली बांधे जहाँ सांप वा बीछूने काटा हो वहाँ उस गोली को घिरकर लगावे तो विष ऊपर को नहीं चढ़ता है।

कसौंदी के पत्ते एक तोला पावभर पानी में घोटकर पिलावे तो विष न चढ़े।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धैला भर तमाखू जल में पीसकर पिलावे, यदि रोगी मूर्च्छित होगया हो तो कुचिला पानी में पीसकर मुख में डाले और थोड़ा पीसकर कण्ठ पर मले तो रोगी की मूर्च्छा जगे।

अथवा हरा पत्ता निकाल कर जमाल गोटे की मींगी, काली मिर्च, सात सात माशे लेकर तीन कागजी नीबू के रसमें घोटकर काली मिर्च के बराबर गोलियां बना लेवे, फिर अवसर पर पानी में घिस सांप काटे हुये की आंखों में आँजे और तीन गोली खिलावे तो सर्व विष शान्ति होवे।

अथवा २० माशे तेलिया सोहागा भूनकर घी में मिलाय पीवे अथवा सिरस वृक्षकी छाल और उसकी जड़की छाल फूल, बीज ये चारों २० माशे भर लेकर थोड़े गौमूत्र के साथ तीन बार पिलावे तो सर्प विष निर्विष हो जाता है। जिस सिरस वृक्ष की छाल काली होगई हो वह अधिक गुण-दायी होजाती है, यदि ज्येष्ठ मास में सिरस की छाल सात माशे प्रतिदिन साठी चाँवलों के धोवन में पीसकर पीवे तो तीन दिन मात्र पीने से वर्षभर तक उस मनुष्य को किसी विषधारी जीवका विष नहीं चढ़ेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा साँप बीछू वा पागल कुत्तेके काढे स्थान पर मूत्र कर देने में भी कुछ सुख मिलता है।

जिस स्थान में सर्प हो वहाँ लशुनकी धूनी देवे, वा बारहसिंगा के सींग, बकरी की पुच्छ, और अकरकरा की धूनी देवे, अथवा राई को नोसादर के साथ पीस कर घरमें जहां तहाँ बिलों के समीप डाल देवे तो सर्प देवता पधार जाते हैं।

यह अनेक औषधियाँ मैंने लिखीं इनमें से जो औषधी तत्काल मिल सके वही देना चाहिये।

वृश्चिक (बीछू) विष निवारण।

जहाँ पर बीछू ने काटा हो वहाँ पर जमालगोटा की मींगीं अथवा हींग पानी में घिसकर लगावे।

अथवा पँवार के एक छटाँक पत्ते पीस कर घाव पर बांध लेवे, अथवा साँभर नमक दो तोला, छै तोला पानी में घोल कर जिस ओर बीछू ने काटा है उसके दूसरी ओर कान में पाँच बूंद डाल देवे और घाव पर मले तो बीछू का विष नहीं चढ़े, तथा विष खपरे की जड़ पानी में घिस कर लगावे।

अथवा आकका दूध घाव पर लगाकर उसी का पत्ता रख कर बारम्बार सेके तो शीघ्र स्वास्थ्य होवे। लाल कनेर की जड़ काली मिर्च इन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोनों को पीस कर लेप करे तो बीछू का बिष उतर जाय।

हरताल और काली मिर्च पीसकर गरम करके लेप करे। अथवा समुद्रफेन पीस कर गाढा गाढा लेप करदे।

तथा नौसादर सोहागा और खाने का चूना हथेली पर मसल कर सूघे और कसौंदी की फली भून कर खाय कसौंदी की जड़ पीस कर गाढा गाढा लेप कर देवे।

तथा नमक को मूली के साथ पीसकर घावपर रक्खे तो बीछू का विष जाता रहे क्योंकि मूलीको बीछू पर रखते ही बीछू मर जाता है।

नीबू का अर्क घाव पर टपकाने अथवा हरताल हींग और साठी के चाँवल जल में पीसकर थोड़ा लेप करने से भी बीछू काटे का रोगी कभी कभी अच्छा होजाता है।

गरम जल नमक मिला कर घाव पर मले।

अथवा नागरमोथा पीसकर पीना और लगाना भी हितकारी है।

पीने की तम्बाकू में नीब बृक्षकी छालका चूर्ण मिलाकर चिलम में रख कर बहुत बलपूर्वक उस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का धुवाँ खींचे तो बीछू काटेका सुख मिलता है।

नौसादर और हरताल पानी में बारीक पीसकर लेप करे। अथवा सिरस के बीज बकरी के दूधमें घिसकर लगावे। अथवा मूली के पत्ते का रस निचोड़ कर लगावे।

बीछू की जाति भी अनेकहैं उनमें काला बीछू बहुत ही भयानक है, काले बीछू का विष रुधिर में मिलते ही ऊपर को चढ़ने लगता है,यदि बीछू का बिषभी चूंसकर फेंकदिया जाय अथवा तुरन्त ऊपर बन्धन लगा कर काटे स्थान को दवा कर विष निकाल दिया जाय तो बीछू का काटा अच्छा हो सकता है। जिस मनुष्य का शरीर वादी होता है उसको बीछूका विष बहुत ही क्लेश देता है। बीछू के काटने से ऐसा जलन पड़ती है मानों दहकते हुए अंगारों के बीचमें वह अंग रक्खा है, उस समय के क्लेशको स्मरण करके यही विचार उठता है कि परमात्मा ने इन विषधारी जीवों को व्यर्थ ही उत्पन्न किया है।

कुक्कुर विष निवारण।

यदि कुत्ता काट खाय तो शुद्ध कुचिला खिलावे और बिना शुद्ध किया हुआ कुचिला घिसकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घावपर लगावे। अथवा भुने चने की मींगी नक-छिकनी बूटी के रसमें भिगोवे अथवा सेहुँडके दूध में भिगोवे जब सूख जाय, तब और रस वा दूध डाल कर घोटे और चने बराबर गोली बनावे आवश्यक समय गोली खिलावे।

तथा पागल कुत्ते ने काटा हो वा गीदड़ने काट खायाहो तो वहाँ का रुधिर निकाल देवे अथवा तपाये हुये लोहे से जलादे, अथवा धतूरे का रस टकाभर, आकका दूध टकाभर, घी टकाभर,तीनों को घोटकर लेप करे तो विष जाता रहे।

अथवा छिलका बीज समेत धतूरेका फल चौलाई की जड़के रसमें वा गोभी वा शहत के साथ पीस कर लेप करे तो कुत्ते का विष उतर जाय।

आकके दूधमें गुड़ और तेल मिलाकर लेप करे।

अथवा घी ग्वार और सेंधालवण पांच दिन तक घाव पर बांधे।

अथवा चौलाईकी जड़,तुलसीके बीज,वत्सनाग-चांवलों के जल के साथ सात दिन पीवे।

चिरचिराकी जड़का चूर्ण करके शहत मिलाय एक टंक (४ माशे) प्रमाण दश पन्द्रह दिन चाटे।

अथवा अमलतास को आंके दूध में मिला कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेप करे। मुरगाकी बीट लेपन करने से भी कुत्ते का विष शान्त हो जाता है।

रत्न ज्योति ६ माशे काली मिर्च १ माशे बोट-उपरान्त बन्द मकान में रोगी को रखकर साठी के चावलों का धोवन बारम्बार पिलावे तो तीन प्रहर में विष शान्त हो जाता है।

अथवा कड़वी तुम्बीकी जड़,शिंगरफ,शुद्ध जमालगोटा, कालीमिर्च, भुना सोहागा, इनको बराबर लेकर चौलाई के रसमें खरल करके दो रत्ती प्रमाण गोली बनावे, आवश्यक समय गौ वा बकरी के मूत्रमें घिसकर घाव पर लेप करे और एक गोली जलके साथ खाय तो मूत्रके साथ कीड़े निकलकर कुत्ते का विष शान्त होजाता है।

अथवा कड़वी तुम्बी की जड़ १६ माशे,सोंठ १६ माशे, नींब की निबौली की मींगी १६ माशे, निसोत २८ माशे, शुद्ध जमालगोटा ३२ माशे, काली मिर्च १६ माशे, इन सबको बारीक पीस गुड में मिलाकर चार चार माशे भर की गोली बाँधे, एक गोली प्रति दिन खाय तो १५ दिन में कुत्ते का विष शांत हो जाता है।

गुड, सरसों के तेल, और आक का दूध बराबर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेकर एक में मिलाय घाव पर लेप करने से कुत्ते का विष शांत हो जाता है।

अथवा लाल मिर्च पीसकर घाव में भर देवे। अथवा धतूरे का रस चार माशे आक का दूध चार माशे और घी चार माशे भर लेकर बारीक पीस कर घाव पर लेप करे।

तथा जहाँ पर कुत्ते ने काटा हो वहाँ पर का रुधिर निकाल डाले, अथवा आग से दाग देवे, यह सब यत्न विष वाले अथवा बावले कुत्ते का है साधारण कुत्ते के काटने से कुछ भय नहीं होता।

मूषक विष निवारण।

नींब के पत्ता. सिरस के बीज कंजाकी मींगी, ये बराबर लेकर गौमूत्र में पीसकर गोली बनावे जहाँ पर चूहे ने काटा हो वहाँ पर गौमूत्र में घिसकर लेप करे तो चूहे का विष शान्त हो जाता है।

अथवा हलदी मजीठ, धमासा, सेंधालवण जलमें पीसकर लेप करे तो चूहे का विष शांत होवे।

अथवा मजीठ, हल्दी, सेंधालवण और घर का जाला यह बराबर ले पानी में पीसकर लेप करे, तो मूषक विष शांत होजाता है।

गंधक की धूनी देने से मूषक घर में से भाग जाते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खनखजूर विष निवारण ।

सेंधालवण और गौ का घी मिलाय गरम कर लगाने से खनखजूरे का विष शान्त होजाता है।

अथवा गौ का गोबर गरम कर लेप करने से भी शान्त होता है।

तथा तुलसी की जड़ पीसकर लेप करे, अथवा गुग्गुल की धूनी देकर मदार का पत्ता पीसकर लेप करे तो जलन शान्त होवे।

अथवा मीठा तेल दीपक में जलावे वह गरम २ तेल घाव पर मले तो खनखजूरे का विष शान्त हो जाता है।

दो-दोनों हलदी मैनशिल, गेरू लेप बना।
लेपै दीपक तेलसों, खनखजूर विष जाय॥१॥

तथा खनखजूर जो किसी अंगमें चिपट जाय तो उस पर कडुवा तेल डाल देवे खनखजूर टुकड़ा टुकड़ा होकर मर जावेगा, तेल डालने से खनखजूरा मृतक हो जाता है, और घी डालने से अधिक चैतन्य होजाता है इस कारण घी बचाये रहे।

मूली के पत्ते का रस खनखजूरे पर निचोड़ देने से वह तुरन्तु छूटकर गिर पड़ता है।

मधु मक्खी विष निवारण ।

हरताल, सेंधालवण और कबूतर की बीटको नीबू

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के रसमें पीसकर लेप करे तो मधुमक्खी का विष शान्त होवे। अथवा सरसों का तेल घाव पर मले।

किंवा सेंधालवण गौ का घी गरम कर घाव पर लगावे। अथवा तगर, सोंठ केशर इनको जलमें पीसकर लेपै।

तथा काली मिर्च, सोंठ, बरियारा और नाग केशर इन सबको पीसकर लेप करने से मधुमक्खी और बर्रका विष शान्त होजाता है।

मक्खी विष निवारण।

लोहे से घी को रगड़कर मक्खी के काटे पर लेप करे अथवा मक्खी की विष्टा लेप कर देनेसे मक्खी का विष शान्त होजाता है।

भँवर मक्खी विष निवारण।

यदि भौंरा काट खाय तो सेंधा नमक, हरताल बिजौरा नीबू का रस, कबूतर की बीट, सोंठ, इनको बारीक पीसकर लेप करे।

मकरी विष निवारण।

दो०—गाज केशर हलदी दोऊ, अरु मंजीठ पतंग।
लेपै शीतल नीर सों, मकरी विषहो भंग ॥२॥

जलमें चौलाई का शाक पीसकर लगावे। अथवा चूना व हलदी को जलमें पीसकर लेपै। तथा जलमें सौंफ पीसकर बार बार लगावे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथवा सिंगजरा, कत्था, मुर्दाशंख, छोटी इलायची, इनको घी में मिलाकर लगावे। अथवा अमचूर पीसकर लगावे। तथा चूने को नीबू के रस में पीसकर लगावे तो मकड़ी का विष भंग होजावे।

भिड (बर्र) विष निवारण।

जिस स्थान में बर्र काट खाय वहाँ तुरन्त चूस लेव और रक्त निकाल देवे और चूना व नौसादर मल देव। अथवा दियासलाई का मसाला घिसकर लगावे अथवा कागज को पानी में भिगोकर उस स्थान पर धरे, किम्वा सिरका को लेकर काटे स्थान पर मल देवे।

अथवा सिरका में मकोय के पत्ते पीसकर पतला लेप करे। वा सिरका में कपूर पीसकर पतला लेप करे।

अथवा तुरन्त कच्ची शक्कर को मले। अथवा दो तोला धनियां खाय और शहत खाय शहत ही का लेप करे किंवा तीन चार बार गरम जल से धोवे और इक्कीसवार का धुला घी लगा देवे तो ततैया का विष उतर जावे।

गंधक और लहसन की धूनी से बर्रे भाग जाती हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मनुष्य विष निवारण ।

कदाचित किसी को मनुष्य काट खाय और घाव होजाय व जलन पड़े तो गोभी के पत्ते शहत में पीसकर गाढा गाढा लेप कर देवे, तो जलन शान्त होजावे ।

बिडाल (बिल्ली) विष निवारण ।

जलमें काले तिल पीसकर लेप करे और पोदीना खाय तो बिल्ली काटे का विष शान्त होजाता है ।

मर्कट (बन्दर) विष निवारण ।

लवण और मुर्दाशंखको जलमें पीसकर गाढा गाढा लेप करे तथा कलौंजी शहत मिलाकर लगावे ।

अथवा अरहर की पत्ती को पीसकर लुगदी बनावे और कुछ घी को तपाय उसमें उस टिकिया को तपालेवे, फिर कुछ गरम टिकिया घाव पर रखकर ऊपर से कपड़ा की पट्टी बांधदेवे, तो बन्दर का काटा घाव अच्छा हो जावेगा ।

मंडूक (मेंडुक) विष निवारण ।

दो०—थूहर तरुके दूधमें, सिरस बीज पिसवाय ।
गाढालेपै घाव पर, मेंडुक विष नशिजाय ॥१॥

कान सलाई विष निवारण ।

दो०—कान सलाई घाव पर, मलिये दीपक तेल ।
कान सलाई विष दुरै, कीजै नाहि झमेल ॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्व कीट विष निवारण ।

श्लो०—व्रण च तत्क्षण देव दहेल्लोहशलाकया ।
अन्येषां सर्वकीटानां विष हन्ति चराचरम् ॥ १ ॥

व्रण को उसी समय लोहेकी कील से दाग देवे तो और भी सब चराचर कीड़ों का विष शान्त होजाता है ।

सर्व विष निवारण मंत्र ।

ॐ आदित्यरथवेगेन विष्णोर्बाहुबलेन च ।
सुवर्णपक्ष पातेन भूम्यां गच्छ महाविष ॥
(अथवा) ॐ अलर्काधिपते यक्ष सारमेय गणाधिप ।
अलर्कजुष्टमेतन्मे निर्विष कुरु माचिरात ॥ स्वाहा ॥

इन दोनों मंत्रों को अथवा इनमेंसे एक मंत्रको चारलक्ष जपकर सिद्ध कर लेवे यथा हवन तर्पण मार्जनकरे तथा नियमानुसार ब्राह्मणभोजन करावे, मंत्र सिद्ध होजाने पर साँपके काटे स्थान तथा बीछू आदि विषधारी जीवोंके काटे स्थान पर नींब की डाली से २१ वार मंत्र पढ़कर झाड़े तो मंत्र शक्ति के प्रभाव से विष शान्ति होना सम्भव है ।

दो०—नारायण विनवत सदा, कर्ता श्रीभगवान् ।
भूलचूकको देखिके, तामिहैं वैद्य सुजान ॥१

इति श्रीरसराज महौषधो स्थावर जंघम विष चिकित्सा वर्णन नाम तृतीयस्तरङ्ग ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थ स्तरंग प्रारम्भ ।

दो०-नारायण धरिध्यान उर, नारायण घनश्याम ।
लिखूं चतुर्थ तरंग अब, रोगार्कषणनाम ॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस पंचम तरंग में मनुष्यों के निमित्त जो जो रोग प्रायः फैले हुये हैं उन उन रोगों की शान्ति करने को नाना प्रकार की सार सार औषधियों का वर्णन करेंगे इसीसे इस चतुर्थ तरंग का नाम रोगाकर्षण प्रगट किया है।

जिसका शरीर पुष्ट होता है उसके समीप कोई रोग नहीं आता निर्बल शरीर वालेको अनेक रोग आक्रमण करने लगते हैं, नियमके अनुसार आहार बिहार करने से शरीर आरोग्य रहता है आरोग्यता होनेसे मन प्रसन्न होकर सर्वत्र सुख प्राप्त होताहै।

हमारे लिखे हुये दो ग्रन्थ (नित्य धर्मप्रकाश और देहारोग्य विधान) इस विषयमें परमोत्तम हैं।

सर्व सुखोंका मूल कारण आहार (भोजनकरना है नियम विरुद्ध भोजन करने से प्रथम अजीर्ण होकर फिर ज्वर उत्पन्न होता है, ज्वर के रुक जाने पर भाँति भाँति के रोग शरीर में प्रवेश करने लगते है इस कारण भोजन बनाना और समय पर भोजन करना परमावश्यक है।

श्लो०—याममध्ये न भोक्तव्यं यामयुग्मं न लघयेत्।
याममध्ये रसोत्पत्तिर्यामयुग्मे बलक्षयः ॥ १ ॥

दिनमें एक प्रहर से पहले भोजन नहीं और दो प्रहर को उल्लंघन नहीं करना, और रात्रि में एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रहर के बीच भोजन करने से रसकी उत्पत्ति होती है और दूसरे प्रहर में भोजन करने से बल घट जाता है।

प्रायः मनुष्य जब क्षुधा लगती है तब कुछ खालेते हैं ऐसा करने से भोजन शनैः शनैः पचकर शरीर में बल बढ़ाता है, यह परिपाटी भी उत्तम है परन्तु दिन रात्रि में दो वार भोजन करने की रीति सर्व मान्यहैं, प्रमाणसे अधिक खाना रोग जनक जानना अति भोजन रोग मूलमू।

अजीर्ण उत्पत्ति।

श्लो०—अत्यम्बुपाना द्विषमाशनाच्च वन्धारणात्त्यप्र विपर्ययाद्वा।
कालेऽपि सात्म्यं लघु चापि भुक्तमन्नं न पाकं भजते नरस्य ॥ १ ॥

बहुत जल पीने से, कुसमय में भोजन करने से मल मूत्र आदि के वेग को रोकने से, दिन में सोने और रात में जगने से. अधिक भोजन करने वा निरन्तर थोड़ा भोजन करने से अन्न नहीं पचता है ॥ १ ॥

श्लो०—ईर्षाभयक्रोधपरिप्लुतेन लुब्धेन रुग्दैन्यनिपीडितेन।
प्रद्वेषयुक्तेन च संक्लमानमन्नं न सम्यक् परिपाकमेति ॥ २ ॥

जो मनुष्य सदा ईर्षा, भय, और क्रोध से युक्त रहता है, अथवा लोभ व शोक मोह तथा दीनता-से पीड़ित रहता है, और जिसके कोठामें कुछ मल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रह जाता है उसका भोजन भली भाँति नहीं पचता है॥ २ ॥

तथाच।

श्लो०—अनात्मवन्तः पशुवद्भुंजते येऽप्रमाणतः।
रोगाऽनीकस्य मूलमजीर्णं प्राप्नुवंती हि॥ ६॥

जो अनाड़ी लोग पशुकी भांति प्रमाणसे अधिक खा लेते हैं वे सब रोगोंकी जड़ अजीर्ण रोग को प्राप्त होते है॥ ३ ॥

अजीर्ण रोगोपद्रव।

श्लो०—मूर्च्छा प्रलापो वमथुः प्रसे : सदनं भ्रमः।
उपद्रवा भवन्त्येते मरणं चाप्यजीर्णतः॥ ४॥

अजीर्ण से मूर्छा प्रलाप (बहुत बकना) वमन लार गिरना, शरीर शिथिल होना, घुमनी, और मरण रूप उपद्रव, विषूचिका (हैजा) आदि, रोग उत्पन्न होते हैं।

किसी वैद्य की स्त्री ने अपने पति से पूछा 'अजीर्णस्यौषधं किंतद्ब्रूहि वैद्य विनायक"।

हे वैद्यराज अजीर्ण रोग की औषधि क्या है यह सुन वैद्य ने उत्तर दिया अजीर्णस्यौषधं चत्वारि पंथा निद्रापथ्या वारि, अजीर्ण के औषध चार हैं पंथा (मार्ग चलना) निद्रा (शयन करना) पथ्या (हर्डेखाना) वारि गरम किया हुआ नमकीन जल न पीना—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्लो०—भुक्ते पथ्या भुक्ते पथ्या भुक्ताभुक्ते पथ्या पथ्या।
जीर्णे पथ्याऽजीर्णे पथ्या जीर्णेऽजीर्णे पथ्या पथ्या ॥५॥

भोजन करके हर्ड पथ्य हैं और भोजन से पहले हर्ड पथ्य है, क्योंकि भोजन पचाने और भोजन के दोष को दूर करने के निमित्त हर्डों का सेवन करना योग्य है और अन्न के जीर्णाजीर्ण अर्थात् कुछ अन्न पचा हो कुछ नहीं पचाहो उसमें हर्ड पथ्य है।

अग्नि दीपनी वटी।

श्लो०—पिप्पली मरिचे सुंठी सैंधवेन्द्रजवं विडम्।
निम्बूरसेन वटिका चणमात्राग्निदीपनी ॥ १ ॥

पीपल, मिर्च, सोंठ, सेंधालवण, इन्द्रजौ, वायविडंग, इन सबको नीबू के रसमें चने की बराबर गोली बनावे इन अग्नि प्रदीपनी नाम वाली गोलियों के सेवन से जठराग्नि प्रबल होती है, भूख बढ़ाती है, अजीर्ण रोग का विनाश होताहै ॥१

कणादि चूर्ण।

श्लो०—कणा सिन्धु शिवा वन्हि चूर्णमुष्णेन वारिणा।
पीत प्रातः क्षुधा कुर्यात्साचकस्यापि दीपनम् ॥ १ ॥

पीपरी, सेंधालवण, हर्ड, आंवला, चित्रक, इन सबका चूर्ण गरम जलके साथ प्रातःकाल सेवन करे तो जठराग्नि प्रदीप्त करे क्षुधाको बढ़ावे ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिंग्वाष्टक चूर्ण ।

रसो०-त्रिकटुकमजमोदा सैन्धवं जीरके द्वौ ।
समचरणधृतानामष्टमो हिंगुभागः ॥
प्रथमकवलभुक्तं सर्पिषा चूर्णमेतत् ।
ज्जनयति जठराग्नि वातगुल्मं निहन्ति ॥१॥

त्रिकुटु (सोंठ,मिर्च,पीपल) अजमोद, सेंधालवण दोनों जीरे इन औषधियों को बराबर लेकर बारीक पीस लेवे, हींगको भूनले यह हिंग्वाष्टकचूर्ण पहले कवलमें घी के साथ खावे तो यह चूर्ण जठराग्नि को बढ़ाता और वायगोला को दूर करता है ॥ १ ॥

अजीर्णनाशक उपाय ।

इस रोग में बार बार थोड़ा थोड़ा पानी पीना चाहिये, भोजन न करे ।

शुंठ्यादि चूर्ण ।

(तोटक) शुंठी युग तीनिसों भाग धरे । पिपरी पुनिता महं चारिपरे । अजमोद जवाइन भागषटे । पुगभाग सो सेंधाआनि ठटे । सब चूरण के समडारि शिवा । सुंठ्यादि प्रसिद्ध सो नाम भवा । नारायण ताहि विचार कहै । मलताप प्रलापको वेगिदहै । उदर पुनि शूल अनेक टरे । सब बात व्यथा अरु आंव हरे । निशि वासर भोजन चित्त बसे । नानाविधि भोजन दोष नशे ।

तक्र हरीतकी ।

एकसौ बड़ी हर्र लेकर उनको मठा में औटावे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फिर हरों की गुठली निकाल उनमें यह मसाला भरे। चव्य, चित्रक, पिपलामूल, पीपल, सोंठ, कालीमिर्च, सेंधा, सोचर, खारी, कचियालवण, लवण, जवाखार, सज्जीखार, हींग, दालचीनी, जीरा, अजमोद, ये सब एक एक तोला, निसोत ६ माशे लेकर सबको कूट छान चूक की भावना देकर हरोंमें भरे, फिर धूपमें सुखाय एक हर्र प्रति दिन खाय तो मंदाग्नि, अजीर्ण 'संग्रहणी' शूल, उदररोग, वद्धकोष्ट, अफरा, ववासीर, आमवात इन रोगों का नाश होता है।

जीरकादि चूर्ण।

श्लो०—जरण रुचक शुंठी पिप्पली तीक्ष्ण बल्लः।
सलवण मजमोदा हिंगुपथ्येति कषम् ॥
पृथगत पलमात्रास्यात्रि वृच्चूर्णमेषो।
जननमदर बन्हेः पाचनं रोचनं च ॥ १ ॥

जीरा, कालालवण, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, वायविडंग, सेंधालवण, अजमोद, हींग, हर्र ये सब एक २ तोलाभर लेकर चूर्ण बनाय बलानुसार प्रति दिन सेवन करे, अथवा अनुपान से निसोत का चूर्ण बनाय सेवन करे तो उदर की अग्निको बढ़ाता और पाचक रोचक है ॥ १ ॥

छोटी हर्र १ माशा, छोटी पीपल १ माशा, सोंठ ४ माशा, काला लवण ४ माशा, यह ८ मात्रा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्थात् आठ खुराक हैं दिनमें तीन बार यह चूर्ण खाने से अजीर्ण रोग का नाश होजाता है।

सोंठ ५ भाग, पीपल ४ भाग, अजमोद ३ भाग अजबाइन २ भाग, सेंधा लवण १ भाग, बड़ी हर्ड १५ भाग, इन सबका काढ़ा बनाय पीने से पेट की गुड़ गुड़ाहट शूल, आँव, गोला, अम्लरोग का नाश होता है।

अथ ज्वर रोगोत्पत्ति।

अजीर्ण रोग के महा कोप से भी ज्वर रोग का प्रादुर्भाव होता है, तद्यथा।

श्लो०-यतःसमस्तरोगाणां ज्वरो राजेति विश्रुतः।
अतो ज्वराधिकारोऽत्र वर्ण्यतेऽहं मयाऽधुना ॥ १ ॥

मिथ्या आहार विहार से अजीर्ण होकर ज्वर प्रगट होता है, जिससे सब रोगों का राजा ज्वर है, अतः इस समय ज्वरका अधिकार वर्णन किया जाता है ॥ १ ॥

श्लो०-दक्षापमान संक्रुद्ध रुद्रनिःश्वास संभवः।
ज्वरोऽष्टधा पृथक् द्वंद्वसंघातागंतुजः स्मृतः ॥ २ ॥

दक्षप्रजापतिके अपमानसे क्रोध युक्त शिवजी की श्वास से आठ प्रकार के ज्वर प्रगट हुये, १ वातज २ पित्तज ३ कफज ४ वात पित्तज ५ वात कफज ६ पित्तकफज ७ सन्निपातज ८ आगन्तुक।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज्वरस्वरूप ।

श्लो०—ज्वरस्त्रिपादस्त्रिशिराः षड्भुजो नव लोचनः ।
भस्मप्रहरणो रुद्रः कालान्तकयमोपमः ॥ ४ ॥

ज्वर के तीन चरण, तीन सिर, छः भुजा, नवनेत्र हैं और भस्मधारी रुद्ररूप कालान्तक यम के समान है ॥ ३ ॥

ज्वरोपद्रव ।

श्लो०—श्वासो मूर्च्छाऽरुचिश्छर्दिस्तृष्णातीसारविड्ग्रहः ।
हिक्का कासोऽङ्गदाहश्च ज्वरस्योपद्रवा दश ॥ ४ ॥

श्वास मूर्च्छा, अरुचि, बमन, प्यास, अतीसार, मलावरोध, हिचकी, कास, अंगदाह, ये दश उपद्रव ज्वर के हैं, अर्थात् ज्वर के होने से इन दश उपद्रवों का भय रहता है, ज्वर रोगी को श्वास आने लगती है, मूर्च्छा होती है, भोजन में रुचि नहीं होती, बमन होने लगती है, प्यास लगती है, दस्त छूट पड़ते हैं हिचकी और खाँसी उत्पन्न हो जाती है शरीर में जलन पड़ती है ।

ज्वर लक्षण ।

तत्रादौ बातज्वर लक्षण—सवैया ।

प्रगटी जब पीर शरीर सबै मुख बेरस आवत हैं जमुहाई । तनु कम्पित भेद हृदय शिर में रजनी सिगरी विन नींद गँवाई । उरशूल उठे पुनि छींक नहीं बदनाधर शोषण की अधिकाई । मल रोधन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फूलन पेट व्यथा इतने दुख बातक है कविराई।

पित्तज्वर लक्षण-सवैया।

अतिसार तृषा उरदाह महा निश नींद कछू बहु वेग जनावे। बमनानन होत प्रस्वेद तनू चित्त भ्रंश दोऊ द्रग पीत लखावे। बदनाधर धान पक्यो सम लागत कंठ मुखौ कटुकांटहु छावे। मुरछा मल मूत्रहु पीत उभय अन भाषइ ते गुण पित कहावे

कफज्वर लक्षण-सवैया

वहुशीत शरीर लगे पुनि गौरव नींद निशा दिनहु अधिकाई। मुख मीठ लगै प्रति श्याम घनो ज्वर मन्द रहै पुनिकाश उकाई॥ अति हीन क्षुधा मल मूत्र सफेद अरोचक आलस नेन सिताई तनु रोम रहै हरषे सगरे कफ दोष इते सब भाषत भाई॥ ४॥

वात पित्तज्वर लक्षण।

दो०-तृषा मूर्च्छा दाह उर, हर्षण रोम शरीर।
बदन कंठ शोषण बमन जमुहाई शिर पीर॥
नींद हीन चितभ्रंश बहु, अरुचि नैन तम होय।
पर्वभेद युत गुण सकल, बातपित्त ज्वर सोय॥

वात कफज्वर लक्षण।

दो०-तनुभारी निद्रा बहुत, मध्यम वेग संताप।
पीर पर्व शिर कास पुनि, कफ समीर कृतताप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कफ पित्त ज्वर लक्षण ।

दो०—तंद्रायुत अज्ञानता, काश अरुचि उरदाह ।
वदन कसैलो कफअधिक,तृषा प्रस्वेद प्रवाह ॥

सन्निपात ज्वर लक्षण ।

चौ०—क्षणकदाह क्षणशीत शरीरा । अस्थि संघमें व्यापे पीरा ॥ लोचन अरुण घुमेले फाटे । पुनिजल जात कंठ में काटे । श्रुति झंनात पीर बहु होई । ज्ञानरहिततन्द्रायुतसोई॥अनरथ भाषणश्वास घनेरी अरुचि भ्रंश मति तानर केरी ॥ गोसम गिरा कंट कित कारी । कर पद शिर धुनियावत भारी॥रुधिर पित्त कफ मुखते जाई । नींद विहीन तृषा अधिकाई ॥ सन्निपात लक्षण यह जोई । मृत्यु निकट जानो नर सोई ॥

आगन्तुक ज्वर लक्षण ।

दो०-अरुचि भ्रंशचित्त क्लेशवपुक्रोधादिकसोंहोय ।
अधिक परिश्रम भय व्यथित,आंगतुकज्वरसोय ॥

एकाहिक आदि अनेक ज्वर ।

एकदिन उपरांत आनेवाला ज्वर एकाहिक,और दो दिन उपरांत आनेवाला ज्वर द्व्याहिक, तीन दिन उपरांत आनेवाला त्र्याहिक, चारदिन उपरांत होने वाला ज्वर चातुर्थिक कहाता है । भयसे उत्पन्न होने वाला ज्वर भयज्वर कहाता है । कामदेव के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वेग से उत्पन्न ज्वर कामज्वर कहाता है, क्रोध के वेग से उत्पन्न ज्वर क्रोधज्वर कहाता है। जाड़ा लगकर आनेवाला ज्वर शीतज्वर कहाता है, इसी प्रकार भूतबाधा जनितज्वर,मानसज्वर,जीर्णज्वर, विषम ज्वर, तलज्वर, दृष्टिज्वर, दूषित रुधिरज्वर आदि अनेक ज्वरोंके लक्षण देखना होतो माधव निदान भाषा पुस्तकमें देखना, यहां इस छोटे ग्रन्थ में विस्तार सहित लिखा नहीं जा सकता।

ज्वर का पूर्वरूप।

जिस मनुष्य के शरीर में बिना शूलके खेद हो, मस्तक भारी पड़ जाय, हाथ पाँव में हड़फूटन हो, जंभाई आने लगें तो जानना कि ज्वर आने वाला है।

ज्वर मुक्त लक्षण।

श्लो०—देहो लघुर्य पगतं क्लममोहतापः पाकोमुखेकपणं सौष्ठवम व्यथत्वम्। स्वेदक्षयः प्रकृतियोगिमनोन्न लिप्सा कण्डूश्च मार्दव विगतज्वर लक्षणानि॥ १॥

जिस ज्वर रोगी का शरीर हलका हो जाय, और मोह बिगत होजाय, होटों पर पपड़ी पड़ जाय, इन्द्रियां अपने अपने विषय की इच्छा करें, भूख लगने लगे, बात सुनने में ध्यान लगे, छींक बहुत आवे, शुद्ध रेचन हो अर्थात् दस्त साफ आवे, शरीर में कुछ व्यथा न जान पड़े, पसीना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छूटने लगे, सिर खुजलाने लगे, इन लक्षणों से जान लेना चाहिये कि ज्वर ने छोड़ दिया है, अर्थात् ज्वर उतर गया है। अब संक्षेप रीति से चिकित्सा लिखते हैं।

निन्दित वैद्य लक्षण।

दो०-अभिमानी क्रोधी लछो, लोभी मलिन जु होय।
यह लक्षण जेहि वैद्यमें, तुरत त्यागिये सोय॥१

सो०-मूढ वैद्य जो होय, औषध तासु न खाइये।
बुधजन जाने सोय, रोगनाश चाहे जु नर॥२॥

सुयोग्य वैद्य लक्षण।

सो०-निर्लोभी यशवान, दया धैर्य युत छलरहित।
ऐसो वैद्य सुजान, ताकी औषधि कीजिये॥३॥

पथ्यापथ्य प्रशंसा।

दो०-पथ रोगीको जो बने, ताको औषधि तौन।
नहीं जो ताको पथ बने, ताहि औषधि कौन॥४॥
प्रथम रोगके चिन्ह लखि, फेरि निदान मिलाय।
साध्य असाध्य विचारिके औषधि करे बनाय॥५॥

साध्य लक्षण।

दो०-सुख निद्रा आलस रहित, फुर्ती मन आमोद।
सकलेन्द्रिय उद्यम सहित, रोगी साध्य बिनोद॥६

तथाच।

श्लो०-सौम्या दृष्टिर्वदति विमलं हस्तपादौ मदोष्णो।
स्वल्पो दाघो सुरसवदनं कोमला यस्य जिव्हा॥ ४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नासाश्वासो वहति सरलः स्वेदहीनो ज्वरोऽसौ ।
साध्योरोगी भवतिनियत वैद्यभैषज्ययोग्यः ॥ १ ॥

जिस रोगी की दृष्टि सरल हो, वाणी निर्मल हो, हाथ पांव सदा गरम रहे, दाह थोड़ा हो, प्रसन्न और साधारण स्वादयुक्त मुखहो, कोमल जिसकी जिव्हा हो, नासिका की श्वास सुखसे चलती हो, ज्वर होने पर पसीना बहुत न आता हो, ऐसा रोगी साध्य होता है, वैद्यजन उसको औषधि देने योग्य जानकर चिकित्सा करे ॥ १ ॥

असाध्य लक्षण ।

छप्पै-होय देह महँ दाह चने पल एक न आवे ।
नींद नाश निशिरहै कंठ जब कफभरि आवे ॥
बात कहत तुतराय होय लघु सूक्ष्म नारी । इन्द्री
सीवन दहन शक्ति नहिं जाय बिचारी ॥ होय
जाय इन्द्री सु इमि तुरत रोग आधीन जब ।
ताकहँ बिचारि औषध करहु नारायण हरि
नामकी ॥ ८ ॥

सर्व ज्वर चिकित्सा ।

दो०-ज्वरमें लंघन प्रथमहित,सो जानो बुध सोय ।
तेहि पाछे औषध करे मुनिजनि भाष्यो जोय ॥१
देवदारु किरियार पुनि, दोउ कटाई लेय । नागर
फिरि धनियां कही,पाचन करके देय ॥२॥ लंघन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मानुष करत है, दोष सहित वह आहि। दोष गये पर कैसहू लंघन कियो न जाहि ॥ ३ ॥

सो०-सात दिवस ले बात, दशवासर कहि पित्तकी
कफ द्वादशदिन आय युवा फेर जीरण कहो।

दो०-प्यास भयानक बहुत है, प्यास रहत है प्राण। प्यासे को जल दीजिये, यही बात परमान
मोह प्यास ते होते है, मोह लेत है प्रान। ताते पंडित कवन विधि बरजे जलको पान ॥ ६ ॥

हारसिंगार के पत्ते के रस में थोडा शहद मिलाय पीने से सब प्रकार का ज्वर शान्त हो जाता है। जायफल कूट, काकरासिंगी पीपल इन सबको बराबर लेकर चूर्ण बनाय शहद में चाटने से कास श्वास और कफ युक्त ज्वर शान्त हो जाता है।

छोटी पीपल के चूर्ण में दूना शहद मिलाय चाटने से भी कास श्वास कफ युक्त ज्वर शाँत हो जाता है।

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, बेलकी गिरी, चिरायता, नागरमोथा, पित्तपापडा, गिलोय कुडाकी छाल, इद्रयव, इनको बरावर लेकर कूट लेवे और प्रतिदिन आठमाशे औषध का काढा सात दिन तक पीने से ज्वर में उत्पन्न अतीसार(दस्त)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुखशोथ (सूजन) हुचकी, प्यास, वमन, खांसी ये रोग दूर होते हैं।

ज्वरमें प्यास अधिक हो तो धनिया,नागरमोथा, पित्तपापडा, इन सबको बराबर लेके बारीक पीस दो टंक चूर्ण का काढा बनाय पीवे तीन दिन पीने से तृषा, दाह अतीसार नष्ट हो जाते हैं।

ज्वर में खांसी उत्पन्न होजावे तो पीपल,पीपला मूल, सोंठ, भारंगी भटकटैया, खैरसार, कलंजी, अडूसा,बहेड़ा, इनका चूर्ण बनाय दो टंक चूर्ण का काढा बनाय पीवे सात दिन पीने से खाँसी दूर हो जाती है।

ज्वर में बमन उत्पन्न होतो सोंठ, मिर्च पीपल, काकरासिंगी, नागरमोथा, भारंगी, पोहकर मूल, इनको, बराबर ले चूर्ण करे फिर एक टंक चूर्ण का काढा पीवे सात दिन पीने से श्वास दूर हो जाता है।

ज्वर में हिचकी आने लगे तो जलमें सेंधालवण पीसकर सूंघे तो हिचकी जाय।

ज्वर में मूर्च्छा होवे तो अमलतास की गिरी पित्तपापडा, किसमिस,हर्डेकी छाल,इनको बराबर ले दो टंक प्रमाण चूर्ण का काढा पीवे तो मूर्च्छा दूर होवे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज्वर में दस्त न आवे और अफरा हो जाय तो साबुन की बत्ती बनाकर गुदा में रक्खें ।

ज्वर में मुख सूख जाय अथवा जिव्हा बिरस-हो जाय तो मिश्री और अनारदाना अथवा किस-मिस और अनारदाना के कुल्ला करे ।

ज्वर में नींद न आती हो तो आलू बुखारा १ रत्ती भांग का चूर्ण १ रत्ती इन को शहत में चाटे अथवा पीपलामूल १ टंक गुड़ के साथ खाय ।

ज्वरमें अरुचि होय तो सेंधालवण, भुनी हींग-सोंठ, आलूबुखारा, किसमिस, पीपल, इनकी गोली बनाय मुखमें रखकर अर्क चूसे तो अरुचि दूर होवे ।

वातज्वर निवारण ।

दो०—कणामूल[1] लोका[2] मृ[3]ता पियत वातज्वर जात ।
जिमि प्रयाग मज्जन किये, पापसमूह नशात ॥१॥
शालपर्णि[4] अरु प्रश्नियुत[5], घन[6] खस[7] लोक[8] मंगाय ।
युगचुंद्रागोचु[9]र[10] अमी, [11]घरणिनिंवयुत लाय ॥२॥
या काढा रोगी पिये [12]मारुत ताप विलाय ।
जैसे मारुत[13] प्रबलको, उरग[14] पान करजाय ॥३॥

---

१ पीपलामृत, २ सोंठ, ३ गुर्च गिलोय, ४ शालपर्णि, ५ प्रश्नपर्णि, ६ मोथा, ७ खसखस, ८ सोंठ, ९ दोनों भट कटैया, १० गोखरू, ११ गुर्च, १२ चिरायता, १३ वातज्वर, १४ वायु, १५ सर्प ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पित्तज्वर निवारण ।

दो०-नागर[1] बालक[2] हिम[3] अरुण, पियेपित्तज्वरजाय।
अथवा पर्पट[4] क्वाथते, सोगद[5] वेग[6] नशाय ॥ ४ ॥
तिक्त[7] मोथ[8] बालक[9] शिवा[10], पर्पट[11] तरुपति[12] आनि।
पिये क्वाथ द्राक्षा[13] सहित, होय पित्त ज्वर हानि ५॥
शिवा सुता[14] पर्पट पिये, पित्त ताप हरि लेत।
जिमि विषयी जन साधुको, ज्ञान बिगत करिदेत ६
तिक्त[15] यास[16] महिनिम्ब[17] बृष[18], पर्पट गुद्रा[19] लेय।
सिता[20] सहित काढा पिये, पित्तताप तजिदेय ॥७॥

कफ ज्वर निवारण ।

दो०-यास वृषभ घन[22] लोकतें[21], हरतताप कफ गात।
जिमिचान्द्रायणव्रतकिये, कल्मष[23] सकल नशात ॥

तृतीयक (तिजारी) ज्वर निवारण ।

दो.-[24]चपला[25] नागरहिम[26] अरुण,[27] घानजलद[28] हीवेर[29]
या काढ़े को पान करि, तृतियक ताप निवेर ॥
तथा-चन्दन धनियां सोंठ अरु, पीपरि हाऊ बेर।
मोथायुत मिश्री शहत, काढा करे सवेर ॥३१॥

---

१ सोंठ, २ सुगन्धबाला, ३ काल चन्दन, ४ पित्तपापड़ा, ५ रोग, ६ तुरंत, कुटकी, ८ मोथा, ९ सुगन्ध बाला, १० हर्वे, ११ पित्तपापड़ा, १२ अमलतास, १३ दाख, १४ गुर्च, १५ कुटकी, १६ घवाड़ा, १७ चिरायता, १८ बृक्षा, १९ मोदनी, २० मिश्री, २१ मोथा, २२ सोंठ, २३ पाप, २४ पीपल, २५ सोंठ, २६ लालचन्दन, २७ धनियां, २८ मोथा, २९ हाऊ बेर।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पिवत तृतयिक ज्वर हरे, मिटे ताप भयत्रास ।
जिमि रघुवर घटकर्णको, कीन्हो वेगि विनाश ॥

चातुर्थिक (चौथैया) ज्वर निवारण ।

दो०—घृत[1] जीरन राम[2]ठ सहित, तासु नास जोलेय ।
ताप चतुर्थक दिननको, सूंघत ही तजिदेय ।३३।
घट[3]ज सुमन रस सूंघते, ताप चतुर्थक जाय ।
जैसे गुरुके द्रोह सों, सिगरों धर्म नशाय ॥ ३४ ॥
अभ[4]यदारु वास[5]क शिवा[6] शिवा[7] लोक[8] धुन्यास[9] ।
करु सेवन मधुसिता युत ताप चतुर्थक नास ।३५।

क्षुधा वृद्धि कारक यत्न ।

दो०—वीजपूर[10] के जीर को, घृत में भूंजे जोय ।
[11]पटुवरयुत नित खाइये, क्षुधा बढ़े बल होय ३६
गुरा[12] [13]चेतकी वृष[14] सिता[15], मधुयुत[16] क्वाथ बनाय ।
कास श्वांस त्रैदोष ज्वर, तनुते देत हटाय ॥ १६ ॥
रशन लाक महि निम्ब युत [17]श्यामामूल मदार ।
चव्यकणा सहिजन [18]अनल, [19]उग्रग्रन्थ [20]सुरदार१७
मुंडी [21]वैजन्ति [22]विषा, भृंगराज [23]धुन्यास ।
शीत प्रसूत त्रिदोष को, करे काथ ये नास ।१८।

---

१ पुरानो, २ हींग, ३ अगरत के फूल, ४ देवदारु, ५ रूखा, ६ हर्डे, आंवला, ८ सोंठ, ९ जवासा, १० विजौरा नीबू का जीरा, ११ सेंधालवण, १२ मुनक्का, १३ हर्डे, १४ रूसा, १५ मिश्री, १६ शहत, १७ पीपलामूल, १८ चीता, १९ बच, २० धूप, २१ अमेथू २२ अतीस, २३ जवासा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषम ज्वर निवारण ।

दो०-घननागर छुद्रा[1] अमी[2] श्यामा शिवामिलाय।
पिये[3] क्वाथमाक्षिक सहित विषमताप हटजाय १९
जलद[4] लोक वृहती सुधा, [5]चपला सफला[6] आनि।
मधु समेत ये पीजिये, होय विषमज्वर हानि २०
चौ०-भजु मधु शिवा विषमज्वर जाई। पुनि श्या-
मामधु देत पलाई। गुडजीरक ते गत ज्वर होई।
पुनिबच गुड़ते भागत सोई॥ [7]मेघमूल शिर लेह
लगावे। विषम ताप नख शिखते जावे ॥ पथ्या[8]
निंब सुधा मधु पीजे। विषमताप गद तनुते
छीजे॥ २१ ॥
दोहा-कंटकारि घन इंद्रजब, अमी [9]अरिष्ट पटोल।
मधुयुत नाशत विषमज्वर, पीजे क्वाथ अमोल २२
सोंठ जटा[10] कटु[11] रोहिणी, बला[12] जलद [13]जलधान।
पिये क्वाथ तजिदेत है, विषमताप बलवान ॥२२॥

शीतज्वर निवारण ।

दोहा-नींबकुलकेत्रिफलावृषभ, गुरा[14] सितादुमराज[15]
मधुयुत काढ़ा पीजिये, शीत ताप नित त्याज २५
मधवा जब चकवर अमो, चक्र[16] जवानी लेय।

---

१ गुर्च, २ पीपल २ शहत, ४ मोथा, पीपल, ६ आँवला, ७ चौलाई की जड़, ८ हर्रे, ९ नाम १० पीपलामूल, ११ कुटकी, १२ बारयना, १३ सुगन्धबाला, १४ परवल, मुनक्का, १६ अमिलतास, १७ रूसा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शृङ्गी शुंठी निर्गुंडी, भृङ्गराज समदेय ॥ २५ ॥
क्वाथ पिये गद शीत ज्वर.जात शरीर विषाद ।
जिमि [1]रामानुज कोपकरि,निधन कियो [2]घननाद २६
त्रिकुट खाय पुनि तक्रतें, शीत ताप गद जाय ।
जैसे पन्नग वृन्दको, नाश करत [3]खगराय ॥२७॥
भुनी फटकरी दो रत्ती, मिर्च सात दो बार ।
खाय बताशेमें प्रथम, चूरन शीत निवार ॥२८॥

एकाहिक (एकंतरा) ज्वर निवारण ।

चौ०-वासानींब पटोलको लेउ । अमिलतास त्रिफला ले सेउ ॥ द्राक्षायुत यह क्वाथ बनाय ॥ सिताशहत प्रक्षेप कराय । जाय यकतरा ज्वर नहिं रहै ॥ यह उपाय कहवे जो चहै ॥ २९ ॥

बातपित्त ज्वर निवारण ।

दो०-[4]जलंद गुड़ची पर्पटी, [5]सहितकिरातक लोक ।
या काढा रुज हरत है, वात पित्त ज्वर शोक ९

वात कफ ज्वर निवारण ।

दो०-ककरासिंगी जायफल [6]छुद्रा, [7]नागर लाय ।
जलदकिरातन [8]कुरुडली, गोछुर सहित मंगाय ॥
इन सबहिनके क्वाथते, बातकफ ज्वर जाय ।
जिमि वर्षा जल पायके, जनमन ताप नशाय ॥

---

१ लक्ष्मण, २ मेघनाद, ३ गरुड़, ४ मोथा, ५ चिरायता, ६ शहत, ७ सोंठ, ८ गर्व ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पित्तकफ ज्वर निवारण ।

दो०-हिमलोहित पद्माक अरु,धान्यामृता गिलोय।
पित्त कफःज्वर हरण हित, काढ़ा दीजे सोय ॥

सन्निपात ज्वर निवारण ।

दो०-थिरा[1] चावनी[2] पिप्पली, गोछुर वृहती[3] लेय ।
पिये क्वाथ दिन तीनिजो,ज्वरत्रिदोषतजिदेय ॥
रेणू नागर यास घन, तिक्त सटी[4] मुरदार[5] ।
कंटकार[6] ज्वालाकणा[7], पीजे क्वाथ सम्हार ।१४।
जीरन ताप त्रिदोष गद, या भेषजते जात ।
जिमि महेशके भजनते, मन्मथवेग नशात १५

जीर्णज्वर निवारण ।

दो०-पंचमूलको क्वाथकरि, श्यामाचूर्ण मिलाय ।
कफकृत जीर्णज्वर तुरत, पीवत देय भगाय ३७
अमृता क्वाथ बनायके, श्यामा चूर्ण मिलाय ।
जीर्णज्वर कफकृत महा, पीवत देय भगाय ३८
जिमि रघुपति रावण हन्यो,सहस्रबाहु[8] द्विजराम।
पुनिप्रलम्ब[9] रेवति रमण, त्यों पूजे मन काम ३९

हृदय दाह निवारण ।

दो०-सहबुक[10] चंदनलाल घन,लोक उसीरकलेय[11] ।
पियेक्वाथ[12] पर्पट सहित, चित्ततापतजि देय ४०

---

१ शालपर्णी, २ प्रश्निपर्णी, ३ भटकटैया, ४ पित्तपापरा, ५ नरकचूर, ६ देवदारु, ७ कटैया, ८ चीता, ९ परशुराम, १० बलराम, ११ हाऊबेर, १२ खस, १३ पित्तपापड़ा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहस वार घृत धोयके, तनु लेपन कर जोय।
हृदय दाह नाशत तुरत, पुनि नवीन वपुहोय ४१
जल[1]ज हृदय जल[2] केलियुत, सुमन[3] सेज पर्यंक।
विविधअनिल[4] ललना[5] ललित, राकारैन[6] मयंक ४२
इन सबहिन के भोगते, हृदय दाह सब जात।
जिमि कद्रुसुत[7] दर्प सब, यदुपति[8] कियो[9] निपात ४३

सवैया।

पूरणचन्द्रसमीर[10] सुहावन पूरि तडाग रह्यो अरविंदन। फूल सुगन्धित फूलि रहे युवतीनवगान करे बहु छंदन। बोलन कोयल कीर मधू व्यजनीय-लेपित मंदिर चंदन। भोग किये इनके सबके उरदाह सवैगत होत निकंदन ॥ ४४ ॥

दो०-निम्बफेन लेपन किये, दाह विगत कर देत।
जिमिकामीकी[11] सम्पदा गणिका[12] सबहरिलेत ४६
प्रात सितायुत पीजिये, रजनी[13] धान्य[14] भिगोय।
जिमि दीपकगृह तम हरत, देतदाहतिमि खोय ४६

सवैया।

पद्माकविषा महिर्निब उशीरक मेघ[15] अमी[16] जलंच

---

१ कमल, २ फुहारा, ३ फूलों की शय्या, ४ क्यारी (पवन) ५ सुन्दर स्त्री, ६ नवीन वाला, ७ चन्द्रमा, ८ कालामान, ९ गर्व, १० कृष्ण, ११ भंग, १२ पवन, १३ कमलों से, १४ पातुर (वेश्या) १५ रात्री समय, १६ घनियां, १७ मोथा, १८ सुगन्धवाला।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दन[११] लावे। [१]कुटजौ मधुबिल्व अपक्व धनायुत[२] पाठि हुनागर क्वाथ बनावे । उबकी वमनादिक दाह अरोच कतापतिसार समेत नशावे। जिमिके हरि[३] एकहु [४]नादकरे मग कानन वारन[५] यूथ पलावे ३७ चौ०–हिम[६] तन्दुल जल[७] मधुसित पीजे। तृषा दाह मूच्छो तजि [८]दीजे। दाडिमतुच मधुयुत करु पान। तृषा दाह गद करत पयान ॥ ४८ ॥

हृदय शूल निवारण ॥ सवैया ॥

ग्रथ[९] चवा[१०] महिनिंब जवायन पुष्कर पाठिहु [११]पूर मंगावे। रासन दारु बिडंग भ्रंगी सुरेशजवौबचआ-निमिलावे ॥ द्वै बृहती त्रिकुटारु कटू[१२] फलदेव [१३]जटा हर शृंगि पिसावे। भ्रंशमती सनिपात त्रिदोषहु शूल हृदय यह क्वाथ नशावे ॥ ४९ ॥

तृषा (प्यास) निवारण।

सौंफका अर्कचमचासे लेकर बारवार पीवे,अथवा शीतलचीनीका काढ़ा बारवार पीवे, अथवा सौंफकी पोटली पानीमें भिगोकर चूसे, अथवा छोटी इलायची का काढा पीवे, तथा गर्म चाहमें थोड़ी देर में थोड़ी शक्कर और शहत मिलाकर पीवे किंवा थोड़ी

---

१ करैया की छाल, २ धनियाँ, ३ सिंह, ४ शब्द, ५ हाथियों का टोला, ६ चन्दन, ७ साठा चाँवल का जल, ८ मिश्री, ९ पिपलामूल, १० चावदार, ११ गुग्गल, १२ कायफल, १३ जटमासी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थोड़ी कांजी पीने से, तथा आम और जामुन के पत्तों के काढे में शहत मिलाकर पीने से प्यास शान्त हो जाती है।

अम्लपित्त निवारण।

घिसा हुआ आधा तोला सफेद चन्दन नवीन मक्खन आधा तोला मिलाकर प्रातः समय सेवन करने से अम्लपित्त रोग शान्त हो जाता है, दो तोला शतावरिका रस नित्य प्रातः समय पीने से सब प्रकार के पित्तज रोग शान्त हो जाते हैं।

दो०-[1]भंगराज [2]माहनिंब [3]वृष, [4]पर्पट [5]त्रिफल [6]पटोल
[7]निंब गुडूची [8]क्षौद्रयूत, लीजे सब सम तोल ॥५०
पियत [9]क्वाथ गदजात है, अम्लपित्त कृत त्रास।
[10]जैसे तूलसमूहको, करत [11]हुताशन नाश ॥५१॥

श्लेष्मा (जुखाम) रोग निवारण।

मनुष्यों को प्रायः महीने दो महीने उपरान्त किसी न किसी कारण से श्लेष्मविकार (जुखाम) उत्पन्न हो जाता है इसमें शीतल वस्तु खाने दूसरे स्थान का जल पान करना आदि अनेक कारण हैं इस रोगमें अत्यन्त गर्म पदार्थ, घी, लालमिर्च,

---

१ भगरा, २ चिरायता, ३ रूसा, ४ पित्तपापरा, ५ आंवला, हर्डे, बहेड़ा, ६ परवल, ७ नींव वृक्षपर की गुर्च, ८ शहत, ९ रोग, १० रुई, ११ अग्नि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुड, तेल, खटाई आदि खाना अनुचित है, इस रोगसे शरीर भारी हो जाता है शिरमें दर्द और कभी कभी शरीरमें ऐठन होकर ज्वर भी आ जाता है, इस रोग के विगड जानेपर अनेक रोग उत्पन्न होनेका भय रहता है इस कारण इस रोग से मनुष्यों को सावधान रहना चाहिये, क्योंकि श्लेष्मा बिगड जानेपर प्रथम कास श्वाँस होते हैं. इसमें आदिहीसे शीघ्र पचने योग्य पदार्थ सेवन करे. और शीतल पदार्थ सेवन कर श्लेष्मा को वहा देवे. यदि कदाचित् श्लेष्मा बिगड जावे तो गिलोय गावजवाँ. बनफशा. तीन तीन माशे सात मुनक्का लेकर सन्ध्या समय आध पाव जल-में भिगो देवे, प्रातः औटाकर आधा जल रह जाने पर मलकर छान लेवे उसमें एक तोला मिश्री पीसकर डालदे और पीजावे, यदि खाँसी हो तो उस काढे में तीन माशे मुलहटी भी डाल लेवे जब खाँसी दूर होजावे तब न डाले. ज्वर का लेश न हो तो गिलोय भी न डाले यहां मिश्री के न होने पर शहत भी डाला जा सकता है।

कफ निवारण !

दो०-सिता अमी युत जो पिवे पितरोग सबजात।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिमि [1]पियूष मधुक्काथते, उर कफ सकल नशात५२
[2]शृङ्गवेर सेवन करें, चाटे वा मधुसाथ।
कफ विकार सब नाशहो,वर्जे कफ कृत गाथ ॥५३

कास (खांसी) श्वास (दमा) निवारण।

दो०-[3]वृहती [4]पुष्कर [5]नीरप्रद [6]कणाविश्व [7]सुरदार।
[8]अमी भरंगीं शहतसों, श्वास कास गदहार ॥५४॥
[9]प्रपट कटफल घन शिवा, हिंगु भरंगी धान।
लोंग जरांकुश दारु बच,शृङ्गी मार्दिक आन ॥५५
कास श्वास ज्वर रोग मुख, क्वाथपिये सबजात।
मार्तण्डके उदय जिमि, अन्धकार बिलगात ॥५६
सिंही क्वाथ बनायके, पीपरि चूरण डारि।
ग्रासकरे क्षण एकमें, सकल कासको हारि ॥५७॥
पिपरी पिपलामूल अरु, सोंठ बहेडा लेय।
चूर्ण शहतमें चाटिके, कास दूरि करिदेय ॥ ५८॥
खट्टे [11]दाडिमको [12]त्वचा, अथवा [13]यष्टीसत्व।
[14]वत्साविभीतक मुखधरे, नाशे [15]कास ममत्व ॥५९
पंच मूलके क्वाथमें, पीपरि चूर्ण मिलाय।
अथवा चित्रक सोंठ घन,द्विगुणित गुड़ मिलवाय६०
वटी बनावे प्रेमसों, खावे सो दिन तीन।

---

१ गिलोय, २ अदरख, ३ भट कटैया, ४ पुष्करमूल, ५ मोथा, ६ पीपल, ७ सोंठ, ८ देवदारु, ९ गर्च्चा, १०पित्तपापरा, ११खट्टीअनार, १२ वक्कल, १३ मुरहठीकासत, १४ बहेड़े का वक्कल, १५ खांसी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कास श्वास विकार सब होय काललवलीन ॥६१॥
लीजे राई वरियरा, त्रिफला त्रिकुटाजोय।
देवदारु पद्माखश्री, चूरण कीजे सोय ॥६२॥
घीव शहत सों खाइये, कास श्वास मिटिजाय।
कफ को नाशे तुरतही, चिन्तामणि यह आय ॥६३
पंचमूल अरु इन्द्रजव, [1]वृकी [2]बला घनलेय।
अमी किरातक विश्व कुट [3]जल [4]तुच सम कर देय॥
श्वास कास अतिसार ज्वर वमन वेदना जात।
जिम पत्नीपति द्रोह करि व्रत दानादि नशात॥
भूता वास पकाइये, [5]शृङ्गवेर रसडार।
मधु युत खातहि श्वास गद, जात न लागत वार॥
[6]पाटल [7]वैजन्ती कणा, [8]श्रीस्योनक [9]खंभार।
श्वास कास गद जात है, पिये क्वाथ दिन चार॥
नागर [10]जलधर गुड़शिवा, लीजे बटी बनाय।
शयन समय निशि खातही, श्वास कास गद जाय॥

कटेली के काढा में चार आनाभर पीपलों का चूर्ण मिलाय पीने से खांसी दूर होती है।

अडूसा की छाल, किसमिस बड़ी हर्रका काढा आधा तोला चीनी और शहत मिला पीने से खांसी दूर होती है।

---

१ पाठी, २ बरिहरा, ३ सुगन्धवाला, ४ बेल, ५ बहेड़ा, ६ अदरख, ७ पाडर, ८ अगेथ, ९ बेल, १० सोनापाठी, ११ मोथा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिक्का (हिचकी) निवारण ।

दो०-कण लोक पथ्या सिता, मधुयुत लीजे खाय।
पुनि नागर गुड़ नासले हुचकी देत नशाय ॥

मुलहटी चूर्ण शहत के साथ चाटने से अथवा पीपल का चूर्ण शक्कर के साथ सूंघने से हिचकी जाती रहती है।

अथवा पीपल, आंवला, सोंठ इन सबका चूर्ण शहत और मिश्री मिलाय दो दो घंटे उपरान्त सेवन करने से हिचकी दूर होती है।

काली मिर्च, मिश्री का चूर्ण शहत में चाटने से हिचकी दूर होती हैं।

इन्द्रजव का चूर्ण २ तोला शहत में चाटने से प्रबल श्वास और हिचकी दूर होती है।

अतीसार निवारण ।

जायफल पीसकर नाभिके चारों ओर लेप करने से अतीसार दूर होता है।

अथवा आमकी छाल कांजी के साथ पीसकर लेप करने से अतीसार दूर होता है।

अथवा बेलकी गिरी १ तोला, आमका बादां १ तोला आधसेर जलके साथ औटाय आधपाव रहने पर उतार ले, उसमें चार आना भर शहत चार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आना भर मिश्री मिलाय पीने से अतीसार और वमन होना शान्त होता है।

लौंग जीरा, जायफल, सोहागाका लावा इनका चूर्ण बनाय शहत और मिश्री मिलाय चाटने से अतिसार निवारण होता है।

काली जामुन और आँवले के नरम पत्तों का रस शहत और बकरी के दूध में मिलाय पीने से रक्त अतिसार रोग शान्त हो जाता है।

अथवा बेलकी गिरी, मोथा, धायके फूल, काली मिर्च, सोंठ, मोचरस इनके बराबर गुड़ और मट्ठे में मिलाय पीने से दुर्जय अतीसार शान्त होजाता है।

अथवा काले तिल पीसकर उसकी चौथाई मिश्री मिलाय बकरी के दूध के साथ खाने से अति शीघ्र अतीसार शान्त हो जाता है।

अथवा बड़का फूल चाँवल के धोवन में पीसकर मट्ठे के साथ पीने से अतीसार शान्त होता है।

दो०-[1]वृकीविषा [2]ऊषण कुटज, घन सुरदारु बिडंग।
अतीसार युत शोथतनु, पियत क्वाथरुज भंग॥
[3]अब्द मोचरस [4]धातुकी, लोक पठानी लोध।
[5]कमलाफइंदरेशजव, [6]सम चूरण करि शोध॥

---

१ पाठ, २ काली मिर्च, ३ मोथा, ४ धाय के फूल, ५ बेल, ६ इन्द्र जव।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रज खातहिं गुड़ तक्रयुत, अतीसार रुज भाज।
वृत्रासुर के प्राण जिमि, निधन कियो सुरराज॥
लोकमोचरस धातुकी, औ अजमोद मिलाय।
खैये चूरण तक्रयुत, अतीसार गद जाय॥७२॥
[1]पत्रज [2]पावक सूंठिते अतीसार विनशात।
जिमि सुपूतके ऊपजे, कुलकलंक मिटि जात॥
[3]धनदेता [4]नारद कुटज, कमलाफल हीबेर।
आमशूल अतिसार हर, पीजे क्वाथ सवेर ७५
आमशूल अतिसार युत, सहित कोखिकी पीर।
कमलाफलगुड़ हनत है, होत अरोग शरीर॥

चौ०-दाडिमत्वच मधुयुत करुपाना। अतीसार गद करत पयाना॥

दो०-[5]अतिसार जाके नहीं, भक्ति एक घनश्याम।
बाल श्रीधनधान्य युत, कहा लोकतेकाम॥७७॥

संग्रहिणी निवारण।

दो०-[6]पुनर्नवा [7]ज्वालाशिवा, लोक मोचरस बेल।
शरफों का [8]चिरवेलयुत, पिये क्वाथ सब मेल७८
संग्रहिणी पुनिगद गुदा [9]मारुत गोला जात।
जिम खरदूषण त्रिशिरको, रघुपतिकियो निपात॥

---

१ तेजपात, २ चीता, ३ अतीस, ४ मोथ, ५ दस्तआना, ६ साटी तथा विषखपरा, ७ चीता, ८ कंजा, ९ वायमोथा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुंठी की पीठी करे, भूनि [1]आज्य म खाय।
संग्रहिणी युत पांडुगद, तनुतेजात नशाय ८०
बिल्वइन्द्रजव अतिविषा, [2]जलधर वत्सक छाल।
कुटकी पाठी धातुकी [3]रसज लोक मधुडाल ८१
यह चूरण सम पीसिके, तन्दुल जलमें खाय।
संग्रहणी सह गुदजरुज, तनुते जात पलाय ८२
छंदःले [4]छारद्धे [5]पटुपंच चपला ग्रन्थ रामट लाइये।
[6]फलपूरदीप्य [7]समेत सबको [8]बदरिरसमें खाइये॥
गुदवाय देवन ब्रह्मणिका युत, गुदजरोग नशाइये
जिमिपाय श्रुति सतसंग जगमें मन्दकर्मविहाइये॥
दो०-श्रीफल [9]पावक लोकवच सब समरज करिलेय।
खाय तक्र पुनि पीजिये, संग्रहिणी तजि देय॥
[10]ऊषण [11]पटुखारी [12]ज्वलन तक्र सहित जो खाय।
संग्रहणी गद गुदजयुत, मारुत गोलाजाय॥८५

कुक्षिनाभिकटिशूल निवारण।

दो०-रेंडी तेल समेत जो क्वाथ पिये दशमूल।
गात रोग सब हरतु है, कोखिनाभि कटिशूल॥

आमवात निवारण।

दो०-सुरपति जब ऊषण अमी, रसनि दारु दशमूल

---

१ घी, २ कुरैया की छाल, ३ रसौत, ४ सज्जी जवाखार, ५ पंचलवण, ६ बिजौरानीबू, ७ अजवायन, ८ बेर, ९ चीता, १० मिर्च, ११ खारीलवण, १२ चीता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पिये क्वाथ रंडतेलयुत, आमवात हतशूल।
गुर्च सोंठके चूर्ण ते, आमवात नशिजात।
जिमि गायत्री जापते, पाप समूह नशात ॥८८

नेत्ररोग निवारण।

चौ०-[1]शिग्रस मधुसहित लगावे [2]लोचन व्याधि सकल मिटिजावे॥ अर्जुनत्वच मधु सागर फेना। आंजत गदगत निर्मल नैना॥त्रिफला आज्यक्षौद्र समलीजे। करतलेप लोचन रुजछीजे॥ गौ गोबर रसकणाधिसावे। लोचन आँजि रतौंधी जावे॥ [3]भूतवृक्ष माक्षिक युत लावे। दृग फुल्ली गद वेगि नशावे॥अजामूत्रमें कुलथि भिगावे। छीलिमिंगी पीठी पिसवावे॥ [4]निशा [5]पटोलमं और फटकरी। करत लेष द्रगपीड़ा हरी त्रिफला तिक्त [6]किरातक लीजे। [7]सुधा [8]अरिष्ट [9]रसा [10]मधु पीजे कामल पांडु रोग सब जाई। जिमि शिव भक्त दरिद्र नशाई नाशहु देवदारु की लीजे। कामल व्याधि नैनते छीजे॥निशा आंवला [11]गिरि मृतलावे। करतलेप दृग कामल जावे॥ नागर सहित धेनुपय पीजे। लोचन ते कामल रुज छीजे॥ ८९॥

---

१ सहिजने का रस, २ सोनामाखी, ३ हरदी, ४ सेंधालवण, ५ आंवला हर्र बहेडा, ६ कुटकी, ७ चिरायता, ८ गुर्च, ९ नींब, १० रूसा, ११ शहत, १२ गेरू।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रसौत. सुरमा, दोनों हल्दी, चमेली के पत्ते, नीब के पत्ते, इनको गौके गोबर के रसमें गोली बनाय अंजन करे तो रतौंधी जाय।

बकरी के दूधमें फोहा भिगोय गायके घी में छौंक कर पलकोंपर बांधलेवे तो नेत्रपीडा शांन्त होवे।

दारू हल्दी का काढा, रसौत स्त्रीके दूधमें मिलय आँखमें लगानेसे आँखसे पानी गिरना बन्द होताहै

छोटी हर्ड घीमें तलकर पानी में पीस आँखकेचारों ओर लेप करनेसे आँखकी लाली कम हो जाती है।

सोंठ,नीमकी छाल पीसकर थोड़ा नमक मिलाय गरम कर आंखके चारों ओर लेप करने से आंखकी लाली, पानी बहना, और नेत्र पीड़ा शान्त हो जाती है।

गेरू, लालचन्दन, सोंठ, सफेद मिट्टी, कुलंजन, सब बराबर ले पीसकर लेप करने से नेत्र पीड़ा जाती रहती है।

बहेड़ा, छोटीहर्र, आँवला परवलका पत्ता,अड़ूसे की छाल,नींवकी छाल,इनके काढ़ेमें गुग्गुलमिलाय पीने से सब प्रकारकी चक्षुपीड़ा शान्त होती है अफीम, लालचन्दन, हल्दी पीसकर लेप करने से भी सब प्रकारका चक्षुरोग शान्त हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शहत में रसौत मिलाकर आँख में लगावे, अथवा सहिंजने के वृक्ष की छाल का रस शहत और सेंधालवण मिलाय आँख में लगाने से पीड़ा शान्त होती है।

बड के दूध में बहुत थोड़ा कपूर मिलाय चारों ओर लेप करने से थोड़े दिन का माडा (छिम) अच्छा हो जाता है छिलका उतरी बादामकी मींगी ५ छोटी इलायची के दाने चार रत्ती, मिश्री १ तोला, एक छटांक पानी में पीसकर प्रातःकाल सायंकाल पीवे तो नेत्रों की ज्योति बढ़े, स्मरण शक्ति व कपाल में बल बढ़े।

मुलहटी का चूर्ण ४ रत्ती, बड़ी इलायची के दाने ४ रत्ती, शहत ३ माशे यह एक मात्रा है, ऐसी तीन मात्रा दिनमें तीनवार खाने से नजला व खांसी शान्त हो जाती है।

शूलरोग निवारण।

अजवाइन आधा तोला, लवण चार आना भर मिलाकर चबाय दो घण्टे पानी पीवे तो शूल शान्त होजावे अथवा सोंठ और गुड़ बराबर दूध में औटाकर पीने से शूलरोग शान्त हो जाता है।

अथवा अजवाइन, बड़ी हर्र, सेंधालवण, सोंठ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह चारों दो दो आनाभर लेकर पीस सेवन करने से शूलरोग शान्त हो जाता है।

अथवा देवदारु, सफेद कुलंजन सुलफ, हींग, और लवण, कांजीमें पीसकर कुछ गरम करके लेप करे तो शूलरोग शान्त हो जाता है।

गठियारोग निवारण।

सहिजने की जड़ पीसकर सरसों के तेल में मिलाय पीडित अंगमें मलकर अरंडका पत्ता गरम कर बांध देने से रोग शान्त हो जाता है।

भगशूल व कुचपयरोग निवारण।

चौ०—निंबबीज दल सहित मंगावे। रंडबीजयुत बटी बनावे। सो गोली त्रिय भगमें धारे। योनि शूलगद सकल सिधारे॥ ९०॥

दो०—अजा आज्य नागर सहित, औ इन्द्रायन मूल
पीसि पोटली तियधरे, भंग होय भगशूल॥९१॥
[1]बृकी [2]वारिधर [3]अतिगुहा, [4]शचीनाथ जब [5]दरु।
[6]धरणि निम्ब [7]नागर [8]सुरा, [9]छिन्नाकुटकी डारु९२
काढ़ाकरि युवतीपिये, कुचपय रोग नशात।
जिमि निशि नायक दरशतें, गाततापमिटिजात९३

---

१ पाटी, २ मोथा, ३ परिधन, ४ इन्द्रजव, ५ दारुहलदी, ६ चिरायता, ७ सोंठ, ८ मरोरफली, ९ गुर्च।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रदर रोग निवारण ।

दो०-भल्लातक घनदारु निशि, वृषतिलरसाकिरात ।
पिये क्वाथ मधु डारि जो, नारिप्रदर गद जात ९४
मेघमूल नागर रसा, मधु युत तन्दुल नीर ।
प्रात समय नारीपिये, प्रदर न रहत शरीर ॥९५॥
अति भोजन अति शयन से, अति मैथुन संयोग ।
ताते तिय भगते गिरत, रुधिर दरविन भोग ९६

रात्रि समय मिट्टी के एक कोरे कुल्हड़ में फालसे के वृक्षकी छाल भिगोदेवे, फिर उस पानीमें मिश्री मिलाय पीनेसे १५ दिनमें प्रदररोग जाता रहता है।

चिकनी सुपारी पीस घीमें मसल शक्कर मिलाय दो दो तोला प्रतिदिन प्रातःकाल सायंकाल सेवन करने से भग सम्बन्धी रोग शान्त होजाता है ।

प्रसूत रोग निवारण ।

दो०—बीजपूर मधुमधुक घृत, जीरकयुत ले खाय ।
नारि सूतिका मुदित व्है, सबगत देत नशाय ९७
धान्य सितायुत खायके, तन्दुल जल पी लेय ।
नारि गर्भिणी दमनगद, द्वै दिनमें तजि देय ९८
पर्पट [१] सहबूक घनबला, रोहिष [२] सुधा अतीस ।
धान्य यास [३] स्योनाक [४] हिम [५], पिये गर्भिणी पीस ९९

---

१ चौलाई की जड़, २ हाऊबेर, ३ खस, ४ घनियां, ५ जवासार, सोनापाठा, ७ श्वेत चंदन ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रुधिर द्रवनतन पीर पुनि, हरन आम अतिसार।
जिमिमुनि तप बलते हरत,लोभ मोहमदमार १००

रजोधर्म प्रकाश यत्न।

दो--०मासा रोधन नारि जो, इन्द्रायन जड़लाय।
लै भगमें धारण करे, रजोधर्म खुल जाय ॥१॥

सुख प्रसव यत्न।

बिजौरा की जड़, महुआ का चूर्ण घी शहत मिलाय चाटने से अथवा पिलाने से स्त्री सुख पूर्वक बालक जनती है।

जिस गर्भिणी स्त्रीके पुत्र होनेमें कष्ट हो उसको यह चक्रव्यूह यंत्र कांसे की थाली में लाल चन्दन से लिख कर दिखावे तो शीघ्र बालक उत्पन्न होवे परंतु मंत्र स्मरण करता जावे।

मंत्रः--ॐसमुद्र स्योत्तरेतीरे जमला नाम राक्षसी।
तस्या स्मरण मात्रेण विशल्यागर्भिणी भवेत्॥

स्त्रियों के रोग तथा स्त्री रोग चिकित्सामें विशेष रीति से देखना हो तो इस ग्रन्थ के द्वितीय भाग के चतुर्थ तरंग में देखना।

बाल रोग निवारण।

दो०-[1]शृंगीनीरद[2] अतिविषा[3],रज[4] करिद्यौद्रमिलाय
काश वमनगद बालको, खातहि जात पलाय २

---

१ ककराशृंगी, २ माथा, ३ अतीस, ४ चूर्ण।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[1]मुदाकुसुम मधु अति [2]गुहा, [3]अरुण पठानीलोध।
अतोसार बालक तजे, दीजे भेषज शोध ॥ ३ ॥

जो रोग मनुष्यों को होते हैं वही रोग प्रायः बालकों के भी होते हैं एक वर्षतक के बालक को १ रत्ती मात्रा, और दो वर्ष के बालक को २ रत्ती औषधकी मात्रा और फिर १ माशा देना योग्य है, जिस अंग पर हाथ धरते ही बालक रोवे वहाँ पीड़ा है उसकी औषधी करे। बालक तीन प्रकार के होते हैं दूध पीने वाले और दूध पीने व अन्न खाने वाले, तथा केवल अन्न खाने वाले, केवल दूध पीने वाले बालक के रोग में उसकी माताको पथ्य कराना और बालकको हितकारी औषधी देना. दूध पीने और अन्न खाने वाले बालक को रोग हो तो उसकी माताको पथ्य कराना, और बालक को अन्न में व दूधमें औषधी देना, तथा केवल अन्न खाने वाले को यथोचित रीति से औषधि देना।

जिस बालक को ज्वर आता हो उसको नागर-मोथा, हर्ड़की छाल, नीमकी छाल, पटोलकी छाल इनका काढ़ा शहत मिलाय पिलावे।

---

२ धाय के फूल, ३ खाश्विन, ४ मजीठ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बालक को शयन कराने की इच्छा से अफीम नहीं खिलाना चाहिये।

तीसरे चौथे दिन बालक को शहत और गुलाब का जल एकमें मिलाय कर पिलाना चाहिये।

बालक के दाँत निकलें उन दिनों नित्य तेल लगावे।

बालक को उल्टी आवे तो पोदीना का अर्क पिलावे। धानका लावा, सेंधालवण बराबर लेके शहत मिलाय चटाने अथवा चूनेका पानी ४। ५ बूंद थोड़े दूधमें मिलाकर पिलाने से दूध डालना बन्द होकर बालक अच्छा हो जावेगा बालक की आँख किचडाती हो तो त्रिफला के जल से धोना चाहिये।

बालक को पतला दस्त आता हो तो धायका फूल नेत्र वाला, गजपीपल, बेलकी गूदी, इनका चूर्ण अथवा काढ़ा देने से दस्त बन्द होता है।

बालक के शिरमें दर्द हो तो उसके कान में सरसों के तेल को डालना।

बालकको हैजा होगया हो तो इलायची पोदीना, खसखस, सौंफ इनको आधपाव जल अथवा गुलाब के जलमें उबालकर दो दो घंटा उपरांत पिलाना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीपल, अतीस, काकरासिंगी, नागरमोथा, इन सबका चूर्ण शहत में मिलाकर चटाने से बालक के खांसी उलटी, और ज्वर की शांति होती है।

यदि बालक दुबेल होगया हो तो बालकको प्रति दिन गायका या बकरी का दूध पिलाना चाहिये।

यदि बालक रोता हो तो उसके मस्तक पर चन्दन का लेप करे, जाड़े में सोंठ का लेप करे और बहुत रोने न देवे।

यदि बालक को नींद न आती हो तो उसकी इन्द्री पर पोस्त के दानेका तेल लगा देना चाहिये बालरोग व बाल चिकित्सा को विशेष रीति से दूसरे भाग के चौथे तरङ्ग में लिखेंगे।

तपेदिक निवारण।

दो०—वृष काढ़ा मधुयुत पिये, डारि सिता नवनीत।
जिमि त्रिपुरासुर शिव बध्यो, तपैदिक तिमि जीत

कृमिरोग नाशन।

दो.-त्रिफल त्रिकटु अमरेश जब, त्रिवृतखदिरवघनींब
पिये काथ गौमूत्र में, निधनहोय कृमि जीव ॥५

व्रण (घाव) आदि निवारण।

दो०-कौशिक त्रिफला क्वाथ में तनछत पीर नशात
जिमि सित जल मधुयुत पिये थूलहोय कृश गात

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शीश जलौंका दीजिये, अरुसारिखा मलाय ।
खालीतिलन युत लेप करूँ शिरकी फोट नशाय ॥

मोम १ तोला, जलाहुआ नीलाथोथा ६ मासे, घी २ तोला, यह सब एकमें मिलाय गरम कर घावपर लेपे, तो फोड़ा फुन्सी और गरमी के चकत्ते अच्छे हो जाते हैं ।

अथवा कडुवा तेल १ पाव, मोम ५ टंक, कोयला १२ टंक सिंदूर २ टंक, शोरा २ टंक मुर्दाशंख २ टंक, यह सब बारीक पीस घी में मिलाय गरमकर घावपर लेप करे तो घाव अच्छा होवे ।

तथा एक तोला माखन सौबार जलमें धोकर घाव पर लगावे तो घाव अच्छा होवे ।

हलदी १ भाग, मुरदाशंख २ भाग, निबौली की मींगी २ भाग, मोम २ भाग, इनको घी में पीसकर गरम करे यह मलहम पुराने फोड़ा को हित है ।

श्लो०—अपक्वो यदि वा पक्वो निम्वः सर्व व्रणे हितः
अपक्वं पाचयेन्नित्यं पक्वं चापि विशोधयेत् ॥१॥

नींबके पत्ते की लुगदी बनाय घावपर धरे, तो पक्का अथवा कच्चा सब प्रकार के व्रणोंपर नींम रखना अच्छा है, विना पकेको पकाता और पके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुये को फोड़ कर अच्छा कर देता है यदि फोड़ा खुजलाता हो अथवा अधिक रुधिर पीव देता हो तो नींव की पत्ती जल में मिलाय गरम करे फिर उस जल से फोड़ा व घाव को धोवे और लुगदी बांध देवे तो घाव अच्छा हो जाता है।

अग्नि से दग्ध होजाने पर।

दश माशे गुलाब का तेल, मोम १६ माशे को पका कर उसमें मुरदाशंख ५ माशे, थोड़ा कपूर मिलाकर मरहम बना लेवे वह आग से जले घाव पर लगा देवे तो घाव अच्छा होजाता है, अथवा घी ग्वार के पाठे का रस व चूने का पानी नारियल का तेल मिलाय लगाने से जलन नहीं पड़ती, अथवा सोरे का पानी वा दूध में तिल पीस उसमें माखन मिलाय लगाने से वा चूने के पानी में पीपल की सूखी छाल पीस लगाने से जला घाव अच्छा हो जाता है। तथा खाने का चूना और तिल्ली का तेल समान लेकर दोनों को शामिल मिला के खूब पीसना इसके लेप से दग्ध स्थान निश्चय आराम होगा इसको फुलंमा कहते हैं अजमायस किया हुवा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नासिका रोग निवारण ।

चार माशे बनफशा को पानी में औटाय खूब मले फिर बीदाना का बुआब मिलाय, चार माशे मोम को गुल रोगन में पिघलाय सब को मिलाकर मरहम बना लेवे सो नासिका के फोड़ा फुंसी में लगावे ।

फटकरी को पीस बारीक चूर्ण बनाय सूंघने से नकसीर बन्द हो जाती है ।

तथा कच्चेआमको भूनकर उसको जलमें मलकर नमक डाल शरबत बना कर पीवे, तो शिर की गरमी दूर होकर नकसीर रोग जाता रहता है ।

छाला निवारण ।

दो०-त्रिफला[1] पत्रसुमालती,[2] सुधा निशायुग[3] यास।
गुरा[4] क्षौद्रयुत[5] पीजिये, छाला बदन बिनास ॥

विवाई निवारण ।

कोशिक[6] गिरिमृत[7] सिक्थ[8] मधु, सर्पि[9] पटोत्तमराल[10] ।
लेप बेवांई पर करे, क्लेश जाय तत्काल ॥ ९ ॥

झांई निवारण ।

दो०-लोध[11] वटांकुर हिमकणा कूठ मजीठ मसूर ।

---

१ चमेली के पत्ता, २ गुर्च, ३ दोनों हल्दी, ४ जवासा, ५ मुनक्का, ६ शहद, ७ गुग्गुल, ८ रू, ९ मोम, १० घी, ११ सेंधा, १२ बर्गदका अंकुर।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्षीर मेलि उबटन करे, तन झांई गद दूर ॥११०॥
घृत मसूर उबटन करे, सप्त दिवस जो कोय।
गद झांई नहिं रहत है बिमल वर्ण तनु होय२१
लोध [1]धान वच लेपते, नाशत [2]बदन मुहास।
जिमि उबटन [3]इंगूद फल, झांई करत विनास२२

नासूर निवारण।

पीपल की छाल, चिकनी सुपारी, इनको जलाकर भस्म कर लेवे फिर गौके मक्खन में घोटकर लेप करे तो नासूर दूर होवे।

जहरवाद।

पत्थर पर पानी के साथ नींब की सूखी छाल घिसकर बांध पत्ते के ऊपर लेप कर घाव पर रख देवे तो तीन दिनमें घाव अच्छा हो जाता है।

खाज निवारण।

मिर्च [4]शिबारज मैनशिल, [5]नागज [6]द्विनिशि [6]द्विजीर पारा अरु घृत लेपते, खाज न रहत शरीर ॥११४॥

दद्रु (दाद) निवारण।

रालका तेल १ छटाँक, गंधकका चूर्ण १छटाँक, मिलाकर दादपर लगाने से अच्छा होता है।
पालक जौईके पत्तों का रस मलने से भी दाद

---

२ धनियां, २ मुस्त, ३ हिंगोटवृक्ष का फल, ४ गंधक, ५ सिंदूर, ६ दोनों हल्दी, दोनों जीरे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अच्छा हो जाता है, आम की गुठली, नीम की लकड़ी, पँवारके बीज, भैंसका मठा, हल्दी इनका चूर्ण मर्दन करने से दाद खाज सेहुवाँ का विनाश होता है, ढाक के बीज, फटकरी, मुर्दाशंख, मैन-जायफल, आँवलासार गन्धक इनको नीबू के रस में घोटकर लगावे तो दाद जाता रहे।

गंडमाला निवारण।

दो०—गुड़ भल्लातक अर्कपय, दतौन सेहूँड़ क्षीर।
वन्हि कसीसहु लेपते, गंडमालगत पीर ॥१४॥

कंठरोग निवारण।

वृकीतिक्त मधु अतिविषा, सुरपति जब सुरदारु।
पिये क्वाथ गौमूत्र में, कंठरोग संहारु ॥ १५ ॥

स्वर भेद निवारण।

अदरख, हलदी, बकुची, वच, भद्रक, सोंठ, मक्खन इनकी चटनी बनाय चाटने से कोकिला के समान कंठका स्वर हो जावे। तथा कौआ-गोडी, वच, कूटपीपरी इनके चूर्ण को शहत में मिलाय चाटने से स्वर ठीक हो जाता है। कुलं-जन का टुकड़ा मुँहमें रखने से स्वर सुधरेगा।

शिरोराग निवारण।

दो०—रुग पटोल शुंठी वृकी, बीजपँवार मँगाय।

---

२ चीता, २ कूट।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रंडबीज शिग्रू सहित काँजी वारि पिराय ॥१६॥
करत लेप ये शीशपर विगत होत सबपीर।
जिमि गुरुकी सेवा किये अघ नहिं रहत शरीर·१७

पीपरी सेंधालवण गुड़ अदरख का रस इनको घिसकर जलके साथ नास लेना, अथवा सोंठ,कूट, अंड वृक्षकी जड़ एक में पीसकर मस्तक पर लेप करे तो शिरका रोग शान्त होजाता है।

अर्धकपाली (आधाशीशी) निवारण।

आधे शिरमें पीड़ा हो तो केशर को घी में खरल कर नास लेवे, यदि नेत्र लाल होगये हों तो बबूल का फूल लालचन्दन, पानी में पीसकर अंजन करना।

कर्ण रोग निवारण।

दो०—सुखदर्शन मृदुपातले, अथवा पातमदार।
सेंकिनि चौहे कानमें, पीड़ा होवे छार॥ १८॥

सरसों के तेलमें अफीम मिलाकर कानमें डालने से क्लेश दूर होता है, अथवा नींवके पत्तो का रस शहत मिलाय दो चार बूँद कान में डालने से कानका बहना बन्द होता है लहसन को तेल में पकाके तेल की बूँद कान में डाले।

---

२ जलन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दन्तरोग निवारण ।

दो०-त्रिफला त्रिकुटा तूतिया, पांचौ लोन पतंग ।
दांत वज्र व्है जात है, मांजू फलके संग ॥ १ ॥

पतंग वेरीकीरते कपूर १ रत्ती, सरसों का तेल २ माशे मिलाकर दांतों में मले अथवा चूल्हे की मिट्टी में सेंधा लवण काली मिर्च मिलाकर मले अथवा सरसों का तेल में वा घी में हींग भूनकर उस हींग को दाढ़ के खोखले में रक्खे तथा हींग को घी में भूनकर हींग निकाल डाले रुई की फुर हरी से दाढ़ के खोखले को दागे तो दांतों की पीड़ा दूर हो लोंद फिटकरी मांजू मिरचां रूमीगूंद कपूरकि किरचां बोंरसली का रसपुनि डाले दांतन किये दांत नहिं हालें ।

हस्त मैथुन गुद मैथुन ।

हाथसे वीर्यको निकालना व दूसरे की गुदा भंजन यह दुष्ट स्वभाव प्रायः मनुष्यों में कुसंग के प्रभाव से हो जाता है इससे मूत्रकृच्छ, प्रमेह, क्षयी, बवासीर, नपुंसकत्व, निर्वलता अदि अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं, संतान निर्वल होती है, नेत्रों की ज्योति मंद पड़जाती है, पीछे से पछताने के बिना अन्य कुछ हाथ नहीं आता, इस कारण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बालकों तथा इस दुष्ट स्वभाव से ग्रसित मनुष्यों को सावधान होजाना चाहिये, वीर्य को अपने शरीर का राजा समझ कर व्यर्थ मत खोओ।

मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) निवारण।

दो०-शिलाजीत [1]चपलाइला, [2]अश्मभेदयुत आन।
मूत्रकृच्छ्र गदजात है, पुनि तंडुल जल पान॥
क्षौद्र यास गोक्षुर शिवा, अश्मभेद [3]द्रुमराज।
या, भेसज के पिये तें मूत्रकृच्छ्र गतत्याज ॥३०॥

दालचीनी, शीतलचीनी, चोवचीनी, रेवतचीनी एक एकमाशा लेकर कूट छानकर चार माशे शकर मिलाय बकरी अथवा गौ के कच्चे दूध के साथ दोनों समय खाय सात दिन में मूत्रकृच्छ्र रोग जड़ से शान्त हो जाता है।

अथवा गोखरू २ तोला, जीरा सफेद १ तोला, समुद्रफेन १ तोला शोरा कलमी १ तोला, अफीम १० रत्ती इनको कूट पीस दश पुड़िया बना लेवे सो नित्य प्रति तीन पुड़िया शीतल जलके साथ सेवन करे तो निश्चय चौथे दिन रोग शान्त हो जावेगा।

तथा देशी सौंफ २ तोला धनिया २ तोला, त्रिफला ५ तोला भुना हुआ नीलाथोथा १ माशा,

१ पीपरि, २ बड़ी इलायची, ३ पाषाणभेद, ४ अमलतासे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुर्दाशंख ४ माशा सफेदा काशकरी ४ माशा, इनको कूट छानकर रात्रि समय जलमें भिगा देवे प्रातःकाल छानकर इन्द्रिय में पिचकारी लगावे।

तथा सफेद कत्था तीन भाग नीलायोथा १ भाग बारीक पीसकर जलके साथ पिचकारी लगावे।

अथवा तीन दिन पुराने चांवलों का भात और पतली मूंगकी दाल अथवा पतली खिचड़ी खाय फिर इन्द्री जुलाव लेवे, घड़ा भर जल में आधसेर गोका दूध मिला देवे आधपाव राल बहुत अच्छी बारीक पिसाकर रक्खे एक तोला राल फांक कर दूधकी लस्सी घड़े में से पेटभर पी लेवे, इस प्रकार घड़ी घड़ी भर पीछे राल फाँके लस्सी पीवे दिन भर में वह लस्सी और राल को खालेवे तो पेशाव होकर मूत्रकृच्छ रोग शान्त हो जाता है अगर दस्त आने लगें तो ठंडे जलसे आवदस्त ले और हाथ पांव भी ठंडे ही जल से धोवे जब दस्त बन्द करना हो तब गरम जल से आवदस्त लेवे और मूँग की दाल पी लेवे दूसरे दिन सौंफ कासनी छोटी इलायची, घोट छानकर मिश्री मिलाय पीवे, उसके दूसरे दिन फिर जुलाव लेवे, फिर अगले दिन ठंडाई पीवे इस प्रकार तीन जुलाब ले औषध करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा छोटी हर्रे, शीतलचीनी, छोटी इलायची के दाने, सफेद, जीरा, जबाखार, मुलहठी, ये छः छः माशे रेवत चीनी ४० माशे, सबकी बराबर मिश्री कूट पीसकर रख छोड़े जिस दिन इन्द्री जुलाब लेना हो उस दिन एक तोला गरम जलके साथ चारघड़ी रात रहे फांक लेवे फिर १ तोला फंकी दो घड़ी रात रहे, तब फांके अनन्तर सूर्योदय समय दो तोला फंकी फांके, उपरान्त दिनभर केवल लस्सी पीता रहे तो इन्द्री जुलाब होकर रोग शांत हो जावे।

यदि जुलाब ठीक ठीक न हो तो सफेद इलायची ३ माशा, सौंफ ३ माशा, मिश्री ४ माशा, इन तीनों को पीसकर फांक लेवे ऊपर से ककडी खीरा और खरबूजा के बीज तीन तीन माशे घोट कर पी लेवे।

एक मिट्टी के पात्र में शोरा डाल जल भर देवे ठंडा होने पर उसमें इन्द्री डालकर मूत्र करे फिर नया जल व शोरा बदल कर शीतल होने पर दुवारा मूत्र करे इसी प्रकार जब मूत्र की इच्छा हो तब उसी में इन्द्री डालकर मूत्र करे तो शोरा के प्रभाव से इन्द्री का घाव सूख जायगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चन्दन का इतर दो बूँद एक बताशे में डालकर ऊपर से गौका कच्चा दूध मिश्री मिलाय आधसेर पीवे प्रातः सायं पीने से १५ दिन में मूत्रकृच्छ नष्ट हो जाता है।

अकरकरा १ पैसाभर, ब्रह्मदंडी १ पैसाभर धनिया १ पैसाभर, तालमखाना ४ पैसाभर सफेद जीरा ४ पैसाभर, समुद्र शोष २ पैसाभर वायविडंग २ पैसा भर बारीक पीस नित्य १ पैसाभर पावभर गोदुग्ध के साथ खाय तो सुजाक दूर हो जाता है।

गुर्चका सत, सफेद इलायची, मुलहठी, पाषाण-भेद, तालमखाना, वंशलोचन ये एक तोला २ भर लेकर बराबर मिश्री के साथ खाय तो सुजाक जाय।

अथवा बिरोजा का तेल दो बूँद उष्ण काल में शर्बत में शीतलकाल में बताशे में खाय तो मूत्रकृच्छ शान्त हो।

गोदुग्ध में चूने का पानी थोड़ा मिलाकर प्रातः समय पीवे तो ७ दिन में शान्त हो जावे।

तथा शहतूत के नरम पत्ते घोटकर मिश्री मिलाय शर्वत करके पीवे तो ७ दिनमें सुजाक जाय, तथा शीतल चीनी, शोरा कलमी, विरोजा का सत,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भुनी फिटकरी सबकी बराबर मिश्री मिलाय छः छः माशा दोनों समय गोदुग्ध के साथ सेवन करे तो मूत्रकृच्छ रोग शान्त होता है। चार रत्ती जवाखार १ छटांक चीनी के शर्बत के साथ पीने से मूत्रकृच्छ जाता रहेगा।

लाल मिर्च खटाई, तेल और गुड़ आदि गरम वस्तु न खावे।

जब मूत्रकृच्छ रोग जाता रहे तब पुष्टि निमित्त बंशलोचन ३ तोला, सालममिश्री ४ तोला, कतीरा गोंद १२ तोला, सफाकुल मिश्री २ तोला, दालचीनी २ तोला. गुर्चका सत २ तोला, समुद्रशोष २ तोला इन सबको कपडछन करके रख छोडे, प्रति दिन प्रातःकाल १ तोला, फंकी में १ तोला, मिश्री मिलाय फांक लेवे ऊपर से गाय का दूध पी लेवे।

उपदंश (आतशक) रोग निवारण।

चोवचीनी २ तोला, नीलाथोथा ३ तोला, शिंगरफ ३ तोला लेकर पीस लेवे और एक मुरगी का अंडा गरम भूभल में थोड़ी देर दबाकर उस अंडे को तोड पीलापन निकाल कर मिला देवे और घावपर लगावे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चोवचीनी का चूर्ण २ माशे, शहत के साथ प्रति दिन चाटे तो उपदंश रोग शान्त हो जावे।

सनाय के पत्ते, मकोय के पत्ते गुलाबफूल, मुनक्का, अमिलतास ये बराबर लेके आधासेर जलमें औटावे जब आधा रहजाय तब छानकर पी लेवे, चौथे दिन दूसरी औषधी खाय, शुद्ध जमाल गोटा १ तोला आँवला ४ तोला, कूट पीस कपडछन करके १ दिन नीबू के रसमें खरल करके मिर्चकी बराबर गोली बनावे एक गोली प्रातःकाल एक गोली सायंकाल शीतल जल के साथ सेवन करे तो १५ दिनमें उपदंश रोग शान्त हो जाता है। लालामिर्च, खटाई गुड़, तेल और गरम पदार्थ नहीं खाय।

अर्श (बवासीर) रोग निवारण।

एक तोला सफेद मोमको रोगन-गुलमें पिघलावे और तीन तोला महँदी मिलाकर मरहम बना लेवे सो बवासीर के घाव पर लगावे।

बड़ी हर्र का चूर्ण गुड़ मिलाय खावे, या शतावरी को बकरी के दूध में पीस पीवे, वा अनार के रसमें चीनी मिलाय पीवे। सरसों का तेल, हल्दी, घोबलता, इनका लेप मस्सा पर लगाने से मस्सा गिर पड़ता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथवा सौंफ, चूना, गुड़ आगपर रख धूनी देने से बवासीर शान्त हो जाती है,मक्खन में १ तोला काला तिल मिलाय सबेरे खाने से बवासीर शान्त हो जाती है काले तिल पिसकर उसकी चौथाई मिश्री मिलाय बकरी के दूध के साथ खाने से बवासीर शान्त हो जाती है।

नागकेशर १ माशा, वायविडंग १ माशा, मिश्री २ माशे, इनको पीसकर दो मात्रा बनावे दिन में दो वार गौ के पाव पाव भर दूध के साथ दो तोला शक्कर मिलाय सेवन करे तो खूनी और बादी बवासीर जाती रहती है । मूली का खाना बवासीर में हितकर है।

क्षयी रोग निवारण।

चौ०-मिश्री बंशलोचन हीं लावे। पीपरि इलायची तजहि मिलावे॥ मधु घृत सानि चूर्ण यह खावे। क्षयी रोग तनको मिटि जावे॥ २२॥

प्रमेह व पथरी निवारण।

दो०-[1]रेंडी [2]कुन्ती [3]त्रिकुट [4]वृष, [5]श्यामा [6]बहुला लाय।
[7]उपलभेद [8]यष्टी सहित, पीजे काथ बनाय॥३३॥
रुज प्रमेह पथरी सहित, ये काढ़े ते जात।

---

१ अंडी, २ संभालू के बीज, ३ गोखरू, ४ रूसा, ५ पीपरी, ६ इलायची, ७ पाषाण भेद, ८ मुलहटी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिमि ताडका सुबाह युत, रघुपति कियो निपात३४
[1]कुश [2]त्रिकुट मधु [3]राजद्रुम, शिवा [4]कास धन्यास ।
[5]उपल भेदयुत क्वाथ ये, पथरी करत विनास॥३५
शिवानिशामधु सेवते, गदप्रमेह टलजात ।
शिवानिशा मधुभजनते, जिमि गदभीतनशात ॥३६

गुर्च का सत १ रत्ती, कलमीतज १ माशा, [6]कच्ची हलदी १ रत्ती, शहत ३ माशे यह एक मात्रा है प्रति दिन खाने से १५ दिन में प्रमेह जाय ।

एक तोला मूलीका रस, उतनी ही मिश्री मिलाकर पीने से अश्मरी तथा पथरी शान्त हो जाती है ।

अथवा आधपाव दूधमें दो तोला शहत मूली का रस तथा सतावरी मिलाय पीने से सब प्रकार का प्रमेह नष्ट हो जाता है । गुर्च का रस २ तोला थोड़ा शहत मिलाय पीवे ।

अथवा गौके कच्चे दूध में ठंडा जल मिलाय प्रति दिन प्रातःकाल पीवे तो प्रमेह रोग दूर होवे ।

रक्तपित्त निवारण ।

मूलरका रस शहत मिलाकर पीवे, अथवा अडूसे के पत्तोका रस ९ तोला थोड़ा शहत मिलाकर पीवे तथा वासकपत्र कूटकर चीनी मिलाय पीवे ।

---

१ खश, २ गोखरू, ३ अमिलतास, ८ कांच, ५ पाषाणभेद, ६ हलदी कच्ची का साग बनता है उस माफिक ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शहत के साथ बड़ी हर्रका चूर्ण खाने से क्षुधा बढ़ती है और कफ रक्तपित्त शूल आमातिसार रोग शांत हो जाता है। बड़ी हर्र अथवा पीपरी को वासक के रसमें सात भावना देवे फिर उसको शहत में मिलाकर चाटे तो रक्तपित्त अति शीघ्र अच्छा हो जावे।

अनार के फलका रस और सफेद दूबके रसकी दिन में दो तीनवार नास लेने से नाक से रुधिर निकलना बन्द हो जाता है। चीनी मिला दूध, अंगूर का रस, गौ का घी, और ऊखके रसमें चीनी मिला नास लेने से नाक और कान से रुधिर बहना बन्द हो जाता है।

अंडवृद्धि निवारण।

धूप, गूगल, सेमल इनका लेप तमाखू के पत्ते पर करके आगपर सेंक बांध देवे तो अंडकोश नहीं बढ़े।

कोष्टशोधन [जुलाब]।

जुलाब लेने से आलस्य की निवृत्ति होती है और रुधिर शुद्ध हो जाता है, शरीरस्थ विकार शान्त हो जाता है, पहले तीन दिन तक मूँगकी पतली खिचडी खाय यदि मधु भोजन की अभिलाषा हो तो कच्चे दूध में मिश्री मिलाय पी लेवे, चौथे दिन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जुलाब की औषधी खाय। कुछ भुना हुआ काला दाना १ तोला, सनाय की पत्ती का चूर्ण १ तोला, काली हर्र १ तोला लेकर खरल करे तदनन्तर चना बराबर गोली बनाय जलके साथ खाय तो जुलाब उत्तम होवे, दिनको शयन नहीं करे, घी खिचडी खाय स्नान कमती करे।

द्वितीय शुद्ध पारा, शुद्ध जमालगोटा, शुद्ध सोहागा, सोंठ, कालीमिर्च ये सब छः छः माशा और शुद्ध जमालगोटा डेढ़ तोला सबको एक साथ खरल करे दो रत्ती की गोली बाँधे, प्रतिदिन एक गोली १ तोला मिश्री के साथ सेवन करे ऊपर से जितने अंजली जल पीवे उतने ही दस्त आवें।

तथा कालादाना १ पैसाभर, गुड़ १ पैसाभर, सोंठ १ पैसाभर, सनाय की पत्ती का चूर्ण १ पैसाभर, शुद्ध जमालगोटा १ पैसाभर इन सबको खरल करके मसूर भर की गोली बनावे १ गोली ४ माशे मिश्री के साथ खाय तो एक दस्त आवे, २ खाय तो दो दस्त आवें इस प्रकार जितनी गोली खाय उतने ही दस्त आवें परन्तु शरीर के बलका अनुमान करके खाय ऊपर से गरम जल पीवे तो जुलाब ठीक होवे, जिस समय दस्त बन्द

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करना चाहे उसी समय शीतल जल पीकर खिचडी मूँगकी खावे।

बुद्धी दोष निवारण।

शुद्धबंग, सफेदवच, पीपरि, मुंडी, ब्रह्मी, कूट इनका चूर्ण बनाय एक तोलाभर लेकर घी के साथ खाय इस प्रकार २ माशे सेवन करने से निर्बुद्धि पुरुष बुद्धिमान् हो जावे।

सोंठ, मिर्च, पीपरि त्रिफला, धनियां, शतावरि, अजवायन ब्रह्मी, वच भारंगी इन सबको बराबर ले सहत के साथ सेवन करने से बालक भी बोलने में चतुर हो जाता है, और वीणाके समान शब्द निकलने लगता है परंतु रूखा खट्टा, बादी पदार्थ को नहीं खावे।

बद पर लेप।

आँबा हल्दी १ तोला, नीलाथोथा ६ माशा राल १ तोला, गुड़ १ तोला. गूगल ६ माशा एक में पीस गरम कर बद पर लगावे तो जलदी फूट जाय।

अथवा नागफनी थुहर के पट्ठे को फाडकर उसमें आँवा हल्दी का चूर्ण भरकर कपड़ मिट्टी करे और अग्नि में गाडकर भून लेवे फिर उसको निकालकर बद पर बाँधे तो बद तीन दिनमें अच्छी होवे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुष्ठरोग निवारण।

जमालगोटे की जड, भिलावा अमलतास, निवोली, चीता, असगन्ध, वायविडंग, इनको कांजीमें पीसकर लेप करकेसे श्वेतकुष्ठरोग शान्त हो जाता है।

बावचीनी १६ माशे, हरताल ४ माशे को गोमूत्र में पीसकर लेप करने से कुष्ठ जाता रहता है।

स्तम्भन उपाय।

दो०—अकरकरा अरु जायफल जावित्री अहिफैन।
विजया अजवाइन भुनी, यह स्तंभन मैन॥

तथा अकरकरा, केशर, रूमीमस्तंगी एक एक रत्तीभर लेकर चूर्ण करे और एक छुहारे की गुठली निकाल कर वह चूर्ण भर देवे और ऊपर से डोरा से बाँध देवे फिर पावभर गायके दूधमें उबाल कर ठंडा कर लेवे वही छोहारा उसी दूध के साथ सेवन करे. यह एक मात्रा प्रातःकाल की है इसी प्रकार सायंकाल को छुहारा खाकर दूध पीवे तो स्तम्भन होवे और बल बढ़े॥

शरीर निर्बलता निवारण।

असगन्ध काले तिल, सोंठ, घी, गुड़, उड़दकी पीठी, इन सबको इकट्ठा कर युक्तिपूर्वक लड्डू बना लेवे नित्य प्रातःकाल १ भक्षण करे तो बल और वीर्य बढ़े।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा १ पावभर गेहूँ की सूजी को १ छटांक घी में भलीभांति भूने फिर घीमें भुनाहुआ गोंद बबूर का १ पैसाभर और शक्कर में मिला कर हलुवा बनाय प्रातःकाल खाय तो बल और वीर्य की वृद्धि होवे।

सोभाग्यशुंठी (सोहागसोंठ) पाक।

आधसेर गोदुग्ध में आधसेर सोंठको भूने, फिर दो सेर गौ के दूध में खोवा करे, अनन्तर दो सेर मिश्री की चासनी में खोवा डालकर नीचे लिखी औषध डाले आंबला, हर्र, बहेडा, जायफल, दोनों जीरे, धनियां, सौंफ, इलायची, नेत्रवाला, पीपरि नागरमोथा बिदारीकंद, छुहारा भीमसेनी कपूर, ये सब चार चार तोला, शुद्ध शिलाजीत १ तोला, निसोत सवाचार तोला इन सबको कूट पीसले, परंतु गिरी के कतरा करके ऊपर से डाले, अनंतर सुगंधित वस्तु मिलाय अनुमान से एक एक तोले की गोली बांध लेवे, १ तोला प्रातःकाल पावभर गोदुग्ध के साथ खाय, १ गोली सायंका को पावभर दुग्ध के साथ खाय, यह सोहागासोंठ पुष्टि कारक है, कांति और बुद्धि वर्द्धक है स्त्रियों की हितकारी है, ज्वरनाशक, व स्मरण का दाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मदनानंद अवलेह ।

सकाकुल मिश्री ९ माशे, बहमन सफेद १ तोला, नागौडी असगंध ६ माशे, दक्षिणी मूसली १ तोला, तालमखाना के बीज ९ माशे, किबांच के बीज १ तोला सफेद इलायची ६ माशे, लाल इलायची के दाने ६ माशे, दक्षिणी जायफल ३ माशे जाबित्री ३ माशे शताबर ६ माशे, रूमीमस्तंगी १ माशे, अकरकरा २ माशे काले तिल भुने हुये ५ माशे, तज कलमी ३ माशे, सफेद चंदन का चूरा ५ माशे, लौंग २ माशे, सोंठ, ७ माशे, गायका घी ५ तोला, बादाम की गिरी छिलका उतरी हुई १० तोला, चिलगोजा के बीज १ तोला, पिस्ता २ तोला, छोहारा १ तोला, कन्द ४० तोला सब को कूटकर घी में नरम आगसे भून ले, शेष औषधियों को चूर्ण करके कन्दकी चासनी मिलावे, फिर सबको एक एक में मिलाकर अवलेह बना लेवे प्रातः समय २ तोला, और सायंकाल २ तोला, अवलेह पावभर गायके दूध में २ तोला शक्कर मिलाय सेवन करे, यह अवलेह बल और वीर्यको बढ़ाकर पुरुषार्थ से मनुष्य को पूर्ण कर देता है चालीस दिन इसको खावे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मदनप्रकाश चूर्ण ।

चौ०—तालमखाना गुखरू लीजे । बीजके वांच के चूरण कीजे ॥ चूरणसम शर्करा मिलवे । फांकी ऊपर दूध पिलावे ॥ वृद्ध खाय योवन हो जावे । नव वालनसों नेह बढ़ावे ॥ २७ ॥

पुष्टि चूर्ण ।

दो०—खोदि बिदारी कन्दको, चूरण करे सुजान ।
घी व दुग्धसो खाइये, कर्षछु चारि प्रमान ॥३८॥
बृद्ध पुरुषको तरुण ते, काम चौगुनो जान ।
महादीणता हरणको, औषध [1]अमी समान३९

शोथ निवारण ।

दो०-भल्लातक नागरशिवा, दारु [2]सुधा [3]सितमूल ।
काथ मूलदशयुत हरे, उरु सूजन अरुशूल ॥४०॥
पुनि [4]कौशिक गौमूत्रते, सूजन सबहि नशात ।
जिमि [5]कौशिक तप तेजते, करी अविद्या घात४१
[6]लोक [7]बिबरस तेलतिल, [8]रसन दारु [9]सितमूल ।
सूखी मूरी लेपतें, निधनशोथ तनु शूल ॥४२॥
लोक [10]किरातक [11]तिक्त पुनि, काथ पिये गतशोथ ।
गिद्ध स्वान [12]वायस यथा, नाशत पापी लोथ ४३

---

१ अमृत, २ गृध, ३ गदापुरेना, ४ गुग्गल, ५ विश्वामित्र, ६ सोंठ, ७ कुदरू का रस, ८ रासोन, ९ गदापुरेना, १० चिरायता, ११ कुटकी, १२ कौआ ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कणालोक [1]घन [2]चित्र चव, [3]वृकी [4]अजाजी लाय।
[5]कणामूल [6]वृहती [7]निशा सब समरज करिखाय ४४
बहुरि उष्णजल पीजिये, शूल शोथगदहंत।
जिमि [8]कचगहि [9]भोजेशको, निधन कीन्ह [10]भगवंत।
शाक मकई खाइये, मले मकोई नीर।
सकल अंग पीड़ा हरे, शोथ न आवे तीर ॥४६॥

तिल्ली निवारण।

देशी सौंफ १० माशे, कासनी के बीज १० माशे अजमोदके १० माशे, खरबूजा के बीज १॥ तोला, खीराके बीज १॥ तोला, ककड़ी के बीज १॥तोला, कासनी की जड़का छिलका ५ तोल, सौंफ की जड़का छिलका ५ तोला, इन सबको कूट पीस कपड़छान करके दूने कन्द की चासनी में डालकर सिकंजबीन बना लेवे यह सिकंजबीन तिल्ली को नष्ट करती है, हृदय की शूलको नाश करती है।

उष्णता निवारण।

मीठे अनारका रस आधसेर खट्टे अनारका रस आधसेर, मोरेठी का सत आधी छटाँक सिरका ढाई पाव कंद आधसेर मिलाकर चासनी बनाय उतार

---

१. मोथा, २ चीता, ३ पाठी, ४ जीरा, ५ पिपलामूल, ६ भटकठेया, ७ हलदी, ८ केश पकड़कर, ९ कंस; १० कृष्णा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेवे यह अनारकी सिकंजबीन हृदयकी गरमी पुराने ज्वर को शांन्त करतो है।

मच्छर निवारण।

शोरा, गंधक, कोयला इन तीनोंको एक एक तोला लेकर कूट पीस एक गोला बनाय सुखा लेवे फिर उसको जलावे तो उसके धूयेंसे मच्छर भागजाते हैं।

केशकृष्णी करण (खिजाब)

आँवला ३ तोला, अखरोट की मींगी ५ तोला, लोहबून ७ माशा, जवाखार २ माशा इन सबको कूट पीस कर खाली अखरोट में भरे और उसके मुखको खमीर से बंद कर देवे फिर कपड मिट्टी कर तीन घड़ी तक आँच देवे फिर आगसे निकाल कर उसमें का तेल निकाल बालोंपर मले। अथवा मेंहदी के पत्ता ५० तोला डेढसेर पानी में औटाय छानकर उसमें तिल का तेल डाले जब आग पर चढ़ाने से पानी जलजाय और तेल रहजाय तब उतार ले। यह खिजाब वालों को काला कर देता है।

सर्व रोगौषध।

शमन करत सब रोगको, त्रिफला अति गुणवन्।
सकल अविद्या हरत जिमि, श्रीपति कृपा निधान ४७

चौ०-जाके श्वाँस कास तनुपीरा। तृष्ण मूर्छा शोथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शरीरा। हुचकी अतीसार उबकाई। वमन अरोचक ज्वर अधिकाई। सो नर करे गंगजल पाना। रामनाम उर जपे सुजाना। बासुदेव नारायण स्वामी गति देहे तेहि अन्तर्यामी ॥ ४८ ॥

दो०-त्रिकटुचीत रामटबृकी, सुपटु द्विक्षारहु धान।
पुष्कर जीरक चव्य वच, ग्रंथ चेत को आन॥४९॥
कंज अमलवेतस सठी, तितरीक अजमोद।
सब समरुज कर खातही, गदगत होत बिनोद५०
पथरी गुल्मक प्लीहयुत, श्वांस काश सब जात।
शूल गुदज हुचकी हते क्षुधा बढ़े दिनरात ॥५१
॥इति श्री रसराज०रोगाकर्षणं नाम चतुर्थस्तरंगः॥

अथ पंचमतरंगप्रारम्भ।

दो०-श्रीगुरुपद वन्दन करों, करों प्रणाम गिरीश।
अब तरंग पंचम लिखों, हृदय धारि जगदीश ॥१
अति आवश्यक द्रव्य गुण, सो लिखिहों मनलाय
भूल चूक लखि सकल बुद्ध, क्षमि हैं मन समुझाय २
१ हर्ड–१ शिवा, २ हरीतकी, ३ पथ्या, ४ अभया, ५ कायस्थ, ६ पूतना, ७ अमृता, ८ हेमंति, ९ चेतकी, १० श्रेयसी, ११ वयस्था, १२ विजया, १३ वन्ती, १४ रोहिणी, ये चौदह नाम हर्रो के हैं।

१ सोंठ, मिर्चे, पीपर, २ हींग, ३ सेंधा, ४ सज्जी जवाखार ५ धनियां, ६ पीपर, ७ हर्रे, ८ नरकचूर।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और १ विजया, २ रोहिणी, ३ पूतना, ४ अमृता, ५ अभया, ६ जीवन्ती, ७ चेतकी ये सात जाति हरडकी है। इन्हीं सातोंको मिलाकर और नामों का विभेद करके अनेक निघंटों में ३१ नाम हरड के कहे हैं।

हरों के लक्षण लिखते हैं, तोंबी के समान गोल हर्र को विजया, बहुत गोल हर्रको रोहिणी जिसमें गुठली छोटी हो उसको पूतना गूदेदार को अमृता, पांच लकीर वालीको अभया, सुवर्ण समान रंग वाली को जीवन्ती और जिसमें तीन रेखाहों उसको चेतकी कहते हैं। यह सातों हरों के स्वरूप कहे हैं।

पूतनाहर्र लेपमें श्रेष्ठ है अमृताहर्र शोधन कायमें योग्य है नेत्र रोगमें अभयाहर्र श्रेष्ठ है। जीवन्ती सर्वरोग हारिणी है। चेतकी चूर्ण बनानेमें उत्तम है, उसकी योजना योगके अनुसार करना, चेतकी दो प्रकारकी होती है, सफेद और काली, उसमें सफेद छःअंगुल लंबी और काली एक अंगुल लम्बी होती है. कोई खानेसे और कोई सूंघनेसे दस्त लाती है, कोई छूनेसे और कोई देखनेसे, ऐसी चार प्रकारकी हर्र दस्तावर होती है, चेतकी वृक्षके नीचे जो जाते हैं उनको दस्तकी शंका उसी समय होती है, पूर्वोक्त सात प्रकारकी हरोंमें विजया हर्र सबमें प्रधान है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरीत की पांच रसोंसे युक्त और लवण से रहित और बहुत कषेली होती है, रूखी (खुश्क) गरम, अग्निको दीपन करने वाली, पवित्र, मधुर, पाकवाली, और रसायनी होती है, नेत्रों को हित करने वाली, आयुको बढ़ानेवाली, हलकी, तथा वायु और मल-को नीचे करने वाली होती है, कास, श्वास, प्रमेह, कोढ़, बवासीर, कृमि, सूजन, उदररोग, ग्रहणी, अजीर्ण स्वरभंग विषमज्वर, आध्मान, वायु गोली तृषा वमन, हुचकी, खाज, हृदयरोग, पथरी, मूत्र कृच्छ, तापतिल्ली, मूत्राघात, अफरा, कामला, शूल इतने रोगों को हर्र हरती हैं, मीठेपन, कषेलेपन, और रिक्तपन से, व खट्टेपन से बातको हरती है, हर्रके मजामें मधुरता स्नायु में अम्लता, परदे में तिक्तता और छिलके में, कड़वापन, तथा अस्थि में कषेलापन होता है नवीन, चिकनी, गोल भारी जलमें डालने पर डूबजाने वाली हर्र अच्छी होती है और जो हर्र एकही स्थानमें उत्पन्न होता है वह भी अच्छी होती है। चवाई हुई हर्र अग्निको बढ़ाती है, पीसीहुई मलको शोधन करती है तली हुई संग्रहिणी को नाश करती है भुनी हुई त्रिदोष नाशक है बुद्धि बल और इन्द्रियोंको प्रकाश कर-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ने वाली होती है, लवण के साथ सेवन की हुई हर्र कफको नाश कर देती है, शक्कर के साथ सेवन की हुई हर्र पित्तको शान्त करती है, घी के साथ हर्र बात रोगको शांत करती है, गुडके साथ हर्र सर्व रोग नाशक है हर्र हृदय रोग का अवगुण करती है हर्रके अवगुण को नीबूका रस निवारण करता है। इस प्रकार यह हर्रका गुण लिखा गया यदि इसी प्रकार अन्य द्रव्यों का गुण सविस्तर लिखा जाय तो पुस्तक बहुत बढ़जाय इस कारण शेष द्रव्यों का सामान्यगुण लिखेंगे।

२ बहेडा-बहेडे के बिभीतक आदि सात नाम है, यह खानेमें गरम लगानेमें ठंडा और रूखा है, नेत्ररोगको गुण करता है, खाँसीको हरता है बालों को बढ़ाता है, मींगी उन्माद करती है।

३आँवला-आँवले के धात्रीफल, आमलक आदि नाम हैं, शीतल है रूखा है प्यासको हरता, बातको दूर करता,मैथुनशक्तिको बढाता, बमनको रोकता, अजीर्ण करता है। तिल्ली को अवगुण करता है इसके अवगुणको शहत निवारण करता है।

४ सोंठ–इसके विश्वा, लोक आदि नाम हैं, यह चरपरी, गरम, पाकमें मधुर भारी, स्निग्ध और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ग्राही है, बादी, विबंध (कब्ज) शूल, खांसी, श्वास, और आमको नाश करती है भोजनमें रुचि लाती है दीपन है । कंठको अवगुण करती है इसका अवगुण शहत से दूर होता है।

५ मिर्च–इसके मीरच आदि नाम हैं, यह पित्त-को दूर करती तीक्ष्ण है कफ और बादी को शांत करती है, बादीको उत्पन्न करती, जलन को प्रगट करती, गीली मिर्च कफकारी है, पाचनशक्ति को बल देती, बुद्धिको बढ़ाती, और पट्ठोंको व उदर तथा कलेजे को बल देती है। मिर्च के औगुण को घी अथवा शहत निवारण करता है।

६ पीपल–कणा आदि नाम हैं यह बहुत गरम नहीं है,पित्तको हरती व स्वाद में चरपरी व मधुर है और दस्तावर है, पित्तज्वर और श्लेष्म को दूर करती है, गीली पीपल कफकारी भारी व ठंडी है।

७अदरख-शृङ्गवेर व आर्दक आदि अनेक नाम है, रूखी, और गरम है, यह भोजन को पचाती, बादी, कफ, अफरा, उदर विकारको दूर करती है, गरम प्रकृति वाले को अवगुण करती है, इसका अवगुण बादाम के तेल से निवारण होता है।

८पीपलामूल-ऊषण ग्रन्थिक आदि नाम इसके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं, यह गरम और हलकी है, तथा दीपन पाचन है इसमें गुण पीपल के समान हैं।

९ चव्य–चविका आदि अनेक नाम इसके है, पाक में यह कटु है और बवासीर को दूर करती हैं, पीपल के समान इसमें गुण हैं।

१० चित्रक–चीताके अग्नि आदि अनेक नाम हैं,यह कडुवा है,गरम है कफ और बादी को हरता, अग्नि को बढ़ाता और ग्राही है।

११ जीरा–जीरक आदि अनेकनाम इसके हैं,यह (स्याह,सफेद व कलौंजी) तीनों प्रकार का जीरा गरमहै रूखाहै कटुहै ग्राहीहै,पित्तको करता और श्लेष्मा व बादीको दूर करताहै, तथा गर्भाशयको शोधन करता व दीपन है, क्षुधाको बढ़ाता तथा मूत्र को उतारता है॥ यह फेंफड़े को अवगुण करता है इसका अवगुण कतीरा गोंद से निवारण होता है।

१२ सौंफ शताव्हा आदि नाम हैं, गरम है रूखी (खुश्क)है,गांठों को खोलती,नेत्रोंकी ज्योति बढ़ाती, व कफको निकालती है शेष गुण जीरेके समान है।

१३ हींग रामठ आदि अनेक नाम हैं गरम खुश्कहै सरदीको गुणकर और बादीको हरतीहै भोजनको पचा और कामदेवको बल देती है, शूल तथा श्लो-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ष्माको दूर करतीहै, मस्तक व कलेजे को अवगुण करे है इसका अवगुण अनार से निवारण होता हैं।

१४ धनिया-धन्य आदि अनेक नाम इसके हैं यह सरद खुश्क है मस्तक और हृदयको बल देता है तृषा और दाहको दूर करता, प्रमेह को हरता तथा कंठ पीड़ा को शान्त करता है धनियाका अवगुण सिकंजवीन और शहतसे निवारण होता है।

१५ नमक—लवण आदि अनेक नाम हैं, पाँच प्रकारकी होती है १लवण, २खारी, ३सेंधा, ४सांभर, ५सोचर इसमें लवण वादी को हरता है कफ पित्त को मारता और क्षुधाको बढाता है, ठंडाहै दस्तावर है सेंधाके-सैंधव, पटोत्तम, आदि नाम हैं यह निर्दोष है हलकाहै पथ्यहै, ठंडाहै स्वादु है दृष्टिको बढाता बादीको दूर करता क्षुधा को उत्पन्न करता और बुद्धिकी बृद्धि करता है, कामदेव को निर्बल करता है। सांभरके-रोमक आदि नामहै यह गरम खुश्क पचाता और सूजनको पटकाता है। खारीके-समुद्र लवण आदि नाम है यह गरम खुश्क है पित्त करता है, रुधिरको बढाता, बादीको दूर करता, और भोजनको पचाता है। सोंचरके—सौर्वचल आदि नाम हैं यह दस्तके रोगोंको जीतता, प्यास को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बढ़ाता, अग्नि को प्रदीप्त करता है सब प्रकार के लवणों का अवगुण शहतसे निवारण हो जाता है।

१६ हलदी-निशा हरिद्रा आदि अनेक नाम इसके हैं, यह गरम खुश्क है प्रमेह खाज और रुधिर रोगों को दूर करती है त्वचाके दोष फोड़ा, पांडु, जलन्धर कमलवाय दांतों की पीड़ा को हरती है, तथा सूजनको पटकाती है। हृदयको अवगुण करती है इसका अवगुण नीबूके रससे शान्त हो जाता है।

१७ मुनक्का—गोस्तनी आदि नाम इसके हैं, यह मधुर है, शीतल है, नेत्रोंको हितकारी है और रक्त, पित्त,ज्वर,श्वास,प्यास,दाह,वातरक्त, कामला आदि रोगोंको दूर करे है,बलकारक है दस्तावर है ग्रहणी, मूर्च्छा आदि रोगोंको समूल नष्ट करे है गरम भीतर कही है बवासीर को गुण कारक है।

१८ अजवायन-दीपका आदि नाम हैं अग्नि को बढ़ाती है गरमहै, भोजनके दोष शान्त करती है।

१९ किसमिस-इसे लघुद्राक्षा कहते हैं यह श्लेष्मा और पित्तको करती है, गरम खुश्क हैं कामदेवकी शक्तिको बल देती, शरीर के रंगको निखार प्रकृति को कोमल करती, तथा रुधिरके विकारको शान्त कर ज्वर को उत्पन्न करती है, इसका अवगुण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महुआ अथवा खीरा खाने से दूर होता है।

२० भूमिआंवला-भूधात्री आदि इसके नाम हैं, यह वायुको प्रगट करता है और तेज है कषेला है, ठंडा और मीठा है पित्त, रुधिर विकार और कफ को दूर करता है, घाव को भर देता है।

२१ वांसा-वृष आदि नाम इसके हैं यह वायु को उत्पन्न करता, कफ, पित्त, और रुधिर विकार को दूर करता है, दमा, खाँसी, ज्वर, छर्दि प्रमेह क्षयी कुष्ट इन रोगों को हरण करता है।

२२गिलोय(गुर्च)छिन्ना अमृता आदि नाम इसके हैं,गरम है बलिष्ठ है हलकी है कडवी पचनेके समय मीठीहै रसायनी है कब्ज करती है कषेली है,जठराग्नि को प्रदीप्त करती है, कमलवायु कुष्ठ, वात, रुधिर, ज्वर, पित्त, छर्दि रोगों को दूर करती है।

२३ बेल-बिल्व आदि नाम इसके हैं,यह दीपन पाचन,गरम,कब्ज, कषेला,हलका, बलको बढ़ाता, हृदय को हितकर, चिकना, तेज, वायु, कफ को जीतता,त्रिदोष ज्वरको हरता, अग्निको भेद करता, संग्रहणी को दूर करता,बवासीर को अवगुण करता है इसका अवगुण शक्कर से दूर होजाता है।

२४ अरणी-इसके अग्निमंथ आदि नाम हैं, यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गरम है, कफ और वायु रोग को हरण करती है।

२५ खंभारी–इसके श्रीपर्णी आदि नाम हैं, यह गरमहै मीठीहै भारी, ज्वर, शूल, पित्त, रुधिर और प्रदर रोगको दूर करे है। क्षयी, वायु प्यास व मूत्र विबन्ध को दूर करे है, वीर्य को उत्पन्न करे है।

२६ पाडर-पाटला काष्ठ पाटला आदि नामहैं खट्टी और मीठी है फूल रुधिर और कफ को हरते हैं, अरुचि, सूजन, दमा, छर्दि को दूर करती है।

२७ सोना–इसके स्योनाक आदि नाम हैं, यह दीपन, पचनेके समय कडुआ, कषेला और ठण्डा, वायु पित्त. कफ व खांसी, आंवको नष्ट करता है।

२८ गोखरू–इसके गोक्षुर आदि नाम हैं खट्टा मीठा, बल, करता, प्रमेह, दमा खांसी. पथरी सुजाक हौलदिल और वात विकार को नष्ट करता है।

२९ सरिवन–शालपर्णी आदि नाम है भारी है. हलकीहै. शीतल है. दमा अतीसार. ज्वर. छर्दि और शूल रोगको नष्ट करता है पुष्ट है. रसायन है।

३० पीठा-पृष्टपर्णी आदि इसके नाम हैं. यह हलका है पुष्ट है. मीठाहै, गरम है. और रुधिर विकार. अतीसार छर्दि. ज्वर इनको दूर करता है।

३१ बडीकटाई–उसके वृहती. सिंही. आदि नाम है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह पुष्ट हैं. कब्ज करती है. वायु को जीतती है. गरम है. कुष्ट. खांसी. ज्वर. शूल मन्दाग्नि. श्वास. इन रोगों को नष्ट करती है।

३२ छोटी कटाई–इसके कण्टकारी. धावनी. चद्रा आदि नामहैं.यह तेज है कडवी है हलकीहै. दीपनी है.रूखीहै तथा खांसी.दमा.ज्वर. कफ. वायु पीनस को हरतीहै.पसली के दर्द को नष्ट कर. गर्भ को पुष्ट करती है.कृमि और हृदय रोगको शान्त करती है।

३३ काकोली क्षीर काकोली–इनके मधुरा वीर आदि नाम हैं यह शीतलहै.मधुरहै. भारीहै. वायु. दाह रुधिरविकार.दुर्बलता को निवारण करती है।

३४ मेदा महीमेदा–इनके ज्ञेया विज्ञा आदि नाम हैं. यह दोनों भारी मीठी और बलिष्ठ हैं ठंडी हैं। पित्ता कफ व दुर्बलता को हरण करती हैं।

३५ जीवक ऋषभक-इसके वृष आदि नाम हैं यह दोनों शीतल व बलवर्द्धक हैं पित्त. दाह. रुधिर विकार दुर्बलता.वायु. क्षयी रोगको शान्त करते हैं।

३६ जीवन्ती-इसके जीवनी आदि नाम हैं. शीतल है चिकनीहै.पुष्टहै.हलकीहै.त्रिदोषको हरती है।

३७मुलहठी–इसके मधुयष्टी आदि नाम हैं भारी है.ठंडीहै.बलिष्टहै.प्यास.छर्दि.पित्तको नष्ट करे है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३८ माषपर्णी-मुन्दपर्णी इनके कृष्णावृन्ता व कम्बोजी आदि नाम हैं, यह दोनौं शीतल, तेज रूखो मीठो, हलकी और बलिष्ठ हैं, बात, पित्त और रुधिर विकार को दूर करती है।

३९ अरण्ड रक्त अरण्ड-इनके चित्र, व्याघ्रपुच्छ आदि अनेक नाम हैं, यह दोनों अंडवृक्ष गरम हैं मधुर हैं, भारी हैं, शूल, सूजन, कटिशूल, मूत्राशय के रोगको दूर करते हैं, शिररोग, जलन्धर, ज्वर कास, श्वास, कफ, आम वात, कुष्ट, अफरा, इन रोगों को नष्ट करते हैं इनका फल भेदन हैं, मधुर हैं, खारी है वायु को जीतता है।

४० सारिवा कृष्णसारिवा-गोपकन्या आदि नाम हैं, दोनों सारिवा मधुर हैं, चिकनी, भारी वीर्य वर्द्धक हैं, तीनों दोषोंको नाश कर रुधिरबिकार, शूल, ज्वर, अतीसार रोगोंको दूर करती है।

४१ जवासा-इसके अनेक नाम हैं मीठा है, स्वाद है, तेज है, शीतल है, हलका है, पित्त, रुधिरविकार कफ, भ्रान्ति रोगों को दूर करता है।

४२ सुरडी--इसके तपोधना आदि नाम हैं यह तेज है पचने के समय कडवी है मीठी और हलकी है बुद्धि को बढ़ाती हैं। गलगण्ड अपची सुजाक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाण्डु इन रोगों को हरण करती है।

४३ महामण्डी–लोभनीया आदि इसके नाम हैं। यह मुन्डी के समान गुण वाली है।

४४ ओंगा-(चिर्चिरा)इसके अपामार्ग आदि नाम हैं यह शीतल है तेजहै दीपन कफ, वात, दाह छीप, बवासीर, खुजली रोगों को नाश करती है।

४५ लाल ओंगा-इसके अनेक नामहैं,कब्ज करता है रूखा है कफ व रक्तपित्त को दूर करता है।

४६ कपाल–इसके कपिल्ल आदि नाम हैं इसका शाक कब्ज है, कफ, पित्त, पथरी व कृमि, गोला फोड़ा व उदररोग दूर करती है।

४७ दन्तिनि-दन्ती आदि नाम हैं पचने के समय कडवी है, दीपनी है, तेज है, गरम है, पित्त, रुधिर-विकार, कफ और पेटकी सूजन को मिटावे है।

४८ जयपाल–इसके दितिबीज आदि नाम हैं यह भारी है, चिकनी है, जुलाब लाती है, पित्त और कफको दूर करती है।

४९ निशोत–इसके त्रिवृत्त आदि नाम हैं, वह तेज है, सरद है, रूखी है, मधुर और गरम है वायु, ज्वर, कफ, पित्त और सूजन को दूर करे है। पचने के समय कटु है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५० काली निशोत–इसके कालपर्णी आदि नाम हैं यह जुलाब है दाह, मद, भ्रान्ति और मूर्छा को नष्ट करती है।

५१ इन्द्रावारुणी–क्षुद्रफला आदि अनेक नाम हैं यह तेजहै कटुहै पचनेके समय हलकी है कमल, वायु पित्त, कफ. तापतिल्ली आदि रोगोंको नाश करे है।

५२ किरबाली–इसके राजवृक्ष आदि नाम हैं यह भारी है मीठी है नरम है रेचन है ज्वर, हृदद रोग, पित्त, रुधिर विकार, वायुकृत उदावर्त, शूल इनको जीतती है उसके फूल वायुको उत्पन्न करते हैं कब्ज करते हैं पित्त और कफके नाशक हैं उसकी मींगी पचने के समय मीठी है चिकनी है वायुको नष्ट करती है।

५३ कुटकी–इसके तिक्ता व रोहिणी आदि नाम हैं यह पचने के समय कडवी है हलकी है शीतल व रूखी है कृमि, दमा, दाह, पित्त, कफ, ज्वर, इन रोगों को मिटाती है।

५४ अंकोल–इसके अंकोलक आदि नाम हैं यह कटु है, स्निग्ध है लघु और पुष्ट व मधुर है फल उसका ठण्डा है कफ उत्पन्न करता है पुष्ट और बलिष्ठ है वात पित्त, दाह, क्षय, रुधिरकृत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विकारों को हरण करता है ।

५५ सेहुँड-इसके स्नुही आदि नाम हैं यह रेचन है दीपन है तेज है कटु और भारी है शूल, आम अफरा, गोला, शूल, उदररोग, सूजन, वायु तापतिल्ली कुष्ट उन्माद, पान्डु रोग शान्त करता है ।

५३ निम्ब-इसके अरिष्ट आदि नाम हैं यह शीतल है कब्ज करता है हलाका है पचने के समय कडुवा है अग्नि व वायुको प्रगट करता है फोडेको कफको पित्तको छर्दि व कुष्टको मुखसे पानी बहनेको और प्रमेह को दूर करता है बिन पके हुये को पकाता है पके हुये को शुद्ध करता है फल उसका भेदन है चिकना है कुष्टको शान्त करता है और हलका है।

५७ चिरायता किरातक आदि नाम हैं यह ठंडा है रूखा है तेज है वायू उत्पन्न करे है सन्निपात दमा ज्वर, खांसी, पित्त, लोहू, दाह रोगों को हरता है ।

५८ कुंडा-कुटज आदि नाम हैं यह कडुवा रूखा ठंडा व दीपन है बवासीर, अतीसार, पित्त, रुधिर विकार, कफ, पित्त आम कुष्टरोगको नाश करे है ।

५९ इंद्रयव-इसके कलिंग कुटज आदि नाम हैं, यह शीतल है, कब्ज है, तीनोंदोष, ज्वर, अतीसार, खूनी बवासीर, और कुष्टको हरण करता है ।

६० मैनफल-इसके मर्दन छर्दन आदि अनेक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाम हैं, यह तेज है, रूखाहै, कुष्ठ, कफ अफरा, सूजन, गोला, फोड़ा इन रोगों को दूर करता है।

६१ ताडिका व कंकुष्ट-इसके रेचन व शोभन आदि नाम हैं यह रेचन, तेज, गरम और कटु है रंग अच्छा करे है कफको शान्त करे है।

६२ चाख-इसके क्षीरणी आदि नाम हैं यह रेचन है, तेज है, मद को व वमन को प्रगट करे, कृमि, खाज व कुष्ठ रोग को शान्त करे है।

६३ महानिम्ब-इसके कार्मक आदि नाम हैं, यह ठण्डा, रूखा, तेज और कषेला है, कफ, पित्त, छर्दि, कुष्ट मुखसे पानी बहना, और रुधिर विकार इन सबको दूर करता है।

६४शीतल-इसके विमला व बहुफेनका आदि नाम हैं.यह पचनेके समय कडुवाहै. ठंडाहै. तेज है. हलका है, वायू को उत्पन्न करती है, सूजन, कफ, अफरा, पित्त, उदावर्त, रक्त इन रोगों को दूर करती है।

६५ कचनार-कांचनक ब रक्तपुष्प आदि नाम हैं शीतल, कषेला, कब्ज, रूखा कफ, पित्त, कृमि, कुष्ठ गण्डमाला व काँचके निकल आनेको फोड़ाको नष्ट करे है उसके फूल हलके हैं, रूखे हैं, काबिज है, पित्त,लोहू, छर्दि प्रदर, क्षयीको नष्ट करे है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६६ सँभालू इसके निर्गुंडी. श्वेतकुसुम आदिनाम हैं. यह स्मरणशक्तिको बढ़ाती है. तेज है, कडवी है. कषेला है बालोंको गुणकरती है. नेत्रोंको हितकारी. शूल, सूजन. आमवायु कृमि. कुष्ठ. अरुचि. कफ फोड़ा। इन रोंगों को नष्ट करती है।

६७ मेढासिंगी-मेषशृङ्गी आदि नाम इसके हैं इसका स्वाद तेज है, वायु को प्रगट करती है पचने के समय कडवी है, रूखी है. नेत्र पीड़ा पित्त कफ. खांसी. फोड़ा, इन रोगों को नष्ट करती है।

६८ गदापुरेना-पुनर्नवा आदि नाम हैं यह गरम. रूखा. मीठा. कडवा. व तेज है. सूजन. वायु, फोड़ा. कफ और उदर रोगों को नष्ट करता है।

६९ रक्तपुनर्नवा–इसके रक्तपुष्पा आदि नाम हैं पचने के समय ठंडीहै, तेजहै. हलकी है. कब्जहै कफ, पित्त बादी, व रुधिर विकार नष्ट करे है।

७० राई–इसके रास्ना आदि नाम हैं आंवको पचातीहै, तेजहै भारीहै, गर्म है, कफ वायु सूजन, वातरक्त, वायूशूल, उदररोग, नष्ट करती है, रतौंधी बादी को हरती है, कामदेव को जगाती है।

७१ असगन्ध-इसके अश्वगन्धादि नाम हैं, यह वायूको कफको सूजनको उदररोग व खांसीको नष्ट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करे है बलकारी, रसायनी व तेजयुक्त है, कषेली है गरम है वायू को वीर्य को बढ़ाती है।

७२ गन्धप्रसारणी-प्रसारिणी आदि नाम हैं गरम, भारी और तेजहारी हैं शूल कफको दूर करे है।

७३ शतावारी—इसके द्वीपिका आदि नाम हैं, यह भारी, ठंडी मीठी चिकनी व रसायन है वीर्यको बढ़ावे है दुग्ध को बढ़ाती है, बल करती है, वायू, पित्त को दूर करती है रुधिरविकार और सूजनको हरती है।

७४ बड़ीशतावरि-इसके शतावगे आदि नाम हैं, यह बुद्धिको बढ़ावे है, मनको उत्साह युक्त करे है, रसायन है शीतल है बवासीर, संग्रहणी, और नेत्र रोग को दूर करे है उसके अंकुर त्रिदोष नाशक हलके हैं बवासीर और क्षयीको नष्ट करे हैं।

७५ खरेटी—खरयष्टिका आदि इसके नाम हैं यह ठंडी और मीठी है चिकनी है, बल और कान्तिको बढ़ावे है, कब्ज है, वायू, रुधिर विकार, पित्त बवासीर, घाव, सुजाक को नष्ट करे है।

७६ सहदेवी—इ सके महाबला आदि नाम है इसमें गुण खरेटी के समान है।

७७ बलिका—इसके अतिबला आदि नाम हैं, इस में गुण खरेटी के समान हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७८ गंगेरू-इसके नागवाला आदि नाम हैं यह भी गुणमें खरेटीके समान है, विशेष करके रुधिर विकार व पित्तको दूर करे है, इसका फल ठण्डा भारी स्तम्भनकारी व पेट को फुला देता है।

७९ तेजवल-इसके तेजस्विनी आदि नाम हैं, यह पाचन है, गरम है कटुहै, जठराग्नि को प्रदीप्त करे है, कफ, दमा, खांसी, बवासीर और अरुचि व वायू के रोग को हरण करे है।

८० मालकांगनी-ज्योतिष्मती आदि नाम हैं गरम है, कडवी है, तेज है, छर्दि को लावे है जठराग्नि व स्मरणशक्तिको बढ़ा, वायुको जीते है

८१ देवदारू-इसके सुरद्रुम आदि नाम हैं, यह कटुहै, स्निग्धहै, गरम और लघु है और अफरा, ज्वर, सूजन आंव, हुचकी खुजली, कफ और वायु इन रोगों को हरण करे है।

८२सरल-इसके पीतवृक्ष आदि नामहैं, यह पचने के समय कटुहै स्वादिष्ट,मधुर है गरम व चिकण है,वायुरोग नेत्र व कानके रोगको हरे है।

८३ पुष्करमूल-इसके पुष्कराव्ह आदि नाम हैं यह कटु है तेज है, गरम है वायू कफ और ज्वर को हरता है तथा सूजन अरुचि दमा और पसली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की पीड़ा को दूर करता है।

८४ कूट–इसके कुष्ट व पारिभद्रक आदि नाम हैं, गरम, कटु, मधुर, तेज व लघु है, बात, रक्त, विसर्प, खांसी, कुष्ठ, वायु व कफ को हरता है।

८५ काकरासिंगी–इसके शृङ्गी आदि नाम है, यह कषैली है, तेज है, गरम है और हिचकी छर्दि, ज्वर को दूर करती है।

८६ रोहिठा–इसके श्यामाक आदि नाम हैं, यह गरम है कषैलाहै, पचने के समय कडुवा है और कंठरोग हृदयरोग, रुधिर विकार, पित्त, शूल, खांसी कफ ज्वर इन रोगों को हरता है।

८७ कायफल–इसके कटुकल व श्रीपर्णी आदि नाम हैं, कषैला है तेज कटु है, और वायु, पित्त, कफ ज्वर, दमा, प्रमेह, बवासीर, खांसी, कंठरोग अरुचि इनको हरण करता है।

८८ भारंगी–इसके ब्रह्मण्यष्ठिका आदि नाम हैं यह रूखी है कडवीहै, तेजहै गरम है, भोजन की रुचि को बढाती है, पाचन है और सूजन, खांसी कफ दमा, पीनस, ज्वर, वायु, इनको हरती है।

८९ पाषाणभेद–इसके अश्मभेद आदि नाम हैं कषैला है शीतल है मूत्राशय को शुद्ध करता व

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रमेह, बवासीर सुजाक और पथरी को हरता है।

९० नागरमोथा–इसके मुस्ता, घन आदि नाम हैं यह कडुवा है, ठंडा है तेज है, दीपन, पाचक है, कषैलाहै, काबिज है, और पेटके कीडे, पित्त, कफ रुधिर विकार प्यास. ज्वर इनको दूर करता है।

९१ धावा–इसके ताम्रपुष्पी आदि नाम हैं, यह कड़वी है ठंडीहै नशा करती है. कषैली और हलकी है और प्यास. अतीसार, ज्वर, रक्तपित्त. विष उदर के कीडे विसर्प इनको दूर करती है।

९२माची–इसके माचिका आदि नाम हैं,खट्टी है पचने के समय कषैली है, ठंडी है, पके अतीसार को लोहूको कफको गले के रोगोंको नष्ट करती है।

९३ बिदारीकन्द–इसके विदारिका आदि नाम हैं यह मधुर है, चिकण है, पुष्टहै, दुग्ध व वीर्य को उत्पन्न करे है, भारीहै, पित्त, रुधिर, वायु, दाह इनको दूर करे है।

९४ वाराहीकन्द–इसके वाराही आदि नाम हैं मीठीहै, पचने के समय कडवीहै, तेज है, वीर्य को उत्पन्न करती है, बलको बढ़ा पित्त को उपजाती है, वायु, कफ, प्रमेह कृमि इन रोगों को हरती है।

९५ पाठा-अम्बष्ठा आदि नाम है,गरम है कडवी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है तेज है और वायु, कफ शूल छर्दि, कुष्ठ, अती-सार, दाद, दाह, खुजली, विष दमा कृमि गोला, उदररोग और फोड़ा को नष्ट करे है।

९६ मुरहरी-मुर्वा, मधुश्रवा आदि नाम हैं, ठंडा है, भारी है, तेज है, पित्त, रुधिर, त्रिदोष, प्रमेह, प्यास को हरे है, मधुर है, कफकारी है।

९७ मजीठ-इसके मंजिष्ठा आदि नाम हैं. यह मीठी, कषैली, गरम और भारी है, स्वर को शुद्ध करे है, रंगको अच्छा करे है, कफ, सूजन नेत्ररोग रक्त अतीसार, कुष्ठ, फोड़ा, प्रमेह इनको दूर करे है मीठा है, चिकना है, वायु व पित्त को खोता है।

९८ आँबाहल्दी-इसके भी हरिद्रा, निशा आदि नाम हैं, कडुई है तेज है, गरम है रूखी है कफ पित्त को अच्छा करे है, त्वचाके दोषको हरती है, प्रमेह सूजन, पांडुरोग, फोड़ा आदि रोगोंको हर लेती है।

९९ दारुहलदी-दार्वी आदि नामहैं, हलदीकेसमा-न गुणहैं खासकर आँख, कान मुखके रोगोंको हरे।

१०० पँवार-इसके चक्रमद आदि नाम हैं, यह हलका है, मीठा है, ठंडाहै, रूखाहै, और पित्त वायु दमा, कफ, कुष्ट, दमा कृमि इनको दूर करे है, फल उसका गरम है, कुष्ट, खुजली, दाद, विष इनको नष्ट करता है, बल उत्पन्न करता है,।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१०१ वाकुची-सोमवल्ली आदि नामहैं, मीठी है, तेजहै, पचने के समय कड़वी है, रसायनी है, रूखी है, ठंडी है, काबिजहै, भोजनकी रुचि प्रगट करती है, लोहू, पित्त, कफ दमा, प्रमेह ज्वरको नष्ट करे है।

१०२ भंगरा-इसके शृंगीराज आदि नामहैं, यह कड़ुवा है, तेजहै, रूखाहै, गरम है, कफ वायुको नष्ट करता है, भोजन की रुचि उप जाता है, कुष्ठ नेत्र रोग शिररोग इनको नष्ट करता है।

१०३ पित्तपापड़ा-इसके पर्पट आदिनाम हैं, यह शीतल है, पित्त, रुधिर विकार, शिरो रोग प्यास कफ ज्वर दाह इन रोगों को हरण करे है,

१०४ अतीस-अतिविषा आदि नाम हैं गर्म है तेजहै पाचकहै कफ पित्त व अतीसार को जीते है।

१०५ काकमाची-इसके कटु, वरा रसायनी आदि नाम हैं, चिकनी गरम मीठी व रसायनी है, वीर्य को उत्पन्न करती है, तीनों दोषों को सूजन, कुष्ठ बवासीर व प्रमेह तथा ज्वर को नष्ट करती है।

१०६ काकजंघा-इसके परावती आदि नाम हैं इस देशमें इसको कौआगोडी कहते हैं यह ठंडी है, और रक्त पित्त कफ तथा ज्वर नष्ट करती है।

१०७ बड़ी सोंफ-इसके भी शतपुष्पा आदि नाम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है,यह सौंफके समान गुण वाली है विशेषता इस सफेद सौंफमें यह है कि भगके रोगों को हरती है।

१०८ विधारा-जांगलीवृद्धदाह आदिनाम हैं,यह कसैली है,गरम है तेज है,रसायन है,औरबलिष्ठ है, आमवात रुधिर सूजन प्रमेह कफ को दूर करे है।

१०९ देवदाली-इसके जीमूत आदि नाम हैं यह ठंडी है रूखी है और कफ सूजन बवासीर पांडु, क्षयी, हुचकी, कृमि, ज्वर इन रोगों को हरती है।

११० हंसपादी–इसके मधुश्रवा आदि नाम हैं यह ठंडी है, भारी है शीतल है और रुधिर विकार विष फोड़ा दाह अतीसार औरलूतको दूर करतीहै।

१११ सोमवल्ली–इसके यज्ञमाता आदि नाम हैं कड़वीहै,तेजहै,रसायनी है,तीनोंदोष दूरकरती है।

११२ मूसली-इसके महावृक्षा आदि नाम हैं यह मीठीहै, गरम है, भारी है, तेज है, रसायनी है, पुष्टिकर है, स्थूल करती है और गुदा व वायु के रोगों को हरती है।

११४ कोंचबीज-इसके कपिकच्छु लांगूली आदि नाम हैं, यह बहुत पुष्ट है, मीठी है बल करती है, भारी है, और वीर्य को उपजाती है।

११५ पोतजिया-इसके पुत्रजीवा आदि नाम हैं,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह भारी है. पुष्ट है. कफको. वायुको उपजाती है. और गर्भ को देने वाली है।

११६ कंकोडी बाम्हककोडी–इसके कर्कोटकी बन्धा कर्कोटकी. कुमारी आदि नाम हैं यह हलकी है. तेज है. कफ. फोड़ा, सर्पविष और समस्त विषोंको शान्त करती है।

११७ विष्णुक्रान्ता–इसके नीलपुष्पी, अपराजिता आदि नाम हैं, यह कडवी है, बुद्धिको बढ़ाती है और कृमि. फोड़ा कफको दूर करती है।

११८ शंखाहुली-इसके शंखपुष्पी आदि नाम हैं. यह रसायनी है, कषेली है. गरम है, बुद्धि और स्मृति को बढ़ाती है. तथा प्रमेह को दूर करती है।

११९ दूधी–इसके मधुपर्णी आदि नाम हैं, यह गरम है. भारी है रूखी है अजीर्णको उत्पन्न करती है मीठी है पुष्ट है और कफ, कुष्ट कृमि इन रोगों को नाश करती है।

१२० ऊँघा होली–इसके अर्कपुष्पी आदि नाम हैं यह कृमि को. कफ को प्रमेह को और पित्तके विकार को जीतती है।

१२१ भिलावा–इसके भल्लातक आदि नाम हैं. यह कषेली गरम मीठी और हलकी है वीर्य को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपजाती है. और वायु कफ उदररोग अफरा कुष्ट बवासीर. संग्रहणी. वायुगोला. ज्वर. मन्दाग्नि, कृमि. फोड़ा इन रोगों को दूर करता है।

१२२ चिरपोटा इसके दीर्घपत्रा आदि नाम हैं यह शीतल रुद्र भेदन और लघु है खांसी तथा दमाको हरण करे है।

१२३ गोमा–इसके क्षेणीपुष्पी आदि नाम हैं यह गरम है भारी है मीठी है वायु व पित्त को उत्पन्न करती है और कामला. वायु सूजन, कफ, कृमि इन रोगों को शान्त करती है।

१२४ ब्राह्मी ब्राह्ममण्डकी-इसके मण्डूकपर्णी, सोमवल्लरी आदि नाम हैं यह ठंडी हैं मीठी है हलकी बुद्धिको बढ़ाती है रसायनी है स्मरणशक्तिको उपजाती है और कुष्ठ पाण्डू ज्वर इनको दूर करती है।

१२५ मछेछी–इसके मत्स्याक्षी आदि नाम हैं यह ठंडी है, काबिज है, कुष्ठ पित्त कफ और रुधिर विकार को शान्त करती है।

१२६ जलपीपरी-इसके अम्बुवल्ली आदि नाम हैं यह चित्तको बलिष्ठ करती है हलकी ठंडी और काबिज है रूखी है नेत्रोंको गुण करती, वायुको बढ़ाती और रुधिरविकार, दाह और फोड़ोंको अच्छा करतीहै

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१२७ गोभी–इसके गोजिव्हा आदि नाम हैं यह ठंडी है काबिज है वायुको उपजाती और कफ पित्त प्रमेह रक्त ज्वर इनको दूर करती है।

१२८ नागदौन–इसके नागदमनी, गन्धा आदि नाम हैं यह रक्तको अच्छा करती है सांपके विषको हरती है लूतको नष्ट करती है।

१२९ घुँघुची (चिरामठी) इसके गुञ्जा आदि नाम हैं यह बल करती है भोजनमें रुचि उपजाती है बालोंको बढ़ाती है पित्त कफ नेत्ररोग खुजली फोड़ा कृमि कुष्ट इन रोगों को दूर करती है।

१३० बरबेली इसके वीरद्रुम आदि नाम हैं कब्ज है और पथरी, कफ, सूजन, वायुपीड़ा को हरे हैं।

१३१ वृन्दाक–इसके वृक्षरुहा आदि नाम हैं यह रूखी है कफ वायु लोहू फोड़ा और विषको दूर करे हैं।

१३२ रोहेरू–इसके दाडिमपुष्पी, पारिजातक रोहिणी आदि नाम हैं यह तिल्ली, सूजन, हृदय पीड़ा गोला और उदररोग को हरती हैं।

१३३ मोचरस-इसके मोचक आदि नाम हैं, यह ठंडी है काबिज और भारी है और अतीसार, मरोडा आंव, पित्त, रुधिरविकार, दाह इनको दूर करे है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१३४ बबरी–इसके अजगन्धा आदि नाम हैं यह हलकी है भोजन में रुचि उपजाती है चित्तको बलिष्ठ है रुधिरविकार कफ और वायुको हरती है।

१३५ पियाबांसा–इसके सौरेय आदि नाम हैं यह तेज है गरम है, विषको दूर करता है, बालों को बढ़ाता है कुष्ठ वायु रक्त कफ खुजली इनको दूर करता है।

१३६ कंदासी–इसके सहचर. रक्तपुष्प आदि नाम हैं, यह तेजहै गरम है, मधुरहै स्निग्धहै, बालों को बढ़ावे है और कुष्ठ. वायु रक्त. कफ. खुजली. विष. इन रोगों को हरण करे है।

१३७ हरमल–इसके गिरिकर्णिका. श्वेतपुष्पी. आदि नाम हैं, यह शीतल है, कण्ठरोग, कुष्ठ, शूल. त्रिदोष, सूजन और विषको हरण करे है।

१३८ तालमखाना–इसके चुर आदि नाम हैं. यह शीतल है, पुष्ट है, भारी है, और वायु रोग, रुधिर विकार को दूर करे है।

१३९ कपास–इसके कार्पास आदि नाम हैं यह लघु है, गरम है वायुको दूर करे है. सस्निग्धकरण है, पुष्ट है, कफकारी है, इसका बीज दूध करे है।

१४० करोंदा–इसके मृद्वच्छद आदि नाम हैं यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कटु है तेज है, कफ ज्वर और रक्त विकार को नष्ट करे है।

१४१ सरफों का–इसके सरपुंखा आदि नाम हैं यह कंठरोग, तिल्ली, विष, खांसी, दमा, ज्वर, इसको नष्ट करे है।

१४२ मोरशिखा-इसके मधुजया आदि नाम हैं यह पित्त. कफ, अतीसार, तिल्ली, गोला, बवासीर, कृमि हृदय की सूजन, उदररोग, इनको नष्ट करे है।

१४३ लक्ष्मणा-इसके पुत्रदा आदि नाम हैं, यह ठंडी है, पुष्ट है, गर्भदाता है, त्रिदोष नाशक है।

१४४ हडसिंहारी–इसके कोष्ठ, घण्टिका आदि नाम हैं, यह ठंडी है, पुष्ट है, वायुको नष्ट करे है, हाडों को बढ़ावे है।

१४५ दोनों आक–इसके अर्क, मन्दार आदि नाम हैं यह वायूको हरे है, तापतिल्ली, गोला, बवासीर हृदय की सूजन. कफ, उदररोग, कृमि, इनको नष्ट करे है।

१४६ कनेर-इसके करबीरक आदि नाम हैं, यह गरम है और आँखकी सूजनको, कुष्टको, फोडेको कृमि, खुजली, विष के विकार को शान्त करे है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सफेद कनेर लाल कनेर नाम से दो प्रकार की हैं, दोनों के गुण एक हैं।

१४७ धतूरा--इसके कनकाव्हय, कितव आदि नाम हैं यह नशा करे है अग्निको बढ़ावे है, रंगको अच्छा करे है, छर्दि लावे है, ज्वर कुष्ठ फोड़ा खुजली कृमि विष इनको हरे है और गरम है।

१४८ कलिहारी--इनके अतिजिव्हा, वन्हिशिखा आदि नाम हैं, यह गरमहै तेजहै हलकी है पित्तको उपजाती और गर्भ को गिराती है, कुष्ठ, सूजन, बवासीर शूल फोड़े इन रोगों को हरती है।

१४९ घीगुआर--इसके कुमारी आदि नाम हैं, यह भेदनी है शीतल है और हृदयरोग, जंतु तिल्ली सूजन कफ रुधिर विकार, आग के फफोला, त्वचा रोग इन सबको शान्त करे है।

१५० भांग--इसके विजया, मोहनी आदि नाम हैं, यह काविज है गरम है हलकी है तीक्ष्णहै अग्नि को प्रदीप्त करती है, कफको दूर करती है, पित्तको उपजाती है, मोह मद और वाणी को बढ़ाती है।

१५१ कांचनी--इसके काकवल्लरी आदि नाम हैं, यह त्रिदोष को नाश करती है, शिर रोग को शान्त करती है दूध को बढ़ाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१५२ दूब-इसके दूर्वा आदि नाम हैं, यह शीतल है और रक्त, पित्त, कफ, दाह विसर्प, इन रोगों को हरती है।

१५३ मूँज-इसके ब्रह्ममेखला आदि नाम हैं यह शीतल है और विसर्प, रक्त, मूत्राशय, नेत्ररोग इनको दूर करे है।

१५४ नड-इसके नल आदि नाम हैं, यह मूत्र करते समय की शूलको हरे है और दाह रुधिर विकार, पित्त, कफ, विसर्प इनको दूर करे है।

१५५ वांस-इसके वंश, वेणु आदि नाम हैं, यह शीतल है, पित्त, कफ, दाह, रक्तविकार, सूजन, इनको हरे है, इसकी जड़ भेदी है, गरम है, कफ नाशक है, वायु पित्तको उपजावे है।

१५६ खुरासानी अजवायन-इसके जवानी आदि नाम है, रूखी है भारी है, पाचनी है, काबिज है।

१५७ पोस्त-इसके तिलभेद आदि नाम हैं, यह पुष्ठ है बलकारी है, कफको उपजावे है वायुको जीते है उसके फलका बक्कल रूखा है, शोषण है।

१५८ अफीम-इसके अहिफेन आदि नाम हैं, यह सुखावने वाली है, काबिज है कफको दूर करती है वायु और पित्तको उपजाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१५९ चीता-इसके चित्रक आदि नाम हैं, यह पचने के समय कटु है, हलका है, रूखाहै गरम है पाचन है जठराग्निको प्रदीप्त करेहै, संग्रहणी, कुष्ट, सूजन बवासीर कृमि खांसी कफ वायु इनको हरे है।

१६० सोया-इसके मिश्रेया आदि नाम हैं, यह गरम है दीपन पाचन है बल करे है विष्ठा की रुकावट को कृमि, कुष्ठ को दूर करे है खाँसी छर्दि कफ और वायु को जीते है।

१६१ गजपीपल-इसके गज पिप्पली आदि नाम हैं यह गरम है कडुवी है दीपन है और वायु कफ अतीसार दमा खांसी कृमि कंठरोग इनको नष्ट करे हैं।

१६२ मेथी बनमेथी-इसके मेथिका आदि नाम हैं दीपन है बलिष्ठ है, बिष्ठा के कृमिको नष्ट करती है और वीर्यदोष, शूल, गोला, कफ इनको हरती है।

१६३ अजमोद-इसके अजमोदी आदि नाम हैं यह तेज है गरम है बलिष्ठ है मलको बांधे है, नेत्र रोग कृमि छर्दि वायु कफ इनको दूर करे है।

१६४दोनों जीरा कलौंजी-इसके अजाजी जरण आदि नाम हैं यह तीनों जीरे रूखे हैं, गरम हैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दीपन है हलके हैं कबिज हैं पित्तको उपजाते हैं, बुद्धिको बढ़ाते हैं नेत्रोंको गुण करते हैं मुखसे पानी बहना बन्द करते हैं, वायू गोला अफरा छर्दि इनको दूर करते हैं।

१६५ अजवाइन-इसके दीप्य, जवानी आदि नाम हैं, यह गरम है, हलकी है भोजनमें रुचि उपजाती है तेज है पाचनी है वायू कफ, उररोग अफरा, कृमि गोला और शूल रोग को जीतती है।

१६६ वबरी-इसके अजगन्धा आदि नाम हैं, यह तेज है रूखी है बलिष्ठ है दृष्टिको मन्द करती है वीर्य वायू और कफको जीतती है।

१६७ बच-इसके उग्रगन्धा आदि नाम हैं यह गरम है, तेजहै वाणीको शुद्ध करेहै, अग्निको प्रदीप्त करे है और मृगी कफ उन्माद भूतछाया और शूलको शान्त करे है।

१६८ हाऊबेर इसके हवुधा आदि नाम हैं, यह दीपन है, तेज है, भारी है गरम है कषैली है पित्त उररोग वायू संग्रहणी, गोला शूल इनको दूर करे है।

१६९ बिडंग-इसके कृमिघ्न आदि नाम हैं यह तेज है, गरम है रूखी है, हलकी है, अग्नि को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रदीप्त करती है, शूल, अफरा, कृमि इनको हरती है।

१७० धनिया-इसके धान्यक आदि नाम हैं, यह गरमहै, तेज है रूखा है, कषेला है, चिकना है, बहुत मूत्रलावे है, बलको करे है भोजन में रुचि उपजावेहै विष्ठाको रोके है, दमा, खांसी, रक्त प्यास दूर करे है।

१७१ बंशलोचन-इसके त्वगाक्षीरी आदि नाम हैं यह बलवर्द्धक है, पुष्ट है, ठंडा है, मधुर है, प्यास, क्षयी, ज्वर, दमा, खांसी पित्त, लोहू, कमलवायु इनको शान्त करता है।

१७२ जवाखार-इसके यवाग्रच आदि नाम हैं, यह अग्निको उपजावे है और वायु, कफ. दमा, गलरोग, आँव, बवासीर, संग्रहणी, गोला, कलेजे की सूजन शूल तायतिल्ली इनको जीते है।

१७३ सुहागा-इसके टंकण आदि नाम हैं, यह अग्नि को उत्पन्न करता है और वात. पित्त, कफको जीतता है।

१७४ कपूर-इसके हिमाव्हय आदि नाम हैं, यह शीतल है पुष्ट है लघु है, नेत्रोंको गुण करे है, कफ कृत दुर्गन्धि को दूर करे है लेखन है, दाद, सूजन और विषको शान्त करे है।

१७५ कस्तूरी-इसके मृगमद आदि नाम हैं, यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गरमहै, नेत्रोंको गुण करती है,वीर्यको उपजाती है, विष,छर्दि,दुर्गन्धि,वायु इन रोगोंको हरण करतीहै।

१७६ चन्दन-इसके मलयज आदि नाम हैं, यह शीतलहै, रूखा है, तेजहै. हलका है चित्तको प्रसन्न करताहै, बलिष्ठहै, रंगको अच्छा करताहै, विष कफ पित्त, प्यास, रुधिरविकार और दाहको हरता है।

१७७ रक्तचन्दन-इसके ताम्रसार आदि नाम हैं, यह ठंडाहै. भारीहै, पुष्टहै, नेत्रों को गुण करता है, छर्दि पित्त प्यास रक्तविकार, ज्वर, विष, फोड़ा, इनको हरता है।

१७८मलयचन्दन-इसके पीतसार आदि नाम हैं इसमें रक्त चन्दन के समान गुण है।

१७९ कालाअगर–इसके कृष्णागरु आदि नाम हैं,यह गरम है हलका है और पित्तको उत्पन्न करता है कान, नासिका नेत्र इनके रोगों को हरता है।

१८० केशर-इसके कुंकुम काश्मीर आदि नाम हैं यह गरम है रूक्षहै कटुहै भ्रान्ति को दूर करे है शिररोग, कृमि, फोड़ा, वायु इनको हरेहै, खाँसी हरे है, वाणी, हृदय, कामदेव, इनको बल देवे है अति मूत्रको मिटावे है मस्तकपीड़ाको गुणकारी है इसका अवगुण शक्कर अथवा शहत से दूर होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१८१ प्लुवा–इसके एलुवालक आदि नाम हैं यह ठंडा है और कुष्ठ, कफ, खुजली, प्यास छर्दि, विष पित्त, लोह, हृदरोग, मूत्ररोग और गुदारोग इनको दूर करती है।

१८२ जायफल–इसके जातीफल आदि नाम हैं, यह हलकी है गरम है कफ कृमि और विषको हरती है।

१८४ लौंग–इसके लवंग, श्रीपुष्प आदि नाम हैं यह गरम है लघु है, दीपन है पाचन है, नेत्रोंको गुण करे है और शूल, अफरा, दमा, खाँसी, छर्दि, विष इनको शान्त करे है।

१७५ कंकोलं-इसके कटु, कंकोल आदि नाम हैं, यह गरम है, हृदयरोग, कफ, वायु और मन्दाग्नि को दूर करता है।

१८६ बड़ी इलायची–इसके स्थूलैल आदि नाम हैं, यह गरम है हलकी है, तेज है, भोजन में रुचि उपजाती है, मुखसे पानी बहना, विष, मूत्राशय, कफ पित्त, विष और मुख व शिर सम्बंधी रोगों को हरती है तथा छर्दि और खांसीको दूर करती है। यह फेंफडे को अवगुण करती है।

१८७ छोटी इलायची-इसके लघुएला आदि नाम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं यह शीतल है. रुक्ष है भोजनको पचाती वायु और छातीकी वेदना को हरण करती हैं, मुखको सुगन्धित करती और वमनको रोकती है, इसका अवगुण वंशलोचन से निवृत्त हो जाता है।

१८८ तज दालचीनी-इसके त्वच आदि नाम हैं, यह गरम है, हलकी है, कड़वी है पित्तको उपजाती है कृमि, मूत्र बवासीर वायु पीनस और हृदय सम्बन्धी रोगों को दूर करती है कामदेव को बल देती है।

१८९ तमाखू-इसके तमालपत्र आदि नाम हैं, यह हलकी है गरम है रूखी है कफ वायू सम्बन्धी रोगों को हरती है।

१९० नागकेशर-इसके नागचम्पिय आदि नाम हैं यह गरम खुश्क और लघु है आँव, दुर्गन्धि कफ, पित्त, कुष्ठ, विसर्प इनको हरे है।

१९१ छड–इसके जटामासी आदि नाम हैं, यह ठंडी है त्रिदोषनाशक है रुधिरविकार, दाह, विसर्ष, कुष्ठ इनको हरती है।

१९२ नेत्रवाला–इसके बालक आदि नाम हैं यह शीतल लघु रुक्ष दीपन व पाचन है और रक्तपित्त फोड़ा, कफ,ज्वर, दाह प्यास इनको नष्ट करे है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१९३ खसखस-इसके उशीर आदि नाम हैं यह शीतल है पाचन है कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, व्रण, दाह, विसर्प, विष, रुधिरविकार इनको हरे है।

१९४ रेणुका-इसके कपिला आदि नाम हैं यह पित्तको अग्निको और बुद्धिको उपजाती है गर्भ-को गिराती है।

१९५ प्रियंगु (काकुनि) इसके फलिनी लता आदि नाम हैं यह शीतल है वायुको उत्पन्न करे है दाह, पित्त, ज्वर, रुधिर विकार को नाश करे है।

१९६ कुंदरू—इसके तुण्डी आदि नाम हैं यह गरम है सजल है लघु है दीपन पाचन है बुद्धिको हरे है पित्त ज्वर कफ इनको खोता है।

१९७ गुग्गुल-इसके कौशिक आदि नाम हैं यह तेज है, गरम है, खुश्क है, मधुर है टूटेको जोड़ता है। पुष्ट है सूक्ष्म है रसायनी है दीपन है चेपदार है बलकारी है कफ, वायु फोड़ा, प्रमेह, रुधिरविकार बवासीर, वमनकी इच्छा, आंव फुन्सी, गांठकी सूजन गलगंड कृमि इन विकारों को दूर करता है।

१९८ राल-इसके क्षणक, सर्जरस आदि नाम हैं यह शीतल है भारी है तेज है रुधिर, पसीना, ज्वर फोड़ा खुजली इनको दूर करे है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१९९ मुरा-इसके कटु आदि नाम हैं, यह शीतल व लघु है और कुष्ठ, पित्त वायु को जीते है।

२०० कचूर-इसके द्रबिट आदि नाम हैं, यह दीपन, गरम हैं, खांसीको जीतता, भोजन में रुचि बढ़ाता और कुष्ठ बवासीर, फोड़ा, खांसी, दमा, गोला, कफ इन रोगों को दूर करता है।

२०१ कचूर भेद-इसके शटी आदि नाम हैं यह दूसरा कचूर ढाकवृक्ष के समान होता है, इसकी जड़ में उत्तम गन्ध आती है शीतल, लघु है आंव, ज्वर और खांसी को जीतता है।

२०२ पद्माक-इसके मलया आदि नाम हैं, यह शीतल है, कुष्ठ, दाह, फफोला, कफ प्यास बिसर्प दाह इनको दूर करे है।

२०३ पुण्डरीक-इसके पौंडर्य शतपुष्प आदि नाम हैं, यह वीर्यको उपजावे, शीतल और नेत्रों को गुण करे, कफ और पित्तको जीते है।

२०४ तगर-इसके बर्हिण आदि नाम हैं, यह तेज, गरम, हलका, मधुर व स्निग्ध है, मूत्र, बिष मूर्च्छा, सूगी, शिररोग इनको जीते है।

२०५ गोरोचन-इसके रोचन आदि नाम हैं, यह शीतल और बलि है कफ और पित्तको जीते है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२०६ दोनों नख–इसके व्याघ्र नख आदि नाम हैं यह गर्म है और वायु, रुधिर, ज्वर, कुष्ठ, कफ इनको शान्त करके वीर्य को उपजाता है।

२०७ पतंग–इसके पदरंजन आदि नाम हैं यह मधुर और शीतल है, पित्त कफ रक्त फोड़ा इनको शान्त करे है।

२०८ लाही–इसके लाक्षा आदि नाम हैं, यह शीतल, बल को बढ़ाता, चिक्कण और रंग अच्छा करे है और पित्त फोड़ा घाव विसर्प कृमि कुष्ठ इनको जीते हैं।

२०९ पुरइन–इनके पद्मनी आदि नाम हैं यह ठंडी, दीपनी है पित्त को उपजाती है विष, दाह कुष्ठ कफ वायु पसली रोग इनको दूर करे है।

२१० सफेद कमल–इसके सरसीरुह, अरविंद, नलिनसरोज आदि नाम हैं, यह शीतल, दीपन, कषैला और मधुर है कफ पित्त, दाह, प्यास, रुधिर, विकार, फफोला, विष, विसर्प, इनको शान्त करता है।

२११ नीलकमल–इसके नीलोत्पल, इन्दीवर, कुवलय आदि नाम हैं, इसमें गुण सफेद कमल के समान हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुणागुण विचार।

१ शीतकाल में अथवा भोजन करनेके उपरान्त रुधिर निकलवाना (फस्त खुलवाना) अयोग्य है।

२ वर्षकालमें कोष्ठ शुद्ध करना (जुलाबलेना) अत्यन्त हानिकारक है।

३ बहुत खटाई खानेसे पट्ठे शिथिल हो जाते हैं जिससे कि चलना. फिरना, बैठना, उठना कठिन हो जाता है।

४ भुने हुये मांसके साथ हींगका खाना मृत्यु कारक जानना।

५ बहुत मसूर के खाने से बुद्धि मलीन हो जाती शरीर क्षीण हो जाता है।

६ शीतलप्रकृति वालेको शहत सेवन करने से गुण होता है।

७ बहुत नारंगी खाना व नारंगी का रस सेवन करना, हृदय को निर्बल करता है।

८बहुत चिन्ता करने से शरीर निर्बल हो जाता है और अति निस्सन्देह रहने से उन्मत्तता रोग हो जाता है।

९ दिनमें सोने और रात्रीमें जागनेसे कान्ति उतर जाती है, मुख मलीन हो जाता है, नेत्रोंकी ज्योति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन्द पड़ जाती है।

१० अति मद्यपान करने से शरीर निर्बल हो जाता है और बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

११ बहुत भांग, चरस, गांजा आदि सेवन करने से बुद्धि मन्द हो जाती है, स्मरण शक्ति घट जाती है, शरीर दुर्बल हो जाता है और कपाल में गर्मी भर जाती है जिससे अनेक रोगों के प्रगट होने का भय रहता है।

१२ मांस खाने से स्वभाव निर्दय हो जाता है, क्रोध शीघ्र प्रगट होता है, यदि सूक्ष्म विचार किया जाय तो मांस खाना अति अनुचित है।

१३ रात्रि को जागते समय बहुत आकाश की ओर प्रतिदिन देखने से अकाल जरा (नजला) और खांसी तथा ग्रन्थि पीडा का आक्रमण होता है।

१४ पर स्त्री रमण करना महा हानिकारक है इससे अनेक भय प्रकट होते हैं, वीर्य नष्ट होता है, लज्जा छूट जाती है, धर्म भ्रष्ट हो जाता है।

१५ हेमंत (मार्गशिर पौष) ऋतु में रूखी (खुश्क) वस्तुओं का खाना और वसन्त (फाल्गुण चैत्र) ऋतु में गर्मतर वस्तुओं का खाना योग्य नहीं है।

१६ स्त्री की योनि में हींग की धूनी देने से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रसूति पीड़ा होती है और गर्भ से बालक शीघ्र उत्पन्न होता है।

१७ उपदंश (गरमी) बवासीर, खाज, कुष्ठ (कोढ़) सुजाक, शीतला, आदि रोगों से ग्रसित रोगी को छूने से अपने भी वही रोग हो जाने का भय रहता है, इस कारण इन रोगियों से बचा रहे।

१८ एक वस्तुका अवगुण दूसरी वस्तुसे निवारण होता है, जैसे कटहल का केले की पकी फली से, केले का घीसे घी का नारंगीसे नारंगी का लवण से, चाँवल का तिल से, जौ का दही से दही का जीरे अथवा राई से, पापड़ का सहजने से पूरी आदि का पीपलामूल से, चिरौंजी का हर्र से, भुने चने का मूली से, घी तथा सिंवाड़े का शीतल जल से और छुहारे, फालसे बेस व कैथ तथा महुये का नींब के बीज से, उड़द का दही से, ज्वार का अजमोद से, ईख के रस का अद-रखसे, दूध का मूँग के जलसे, मद्य का शर्बत से, शहत का सोंठ से व दुग्ध से और प्रत्येक फल का जवा-खार से, प्रत्येक मेवा का लौंग से, तथा गरम वस्तु का शीतल पदार्थ से और शीतल पदार्थ का तथा अजीर्ण का गरम पदार्थ से दूर हो जाता है।

* इति *

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीहरिः ॥

रसराज महोदधि

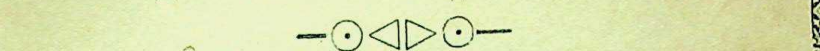

द्वितीय भाग

जिसको –

लखीमपुर निवासी पं० नारायणप्रसाद सीताराम मिश्र ने

अनेक ग्रंथों के अधार से बनाया।

उसको—

किशनलाल द्वारकाप्रसाद ने अपने

बम्बई भूषण यन्त्रालय में छापकर

प्रकाशित किया।

———

सर्वाधिकार सुरक्षित है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्री ॥

रसराज महोदधि के

द्वितीय भाग की

अनुक्रमणिका।

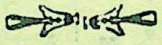

विषय	पृष्ठ
मङ्गला चरण	१
प्रथम अधिकार प्रारम्भ	३
औषधि युक्तायुक्त विचार	,,
औषध भक्षण काल विचार	६
औषधिक्रिया विचार	८
स्वरस विधि	६
कल्क विधि	,,
क्वाथ विधि	१०
हिम विधि	११
फांट विधि	,,
चूर्ण विधि	,,
अवलेह विधि	१२
गुटिका विधि	,,
घृत तेल विधि	१३
आसव तथा अरिष्ट विधि	,,
पुट पाक विधि	१४
मन्थ विधि	,,
क्षीर पाक विधि	१५
तण्डुल जल विधि	,,
उष्णोदक विधि	१५
काँजो विधि	१६
औषध दीपनपाचनादि विचार	१७
दीपन पाचन	,,
संशमन	,,
अनुलोमन	,,
स्रंसन	१८
भेदन	,,
वमन	,,
संशोधन	,,
छेदन	,,
लेखन	१६
ग्राही	,,
स्तम्भन	,,
रसायन	,,
धातु वर्द्धिनी	२०
धातु चैतन्य	,,
बाजी करण विशेषता	,,
सूक्ष्म	,,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
व्यवायी	२०
विकाशी	२१
मोदक	,,
प्राणहारक	,,
प्रमाथी	,,
अभिस्यन्दी	,,
महामृत्युंजय रस सब रोगोंपर	२२
अनुपान	२४
मृत्युंजय रस नवीन ज्वर पर	,,
विनोद विद्याधर रस शूलादि रोग पर	२५
महाज्वरांकुश रस ज्वरों पर	,,
विद्याधर रस संग्रहणी आदि रोगों पर	२६
त्रिपुर भैरव रस मन्दाग्नि रोगों पर	,,
स्वच्छन्द भैरव रस सन्निपात पर	२७
प्राणेश्वर सन्निपात आदि पर	,,
शीत भञ्जीरस शीत ज्वर	२८
रवि सुन्दर-बात ज्वर पर	,,
मृतसंजीवनरस-विषमज्वरपर	२९
कफकुठार रस कफ ज्वर	,,
ज्वालामुखी रस सब ज्वरोंपर	३०
सूर्यशेखर रस-बातकफज्वरपर	,,
मृतोत्थापन रस	३१
आनन्दभैरवरस-अतीसार पर	,,
वीरभद्र रस-सन्निपात पर	३२
चिन्तामणि रस सब ज्वरोंपर	,,
चन्द्रोदय रस-उन्माद आदि रोगों पर	३३

विषय	पृष्ठ
वसन्तमालतीरस जीर्णज्वर आदि पर	३३
आनन्द उदररोग आदिपर	३४
गंगाधररस अतिसारआदिपर	,,
कनक सुन्दररस बातातिसार पर	३५
पूर्णचन्द्ररस संग्रहणी आदि रोगों पर	,,
सूतराज-क्षत्री आदि रोग पर	,,
रामबाणरस मन्दाग्नि आदि पर	३६
क्षुधासागर रस क्षुधा पर	,,
महोदधिरस शूल आदि पर	,,
कीटारिरस कृमि रोग पर	३७
लाक्षादिबटी-कृमिनांशकारिणी	,,
कामेश्वर रस पाण्डुरोग पर	३८
मृगांकरस राजयक्ष्माआदिपर	,,
रसराज उरक्षत पर	,,
अमृतार्णवरस कास पर	,,
सर्वेश्वररस कास श्वास पर	३९
कुमुदेश्वररस वमन व प्यास पर	४०
सुधानिधि रस मदमूर्च्छा पर	,,
उन्माद गजकेसरी रस उन्माद पर	,,
बातारिरस बाताविकार रस	४१
कुञ्जविनोदरस बातपर	,,
कम्पवातारिरस शरीर कम्पपर	,,
कफकेतुरस कफविकार पर	,,
महाताडेश्वररस कुष्ठआदिपर	,,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
महानाराचरस जुलाब	४१
विद्याधर रस कफपर	४३
पञ्चाननरस हृदय रोग पर	,,
मेहमर्दनरस प्रमेहपर	,,
इच्छाभेदी रस जुलाब	४४
उदरारिरस जलोदर पर	,,
महामृत्युंजयरस	,,
ब्रह्मरस कुष्ट पर	४६
चन्द्राननरस कुष्ट पर	,,
दुष्टकालानल रस कुष्ट पर	,,
भैरवरस कर्ण रोग पर	४६
चन्द्रकान्तरस मस्तकरोग पर	,,
प्रदरान्तरस प्रदररोग पर	,,
सूतिका बिनोदरस सूतिका रोग पर	४७
कामिनीमद भञ्जन रस	४७
विशुचिका विध्वंसरस हैजा पर	,,
कर्पूर रस हैजापर	४८
सूर्यावर्तरस श्वासपर	,,
अजीर्णकंटकरस अजीर्ण पर	४६
त्रिनेत्र रस पसली पर	,,
दुर्लभ रस शीतला रोग पर	,,
नेत्रामनि रस नेत्ररोग पर	५०
कच्छपी यन्त्र	५१
गर्भ यंत्र	,,
हंस पाक यन्त्र	५२
ऊर्ध्व नलिका यन्त्र	,,
कच्छप यन्त्र	,,
रसायनाधिकार समाप्त	॥१॥

विषय	पृष्ठ
अथ द्वितीयाधिकार	
तत्र पुष्टिविधान	५३
देश	५४
समय	,,
प्रकृति	५५
अवस्था	५६
संक्षिप्त दिनचर्या	५७
रात्रिचर्या	६०
शरीरको दृढ रखनेका उपाय	६२
दुग्धपान विधि	६३
चाय के पीने की विधि	६४
जलको ठण्डा करनेकी विधि	६५
वर्षाऋतु के नियम	६६
शीतकाल के कुछ नियम	६६
गरमीके समय के कुछ नियम	६६
पुष्टि की औषधि	,,
मदन प्रकाश चूर्ण	७०
असगन्ध पाक	७१
पुष्टि पाक	,,
बलकारी मोदक	७२
हरीरा बनाने की विधि	७४
हलुआ बनाने की बिधि	७५
कूष्मांड (पेठा) पाक	,,
गोखरू पाक	७६
सुपारी पाक	७७
मुसली पाक	,,
शतावरी पाक	७८
आम्र पाक	,,
असगंध पाक	७६

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
बादाम पाक	७६
आँवला पाक	८०
नारियल पाक	,,
अदरक पाक	८१
मेथी पाक	,,
त्रिफला पाक	८२
लहसन पाक	,,
शिलाजीत शोधन	८३
मलाई का हलुआ	८४
त्रिफला घृत	,,
बादाम का हलुआ	,,
बादाम का हरीरा	८५
नेत्रोंको ज्योति बढ़ानेका उपाय	,,
नयन सुख अंजन विधि	८७
दांत मजबूत रखने का उपाय	,,
श्वेत केशों के कृष्ण करने का यत्न	८८

अथ तृतीयाधिकारः ।

(कामशास्त्र सम्बन्धी विषय)	८८
परस्त्री गमन निषेध	६१
वीर्य की प्रधानता	६३
वीर्य रक्षा	६४
पद्मिनी लक्षण	६८
चित्रणी लक्षण	६६
शंखनी लक्षण	१००
हास्तनी लक्षण	,,
पुरुष जाति	१०१
देव पुरुष लक्षण	,,
गन्धर्व मनुष्य लक्षण	,,
यक्ष मनुष्य लक्षण	१०२
राक्षस मनुष्य लक्षण	,,
पिशाच मनुष्य लक्षण	,,
तरुण स्त्री की प्रशंसा	१०४
सद्य; प्राणदायक षट् पदार्थ	,,
सद्यः प्राणदायक षट् पदार्थ	,,
मैथुन निषेध काल	,,
रजस्वला स्त्री के धर्म	,,
लिंग स्थूली करण	१०८
लिंग वस्थ करण	१०६
योनि कठोर करने का लेप	,,
भग संकोचन	११०
वीर्य स्तम्भन	,,
स्त्रोद्रविण	११२
नपुंसकत्व नाशक प्रकार	११३
बाजीकरण पदार्थ	,,
लोम शातन	,,
केश रंजन	११५
रजवीर्य की प्रधानता	११६

अथ चतुर्थाधिकारः ।

(स्त्री रोग चिकित्सा तथा बाल चिकित्सा)	
बन्ध्या स्त्री लक्षण तथा यत्न	,,
बांझ स्त्री पुरुष परीक्षा	१२४
बन्ध्या होने का कारण	,,
बन्ध्या रोग निवारण	१२५
भग रोग	१२६
मैथुन दोष विचार	१२७
सोमरोग यत्न	१२८

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
रक्त प्रदर रोग यत्न	१२८
पुष्पसंजननोपाय	१२९
गर्भाधान विधि	१३०
गर्भ स्तम्भन	१३१
गर्भ स्थिति यत्न	,,
गर्भ स्थिति यन्त्र	१३३
गर्भस्राव तथा गर्भपात भय निवारण	,,
गर्भ परीक्षा	१३४
गर्भरक्षा	१३५
तत्र प्रथम मास गर्भरक्षा	,,
द्वितीय मास गर्भरक्षा	,,
तृतीय मास गर्भरक्षा	१३६
चतुर्थ मास गर्भरक्षा	,,
पंचम मास गर्भरक्षा	,,
षष्टम मास गर्भरक्षा	,,
सप्तम मास गर्भरक्षा	१३७
अष्टम मास गर्भरक्षा	,,
नवम मास गर्भरक्षा	,,
दशम मास गर्भरक्षा	,,
एकादश मास गर्भरक्षा	१३८
द्वादश मास गर्भरक्षा	,,
गर्भरक्षा यन्त्र तथा द्वितीय यन्त्र	,, १३९
गर्भ पुष्टिकारक विधि	,,
बन्ध्या करण विचार	,,
गर्भ पातन	१४०
गर्भ में कन्यापुत्र परीक्षा	,,
गर्भिणी धर्म	१४१
धात्री शिक्षा	१४४

विषय	पृष्ठ
सुख प्रसव विधि	१५२
चक्रव्यूह	१५४
गर्भ में मृत बालककी विधि	१५५
योनिशूल और शोथ	,,
योनि दुर्गन्धि निवारण तथा वृद्धि करण	१५६
प्रसूत ज्वर यत्न	,,
दुग्ध शोधन	,,
दूध बढ़ने का उपाय	१५७
बाल रक्षा	१५८
बालरक्षा यन्त्र	१६०
बीसा यन्त्र	,,
बाल चिकित्सा	१६६
बालकको दूध देनेकाविचार	१६७
घुटी	१६८
बालक ज्वर यत्न	,,
बालककीगुदापकजानेकायत्न	१७०
मुख पकने की विधि	,,
दृष्टि (नजर) लगनेकी विधि	१७१
नाभि व ठुड्डी पकजानेकीविधि	,,
पेट फूलने व पेचिश पर	,,
उदररोग विधि	१७२
ज्वर अतिसार विधि	,,
प्यास,ज्वर अतिसार विधि	१७३
आँव अतिसार विधि	,,
रक्त अतिसार विधि	,,
पेट बढ़ने पर	,,
आँव लोहू	१७४
नेत्ररोग निवारण	,,
बहु रोदन निवारण	१७५

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
हंसलो का ठीक करना	१७६
शिररोग निवारण	,,
बहुमूत्र निवारण	,,
जले पर औषध	१७७
चिनग का दूर करना	,,
हिचकी का दूर करना	,,
कांच का निकलना दूर होवे	,,
सरदी हांफना पसली	१७७
खाँसी ज्वर उलटी	१७६
उल्टी	,,
खांसी	,,
दुर्बलता निवारण	,,
कर्णरोग निवारण	१८०
फुन्सियों के दूर करने का उपाय	,,
पेट में के छारुये निकालने का उपाय	१८१

विषय	पृष्ठ
कोथियो के दूर करने का उपाय	,,
लार गिरना	१८२
तालू बैठना	,,
गला आजाना	,,
जूडो का दूर करना	,,
मुखरोग (मुहासे) निवारण	१८३
मूत्र रोग निवारण	,,
दन्त रोगनिवारण	,,
विसूचिका (हैजा) निवारण	१८४
वर्षाकालकीफुन्सीका दूर करना	,,
बालक के फफोले दूर करना	,,
ज्वर निवारण	१८५
मसान रोग निवारण	,,
शीतला रोग निवारण	१८७
बाल तन्त्र	१६१
इति चतुर्थ अधिकारः ।४॥	

॥ इति अनुक्रमणिका ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीः ॥

वैद्यक ग्रन्थः ।

रसराज महोदधि भाषा प्रारम्भः

द्वितीयो भाग ।

मंगलाचरणम् ।

दो०-ब्रह्म सच्चिदानन्द अज, अविनाशीअविकार ।
नारायण गोविन्द पद, भजमन बारम्बार ॥१॥
नारायण गुरुपद सुमिरि, धन्वंतरि पदध्याय ।
श्रीरसराज महोदधि, लिखौं ग्रन्थ मनलाय ॥२॥
सो०-रुज नाशक रविदेव, तिमिरहरन संशय शमन ।
हृदय प्रकाशहु भेव, होय ग्रन्थ सम्पूर्ण शुभ ॥३॥
प्रात हर्र को खाय, करे नींव दातून नित ।
एकबार जो खाय, ताघर वैद्य न जावही ॥४॥
तब लगकर उपवास, जब लग शुद्ध क्षुधानहीं ।
भावत करि विश्वास, यही एक औषध बड़ी ॥५॥
डारे निर्मल नीर, मिश्रीयुत गोदुग्ध में ।
करे पान मतिधीर, बाढे बुद्धि बिवेक बल ॥६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो०-पथ्य सहित जग नरनको, नहिं औषधसों काम।
बिनापथ्य औषध बृथा, समुझि लेहु बुधि धाम ।७।
एकहि घरमें जो बसें. कई गृहस्थी लोग ।
सोघर जानों नरकसम, नहिं होवे सुखभोग॥८॥
अँधियारे घरमें पवन, आवे जहां न जाय ।
भूत बसे तेहि गेहमें, मानुष चुनि चुनि खाय ॥९॥
असल भूतमें शक्ति नहिं. मानुष को दुख देय ।
दुष्ट पवनही भूतहुइ, सकल सौख्य हरलेय ॥१०
दिवा शयन निशि जागरण, क्षुधा रहित कछुखाय ।
निश्चय उपजे रोगतन, कहत वैद्य मनलाय॥११॥
मात पिता बनिता तनुज. जाके सब अनुकूल ।
देह अरोग बिचार धन, यही वर्गनत भूल ॥१२॥
व्याधिकष्ट है देहका, तेहि औषध से टार ।
आधि कष्ट है चित्तका, ताको हरे विचार ॥१३॥
अन्न वस्तसंयोग से, तनमें तनपे व्याधि ।
विन बिचार वरते जुजन, मनमें उपजे आधि॥१४॥
नरहितकर दोहा लिखे. नारायण सुखकन्द ।
सोचि समुझि वरते सुजन, भोगे परमानन्द ॥१५॥

प्रथम अधिकार प्रारभः ।

दो०-लिखौ प्रथम अधिकारमें. यथा रसायन योग ।
नारायण सेवन किये, दूरि होत भवरोग ॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सो०-सकल रोग हरिलेय, जरा अवस्था जो रहे ।
जो विधिवतरस देय ताहि रसायन जानिये ॥२॥

यहां वैद्यक ग्रन्थमें औषधियोंके योगसे जोरस ग्रहण किया जाताहै, अथवा शुद्ध धातु उपधातुओं की भस्मरूप रसतथा काष्ठ आदि औषधियोंका जल अग्नि द्वारा खींचेहुये अर्करूप रसके अयन (स्थान) कोरसायन कहतेहैं, धातु उपधातुओंकाशोधनमारण इस(रसराजमहोदधि) के प्रथम भागके द्वितीय तरङ्ग में हम लिख चुकेहैं, अब इस द्वितीय भागके प्रथम अधिकारमें यथावकाश मुख्य मुख्य कुछ थोडे से रसोंके नाम गुण सहित लिखते हैं तहां प्रथम ।

औषधि युक्तायुक्त विचार ।

मू०-त्वान्ये व हि योज्यानि द्रव्याण्यखिलकर्मसु ।
विना विडंगकृष्णाभ्यां गुडधान्याज्य माक्षिकैः ॥ १ ॥

भाषार्थ-विना युक्तायुक्त बिचार के कोई भी औषध यथार्थ फल नहीं देती है, इस कारण युक्तायुक्त विचार लिखना परमावश्यक है । सब कर्मों में औषधि नवीन ही योजित करना तो भी १ वायबिडंग, २ पीपरि, ३ धनियां, ४ गुड़, ५ शहत, ६घी, यह छः वस्तु पुराने ही लेना, एक वर्ष से नीचे के नहीं ग्रहण करना ॥ १ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथाकूडेकी छाल अडूसा कोहला गुडवेल, शतावरी असगंध, खरैटीबड़ीसौंफ. चांदवेल, यहनवऔषधियां गीलीही डालना चाहिये, यहां इन गीलीऔषधियोंको दूनी मत डालो इन सिवाय गीली होसो दूनी डालो ॥

तथा उपरोक्त औषधियों के बिना अन्य सब औषधियां प्रत्येक कार्य में नवीन और सूखी डालना योग्य है यदि गीली मिलें तो सूखी प्रमाण डालना चाहिये ।

जहां एकही औषध दोवार लिखीहोतो दूनी लेना.

तथा जिस औषधका कोई अंग न लिखा हो तो उसकी जड लेना जहाँ प्रमाण (तोल) न लिखा हो, वहाँ सब औषध समान भाग लेना, जहाँ पात्रका नियम न लिखा हो मिट्टी का पात्रग्रहण करना जहाँ औषध भक्षण करने का समय न लिखा हो वहाँ प्रातःकाल जानना ।

जहाँ चन्दन लिखकर जातिको न दर्शाया हो तो आसव, अवलेह, घृत आदि स्नेहमें प्रायःसफेद चंदन डालना. और काढा व लेपमें लालचंदन ग्रहण करना

नींब आदि बड़े वृक्षों की जड़की छाल लेना. और कटियाली, गोखरू आदि छोटे व कोमल वृक्षों की जड व पंचाङ्ग ग्रहण करना ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा बड आदि वृक्षोंकी छाल खैर आदि वृक्षों का सार और महुआ, बबूल आदि वृक्षोंकी भीतरी छाल ग्रहण करना जिसको अंतर छाल कहते हैं। तथा तेजपात, तालीस, पान, सोनामक्खी तुलसी भांग इत्यादिके पत्ता लेना त्रिफला (आंवला, हर्र बहेड़ा) सुपारी आदिके फल लेना तथा ढाक गुलाब सेवती आदि वृक्षों के फूल लेना।

तथा रीठा कमलगट्टा जायफल केवांच कालीमिर्च इत्यादिके बीज लेना आक थूहर बड गूलर इत्यादि वृक्षों का दूध लेना।

तथा यदि कहीं कोई औषध न मिले तो उस औषधि के समान गुणवाली औषधी बदलेमें लेना जैसे अमलबेत न मिले तो चूकालेना अतीस न मिले तो नागरमोथा लेना कस्तूरी न मिले तो जावित्री लेना ऋद्धि न होतो बला वृद्धि न मिले तो नागबला को लेना।

तथा मेदा न मिले ती असगन्ध महामेदा नमिले तो प्रसारणी (चाँदबेल) और काकोली व क्षीर काकोली न हो तो शतावरी तथा जीवक न मिले तो गिलोय(गुर्च) ऋषभ न मिले तो बंशलोचन लेना।

जावित्री के न होनेसे लोंग तगरके बदले में कूट लेना मौलसरी न होतो कमलकन्द चित्रक न मिले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो दन्तीमूल सहत न मिले तो पुराना गुड़ लेना सुवर्णभस्म न मिले तो लोहसार लेना केशर न मिले तो कुसुंभा और मोती भस्म न मिले तो सीपी का चूना लेना इसी प्रकार अन्य औषधियों के अभावमें तत्समान गुणवाली औषधि ग्रहण करना यहां केवल उदाहरणमात्र लिखा बिस्तार पूर्वक निघंटु प्रकाश में लिखा है उसमें देखना ।

एक बातका ध्यान यहां पर अवश्य रखना चाहिये कि अयुक्त वस्तुको कदापि ग्रहण नहीं करना ।

काष्ठ आदि औषध एक वर्ष के उपरान्त निष्फल होजातीहैं जिनमेंसे चूर्ण दो मास घी तेल चारमास और गुटिका अवलेह तथा पाक आदि एक वर्षके उपरान्त निरुपयोगी हो जाते हैं परन्तु आसव व सुवर्ण आदि की भस्म और रसायन यह जितने पुराने हो जाते हैं उतने ही अधिक गुण देनेवाले हो जाते हैं ।

औषधि भक्षण कालविचार ।

बैद्यवर रोगीको प्रायः प्रातःसमय औषधि भक्षण कराबे उसमें विशेष करके औषधिका अंग रस कल्क क्वाथ और फांट व हिम यहतो प्रातःकालही भक्षण करना योग्य है । मनुष्यको औषधि भक्षण करने में पांच प्रकार का काल जानना १ सूर्योदयके समय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२ दिनको भोजन के समय ३ सायंकाल के भोजन समय ४ बारम्बार ५ रात्रिमें यही पांचो काल हैं। पित्त अथवा कफके कोपमें और पित्तपर विरेचन कराने के निमित्त कफ विकारमें वमन के निमित्त तथा वात आदि दोषको स्नेह आदि योगसे पतला अर्थात् कम करनेके निमित्त रोगीको बिना भोजन किये प्रातःसमय औषधी देना चाहिये।

तथा यदि गुदा सम्बन्धी अपान कुपित हुआ हो तो भोजन करने से कुछ काल पहले औषध देना। यदि अरुचि रोग हुआ हो तो अनेक प्रकार के रुचिकारक अन्न आदि उत्तमोत्तम लेह्य चोष्य अर्थात् चाटने व फांकने वाले पदार्थों के साथही औषधि देना।

जो नाभिका समानवायु कुपित हुआ हो अथवा मंदाग्नि प्रगट हुई हो तो अग्निको प्रदीप्त करनेवाली औषधि भोजन पदार्थमें मिलाकर देना योग्य है।

तथा जिसके सब शरीरका व्यापक व्यान वायु कुपित हुआ हो तो उसको भोजन करने उपरान्त औषधी भक्षण कराना योग्य है।

हिचकी तथा आक्षेप रोगों और वायु व कफके कोप में भोजनके आदि और अन्त दोनों समय में औषधी देना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कंठ सम्बन्धी उदानवायु के स्वरभंग आदि रो
प्रगट हुये हों तो सायंकाल के भोजन समय
आदि पदार्थ में मिलाय एक एक ग्रास २ प
चटनी के समान औषधी देना इस प्रकार भोजन
करने से वह औषधी शरीर में प्रवेश कर जाती है।

तथा जो हृदय स्थित प्राणवायु का कोप हो तो
विशेषकर सायंकाल के भोजनान्त में औषधी
देना। तृषा वमन हिचकी श्वास और विष दोष
इत्यादि रोगों में अन्न सहित अथवा अन्न रहित
बारम्बार औषधी देना।

दाढ़ीके ऊपरी अंगों के रोगों में तथा बढ़े हुए बात
आदि दोष न्यून करने के निमित्त और अति क्षीण
रोगों को घटाने के निमित्त रात्रि समय पाचन व
शमन रूप औषध अन्न रहित ही देना योग्य है।

इस पूर्वोक्त नियमों के विरुद्ध यथेच्छा पूर्वक
चिकित्सा कदापि नहीं करना।

औषधि क्रिया विचार।

मू०—अथातः स्वरसः कल्कः क्वाथश्च हिमफांट कौ।
ज्ञेयाः कषायः पंचैतेः लघवः स्युर्य थोत्तरम् ॥४॥

भाषार्थ—अब आगे १ स्वरस २ कल्क ३ क्वाथ
४ हिम ५ फाँट यह पांचों क्वाथ (काढा) के सामान
ही हैं इनमें एकसे एक उत्तरोत्तर हलके हैं ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वरस विधी।

१ क्रिया, जो बनस्पति अग्नि तथा कीट आदिसे दूषित नहो, उसको लाकर तत्काल कूटो औरवस्त्र से निचोड़ कररस निकालो इसीको अङ्गरस अथवा स्वरस कहते हैं।

२ क्रिया, चार पल सूखी औषध लेकर चूर्ण करो उस चूर्ण को मिट्टी के पात्रमें आठ पल जलके साथ आठ प्रहर पर्यन्त भीगने दो, फिर भीगे वस्त्र से निचोड़ लो, यह दूसरे प्रकार का स्वरस है।

३क्रिया सूखी औषध लेके औषधसे आठ गुणा जल मिलाय मिट्टीके पात्रमें आंचसे औटाओजब चौथाई शेष रहे तब छानलो, यह तीसरा स्वरस है।

मात्रा, प्रथम प्रकार से बने हुए स्वरस की मात्रा दो तोला और दूसरे तीसरे प्रकारके स्वरस की मात्रा चार तोला ग्रहण करना।

यहां शहत, शक्कर, गुड़, जवाखार, जीरा, लवण घी तेल, और चूर्ण आदि पदार्थ छः माशे मिलाना

कल्क विधी।

क्रिया—गीली औषध को चटनी के समान बारीक पीसो, तथा सूखी औषधिको जलके संयोगसे चटनी की नई बारीक पीसो उसको कल्क कहते हैं।

कल्क की मात्रा का प्रमाण एक तोलाभर काहै।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कल्क में शहत, घी तेल मिलाना होतो मात्रा से
दुगुना मिलाओ, शक्कर, गुड़, मिलाना होतो सवा
भाग मिलाओ, दूध और जल आदि गीले पदार्थ
मिलाना हो तो मात्रा से चौगना मिलाना ॥

क्वाथ विधि ।

क्रिया–चार तोला औषधको कुछ कूटकर उससे सोलह गुणे जलके साथ मिट्टी के घट में डालो, और मन्द मन्द आंच दो जब वह औटते औटते आठवाँ भाग रहजावे, तब उतारकर काँच, चाँदी वा पत्थर तथा मिट्टी के पात्र में छानलो इसको क्वाथ, शृत, कषाय, और निर्व्यूह कहते हैं ।

मात्रा–क्वाथकी मात्रा १ पल प्रमाण (४तोला) उत्तम, तीनअक्ष प्रमाण मध्यम, और अर्धपल प्रमाणकी निकृष्ट कहाती है ॥

युक्तपदार्थ प्रमाण–क्वाथमें शक्कर डालना होतो क्वाथके प्रमाणसे बात रोगमें चतुर्थांश पित्त रोग में अष्टमांश, कफ रोग में षोडशांशडालो, यदि शहत मिलाना होतो उक्त प्रमाण से (अनुमानसे) विपरीत डालो और जीरा गूगल सेंधालवण, जवाखार, शिलाजीत, हींग, सोंठ, मिर्च पीपल, आदिक पदार्थ मिलाना हो तो चार माशे डालना ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रोगी को उचित है कि क्वाथ (काढा) को प्रसन्न मन से कांच आदि के पात्र में कुछ कुछ गर्म पीवे और पीकर पात्र को उलटा डाल देवे, यदि वैद्यकी आज्ञा हो तो ऊपर से पान खावे।

हिमविधि।

क्रिया—चार तोला औषध कूटकर चौबीस तोले पानी के साथ मिट्टी के पात्र में रातभर भीगने देवे प्रातःसमय उसको छान लेवे इसको हिम कहते हैं।

हिमकी मात्रा का प्रमाण९तोलेका है। हिममें जो द्रव्य मिलाना होतो काढ़ेके प्रमाण भर मिलाना।

फांट विधि।

क्रिया--१ पल औषध का बारीक चूर्णकर मिट्टी के घड़े में पावभर जल डालकर चूल्हे पर चढ़ावे, जब वह औटने लगे, तब पूर्वोक्त चूर्ण डालकर कुछ काल पीछे उतार कर कपड़े से छान लेवे, इसको फांट और चूर्ण द्रव्य कहते हैं।

मात्रा—फाँटकी मात्रा ८ तोले की होती है।

फांटमें शहत, शक्कर, और गुड़ आदि पदार्थ मिलाना हो तो क्वाथमें लिखे अनुसार मिलाओ।

चूर्ण विधि।

क्रिया—सूखी औषधि को कूट पीसकर कपड़े से छानलो, उसको चूर्ण रज, और क्षोद कहते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चूर्ण की मात्रा एक तोलकी लेना। तथा चू[illegible] सेर में गुड़ मिलाना होतो समान भाग मिलाना, मिश्र[illegible] रानी मिलाना हो तो दूनी मिलाना हींग अनुमान से[illegible] मिलाना शहत अथवा कोई चिकना पदार्थ मिलाना हो तो दूना मिलाओ, दूध गौमूत्र, जल आदि पतला पदार्थ मिलाना हो तो चूर्ण से चौगुना मिलाओ तथा यदि नीबूके रस आदिको घुट देना होतो रस में चूर्ण को भली भांति भिगीय देवे।

अवलेह विधि।

क्रिया–औषधियों के काढा आदि को फिर पात्रमें डालकर औटाते दृढ हो जाने दे जिससे चाटने के योग्य होजावे उसको अवलेह (चटनी) कहते हैं।

अवलेह की मात्रा एकपल प्रमाण देनी। अवलेह में यदि शक्कर मिलाना हो तो औषध के चूर्ण से चौगुनी डाले गुड़ मिलाना हो तो दुगुना और दूध गौमूत्र जल आदि द्रव पदार्थ मिलाना हो तो चूर्ण से चौगुने डाले।

गुटिका विधि।

क्रिया–शक्कर गुड़ अथवा चासनी लेके किम्बा चासनी किये बिनाही अथवा जल वा दूध वा शहतसे चूर्ण मिलाय गोली बाँध लेना इसको गुटिका कहतेहैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुटि[illegible]काके सात नाम है १ गुटिका २ बटी, ३ मोदक, ४ बटिका, ५ पिंडि ६ गुटि, ७ वर्ति।
[illegible]ष्ठ आदि की बनी हुई गोली की एक तोलाकी [illegible]त्रा जानो शेषद्रव्योंसे बनी गुटिका का प्रमाण [illegible]त्रा नुसार जानो अर्थात् जहां जितना प्रमाण [illegible]खा हो।

शक्करमें गोलियां बनाना होतो चूर्णसे चौथा माग शक्करलेना गुड़में बनाना होतो चूर्णसे दूनागुड़ लेना यदिशहतमें बनानाहोतोचूर्णकेसमानभागलेनातथा आर्द्रद्रव पदार्थ मिलाना होतो चूर्णसे दूना मिलाना।

घृत तेल विधी।

क्रिया–जिन पदार्थोंका घी वा तेल बनाना हो तो प्रथम उनका कल्क बनाकर उससे चौगुने घी वा तेल में डाल कड़ाही वा मिट्टी के चिकने पात्रमें रख चूल्हे पर चढ़ादो आंच लगते २ जब घी वा तेल मात्र रहजायतबउतारकर छानलो, यही घीवतेलकीविधिहै इसकी मात्रा एक पल प्रमाणकी जानना। इसमें दूध, दही गोमूत्र आदि पदार्थ डालना हो तो घी तेल से चौगुना डालना।

आसव तथा अरिष्ट विधि।

क्रिया–जल तथा अन्यद्रव पदार्थोंके साथ पात्रमें औषधियां डाल कर उसका मुख बंद करदो और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पृथ्वी में पन्द्रह दिन वा एक महिना भर गाड़ देवे फिर निकाल लेवे इसमें भेद यह है कि जिसमें औषधियां जुदी और केवल निर्मल जल जुदा डाल कर उक्तरीत्यानुसार सिद्ध कियाहो सो आसव कहाता है, और जिसमें पृथक जलके साथ औषधियों का काढा बना कर डाला हो सो अरिष्ट कहाता है।

इसकी मात्रा का प्रमाण १ पल जानना इन दोनों में जहाँ जल आदि द्रव पदार्थ का प्रमाण न लिखा हो तो एक द्रोण द्रवके साथ एक तुला प्रमाण गुड़ डालो उसी में गुड़ से आधा शहत, और गुड़ से दशवां भाग औषधियों का चूर्ण डालना और यदि सब वस्तुओं का प्रमाण लिखा हो तो लेखानुसार ही लेना उचित है।

पुटपाकविधि।

क्रिया जिस औषधिका पुटपाक करके रस निकालना हो तो प्रथम उसके ऊपर बड़ या जामुन के पत्ते लपेटकर ऊपरसे काली मिट्टीका दो अंगुल मोटा गाढ़ा लेप चढ़ा दो फिर उस पिंडी अर्थात् गोला को बहुत आँचमें दवा दो जब यह अँगारेके समान लाल होजावे तब निकालकर मिट्टी पत्ते आदि अलग करो और औषध निकालकर रस निकाल लो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस रसकी मात्रा १ पलकी जानना।
इसमें शहत आदि पदार्थ एककर्ष प्रमाण डालना।

अन्य विधि।

क्रिया—चार पल प्रमाण शीतल जलमें औषधका एकपल चूरा मिलाय मिलाय मिट्टीके पात्रमें दहीके समान मथो इसको मंथन जल कहते हैं। इसकी मात्रा दो पल है।

क्षीर पाक विधि।

क्रिया—औषध के प्रमाण से आठगुना दूध और चौथना जल इन तीनों को एक में मिलाकर औटाना औटते औटते जब पानी जलकर दूध मात्र रह जावे, तब उतारले, यही क्षीरपाक है।

यह क्षीरपाक आमांश शूलको दूर करदेता है।

तण्डुल जलविधि।

क्रियाएकपलभरकूटेहुयेचावलआठगुनेजलकेसाथ पात्रमें डालकर आंचदो फिर छानलो, अथवा कुछदेर तक भींगनेदो फिर छानलो, इसको तण्डुल जल कहतेहैं, इसमें आंच पर चढ़ाकर छाननेसे मुख्य है और भिगोकर छानने पर सामान्य तण्डुल जल जानना।

उष्णोदक विधि।

क्रिया—सेरभर जल तपावे, जब कुछ तपजावे अथवा आधा रहजाय, किंवा चौथाई रहजाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथवा आठवां भाग रह जाय तब उतार[illegible], यह पहले से पिछला अधिक गुणवाला होता है

यह औठाहुआ जल कफ, आमवात मेदवृद्धि [illegible] स्वासऔरज्वरकोदूरकरताहैऔर वस्तिकोशोधता

कांजी विधि ।

क्रिया–मिट्टीकेनवीन पात्रमें सरसोंका तेल चुपड़ कर उस पात्रमें निर्मल गरम जल राई जीरा सेंधा-लवण हींग सोंठ थोड़ीसी छाछ और कुछ बड़े डाल दो और पात्रका मुख बन्द करके तीनदिन रहनेदो जबवह उबल जावेतबउसकोकाममेंलावेयह कांजीहै

मू०–स्थितिर्नास्त्येव मात्रायाः काल कालमग्नि वयो वलम् ।
प्रकृतिं दोषदेशौ च दृष्ट्वा मात्रां प्रयोजयेत् ॥ ४ ॥
शार्ङ्गधरे ॥

भाषार्थ-पूर्वोक्त लेखमें हम स्वरस कल्क क्वाथ हिम फांट चूर्ण अवलेह गुटिका घी तेल आसव पुटपाक इत्यादिका वर्णन करके प्रत्येककी मात्राका प्रणाम कहचुके तथापि उत्तम वैद्यकाल देश अवस्था बल और प्रकृतिके अनुसार मात्रा देना यहाँ मात्रा का प्रमाण पूर्ण बलवालेके निमित्त कथन किया है बल आदिके न्यूनाधिक होनेके कारण मात्राकी स्थिति नहीं है अतःकाल जठराग्नि अवस्था बल प्रकृति दोष देश इनको देखकर मात्रा की योजना करे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

औषधि दीपन पाचनादि विचार।

[illegible]—पचेदामं वन्हिकृच्च दीपनं तद्यथा मिशिः।
पचत्यामं न वन्हिं च कुर्याद्यत्तद्धि पाचनम्
नागकेशरवद्विद्याच्चित्रवा दीपनपाचनम् ॥ ५ ॥

अब औषधियोंका दीपन पाचन आदि विचार हम उदाहरण सहित लिखते हैं।

दीपन पाचन-जो औषधि आमको न पचावे और अग्निको प्रदीप्त करे, वह दीपन, कहातीहै जैसे बड़ी सौंफ, तथा आम को पचावे और अग्नि को प्रदीप्त न करे सो पाचन कहाती है नागकेशर और जो औषधि आमको भी पचावे और अग्निको भी प्रदीप्त करे सो दीपन पाचन कहाती है जैसे चित्रक।

संशमन-जो औषधि शरीर के बात आदि दोषों को न बिगाडे. और न उनका शोधन करे, किन्तु अपनी पूर्वदशापरही यथास्थित रहने देवे, और शरीर में बिगड़ेहुये, दोषको ठीक करदेवे, वह संशमन औषधि कहती है जैसे नीमगिलोय (गुर्च)।

अनुलोमन-जो औषधि बात आदि दोषोंको पचाकर परस्पर बंधेहुओंको पृथककरकेनीचेकोगिरावेअथवा मलमूत्रकी रुकावटको पचाकरगुदाद्वाराकोठेकोशुद्ध करदेवे वह अनुलोमन कहाती है, जैसे हर्रे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्रंसन

जो औषधि कोठेको बात आदिदोष तथा मूत्रको बलात्कार से पाक न होने पर भी गुदाद्वा बाहर निकाल देवे सो स्रंसन औषधि कहाती है जैसे किरवाण की गिरी ।

भेदन

जो औषधि पेट में के पचे वा अनपचे अन्न आदि पदार्थ को तथा बात आदि दोषों को पतला कर गुदाद्वारा से बाहर निकालदे सो रेचन कहाती है जैसे निसोत ।

वमन

जो औषधि बिना पचे हुए ही बात तथा पित्त को बलात्कार से मुख द्वारा बहार निकाल दे वह वमन कहाती जैसे मैनफल ।

संशोधन

जो औषधि अपने स्थान में बातादि दोष, तथा मलसंचय को ऊपर की ओर खींचकर मुख, कान नाक, आदि द्वारा अथवा नीचे की ओर खींचकर गुदा वा मूत्र द्वारा बाहर निकालदे सो संशोधन कहाती है जैसे देवदाली ।

छेदन

जो औषधि परस्पर कफ आदिको अपनी प्रबलता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भिन्न २ कर देवे सो छेदन कहाती है, जैसे खार, मिर्च, पीपरि, शिलाजीत आदि ।

लेखन

जो औषधि रस आदि धातु, तथा बात आदि दोष कंवा वमनको शोषण करके पतले कर देती है, सो लेखन कहाती है जैसे वच, गर्मजल सहत आदि ।

ग्राही

जो औषधि जठराग्निको प्रदीप्त करे, आम आदि को पचावे, और स्वयं उस्णवीर्य होने के कारण जलरूप कफ आदि दोष तथा धातु मलका शोषण करे सो ग्राही कहाती है, जैसे सोंठ, जीरा, गजपीपरि ।

स्तम्भन

जो औषधि रूखापन, शीतलता, कटुता, हलकापन, और पाचन इन गुणों से बात उत्पन्न करने वाली हो सो स्तम्भन कहाती है, जैसे नागरमोथा बेलकी गिरी, मोचरस, कुडाकी छाल इत्यादि ।

रसायन

जो औषधि शरीर की जरा व रोगों को दूर करने वाली हो सो रसायन कहाती है, जैसे शतावरी, केंच के बीज, दूध, मिश्री इत्यादि ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धातु वर्द्धनी

जो औषधि वीर्य को बढ़ाने वाली हो उसको धातुवर्द्धनी कहते हैं जैसे असगन्ध मूसली शक्कर शतावरी इत्यादि।

धातु चैतन्य

जो औषधि धातुको चैतन्य तथा उत्पन्न करने वाली है सो धातु चैतनी कहाती है जैसे दूध आबला मिलाये की मीगी उड़द इत्यादि।

वाजीकरण विशेषता

धातु चैतन्य कारिणी स्त्री धातुरेचक बड़ी कटाई के फल धातुको स्तम्भन करने वाला जायफल धातुको शोषण करने वाली हर्र और धातुकोक्षय करने वाला तरबूज सो भी उक्त बातों की विशेषता पर वैद्य पूरा ध्यान देवे।

सूक्ष्म

जो औषधि शरीर में छिद्रों द्वारा प्रवेश हो सके सो सूक्ष्म कहाती है जैसे सेंधालवण सहत नींब तेल इत्यादि।

व्यवायी

जो औषधि पेट में पहुँचते ही सब शरीर में व्याप्त होजावे पीछे से पचे सो व्यवायी कहती है जैसे भांग अफीम आदि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विकाशी।

जो औषधि शरीर की संधियों के सब बन्धन को ढीले करदे सो विकाशी कहावेहै, जैसे सुपारी, [illegible]द व इत्यादि।

मादक।

जो औषधि तमोगुण प्रधान होकर बुद्धि को बिगाड़ देवे सो मादक कहाती है, जैसे मदिरा आदि०। प्राणहारक।

जो एक ही औषधि १ व्यवायी, २ विकासी, ३ सूक्ष्म, ४ छेदन, ५ मादन, ६ आग्नेयी, ७ दीपन इन गुणों से युक्त हो सो प्राणहारक कहाती है, जैसे वत्सनाग विष इत्यादि।

प्रमाथी।

जो औषधि अपने प्रभाव से मुख, कान, नाक आदि छिद्रों के कफ आदि दोषों के संचय को दूर करदे, सो प्रमाथी कहाती है, जैसे कालीमिर्च, बच इत्यादि०।

अभिष्यन्दी।

जो पदार्थ अपने पिच्छिलपन अथवा जड़ताके कारण से रस बहाव की नड़ियों को रोकके शरीर को जकड़ा देवे, सो अभिष्यन्दी कहाती हैं। जैसे दही इत्यादि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि पूर्वोक्त विषय बिस्तार पूर्वक देखना हो तो शार्ङ्गधर सुश्रुत में देखना, परन्तु यहां केवल भाषा जानने वलों के निमित्त संक्षेप से लिखा है।

अब प्रसिद्ध प्रसिद्ध रसोंके प्रकार वर्णन करते हैं रसों के बनाने में पुट व यंत्रों का प्रकार प्रथम भाग में हम लिख चुके हैं वहाँ देखना।

मू०—अधुना ब्रूमहे सद्यश्चमत्कार करान् रसान्।
रसतन्त्राणि भूरीणि विलोक्यजनतुष्टये ॥ १ ॥

भाभार्थ-बहुतसे रस तंत्रोंके ग्रंथोंको देखकर वैद्य जनों की प्रसन्नता के अर्थ तत्काल चमत्कार दर्शावने वाले रसों को अब वर्णन करते हैं। धातु और उपधातुओं का शोधन मारण हम ग्रन्थ के प्रथम भाग में लिख चुके हैं।

महामृत्युञ्जय रस सब रोगोंपर।

शुद्धपारा १ तोला, शुद्धसंखिया विष १ तोला, शुद्ध शीशा १ तोला, शुद्धगंधक १ तोला, प्रथम शीशेको गलाना फिर उसमें १ तोला पारा मिला देना अनन्तर ठंडाकर दोनोंकोखरलमें डालकर घोटना, जब बारीक होजाय तब गंधक मिलाकर कजली करे तदनन्तर संखिया विषका चूर्ण डालकर चीतेके रससे दोदिन पर्यंत खरलकरे. जब गाढा होजाय तब बहुत बरीक एक तोला सोनेके पत्र उसी पट्टी के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चारों ओर लपेट देवे, फिर इसको शराव संपुट में रखकर कपरोटी करे और छाया में सुखाय लेवे, फिर एक हांडी में रख ऊपर संपुट करे और चार अंगुल बालू भरे और लोहे की कटोरी ढक देवे, उसकी सन्धि गीली चिकनी मिट्टीसे बंदकर देवे, फिर चूल्हेपर चढाकर मन्द मन्द आँच देवे, जब स्वाँग शीतल होजावे तब उतार लेना और संपुट में से पारे की चौथाई शुद्ध विष डाले, यदि चार भाग पारेकी भस्म और सोने के वर्क हों तो उनके बराबर ४ भाग मोती और विषके बराबर १भाग गन्धक डाले, और दो दिन पर्यन्त चीते के रसमें घोटे, जब गाढा होजाय तब फिर सोनेके वर्क पिछी से लपेटकर शराव सम्पुट में रख कपरौटी करे पीछे हाँडी में रख चार अंगुल बालू बिछाय लोहे की कटोरी से पहले कहे अनुसार मुख बन्दकर दो प्रहर तक आँच देना. (यहाँ ऐसा मोटापात्र न ले जिसमें आँच ही न लगे, और ऐसा पतला भी नहीं लेना जो रस बिगड़ जावे रसके बनाने में पूरा ध्यान रखे) जब स्वाँग शीतल हो जावे तब उसको निकालकर बहुत अच्छी शीशीमें भरे और रख छोडे, इसमें से बलाबल देखकर रत्ती से ३ रत्ती प्रमाणतक अपनी बुद्धि के अनुसार मात्रा देवे,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिस रोगके अनुपान से देवे,वही रोग दूर होजावे।

अनुपान ।

सेमल के रस से इस रस का सेवन करे तो पित्तरोग दूरहोय तथा लाई खाँसी अम्लपित्त और श्वासको हरे। और शरीरको पुष्ट करे। कालीमिर्च के साथ खायतो कफ रोग को हरे पीपरके संग खायतो बातरोग का विनाश करे। बातज्वर में देने योग्य काढे से खायतो बातज्वर दूरहोय पित्त ज्वरके काढे से खाय तो पित्तज्वर दूर होय कफ ज्वर के काढे से खाय तो कफज्वर जाता रहे सन्निपात ज्वर के काढे से खायतो सन्निपात ज्वर जाय,बिषम ज्वरके काढेसे खायतो बिषम ज्वर नाश होवे, इसी प्रकार जिस २ रोग के व चूर्णसे खाय वह २ रोग दूर होजावे। घी और शहतके सङ्ग खाय तो शूल रोग दूर होय। ऊँटनी के दूध व नारायण चूर्ण के सङ्ग खाय तो उदररोग का नाश होवे गिलोय वा जीरे के साथ खायतो स्वर भंग दूर होवे इसमें महाबल है।

मृत्युञ्जयरस नवीन ज्वर रस ।

सोनामक्खी, जमालगोटा हरताल बच्छनागविष मनशिल,ताँबेकी भस्म, पारा यहसब शुद्ध कियेहों सो लेकर तुलसीके रसमें चारपहर पर्यन्त घोटे फिर उसको शराव संपुटमें रखकर कुक्कुटपुट में फूंकेतो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मृत्युञ्जयरस बन जायगी, यह मृत्युञ्जय रस नवीन ज्वरस में अत्यन्त हितकारी है रोगका बलाबल देखकर छै रत्ती प्रमाण मिश्री के साथ देवे ऊपर से इच्छा पूर्वक दही का भोजन करावे।

विनोद विद्याधर रस शूलादि रोगोंपर।

शुद्धपारा शुद्धगंधक लोहासार सोंठ मिर्च पीपरि हर्र बहेड़ा आंवला कुटकी निसोत कटेली सुवर्णभस्म ताम्रभस्म सुहागा सिंगियाविष, इन सबको समान भाग लेवे और सबको बराबर पक्की इमली के फल लेवे इन सबको कूट पीस सजीखार के जल में घोटे फिर दन्ती के काढे में घोटे अनन्तर तीन २ रत्तीकी गोली बनावे यह विनोद विद्याधररसहै यह नवीन ज्वर में परम हितकारी है इस रस के सेवन से शूल गोला पाण्डुरोग, संग्रहणी बवासीर कृमिरोग अजीर्ण रोग आमवात प्लीहा यह सब रोग दूर हो जाते हैं।

महाज्वरांकुश रस ज्वरोंपर।

शुद्धपारा शुद्धगंधक शुद्धविष, एक २ टङ्क लेवे धतूरे के बीज ३ टङ्क चूक १२ टङ्क इन सबको कूट पीस बहुत बारीक चूर्ण करके रख छोड़े अनंतर इसमें से बलाबल देखकर जंभीरीके रस में घी जीरेके साथ अथवा अदरक के रसमें इसको दो रत्ती प्रमाण देवे तो त्रिदोषज इकतरा द्व्याहिक तिजारी चौथैया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और विषमज्वर तथा नवीन पुरानेसब प्रकारकेज्वरों का बिनाश करता है यह महाज्वरांकुश रस है।

विद्याधर रस संग्रहणी आदि रोगोंपर।

शुद्धपारा,शुद्धगंधक,तांबेकी भस्म,सोंठ,मिर्च,पीपल कुटकी, सुहागा, हर्र, बहेड़ा आँवला निसोत दन्ती धतूरे के बीज आक इन सबको बरावर लेवे और सबकी बराबर जमाल गोटा लेवे सबको कूटपीस कर थूहरके दूध में घोटे फिर दन्तीके काढेमें घोटे तदनन्तर तीन रत्तीकी गोली बनावे इनके सेवनसे संग्रहणी गोला पाण्डुरोग वायुशूल नवीनज्वर अजीर्ण,बादी आमवात कृमिरोग विबंध तापतिल्ली इन सब रोगों को विद्याधर रस दूर करता है।

त्रिपुरभैरवरस-मन्दाग्नि-रोगपर।

सिंगिया विष सुहागा गंधक हींगलू जमालगोटा यह क्रम से बढती अर्थात् एक २ अधिक भागलेवे पीछे दन्तीके रसमें एक प्रहर पर्यंत घोटे तो त्रिपुर भैरव रस बन जाता है इसको तीन प्रमाण सोंठ मिर्च,पीपलके चूर्णमें अथवा मिश्रीके संग अथवा अदरखके रसमें देवे तो मंदाग्नि मलीनता क्षयरोग नवीन ज्वर शूल अफरा बवासीर कृमिरोग आदि रोगों को नाश करता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वच्छन्दभैरव रस सन्निपात पर।

तांबेकी भस्म सिंगीयाविष, सुवर्णकी भस्म इनमें अदरख आदि रसोंकी भावना देवे इसमें से आधी रत्ती खानेको देवे, तो सन्निपात और नवीन ज्वर दूर होजाता है इसको अदरख, मिश्री, सेंधालवण, इनमें से किसी के साथ देवे और ईखकारस, दाखका रस अथवा मिश्री का शर्बत दही यह पथ्य देवे यह स्वच्छन्द भैरव रस है।

प्राणेश्वर रस सन्निपात आदि पर।

शुद्धपारा शुद्धगंधक, अभ्रक भस्म, सिंगया विष इनको मूसली के रस में तीन दिन तक खरल करे फिर सुखाय कांचकी आतशी शीशीमें भरे मुखपर मुद्राकरसात कपरौटी करे, फिर सुखाकर कुम्भपुटकी आंच देवे, जब स्वांग शीतल होजाय, तब शीशी फोड़कर रस निकाल लेवे, फिर खरलमें डाल एक दिन इन औषधियों में खरल करे चीता, हींग, सज्जी, जीरा, गूगल, पांचों लवण, जवाखार, अजवायन, मिर्च, पीपर, पारेके समान इन सबको पृथक २ लेवे, इनके काढेकी सात २ भावना देवे, तो यह प्राणेश्वर रस बन जाता है, इसमें से दो रत्ती नागरवेल पानके संग नवीन ज्वर में देवे, ऊपर से गरम जल देवे सब सन्निपातों पर भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह रस देना, दाह पूर्वक शीत ज्वर में गोला में शूलमें देवे इस पर जो रोगीकी इच्छाहो सो भोजन देवे, शरीर में चन्दन लगावे ताप की वृद्धि में बालकों से बोलना और गाना हितकारी है।

शीतभंजीर रस शीतज्वरपर।

पारा खपरिया हरताल नीलाथोथा गंधक सुहागा यह सब शुद्ध कर लेवे और सबको समान भाग लेकर सबको कूटपीस करेलाके रसमें मर्दनकरे फिर तांबेके पात्रमें रखकर लेपकरे चौथाई अंगुलके अनुमान लेप करना फिर उसको वालुकायंत्रमेंरखचूल्हेपर चढाय लकड़ीकी आंचसे पचावे और बालूके ऊपर धान रख देवे जब उस बालू में धान खिल जावे तब जानना कि रस बन गया जब स्वांग शीतल होजावे तब तांबेके पात्र में से रसको निकाल लेवे इस शीतभंजीर नामक रसको कालीमिर्च के साथ पांच रत्ती प्रमाण खावे तो एकतरा तिजारी दो दिन का और चौथैया ज्वर दूर होजाता है।

रवि सुन्दर रस बात ज्वर पर।

चीता पारा सेंधालवण कालीमिर्च शंखकी भस्म सिंगियाविष इन सबको दन्तीके रस की तीन २ भावना देवे तो यह रविसुन्दर रस बन जाता है, बात ज्वर मंदाग्नि मस्तक भारीहोना इन विकारोंपर एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रत्ती प्रमाण मात्रा कुलथीका यूष वा पीपरि अथवा चावलोंके साथ देवे, इससे जठराग्नि प्रबल होतीहै, रूप बढ़ताहै, और बातज्वर व बातविकार दूर होजाताहै।

मृतसंजीवनरस-विषम ज्वर पर।

पेठेमें चूनेमें तिलके खारमें शुद्ध किया हुआ हरताल लेना उसको करेलेके रसमें घोटे फिर इसमेंहिंगुलसे पारा निकाल उसमें डालकर घोटे फिर उसका गोला बनाकर बालुकायंत्रके बीचमें रख बड़े खपरेमें रखदेवे और शीशीका मुख गुड़ चूना खरिया और मेथी को मिलाकर बन्द कर देवे फिर उस बालुका यंत्रके मुखपर धान बिखेर देवे उपरान्त उस यंत्रको उतार लेवे और ठंडाकर उसमेंसे औषधिको युक्तिसे निकाललेवे इसमेंसेतीन रत्ती प्रमाण देवे ऊपरसे घी मिश्री दूध, शहत मिलाकर पीवे सो पित्तज्वर मात्र दूर होजावे इसके खानेवालेके मस्तकपर शीतल जल की धार देवे यह मृतसंजीवन रससब रसों का राजा है और अमृत तुल्य फल दायक है।

कफकुठार रस—कफज्वरपर।

शुद्ध गन्धक शुद्धपारा सोंठ मिर्च पीपरि तांबे की भस्म लोहासार इन सबको कटेलीके फलोंकेरस में दो प्रहर खरल करे फिर कुटकीके काढेमें और धतूरे के रसमें घोटे फिर इसको दो रत्ती प्रमाण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नागरपान के साथ देवे तो कफज्वर दूर होजावे।

ज्वालामुखीरस–सबज्वरों पर ।

हिरणके सींगका टुकड़ा ज्वालामुखीके रसमें घोटे फिर उसको एक हँडिया में रख उसका मुख बंदकर चूल्हे पर चढ़ा देवे और नीचे आग जलावे, जब भस्म होजाय तब उतार उस हँडियामेंसे भस्मनिकाल कर पीस डाले भस्मका आठवां हिस्सा त्रिकुटा(सोंठ मिर्च पीपरि) डालें, इसकी मात्रा एक टंक प्रमाणकी है,इसको पानमें रखकर खावेतो सब ज्वरोंका नाश होजावे, यह ज्वालामुखी रस है ।

सूर्यशेखर रस बात कफ ज्वर पर ।

शुद्ध सोहागा शुद्धगन्धक शुद्धपारा यह समान भाग लेकर पारेसे दूना जमालगोटा लेना तथा सेंधालवण मिर्च इमली तज जवाखार और मिश्री यह सब पारेके समान डाले इनको जँभीरी के रसमें घोटे तो सूर्यशेखर रस बनजाता है इसको दो रत्ती प्रमाण गरम जलके साथ लेवे इससे बातकफ ज्वर और शीतज्वर दूर होजाता है रसेन्द्र चिन्तामणि और रसप्रदीप में लिखा है अन्य ग्रन्थों में इसको शीतारि रस कहते हैं ।

चन्द्रशेखर रस–पित्तकफ ज्वर पर ।

शुद्ध गन्धक शुद्धपारा मिर्च सुहागा यह चारों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वस्तु बराबर २ लेवे सबके बराबर मिश्री मिलाय सबको खरल में डाल रोहू मछली के पित्ते में तीन दिन घोटे तो यह चन्द्रशेखर नाम रस बन जाता है इसको दो रत्ती प्रमाण अदरख के रस में देवे ऊपरसे शीतलजल पिलावें, छाछ मिलाकर भातका भोजन करे, बेंगनका भुर्ता खावे तो तीन दिनमें पित्ताकफ ज्वर दूर होजाता है।

मृतोत्थापन रस।

शुद्धपारा १ भाग शुद्धगन्धक २ भाग मनसिल विष हींगलू, कांतलोह की भस्म, अभ्रक की भस्म तांबेकी भस्म सार हरताल यह सब समान भागले कूटपीस अमलवेत जभीरी चूका इनके रसकी तथा निर्गुंडी हथशुंडी इनके रसमें दोदो दिन खरल करे फिर भूधरयंत्रमें रखकर एकदिन पचावे फिर उसमें से उड़दके बराबरमात्रा लेकर हींग सोंठ मिर्चपीपरिऔर अदरखके रसमें देवे और कपूरकाअनुपान करावेयह मृतोत्थापन रसमरे हुये मनुष्य कोभी जीवन देता है इस रसको खिलाकर तत्काल दूधका पथ्य देवे और इसकेऊपर दो रत्ती प्रमाण आनन्दभैरव रस अथवा स्वच्छन्दभैरव रस दशमूल के काढे के साथ देवे।

आनन्दभैरव रस अतीसार पर।

हिंगुलविष मिर्च सुहागा पीपरि इन सबको समान

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाग लेकर घोटे तो आनन्द भैरव रस बन जाता है इसमेंसे एक रत्ती प्रमाण अथवा आधी रत्तीभर बला बलके अनुसार शहतकेसाथ देवे ऊपरसे कूड़ाकी छाल काकाढा एकपल पीवेतो त्रिदोषजन्य अतीसारमिटे।

वीरभद्र रस—सन्निपात पर।

शुद्धपारा, अभ्रककी भस्म, गन्धक यह एक एक पल लेवे, इनको अदरकके रसमेंएक दिन खरलकरे तो यह वीर भद्ररस बन जाताहै, इसमेंसे एक उड़द भरके समान मात्रा भक्षण करेतो सन्निपात दूर होवे उसके ऊपर चित्रक अदरक, सेंधालवण जलकेसाथ पीवे और दूध भातका पथ्य दो वार देवे।

चिंतामणिरस—सब ज्वरों पर।

पारा १ तोला गन्धक १ तोला, अभ्रक १ तोला विष६ माशे,जमालगोटा ४ माशे, इनसबको एकत्र करनीबूके रसमें घोटेफिर गोला बनाकर उसके चारों ओर पानों को लपेटे उपरान्त कपड़ मिट्टीकर कुक्कुटयंत्रमें फूक देवे, स्वाँग शीतल होनेपर खरलमें डालकर पीसे इसमें आधा तोला जमालगोटा और आधातोला विषमिलाकरअदरकके रससे एकरतीकी गोलीकरेएकगोलीत्रिकुटासेंधालवणऔर चित्रककी छालके चूर्णके साथ लेवे तो सब ज्वर दूर होवे और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शूल, संग्रहणी उदर रोग में सेवन करे, दही भात का भोजन करावे, शीतल जल से स्नान करावे, मृत तुल्य मनुष्य को रस देवे।

चन्द्रोदय रस—उन्माद आदि रोग पर।

पारा, अभ्रक, बंग गन्धक, इनको समान भाग लेवे प्रथम पारा और बंगको मिलाकर खरल करे फिर उनमें गंधक व अभ्रक मिलावे, अनन्तर जंभीरी के रस से खरल करे इस प्रकार सात पुट देवे, एवं घी ग्वार और चित्रक की सात भावना देवे, तो चन्द्रोदय रस बन जाता है, इसमें से गुड़ और जीरे के साथ जीर्ण ज्वर में देवे। खांसी और श्वास में घी ग्वार और त्रिफला के साथ देवे उन्माद और धनुर्वात में गिलोय (गुर्च) के योग के साथ देवे।

बसन्त मालती रस —जीर्णज्वर आदि पर।

वैक्रांत (कासुले)की भस्म, अभ्रककी भस्म, तांबे की भस्म, सोनामक्खी की भस्म, शुद्ध गंधक मूंग की भस्म, चन्द्रोदय लोहेकी भस्म, सुहागा शङ्ख की भस्म यह सब बराबर भाग लेवे सबको खरलमें घोटे शताबरके रसकी सात भावना देवे हल्दी के रस की सात भावना देवे तथा कपूर और कस्तूरी को जलमें घोलकर भावना देवे अनन्तर इस रसकी टिकिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बनावे, इसमें से तीन रत्ती प्रमाण शहत और पीपलके साथ जीर्णज्वर और धातु ज्वरमें देवे और गुर्च का सत व मिश्रीके साथ प्रमेह रोगमें देवे, तथा अदरख व बिजौरे के साथ मूत्रकृच्छ्र और पथरी रोग में देवे, यह बसन्त मालती रस भैषज्य सारा मृत संहिता में लिखा है।

आनन्द रस उदर रोग आदि पर।

जायफल, सेंधालवण, हिंगुल, कौड़ी की भस्म सोंठ. सिंगिया विष, धतूरे के बीज, पीपरि, यह सब समान भाग लेवे, सबको पीस एक २ रत्ती की गोली बनावे इस गोलीको खांडके साथ खाने से उदर रोग बात रोग, कफ, शूल, आमातीसार, संग्रहणी, योनि रोग इन सब को यह आनन्द रस दूर करता है।

गंगाधर रस अतिसार आदि पर।

नागर मोथा मोचरस लोध कुड़ेकी छाल बेलगिरी धायके फूल अफीम गंधक और पारा प्रथम पारे की कजली करे, फिर पूर्वोक्त औषधियों का चूर्ण मिलाय छोतरानके रससे एक रत्तीकी गोली बनावे इसमें से एक गोली गुड़ और छाछके साथ देवे तो यह गंगाधर नामक रस सब अतिसार व संग्रहणी को दूर करे इस पर दही भात खाना पथ्य है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कनकसुन्दर रस–बातातिसार पर

शुद्धपारा, शुद्धगंधक, कालीमिर्च, सुहागा इनके बराबर धतूरेके बीज लेवे, सबको भांगरेके रस में दो प्रहर घोटे फिर पारेके बराबर शुद्ध सिंगिया विष मिलावे तो यह कनकसुन्दर रस २ रत्ती प्रमाण खाने से बातातिसारको शीघ्र दूरकरे, इसके ऊपर भात तथा बकरी वा गायका दही भोजन करना पथ्य है।

पूर्णचन्द्र रस–संग्रहणी आदि रोगपर।

पारा, गन्धक इनको असगन्ध, गिलोय, मुलहठी इनके काढे में एक दिन घोटे, फिर छोटे शंख, मोती मंडूर उनकी भस्म पारेके समान डालकर भृङ्गराजके रसमें एकदिन घोटे गोला बनावे, उसको भूधरयंत्र में पचावे, जब शीतल होजावे, तब उसमें से निकाल चूर्ण कर पानके रससे एक प्रहर खरल कर गोलियां बनालेवे इस पूर्ण चन्द्र रसको शहत व घीके साथ देनेसे पुष्टि करे, वीर्य बढावे, अग्निको प्रदीप्त करे, यह रस प्रायः पित्त रोग में पित्त की संग्रहणी में सेमरके रसके साथ देवे, अथवा घी और शतावरी के रसके साथ देवे।

सूतराज–क्षयी आदि रोग पर।

शुद्धपारा १भाग, गन्धक २भाग अभ्रक ८भाग लेकर पीसे इसमें से आठ रत्ती प्रमाण सब रोगमें दे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इससे संग्रहणी क्षयी गोला बवासीर-प्रमेह और धातु गतज्वर इन रोगों में यह सूतराज हितकारक है।

रामवाण रस–मन्दाग्नि आदि पर।

शुद्धपारा विष गन्धक लौंग यह एक एक तोला लेवे मिर्च २ तोला जायफल आधा तोला इन सबको कच्ची इमली के रस में खरल कर एक २ माशे की गोली बनावे और दोष के अनुसार अनुपान से देवे इस रसके सेवन से तत्काल अग्नि प्रदीप्त होवे संग्रहणी रूप कुम्भकरण आमवात रूप खरदूषण तथा मन्दाग्निरूप रावण का नाश करने वाला यह रामवाण रस रसायन है।

क्षुधासागर रस–क्षुधापर।

त्रिकुटा त्रिफला सेंधालवण जवाखार सज्जीखार सुहागा शुद्धपारा शुद्धगन्धक प्रत्येक एक २ तोला लेवे शुद्ध विष २ तोला सबको एकत्र पीस जलसे घोटकर एक २ रत्ती की गोली बनावे इसको पांच लौंग के चूर्ण और शहत में मिलाकर खावे तो क्षुधा (भूख) बहुत बढ़े।

महोदधि–रस–शूल आदि पर।

चीतेकी छाल शुद्ध जमालगोटा सौंठ लौंग पारा गन्धक सुहागा कलीमिर्च विधारा और विष इन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सबको बराबर ले, दन्ती के रससे दो घडी तक खरल करे, इस प्रकार १५ पुटदे, ३ पुट नीबू के रस की देवे ३ पुट चित्रक के रसमें देवे, ३ पुट अदरक के रसकी देवे ३ भावनावरयारे के रसकी देकर मटरके समान गोली करे यह महोदधि रस शूल अजीर्ण, खांसी ज्वर अरुचि पांडु, उदर आमवात, वस्ती फूलना, हलीमक और मंदाग्नि इन रोगों को दूर करता है, भूखको बढ़ाता है।

कीटारिरस—कृमिरोगपर।

पारा,इन्द्रजौ, अजमोद, मनशिल, ढकके बीज, गंधक इन सबको बराबर लेकर देवलालीके रससे एकदिन मर्दनकर एक रत्ती प्रमाण गोली बनावे ऊपर से मिश्री मिलाय बनमूंग का रस पिलावे तो कृमि समूह का विनाश होजावे।

लाक्षादिवटी—कृमिनाशकारिणी।

लाख, भिलावा, राल, निर्गुंडी, सफेद सरिवन कोहके फूल और फल, वायविडंग अजमोद और गूगल इन सबको एकत्र कर मर्दन करे इसको घर में रखने से कीट शान्त होते है साँप मूंसे मच्छर आदि तथा बनके हाथी इसकी गन्ध मात्र से ही भागते हैं शेष छोटे छोटे कीड़ों का तो कहना ही क्या है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कामेश्वर रस—पांडु रोग पर।

पारा ४ तोला गन्धक ४ तोला हर्र ४ तोला चीतेकीछाल ४ तोला नागर मोथा, पत्रज इलायची यह तीनों छःछः तोले सोंठ मिर्च पीपरि पीपलामूल सिंगिया, यह पाँचों चार २ तोले, नागकेशर अरंड-की जड़ यह दोनों एक २तोला, लेकर सबको एक-त्रकर कूट पीस सबके बराबर गुड़ मिलाय, धतूरेके रससे घोट घीकी भावना दे और बेरकी गुठली के बराबर गोली बनाबे, यह एक गोली रात्रि समय खायतो यह कामेश्वर रसपाण्डुरोगको दूरकरताहै।

मृगांकरस—राजयक्ष्मा आदिपर।

पारेकी बराबर सुवर्णके बर्क उससे दूने मोती और पारे की बराबर गंधक, सुहागा इनको कांजी में पीसकर गोली बनावे फिर एक पात्र में नमक भर कर गोले को बीचमें रखदे और ऊपरसे नमक भर पात्र का मुख बंदकर चूल्हेपर चढ़ाय चार पहरकी आँच देवे तो यह मृगांकरस राजयक्ष्माको दूर करता है ४ रत्ती प्रमाण मिर्च चूर्ण के साथ बलाबल के अनुसार यह रसखाय अथवा पीपरि का चूर्ण शहतके सङ्गखाय, पूरा कचौरी मठरी आदि पदार्थ ऊपरसे खाय परंतु दाहकर्तापदार्थ बैंगन बेल तेल करेले स्त्रीसङ्ग क्रोध इनको त्यागे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रसराज–उरक्षतपर ।

मोती, मूङ्गा, चन्द्रोदय, सुवर्ण सफेद अभ्रक, वङ्गइन सबको भस्म समान भाग लेकर कुटकी और शतावरीके रसकी सात २ भावना दे फिर इस रसकी शहत घी और कालीमिर्चों के चूर्णके साथ १ माशे प्रमाण सेवन करे, तो उरक्षत को तत्काल दूर करे ।

अमृतार्णवरस–कासपर ।

पारा गन्धक लोह भस्म, सुहागा राई बायविडंग त्रिफला देवदारु चीता गिलोय पद्माख शहत और सिंगियाविष इनसबको समान भाग लेकर खरल करे पश्चात रत्ती भरकी गोली बनावे इनमें से एक गोली खाय तो बादी और खाँसी दूर होजावे यह अमृतार्णव रस है ।

सर्वेश्वररस–कासश्वासरस ।

पारे और गंधककी कजलीकर इसमें समान भाग अभ्रक और सुवर्णको भस्म मिलावे और भलीभाँति खरल करे फिर त्रिकुटा लोग इलायची सुहागा यह पृथक् सुवर्ण भस्मके बराबरलेकर २१ भावना कटेरी के रसकी ७ भावना सहजने के रसकी ७ भावना और अदरकके रसकी७भावना दे तो यह सर्वेश्वर रस बहेडे के चूर्णके साथ सेवन करने से खाँसी श्वास और क्षयरोग को दूर करता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुमुदेश्वररस–वमन व प्यासपर।

तांबेकी भस्म २तोला,बंगभस्म १तोला,दोनोंको मुलहटीके काढेकी भावना देकर चार चार माशेकी गोलियां बनावे, फिर चन्दन सरवन नागरमोथा, छोटीइलायची नागकेशर और सबकेबराबर धानकी खीलले१२गुणे जलमें औटावेजबआधारहे तबइसमें मिश्री और शहत मिलाकर ऊपर कही हुई गोली को खाने के उपरान्त पीवे तो वमन और प्यासको यह कुमुदेश्वर रस दूर करता है।

सुधानिधि रस–मदमूर्च्छापर।

पीपरि और पाराके साथ शुद्धपारा मिलाकर खाय तो मूर्छा दूर होय ऊपर से शीतल जलका तरो पानी की धार देवे शीतल जलसे स्नान आदि करने से यह सुधानिधि रस मद और मूर्छा को दूर करता है।

उन्माद गजकेशरी रस–उन्मादपर।

पारा गंधक मनशिल इन तीनों को समान भागले बराबर धतूरेके बीज मिलाय सबको कूटपीस बचके रसकी सात भावना और ब्राह्मीके रसकी ७ भावना देनेसे यह उन्माद गजकेशरी रस १ माशे प्रमाण मक्खनके संग खायतो उन्माद अपस्मार भूतोन्माद और ज्वर को नाश करता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बातारिरस–बातविकारपर।

पारा १ तोला, गन्धक २ तोला, त्रिफला ३ तोला, चित्रक ४ तोला. पहले ५ तोले गूगलको अंडी के तेल में खरल करे फिर सब वस्तुओं को मिलाय उसी अंडी के तेल से खरल कर एक एक तोलेकी गोलियां बनावे प्रातः समय बलके अनुसार सेवन करे ऊपरसे सोंठ और अरंड की जड़का काढा पीवे रोगी की पीठमें अंडके तेलकी मालिश करे जब जब दस्त होजावे तब गरम चिकना पदार्थ खिलावे इसबातारिरस का सेवन करने वाला मनुष्य ऐसे स्थानमें रहे जहां पवन न हो अर्थात् पवन से बचा रहे तो बातबिकार नष्ट होगा।

कुब्जाविनोदरस–बात पर।

पारा गन्धक समभाग लेवे, और हर्र हरताल विष कुटकी त्रिकुटा बीजाबोल जमालगोटा इन सबको बराबर २ ले इनको भांगरे के रस थूहर और आकके दूधमें खरलकर गोलियां बनावे यह कुब्ज विनोद रस बलानुसार सेवन करनेसे कमरकी वादी व हृदय तथा पसलियोंकी शूलको नाश करता है।

कंपवातारिरस।

चन्द्रोदय ताम्रभस्म दोनों को समान ले कुटकी के रसकी २१ भावना दे चने के प्रमाण गोली बनावे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस १ गोली को खाने से सर्वाङ्ग बात और कंप बात को यह कंपबातारिरस दूर करता है ।

कफकेतुरस–कफविकार पर ।

सुहागा पीपर शुद्धवच्छनाग विष सबको बराबर ले अदरखके रसमें ३ दिन खरलकर एक एक रत्ती की गोली बनाबे इसमें से एक गोली अदरखके रस के साथ खाय तो पीनस श्वास खांसी गलरोग दन्त रोग कर्णरोग नेत्ररोग गलग्रह और सन्निपात के रोगों को यह कफकेतुरस दूर करता है ।

महातालकेश्वर रस–कुष्ठ आदि पर ।

शुद्ध हरतालकी भस्ममें बराबरकीगंधक मिलाबे फिर दोनोंके बराबर तांबेकी भस्म मिलाकर खरल करे और बालुका यंत्रमें पचाबे तो यह तालकेश्वर रस बन जाताहै बलानुसार सेवन करने से यह रस सब प्रकारके कुष्ठ वातरक्त आठ प्रकार का शूल और चित्रककुष्ट को दूर करता है ।

महा नाराचरस ।

शुद्धपारा १ तोला सुहागा १ तोला कालीमिर्च १ तोला लेकर गंधक पीपर सोंठ दो दो तोला सबकी बराबर जमालगोटा मिलाय खरल करे फिर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो रत्ती प्रमाण उसमें से लेकर सेवन करे तो उत्तम नाराचरस दस्तावर होता है।

विद्याधररस–कफपर।

पारा, गन्धक हरताल सोनामक्खी सुवर्ण मनशिल, इन सबको बराबर ले पीपल काढ़े और थूहर के दूध से एक एक दिन खरल करे, इसमें से चार माशे प्रमाण गौमूत्र के साथ सेवन करे तो कफ का गोला दूर हो इस विद्याधर रस पर गौ का दूध पीना चाहिये।

पंचाननरस–हृदयरोग पर।

शुद्धपारा, और गन्धक को बराबर ले, आंवले का रस मुनक्का मुलहठी और खजूर इनके रससे एक एक दिन खरल करे, फिर आँवले के चूर्ण और शहत के साथ अथवा मिश्री के साथ सेवन करे तो हृदयरोग शांत होवे, यह पंचानन रस है।

मेहमर्दन रस–प्रमेहपर।

शुद्ध शीशेकी भस्म, सुवर्ण भस्म दोनोंको गौमूत्र और मनशिलके जल से ७ बार खरल कर सुखाले फिर चूर्ण करके राँग और नागेश्वर की भस्म को मिलावे तो दो रत्ती प्रमाण नीम और आमलेके रस के साथ देवे तो सब प्रकारके प्रमेहका नाश होवे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इच्छाभेदी रस–जुलाब ।

शुद्धपारा, गन्धक सुहागा, सोंठ कालीमिर्च, इन सबको समान भागले, एक औषधि से दूना जमालगोटा डाले सबको एकत्र पीस दो रत्ती प्रमाण मिश्री के साथ देवे, ऊपर से जितने चुल्लू जल पीवे उतने ही दस्त आवें यह इच्छा भेदी रस है ।

उदरारि रस–जलोदरपर ।

पारा शीशेकी भस्म नीलाथोथा जमालगोटा पीपल अमलतासका गूदा सबको बराबर ले थूहर के दूधसे खरलकर एकएक माशे की गोली बनावे एक गोली खाय ऊपरसे इमली का पत्ता और दही भातका भोजन करे इसके तीव्र जुलाबसे जलोदर दूर होजाता है यह उदरारि रस है ।

महामृत्युञ्जयरस ।

पारा, गन्धक लोहभस्म, अभ्रक, मनशिल, नीलाथोथा ताम्रभस्म, सेंधानमक कौड़ीकी भस्म बावची बिडनमक शंखभस्म, हींग चित्रक कुटकी सज्जीखार जवाखार जायफल रसोत अरनी और सुहागा यह सब समान ले पीस छान अदरख और गिलोयके रसकी भावना एकदिन देकर एक एक रत्ती की गोली बना एक गोली शहतके साथ भक्षण करे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो यकृत गोला प्लीह मन्दाग्नि अरुचि आदि अनेक रोगों को नाश करे यह महामृतुञ्जय रस सदा शिवजी ने वर्णन किया है।

ब्रह्मरस—कुष्ठपर।

चन्द्रोदय १ तोला गंधक चीता बाकुची ढाक-के बीज यह बारह तोले लेवे गुड़ ३० तोले स-बको कूट पीस शहत के साथ गोलियां बनावे यह ब्रह्म रस ब्रह्महत्या से उत्पन्न कुष्ठ को नाश करता है इस में से ८ माशे भक्षण करे ऊपर से कड़वी घीया की जडड़ा रस पीवे तो शठ्यता मण्डल कुष्ठ का नाश हो।

चन्द्राननरस—कुष्ठपर।

पारा अभ्रक चीता लोहाभस्म इनको बराबर लेवे इनको बराबर गंधक लेकर सबको कठूमरके दूधमें खरलकर एक २ माशेकीगोलियां बनावे फिर बमन बिरेचन आदिसे देहको शुद्ध कर सेवन करे तो यह चन्द्राननरस सब प्रकारके कुष्ठरोगों को दूर करताहै।

कुष्ठकालानलरस कुष्ठपर।

पारा गंधक सुहागा तांबे की भस्म लोह भस्म और पीपल ये सब समान भाग लेकर नीम के पंचांग की त्रिफलाके काढे की और अमलतासके का ढोंकी भावना देकर तय्यार करे इसकी छः रत्ती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रमाण मात्रा कुष्ठोमें देवे तो सब कुष्ठोंका नाश होवे।

भैरव रस कर्णरोगपर।

पारा, गन्धक, विष सुहागा, कौडीकी भस्म, काली-मिर्च, इन सबको समान भागले खरलकर अदरखके रसकी भावनादे गोलियां बनालेवे यह मन्दाग्नि, आमवात, कफरोग, संग्रहणी, सन्निपात, सूजन, और कानके रोगको दूर करताहै, यह भैरवरस है।

चन्द्रकान्तरस मस्तकरोगपर।

चन्द्रोदय, अभ्रक, सार, तांबेश्वर, और शुद्धगंधक यह सब समान भागलेकर सबको थूहरके दूधमें एक दिन खरल करे, एकमाशाभर प्रतिदिन खाय परन्तु शहतमें मिलाय लोहेके पात्रमें लोहेके मूशलेसे घिस-कर सेवन करे तो सात दिनमें यह चन्द्रकान्तरस सूर्यावर्त आदिक मस्तकरोगों को दूर करता है।

प्रदरान्तकरस–प्रदररोगपर।

शुद्धपारा और गन्धक दोनों बराबरले गंधकके बराबर रूपेकी भस्म, खपरिया कौड़ीकी भस्म यह दोनों चार २ माशेले और लोह भस्म ३ तोले मिलाय सबको घीग्वारके रसमें एकदिन खरलकर एक २ माशेकी गोली बनालेवे, १ गोली प्रतिदिन भक्षण करने से प्रदर रोग शान्त होजाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूतिकाविनोदरस–सूतिकारोगपर।

शुद्धपारा,गंधक नीलाथोथा तीनोंके चूर्णकोतीन दिन जंभीरीके रसमें घोटकर त्रिकुटाके काढेकी तीन भावना देवे फिर चार चार रत्ती की गोलियां बना वे इसको गर्भिणीके शूल, अफरा, ज्वर, अजीर्ण आदि रोगोंमें दे यह सूतिकाविनोद रस है।

कामिनीमद भञ्जन रस।

शुद्ध पारा ४ तोला गन्धक ४ तोला, दोनों को लाल कमल के रस में तीन दिन खरल करे फिर बालुका यंत्रमें एक पहर तक पचावे अनन्तर उसमें से निकालकर घुघुंची के रसमें एक दिन खरल करे इसकी बलके अनुसार मात्रा को मिश्री के साथ सेवन करे और इच्छा पूर्वक भोजन करे तो अनेक स्त्रियों से रमण कराने वाला यह कामिनी मदभंजन रस है।

विशूचिका विध्वंस रस–हैजापर।

सुहागा, सोनामक्खी, सोंठ, पारा, गन्धक, विष सर्पविष, यह सब एक एक तोला ले, और हिंगुल ७ तोला लेवे सबको खरल में डालकर जंभीरी के रसमें खरल करे, सरसों के बराबर गोली बनावे इसके सेवन से विशूचिका (हैजा) तत्काल दूर होजाता है ऊपर से दही भात का भोजन हित है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर्पूरासव-हैजापर।

बनी हुई उत्तम मदिरा ४०० तोले, भीमसेनी कपूर ३२ तोले, छोटी इलायची, नागरमोथा, सोंठ, अजवायन, कालीमिर्च यह चार चार तोले लेकर सबको मिट्टी के चिकने पात्रमें भर मुख बन्द करके रख छोड़े जब एक मास बीत जावे तब निकालले यह हैजा की बहुत अच्छी औषधि है इसकी मात्रा १ माशे की है अन्य भी अनेक रोग इसके सेवन से दूर होते हैं इसको थोड़ी २ देर पीछे देना योग्य है।

सूर्यावर्त रस-श्वासपर।

१ भाग शुद्ध पारा, आधा भाग शुद्ध गन्धक दोनों को मिलाय घी ग्वारके रस में एक प्रहर तक खरल कर कल्क करो फिर दोनों के समान तांबे के पत्र ले उन पर इस कल्कका लेप कराय उन पत्रों को मिट्टी के पात्रमें रख उसके मुखपर संधियों को बन्द करदे, फिर उसको धूपमें सुखा चूल्हे पर रख दिन भर आंच दे इसको स्थालिका यंत्र कहते हैं, फिर ठंडा होने पर उतार कर पत्र निकाल बारीक पीस लेवे, दो रत्ती प्रमाण यह सूर्यावर्त रस देवे तो श्वासरोग जाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अजीर्णकंटकरस-अजीर्ण पर।

शुद्ध वत्सनागविष शुद्ध पारा शुद्ध गंधक यह तीनों समान भाग लेकर इनके बराबर कालीमिर्च लेवे सबको एकत्रकर कटेरीके फलोंके रससे पृथक् इक्कीस भावना देवे, फिर तीन तीन रत्तीकी गोली बनावे, इसको अजीर्णकंटक रस कहते हैं इसकी १ गोली सेवन करने से सब प्रकार के अजीर्ण तथा विशूचिका (हैजा) रोग दूर होजाता है।

त्रिनेत्ररस—पसलीपर।

हिरणका सींग, सुहागा, मराहुआ सोना, ताँबा और पारा, इनको एक दिनतक अदरख के रसमें घोटे फिर गज पुट में फूँकदेवे, १ माशे भर मात्रा शहत के सङ्ग चाटे, ऊपर से सेंधालवण, जीरा, हींग, घी और शहत सेवन करे इस प्रकार प्रति दिन सेवन करने से १ मासमें पसली पीड़ा दूर होगी यह त्रिनेत्र रस है।

दुर्लभ रस-सीतला रोगपर।

पारेकी भस्म अथवा शुद्धपारा और सफेद तथा पीली गँटेरन पीपरी, आंवले रुद्राक्ष तथा घी और शहत सबको मिलाय सेवन करें तो सीतला रोग शान्त होवे, यह दुर्लभ रस है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नेत्राशनिरस—नेत्ररोगपर।

अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, लोहभस्म, सोनामक्खी भस्म, रसोत, पातालयन्त्रका शोधा आमलासार गन्धक यह चार चार तोले, लेवे और सबको एक में मिलाय चूर्ण करे, फिर त्रिफला और भांगरा के रस की भावना देकर आगे लिखी औषधियों को मिलावे पीपलामूल मुलहठी, छोटी इलायची के बीज सांठीकी जड़ दारुहलदी, पाड, भांगरा, कचूर, बच नीलकमल, सफेद चन्दन सबका चूर्णकर मिलाय इसमें से १ माशे प्रमाण लेकर शहत और घी के साथ लोहके पात्र में लोहे के मूशलेसे रगड़कर खाय ऊपर से गरम जल पीवे तो सब प्रकार के नेत्र रोग दूर होजावे यह नेत्राशनिरस है।

यह रस संक्षेप से ऊपर लिखे गये इन रसों के बनाने की क्रिया गुरुसे सीखे कारण यह कि यदि रस कच्चा रह जाता है तो अनेक रोगों को उत्पन्न करता है इसी से बार बार हमने यह उपदेश लिखा है कि गुरुके द्वारा रसका बनाना सीखे। धातु उपधातु आदि के शोधन मारणका प्रकार इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में हम लिख चुके हैं उसके अनुसार शोधन की हुई धातु आदि को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काम में लावे जिन जिन द्रव्योंका शोधन मारण प्रथम भाग में लिख चुके हैं उन उन द्रव्यों को बिना शुद्ध किये ग्रहण नहीं करना चाहिये।

अब जो यंत्र हमने प्रथम भागमें नहीं लिखे हैं वह यंत्र यहाँ नीचे लिखते हैं।

कवची यंत्र। नम्बर १

काँचकी शीशी न बहुत बड़ी हो न छोटी हो दृढ़ हो उसपर सुल्तानी मिट्टीसे कपड़ मिट्टी करे अनन्तर धूपमें सुखाय उसमें औषधि भरे और मुख बन्दकर बालुका यंत्रादिमें रख विधिसे पाक करे इस प्रकार कपड़ा चढी शीशीको कवची यंत्र कहते हैं।

गर्भ यन्त्र। नम्बर २

एक बड़ा घड़ा लेकर चुल्हेपर चढावे फिर उसके पैंदेमें ईंट रख उसपर दूसरा पात्ररक्खे उसमें चारों ओर औषधि भरदे फिर घड़ेके मुखपर घडियाके समान पात्र रख संधि बंदकर घड़े के नीचे मन्द मन्द आंच देवे मुख के ढक्कन में जल भर देवे जब वह जल गरम हो जाय तब निकाल कर दूसरा शीतल जलभर देवे ऐसे बारम्बार गरम जल निकाल निकाल कर दूसरा ठंडा जल भरता रहै ऐसा करने से ऊपर के पात्र की पेंदी में बाफ जमती है वही शीतल जल ऊपर रहने के कारण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

टपक टपक कर भीतर के कटोरे में गिरती रहती है उसको सावधानी से निकाल लेवे इसको गर्भ यन्त्र कहते हैं इससे सुगन्धित गुलाब जल आदि बनाते हैं। हंसपाक यन्त्र नम्बर ३

बालूका एक बड़ा खपरा भर लेवे उसमें औषधियों को रख ऊपरसे दूसरे खपरेसे मुखसेमुख मिलाय दृढ़ बंदकर देवे इस प्रकार पांचों चारोंमें नोंनोंमें मन्द मंद आंचसेपाककरे इस यंत्रकोहंसपाकयंत्रकहते हैं।

ऊर्ध्वनलिका यन्त्र नम्बर ४

एक घड़ा लेकर उसके गलेमें छेद करे उसमें बाँस वा नरकुलकी समान नली जो पोली हो प्रवेश कर मुखपर उतनाही बड़ा ढकना देकर लेपदे नली के मुखपर कांचका पात्र देवे अनन्तर पूर्वोक्त घड़े को भट्टीपर रख नीचे अग्नि जलावे तो अग्निके ऊपरवाले पात्रमें से औषधियोंका अर्क खींचकर दूसरे पानीवाले पात्रमें इकट्ठा होवे इसको टंकयन्त्रभी कहते हैं अत्तार लोग इसी यन्त्रसे सब प्रकार के अर्क खींचते हैं।

कच्छपयन्त्र। नम्बर ५

बड़ा और मोटा खपरा लेकर उसके बीचथांबलासा बनावे उसमें पाराभर देवे उसके ऊपर नीचे बीड़देवे अनन्तर मल्ल ऊपर लेपकरबंदकरेउसको ढकनादेकर उसके ऊपर अग्निका पुट देवे यह कच्छप यन्त्र है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसी प्रकार गौरीयंत्र कोष्टीयंत्र जलयंत्र तुलायंत्र चक्रयंत्र इष्टिकायंत्र नाडिकायंत्र वारुणीयंत्र तिर्यक् पातनयंत्र आदि अनेक यंत्रहैं जिनको यहां विस्तार भयसे नहीं लिखा न लिखने की आवश्यकता है।

इति श्री रसराजमहोदधि वैद्यग्रन्थे ज्योतिर्विंत्पण्डित नारायण प्रसाद मिश्रविलिखिते द्वितीय भागे रसायनप्रकार वर्णनं नाम प्रथमाऽधिकारः ॥ १ ॥

द्वितीय अधिकार—तत्र पुष्टिविधान।

दो०—बन्दों धन्वन्तरि चरण अरु अश्विनी कुमार।
विश्वरोगभय हरणहित लीन्हो जिन अवतार॥१
अब द्वितीय अधिकारमें लिखिहों पुष्टिविधान।
नारायण धरि ध्यानउर नारायण भगवान॥२॥

मनुष्यका शरीर आरोग्य रहनेसे पुष्ट होता है इस कारणआरोग्यताही मनुष्यकेशरीरकी पुष्टिकाप्रधान कारण है जो शरीर भली भांति पुष्ट होता है तो किसी प्रकारका रोग समीप नहीं आता और निर्बल होनेके कारण शरीरमें अनेक रोग प्रगट होते हैंऋतु ऋतुमें धर्म पूर्वक यथोचित आहार विहार करने से शरीरमें आरोग्यता होती है मनुष्यको वही उपाय करना चाहिये जिससे शरीर आरोग्य रहे।

अधिक चिन्ता करने व मलीन रहने तथा मिथ्या आहार विहार करनेसे शरीरमें रोग प्रगटहोजाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देश समय प्रकृति अवस्था इनके विरुद्ध वर्ताव करने से शरीरमें रोग होनेका भय रहता है इस कारण देश समय प्रकृति और अवस्थाका वर्णन हम यहाँ संक्षेप रीति से कहते हैं ।

देश

जहाँ नदी नाले झील दलदल छोटे वृक्ष व वन अधिक हों उसको अनूप देश जानना वहाँ की प्रकृति वादी कफ कारक और शीतल होती है ।

और जहाँ सूखे रेतीले मैदान व जंगल हों उसको जांगल देश जानना, उसकी प्रकृति गरम, पाचक, और पित्तकारक होती है।

तथा दोनों लक्षणोंसे उक्तको मिश्रित देशजानना वहाँ की प्रकृतिभी मिश्रित (मिली हुई) जानना।

समय ।

मेष वृष की संक्रांति में ग्रीष्मऋतु, मिथुन कर्कंकी संक्रांतिमें प्रावृटऋतु,सिंह,कन्याकी संक्रान्तिमें वर्षा ऋतु तुला वृश्चिककी संक्रान्तिमें शरदऋतु,धनमकर की संक्रान्ति में हेमन्त, कुम्भ मीन की संक्रान्ति में वसन्तऋतु होती है ग्रीष्म समय शरीरमें वायुका संचय और गरमी की अधिकता होती है प्रावृट् और वर्षाकी सन्धिमें वायुका कोप होता है और पित्ताका संचय होता है शरद वर्षा इन दोनों ऋतुओं की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन्धिमें पित्तका कोप होता है हेमन्त और शरद ऋतुमें पाचक जठराग्नि बलवान होती है, और कफका संचय होता है तथा वसन्त शरद और ग्रीष्म इन ऋतुओं के सन्धिकालमें कफका कोप होता है।

ग्रीष्म ऋतुमें गरम और वादी पदार्थोंसे बचना उचित है। दिनमें शयन करना और बहुत परिश्रम नहीं करना मैथुन कर्म बहुत कम करना।

वर्षा ऋतुमें मैले स्थान मैली वस्तु व नदीका जल गरिष्ट भोजन से बचना और ऊँचे स्थानोंमें रहना योग्य है तथा सरदी में चिकना पुष्ट भोजन तैलाभ्यंग और दण्ड कसरत करना उत्तम है।

तथा गेहूँ दूध घी खांड कुए का जल तुरन्त का भरा छायामें शयन करना अपने से छोटी स्त्री यह सब भोग सदा हितकारी हैं तथा कोदों का अन्न बासी दूध कुसमय बहुत भोजन अपने से बड़ी स्त्री प्रभातका शयन करना यह सदा कुपथ्य है।

प्रकृति।

जो मनुष्य दुबला और रूखा हो जिसके बाल कड़े हों बहुत बोलता हो उसकी प्रकृति बात जानना अर्थात् वह सौदावी होता है।

तथा जो मनुष्य दुबलाहो पर रूखा न हो और क्रोधी हो जिसमें पाचकशक्ति अधिक हो जिसके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाल बुढापेसे पहलेही श्वेतहोने लगे तो उसकी पित्त प्रकृति जानना । अर्थात् वह सफरावी होता है ।

और जो मनुष्य मोटा हो गम्भीर हो जिसके बाल नरमहोंबोलताकमहोसोता बहुतहोबुद्धिउसकी स्थिरहो उसको कफ (बलगमी) प्रकृति वाला समझो ।

बात प्रकृति वाले पुरुषको रूखा ठंडा और बादी भोजन हानिकारक औरगरमतरपदार्थगुणकारकहै

पित्तप्रकृति वाले पुरुषों को पतला शीतल और तर भोजन गुणकारी है और गरम कड़ा चरपरा हानि कारक है ।

तथा कफप्रकृति वाले पुरुषों को श्रम रूक्ष गरम आहार शोषण वस्तु गुणदायक और पतली चिकनी व बहुत ठंडो व गरिष्ट दुःखदायी है ।

अवस्था ।

बालअवस्था में पित्तकी अधिकता होती है, फिर ज्यों ज्यों अवस्था बढ़ती है, त्यों त्यों कफ और वायुकी वृद्धि होती है ।

तरुण अवस्था में कफ की और वृद्ध अवस्था में वायुकी अधिकता होती है ।

इसीसे बालकोंकीजठराग्निप्रबल होती है, अनेकबार-का किया हुवा भोजन भली भांति पच जाताहै,युवा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वस्थामें वल पराक्रम अधिक होता है, श्रम मैथुन की शक्ति अधिक होती है जठराग्नि स्थिर होजाती है, जिससे दो वारका किया भोजन तो ठीक ठीक पच जाता है अधिक नहीं।

बृद्ध अवस्थामें वायुकी अधिकतासे अच्छा भोजन मिलने परभी धातु उपधातु सब स्वयं शोषित होने लगती है वायु दोषसे जठराग्नि विषम होती है जिससे कभी दो वार का भी भोजन पच जाता है, और कभी नहीं पचता है भोजनके रसको वायु शोषलेता है इससे शरीर क्षीणही होता जाता है।

संक्षिप्त दिनचर्य्या।

सब मनुष्योंको प्रभात समय उठना चाहिये उस समय पड़े रहनेसे आलस्य, शिथिलता, प्रमेह आदि रोग सगट होनेका भय रहता है।

फिर कुछ ईश्वरका चिन्तवनकर दिशा शौच जाना चाहिये शौचके समय शिर अवश्य ढाप लेना योग्य है, नहीं तो मलके अणु मूर्द्धाको हानि पहुंचाते हैं। अनन्तर हाथ मुंह धोय कुल्ली करके कोकरकी दतौन तथा नींब, खदिर, महुवा और औंगाकी दतौन करना कीकरकी दतौन दाँतोंको दृढ़ करती है नींब की चित्ताको प्रसन्न करती, खैर ब महुआकी मलको दूर कर, व चिर्चिरीकी बुद्धि को बढ़ाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तदनन्तर शरीर पर विशेषकर मुंह, हाथ पांव, शिरपर तेल मलना उचित है, गरमीमें चौथे, सातवें व दशवें दिन और सरदीमें आठ दिनमें तीनवार अथवा नित्य तेल मर्दनकरनेसे शरीरकी त्वचा नरम व पुष्ट होती है, खुशकी व रुधिर विकारमें हितहै, रूखे मनुष्यको तेल मलनेकी अधिक आवश्यकताहै तेल मलने के पीछे उबटन मलना उचित है इससे तेल की ऊपरी चिकनाई और मैल दूर होजाता है ।

अनन्तर शरीरके समान निबाये जलसे स्नान योग्य है स्नानके समय देशी वस्त्रके अँगौंछे से शरीर मलना और साफ करना योग्य है ।

तदनन्तर निर्मल धोती पहिर ऋतु के अनुसार तिलक लगाना गरमी में चन्दन कपूर सरदी में चन्दन केशर तथा वर्षामें तीनों मिलाकर मस्तक पर लेपन करना योग्य है इससे दुर्गन्धित वायुका बुरा प्रभाव नहीं होता है मस्तकको सरदी धूप लू ओस आदि से बचाये रहना चाहिये ।

अनन्तर नयनसुख अंजन नेत्रों में लगाना और ऋतुओं के अनुसार उज्वल वस्त्र पहिरना चाहिये । अनन्तर सावधान मनसे अपना निज-कृत्य करना प्रहर दिन चढ़े उपरान्त और दो प्रहर के पहले भोजन करना यथा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मू०—याममध्ये न भोक्तव्यं यामयुग्मं न लंघयेत् ॥
याममध्ये रसोत्पत्तिः यामयुग्मं बलक्षयः ॥ १ ॥

दिनको प्रहरदिन चढ़ेसे पहले भोजन नहीं करना और दो प्रहरको उल्लंघन नहीं करना अर्थात् दूसरे प्रहरमें भोजन करना। रात्रिको एक प्रहरसे पहले भोजन करने में रसकी उत्पत्ति होती है और दूसरे प्रहरमें भोजन करनेसे बलकी हानि होती है भावर्थ यह कि दिनको दूसरे प्रहरमें और रात्रि को पहले प्रहरमें भोजन करना चाहिये।

भोजनमें पहले मधुर चिकने पदार्थ भोजन करना चाहिये पीछे चरपरे खट्टे अन्तमें कटु और कसैले और समाप्तिके समय मधुर रससे समाप्त करना।

भोजनसे पहले जल पीना उचित नहीं भोजन के मध्यमें जल पीना अच्छा है अन्त में जल पीने से कफ की बृद्धि होती है।

भोजन समय विरुद्ध पदार्थ मिलाकर कभी कहीं खाना जैसे गुड़ दूध और लवण मिठाई तथा मान विरुद्ध योगविरुद्ध कियाविरुद्ध समयविरुद्ध देश विरुद्ध भोजन करना उचित नहीं है और अधिक भोजन नहीं करना जिससे अजीर्ण होजाय अथवा शयन करनेको चित्तचाहै ग्रीष्म ऋतुके बिना अन्य ऋतुओंमें दिनको शयन नहीं करना जो मनुष्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बात प्रकृति बालाहो दुबलाहो अथवा आवश्यकता हो तो दिनमें शयन करना अनुचित नहीं जिसने रातमें परिश्रम किया हो अथवा जो रातमें जगाहो तो दिनमें सोना योग्य है परन्तु कफप्रकृति वाले पुरुषको दिनमें सोना उचित नहीं है संध्या समय भ्रमण करना उचित है इसमें विशेष देखना हो तो इस ग्रंथके तृतीय भागमें देखना यहां संक्षेप से लिखा है।

रात्रिचर्य्या ।

सन्ध्यासमय पढ़ना भोजन करना सोना और मैथुन करना अनुचितहै रात्रिको भोजन पुष्ट बल-कारी वाजीकरण होना उचित है रातको भोजन करने के उपरान्त दूध अवश्य पीना उचित है।

यदि रात्रि समय पढ़ना लिखना हो तो सरसों का तेल दीपमें जला कर उसके प्रकाशसे लिखना पढ़ने का काम करे मिट्टी के तेल के प्रकाश से लिखना पढ़ना उचित नहीं क्योंकि मिट्टी के तेल का प्रकाश नेत्रों की ज्योति को मन्द करता और शिर के भीतर (दिमागको) हानि पहुंचाता है, गरमी की ऋतु में रात को पढ़ना ठीक नहीं, यदि पढ़ने की अवश्यकता हो तो पहर रात गये उपरान्त नहीं पढ़ना।

अति मैथुन करना किसी समय योग्य नहीं मैथुन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करना तो केवल सन्तान उत्पत्ति के निमित्त योग्य है, परन्तु आज कल तो मैथुन करना परम आनन्द रूप माना जाता है, मैथुन करने से मनुष्य का बल तुरन्त घट जाता है, वीर्य नष्ट होता है इस कारण उचित है कि निष्प्रयोजन मैथुन कदापि न करे केवल अपनी स्त्री में सन्तानोत्पत्ति निमित्त मैथुन करना योग्य है. जब स्त्री रजस्वला हो तो प्रथम चार दिन त्याग देवे, उपरान्त यदि कन्याकी इच्छा हो तो विषम दिन अर्थात् ५।७।९।११।१३।१५ के दिन स्त्री संभोग करे, यदि पुत्रकी कामना हो तो ६।८।१०।१२। १४।१६ इन सम दिनों में स्त्री संभोग करे शेष चौदह दिनोमें रज नहीं रहता इस कारण संभोग नहीं करना। इससे विरुद्ध मैथुन करना योग्य नहीं जो मनुष्य मैथुनानन्द में मग्न होकर दूसरे की स्त्री से मैथुन करने की इच्छा करते हैं वह महा मूर्ख हैं, क्योंकि जान बूझकर अपने बल पराक्रम को हानि पहुँचाने वाले से बढ़कर अन्य कौन मूर्ख होगा, व्यर्थ मैथुन से सन्तान को बाधा पहुँचती है, आयु घटती है, शरीर निर्बल होता है, इस कारण बुद्धिमान् मनुष्य को योग्य है कि व्यर्थ मैथुन करके अपने वीर्य को नष्ट न करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शरीर को दृढ़ रखने का उपाय ।

अर्थात् बाजीकरण प्रयोग ।

मू०—यत्द्रव्यं पुरुषं कुर्याद्वाजिवत्सुरतक्षमम् ॥
तद्वाजीकरमाख्यातं मुनिभिर्भिषजां वरैः ॥ १ ॥

मनुष्य को सुरतकाल में जो द्रव्य घोड़े के समान सामर्थ्य देवे, श्रेष्ठ वैद्यों ने उस द्रव्य को बाजीकरण नाम से प्रकाशित किया है।

मू०—नरो वाजीकरान् सम्यक् शुद्धो निरामयः ॥
सप्तत्यन्तं प्रकुर्वीत तृषादूर्ध्वं तु षोडशात् ॥२॥

प्रथम जुलाब ले भली भांति शुद्ध हो, आरोग्य पुरुष बाजीकरण योग करे और सोलह वर्ष के उपरान्त सत्तर वर्ष पर्यन्त बाजीकरण करे, सोलह वर्ष से पहले सत्तर वर्ष से उपरान्त बाजीकरण द्रव्य सेवन न करे, क्योंकि बाल्य और वृद्ध अवस्था में वीर्य नहीं रहता है।

मू०—ताम्बूलं मधु कुसुमस्रजो विचित्राः कान्तारं सुरतरु नवा विलासवत्यः गीतानि श्रवणहारणि मिष्टमन्नं क्लीवानामपि जनयन्ति पंचबाणं ॥ ३ ॥

ताम्बूल (पानखाना) मदिरा पीना, चित्रविचित्र फूलोंकी माला धारण करना, उत्तम उत्तम वृक्षोंवाले बन, नवयौवन स्त्री, मनोहर गीत, स्वादिष्ट भोजन, यहपदार्थनपुंसकोंके कामदेवकोभी उत्पन्नकरतेहैं।३।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मू०—सौभाग्यपुष्टिबलशुक्रविवर्धनानि किं सन्ति नो भुवि बहुनि रसायनानि ॥ कन्दर्पवर्धिनि परन्तु सिताज्ययुक्ता दुग्धादृते न मम कोपि मतः प्रयोगाः ॥ ४ ॥

लोलिम्बराजजी अपनी स्त्री से कहते हैं कि हे कामदेव को बढाने वाली सुन्दरता, पुष्टि, बल, वीर्य इनके बढ़ाने वाले रसायन (जराव्याधि नाशक) औषधि पृथ्वी में बहुत हैं, परन्तु घी और मिश्री मिले हुये दूध से बढ़कर दूसरा कोई प्रयोग मेरे मतमें योग्य नहीं है, अर्थात् बल पुष्टिकारक प्रयोग में सर्वोत्तम प्रयोग है।

दुग्धपान विधि।

दूध एक ऐसा उत्तम पदार्थ परमेश्वरने उत्पन्न किया है जिसके तुल्य और कोई पदार्थ जगत में नहीं है इसीसे सब मनुष्योंकी पालना होती है, यदि संसारमें दूध नहो ता तो बालकोंका पालन कैसे होता देवताओंकी तृप्ति भी इसीसे होती है, दूधके बिना यज्ञ आदि कर्म नहीं हो सकते और बिना यज्ञ आदिकों के देवता भी तृप्त नहीं हो सकते हैं, इन हेतुओंसे दुग्ध सबसे उत्तम पदार्थ है, इसके सेवनसे सबको गुण होता है, गौका दूध सब दूधों से अधिक गुणदायक होता है परन्तु जो गौ रोहिणी हो, बूढी हो उसका दूध गुणदायक नहीं होता है, फटा हुआ दूध भी पीना योग्य नहीं है तथा बिना शक्कर व मिश्री

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिला दूध नहीं पीना जो गौ युवाअवस्था वाली हो उत्तम चारा भोजनकरतीहोऔर आरोग्यहो उसका दूध गुण करनेवाला जानना गौका दूध सबको हितकारीहै बकरी के दूधमें एक प्रकार की गंध होती है इस कारण प्रायः जन उसको नहीं पीते हैं तथा भैंस व भेडीका दूध गरम व चिकना अधिक होताहै,निर्बल मनुष्योंको शीघ्र पचता नहीं हैं जो मनुष्य बलवान हैं,उनको हितकारीहै यदि किसीका शरीर वादी हो, वह दूधमें औटते समयएक माशे सोंठ व दालचीनी छोड़ देवे,अथवा तीन चार छुहारोंकी गुठली निकाल कर छोडदेवे जब चौथाई दूध जलजावे तबउतारकर मिश्री मिलाय पीलेवे, दूधमें गुड़ राव अथवा शहत डालकर कदापि न पीवे यह दूधकी विधि लिखी है ।

चायके पीने की विधि ।

यद्यपि काश्मीर आदि देशोंमें बारहोंमासमें मनुष्य चाय पीते हैं, और इस मध्यदेश में शीतकाल में ही चायका पीना योग्य है अन्य ऋतुओंमें पीना ठीक नहीं डाक्टरोंका मतहै कि चाय बुद्धिको बढातीहै,शरीरकाआलस्यदूरकरतीहै,ऐसा ही देखनेमेंभीआताहै कि चायके पीतेही पसीना आजाताहै,आलस्यदूर होजाताहै,शरद स्वभाव वालोंको बहुतहीगुणदायकहैं, परन्तु जिनको अजीर्णहो तथा जिनके चित्तमें किसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकारकी पीड़ाहो उनको हानि पहुंचाती है। जो चाय स्याह व हरी हो, जिसके पत्ते टूटे व बहुत मोटे नहों किन्तु जिसके पत्ते छोटे और कुछ मुड़े हुयेहों और कुछ फूल लिये हुयेहों, जिसका काढा सुगन्धित और पीनेमें बहुत तलख नहो बहुत स्याहरंगकी भी न हो ऐसी चाय उत्तम होती है, इसके बनानेकी युक्ति यह है, कि आधसेर जलको भली भाँति औटाय नीचे उतार ले फिर उसमें एक तोला चाय डाल दे, पाँच मिनटके उपरांत छानकर उसमें मीठा डालकर पी लेवे। दूसरी विधि यह है, आधसेर जलको औटाय उसमें एक तोला चाय छोड़ दे और एक माशा दालचीनी, इलायचीको पीसकर मिलादे जब आधा जल रहजावे तब उतारकर छानकर उसमें एक छटांक मलाई और एक छटांक सफेद मिश्री मिला कर इसी प्रकार दूध की चाह बनती है।

सब कालमें भोजन उत्तम बनवाकर खाना चाहिये यही मनुष्य के शरीर को पुष्ट करता है परन्तु अधिक भोजन न करे क्योंकि आहार बिहार ही स्वास्थ्यके कारण हैं। भोजन बनानेकी विधि हम इस ग्रन्थके तीसरे भागमें लिखेंगे।

जल निर्मल और मीठा पीना चाहिये जो निर्मल और मीठा न मिलेतो बादाम की गिरी अथवा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निर्मली बूटीके फल को घोटकर मिलाने से तुरन्त जल निर्मल हो जावेगा ।

जलको ठंडा करनेकी विधि ।

ग्रीष्म कालमें ठंडा जल प्रायःनहीं मिलता है इस कारण जलको ठंडा करनेका उपाय यह है कि एक कोरे घड़ेको अथवा झम्झरवसुराहीको दिनके समय धूपमें रखदेवे संध्याको उठाय उसमें जल भरकर उंचे हवादार जगहमें रातको रखदेवे प्रातःसमय किसी छाया वाले शीतल स्थानमें रख छोडे जो जल शीतल रहेगा तथा जलको औटाय रातको मिट्टी के पात्रमें कच्चे स्थानमेंकि जहां पवनका झकोरा आता हो वहां रखने से जल शीतल व पाचन होता है

तथा मिट्टीके पात्रमें जलभर कर समस्त दिन पर्यंत धूपमें रख रातको ऊंचे हवादार स्थानमें रखने से जल शीतल होजाता है ।

तथा नौसादर ५ भाग शोरा ५ भाग जल १३ भाग मिलाय मिट्टीकी नाँद अथवा सुराहीमें अथवा पीपे में उसको भरकर फिर उसमें पीनेका जलभर कर ऊपर उसके टाट अथवा मोटा कपड़ा लपेट रक्खे, ऐसा करने से वह जल शीतल होजाता है ।

तथा पृथ्वीमें एक गडहा खोदकर उसमें एक मिट्टी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का मटका गाडदेवे उसके चारों ओर मिट्टी लगाय जौ बोय देवे और उनजबों को सदा सींचता रहे तो उस मटके का जल बहुत ठंडा रहता है, परन्तु एक महीना के उपरान्त उस मटके को बदल दे, और जौ भी नवीन बोवे जो कोई बर्फ के टुकड़ों को जलमें डालकर ठंडा करते हैं सो ठीक नहीं किन्तु बर्फमें जलकी सुराही को ठंडा करके पीना ठीक है।

वर्षाऋतुके नियम।

वर्षाऋतुमेंजल बिगड़ जाता है,तब जलको निर्मल ठंडा करके छान लेना और दिनमें दोबार जलके घड़े को धो लेना,बिनाछने और निर्मल किये हुए जलको पीने से रोग उत्पन्न होनेका भय रहता है, इस ऋतुमें वायु एक रस नहीं रहती, क्षणमात्र में गरम और क्षणमात्र में शरद हो जाती है, इस कारण इन दिनों में चार पांच प्रकार के वस्त्र रखना चाहिये जिस समय जैसे वस्त्र की आवश्यकता है वैसा वस्त्र धारणकर लेवे, गरमी से भी अधिक सफाई वर्षाऋतुमें करनी चाहिये क्योंकि वर्षा समय अधिक कीच होनेके कारण वायु बिगड़ जाती है उससे बचना परम आवश्यक है,नदियों में स्नान करना इनदिनों उचित नहीं कारणयहकिजल मैला होताहै जो दाद आदि रोग उत्पन्न कर देता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है, वर्षाऋतुमें कभी २ रात समय वर्षा होनेकेकारण गरमी बहुत होतीहै जिससे प्रायःमनुष्य आंगनमेंसोते हैं,सो ठीक नहीं श्लेष्मा रोग उत्पन्न होकर दूसरे रोगके प्रगट होनेका भयरहताहै,संध्या समयबगीचोंमेंभ्रमण करनेसे चित्तप्रसन्न होताहै परंतु वर्षा होते समय नहीं भ्रमै,यहां चार महीना वर्षाके मानकर यह कुछ नियम बखान किये हैं वर्षाके अन्तमें कुँवारका शुक्लपक्ष और कार्तिक कृष्णपक्ष इन दिनोंमें थोड़ा भोजन करना योग्य हैं, कार्तिकसे चार महीने जाड़ेके हैं ।

शीतकालके कुछ नियम ।

जाडेका समय बहुत अच्छा होताहै, क्योंकि जाड़े के समयमें सबकोई,आरोग्य रहता है और मच्छर आदिकों के कष्टसे भी बचाव रहताहै और जठरकी अग्निभी इन दिनों प्रबल रहतीहै जिससे अन्न शीघ्र पच जाता है, आधे कार्तिक से आधे फाल्गुन तक चार महीने इसकी बहार रहती है पूस, माघमें जाड़े की प्रबलता होती है, प्रायःइन दिनों गरम पदार्थों का सेवन किया जाता है, जिससे शरीर में रुधिर और वीर्य की अधिक उत्पत्ति होती है, इन दिनों गरम बस्तुओं का खाना उत्तम होता है, विशेष कर किसमिस बादाम आदि मेवों का सेवन करना परम गुणकारी है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गरमी के समय के कुछ नियम।

गर्मी का समय मनुष्यों की आरोग्यता के निमित्त सामान्य है, इन दिनों में गर्मी के करण प्यास बहुत लगती है शरीर से पसीना निकलता है इस कारण दोवार स्नान करना शीतल पदार्थ खाना और बारीक वस्त्र पहिरना और धूप से बचाव करना उचित है यह संक्षेप से तीनों समयों का बर्ताव लिख दिया इस ग्रन्थ के तीसरे भाग में कुछ विस्तार पूर्वक लिखेंगे।

पुष्टिकी औषधि।

दो०—गोक्षुरकः क्षुरकः शतमूली, वानरिवीजवलतिवलानाम्।
चूर्णमिदं पयसा निशि पीतं, यस्य गृहे प्रमदाशतमस्ति॥

गोखरू, तालमखाना,. शताबरि, कैंचके बीज, गंगेरन की छाल, खरेंटी इन सब का चूर्ण रातको दूधके साथ उसको सेवन करना चाहिये जिस के घर में सौ स्त्रियां होवें।

दो०—मौरेठी चूरण सहित दूध घीवसों खाय।
तो तियसंगम अति करे बीर्यपुष्ट ह्वै जाय॥१॥
गुर्च आंवले गोखरू समशर्करा मिलाय।
घी में चूरण लेहकै ऊपर दूध पिवाय॥२॥
अजर अमर अति वीर्यकै कामदेव सम होय।
महा पुष्टि तिय मद मथन जो यह सेवै कोय॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मदनप्रकाश चूर्ण ।

चौ०-गुर्च स्वयं गुप्ता लेलीजे । तालमखाना गुखरू दीजे । बला शाल्मलि असगन्ध सोय बीजकेवांच वराले जोय । चूरण मिश्री दूध सोंप्यावे । रु... काल सेजपे आवे । बढे काम कामिनि सुखपावे पुरुष आदि आनन्द बढावे । मदन प्रकाश... चूरण कह्यो । याके गुण अद्भुत किमि रह्यो...

तथा ।

चौ०-लेहु बिदारीकन्द मँगाय । ताको चूरण मि... पिसाय । पुनः विदारी सुरस निकारी । ... भावना कछुक विचारी । शुष्क जानि घृत दो... मिलावे । सेवन दिन दिन देव बतावे । दश ... गना भोग नित करे । पुनः तृप्तिजियमें नहीं धरे ।

तथा ।

चौ०-तालमखाना गोखुरू लीजे । बीजके बांचके चूरण कीजे । चूरण सम शकेरा मिलावे । फाँकी ऊपर दूध पिलावे । बृद्ध खाय योव... मद पावे । नव बालनसों नेह बढावे । युवाके गुण कौनबखानौ । हनैमानिनी मानहिं जानौ ।

दो०-खोद बिदारी कंदको, चूरण करौ सुजान ।
घीव दूधसों खाइये कर्षद्वु, चारि प्रमान ॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वृद्ध पुरुष को तरुण कै, काम चौगुनो जान।
पुष्ट क्षीणता हरणको, औषध अमी समान ॥४॥

असगन्धपाक।

असगन्ध ४० तोला, सोंठ २० तोला, मिर्च ४ तोला, इलायची ४ तोला, पीपरि १० तोला, लौंग ४ तोला, तमालपत्र ४ तोला, यह सब औषधि कूट २ कर कपड़े से छान दूध २०० तोला में औटावे, जब आधा दूध रहजाय, तब शहत १०० तोला, मिश्री १२० तोला, गौ का घी ५० तोला लेवे, अनंतर पीपरि, जीरा, गिलोय, लौंग, तगर, जायफल, कालाचंदन, खिरनी, धनियां, कमलगट्टा, आंवला, बंशलोचन, सोंठ, कपूर, कैथा. असगन्ध, शतावरि, चीता यह सब छः छः माशे ले कपड़ छनकर मावा में मिलाय पाक बना लेवे और इसमें सोनारस, तांबारस, चांदीरस, अभ्रकरस, मिलावे दो तोला भर खुराक एक महीना पर्यंत सेवन करने से खांसी, दमा, प्रमेह, शूल, बातरोग ये दूर हो जाते हैं।

पुष्टिपाक।

छोटा गोखरू, बड़ा गोखरू, नागौरी, असगन्ध, तालमखाना, गुर्च का सत, बीजबंद, बड़ी इलायची, मिर्च, दालचीनी, कैंच के बीज. यह सब दो २ तोला लेके कूटछान चूर्णकर, फिर वंशलोचन गुजराती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इलायची, मस्तङ्गी, बिहीदाना, विनौर के बीज, यह सब एक २ तोला ले फिर बबूल का गोंद १ पाव, गिरी १ टंक, बादाम १ टंक, पिस्ता १ टंक छुहारा १ टंक, किसमिस १ टंक, घी ढाईपाव, मिश्री ढाईसेर की चासनी कर सब अषधियों का चूर्ण घी में भून चासनी में मिलाय आंवले भरकी लुगदी ले लड्डू बांधे इसी प्रकार सब लड्डू बांध प्रातःसमय दूधके साथ खाय खटाई और वादी वस्तुका पथ्य करे तो शरीर बहुत हृष्ट पुष्ट हो।

तथा।

तीन पाव गेहूँ का सत घी में भूनकर लाल कर लेवे, फिर आधपाव शहत उसमें मिलाय चार २ तोले की एक २ टिक्की तैयार करके एक टिक्की रोज खाय तो शरीर मोटा होय।

तथा खुरासानी अजवायन चार तोला लेकर उसे धोवे एक रात दिन पानीमें भिगोदे, अनंतर पानी से निकालकर उसे सुखावे और ८ तोला घी मिला अजवायन को आंच पर रखकर इतना पकावे कि जिसमें वह जलजावे, अनंतर उतारकर १६ तोला बादामकी गिरी और ४ तोला अखरोट की गिरी कूटकर उसको मिलावे तदनंतर आठ तोला सफेद मिश्री मिलाय डेढ़ तोला शयन करते समय भक्षण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करे तो देह मोटा होय शरीर में बल अधिक बढ़े वीर्य की बृद्धि होय ॥

बलकारी मोदक ॥

एक सेर दूध और एक गिरीका गोला लेकर उसका छिलका उतार उसमें एक छेद करे फिर उसके भीतर एक जायफल ६ माशे केसर ६ माशे जावित्री यह भर कर उसी काटे हुए से उस गोले का छेद बन्दकर देवे अन्तर दूध को आंच पर चढाय वह गोला उस में छोड़ देवे और आधपाव छुहारों की गुठली निकाल कर आधपाव चिरौंजी एक छटाँक बादामकी गिरी एक छटाँक अखरोट की गिरी इन चारों को भी दूधमें छोड़ देवे और मन्दमन्द आंचपर पकावे जब गिरी छुआरे आदि नरम हो जावे तब वह दूध में से निकाल कर उनको पीस लेवे और दूध का खोवा बनालेवे फिर उस खोवे में सब पिसी हुई वस्तुओं को डालकर घी में भूने फिर एक पाव शक्कर मिलाय उतार लेवे, फिर आधी आधी छटांक का लड्डू बांध लेवे, एक लड्डू प्रातःकाल एक लड्डू सांयकाल को खाय तो वीर्य बल बढ़े शरीर पुष्ट होवे।

तथा।

एकपाव मैदा आधपाव घीमें भून लेवे और एकपाव खोवा अलग घी में भूने फिर एक छटांक पिस्ता, एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छटांक बादामकी गिरी, एक छटांक चिलगोजेकीगिरी एक छटांक छुआरा गुठली से साफ किया हुवा आधी छटांक गोंद बबूरका ३ माशे केसर ६ माशे जावित्री १ जायफल, जायफल को कूटकर बारीक कर लेवे और गोंद को भी पीसकर जावित्री को पीस लेवे तथा सब गिरयों को साफ करके चाकू से कतर डाले यह सब उस भूने हुऐ मैदेमें मिला देवे, फिर खोवा भी उसी में मिलाबे अनन्तर आधसेर चीनी सफेद मिलाय सब को थोड़ी देर उपरान्त उतार लेबे और एक एक छटांक के लड्डू बना लेबे फिर प्रातःकाल और सांयकाल को बलाबल के अनुसार जितना पच सकै उतना खावै तो शरीर पुष्ट होबे।

हरीरा बनाने की विधि।

६ माशे बादाम की गिरी ६ माशे पिस्ता ६ माशे अखरोट की गिरी १ तोला चिलगोजे की गिरी और २ तोला पोस्त का दाना सब को करके पानी में भली भांति धोबे फिर उसको धोकर आध सेर पानी में छानकर १ छटांक मिश्री उस में मिलाय अलग रख देबे अनन्तर आधी छटांक गेहूँ का सत आधी छटांक घी में भून कर खस खस के सीरे में पकावै जब पककर गाढा हो जाय तब उतार लेवै और चमचे से उसको खाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा।

६ माशे बादाम की गिरी तथा एक तोला पोस्त का दाना आध सेर दूध में दोनों को पीस कर छान लेवे, फिर आधी छटांक घी में भून कर दूध को गरम कर के उस में गेहूँ का सत एक छटांक डाल कर पकावे, पक जाने पर डेढ़ छटांक सेश्री उसमें मिलाय उतार लेवे, कुछ ठंढा होने पर पीवे, यह हरीरा शिर की गरमी और खुश्की को दूर करता और शरीर को पुष्ट करता है।

हलुवा बनानेकी विधि।

आध पाव पुराने चावलोंको जलमें धोकर पीस लेवे और तीन छटांक बादामकी गिरी कूठ रक्खे, फिर आध सेर गुलाब के अर्क में सबको मिलाकर पकावे, परंतु कलछी से चलाता रहै जिससे गुलथी न पड़जाय जब पककर तय्यार होजाय तब उतार आधी रत्ती मुश्क मिलाय रखदेवें, इसका प्रमाण पांच तोले का है सो प्रति दिन कईबार खाय यह हलुवा शरीर को मोटा करता है।

कूष्मांड (पेठा) पाक।

पके सफेद पेठेका गूदा पावसेर दूने जलमें डाल मंदी आंचसेगलावे आधाजलरहनेपर निचोडेधूपमें सुखाय पिट्ठी बनावे तीन पाव घी डालकर उसे फिर भूने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जब लालरंग होजाय तब उसमें औषधि डाले, पीपल सोंठ, जीरा दोदो टंकेभर, धनियां, तेजपात, इलायची काली मिर्च, दालचीनी, यह सब एक एक तोला फिर पाँचसेर मिश्री की चासनी में डाल कर पाक बनावे और डेढ पाव शहत डाले चाँदीके वर्क तीन माशा हों यह पाक नित्य एक छटांक खानेसे क्षयी क्षीणता रक्तपित्त प्रदर वीर्य विकार क्लीबता इन रोगों का नाश होता है शरीर पुष्ट रहता है ।

गोखरू पाक ।

गोखरू का एक सेर चूर्ण लेकर चारसेर दूधमें डाल कर खोवा करे, और लौंग मिर्च तोध जावित्री, नागरमोथा भीमसेनी कपूर सें लका गोंद पीपल आंवला, केशर, इलायची पत्रज्मा ाग-केशर कैंच के बीज अजवायन इन औषधियों में कपूर ३ माशे केशर ६ माशे शेष (बाकीका) सब एक एक तोला ले १ छटाँक भाँग धोई हुई डाले फिर खोवा और यह सब वस्तु डाले फिर दो सेर घी में मन्दमन्द आंचसे भूने अनन्तर पांच सेर मिश्री अथवा खाँड़की चासनी कर पाक बनावे चांदीके पत्र यथोचित्त लगाकर चार तोला प्रमाण नित्य खायतो प्रमेह बवासीर, क्षयी क्षीणता इन रोगों का नाश हो तथा शरीर पुष्ट होवे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुपारी पाक।

दक्षिणी सुपारीका चूर्ण आधसेर जलमें भिगोकर सुखाले फिर बारीक पीस बराबर के घीमें सानकर अठगुने दूधमें पकाय चारसेर मिश्रीकी चासनी को उसमें मिलाय पाक बनावे यह औषधि पहिले डाललें लवंग, जायफल, इलायची, गंगेरनकीछाल, बरेंटीपत्रज सोंठ, जावित्री, शतावरि, कैंचके बीज, मूसली गोखरू बंशलोचन, सालममिश्री, चन्दन, अगर, असगन्ध यह सब औषध एक एक टकेभर लेवे कस्तूरी १ रत्ती, भीमसेनी कपूर २॥ माशे मिलावे एक टके प्रमाण रोज खाय तो सब प्रमेह दूर हो नपुंसकता जाय मैथुनशक्ति बढे यह पाक बहुत पुष्ट और बाजीकरण है, स्त्रियों को भी हितकारी है।

मूसलीपाक।

आधसेर सफेद मूसलीका चूर्ण पावभर घी में भोयकर पांचसेर दूधमें खोवा बनावे अनन्तर एक पावभर बबूलका गोंद घीमें भूनकर खोवामें मिलावे और ढाई सेर मिश्री की चाशनी करके पाक बना लेवे, उसमें चिरोंजी, गोला, बादाम की गिरी आध आध पाव मिलाय जायफल, दालचीनी, पत्रज लोंग, छोटी इलायची जावित्री, नागकेशर,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोंठ, मिर्च पीपरि यह सब एक २ तोलाभर डाले शुद्ध वंग होतो १ तोला सोने और चांदी के बर्क ६ माशा लगाय आधी २ छटाँक के लड्डू बनाले यह पाक बाजीकरणहै बल के अनुसार १ लड्डू अथवा २ लड्डू नित्य खाय तो क्षीणता, निर्बलता, मन्दाग्नि, प्रमेह इन रोगों को दूर करता है।

शतावरीपाक।

शतावरी पाकको गोखरू पाककी क्रियाके अनुसार बनावे परन्तु भांग और लोध नहीं डाले, वा पित्त प्रमेह वीर्य की क्षीणता, नपुंसकता को दूर करने वाला यह पाक परम हितकारी है।

आम्रपाक।

८सेर पकेहुए मीठे आंवका रस, मिश्री २ सेर, घी आधसेर इनको मिट्टीके पात्रमें पकाय[illegible]सनी करे, और गाढा होजाने पर धनियां, [illegible]ज, पत्रज, ज[illegible], चित्रक, सोंठ, मिर्च, पीपरि, नागकेशर, इलायची एक एक तोला डाले, और लोंग जायफल, जावित्री, छः छः माशे, कस्तूरी, केशर तीन २ माशे, शहत आध पाव, सबको मिलाय चीनीके पात्रमें धरे, शरदकालमें २ तोला रोज खावे ऊपर से दूध पीवे तो धातुकी वृद्धिहो और पुष्टता हो, क्षयी, ग्रहणी और पांडु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रोग नाशहो यह पाक कुछ २ गरम है, वातप्रकृति वालों को परम हितकारी है।

असगन्धपाक।

आधसेर असगन्ध एक पावभर सोंठ, आधपाव पीपरि एक छटांक स्याह मिर्च सबका चूर्ण कर८ सेर दूध का खोवा बनाय उसमें चूर्ण को मिलावे अनन्तर १ सेर घीमें उसको भूने और ४ सेर मिश्री की चासनी में पाक बनाले तथा एकसेर शहत डाले और इलाचची नागकेशर पीपलामूल तज पत्रज तग[illegible] लौंग जायफल चन्दन नागरमोथा नेत्रबाला आंवला खैरसा बंशलोचन शतावरी चित्रक यह सब [illegible] छः मासी डालकर उतार ले शरदकाल में २ तोला रोज खाय तो आमवात गठिया वादी शूल खांसी शिथिलता यह रोग दूर होजांय गरम प्रकृतिवाला पुरुष यह पाक सबेरे ही खाय, कफ और वात प्रकृति वाले को यह पाक हितकारी है पित्तप्रकृति वाले को अहितकारी जानना।

बादाम का पाक।

बादाम की गिरी १ पावभर गरम जलमें भिगोय देवे और छिलका उतार पिट्ठी पीसले फिर ४ सेर दूध में उसका खोवा बनाय २ सेर मिश्री अथवा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कन्द की चाशनी में पाक बनाकर पिस्ता [illegible] एक २ छटाँक जावित्री जायफल इलायची एक २ तोला और लोंग छः माशे अकरकरा केशर तीन तीन माशे कस्तूरी १ माशे चांदी के बर्क तीन माशे डालकर हलुआ बनाले और चीनी के पात्रमें रख रोज २ तौले प्रमाण शरदकाल में खावे तो वीर्य बल की वृद्धि हो शरीर पुष्ट हो ।

आंवला पाक ।

आंवला पावभर लेकर दूध में भिगोकर [illegible]वा निकाल ले फिर उसमें कन्द वा मिश्री डालकर चासनी पकावे और पेठा पाक में कही हुई औषधी डाले और चांदी के वर्क ३ माशे यथा योग्य लगाय हलुआ सा बनाय चीनी के पात्रमें रखले और रोज २ तोला बसन्त और गर्मी की ऋतु में खाय तो धातुकी वृद्धि हो यह पाक दीपनपाचन है, और ठंडा है पित्त प्रमेह रक्तपित्तमें हितकारी है हृदय की उष्णता को यह हितकारी है ।

नारियलपाक ।

खोपरा १ और दूध १ सेर जायफल जावित्री केशर छःछः माशे ईसबगोलकी भूसी १ तोला तथा चिरौंजी छुआरा अखरोट की गिरी बादाम की गिरी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक एक छटाँक मिश्री १ सेर, प्रथम चारों औषधी खोपरामें भरदे, और मेवा दूधमें पकावे फिर सबकी पिट्ठी बनाय दूध का खोबा करके, अनन्तर पावभर घी में भूनकर पिसी मिश्री मिलाय एक एक लड्डू एक एक छटाँकका बनावे यह पाक धातुको गाढा करता है, शरीरमें बल बढाता है, तथा स्तंभनकारक और ग्राही है, एक एक लड्डू प्रातःकाल सायंकाल खाय।

अदरकपाक।

अदरक १ सेर लेकर उसके छिलके उतार पिट्ठी बना अनन्तर दो सेर दूध में खोवा करे फिर आध सेर घी मिलाय उसे भूनले, तदनन्तर दो सेर कन्द अथवा शक्कर की चाशनी कर पाक बनावे, मिर्च पीपरि पीपलामूल, चित्रक, नागकेशर मोथा पत्रज दालचीनी यह सब एक एक तोला भर डालदे यह अदरकपाक दो तोला से एक छटांक नित्य सेवन करे तो मंदाग्नि व गोंड़ों की पीड़ा दूर होवे, और शीत पित्त खांसी श्वास बात रक्त गुल्म क्षीणता इन रोगों में हित है दीपन और पाचन है जठराग्नि को बढ़ाता है।

मेथीपाक।

मेथीकाचूर्ण १सेर लेकर एक सेर तेलमें एकमहीना भरभिगो रक्खे अनन्तर ४ सेर गुड़ अथवा लाल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शक्करकी चाशनी कर मेथीको मंदी आँचपर उस तेल में भूनकर चाशनीमें डालदे और भूनाहुआ गोंद पावभर सोंठ मिर्च पीपरी दो दो तोला डाले इसमें से दो तोले से ४ तोले तक बहुत सरदी में खाय तो कमर और घुटनोंका दुखना अकड़ना आदि वायुके सब रोग दूर होजाते हैं यह मेथीपाक बहुत गरम है ग्रामीण जन प्रायः इसको सेवन करते हैं ।

त्रिफला पाक ।

एक भाग हर्र दोभाग बहेड़ा चार भाग आँवला इस प्रकार यह त्रिफला लेकर चूर्ण करे और आध पाव लेकर एक पावभर जलमें भिगोय पावभर घी में मंद अग्निसे सेके फिर १ सेर मिश्री की चाशनी में डाले फिर सोंठ मिर्च पीपरि इलायची नागकेशर तेजपत्रज चित्रक पोहकरमूल यह सब चीनी आठ आठ फक्क धनियाँ दो तोले शुद्ध शिलाजीत और कपूर छः छः माशा शहत पावभर मिलावे यह प्रति दिन दोनों समय एक एक तोला अथवा दो दो तोला सेवन करे तो शिर रोग सब प्रकार प्रमेह नेत्रोंसे पानी बहना जुकाम रक्त विकार यह रोग दूर होय

लहसन पाक ।

जो कोई लहसन खाते हैं उनको योग्यहै कि एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेर लहसन बिनाबक्कलकी पिट्ठी चारसेर दूधमें खोवा करे उसमें पावभर घी डालकर भूने,और राई, वासा गुर्च शतावरी, बिधारा, देवदारू सोंठ, चित्रक, सोंफ, अजवायन,त्रिफला,पीपरी,वायविडंग यहसब एक एक तोला, सबके समान मिश्री देकर पाक बनावे, पावभर शहत डालकर देवे, यह १ तोले से तीन तोला तक खाय तो कमरका दुखना, शरीरका अकडना बातव्याधि,गठिया,बुढापेके सब वायुरोग, उरुस्तम्भ आदिरोग नाश होवें, शरीर पुष्ट होय।

शिलाजीत शोधन।

यद्यपि सब धातुओंको शिलाजीत होतीहै परंतुसब लोहसे उत्पन्न शिलाजीत श्रेष्ठ होताहै, जो गरमी में पर्वतसेउपजताहै,लालीलिये स्याहहो गोमूत्रके समान गंधहो और चुम्बकसे चिपक जाय इसके शोधनकी विधि यह कि शिलाजीत का चूराकर जलमें औटावे, फिर दो पहर रखछोडे, जो मलाई सी ऊपर होसो उतारले इसी प्रकार तीसरीवार मलाई

शंका--शिलाजीत फक्त पत्थर का मद है जिसकी उत्पत्ति सब धातुओं से किस प्रकार लिखी।

उत्तर--धातुमात्र की उत्पति पहाड़ों के पत्थरों से है सो जिस धातु के पत्थर से चूने लगे उसी धातु को शिलाजीत समझना सो लोहे के उत्पन्न काला पत्थर से टपकता हुआ उत्तम है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उतारकर इकट्ठी करे, शुद्ध शिलाजीत यही है शिलाजीत को शुद्ध किये बिना काम में न लावे, इसके शोधन पूर्वोक्त प्रकार सबसे श्रेष्ठ है।

मलाई का हलुआ।

आधसेर कन्द पावभर मलाई में डालकर मन्द आंच पर धरे फिर हिलाकर पाव भर घी गरम करके उसमें मिलावे जब हलुआ बन जाय तब इलायची मेवा डाले चांदी के वर्क यथायोग्य लगावे, यह हलुवा एक छटांक से आधपाव तक खाय तो बल बढ़े, और वीर्य अधिक होवे।

त्रिफलाघृत।

त्रिफला (आंवला, हर्र, बहेड़ा) आधसे त्रिकुट ३ छटांक, चित्रक १ छटाँक, गोखरू १ छटाँक, दा हल्दी १ छटाँक, देवदारु १ छटाँक दुर्च १ छटाँक इन सबको १६ गुने जल में बढ़ा क जल चौथाई रहे तब उसको एक सेर घी में पचा जब घी मात्र शेष रह जाय तब एक से दो तोले तक खाय तो वायु, प्रमेह, शिर रोग, नेत्र रोग यह दूर होय।

बादाम का हलुआ।

छिले हुये बादमों की पिसी पिट्ठी को आधसेर शक्कर की चासनी में डाल देवे, और हिलाता रहे जब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिलजाय तब अनुमानसे गरम गरम घी डालकर पकावे और चाँदीके वर्क, इलायची आदि मसाला मिलावे, यह हलुवा वीर्य, व बलको बढाता और रूपकी कान्ति की वृद्धि करता है शरदी के समय इसको आध पाव तक खावे।

बादाम का हरीरा।

बादामकी गिरी, पिस्ते और चिलगोजेकी गिरी एक एक तोला, गेहूँका सूखा सत तीन तोला खसखस तीन तोला मिश्री आधपाव खसखस को आधपाव पानीमें भिगोदे रातभर भिगोनेके अनन्तर प्रातःसमय पीसकर आधसेर जलमें मावा निकाल ले और गिरियों को भी पीस लेवे गेहूँ के सतको भून लेवे फिर गिरी और खसखस का शीरा और मिश्री पीसके डालदे और मंदी आँचसे हरीरा पकावे इस हरीराको अपने अनुसार खायतो चक्कर आना दूर होय शरीर पुष्ट होय और रूखापन जाता रहै।

नेत्रोंकी ज्योति बढाने का उपाय।

मुख और नेत्रों को नित्य शीतल जल से धोना चौथे व आठवें दिन विशेष कर बसन्त ऋतु में त्रिफला के जलसे धोने नयन सुख अंजन लगाना ऋतुओंके अनुसार मस्तक पर अनुलेपन करना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा माखन १ तोला, मिश्री, १ तोला, बादामकी गिरी ५ स्याह मिर्च १५ सबको मिलाकर नित्य खाना। गायका घी २ तोला, केशर ४ रत्ती, अथवा कस्तूरी १ रत्ती, मिलाकर प्रतिदिन नास लेना।

इतरीफल २ तोला, नित्य बसन्तऋतु अर्थात् फाल्गुन चैत्रमें सेवन करना।

आठवें दिन रसोत आदि से नेत्रोंका मल और मलीन जल निकाल देना।

चार चार महीनेमें कोई उत्तम नाश लेकर [illegible] की सफाई कर लेनी चाहिये।

कडी धूपमें चलने व धूपको व अग्निकी आँचके बहुत देखनेसे नेत्रोंकी ज्योति घट जाती है तथा गरम गरम जलसे स्नान करनेसे बहुत गरम शरद पवनके झकोरेसे अधिक धुवां लगने व विशेष भाप लगनेसे, तथा बहुत बारीक वस्तु बार२ देखने व बहुत बारीक अक्षर पढने लिखनेसे भी नेत्रों की ज्योति मन्द पडजाती है।

तथा बहुत सफेद अथवा कोई तेजरंग अधिक देखने, रूखा भोजन करने व शिरपर तेल न लगनेसे व लेटेलेटे गाने, पढने व लिखनेसे, मिट्टीके तेलकी रोशनीसे अधिक परिश्रम व आंसुओंके रोनेसे, और बहुत बड़ा आकार दिखाने वाली ऐनक के लगाने से नेत्रोंकी ज्योति घटजाती है, इन कुवर्तावोंसे बचा रहे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नयनसुख अंजन विधि।

अच्छा शीशा गलावे, और छाछ, गोमूत्र, तेल, कांजी, कुलथी का काढ़ा, त्रिफला का काढ़ा इनमें पृथक् पृथक् तीन तीन वार बुझावे, अनन्तर शिंगरफ को नीबू के रस में घोट हंड़िया औंधी रख मुख बन्दकर उसके नीचे आंच जलावे ऊपर गीला कपड़ा रक्खे जब शिंगरफ का पारा ऊपर जा लगे उतार ठंडाकर धोले, और सुरमे को तपाय २ नीबू में ७ बार बुझावे इस प्रकार तीनों के शुद्ध होजाने पर १ तोला शुद्ध शीशा, और १ तोला पारा, दो तोला शुद्ध सुरमा मिलाकर सात दिन खरल करे, और १० भाग भीमसेनी कपूर मिलावे यह अंजन नेत्रों के सब विकारों को दूर करके ज्योति बढ़ाता है।

दांत दृढ़ रखने का उपाय।

बहुत शीतल जल पीने व अधिक गरम भोजन करने से मसूड़ों का मांस ढीला होजाता है, तथा दांतोंमें जूठन रहने व मैल रहने से, तथा अधिक खटाई खाने से दांत निर्बल होजाते हैं। इस कारण दाढ़ी मूंछ बनवा कर शीतल जल से तुरन्त नहीं धोना, किन्तु उसी समय तेल लगाना। बबूल वृक्ष के बकले में ८ भाग भुनी फिटकरी तथा सेंधा लवण व सोलहवां भाग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अकरकरा, लौंग मिलाकर प्रतिदिन व चौथे दिन मले फिर जलसे धो डाले,इस मंजन से दांत बहुत दृढ़ होजाते हैं, खैर और बबूल की दतौन करने से दांतों की पीड़ा दूर होती है, पियाबांसा के पत्ता चबाने से भी दांतों का दर्द दूर हो जाता है।

श्वेत केशों के कृष्ण करने का यत्न।

लोहचून, त्रिफला, सारिबा इनका काढ़ा भांगरा के रस में करे फिर तेल में पचावे, इसके लगाने से बाल काले होजाते हैं,और खाज भी नष्ट होजाती है। कफप्रकृति वाले पुरुषों के बाल देर में सफेद होते हैं, पित्त की अधिकता और बहुत गरम भोजन करने व गरमी में रहने तथा अति मैथुन करने से तथा परदेश भ्रमण करने से बाल शीघ्र पक जाते हैं इसकी औषधि वायुनाशक और कफवर्द्धक करे।

इस प्रकार संक्षेप से देह की पुष्टि के विषय में लिखा है इस ग्रन्थ में तृतीय भाग में विस्तारपूर्व लिखेंगे

इति श्रीरसराज महोदधि वैद्यक ग्रन्थे ज्योतिर्वित्पण्डित नारायण प्रसाद मिश्रविलिखिते पुष्टिविधानवर्णनं नाम द्वितीयोधिकारः

अथ तृतीयाधिकार।

तत्र कामशास्त्र सम्बन्धी विषय वर्णन।

दो०—पदललाम घनश्यामके, कंजसरिस अभिराम।
बार बार बन्दन करत, नारायण सब ठाम॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब तृतीय अधिकार में, कामशास्त्र को ज्ञान।
लिखत चित्त सकुचाय कछु नारायण धरि ध्यान २

मू०—शम्भुस्वयंभूहरयो हरिणेक्षणानांयेनाक्रियन्त सतत गृहकर्मदासाः। वाचामगोचर चरित्रविचित्रताय तस्मै नमो भवते कुसुमायुधाय ॥ ३ ॥

जिस कामदेव ने अपने कर्तव्य से महादेव ब्रह्मा और हरि (भगवान्) को भी मृगनयनियों के गृहकर्म करने के निमित्त दास बना रक्खा है और नाना प्रकार के चरित्र करने में विचित्र है जिस की चतुरताका वर्णन नहीं हो सकता, ऐसे भगवान् कुसुमायुध (कामदेव) को बारम्बार नमस्कार है।३।

भावार्थ यह है कि ऐसे ऐसे महापुरुषों को जब कामदेव अपने बशमें कर लेता है, तो तुच्छ मनुष्यों की क्या है, परमात्मा ने इस अपार संसार में नाना प्रकार के खेल रचे जिनमें आसक्त हो मनुष्य आनन्द पूर्वक मग्न होते रहते हैं. परंतु कलिकाल में प्रायः सब ही मनुष्य काम कौतूहल में मग्न हो भामिनी के भोग को ही सार समझते हैं।

देखो कामदेवकी कैसी विलक्षण महिमा है, कि जिसने हर एक को अपने आधीन कर रक्खा है, वास्तवमें कामदेवके समान बलवान और सामर्थ्यवान दूसरा कोईभी नहीं है, जिसके प्रभावसे परमोत्तम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन्तान और विषय आनंद सुख प्राप्त होता है इससे बढकर परम हितकारी और आनंदबिहारी कौन है, उस निर्विकार जगदाधार परमात्मा को अनेक धन्यवाद है, जिसने इस जगतके निमित्त सब पदार्थोंको मथकर ऐसे मनोहर मन्मथ को प्रगट किया हैं, संसारमें ज्ञानी ध्यानी और योगी जनतो परमात्माके ध्यान में मग्न रहकर अपना जीवन सफल करते हैं, परन्तु संसारमें जो विषय सुख की कामना करतेहैं उनके निमित्त कामिनी ही सबकाम की सिद्ध करने वालीहै,किसी कविका वचन है, कि-

मू०—द्रव्येषुकिमुत्तमं मृगदृषां प्रेमप्रसन्नं मुखं,घ्रातव्येष्वपि किं तदास्य पवनः श्राव्येषु किं तद्वच ॥ किं स्वाद्येषु तदोष्ठपल्लव रसः स्पृश्येषु किं तत्तनुर्ध्येयं नवयौवन सुहृदयैः सर्वत्र तद्विभ्रमः ॥ ४ ॥

अर्थ—रसिकजनोंके देखने योग्य में समस्त पदार्थोंमेंसे उत्तम पदार्थ क्याहै,सो कहतेहैं कि मृगनयनियों का प्रेममय प्रसन्न मुख,तथा सूंघने योग्य पदार्थोंमें प्रियाके मुखारविन्दकी सुगंधि, सुनेके योग्य कोकिल कंठवत् पिक वयनीकी मधुर वाणीहै स्वादलेने वाले पदार्थोंमेंसे क्या पदार्थ है सो कहतेहैं कि अपनी प्रियतमा वाला के अधरामृत का रस और स्पर्श करने योग्य पदार्थोंमेंसे कोमल अङ्गवाली निज भामिनीका शरीर, तथा ध्यान करने योग्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पदार्थोंमें प्यारीका नवयौवन और काम केलिहै जो पुरुष इस आनन्दको नहीं जानता वह सर्वत्र विभ्रमयुत रहता है अर्थात् उसको विशेष आनन्दनहीं मिलता और जो संसार से विरक्त होकर बनमें जा तप और जो योगसाधन करते हैं उनकी तो बात ही निराली है विषयभोगमें आनन्द तो अनेक हैं परन्तु मूर्खों की कुचालसे विकारभी बहुतही हैं, जो पुरुष मैथुनमें सर्वदा आसक्त रहता है। उसके शरीर में भांति भांति के रोग उत्पन्न होजाते हैं हस्त मैथुन व गुद मैथुन करने वाले मनुष्योंको नपुंसकरोगका भय रहता है इसलिये हस्तमैथुन व गुदमैथुन कभी नहीं करें किन्तु अपनी स्त्री से भी केवल सन्तान निमित्त सम्भोग करना वृथा संभोग करना ही अपने शरीर को निर्बल करना है और पराई स्त्री के साथ कदापि सम्भोग करने की इच्छा नहीं करना।

पर स्त्री गमन निषेध।

मू०—लंकेश्वरो जनकजाहरणेन वाली तारापहारकतयाप्यथ कीचकाख्यः ॥ पांचालिकाग्रहणतो निधनं जगामतच्चेत सापि परदाररतिं न कांक्षेत् ॥ ५ ॥

अर्थ—श्रीजानकीजीको हर लेजाने से (रावण) और तारा (सुग्रीव की स्त्री) का अपहरण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करने वाली बानर, तथा पांचाली (द्रौपदी) को ग्रहण करने से कीचक (राजाविराटका साला)मारा गया, इस कारण मनसे भी पराई स्त्री के साथ रमण करने की इच्छा नहीं करना ।

मू०—उर्वशीसुरतचिन्तयाययौ संक्षयं किलपुरूरवा नृपः ।
रक्षणाय निजजीवितस्य तत्परंमजेत्परवधूं न कामताः ॥६॥

अर्थ-राजा पुरूरवा उर्वशी अप्सरा के साथ निरंतर रमण करनेकी चिन्तासे क्षय होगया अतएव सज्जन अपने जीवनकी रक्षाके निमित्त पराई स्त्री के संग रमण करने की इच्छा कभी न करे ॥६॥

मू०—आयुःक्षयं विकलतांत्यु पहास्यता च निन्दार्थहानिलघुता कुगतिः परत्र ॥ स्यादेव यद्यपिरतेन पराङ्गनायाः प्राहुस्तथाप्यनघमित्यपि कारणेन ॥७॥

अर्थ-पर स्त्रीके संग रमण करनेमें जो जो दोष हैं सो कहते हैं, कि आयुका क्षय, मन में विकलता तथा जगतमें हंसी निन्दा (बदनामी)धनहानि, तुच्छता और मनमें उपरांत दुर्गति होतीहै, इस कारण पर स्त्री के साथ कदापि रमण न करे ॥७॥

पर स्त्रीके साथ रमण करनेसे वीर्य व्यर्थ नष्ट होताहै, बुद्धिवान अपने अमूल्य वीर्यको कदापि नष्ट नहीं होने देते विचार करनेकी बातहै,कि जो वीर्य अति कठिनतासे उत्पन्न होता है, उसको क्षणमा-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रमें शरीर से निकालकर फेंक देना कितनी मूर्खता है अपने वीर्य को नष्ट करना ऐसा है जैसे अपना पांव अपनी ही कुल्हाड़ी से काटना ।

वीर्यकी प्रधानता ।

यह वीर्य ही मनुष्यके शरीर का पूर्ण अंश और इसीसे मनुष्यका जीवनहै, ध्यान देकर सोचो कि आहार किया हुआ अन्न वायुकी प्रेरणासे प्रथम आमाशयमें पहुंचता है, फिर वह आहार मधुर भाव को प्राप्त होकर पाचकपित्तके प्रभावसे कुछ पककर खट्टा होजाताहै, तदनन्तर नाभिमें स्थित समान वायु से प्रेरित हो छटवीं ग्रहणी कलामें पहुंचता है, फिर वही कोठेकी अग्निसे पककर कडवा होताहै, पुनःउसी कोठेकी अग्नि से पककर उत्तम रसरूप होजाता है वही रस नाभिस्थित समान वायुके बलसे प्रेरितहो हृदयमें पहुंचताहै, फिर वही रक्तपित्तसे पककर रुधिर बन जाता है और शरीरमात्रमें रहताहै जो जीवका पूर्ण आधार है उस रक्तसे मांस मांससे मेद, मेद से हड्डी, हड्डीसे मज्जा, मज्जासे वीर्य यह सात धातु क्रम से सवाचार चार दिनमें उत्पन्न होती हैं, तात्पर्य यह कि भोजन किये हुये आहारका एक महीनामें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वीर्य होता है और वीर्य ही में जीवका निवास है जैसा कि सुश्रुत में लिखा है।

मू०-जीवो वसित सर्वस्मिन्देहे तन्त्र विशेषतः ।
वीर्ये रक्ते मले यस्मिन् क्षीणे याति क्षयं क्षणात् ॥८॥

अर्थ-जीव सब शरीर में रहता है परन्तु वीर्य रुधिर और मलमें विशेष करके रहता है जिनके क्षीण होने से जीव क्षणभर में शरीर से निकल जाता है अब देखो जो वीर्य एक महीना में उत्पन्न होता है उसको क्षणमात्र के सुख में नष्ट करदेना मूर्खता नहीं तो क्या है, परन्तु आजकल प्रायः नवयुवक हानि समझ करके भी वीर्य की रक्षा करने की ओर ध्यान नहीं देते।

वीर्य रक्षा।

विशेषकर स्त्रीप्रसंग विशेषमें केवल सन्तान उत्पन्न करनेके निमित्त समस्त आचार्यों का मतहै यदि सन्तानोत्पत्तिही के निमित्त जो बुद्धिमान जन कामके लिये करते हैं उनके शरीरमें वीर्यकी अधिकताके कारण अधिक बल पराक्रम सौन्दर्य साहस बुद्धि और आरोग्यताकी वृद्धिहोती हैयह समझकर वीर्यकी अवश्य रक्षा करना चाहिये जैसेउत्तम बीज औरअच्छा खेत होनेसे धान्य आदि पदार्थ श्रेष्ठ उत्पन्न होते हैं वैसेही रज और वीर्य की श्रेष्ठता से सन्तान भी पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोत्तम होती है, तो श्रेष्ठ रज व वीर्य तव हो सके कि जब पच्चीस वर्ष तक पुरुष और सोलह वर्ष की अवस्था पर्यन्त स्त्री जन ब्रह्मचर्य व्रत धारण करं यथा-

मू०—चतस्रोवऽस्थाः शरीरस्य वृद्धिर्योवनं सम्पूर्णता किंचित्परिहाणिश्चेति, तत्रषोडशादवृद्धिः आपंचविंशतेर्योवनमाचत्वारिंशतःसम्पूर्णता ततः किंचित्परिहाणिश्चेति ॥ पंचविंशेततो वर्षे पुमान्नारी तु षोडशे ॥ समत्वागयवीर्यो तौ जानीयात्कुशलोभिषक् ॥९॥

अर्थ—मनुष्य की चार अवस्था धन्वतरि जीने सुश्रुतमें कहीं हैं, १वृधि २ यौबन, ३ सम्पूर्णता, ४ कुछ हानि इनचारों अवस्थाओंका भेद यहहै किसोलहवर्ष से पच्चीस वर्षतक बृद्धि अवस्था जानो, बृद्धिअवस्था इसकी इस कारण कही कि सोलह वर्ष की अवस्था से वीर्य की बृद्धि होने लगती है, पचास वर्ष की अवस्था तक वीर्य बढ़ता है, अर्थात् इन सब वर्षों में धातुकी वृद्धि होने के कारण वृद्धि अवस्था कहना बुद्धिमान जन ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके इस वृद्धि अवस्था में वीर्य की रक्षाकरे सब आश्रमों की यही अवस्था मूलहै इस अवस्था में वीर्य गिरने अथवा जानबूझकर वीर्य को निकाल देने से शरीर भ्रष्ट हो जाता है, और जन्म पर्यन्त शरीर निर्बल हो जाता है, जिससे सन्तान भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निर्बल उत्पन्न होती है और पच्चीस वर्ष से चालीस वर्ष तक युवाअवस्था जानना, इस पन्द्रह वर्षतक धातु पुष्ट होती है, तदुपरान्त अड़तालीस वर्ष पर्यंत सम्पूर्णता रहती है, अर्थात इन आठ वर्षोंतक वीर्य न घटता है, न बढता है अड़तालीस वर्ष से उपरान्त कुछ हानि होने लगती है सब प्रकार की शक्ति घटती ही जाती है ।

दो०-ज्यों अनाज तरुफलचुकत, जलसींचतमुरझात॥
समय पाय यह देह त्यों, पोषत जात नशात ॥१०॥

पच्चीस वर्ष का पुरुष और सोलह वर्ष की स्त्री इन दोनोंका वीर्य रज उक्त अवस्थापर सम भावको प्राप्त होता है वही अवस्था विवाह की जानना ।

मू०-ऊन षोडशवर्षायामप्राप्तः पंचविंशतिः ॥
यद्याधत्ते पुमान्गर्भं कुक्षिस्थः स विपद्यते ॥ ११ ॥
जातो वान चिरं जीवेज्जीवेद्वा निर्बलेन्द्रियः ॥
तस्मादत्यन्तबालायां गर्भाधाने न कारयेत् ॥ १२ ॥

अर्थ-सोलह वर्ष से कमकी कन्या में पच्चीस वर्षसे कम अवस्था वाला पुरुष यदि गर्भ धारण करता है तो वह गर्भ खंडित हो जाता है ॥११॥

यदि उत्पन्न भी होता है तो बहुत कालतक जीवित नहीं रहता, यदि जीवित रहता है, तो इन्द्रियों से बल हीन होता है, इस कारण अत्यन्त बाला स्त्री में गर्भाधान न करे ॥१२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वैद्यक शास्त्रके कथनसे विरुद्ध समयमें प्रायःविवाह होतेहैं, थोडीही अवस्था वाले वर और कन्या का विवाह करके माता पिता अपने संतानको निर्वीर्यकर देतेहैं जिससे उनका बल, पौरुष नष्ट हो जाताहै, इसके विषयमें अधिक क्या कहा जाय।

दोहा०—बैठे जौनी डारमें, काटत सोई डार।
जियन मरनको नहीं डरत यह गतिहै संसार।१३।

प्रायःमनुष्य संसारमें ऐसे हैं जो विना उपदेश पाये किसी उत्तम बातका विचार नहीं करते परन्तु उपदेश पाकर विचार करतेहैं उन सज्जनोंसे हमारी प्रार्थना है कि आप स्वयं वीर्यकी रक्षा करके अपने तथा पराये बालकोंको वीर्य रक्षा करनेका उपदेश करे, और कुकर्मोंसे तथा दुष्टजनों की संगति से बचते रहैं, कि जिससे उनका बल पराक्रम दिन २ बढता रहै, यहां कामी जन यदि यह प्रश्न करें कि वीर्यको रोकनेसे भाँति २ के रोग उत्पन्नहोतेहैं, तो वीर्य रक्षाकरनेसेक्या लाभ है, इसका उत्तर यह है, कि हे कामीजन! यदि आपकी स्त्रीवर्तमानहै, तोशिष्ट जनोंके नियमानुसार सन्तानोत्पत्ति निमित्त कामकेलिकरो, जिससे तुमारी कामनाभी पूर्ण हो और चित्तभी स्थिररहै, और यदि स्त्री नहींहै, तो आप परमात्मा के ध्यानमें अथवा वेद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शास्त्रके मनन तथा श्रवणमें अपने मनको मग्न रखिये और विषयवासनाकी ओर नाममात्रभी अपनेमनको न जानेदीजिये यदि आपकी बुद्धि अथवा सामर्थ्य परमात्मामें ध्यान लगाने व वेदशास्त्रके मनन करने व सुननेकी न हो तो आप यथाशक्ति व्यापारसे धनो पार्जन करतेहुये यथायोग्य नियमों द्वारा बर्ताव कीजिये, और विषयोंसे मनको हटाकर अपने व्यापार में मग्न रहिये, तो कदापि आपका चित्त चंचल न होगा, अब बताइये कि आपको इससे बढ़कर वीर्य रक्षाका अन्य उपाय क्या बताया जाय, बुद्धिमानों को संकेत ही बहुतहै, परंतु मूर्ख लोगोंको एक बड़ी भारीपुस्तक लिखकर सुनाया जाय तो भी कुछ लाभ नहीं है, इस से अबयह विषय यहीं समाप्त करके आगे स्त्री पुरुषों के लक्षण हम संक्षेप रीतिसे लिखते हैं ॥१२॥

मू०—सम्पूर्णेन्दुमुखी कुरंगनयना पीनस्तनी दक्षिणा ।
मृद्वंगी विकचारविन्दसुरभिःश्याभाऽथ गौरद्युति ॥
स्वल्पाहाररता विलासकुशला हंसस्वना गायनी ।
सव्रीडा गुरुदेवपूतनरता सा पद्मिनी प्रोच्यते ॥१४॥

अर्थ—पूर्णचन्द्रकेसमान मुख जिसका मृगके सदृश नयन जिसके एवं कठोर है स्तन जिसके, बुद्धिमती और कोमल अंगवाली, खिलेहुये कमल की सुगंधि वाली, श्याम अथवा गौर वर्णवाली, थोडा भोजन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करने वाली, कामक्रीडामें चतुर हंसके समान शब्द जिसका, तथा गान करनेवाली, और लाजसेयुक्त, व गुरु देवताओंकी पूजामें तत्पर इन लक्षणों वाली स्त्री पद्मिनी कहाती है ॥ १४ ॥

चित्रिणी लक्षण।

मू०—श्यामा पद्ममुखी कुरंगनयना क्षामोदरी वत्सला।
संगीतागमवेदनी वरतनुस्तुङ्गस्तनी शिल्पिनी ॥
वाद्यापरता मतंगजमतिः सत्कुंकुमार्द्रस्तनी।
मत्तेयं कविमाधवेन कथिता चित्रोपमा चित्रिणीं ॥१५॥

अर्थ—श्यामा (सोलह वर्ष की वाला, अथवा "शीतकाले भवेदुष्णा ग्रीष्मे वासुखशीतला। तप्त कांचनवर्णाभासा स्त्री श्यामेति कीर्तिता१जाड़े के दिनोंमें जिसका शरीर गरम, गरमी के दिनों में जिसकी देह सुख शीतल होवे, और तपाये हुये सुवर्ण के समान कांति जिस की हो, वह स्त्री श्यामा कही है) तथा कमल समान मुखवाली, मृगके नेत्र समान नेत्र वाली, सूक्ष्म उदर वाली प्यारीमूर्ति जिसकी तथा गानविद्याको जानने वाली उत्तमशरीर, ऊँचे स्तनवाली, चित्रविद्यामें चतुर इधर उधरकी बात करने वाली हाथी के बच्चे के समान गतिवाली कुंकुमसे गीले हो रहे हैं स्तन जिसके, और योवनमद वाली कवि माधवने चित्रकी नाईं चित्रिणी कहा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शंखिनी लक्षण ।

मू०—सूक्ष्मांगी कुटिलेक्षणा लघुकुचा संभोगसंवर्द्धिनी । प्रायो दीर्घकचा स्वभावविशुना कष्टोपभोग्यारतौ ॥ पिंगालोल गतिश्च चर्चितरुतप्रांगार्चनाल्हादिनी । नानास्थाननखाग्र-विन्हिततनू सेयं मता शंखिनी ॥ १६ ॥

अर्थ—सूक्ष्म शरीरवाली, टेढेनेत्रों वाली, छोटे छोटे स्तनोंवाली, रतिक्रीडा बढाने वाली, लम्बे लम्बे बालोंवाली, खोटे स्वभाववाली, रति समयमें कष्टसे भोगी जाने वाली, पिंगल वर्ण चंचल गति पीले चंदनसे चर्चित अङ्गों वाली तथा अनेक स्थानों पर नखोंकरकेचिन्हितदेहवाली स्त्रीको शंखिनीकहा है ।

हस्तिनी लक्षण ।

मू०—पीनस्वल्पतनुर्मृशं मृदुगतिः क्रूरा नमत्कंधरा । स्तोकं पिंगलकुन्तलापृथुकुचा लज्जा विहीनानना ॥ बिम्बोष्ठीमहु भोज्यभोजनरुचिः कष्टैकसाध्या रतौ । गौरांगी करिदान गंधरुचिरा सेयं मता हस्तिनी ॥ १७ ॥

अर्थ—कठोर सूक्ष्म शरीर वाली, मन्द गति वाली क्रोध वृत्तिवाली, चलते समय ऊंचे नीचे कन्धोंवाली छोटेछोटे पिंगलवर्ण केश जिसके, और बड़े बड़े कुचों वाली, लाजरहित मुख वाली, कन्दरूकी नाईं होठ जिसके, तथा बहुत भोज्य पदार्थोंको भोजन करनेकी रुचि जिसकी, कामक्रीडामें कष्टसे भोगी जाने वाली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरे अंगों वाली, जिस प्रकार हाथीके मद चूताहै, उसीप्रकार सूद होनेवाली स्त्रीको हस्तिनी कहाहै।१७

पुरुषजाति।

मू०—देवगन्धर्वयक्षाणो ये राक्षस पिशाचयोः ॥
लक्षणः संयुतास्ते स्युर्नरास्तैरेव नामभिः ॥१८॥

अर्थ—१देव, २गन्धर्व, ३यक्ष, ४राक्षस, ५पिशाच इन लक्षणोंसे युक्त मनुष्य उसी नाम वाले कहातेहैं, अब संक्षेप रीति से उक्त पंच महापुरुषों के लक्षण कहते हैं। देवपुरुष लक्षण।

दाता, सत्यवादी, शूर, ज्ञानी, सत्यप्रिय, पवित्र, सुवर्ण समान कान्तिमान, मेघसमान गम्भीर शब्दवाला लम्बी भुजा वाला, बलवान, कामक्रोधसे रहित मधुर भोजी, सुगन्धियुक्त, मृगकी गति के समान चंचल कमलनयन, सुन्दर स्वरूप, साधु स्वभाव, भगवद्भक्त, सतोगुणी, इन लक्षणों वाले मनुष्य को देव संज्ञक जानना।

गन्धर्वमनुष्य लक्षण।

सत, रज, इन दोनों गुणोंसे युक्त, श्याम अथवा चम्पकके समान वर्ण, रूप शील, पवित्रता और गान विद्यासे युक्त, उत्तर शब्द वाला, खट्टे, मीठे भोजन में रुचिवाला, सब से मित्र भाव वर्तने वाला, इन लक्षणों वाला पुरुष गन्धर्वसंज्ञक जानना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यक्षमनुष्य लक्षण ।

दीनरक्षक, दयालु, पुष्ट शरीर, स्थूल उदर, कंठ जंघा, सामान्य अङ्ग, थोडे रोम, रज तम इन दो गुणोंसे युक्त, रक्तवर्ण, रक्त नेत्र, सिंहसमान शब्द, धनवान्, अचलमति, इन लक्षणों वाले मनुष्यको यसंज्ञक जानना ।

राक्षसमनुष्य लक्षण ।

रक्त श्यामवर्ण, भयानक मुख व दाढें, स्थूल व लम्बा शरीर, शीघ्रकोपी, तमोगुणी, कामी क्रोधी, निर्दयी, बिडालके समान नेत्र, दुर्मति, मदिरापान करने वाला, देवसंज्ञक मनुष्योंसे वैरकरनेवाला, कठोर चित्त, इनलक्षणों वाला पुरुष राक्षससंज्ञक जानना ।

पिशाचमनुष्य लक्षण ।

बहुत भोजन करने वाला, अत्यन्त क्रोधी, दयाहीन क्रूरस्वभाव, दुष्टमतिवाला, कूरूप, मलीन वेष अति कटु व अम्ल भोजी, कौआके समान शब्द वाला, बकरीके तद्वत गन्धवाला, विश्वासघाती, पापी, इन लक्षणों वाले मनुष्यकी पिशाच संज्ञा है

चार प्रकारकी स्त्री जो पूर्व कहचुकेहैं, उसमें पद्मिनीको देवी जानना, चित्रिणीको अप्सरा संज्ञावाली जानना, शंखिनी को यक्षिणी संज्ञावाली जानना हस्तिनीको राक्षसी संज्ञक जानना ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा।

पू०—देवीमासरसो यक्षकान्तां राक्षसकामिनी।
कृत्यामिति जगुर्नारीं युक्तां तैरेव लक्षणैः ॥१०॥

अर्थ-१देवी, २अप्सरा, ३यक्षणी, ४राक्षसी, ५कृत्य इनके लक्षणों सेयुक्त स्त्री जिसका लक्षण हो वही, कहाती है, अर्थात् देवता के समान लक्षण होनेसे देवी, अप्सरा के लक्षणों से अप्सरा, यक्षके लक्षणों से यक्षिणी राक्षस के लक्षणों से राक्षसी, इसप्रकार कृत्या के लक्षणों वाली को कृत्या कहते हैं ॥२०॥ कृत्या का लक्षण यह है, कि कलह प्रिया, स्थूल शरीर वाली, अति क्रोध वाली श्याम पीत वा हरित वर्ण लम्बे ओठ व छोटी नाक वाली शिथिल स्तन विभाग, सूखी कमरवाली, ऊंचे पेटवाली तथा तमोगुणवाली, इन लक्षणों वाली को कृत्या जानना, यहपाँच प्रकार की स्त्री, और पाँचप्रकार के पुरुष कहे इस में देव और देवी, गन्धर्व और अप्सरा, यक्ष और यक्षिणी, राक्षस और राक्षसी, पिशाच और कृत्या इनकालक्षण एकहीहै, एक लक्षणवाले पुरुष व स्त्रियोंका संयोग ठीक होता है, विरुद्ध लक्षणोंके संयोगसे परस्पर कलह ईर्षा, द्वेष भाव हो जाताहै, विरुद्धसे योगही अनर्थका हेतुहै, भावार्थ यह है कि यदि देव, गंधर्व, लक्षणवाले पुरुषका विवाहदेवी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व अप्सरा लक्षणवाली स्त्रीके साथ होताहै तो आनंद से दिनव्यतीत होतेहैं, और यदि देव संज्ञक पुरुष हो और राक्षसी अथवा कृत्या स्त्री होतो विवाह होनेसे दुःख होताहै इसकारण इन लक्षणोंको देखकर जहाँ तक हो सके, समान लक्षणों से युक्त नर नारी का विवाह सम्बन्ध करना अन्यथा दुःख शोक कलह उत्पन्न होकर दोनों का जन्म निरर्थक होजाताहै।

तरुण स्त्री प्रशंसा।

मू०-वृद्धोऽपि तरुणीं गत्वा तरुणत्वमवाप्नुयात् ।
वयोऽधिकांस्त्रियं गत्वा तरुणःस्थाद्वगण्यते ॥२१॥

अर्थ-वृद्ध अवस्था वाला पुरुष तरुण [युवा] अवस्था वाली स्त्री के साथ रमण करनेसे युवा हो जाता और अधिक आयु वाली स्त्री के संग संभोग करनेसे तरुण पुरुष बूढा हो जाताहै, यहाँ इस कथन का तात्पर्य यहहै कि जबतक अपनी स्त्री तरुण रहे तबतक प्रयोजन साधनार्थ बलानुसार रमण करना वृद्ध अवस्था होने पर रमण नही करना।

सद्यः प्राणदायक षट पदार्थ।

मू०-सद्यो मांसं नवं चान्नं बाला स्त्री क्षीर भोजनम् ।
घृतमुष्णोदकस्नानं सद्यःप्राणकराणिषट् ॥२२॥

अर्थ-१ताजा मांस, २नया अन्न, ३बालास्त्री, ४दूध का भोजन, ५घी, ६गरम जलसे स्नान, यह छः पदार्थ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शीघ्र प्राणदायकहैं, यहाँजिनदयालुपुरुषोंकास्वभाव मांस खानेका नहींहै, उनकोघीसे बनेहुयेमांस(उड़द) के पदार्थ भक्षण करना चाहिये किसी प्राणीकी हिंसा करके मांस खाना शिष्टजनोंका मत नहींहै, आधुनिक वैद्यक ग्रन्थोंमें मांसकी प्रशंसा कीहै, परन्तु प्राचीन आचार्योंने मांस खानेकी आज्ञा स्पष्टरीतिसेनहींदीहै।

सद्यः प्राणनाशक षट् पदार्थ।

मू०—पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा बालाऽकेस्तरुणं दधि।
प्रभाते मैथुनं निद्रासद्यःप्राणहराणि षट्॥ २३॥

अर्थ-१सडामांस, २ बुड्ढी स्त्री, ३ प्रातःकालकासूर्य, (धूप)४ताजा (मर्महे जहाँतक) दही. ५ प्रातःसमय मैथुन, और ६ बहुत सोना, यह छः वस्तु तत्काल प्राणहरण करते हैं।

मैथुननिषेध काल।

मू०—नोपेयात्पुरुषो नारी सन्ध्य योर्न च पर्वसु।
गोसर्गे चार्धरात्रे च तथा मध्यदिनेपि च॥२४॥

अर्थ-पुरुष और स्त्रीको योग्य है कि दोनों सन्ध्या काल, पूर्व गौ छोड़नेके समय आधीरात तथा मध्याह्न समयमें सम्भोग नहीं करना॥ २४॥

रजस्वला स्त्रीके धर्म।

रजस्वला स्त्री को योग्य है कि तीनदिन पर्यंत घरका कोई पदार्थ स्पर्श न करे, परिश्रम न करे दिनमें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शयन न करे तथा अञ्जन रुदन स्नान उबटन यह कर्म और नख काटना दौड़कर चलना बहुत हँसना अधिक बातचीत उच्चस्वरसे बोलना बादी भोजन इत्यादि नहीं करना और मैथुनकर्म नहीं करना नहीं तो शूल उदावर्त आदि रोग प्रगट होजायँगे और गर्भ रहजानेसेसन्तानमें विकार उत्पन्न होजायगा इसमें सुश्रुत का मतहै दिनको शयन करनेसे गर्भस्थ बालक आलसी अंजन लगानेसे अंधा रुदन करनेसे विकार युक्त नेत्रोंवाला बालक उत्पन्न होताहै स्नान और अनुलेपन करनेसे दुर्बल शरीर,तेल लगानेसे कुष्ठी अथवा रक्तविकार बाला बालक जन्मता है नख काटनेसे कुनखी दौड़कर चलनेसे चंचल हँसनेसे विकृत दाँतोंवाला तथा बहुत बोलने से बाचाल तीक्ष्ण शब्द करनेसे अर्थात् उच्चस्वरसहित बोलनेसे प्रलापी तीक्ष्ण शब्द सुनने से बहिरा वादी पदार्थ भोजन करनेसे उन्मत्त बालक जन्मताहै इस कारण रजस्वला स्त्री हानि कारक बातोंसे दूर रहे यहां यह प्रश्न उठता है कि गर्भस्थिति तो रजस्वला स्नान के उपरान्त होतीहै फिर आगे होनेवाले गर्भमें दोष कैसे उत्पन्न होसकताहै इसका उत्तर यहहैकि धान्यके बोये जानेसे पहलेहीजो गुणदोष पृथ्वीमें उपस्थित होजा-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ते हैं बीजारोपणके उपरान्त उनका अच्छा अथवा बुरा प्रभाव अवश्य होता ही है।

रजस्वला स्त्री को यह भी योग्य है कि जिसरूप आकार के सन्तान की इच्छाहो तो उस समय उसी आकार वाले मनुष्य का मुख अथवा चित्र मन लगाकर देखे और गर्भ रहने पर भी उसी का मुख वा तदाकार चित्र बारम्बार देखती और स्मरण करती रहे यथा।

मू०—पश्येदादावृतुस्नाता यादृशं नरमंगना ।
तादृशं जनयेत्पुत्रमतः पश्येत्पतिं प्रियम् ॥

भावप्रकाशे

अर्थ-ऋतुस्नाता स्त्री प्रथम जिस प्रकारके नर व नारीकोदेखती है उसी प्रकारके पुत्रको उत्पन्नकरती है अतः अपने प्यारे पतिको देखना ॥२५॥

रजस्वला स्नान पीछे अपने प्यारे पतिका अथवा अपने घरमें देवर आदि जो सुन्दर रूपवानहों उनका मुख चौथेदिन देखे रात्रि समय सुखपूर्वक अपने पति के समीप जाकर कामकेलि करे और मनको प्रसन्न रक्खे तथा पतिको प्रसन्न करे। क्योंकि—

मू०—सन्तुष्टो भार्य्यया भर्ता भर्त्रा भार्य्या तथैव च।
यस्मिन्नेवकुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥२६॥

अर्थ—मनुस्मृतिके तीसरे अध्यायमें यह श्लोक है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि जिस कुल में स्त्री से पुरुष और पुरुष से स्त्री परस्पर प्रसन्न रहते हैं वहां नित्य कल्याणकी वृद्धि होती है अर्थात् स्त्री से पुरुष प्रसन्न रहता है और पुरुषसे स्त्री प्रसन्न रहती है वहाँ सम्पदा सुख और सन्तान की बढ़ती होती है ।

इस कारण पुरुषको योग्य है कि अपनी स्त्रीको वस्त्र आभूषण उत्तम भोजन आदि से यथाशक्ति प्रसन्न रक्खें और स्त्री को योग्य है कि हाव भाव कटाक्षउत्तम शृङ्गार तथा मन्दमन्द मुसक्यान युक्त अच्छी अच्छी बातों से अपने पतिको समयानुसार प्रसन्न रक्खे जिससे दोनों में परस्पर प्रीति के कारण सन्तान और सुख की दिन दिन बढती होती रहे ।

मू०—जातीरसशिलाकुष्ठ घोषाटकन चूर्णकैः ।
तिलतैलयुतै र्लेपाल्लिंग वृद्धिः प्रजायते ॥ २७ ॥

अर्थ–चमेली की पत्ती अथवा फूल, पारा, मैनशिल कूट, नैनुवा वृक्ष की छाल, सोहागा इन सबका चूर्ण करके तिल के तेल से लेप बनाय लगावें तो लिंग बढ़ता है ॥ २७ ॥

मू०—बृहतीफलभल्लातकदाडिमी फलवल्कलैः ।
साधितं कटुतैलेन मर्दनाल्लिङ्गवर्द्धनम् ॥ २८ ॥

अर्थ–भटकटैया का फल, भेलावा अनार के फल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का वकल इन सबके चूर्ण को कड़वे तेलमें पचावे फिर छानकर उसतेलको लिंगपर मले तो लिंग बढे॥२८॥

मू०—वराहवसया लिङ्गं मधुना सह लेपयेत्।
स्थूलंदृढंच दीर्घं च पुंसी लिङ्गः प्रजायते ॥२९॥

अर्थ—शूकरकी चर्बीको लेकर शहत में मिलाय लेप करे तो मनुष्यका लिंगदृढ और वृहत होताहै॥२९॥

लिंग ध्वस्त करण।

मू०—क्षौद्रेण च समं घृष्टं पुंडरी कस्य केशरम्।
ध्वस्तं कुर्यात्ततो मेढ्रं रत्यन्यत्रापि संशयः ॥ ३० ॥

अर्थ—शहत के संग कमलकी केसर को घिसकर लिंगपर लेप करे तो रतिसमय लिंग टेड़ा होजाताहै।

योनि कठोर करने का लेप।

मू०—पलाशोदुंबर फलै स्तिलतेलसमन्वितः।
मधुनायोनिमा लिङ्गा पेदृढीकरण मुत्तमम् ॥ ३१ ॥

अर्थ—१ पलाश (ढाक) के फूल २ गूलर के फल इन दोनोंका चूर्णकर तिलके तेलमें मिलाय के तथा उसमें सहतमिलायके योनिमें लेपकरे तो शिथिलहुई भी योनि इस लेपसे कठोर अर्थात तंग होजावे॥३१॥

दूसरा लेप।

मू०—माकंदफलसंयुक्तमधुकर्पूरलेपनात्।
गतेपि यौवने स्त्रीणां योनिर्गाढाति जायते ॥ ३२ ॥

अर्थ—आमका कोमल (कच्चा) फल तथा कोमलपत्र कपूर इन दोनों का चूर्ण कर शहत में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिलाय योनि में लेप करे तो स्त्री की योनि सुकड़ के अत्यन्त तङ्ग होजावे।

भगसंकोचन।

मू०—भगस्य क्षालनं कृत्वा तक्रेणामलकैः श्रृतैः।
रतेऽपि कामिनी कामं बालेवकुरुतेऽनिशम् ॥३३॥

अर्थ—छाछ अथवा आंवला के काढ़ा से भग को धोकर स्त्री रतिकरे तो बालाके समान प्रति दिन रमण करे॥ ३३॥

दो०—कारेलाको मूल घिस, त्रिप्रलेप दिन लाय।
भग संकोचन होत है, अति दृढ़ योनि उपाय॥३३॥

वीर्यस्तम्भन।

मू०—कर्पूरं टंकणं सूतं तुल्यं मधुरसं मधु।
मर्दयित्वा लिपेल्लिङ्गं बाह्यं तथैव च॥ ३४॥
ततः प्रक्षालये ल्लिङ्गं रमेद्रामा यथोचितां।
वीर्यस्तम्भकरं पुंसा सम्यक् नागार्जुनोदितम् ॥३५॥

अर्थ—कपूर, सुहागा, पारा, यह बराबर लेके अगस्तके रस तथा शहतमें मर्दन करके लिंगपर लेप और एक पहर पर्यन्त लेप रहने देवे॥ ३४॥ फिर लिंग को धोकर स्त्रीके साथ क्रीडा करे तो वीर्यस्तम्भन होवे, यह नागार्जुनने कहा है॥ ३५॥

मू०—मधुना पद्म बीजानि पिष्टा नाभिं प्रलेपयेत्।
यावत्तिष्ठत्यसौ लेपस्तावद्वीर्यं न मुंचति ॥३६॥

अर्थ—कमलगट्टे की मींगीको शहतके साथ पीस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर नाभिपर लेप करे तो जब तक लेप रहता है तब तक वीर्य स्खलित नहीं होता है ॥३६॥

मू०—खसपलशुंठीक्वाथःषोडशशेषेण गुडेन विशि पीतः।
कुरुते रतौ नपुंसो रेतःपतनं विनाम्लेन ॥ ३७ ॥

अर्थ—एक पल भर खसको सौंठके काढ़ामें सोलहवां भाग गुड़ मिलाय रातको पीकर स्त्री संग करे मनुष्यका वीर्य स्खलित नहीं होवे, खटाई खाय तब स्खलित होय ॥ ३७ ॥

मू०—सूरणं तुलसीमूलं ताम्बूलैः सह भक्षयेत्।
न मुंचति नरो वीर्यं मेकैकेन संशयः॥ ३८ ॥

अर्थ-जिमीकन्दऔर तुलसीकी जडको लेकरपान के संग खाय तो मनुष्यका वीर्य स्खलित नहींहोता है, यह एक हो एक औषधि उक्त गुण करती है, फिर तीनों खानेसे तो ठीक गुण होनेमें तो सन्देह ही नहीं है ॥ ३८ ॥

दो०-अकरकरा अरु जायफल, जावित्री अहिफेन।
विजया अजवायन भुनो, यह अस्तंभन मैन॥३९॥

मू०—मोचरसाऽमलकीत्वक्काक माचीभिर्नुनिशं सुभगा।
स्वभगे विधाय वर्तिं सुरते कान्तसुखं कुरुते ॥ ४० ॥

अर्थ—मोचरस, आंवला, दालचीनी, काकमाची इनको पीसकर बत्ती बनावे उस बत्तीको स्त्री अपनी योनीमें रखने से पति को सुख देती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्त्रीद्रावणं।

मू०—कसीसं स्फटिकामाजू फलं घंद्रेण घर्षयेत्।
तेन लिंगे कृतालेपाद्रतोः द्रवति चाङ्गना॥ ४१॥
चूर्णितैर्मधुसंयुतैर्महास्थी फलपल्लवैः।
लिंगलेपेन सुरते द्रवो भवितिं योषिताम्॥ ४४॥
शूकरविशरचमधुना लिंगलेपः कृतःसुरतायसरे।
द्रवयति वारवनिता वारम्वारमनेकधा नियतम्॥ ४३॥

अर्थ—कसीस, फिटकरी, माजूफल, इनको शहत में पीसकर लिंगपर लेपकरे फिर संग करे तो स्त्री द्रवीभूत होवे॥४१॥ जल पीपलके फल और पत्तों को पीसकर उसमें शहत मिलाय लिंगपर लेप करे अनन्तर संग करे तो स्त्रीदावण होवे॥४२॥सुअर की बशाको शहत में मिलाय लिंगपर लेप कर स्त्री संगकरे तो बारम्बार स्त्री द्रवीभूत होवे॥४३॥

मू०—मधुसैंधवसंयुक्तं पारावतमलान्वितं।
एतल्लिप्तेन्द्रिये रामा दासीवाकुरुते रतौ॥ ४४॥
कपीन्द्रियं शशीसूतं कुंकुमं कनकं मधु।
एतल्लिप्तेन्द्रिये रामा दासीवत्कुरुते रतौ॥ ४५॥
कांचनस्य फलमलदलना पूजचूर्णसहितेन रसेन।
लिंगलेपमसकृत्प्रहराद्धं विंदुवेगपरणाय निबद्धम्॥४६॥

अर्थ—शहद और सेंधा मिलाय उसमें कबूतरकी बीट डालकर खरलकरे फिर उसका लेपलिंगपरकरके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्त्रीसंग करे तो पुरुषार्थ बढे ॥४४॥ कैंचके बीज, कपूर पारा, केशर, धतूरा, शहद, इनका लेप बनाय लिंगपर लेपन कर संग करे तो शक्ति बढे ॥४५॥ धतूरे केफल मूल, पत्ते, इनके रसमें सुपारीके चूर्ण कोपीस बारबार लिंगपर लेपकरे, तो स्तम्भनरहै ॥४६॥ यह वीयस्तंभनादि प्रकार उन पुरुषोंके निमित्त कहा गया है कि जो पुरुष अपनी स्त्रीके समीप जाकर क्षणमात्र भी कामकेलि नहींकर सकते और तुरंत स्खलित होकर नपुंसकके समान होजाते हैं ।

नपुंसकत्वनाशन प्रकार ।

मू०—तिलगोक्षुरयाश्चूर्णं छागीदुग्धेन पाचितम् ॥
शीतलं मधुना युक्तं भुक्तं षण्ढत्वनाशनम् ॥४७॥

अर्थ—तिल और गोखरूको लेकर चूर्ण करे, और बकरीके दूधमें औटाय ठंडा होनेपर शहद मिलाय सेवन करे तो नपुंसकत्व दूर होजाता है नपुंसकोंका लक्षण और उनकी चिकित्साका प्रकार भलीभांति देखना होतो हमारी बनाई हुई नपुंसकसंजीवनी नामक पुस्तक में देखना ।

बाजीकरण पदार्थ ।

सदैव घी, दूध और मिश्रीका सेवन करना मधुर आहारका भक्षण, तथागेहूँ, उड़द, शालिचांवल, सि-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घाडे, कसेरू, सफेद कटैया, खबूजा पुष्ठकारक कंदमूल महुआ, सेमलके फूल, खजूर, नारियल बादाम, तिल ईख, मुश्ली दाख, मुलहटी. पुनर्नवा, शतावरि, केच के बीज. गोखरू, तालमखाना, असगन्ध. वाराही-कंद, विदारीकंद, अकरकरा. जायफल, जावित्री लौंग बंशलोचन, शालमिश्री, आमले. खसखस. मस्तंगी. मोचरस, पीपर, सौंठ, नागरमोथा, खुरासानीअजवायन यह सब बाजीकरण पदार्थ हैं, तथा पाठा, सुगंधि निर्मल जल. सोना, चाँदी. ताँबा, सीसा, वंग, लोहा. अभ्रक, हरताल, सिंगरफ पारा इनकी भस्म यह अनुपानके साथ सेवन करे बाजीकरण पदार्थ पुष्टिकारक और वीर्यजनक होते हैं, ताँबूल तिलके तेलकामर्दन, मधुर पदार्थ भोजन गरम जलसे स्नान यह सदैव सेवन करनेसे बल और पुष्टि होती है और नपुंसकता का नाश होता है।

लोमनाशक।

मू०—हरितालचूर्णकल्किकालेपात्तेनैव वारिणा क्षुद्यः।
निपतन्ति केशनिचयाः कौतुकमिदमद्भुतं कुरुतेः ॥४८॥
पलाशबिंचा तिलमाषशंखं दहेदपामार्गसपिप्पलेपि ॥
मनःशिलातालक चूर्णलेपात्करोति निर्लोमशिरःक्षणेन।

अर्थ-हरताल और चूनाको लेकर चूनेहीके पानीसे पीसकर लगानेसे बहुत शीघ्र केश गिर पडते हैं, यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अद्भुत कौतुक करे ॥४८॥ ढाक, इमली, तिल, उडद शंख, ओंगा, पीपरि, मैनसिल, हरताल, चूना, इन सबके लेपसेक्षणमात्रमें शिरकेकेश गिरजातेहैं॥४९॥

केशरंजन।

मू०-काशमर्या मूलमादौ सहचरकुसुम केतकीनां च मूलं ॥
लोहं चूर्णं समंगं त्रिफलजलयुतं तैलमेभिर्विपक्वम् ॥
कृत्वा वै लोहभांडे क्षितिजलनिहितं मासमेकं निधाय ॥
केशः काशप्रकाशा भ्रमरकुलनिभा लेपनादेव कृष्णः ॥

अर्थ-कुह्लेरनकीजड़, पियाबाँसाके फूल, केतकी की जड़, सोहचूरा, भाँगरा त्रिफला का जल, और तेल इनको लेकर लोह के पात्रमें भरे फिर पकाय लेवै, अनंतर पृथ्वी में एक महीना तक गाड़ देवै फिर निकाल कर केशों पर लेप करे तौ भौंरा के समान काले और लम्बे केश हो जावें ॥५०॥ तथा त्रिफला, लोह चूर्ण इनको बरावर ले जलमें पीस लेवै फिर दोनों के समीन तेल मिलाय थोड़ी देर धीमी आँचसे पकावै अनन्तर तेलके बराबर भागरा का रस तेलमें पचावै तदनन्तर उस तेल को चिकनी हाँडीमें भरकर पृथ्वीमें गाढ़ देवे एक महीना उपरांत निकाले इस तेलको शिरमें सात दिन लेप करे लेप करके ऊपर पत्ता लपेट देवे वायु न लगने पावै त्रिफला के जल से धोवै, दुग्ध पीवे इसी प्रकार सात दिन करने से भौंराके समान बाल काले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होजावैं ॥

तथा काकमाची, जौ, चमेली, काले तिल इन सब का तेल यन्त्र द्वारा निकाल लेवै और बालों पर मलै तो बाल काले होजावैं ॥

तथा लोहे की कीटी, आँवले, जपाके फूल इनसे मनुष्य सदैव स्नान करै, तो बालों की सफेदाई को नाश करे जैसे गंगा स्नान से पापों के समूह नाश होते हैं वैसे ही बालों की सफेदी नाश होकर सदा काले बने रहते हैं ।

रजवीर्य की प्रधानता ।

मू०–रक्ताधिक्ये भवेन्नारी शुक्राधिक्ये भवेत्पुमान ॥
रक्तशुक्रसमेनैव भवतीह नपुंसकम् ॥ ५१ ॥
आहाराचारचेष्टाभिर्यादृशीभिः समन्वितौ ॥
स्त्रीपुंसौ समुपयातां तयोः पुत्रेषु तादृशः ॥ ५२ ॥

अर्थ–रक्त अधिक होतो कन्याऔर बीर्य अधिक होतो पुत्र उत्पन्न हो और रज वीर्य दोनों समानहो तो नपुंसक उत्पन्न होवे॥५१॥जैसे आहार, आचार, चेष्टाओं से युक्त हुये स्त्री पुरुष रमण करते हैं वैसे ह लक्षणों वालापुत्र उनके योगसे प्रगट होताहै, यहां तव कामशास्त्र सम्बंधी समुचित बातोंको संक्षेपसे लिख करइस अधिकारको पूर्ण करताहूँ आगे चौथे अधिक रमें स्त्रीरोग चिकित्सा और बालचिकित्सा लिखूंगा ॥

दो०–नारायण धरि ध्यान उर नारायण करतार ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रेम सहित वर्णन कियो, यह तृतीय अधिकार।५३।

इति श्री रसराज महोदधि वैद्य ग्रन्थे लखीमपुर अवध निवासी पंडित नारायणप्रसाद मिश्र विलिखिते भाषायां तृतीया धिकारः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थ अधिकार ॥ ४ ॥

तत्र स्त्रीरोग चिकित्सा बालचिकित्सा

दो सिद्धिसदन गजवदनवर, शम्भु सुवनगणराज।
बार बार वन्दन करौं, चरणकमल शिर ताज॥१॥
अब चतुर्थ अधिकार में, नारायण मति भोर ॥
बाला बालक रोग की, कहत चिसित्सा थोरि॥२॥
जिमि तारागण मध्य में, निशि नायक उद्योत ॥
सकल वंश में विमलयश, सुत सुपूत से होत॥३॥
उछल कुपथ जो नर चलहि परहिं तुरत मुख बाय॥
शोधिशोध मगपग धरहि, सोन कबहुँ पछिताय।४।

बन्ध्या स्त्री लक्षण तथा यत्न।

सूत्र० -अथ बन्ध्याष्टकं वक्ष्ये सर्वतंत्रेषु गोपितम् ॥
त्रिपत्नी शुभ्रता सज्जा त्रिमुखी व्याघ्रिणी वकी ॥ ५ ॥
कमली व्यक्तिनी चैव तासां चिन्ह वदाम्यहम् ॥
त्रिपत्नी नाम या बंध्या त्रिपत्ये पुष्पता भवेत् ॥ ६ ॥

अर्थ-अब आठ प्रकार की बाँझ स्त्रियाँ जो सब तंत्रों में गुप्त हैं उनको मैं कहताहूँ कि १ त्रिपत्नी २ शुभ्रती ३सज्जा४त्रिमुखी५व्याघ्रिणी ६वकी॥५॥७ कमली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८व्याक्तिनी अब इनके लक्षण आगे कहताहूँ कि त्रि-
पत्नी नामवन्ध्या तीन पक्ष में रजस्वला होतीहै ॥६॥

मू०–द्वे जीरे श्वेतवचा कर्कोटयश्च फलं समं ॥
तंदुलोदकमिश्रं चोत्थिता सूर्यसम्मुखी ॥ ७ ॥
त्रिदिनं च पिबेन्नारी दुग्धभक्तं च भोजनम् ॥
तेन गर्भो भवेन्नार्याः सत्यमेतन्न संशयः ॥ ८ ॥

अर्थ–डेढ महीना में रजस्वला होने वाली त्रिपत्नी नामा वन्ध्या की औषध यह है कि स्याहजीरा, सफेद जीरा, सफेद वच, कर्कटीका फल, इनको बराबर ले चावलों के जल से पीसकर प्रातः समय उठ सूर्य के सन्मुख बैठे ॥ ७ ॥ तीन दिन तक पीवै और वह स्त्री दूध भात खाय तो निस्सन्देह उस स्त्री के गर्भ स्थित होवै ॥ ८ ॥

मू०–शुभ्रती नाम या वन्ध्या चिन्ह तस्या वदाम्यहम् ॥
गात्रं संकोचते नित्यं देहे चैव विवर्णता ॥ ९ ॥
गर्भस्तस्या न जायेत सज्जा च बंध्या कथ्यते ॥
अप्रमाणैश्च दिवसैस्तस्याः पुष्पंप्रजायते ॥ १० ॥

अर्थ–शुभ्रती नामा बन्ध्या का लक्षण अब कहता हूँ, कि उसकाशरीर सदा सकुचा रहताहै और देहका वर्ण मलीन रहता है॥ ९ ॥ तथा जिसके गर्भ नहीं ठहरता है उसको सज्जा नामा बन्ध्या कहना, उसके रजस्वला होनेमें दिनोंका प्रमाण नहीं होता ॥१०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मूल—जीरे वचां समङ्गा च गृहणीयाच्छुभवासरे ।
कर्कोटी शृखलां कारीं पिष्ट्वा तन्दुलवारिणा ॥११॥
दिनत्रययुतां नारी सूर्यस्य सन्मुखी पिबेत् ।
सदुग्धं षष्ठिकान्नाच भक्षयेदिनसप्तकम् ॥ १२ ॥

अर्थ—शुभ्रती और सज्जी नामा वन्ध्याका औषध यहहै कि दोनों जीरै, बच, मजीठ, ककोडी, हथजोडी इनको अच्छे दिन लाकर चांवलोंके धोवनके जलसे ॥ ११ ॥ तीन दिन सूर्य के सन्मुख बैठकर बन्ध्या स्त्री पीवै, दूध और साठी चांवलोंका भात सातदिन पर्यन्त खावै, तो मैथुनकरनेसे अवश्य गर्भ रहे॥१२॥

मूल—त्रिमुखी नाम या वंध्या तल्लक्षणमिहोच्यते ।
तस्याश्चिह्नं प्रवक्ष्यामि मैथुने सलिलं स्रवेत् ॥
भोजने मैथुने लौल्यं गर्भस्तस्यान विद्यते ॥ १३ ॥

अर्थ—अब त्रिमुखी नामा जो बन्ध्या है उसका लक्षण यह कहाहैकि मैथुन समय में उसकी योनिसे जल गिरने लगता है । और भोजन समय व मैथुन समय में चंचलता करने लगती है, तथा उसको गर्भ नहीं ठहरता है ॥ १३ ॥

मूल—व्याघ्रिण्या उत्तरे कालेऽपत्यमेकं प्रजायते ।
त्रिपद्ययुक्तं प्रदातव्यमौषधं पुत्रदायकम् ॥ १४ ॥

अर्थ—व्याघ्रिणी नाम वाली बन्ध्याके उत्तर भागमें अर्थात् आधी आयु व्यतीत हुये उपरान्त एक पुत्र उत्पन्न होवे । उसकी औषध यह है कि जो जो औषध

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रिपदी नामा बन्ध्याकी कही है, वही पुत्र दायक औषध है ॥ १४ ॥

मूल—वक्यमृक्सूवेत श्वेतं दशमेऽष्टमके दिने ।
असाध्या सा सुसाध्या वा औषधं नैव कारयेत ॥१५॥

अर्थ–बकी नामा बन्ध्या के दशवें आठवें दिन सपेद रुधिर गिरताहै,वह असाध्यहोअथवा सुसाध्य हो उसकी औषधि नहीं करना ॥ १५ ॥

मूल—सलिलं स्रवते योन्याः कमलिन्याः निरन्तरम् ।
असाध्या सा च विज्ञेया ह्यौषधं नैव कारयेत् ॥ १६ ।

अर्थ–कमलिनी नाम वाली वन्ध्या की योनि से सदा जल झरताहै उसको असाध्य जानकर औषध नहीं करना ॥ १६ ॥

मू०–व्यक्तिनी नाम बंध्यायाः प्रमेहो भवति स्फुटम् ।
रक्तापामार्गजं बीजं सर्करामदंकी फलम् ॥ १७ ।
औषधिं रत्नमालां च गोदुग्धेन प्रपेषयेत् ।
त्रिसप्तदिवसं पीत्वा प्रमेहं नाशयेद्ध्रुवम् ॥ १८ ॥

अर्थ–व्यक्तिनी नामा बन्ध्या को प्रमेह अर्थात् सोमप्रदर रोग होता है, उसकी औषधि यहहै, कि लटजीरा के बीज,मिश्री,आंवला ॥१७॥ रत्नजोति नामक औषधि इनको समान भागले गौके दूध के संग पीसकर इक्कीस दिन पर्यंत पीवै तो अवश्य प्रमेह का नाश होवै ॥ १८ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मूल-कृष्णागरुं केशरं च काकोंडी सफलां तथा।
द्वे जारके सवत्साया: चरित्रीलोड्य सा पिबेत्। १९।
दिनत्रयं दुग्धषष्ठिभोजनं गर्भधारकम्॥
लक्षणानि परिज्ञाय ह्यौषधं कारयेत्सुधी:॥ २०॥

अर्थ—काला अगर, केशर, काकोडी, मोरशिखा, दोनों जौरे, इन औषधियोंको पीस कर गौके दूधमें मिलाकर॥ १९॥ वह स्त्री तीन दिनतक पीवे और दूध व साठीचांवल का भात खाय तो गर्भ रहै बुद्धिमान वैद्य इन लक्षणों को भलीभाँति जानकर औषध करे॥ २०॥

तथा॥

रजस्वला स्त्री चौथे दिनस्नानकरनेउपरान्तमैथुन करे यदि उसका मैथुनके अंतमें माथा दुखने लगेतो जाने की फूल जलगया है, उसकी औषध यह है कि लहसन, सेंधालवण, समुद्रफल यह बराबरले पीसकर फोहा बनालेवे उसको तीन दिन भगमें धरे चौथे दिन स्नानकर पतिके साथ रतिकर्म करे तो गर्भ रहै। अथवा रजस्वला स्त्रीका स्नान उपरांत मैथुनान्तमें कोई अङ्गमें दूखे चित्तभ्रम होय, भय लगे, दुःस्वप्न देखे, स्वप्नमेंस्त्रियां बहुतदीखपड़ेतो भूत आदिकदोष जानना, उसका यत्न यहहै कि यंत्र, मंत्र.तंत्र द्वारा भूतादि बाधाको दूर करे, किसी सुयोग्य पंडितसे मंत्र महोदधि आदि मंत्रशास्त्रकेग्रन्थोंमें कहे अनुसार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भैरव, हनुमान अथवा नृसिंह आदि भयहारी देवता का मंत्र जप करावे, यंत्र बनाकर बांधे इत्यादि।

तथा—यदि उस समय स्त्रीका अंग कांपने लगे तो जाने कि फूलमें पवन भरा है, उसकी औषध यह है कि तिल के तेल में एक टङ्क हींग भिगोय फोहा बनाकर तीन दिन भगमें धरे चौथेदिन स्नान करे पुरुषके सङ्ग भोग करे तो गर्भ रहै।

यदि रजस्वला स्त्रीके स्नान मैथुनोपरांत कमर दुखती होतो जाने कि फूलमें मांस बढगया है। उसकी औषध यह है कि हाथीका नख, कालाजीरा, रेंडीका तेल मिला कर पीसे और रूई में फोहा बनाय तीन दिन भग में धरे चौथे दिन स्नान करके पुरुष के साथ भोग बिलास करे तो गर्भ रहै।

जो उस समय रजोवती का शिर दुखे तो जाने कि फूल में अग्नि भरी है, उसकी औषधी यह है कि सेवती के फूल का रस तिलके तेलमें मिलाय उसमें रुई का फोहा बनाय भिगोवे, उसको तीन दिन भग में धरे, चौथे दिन स्नान कर पुरुष के सङ्ग भोग करे तो गर्भ रहै पुत्र होवे।

तथा—यदि स्नान मैथुनोपरांत रजोवतीकी पिंडुरी दुखती हो तो जानना कि फूलमें कीडा लगा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसकी औषध यह है कि बहेरा कायफल, राई, हर्रे इनको पीस गोली बनाय साबुन के जल से फोहा बनाय गोली लपेट कर तीन दिन भग में धरे तो चौथे दिन स्नान कर पुरुष के संग रति-केलि करे तो गर्भ रहै।

जो रजोवती का उस समय पेट दुखता हो तो फूल में शीतलता जानना, उसका प्रयत्न यह है कि जीरा, सुहागा, वच इनको सुहागा के पानी में पीस कर फोहा बनावे फिर उस फोहाको तीन दिन भग में धरे चौथे दिन स्नान करे पुरुष के संयोग से स्त्री के गर्भ रहै।

यदि रजोवती स्त्रीके स्नान मैथुनोपरांत पेडू दुखे तो जाने कि फूलमें जल अडगयाहै, उसका यत्न यह है कि केशर १ माशा, कस्तूरी १ माशा इनकी चार गोली बनाय तीन दिन भगमें धरे चौथे दिन पुरुष के संयोग से स्त्री के गर्भ रहै।

यदि रजोवती स्त्रीके स्नान मैथुनोपरान्त आंखें दुखने लगें तो जाने कि फूलमें जाला छाया है, उसका यत्न यहहै कि बहेरा और आँवला को पीसकर शहद में मिलाय गोली बनावे. और उसको तीन दिन भग में धरे चोथे दिन स्नानकर पुरुषके संग रति करे तो उस स्त्री के गर्भ रहै।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाँझ स्त्रीपुरुष परीक्षा ।

सात दाना गेंहूँ अथवा जौ के अलग २ बोवे और स्त्री पुरुष अलग २ उस में मूत्र करते रहै जिसके मूत्र से वृक्ष न ऊगे उसीका दोष जानना, अथवा काहू तथा कद्दू की जड़ पर दोनों स्त्रीपुरुष मूत्र करें जिसके मूत्र दोषसे वृक्षसूख जावे उसी का दोष जानना, तथा सुरतके समय स्त्री अपनी भग में गायके दूधमें एक कपडा तर करके रखले, यदि दूधकी गन्धि मुखमें आने लगे तो जाने कि स्त्री बाँझ नहीं है, अनन्तर दो पात्रों में पृथक् २ जल भरकर स्त्री पुरुष दोनों पृथक् पृथक् रजवीर्य डाले जिसका अंश जल के नीचे बैठ जावे उसमें कुछ दोष नहीं जानना ।

वन्ध्या होने का कारण ।

स्त्रीके गर्भ न रहनेमें सात कारणहैं प्रथम यहहै कि जैसे बहुत से वृक्ष सदा से फलते फूलते नहीं बैसे ही स्त्री पुरुष भी सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकते, उनकी कोई भी औषधी नहीं है ।

द्वितीय-जब स्त्रीका स्वभाव वादी होताहै तो पुरुष के संग भोग करनेसे उसका पेट और देह फूल जातीहै

तृतीय-मैथुन करते समय स्त्रीकी योनिसे पानी बहने लगताहै, और पसुरिपर दर्दहोताहै, पानी बहनेके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कारण कुछ आनन्द नहीं होता और घिन लगतीहै।

चतुर्थ–स्त्री की धरन पर, चर्बी आ जाती है इस कारण पुरुषके वीर्यका विन्दु ठिकाने तक नहीं पहुँचता, और उसकी नाभि में दर्द होने लगता है, रति से कभी कभी अनिच्छा होती है।

पञ्चम–रजका होना बन्द हो जाता है और शरीर पर पित्ती की नाईं चकते पड जाते हैं।

षष्ठम–स्त्रीकी योनि टेढ़ी अथवा बड़ी हो जाती है, जिससे वीर्य ठिकाने तक नहीं पहुँचताः रति करने के उपरान्त पीठमें दर्द होने लगता है।

सप्तम–भूतादि बाधा होनेके कारण मस्तक दुखने लगता है, रजका रंग श्वेत, पीत वर्ण होता है, कभी कभी रतिसमय लाल २ रुधिर निकलता है।

वन्ध्या रोग निवारण।

कटुतुम्बी, सांठीके बीज, पीपरी, दतूनी, जवाखार, शिल शराबका मसाला, गुड़ इन सबको लेकर अरके दूधके साथ बत्ती बनाय भगमें धरे तो रज पन्न हो और बन्ध्या रोग जाता रहे।

तथा–गँगेरनकी छाल, महुआ, खरैटी की जड, वरगदका अंकुर, नागकेसरकाचूर्ण, पांचटंक गौका, दूध और शहद के साथ पन्द्रहदिन पर्यंत सेवन करे तो बन्ध्या रोग जाता रहे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा–असगंधका काढ़ा गायके दुग्ध और घी के साथ पन्द्रहदिन पर्यंत पीवे तो बंध्यारोग शांत होवे । अथवा सोंठ, मिर्च पीपरि, काले तिल भारंगी और गुड़के साथ एकटंक चूर्णका काढ़ा १५ दिन तक पीवे तो रजोधर्म होकर गर्भ धारण करे ।

भगरोग ।

शार्ङ्गधर मेंयोनि के रोग बीस प्रकार के कहे हैं जिनको यहाँ हमने विस्तार भय से नहीं लिखे, हमको यहाँ औषधी लिखना आवश्यक है इस कारण रोगके लक्षण लिखनेकी आवश्यकता नहीं । भगके भीतर की ओर जो धरन है उस में बाल[illegible] रहता है यह थैली के समान होता है इसकी लंबाई ६ अंगुल से १२ अंगुल तक, यह चौडा और तंग होताहै, स्त्री के डील और अवस्था के अनुसार यह छोटी बड़ी होतीहै, तथा उसकी लंबाई चौडाई लिंग के समानही होती है क्योंकि यह खड्गरूपी लिंग [illegible] मियानहै इस धरणकामुख योनिके समीपही होत[illegible] यदि धरण और लिंग समान न होतो आनन्द न[illegible] प्राप्तहो,इसमें लिंग लगानेसे स्त्रीको ऐसासुख मिल[illegible] है कि वह मस्त होकर पुरुष को लिपट जाती है,उस समय वीर्य गिरनेसे गर्भरहताहै,पुरुषके समान स्त्रीके भी दो अंडकोष होतेहैं जो धरनमें छिपे रहते हैं,भ-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गके भीतर दो छिद्र हैं एक छिद्र फुकने की ओर, दूसरा धरन की ओर है, जिसमें लिंग प्रवेश होता है और इसी में से रजस्वला का रुधिर भी आता है, धरन में दायें बायें दो घर होते हैं, यदि वीर्य दायें ओर पड़ता है तो पुत्र होता है, और बायें ओर ठहरे तो कन्या होती है, स्त्री का धरन चिपटा होता है, बालक होने के समय फैल जाता है ॥

मैथुनदोषविचार ॥

पुरुष को योग्य है कि रजस्वला स्त्री से आदि में तीन दिन तक मैथुन कर्म कदापि न करै, नहीं तो अनेक रोग प्रगट होजाना सम्भव है, और चालीस वर्ष से अधिक अवस्थावाली स्त्री से भी प्रसंग नहीं करना, जो स्त्री पुरुष के समीप बहुत काल से न गई हो, और कुरूप हो उससे भीसं भोग नहीं करना, तथा जिस पुरुषको अजीर्ण हो, थका हो, क्रोधमें हो, भूखा, प्यासा रोगी व दुर्बल अङ्ग हो, शिर दुखता हो, वह पुरुष मैथुन न करै, तथा सरदी, गर्मी जिस समय बहुत हो उस समयभी मैथुन न करै, मैथुन करनेके उपरांत शीतल जल कभी न पीवे नहीं तो अंग कम्पन जलंधर, व झोला रोग उत्पन्न होजाता है, भोजन से तृप्त होकर पेट भरे पर करने से पीलपाँव अण्डवृद्धिरोग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
होजाताहै. भूखमें करनेसे दृष्टि दोष, दुर्बलता, और उन्मत्तता रोग प्रगट होजाना सम्भवहै, अधिक मैथुन करने से नेत्रों की ज्योति मन्द होजाती है ॥

सोमरोगयत्न ।

बारम्बार मूत्र होने को सोमरोग कहते हैं उसमें स्त्री को सुलहठी, और आँवला की समान बुकनी दूध के साथ पीने को देवे ॥

रक्त प्रदररोगयत्न ।

दो०—बहु भोजन बहु शयन से बहु मेथुन संयोग ॥
ताते तिय भगते गिरत, रक्तप्रदर बिन भोग ॥१॥

रक्त प्रदर के दूर करने का उपाय यह है कि रात को फालसे के वृक्ष की छाल को लेके एक कोरे कुल्हडे में भिगोय देवै, प्रातः समय उस जल को छान उसमें मिश्री मिलाय पीवै तो बीस दिन में प्रदररोग शाँति होजावै ॥ तथा रात को कतीरा भिगोय रक्खे, प्रातः समय उसमें थोड़ी मिश्री मिलाय पीवे तो रोग जाता रहै, तथा भारङ्गी, सोंठ. तिल, घी इनके पीने से पुष्प उत्पन्न होता है और रोग शांत होजाता है ॥

तथा-माजूफल, पुरानी सुपारी, कसैला, धायके फूल लोध, गोंद यह एक पावभर लेकर मँजीठ, मोचरस मैदा लकड़ी यह तीन तीन तोला, सोंठ ३ तोला इन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सबको कूटपीस छानकर एकसेर घीमें भिगोबे और दोसेर मिश्रीकी चासनी करके लड्डू बनालेवे अनंतर उसमेंसे प्रतिदिन १ छटांक प्रातःकाल और सायङ्काल खाय तो सब प्रकारका रोग शांत होजाता है।

तथा—चिकनी सुपारीको पीस घीमें मलकर शक्कर मिलाय दो २ तोला प्रतिदिन दोनों समय खाय तो प्रदर रोग शांत होबे।

पुष्पसंजननोपाय।

जबस्त्रीका रजधर्म बंद होजावे तो शीतल औषध करे जिससे मूत्र अधिक उत्पन्नहो।मजीठ,वायविडंग मिर्च,कङ्कोल दो २तोला, अजमोद, सौंफ इलायची का सत, विरोजा, मस्तंगी, एक एक तोला लेकर बारीक पीस दूना शहत मिलाय एक तोलेसे डेढ़ तोला तक दोनों समय खाबे तो रज खुले।

तथा—हींग सोंचरलवण, त्रिकुटा, भारंगी इनको बराबर ले चूर्णकर आठ आठ माशेभर दोनोंसमय गर्म जलके साथ खावे, तो रज खुले।

अथवा कलोंजी थोडेघीमें मिलाकर किसी पात्रमें आंचपरधरे जब गाढ़ा होजाय तब थोड़ा बिरोजा सूखा पीसकर बत्तीबनाय भगमें रक्खे तो रज खुले

तथा—पीपल जवाखार वायविडंग मैनफल सफेद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तोमड़ीके बीज इन सबको पीसकर गोली बनावे वह गोली गोरख मुंडी और दूधके साथ योनिके द्वार में जो स्त्री तीन, पाँच अथवा सात दिन रक्खे तो फूल अर्थात् रज उत्पन्न होता है।

मालकांगनी के पत्ते, राई, बच विजयसार इन औषधियोंको शीतल जल के साथ पीसकर पीवे तो रज उत्पन्न होवे।

गर्भाधानविधि।

सोंठको पीसकर गुड़में मिलाय सात दिन तक पीवे तो गर्भ रहै।

स्याहजीरा, सफेदजीरा, वर्गदकी जटा, पीपल वृक्ष की जटा. ककोड़ी का फल और जड़, शतावरी, इन औषधियों को पीसकर बछरे वाली गौके दूध के साथ तीन दिन पर्यंत सूर्य के सन्मुख प्रातःसमय पीवे और दूध चावल खाय तौ गर्भ रहै।

अथवा असगन्ध की जड़ को कूट छान गौके घीमें मिलाय ऋतुसमय स्नान के अनन्तर तीन दिन तक पीवे तो गर्भ रहे।

तथा—सफेद कटेली की जड़ मोरशिखा की जड़ इनको तीन दिन तक गौके दूध के साथ पीवे तो उसके निश्चय गर्भ रहै।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा–विजौरेके बीज को गौके दूधमें पीवे गौके दूधके संग तीन दिन तक पीवे और चावलों का भोजन करे गर्भ स्थित होवे।

तथा मेढासींगी की जड़, दूधी की जड़ इनको गौके दूधके संग तीन दिन पर्यंत पीवे तो निश्चय गर्भ धारण करे।

तथा–त्रिफला, पीपल, मुनक्का लोध, पुराना गुड़ इनको एक में पीस कपड़ा में लगाकर बत्ती बनाय ऋतु समय तीन दिन तक स्त्री अपने भगमें रक्खे, तो गर्भ रहै।

तथा–पीपल, देवदारु, लाख, गूगल इनको पीस कपड़ा पर लगाय बत्ती बनाय भगमें रक्खे, तो योनि शुद्ध होकर गर्भ रहै।

तथा–सोंठ, नागर मोथा, दोनों हल्दी, खरेंटी, हींग सौंफ, गूगल, इनकी बत्ती बनाय योनि में रक्खे, तो कोठा शुद्ध हो और गर्भ रहै।

तथा–आंवलासार गन्धक, शंख का चूर्ण, इन दोनों के बरावर मैनशिल, इनको जलमें पीस कर योनिपर लेप करे, तो योनिकी पीडा, सूजन, और खुजली दूर होजाती है।

खरैटी, मिश्री, मंगेरनकी छाल, मुलहठी, वर्गदकी जटा, नागकेशर, इन औषधियों को कूट छान कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूध में शहत और घी मिलाय पीवे, तो बाँझ स्त्री भी उत्तम पुत्रको उत्पन्न करती है ।

अथवा अंडीकी गिरी, आंवला, बिजौरे के बीज सफेद कटैयाकी जड़, इनको कूट छानकर बाँझ स्त्री ऋतु समय दूधके संग पीवे गर्भ धारण करे ।

अथवा असगन्धका काढ़ा बनाय उसमें दूधको पकाय उसमें घी मिलाय ऋतुसमय स्नान करके स्त्री पीवे तो वह स्त्री गर्भ धारण करे ।

तथा–असगन्धके अर्कमें दूधको औटाकर मिलावे फिर उसको ऋतुमती स्त्री स्नान करके पीवे, तो वह स्त्री गर्भ धारण करती है ।

तथा–हींग, सफेद दूब, अनार, त्रिकुटा, सेंधा नमक सौंफ, नागकेशर, शतावरी चमेली महुआ इन सब को एक कर्ष लेकर दूधके साथ पुरुष और स्त्री दोनों. तीन दिन तक यह औषध खाय ऊपर से चांवल और दूधका पथ्य लेवे, तो दम्पतिके संयोग से स्त्री के गर्भ रहै ।

गर्भस्तंभन ।

कुह्मारके हाथकी मिट्टी शहत मिलाय बकरी के दुग्ध के सङ्ग पीवे तो गर्भस्तम्भन होता है ।

गर्भस्थिति यत्न ।

मुलहटी, कमलफूल, कमलनाल, इनको गायके दूध

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में औटाय गर्भिणी को पिलावे तो गर्भ स्थितरहै और प्यास, दाह, मूर्छा, छर्दि, अरुचि आदिरोग दूरहोजावें॥

गर्भस्थित यंत्र—नंबर ६

मूलनक्षत्र रविवार के दिन भोजपत्र पर अष्टगन्धसे लिखें और स्त्री अपने बाँ[illegible] पर बाँधे तो गर्भ स्थित रहता है॥

गर्भस्राव तथा गर्भपातभय निवारण॥

बहुत चलने फिरने, दौड़ने व अति मेथुन करने, उपवास करने, सवारीपर चढ़ने, अजीर्ण में भोजन करने जुलाव लेने, वमन करने, तथा ज्वर, उदरपीड़ा, और तीक्ष्ण कटु रूखे, व विषम तथा गर्म भोजन से किम्बा भय तथा दुःस्वप्नों के देखनेसे पेटमें शूल उत्पन्न होकर गर्भ गिरने का भय रहता है, गर्भाधान काल से चार महीना तक गर्भ गिरने को गर्भस्राव और चार महीना के उपरांत गर्भ गिरने को गर्भपात कहते हैं।

इसका उपाय यह है कि कुम्हार के हाथ की मिट्टी शहत, बकरी का दूध, पीने से गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है. अथता सफेद कनेर, मिश्री, केशर, कन्द पाढ, इन औषधियों को शहत में मिलाय खाने से गिरता हुआ गर्भ रुकजाता है॥

तथा—साँठी चाँवल का चूर्ण, और मिश्री बराबर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेकर गूलर की जड़ के काढ़े के साथ पीवे तो गर्भ गिरने से रुक जाता है ॥

तथा-कटियाली, कैथा, बेल, सांठी पटोल, इनकीजड़ को दूध में पकाय स्त्री पीवे ती गर्भपात का भय नहीं

अथवा सालवृक्षके बीज, क्षीरकाकोली, कालेतिल देवदारु, कमलनार, रामपीपरि, शतावरी, गौरीसर, जवासा, राई, कटियाली, सिंघाडा, किशोरा, दाख और मिश्री को औटाकर ७ महीने का गर्भ होजाने पर्यंत प्रतिमास सात दिन पीवे तो सब प्रकार के उपद्रव शान्त होजावें और गर्भ नहीं गिरे ॥

अथवा सोंठ और क्षीरकाकोली को दूध में औटाय पिलाने से गर्भपात का भय नहीं होता है ॥

तथा-जवासा मुलहठी गौरीसर इनऔषधियोंको धेला धेलाभर लेकर दूध में औटाय नवम मास में पिलावे तो गर्भ नहीं गिरे ॥

गर्भपरीक्षा ॥

यदि गर्भमें संदेह हो तो शहत ५ तोला और मेंढ़ का जल १० तोला पीवे जो सो ते समय आँतों में पीडा हो तो जानना कि गर्भ है अथवा भूखमें लहसुनके रसमें वस्त्र को तर करके भग में रक्खें यदि लहसुन की गंध और स्वाद मुखमें जान पडे तो जानना कि गर्भ नहीं है तथा एकदिन निराहार रहकर सब देह को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चादर से ढकले और सुगन्ध वा दुर्गन्ध वस्तु की धूनी दे यदि गंध स्त्री को जान पड़े तो जाने कि गर्भ है अन्यथा नहीं।

कभी२ स्त्री का पेट गर्भकीनांई फूला रहताहै और बालक की चालसी भी जान पड़तीहै यह भी १प्रकार का रोग कभी२ स्त्री के पेटमें होजाता है परीक्षायहीहै जो ऊपर लिखचुकेहैं दूसरी परीक्षा यह है कि पेट में रोग होने से पेट कठोर होता है और हलचल बहुत देरतक रहती है ऐसा गर्भ में नहीं होता।

गर्भरक्षा तंत्र प्रथम मास गर्भरक्षा।

जो पहिले मास में गर्भपीड़ा होतो नील कमलका फूल कमल की दंडी सिंघाड़ा कसेरू इनको शीतल जलमें पीसकर दूधमें मिलाय पीवे तो गर्भ नहीं गिरे अथवा मजीठ चन्दन कूट तगर इनको बराबर लेकर पीसे और दूधके साथ पीवे तो गर्भ रक्षित रहे।

द्वितीयमास गर्भरक्षा।

यदि दूसरे महिने गर्भमें पीड़ा होतो तगर केशर नागिरी कपूर इनको बकरीके दूधमें पीसकर दूधमें मिलाय पीवे तो गर्भ नहीं गिरे और शूल दूर हो अथवा शालममिश्री नीलोफर अदरख कसेरू इन को बराबर लेकर जलमें पीसकर दूध के साथ पीवे अथवा सिंघाडा कसेरू जीरा खजूर बेलपत्र इनको

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ठंडेजलमें पीसके दूधके साथ पीवेतो गर्भसुरक्षितरहै।

तृतीयमास गर्भरक्षा।

यदि तीसरे मास गर्भमें वेदना होतो पद्माखचंद-न खस तगर इनको समान भाग ले शीतल जलसे पीस बकरीके दूधकेसाथ पीवेतो गर्भसुरक्षितरहताहै

चतुर्थमास गर्भरक्षा।

चौथेमास यदि गर्भमें पीड़ा होतो केलाके पत्ता सिंघाड़ा दाख अनारदाना केलाकी जड़ इन सबको शीतल जल में पीसकर बकरी के दूध में छान लेवे और पीवे तो गर्भ सुरक्षित रहता है।

पंचममास गर्भ रक्षा।

यदि पांचवें मास गर्भमें पीड़ा होतो कमलकीदंडी नीलोफर, नागकेशर कमलगट्टा इनको बकरी के दूध में पीसकर पीवे तो गर्भ सुरक्षित होता है।

षष्ठमास गर्भरक्षा।

छटे महीने यदि गर्भमें पीड़ा होतो इलायची बच सुनफका दाख कमलगट्टा नागकेशर इन सब को शीतल जल में पीसकर पीवे अथवा पीपरि पीपला मूल कमलकी केसर कमलका फूल इनको शीतल जल में पीस छान लेवे और बकरी के दूधके साथ पीवे तो गर्भ सुरक्षित रहता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सप्तममास गर्भरक्षा।

तदि सातबें मासगर्भ में बेदना होतो कैथका फल शालममिश्री, इन्इजौ, धानकी खील इनऔषधियोंको अथवा पीपलकी जड़, बड़की जड़, भङ्गरा, सूर्यासुखी की जड़, साँठीकीजड़ लालचन्दन इन सबको समान भाग लेके बकरी के दूधमें पीस और छानकर बकरी के दूध के संग पीबे तो सुरक्षित होता है॥

अष्टममास गर्भरक्षा।

यदि आठबें मास गर्भमें पीड़ा होतो गजपीपरपद्मा खका कमलफूल कमलगट्टा की गिरी धनियाँ इनको ठण्डे जलमें छानदूध मिलापीबे तोगर्भ सुरक्षिततरहै।

नवममास गर्भरक्षा॥

यदि नवें मास गर्भमें पीडा होतो सोंठ, ढाक के पत्ते इलायची, जीरा, गजपीपरी वायविडंग इनको कूटपीस बकरी के दूध के साथ पीबे तो गर्भ सुरक्षित रहताहै॥

दशममास गर्भरक्षा॥

यदि दशबें मास गर्भ में बेदना होतो कमलका दूध मिश्री, सुलहठी, कमलगट्टा, पद्माख, इनको शीतलजल में पीस दूधमें मिलाय पीबे, अथवा नागरमोथा बच सोंठ, केशर, तगर, गोरोचन, केला की जड़ इनको पीस बकरीके दूधके साथ पीबे तो गर्भ सुरक्षिततरहै॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकादशमास गर्भ रक्षा।

यदि ग्वारहवें मास गर्भमें पीड़ा होतो कमलका फूल, कमलगट्टा, कमल की नली मुलहठी इनको शीतल जलमें पीस दूधमें मिलाय पीवे, अथवा त्रिफला, काकरासिंगी, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपरि) सांठीकी जड, नागरमोथा, भङ्गरा, इनको पीसकर बकरी के दूधके संग पीवे, अथवा मजीठ, चन्दन, खस, सिंघाडा कसेरू, गिलोय, पद्माख इनको पीस बकरीके दूधके संग फंकी लगाकर पीवे तो गर्भ सुरक्षित होता है।

द्वादशमास गर्भ रक्षा।

यदि बारहवें मास गर्भ में पीडा होतो सिंघाडा, नीलकमलका फूल, कमलगट्टा, कमलकी डण्डी, इन को शीतल जलमें पीस दूधमें मिलाय पीवे तो गर्भ सुरक्षित रहताहै, इसप्रकारयह गर्भरक्षाका प्रकारवार हमासकालिखा, ज्योतिषके जातक ग्रंथोंमेंकहीं२ तीन वर्ष पर्यन्त गर्भ धारण करना लिखाहै बारहवर्ष पर्यंत गर्भ धारण करनाभी लिखाहैयह आधुनिक समयमें असत्यसा प्रतीत होताहै। विशेष गर्भरक्षा प्रकार देखना होतो बालतन्त्र ग्रन्थ में देखना।

गर्भरक्षायन्त्र। नम्बर ७

अष्टगन्धसे भोजपत्र पर लिखकर गर्भिणी स्त्री की कटिमें बांधे तो गर्भ सुरक्षित रहे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा रक्षायंत्र ॥ नंबर ८

इसयंत्रकोलालचन्दनसे कोरे वस्त्रपरलिखकरजिस गर्भिणीको दुःस्वप्नअधिक दीखपड़तेहों और जबतक डरजातीहो, सोते समयचौंकपड़तीहोउसकोदिखाकर जलायदेवै, तो भूत जाता रहै और गर्भ सुरक्षित रहै।

गर्भपुष्टि कारकयत्न।

गर्भिणी स्त्री अपने आहारविहार को ठीक रक्खै और पुष्टिकारक पदार्थ सेवन करे, तथा नियमानुसार दूध पीवै और गर्भिणी धर्म में कहे अनुसार वर्ताव करे।

बन्ध्याकरणविचार।

बन्ध्या करनेमें हमारा विचार यह है कि जिसकुल व जिस ज्ञातिमें द्वितीय पति होने का निषेध है, उस कुल व ज्ञातिमें बालविधवाको योग्यहै कि विषयवासनासे नितान्त अपने चित्त को हटाकर किसी विशेष उद्यममें लगावै, तथा परमेश्वरके गुणानुवाद व विद्या पढ़ी होनेपर पढ़ने, तथा सुननेमें अपने चित्तको मग्न रक्खै। आज कलका समय कलियुगका दुर्घट है इस में नाना प्रकारके धर्मसंकट आकर उपस्थित होजाते हैं, उन संकटों से बचने का उपाय अवश्य करना उचित है। सो उपाय यह है। एक टंकाभर तीन वर्ष का पुराना गुड़ प्रतिदिन जलमें औटाय पन्द्रह दिन तक पीवै तो बन्ध्या होजावै।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा–वायविडंग, सुहागा का चूर्ण, पीपल इनको ऋतु समय जलमें पीसकर पाँचदिन पर्यन्त पीवे, तो कदापि गर्भ नहीं रहता, अथवा रुई को नीम के तेल में भिगोय पाँचदिन तक भग में धरे तो गर्भ न रहे ॥

गर्भपातन ।

बहुत से ग्रन्थों में गर्भपात की औषधियाँ लिखी गई हैं परन्तु हमने उनको यहाँ नहीं लिखा है क्योंकि अनसमझ मनुष्य इसका दुरुपयोग कर बठते हैं और इसके फल स्वरूप उनको सरकार और समाज के क्रोध का भोजन बनना पड़ता है।

गर्भ में कन्या पुत्र परीक्षा ।

यदि गर्भिणी स्त्री की छाती और उसका पेट दाहिनी ओर बढ़ रहा हो और स्तनरक्तवर्ण हों और रूपरङ्ग बहुत बदला हो और दूध गाढा होतो पुत्र का लक्षण जानना यदि मुख का रस मधुर हो तो पुत्र होगा, अन्यथा कन्या तथा यदि गर्भवती स्त्री चलने के समय पहले दहना पाँव उठावे अथवा उठने के समय हहिना हाथ टेकै, तो जानना कि पुत्र होगा अन्यथा कन्या जानना, तथा गर्भिणी स्त्री अपने दूधमें जूं छोड़े जो वह रेंगने तैरने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगेतो पुत्रजानना, न रेंगैतो कन्याअथवाचुकन्दरकी पत्तीसुंघाकर गर्भिणी उसकानामलेवेयदिछींकआवे तो पुत्र और छींक न आवे तो कन्याका जन्म होवे।

गर्भिणीधर्म।

गर्भधारण करने वालीको उसी समय धकावट, ग्लानि, प्यास, पेडूमें पीडा और प्रसवस्थान में फुर्ती आदि चिन्ह होतेहैं, गर्भ रहकर एकमास अथवा पंद्रह दिनव्यतीत होनेपर स्तनका अग्रभाग कालाहोने लगताहै, आँखोंकेपलक परस्पर चिपकने लगतेहैं, रोम खड़े होतेहैं, उलटी होने लगती है मुख से पानी छुटने लगताहै, और सब अङ्गों में पीड़ा होने लगती है, गर्भ रहनेसे प्रथम तो सत्त्वरूप साधन युक्त चेतना धातु गुण ग्रहण करनेकी प्रवृत्ति होतीहै, सर्व गुणसंपन्न चेतना धातु गर्भ स्थिति पाकर पहले महीनेमें धातु शुक्रऔर ऋतु एकजीवहोनेके कारण घृणालगनेके योग्य होकर विचित्र आकृतिका बनताहै, दूसरेमहीने में शीत भाफ तथा वायु इससे बनाहुवा पंचभूतो का मेल होकर गाढा हो जाताहै तीसरे महीनेमें दो हाथ दो पांवऔरमस्तकऐसीपांचअवयवकीपिण्डीसरीखी आकृति बनती है और दूसरे अङ्ग प्रत्यङ्गोंके विभाग सूक्ष्माकृति होते हैं चौथे महीने में गर्भ के विभाग स्पष्ट मालुम देने लगतेहैं और जीव तथा हृदय प्रगट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होता है इस महीनेमें गर्भ स्थिर होनेके कारण से गर्भिणी का सर्वाङ्ग अतिशय जड़ उसको मालूम होने लगताहै। इसी मासमें गर्भस्थ बालकके इच्छा प्रगट होती है, जिससे वह हिलने डुलने लगता है इसी मासमें गर्भ का हृदय माताके हृदयसे संबन्ध रखने लगताहै,और माताके हृदय स्थानसे रक्तवाहक नाडीसे उसका पालन होता है, इस कारण इस समप गर्भिणी जिस चीज़ की इच्छा करे वही देना चाहिये, उसकी इच्छा भङ्ग न होनेदें,इस महिनेमें गर्भिणी के मुख से पानी छूटना अन्न पर अरुचि,खट्टे हदार्थकी रुचि,शरीर भारी जान पड़ना नेत्रोंकी ढिलाई, स्तनोंमें दूध प्रगट होना, होठऔर स्तनका काला पड़जाना,तथा पांवोंपर सूजनआना यह चिन्ह प्रायः चौथे महिनेमें प्रगट होते हैं, इस महिनेमें गर्भिणीको इच्छित पदार्थ देनेमें यह विचार रखना कि जो चीज गर्भको हानिकारक होसो,नहीं देना,बहुत भारी,गर्म तीक्ष्ण पदार्थ नहीं देना,पांचबें महिनेमें गर्भस्थबालकके मनमेंसंकल्पविकल्पकरने की शक्ति पैदा होतीहै इस महिनेमें गर्भस्थके शरीर में मांस और खूनकी वृद्धि होतीहै इसी कारण गर्भिणीका शरीर कृश होताहै। छटे महिनेमें पदार्थ के निश्चय करने की बुद्धि गर्भस्थ बालक के पैदा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होती है और शरीरमें बल और वर्णकी वृद्धि अधिक होती है इसी कारण छठे महिनेमें गर्भिणी का शरीर बल और वर्ण रहित होताहै। सातवें महिने में नवीन अंग प्रत्यंग विभाग स्पष्ट होकर गर्भ के सब अवयव पुष्ट होतेहैं, आठवें महिनेमें धातु स्थिर होती है इस महिने में गर्भ के संलग्न रहने वाली नाड़ी से माता गर्भ का और गर्भ माता का बारंबार ग्रहण करता है इसी कारण गर्भिणी स्त्री इस महिने में कभी प्रसन्न कभी अप्रसन्न जान पडती है कभी २ इस महिने में बालक पैदा होता है नवें महिने से अंत और दसबें महिने के शुरू में प्रायः सबही स्त्रियां बालक को जनती है। गर्भिणी स्त्री को दूसरे तीसरे महिने में मधुर और कोमल भोजन करना चाहिये, तीसरे महिने में गर्भिणी को दूधके साथ भात खाना चाहिये चौथे महिने में दहीके साथ, पाँचबें महिनेमें दूधके साथ छटे महिने में घीके साथ भात खाना चाहिये गर्भिणी को सर्वदा प्रसन्न चित्त पवित्र और अलंकृत रहना चाहिये और पौष्टिक पदार्थ जो भली भाँति पच जांय सो सब खाना चाहिये निर्मल कपडे तथा साफ बिछौना और सुगन्धित पदार्थ सूंघते रहना चाहिये और इस नियम से रहना चाहिये कि कीसी प्रकार से भी रोग पैदा न

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होजाय। तथा गर्भिणी को दौडना, अधिक चलना, बोझ उठाना, बहुत बातें करना, नदी नाले नांघना, क्रोध व शोक करना, खट्टा, कडुवा, तीखा खाना, लंघन करना, परिश्रम करना नहीं चाहिये, इन सब बातोंसे गर्भिणी को बचना चाहिये, गर्भिणी को कदापि मैथुन करना न चाहिये, क्योंकि मैथुन करना केवल सन्तान हीके निमित्त उचित है, सो जब गर्भ होनेसे सन्तान के प्राप्त होनेकी आशा हुई, मैथुन की क्या आवश्यकता रही, यह संक्षेप से गर्भिणी के योग्य धर्म वर्णन किया।

धात्री शिक्षा।

यदि गर्भिणीको बुखार आवै या शरीर में आलस व चित्तमें ग्लानिहो तो अनुमान माफिक गुर्चबांट कर दूधमें मिलावे। और उसमें आधी छटांक मिश्रीडाल कर पिलावे। अथवा किसमिस, गौरीसर, लालचंदन, मुलहठी, महुवा, खस, नेत्रवाला, धनियां, मिश्री, यह सब औषधी समान भाग लेकर काढा बनाय सात दिन तक पिलावे तो गर्भिणी का ज्वर शांत हो जावे। तथा खस गौरीसर, मुलहटी लालचंदन कमलगट्टा, इनका काढा शहत और मिश्री मिलाय पिलावे तो गर्भिणीका ज्वर शान्त होवे।

तथा यदि गर्भिणी को संग्रहणी रोग होजाय तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चावल के सत्तू. काढा आम और जामुन की छालके को पिलावै तो गर्भिणी की संग्रहणी जाय। यदि गर्भिणी के हृदय शूल हो तो काँस, डाभ, गोरख, अरंड इन सबकी जड़को दूधमें औटावै और छानकर पिला देवै तो हृदय शूल शान्त होजाय ॥

तथा-यदि गर्भिणी का मूत्र रुकगया हो तो डाभ, काँस, दूब इन सबकी जड़ को दूधमें औटाय छान कर पिला देवे, तो मूत्र उतरै ॥

यदि गर्भिणी को बमन होने लगता हो तो गेरू को आँचमें ७ बक्त तपाय २ पानीमें बुझाय २ उस पानी को पिलावै, अथवा बड़ बृक्षको जटाको जलाय उसकी भस्मको शहत में मिलाय चटावै, अथवा कपूर और केचरिया को पीसकर मूंगके बराबर गोली बनावै और वमन होने से पहले अथवा पीछे खाने को देवै १ गोली अथवा २ गोली खिलाने से वमन होना बन्द होवै ॥

बालकउत्पन्न होनेसे पहिले नवेंमासमें गर्भिणीस्त्रीको सूतिकागृहमें रखना, जोगृहभलीभांतिलिपापुतासाफ सुथरा हो देशकालके अनुसार हो, और सब सामग्रीसे युक्तहो, प्रसूत होनेके आठदस दिन पहले गर्भिणीको कुछ २ आनंद जान पड़ता है, तथा उसको अपना शरीर हलका जान पड़ता है श्वाँस भी बिना किसी

Agamnigam DIgital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्लेशके लेनेसे गर्भिणीको सुख होता है ऐसा होनेका कारण यह है कि बालक नीचे कटि प्रदेशमें उतरता है जिस समय बालक उत्पन्न होना चाहता है उस समय गर्भिणी का पेट ढीला होजाता है जंघा में पीडा होने लगती है बार बार मल मूत्र उतरने की शंका होतीहै और जलनसी भी पड़ने लगती है बार २ मलमूत्र व जलन होने का कारण यह है कि उस समय मूत्रस्थान पर बोझ अधिक पड़ता है कभी २ ऐसा भी होता है कि गुदस्थान पर विशेष बोझ पड़नेके कारण दरतबंद होजाता है जो उस समय पेडूपर सुहाता २ सेंके और गुदा पर रंडीके तेलकी पट्टी लगावै प्रसवकाल समीप आतेही गर्भिणीकी कमर पीठकी पसुली में दर्द होने लगता है तथा मूत्र करते समय प्रसबस्थान के मुख पर कफ आदर दर्द करता है योनिमें दुःख होने का कारण इस समय बालक के गर्भाशयसे बाहर गिरने की विधि चलती रहती है इसी कारण से वह कभी संकोच कभी विकाश पाती है ऊपर कही हुई चेष्टा जब स्त्री के होनेलगै तब ठीक जानना चाहिये कि शीघ्र बालक प्रगट होगा उस समय यदि गर्भिणीको सरदी लगै तौ उसको चाह पिलाना चाहिये गर्भ स्थान में दर्द होने लगे तब स्त्री को कुछ चलना फिरना चाहिये जिससे उसको खलास शीघ्र और
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहजनमें होजाता है। प्रसव होना यह स्वाभाविक बात है इस कारण उसको स्वाभाविक रीतिसे ही होने देना योग्य है, उसमें व्यर्थ बुद्धि लड़ाने की आवश्यकता नहीं है, प्रसूताको जो पहले बेदना होती है उसका उपाय करना नही चाहिये, कारण इस बेदनाहीसे गर्भस्थान और दूसरे कई भाग लंबे तथा चौडे होनेसे बालक बाहर आनेमें सुगम होताहै परन्तु दाइ चतुर और ज्ञाता चाहिये।

प्रसूती होनेके लक्षण दिखाते ही गर्भिणीको गरम जलसे स्नान कराना चाहिये, जननेसे पहले दूधकी कांजी उत्तम प्रकारसे बनाने कंठ पर्पन्त पिलाकर उत्तम कोमल बिछौनेपर पांवको पोटली जंघाओं से भिड़ाकर औंधी सुलाना योग्य है, और धायको योग्य हैकि अपने हाथके नख कटा लेवे यदि प्रसूतिके कामर्में निपुण होतो प्रसूति का काम करे। धायको प्रसूत होनेवाली स्त्रीके गर्भस्थानके मुखप्रदेशकोहाथसे मलना चाहिये, फिर जब गर्भके बंद और उनकी साड़ीके बन्द ढीले होने लगें और कमर पिछले भागमें पीठ पसुली, बस्तिप्रदेश और मस्तकमें पीड़ा होने लगे तब धीरे २ मलना चाहिये, गर्भ मार्गमें आने लगे तब अधिक मलना और जब वह मुंहपरआवेतब उनसे भी अधिक मलना चाहिये यह क्रिया गर्भ बाहर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आने तक करनी योग्यहै यदि उपाय ठीक२ न किया जायतो बालक बहिरा गूंगा, मस्तक विकारी, कास श्वास और क्षयरोग युक्त तथा दुर्बल होजाता है।

गर्भका मस्तक जननेन्द्रियके मुखमें आतेही प्रसूति काको युक्तिसे बायीं करवट बदलना। गर्भस्थान बालकका मस्तक बाहर निकलतेही उसको दाहिने हाथ पर लेना परन्तु बलपूर्वक दाबना नहीं चाहिये जैसे २ कन्धा बाँह और शरीरके और २ अङ्ग बाहर आने लगें तब पेटपरसे नीचे तक धीरे २ हाथ से दबाना यदि बालकका मस्तक ही बाहर दिखाई दे तो उसके कांखसे शनैः शनैः युक्ति पूर्वक अंगुली डाल कर बड़ी सावधानीसे उसको बाहर निकालना, इस क्रियामें कुछभी असावधानी हो जानेसे बालक का गला बैठजाता है बालकको तुरन्त सामान्य शीतल जलसे स्नान कराना और उसके गलेका चिकना पदार्थ अंगुलीसे निकाल डालना कभी २ बालक के आस पास पतला पर्दा रहता है उसको देखतेही उसी समय नखोंसे फाड़कर बालकको अलग करना ऐसा करने में बिलंब होने से बालक मर जाताहै।

बालक जन्मते ही उसका श्वास क्रिया प्रारभ होतीहै, और यह रोने लगताहै, उसको श्वासोच्छास

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ठीक प्रकारसे होता होतो उसका नालनाभि से चार अंगुलके अन्तरपर ४वा ६तह डोरेसे कसकर बांधना और वैसेही ४अंगुलके फासलेपर दूसरा बन्द लगाना फिर इन दोनों बन्दके बीच में कैंचीसे काटना इस प्रकारसे नाल काटनेसे रक्तस्राव नहीं होता,नालका टने पर खेरी से संलग्न नालका टुकरा १ स्त्री का बलपूर्वक पकडना चाहिये,ऐसा न करनेसे नालका भाग फिर भीतर चला जाता है।

बालक जन्मतेही न रोवेतो उसे धीरे से एक चि-कोटी काटकर रुलाना, जो रोवेतो जानना कि बालक अभी हांफता है,जबतक बालकहांफतारहे तब तक नाल नहीं काटना,हांफना बन्दकरने का उपाययहहै कि बालक के मुख में से लार निकाल डाले फिर बालक के मुख पर शीतल जल के ४ वा ५ छींटदे तौ बालक रोने लगता है, जो न रोवे बालक को ठण्डे जल में डुवो देना, और तुरन्त निकाल लेना चाहिये यह करने से बालक चोंककर रोने लगता है, यदि इस प्रकार करने से न रोवे तो १ पात्रमें ठण्डा जल और दूसरे पात्र में गुनगुना जल जो बालक को सुहाजाय, जैसा भर लेना चाहिये,एक वार बालक को ठंडे जलके पात्र में दूसरीवार गरम जल में थोड़े ही देर रक्खे, तो बालक चैतन्य हो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जायगा यदि ऐसा करने परभी बालक न रोवेतो उसके पांजरको हाथोंसे कुछ दबाकर अपनेमुखको उसके मुख पररख धीरे२ फूंकदेनी चाहिये, फूकते समयहाथछोड़देऔर बालककोदवादे, यदिइसक्रिया से भी बालक न चेतै तो उसके नाक वतालू को सुरसुराबे और धीरे२ थबकीदे, तदनंतर नालकाट दे, और जो बालक होकर नीला पड़ गयाहो और रोता न हो, तो ठोडीकी औरसे नालको३ अंगुल छोड़ कर काट देना चाहिये, जब १ पैसाभर लोहू उसमेंसे गिरजाय तब बांध देना चाहिये, अधिक लोहू न गिरनेदे, कोई बालक को रोनेके निमित्त थोड़ी रुई तेलमें डुवोदीये पर सेककर उसका धुआंबालककीना-सिका में सुंघाते हैं, इससे पृथक उपाय बालकके रुलाने के निमित्त कोई भी करना योग्य नहीं, नाल काटने में यह ध्यान रहे कि प्रसूती के उदर में दूसरा बालक तो नहीं हैं, क्योंकि जोडिया बालकों का नाल एकही होता है जो नाल में दुसरी और गांठ नहीं दी जाय, तो लोहू वह कर पेट बाला दुसरा बालक मर जाय, नालको नरम कपड़े को पट्टी में लपेट उसके पेट पर बांध दे कपड़े का जो भाग नाल में लगै, वहाँपर मीठा तेल लगाना, ऐसा करने से एकदो दिनमें अपने आप नालगल जाता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है, नाल गलकर गिरजानेपर नाभीसे खून आने लगे तो थोड़ी रुई जलाकर उसकी राख लगादेना, जन्म होनेपर पहिले दो तीन दिन बालक को बताशा पिलाकर रखे प्रसूतिका के दो तीनदिन पीछे दूध पीने योग्य उत्पन्न होताहै, और उस दूधमें रेचक गुण होने के कारण बालक की मलशुद्धी होतीहै, मल शुद्धी ठीक न हो तो थोड़ा अन्डीका तेल शहत में मिलाकर बालक को चटाना।

बालक जन्मतेही स्त्रीको औंधी सुलाकर उसके पेटका भाग बलपूर्वक दवावे ओझरी बाहर गिर जाने पर फिर पेट दवानेकी कोई आवश्यकता नहीं, प्रायः प्रसूत होनेके दस पाँच मिनटमें ही ओझरी बाहर गिरती है, इतने समय में यदि न गिरे तो पेटपर धीरे धीरे हाथ फेरते रहें तो वह बाहर गिरेगी, गर्भाशय से ओझरीका छूटना वा न छुटना जानने के निमित्त जननेन्द्रिय की नाल खींचे, वह छूटी होगी, तो उसी समय बाहर आवेगी, पर नाल खींच कर ओझरी बाहर निकलने का प्रयत्न करना बड़े धोखेका काम है, ओझरी बाहर गिरे पीछे इन्द्रियके आसपास का बिगड़ा हुआ भाग गरम पानी से पोंछ डाले स्त्रीको गरम पानीसे पोंछ डाले,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्त्रीको गरम वस्त्र और मोजे पहिराना और थोड़ी देर चुप चाप सोने देना, सरदी वा दुष्ट पवनकी बाधा नहो इस कारण प्रसूतिका गृहमें सुलगती हुई अँगीठी रखना, प्रसूतिको हलका और पाचनयोग्य पौष्टिक अन्न देना योग्य है उसको कमसे कम दस दिन तक तो बिडङ्ग डाला हुवा गरम जल शीतल करके पीनेको देना, और कोई दूसरा जल नहीं देना, उसी प्रकार बराबर चार दिन तक उसको बिछौनेसे उठने नहीं देना, तथा आगे पांच दिन तक केवल मल व मूत्र करनेके निमित्त उठने दे। प्रसूति में बिना प्रयोजन औषध देनेकी कोई आवश्यकता नहीं है।

प्रसूतीके समय विस्तृत हुवा भाग नियमित कालमें अपने आप संकुचित होजाता है, इसके निमित्त ओषधकी कुछभी आवश्यकता नहीं है।

प्रसूतीको ज्वर, खांसी आदि विकारों के निमित्त देशी वैद्यलोग दशमूलका काढा देते हैं, यह काढा स्त्रीयोंको गुणकारी है। इसमें विशेष देखना हो तो हमारी बनाई हुई नारी सुबोधनी नाम वाली पुस्तक में देखना।

सुखप्रसवविधि ।

मू०—अतःपर प्रवक्ष्यामि सुखप्रसवसिद्धये ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्त्रीणां सुखाय कर्तव्या उपाया अति गोपिताः ॥ १ ॥
कर्ंजपत्रबीजानां कल्केन च भिषग्वरः ॥
तैलं पक्त्वा छगलीक्षीरे योनिं लिंपेत्प्रसूतये ॥ २ ॥

अर्थ—अब आगे स्त्रियों के सुख पूर्वक बालक उत्पन्न होने के अर्थ कहता हूँ, कि स्त्रियों के सुख निमित्त अत्यन्त गुप्त उपाय करने चाहिये ॥ १ ॥ कंजा के पत्ता और बीजों का काढ़ा बना कर उत्तम वैद्य बकरी के दूध समेत तेल में पका कर योनि पर लेप करे तो स्त्री सुख पूर्वक बालक उत्पन्न करे ॥ २ ॥

मू०—मातुलुगं मधूकस्य चूर्णं मधुघृतान्वितम् ॥
पीत्वा ऋते सुखं नारी शीघ्रमेव न संशयः ॥ ३ ॥

अर्थ—बिजौरा की जड़ और महुवा का चूर्ण, शहत घी में मिलाय चटावे तो निस्सन्देह सुख से स्त्री शीघ्र ही बालक उत्पन्न करे ॥ ३ ॥

मू०—इन्द्रवारुणिकामूलं निधिरेयोनिमण्डले ॥
तेन सा सुप्रजं नारी शीघ्रमेव न संशयः ॥ ४ ॥

अर्थ—इन्द्रायन की जड़ को योनि में रक्खे तो स्त्री सुख पूर्वक शीघ्र ही बालक उत्पन्न करे ॥

मूल—वृषस्य मूलं हिमतोयपिष्टं रसोऽथवा पर्पटपत्रजातः ॥
नाभेरधो लेपनतोंगनानां सुखेन गर्भप्रसवं करोति ॥५॥
छागल्याः परिलेपः कांजिकयोगेन काकमाच्यावा ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाभौ सहसा कुरुते गर्भप्रसवं न सन्देहः ॥ ६ ॥

अर्थ–वासा की जड़ को शीतल जल में पीसै अथवा पित्त पापडेके पत्तों का रस लेवे सो नाभि के नीचे लेप करने से स्त्री सुख से बालक उत्पन्न करती है ॥ ५ ॥ कलिहारी की जड़ को पानी में पीसकर स्त्री की नाभि पर लेप करे अथवा काक-माची को कांजी में पीसना नाभि पर लेप करे तो सुख से बालक जने।

मूल—मातुलुङ्गस्य मूलानि मधुकं मधुसंयुतम् ॥
घृतेन सह दातव्यं सुखं नारीप्रसूतये ॥ ७ ॥

मू०–मयूर मूलासनशिग्रुपाठाः व्याघी बाला लांगलिकासमेता ॥
पिष्ट्वारनालेन विलिप्य नाभौ सुखेन नार्य्या प्रसवं करोति ॥८॥

अर्थ–बिजौरा की जड़, मुलहटी, शहद, इनको घी में मिलाय स्त्री को देवे, तो सुखपूर्वक बालक उत्पन्न होवे, ॥७॥ मोरशिखाकी जड़, विजयसार, सहजने की जड़ पाठा, कटेली, खरैंटी, कलिहारी, इन औषधियों को समान भाग लेकर कांजी के जल में पीसकर नाभिपर लेपन करे तो सुखपूर्वक बालक उत्पन्न होवे ॥ ८ ॥

चक्रव्यूह ॥ नंबर ९

यह चक्रव्यूह यंत्र स्त्री को दिखावे तो सुखपूर्वक शीघ्रबालक उत्पन्न होवे परन्तु यह यंत्र खींचते समय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नीचे लिखा मंत्र पढ़ता जाय--और काँसे की थाली पर लाल चन्दन से यह चक्र लिखै ॥

मंत्रस्तु-समुद्रस्योत्तरे तीरे जमल्ला नाम राक्षसी ॥
तस्याः स्मरणमात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत् ॥ ८ ॥

परन्तु यह यंत्रमंत्रसम्बन्धी यत्न सामान्य है वैद्यक शास्त्र में औषधियों को मुख्य मानना ॥

गर्भ में मृत बालक का यत्न ॥

गर्भिणी के गर्भमें बालक हिलता डुलता न हो तो जानना कि पेटमें बालक मर गया है, ऐसी अवस्था में गर्भिणीको बहुत हीकष्ट होना किन्तु मृत्यु होजाना भी संभव है, उसका उपाय यह है कि १ चटाँक गौ का गोबर डेढपाव जलमें घोलकर पिला देवे तो बालक हो पडैगा और साँपकी काँचुली की धूनी भी उस स्थान में देवै और चतुर दाईको बुलाकर बिठा लेवे. तब यह उपाय करे क्योंकि मरे हुवे बालक को पेटसे निकालने में चतुर दाई का काम है ॥

योनिशूल और शोथ ॥

करेला का रस और उडद का आटा पुराने गुड़के साथ खावे तो भगकी निरसता पीड़ा और खुलना दूर होवे तथा गदा पुरैना की पत्तीको पीस लुगदी बनाय योनिमें धरै अथवा गदा पुरैना की जड़को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घी में पीसकर लेप करै तो भगकी पीडा व सूजन दूर होवै ॥

योनि दुर्गन्ध निवारण तथा वृद्धिकरण ॥

नींबके काढेसे योनिको धोनेसे उसमें दुर्गन्ध नहीं रहै, अथवा सफेद चन्दन, अगर, नागर मोथा, कूट, इनको बराबर लेकर भग में लगावै तो योनि की दुर्गन्ध दूर होकर दाह मिटै ॥ तथा ऊंट कटैया की जड़ पीस कर जो स्त्री अपनी नाभि पर लगावै उसकी योनि बढै ॥

प्रसूता ज्वर यत्न।

बंशलोचन, खैरसार, विजयसार, सौंफ, धनियाँ, सफेद जीरा, अजमोद, मोचरस, इन सबको बराबर लेकर कूट लेवै, और दो टंकका काढा दश दिन तक देवे तो प्रसूता का ज्वर जाता है ॥

दुग्ध शोधन ॥

प्रायःप्रसूता का दूध बालकको अवगुण करता है उस दूधकी परीक्षा इस प्रकार करै कि जो दूध जलमें न डूबे और खट्टा, कडुवा, तथा काला व पीला हो वह दूध अच्छा नहीं जानना, तथा जिस दूधमें मलाईसी न पडै और चींटी डालनेपर उसमें चींटी मरजाय उस दूधको न पीने दे, और धायको रखकर उसका दूध

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बालक को पिलावे, और माताका दूध निकालवा दिया करे, स्तन में रहने न दे, नहीं तो स्तन दुखने लगेंगे फिर दूधको शुद्ध करनेके निमित्त मूंगकी दाल का पनीदे, अथवा वच, अतीस, दारु हल्दी, तीन २ माशे घोटकर पानीमें पिया करें, किंबा मूर्वा, मोथा, पाढ, देवदारु, चिरायता, इन्द्रयव, कुटकी, इनका काढा पीवे बालकको जन्म समय दस्त होजाता है यदि नहो तो उसको माताका दूध पिला देना चाहिये, तो भी नहो तो १० बंद अरंडका तेल शहतमें चटा देने से हो जायगा यह दस्त बालक के पेटमें सूखा हुआ होता है इसके साफ न होने से बालक रोगी होने से मर जाता है। जिसको लोग भूत बाधा मानते हैं बालकको तुरंतका दुहा हुआ दूध बकरी वा मौका तीन दिन तक देना चाहिये, उपरान्त माता का दूध पिलावे।

प्रसूताको गरम मसाला बडी अधिक घी से छोंकी हुई मूंगकी दाल खिलाना। कई दिन उपरांत गेहूँ की रोटी खिलाना, और हरीरा तुरन्त से देवे।

दूध बढने का उपाय।

प्रायः स्त्रियों के बालकको पीने योग्य भी दूध नहीं उपजता, जो पीकर बालक का अधार हो, इससे दूध बढनेका उपाय यह है कि शतावरि और शक्कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को गौके दूधमें मिलाकर पीवे तो दूध बढै, और सफेद जीरा व सांठी चांवलकी खीर खाय। तथा शतावरि व सोंफको बराबर ले,कूट छान कर भीगे मनोंके जलके साथ पीवे तो दूध बढे। तथा स्त्रीयों को हल्दी,पीपरि, सोंठ, पीपलामूल, जीरा आदिका हरीरा घीमें भून शक्करकी चासनी सहित बना कर दिया जाताहै, यह भी प्रसूता को दूध शुद्ध करने और अनेक रोगों से बचने के निमित्त परम हितकारी है, इस प्रकार संक्षेप से यह स्त्री रोग तथा उसका उपाय लिखा अधिक देखने की इच्छा होतो नरी सुबोधिनी नाम पुस्तक में देखना अब आगे बाल रक्षा और बाल चिकित्सा का प्रकार संक्षेप रीति से लिखते हैं।

बालरक्षा।

बालककी रक्षा के निमित्त उसकी माता अथवा धाय चतुर होनी चाहिये,बालकोंके नवग्रह १ स्कन्द २ स्कन्द पस्मार,३शकुनि,४रेवती,५पूतना,६ गन्ध पूतना, ७ मुखमण्डिका, ८ शीत पूतना, ९ नैगमेय, यह जुदेही हैं, इन सब के पृथक् पृथक् लक्षण तथा यत्न बालतन्त्र, कुमार तन्त्र आदि ग्रन्थोंमें लिखेहै, यहाँ इस ग्रन्थ में ओषध से बालक की रक्षा तथा चिकित्सा लिखी गई है, दुर्गन्ध तथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपवित्रता से बालकोंको असंख्य रोगों से पीड़ित होना पड़ता है, इससे बालकको अपवित्रता तथा दुर्गन्ध से अलग रखना चाहिये सूतिका के घरमें किसी प्रकार की अपवित्रता तथा दुर्गन्ध न होने दे वायु का ठीक प्रबन्ध रक्खे, सरदी न पहुँचने दे, और शरीर को मैला न रहने दे, जन्म होने उपरांत बालकको एक दस्त करादे, बासी दूध न पिलावै, बालक की विशेष रक्षा का ध्यान न देनेसे बालकके शरीर में नीचे लिखे रोग प्रगट होजाते हैं जैसे कि दूध डालना, अतीसार, उलटी, खाँसी, मुहाँ, हिचकी, और ज्वर होने लगता है, दस्त पतला होता है, शरीर शिथिल होजाता है, प्यास अधिक लगती है, सोता नहीं है दूध नहीं पीता शरीर पीला पड़जाता व कांपने लगता है, कण्ठमें घुरघुराहट होने लगता है मुखमें से झाग लाताहै, रोता बहुत है इत्यादि रोगोंमें से कोई भी रोग जब होता है तब मूर्ख पुरुष व स्त्रियाँ उसपर भूत प्रेतवाधा समझकर झाड़फूंक कराने में लगा औषधी की ओर ध्यान न देकर बालकको हाथ खो बैठते हैं, झाड़फूंक करानेके अतिरिक्त उतारा करना उत्तमहै परन्तु औषध कराने से बढ़कर कुछ भी नहीं है, नीतिका बचन है कि 'व्याधिस्थस्यौषधंमित्रं'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रोगी का मित्र औषधहीहै। जिसको यंत्र बांधकर रक्षा होनेका विश्वास हो वह नीचे लिखा हुआ यंत्र पीपल के पत्ता पर लाल चंदन वा सिंदूर से लिखकर बालक की दाहिनी भुजापर बांधे।

बालरक्षा यंत्र। नं० १०

मङ्गलवारके दिन ओंहं हनुमते नमः इस मंत्र से हनुमान जी का पूजन १०८ वार मंत्र जपै, फिरइस यंत्रका पूजनकर गूगलकी धूप और दीप दे मिष्टा न्न का भोग लगावे ब्रह्मचर्य धारणकर यह मंत्रइस प्रकार बनावे सूत का एक गण्डा लेकर सातवार मंत्र पढ़कर अभिमंत्रित करे और एक एक मंत्र से एक एक गांठ देता जाय तीन गांठ देकर गण्डाको यंत्र सहित बालक की दाहिनी भुजापर बांध दे, परन्तु रोगकी औषध अवश्य करे।

बीसा यन्त्र।

इस बीसायंत्रको भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिख बालककी दाहिनी भुजापर बांधे तो बालक परमात्माकी कृपासे औषधद्वारा सुरक्षित रहता है।

तथा–आर्य्यावर्त देशमें प्रायः सर्वत्र बालकों के आभूषण पहिरानेका प्रचार है इससे बालकको सुख नहीं मिलता, किंतु आभूषण के भार से बालकका चित्त दुःखी होता है बालक को आभूषण न प-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिराने में प्रायः मनुष्य अपनी मर्यादा में हानि समझते हैं इससे इस बात पर अधिक कुछ कहने की आवश्यकता न समझकर इतनातो हम अवश्य लिखना उचित समझते है, कि कहीं जाने आने के समय कुछसुवर्ण के आभूषण यथोचित पहिरा दिये जाँय, घर आने पर सब छोड़े आभूषणों की अपेच्छा उत्तम २वस्त्रों का पहिराना अच्छा है,और 'नराणां भूषणं विद्या, मनुष्योंको सच्चा आभूषण विद्या है बच्चों को जेवर पहिराने वाले माता पिता संतानों के शत्रुहैं क्योंकि दुष्ट लोग जेवर के लोभ से अनेक बच्चों को मार डालते हैं । गरमी और जाड़े में यथोचित वस्त्रों द्वारा बालककी रक्षाकरना गरमी में महीन वस्त्र पहिराना, स्वच्छ पानीसे प्रति दिन स्नान कराना जाड़ोंमें सूर्यकी धूप जिस समय मध्य में हो उस समय उबटन करके स्नान करा और गरम वस्त्र पहिराना रात्रि समय प्रति दिन सरसों के तेल से दीपक द्वारा पाड़ा हुआ काजल उसके नेत्रोंमें आँजना जिससे उसके नेत्रोंमें किसी प्रकार का विकार न होवे, तथा प्रतिदिन आटेकी लुगदीसे उसके रोम दूर करना उबटन करना नहीं तो बालक के शरीरमें अधिक रोम होनेके कारण शरीरकी शोभामें न्यूनता आ जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बालक के कानमें चौथे पांचवें दिन तेल डालना चाहिये, जिस समय दांत निकलते हों उन दिनों प्रतिदिन कानमें तेल डालना उचित है, इससे आँख नहीं दुखतीं और गर्मीसे कनपटी का भड़कना जाता रहताहै, शिरमें जो मैल जम जाता है उसको धोकर नित्य साफ करके तेल लगाना, जिससे मस्तक तररहे और उस तरी के प्रभाव से बालक बुद्धिवान् होवे, बालक के जन्म से ६ दिन तक उसको दूध नहीं पिलाना, केवल घुटी वा गुलाही देना चाहिये, उन दिनों में माता का दूध बहुत ही निर्बल होता है, गूलाही तह है कि एक तोला गुड़, उसमें थोडीसी अजवायन डाले और जल मिलाय औटाकर छान ले, फिर उसको पिलावे । तथा घुटी कई प्रकारकी होती है, उसमें एक घुटी बहुत अच्छी होती, वह यहहै कि मनुक्का मुलहठी, सौंफ, बनफशा, तुरंजवीन अमलतास, इन औषधियों को एक एक मासे लेकर चार तोला शक्कर के संग जल मिलाय औटाले फिर छानकर बालक को पिलायदेवे सरदीकेदि में अजवायन डाले और गरमीमें गुलकन्द मिल लेवे इस घुंटी को आठ दिन में एक वार अथवा दोबार अवश्य पिलावे बालक को दूध बार बार न पिलावे बालक जब भूखा हो तब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पिलावे, बार २ विना भूख दूध पिलाने से बच्चेको दूध पचता नहीं है, और पेटमें दर्द होने लगता है, और दूधको डाल देताहै, जिस समय नींद आतीहो अथवा चित्त क्रोधमें हो, अथवा शोक व कलहयुक्त हो उस समय बालकको दूध न पिलावे, लेटकर दूध पिलानेसे बालकका कान बहने लगताहै, बीस दिन तक बालकको उसकी रुचिके अनुसार दूध पिलावे, तीन महीनेका जब बच्चा होजाय तब रातको दूध पिलाना बन्द कर देवे एक महीने के बालकको एक प्रहर उपरान्त दूध पिलानेकी टेव डाले, गर्भिणी हो जाने उपरान्त बालकको दूध नहीं पिलावे, दिनमेंकेवल एकवार दूध पिलावे और भोजन करानेका अभ्यास करावे, खीर, खिचड़ी, दालभात, साबूदाना अरारोट इन वस्तुओंके भोजन का अभ्यास धीरे २ छुटावे, तीसरे चौथे दिन बालकको शहत और गुलाब का जल मिलाकर पिलाना चाहिये ॥ गरिष्ट भोजन नहींकराना चाहिये और न आपको करना-चाहिये, बच्चे कोनित्यगरमपानीसे स्नान कराना और स्नान कराकर शरीरको तुरंत पोंछ देना चाहिये, बालककोसबप्रकारसेपवित्ररखानाचाहिये, बच्चेकोसर्दी से बचाये रहे और दुर्गन्धसे भी रक्षा करे, नहीं तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मशान रोग होजाताहै, बालकको अफीम नहीं देना चाहिये, इससे उसकी बुद्धि बिगड़ जातीहै, और शिर कमजोर होजाताहै, अपने सुखके निमित्त उसकी माता बच्चेको अफीम देती है, सो ठीक नहीं। तथा बालकको जलेबी व घीके बने पदार्थ नहीं देना चाहिये, न मेवा देना चाहिये, क्योंकि बालक में इतनी ताकत नहीं होती कि जो ऐसे भोजन को पचा सके ऊपर का दूध भी वह पचा नहीं सकता, यदि ऊपरका दूध देनेकी आवश्यकता हो तो दूधमें पानी मिलाकर देना चाहिये, और जलेबी व मेवा आदि देना हो तो बहुत ही कम देना चाहिये जिससे वह पचा सके, ध्यान रहे कि जो भोजन पच जाता है वह गुण करता है, और जो भोजन पचता नहीं वह वल नहीं करता बरन पेटकी पाचन शक्ति को घटा देता है अधिक तर बालक को क्रीड़ा कराना और कुदाना चाहिये जिससे पाचनशक्ति ठीक रहे, सोलह वर्ष के उपरान्त पेटमें पाचनशक्ति ठीक होतीहै उससमय दूध, घी मेवा आदि पदार्थ देने से अधिक बल बढ़ताहै बालक के पांवोंके नख नहीं कटाना क्योंकि नख काटने से दृष्टि मन्द पड़ जातीहै। हाथोंके नख कटा देना चाहिये क्योंकि नख लग-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाने से फोड़ा फुंसी होजाने में कष्ट होता है बालक को बहुत प्यार नहीं करना जिससे उस में अनेक अवगुण उत्पन्न होजांय। तथा झूठ बोलने व किसीको गाली देने का अभ्यास न होने दे और पांव पर पांव रखकर बैठने और सोने नहीं देना, न पांव हिलाने देना चाहिये क्योंकि ऐड़ीके ऊपर पीछेको जो एक पतली नलीसी होतीहै वह जांघोंसे मिली हुई है, पांवपर पांव रखनेसे वह दबती है इसके दबनेसे कमजोरी होती है और उसका पुरुषार्थ मारा जाता है पांव हिलानेसे जांघोंकी दोनों ओरकी नसों पर जोर पड़ता है इसी कारण छोटी खाटभी अच्छी नहींहोती क्योंकि ऐडीकी नली दबकर ताकतकी हानि होतीहै।

यदि बच्चे को विद्वान बनाना होतो जन्मते समय घी शहत मिलाय मोरपंखकी डंडीसे उसके शिरपर "ओंकार,, यह शब्द लिखना फिर नाल छेदनकर स्नानकरानातथाउसको सतोगुणी बनानेके निमित्त उसकी माताको सतोगुणी पदार्थ देना चाहिये।

सो०—पांचवर्षतक प्यार पुनि ताडन दश वर्षतक।
सुतहि मित्र व्यवहार, कीजै षोडश वर्षसों ॥ १ ॥

पांच वर्ष उपरांत बच्चे को विद्या पढ़ानेमें लगाना खाने पहिरने प्यार करना और पढ़ानेमें किसी प्रकार का संकोच नहीं करना क्योंकि विद्या पढ़ने से बुद्धि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बढ़तीहै धनउपार्जन करनेमें बल और पुरुषार्थ बढ़ता है इस कारण विद्या पढ़ना परम आवश्यक है साथही बालकको शिक्षाभी ऐसी ही देनी चाहिये जिससे बालक कुसंगतिमें न फंसने पावै और विषयोंमें मन न लगने पावै। इस प्रकार संक्षेप रीतिसे बालरक्षाप्रकार कहा लिखा अब आगे बाल चिकित्सा लिखते हैं ।

बालचिकित्सा ।

जो रोग बड़े मनुष्यों को होते हैं, वही रोग बालकों कोभी होतेहैं, औषध की मात्रा एक वर्ष के बालकको एकरत्ती, दो वर्षके बालकको दोरत्ती, दोवर्षके उपरांत एक माशा औषध की मात्रा देना चाहिये ।

मू०–शिशोरोगान्परीक्षेत रोदनांमुखवर्णतः ॥
स्तनाकर्षणतश्चापि ततः कुर्याच्चिकित्सितम् ॥ २ ॥

अर्थ–रोने से, बा मुखका रंग देखने से, अथवा स्तन खींचने से बालक के रोग की परीक्षा करै, अनन्तर उसकी चिकित्सा करै ॥ २ ॥

तथा जहाँ हाथ लगतेही बालक रोवै वहाँ दर्द है, ऐसा समझना, बालक तीन प्रकारके १ दूध पीने वाले २ दूध पीने व अन्न खाने वाले, ३ केवल अन्न खाने वाले, केवल पीने वाले बालक की माता को पथ्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कराना, और बालकको हितकारी औषध देनाचाहिये। जो बालक अन्न खाता हो उसको अन्न के साथ औषध देना तथा अन्न और दूध दोनों के आहारसे युक्त बालकको दोनों प्रकार से औषध देन चाहिये ॥

बालकको दूध देने का विचार ॥

यदि बालकको गोका दूध पिलाना होतो दूध के बराबर पानी मिलाकर देना चाहिये, बासी दूध बालकको कभी न पिलाना चाहिये, उदरमें रोगहोनेसे आधा पानी आधा दूध, थोड़ासा बहेड़ा, सोंठ, वा जलके साथ उबालकर जब दूध रह जाय, उसी दूध को पिलाना चाहिये, अजीर्ण और कसर रहनेसे दूध में दो चार बूंद चूनेका पानी मिला देना, जो बालक दूध न पीता होतो उसको जीभसे सेंधानमक, आंवला शहत घी, हर्र, इनको पीसकर लगाना चाहिये ॥

यदि बालक दूधडाल देता होतो मोंथा, पीपरि, काकड़ासिंगी इनको पीसकर शहत के साथ चटावे, अथवा चावलकी खील, आमकी गुठली, सेंधानमक इनको पीसकर शहतमें चटावे, अथवा पीपल, पीपला मूल, चव्य, चित्रक, और कटेली के फलका रस, घी शहत में चटावे॥ तथा यदि बालक दूध न पीता होतो जान ले कि या तो बालकके अङ्गमें कहीं दर्द होरहाहै

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जहाँ हाथ दबाने से बालक कराहे अथवा उसका हाथ जहाँ बारम्बार जाय उसी अंग की औषधी देना, यदि दर्द न हो तो जानना कि मन्दाग्नि रोग हो गया है उसका उपाय यह है कि पटोल के पत्ते, कटेरी के पत्ते, नीम के पत्ते गिलोय के पत्ते अडूसे के पत्ते, इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावै ॥

घांटी ॥

बालकके घांटी हो जाती है दूध नहीं पीता और दुबला होने लगता है चतुर धायको योग्य है कि घांटी को मुखमें अंगुली देकर ठीक करदे ॥ घांटी ऊपर को उठाते समय चूल्हे की राख और काली मिर्च पीसकर उंगलियों पर लगा तथा मुलतानी मिट्टीको सिरकेमें पीसकर तलुवेपर धरदे अथवा माजू लफको सिरकेमें पीसकर अंगुली से घांटी को उठादे ॥

वालकज्वर यत्न ॥

मू०—मुस्ताभयानिम्बपटोलयष्टीकाथःशिशूना ज्वर नाशकारी ॥
तद्वद्गडूचाविहितश्चसारःसुप्रत्ययोऽयंमधुनाऽवलीढः ॥१॥
सितामधुभ्यां कटुकी च लीढासाध्मानशुद्रं ज्वरमाशुहन्यात्॥
तत्कल्कलेपश्च कृतः शिशूना मुहुर्मुहुर्दोषविनाशहेतुः ॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्थ-नागरमोथा, हर, नीमकी छाल, परवल, मुलहठी इनका काढ़ा बनाय बालकको पिलावे तो बालक का ज्वर नाशहो जावे एवं गुर्च का सत शहत में मिलाय चटावे, तो बालक का ज्वर दूर हो जाताहै ॥१॥ मिश्री शहत मिलाय कुटकी को चाटै तो अफरासहित दारुणज्वर शीघ्र दूर होवे तथा कुटकी के कल्कका लेप करने से बालकों का ज्वर शीघ्र ही नाश होता है ।

मू०-पटोलनिम्बधान्यच्छिन्नौद्रवालोहितचन्यनोत्थः
ज्वरं जयेत्सर्वं वं कशालुं धात्रीशिशुभ्यां प्रकरोति पीतः ॥

अर्थ-पटोल, नीमकी छाल, धनियां, गिलोय, लाल चन्दन इनका काढ़ा पिलाने से बालक का त्रिदोष ज्वर दूर होजाता है और उसकी माता इस काढ़े को पीवे तो ज्वर जाता रहै ॥३॥

मू०-अमृतैकौषिता नीरे याममात्रं भवेत् ॥
शिशूनांशमयत्याशु सर्वदोषभवं ज्वरम् ॥४॥
यष्टीमधुतुगाक्षीरीलाजीजनसिताकृतः ॥
लेहः प्रदत्तोबालानामशेषज्वरनाशनः ॥५॥

अर्थ-गिलोयको आठ प्रहरतक जलमें भिगो देवे, फिर घोटकर पिलानेसे बालकके सबप्रकारके ज्वर दूर होवें॥४॥मुलहठी, शहत, बंशलोचन, धान की खील

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रसौत, मिश्री इनका अवलेह बालक को देवे तो सब प्रकार का ज्वर जाता रहै ॥ ५ ॥

मू०–क्वाथःस्थिरागोक्षु विश्वाल्लक्षुद्राद्वयच्छिन्नरुहाकिरातैः ।
बातज्वरं संशमयेत्प्रपीतोबालेन धात्र्या च कृशनुकारी॥६॥
पंचमूलीकृतः क्वाथः पातो बातज्वरापहः ॥

अर्थ–शाकपर्णी, गोखरू, सोंठ, नेत्रवाला, छोटी कटेलीकी जड़,बड़ी कटेलीकी जड़, गिलोय, चिरायता इनका काढा बना बालक और बालक की माताको पिलादे तो बात ज्वर नाश हो जाता है, और जठराग्नि बढती है।४। लघु पंचमूलका काढा बनाय बालकको पिलावे तो बातज्वर दूर होवे ।

तथा ॥

नागरमोथ,हर्रकी छाल, नींमकी छाल, पटोलकी छाल,इ नका काढा शहत मिलाकर पिलाना चाहिये

बालककी गुदा पकजाने का यत्न ।

बालककी गुदा पकजाय तो रसौत और लोध चूर्ण गुदा में भरना ॥

मुख पकने का यत्न ।

यदि बालकका मुख पकजाय तो चमेलीके कोमल पत्ते और फूलोंको शहतमें मिलाय मुखमें लगानेसेअ-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थवा चमेलीके पत्तोंओ रफूलोंको उवाल शीतलकर कु ल्ले करावे तो बालकका मुखपाक रोग दूर होजाताहै।

दृष्टि (नजर) लगने का यत्न ।

यदि बालकको किसी की दृष्टि (नजर)लगगई हो तो घी तेल आदिकी मालिश कराकर गरम जलसे स्नान कराना और लाल मिर्च,भूसी,नमकको बाल क परसे उतारकर अग्निमें डालदेना । तो बालक का दृष्टि ज्वर दूर होजाता है ।

नाभि व ठुड्डी पकजाने का यत्न ।

लोध, हल्दी, फूलप्रियंगु इन सबको शहत में बारीक पीसकर ठुड्डीके ऊपर लेपकर देवे अथवा पीली मिट्टीको आग में गरमकर दूध डाल उसका बफारा देवे तथा कपडेको गरम करके सेंक देवे तो सूजन जाती रहे यही औषध नाभि पकजाने पर करना तो सूजन जाती रहेगी ।

पेट फूलने व पेचिस का यत्न ।

यदि बालक का पेट फूल गया हो और बालक सुस्त रहता हो तो सौंठ, रेवन्तचीनी, सौंफका अर्क इन सबको मिलाकर दोनों खिलावे यहां सोंठ १ चावल भर रेवन्त चीनी २ चावलभर और सोंफ का अर्क ३ माशे भर लेना और दो खुराक बनाना ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि बालकको पेचिश होतो तज२ चावल भर,हींग चौथाई चावल, सौंफ १ चावल, सोयेका बीज चौथाई चावल,बबूलका गोंद १चावल इनसबको मिलाय एक खुराक बनावे,पानीमें औटाकर उतारलेवे जो बालक बहुत छोटा हो तो आधी खुराक देवे।

उदर रोगयत्न।

यदि बालकको पतले दस्त आते हों तो नेत्रवाला धायके फूल, बेलकी गूदी, गजपीपरी इनका काढ़ा अथवा चूर्ण खिलानेसे दस्त बन्द होतेहै अथवासफेद कत्था आधी रत्ती, हींग आधा चावल सौंठ २ चावल, स्याहजीरा २ चावल, शोराकलमी १ रत्ती, माजूफल १ चावल फटकरी की खील २ चावल इनको पिसकर मिलाने से यह एक खुराक सायंकाल प्रातःकाल जलसे उतारे।

यदि बालक दो महिनेका हो तो इस खुराकका आठवां भाग देवे तो बालकके दस्त बन्द होतेहैं

ज्वर अतीसारयत्न।

यदि बालकको ज्वरभी आताहो और दस्त भी आते हों तो पीपल अतीस, नागरमोथा, कांकरासिंगी, इनका चूर्ण शहतमें चटावे तो ज्वर अतीसार दूर होय, इस से दूधका गिरना और खाँसी का भी नाश होजाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्यास और ज्वर अतीसार यत्न ॥

सोंठ, अतीस, मोथा, इन्द्रजव, इनका काढ़ा पिलानेसे ज्वर, अतीसार और प्यासका बिनाश होजाता है

आंव अतीसार यत्न ॥

जो बालकके दस्त आते हों और आंव भी गिरता हो तो अजमोद, पीपरि, वायविडंग, इनको बारीक पीसकर चावल के पानी से पिलावै, अथवा अतीस भुनीहींग, मोथा, कुडा, चीता, सोंठ, इनका चूर्ण गर्म जलके साथ देवै ॥

रक्त अतीसार यत्न ॥

जो बालकको खूनके दस्त आते हों तो सोंठ और पाखाणभेद को पानी में घिसकर पिलावै, अथवा कुडे के बीज, सफेद जीरा, जल के साथ पीसकर मिश्री मियाय लैवे फिर पिलावै, तथा मजीठ धाय के फूल, कमल के फूल, मोचरस इनको पीसकर सांठी चावल के माड़ में देवै ॥

पेट बढ़ने पर।

यदि बालकका पेट बढ़ता हो तो पानी मिलाकर शहत थोड़ासा देवै, और जो पेट फूल जाय तो सेंधा लवण, सोंठ' इलायची, भुनीहींग, भारंगी, इनको बारीक पीस गरम जलके साथ पीवै, अथवा छोटी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इलायची, सूखापोदीना, काली मिर्च, पीपल काला नमक यह औषध बराबर ले, और बारीक पीसकर तीन चार दिन पर्यंत देवे ॥

आंव लोहू ॥

यदि बच्चेको आंव मिले खूनके दस्त आते होंतो अधभुनी सौंफ कूटकर शक्कर मिलाय देवे, अथवा मरोर फलीको सेंधे नमक के संग पीसकर देदे, अथवा सोंठ का मुरब्बा खाने को देवै ॥

नेत्ररोग निवारण ॥

यदि बच्चे के नेत्र सूज गये हों तो फटकरी ३ माशे, रसौत ३ माशे, अफीम २ माशे, छोटी हर्र ३ माशे इनको घिसकर गुनगुना करके तीन चार वार लगाना चाहिये ॥

यदि उसकी आँख किचडाती हों तो त्रिफला के पानी से धोना चाहिये ॥

यदि बच्चेको नींद न आती हो तो उसकी इन्द्री पर पोस्तके दाने का तेल चुपडना चाहिये ॥

बालककी आँख दुखने में कई कारण जानने, कभी सर्दी, कभी गर्मी, कभी माता की आँख दुखने से, कभी दांत निकलते समय उसके नेत्र दुखने लगते हैं दांतों के समय जो आँख दुखती हैं वह जब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तक दाँत नहीं निकल चुकते तब तक दुखती ही रहती हैं और कांठनता से अच्छी होती हैं, उसका यत्न यह है आंवला और लोधको गौके घी में भून कर पानी में पीस लेवै और आंखों पर चुपड देवै अथवा घी ग्वार का रस आंखमें टपका देवै अथवा बकरी के दूध के फोहा को बाँधै ॥

वा बांसेकी पत्तीको पीसकर टिकिया बनाय बांधै और जो सरदी से आंखैं दुखती हों तो कान में कडुवा तेल डालना और दो बूंद आंख में भी डालदे अथवा घी में फोहा भिगोय गरम करके बांधै और जो गरमी से आंखें दुखती हों तो नीब की कोंपल पीसकर टिकिया बांध देना चाहिये व रसौत का पानी आँख में डालना चाहिये अथवा गेरूको पीस उसमें रुई को भिगोयकर आंखों पर बाँध देना यदि बालक दूध पीता हो तो उसकी आँखैं दुखने में बालक की माता को नियम से रहना चाहिये ॥

बहु रोदन निवारण ॥

यदि बालक बहुत रोता हो तो उसके माथे पर चन्दन अथवा वनफशेका लेप करै और बहुत रोने न दे क्योंकि बालकका बहुत रोना अच्छा नहीं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होता, कभी हंसलीके डिग जाने से भी बालक बहुत रोता है, नींबके पत्तों की धूनी देवै और घुंघुची की माला पहिरावै ।

हंसली का ठीक करना ।

नारमें एक हड्डी हंसलीकी नाईं होती है उसमें से झटका लगनेसे दर्द होने लगता है उसके रोकने का उपाय यह है, कि नाडमें चाँदी की हसली पहना देवै और किसी चतुर दाई से वह स्थान सुतवाय देवै ।

शिर रोग निवारण ।

यदि बालक के शिरमें दर्द हो तो उसके कान में सरसोंका तेल डालना चाहिये, यदि उसके शिरमें गंज होगया होतो छप्पर में लटकती हुई मक्खी की विष्टा को पानी में घोले और गंज पर लगावे अथवा गौ के बी को धोय उसमें कवीला तूतिया, मुरदा शंख, एक एक तोला पीसकर मिलावै फिर उसको गंज पर लगावै तो गंज अच्छा होजावै ।

बहुमूत्र निवारण ।

यदि बच्चा बाम्बार बहुत मूत्र करता हो तो आंवला का रस शहत के साथ दे अथवा केला की गहर, आंवले का रस शहत और मिश्री इनको दूध के साथ पीने को देना ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जले पर औषध ॥

जलजाने पर जो उसी समय सेंक दियाजाय तो फिर फफोला नहीं पड़ता, रेल के कोइले को तेलके संग पीसकर जलेपर लगादेवै, अथवा इमली की छालको जलाकर गौ के घी में मिलाकर लगादेवै ॥

चिनग का दूर करना ॥

यदि बालक मूत्र करते समय रोने लगे, व बार बार अपनी इन्द्री पकड़कर खींचै, तो जाने कि बालक के चिनगरोग है, उसके दूर करने का उपाय यह है, कि बबूल के गोंदकी चार पाँच डली कपड़े में बांधकर पानी में भिगोदे, अनन्तर उस पानीमें मिश्री मिला दिन भर में पांचबार पिलावै ॥

हिचकी का दूर करना ॥

यदि बालकको हिचकीका रोग होगया होतो नारियल पीसकर शक्कर मिला चटाबे और गीला कपड़ा तलुवे पर धरे, हिचकी रोग दूर होवे ॥

कांचका निकलना दूर होबे ॥

यदि बालककी कांच निकल आती होतो बालक के मूत्रसेही आबदस्त, लिवायदे, अथवा पुरानी चलनीका चमड़ा जलाकर उसके पानीको उसपर छिडके अथवा जलाहुवा लसोड़ा तेल लगाकर लगाबे, आम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और जामुन की छाल और पत्ती को औटाय, उस पानी से आबदस्त करावे ॥

सरदी, हांफना, पसली, ॥

यदि बालक को सरदी, पसली, और हांफनेका रोग हो और नाक बहती हो, तो रीठाकी मींगी १ तोला. लेकर ६ माशे पानी में खरल करके उसके तेलको कपड़े से दाबकर निकाल लेवै, फिर उसमें १ रत्तीभर जायफल मिलाय मूंग बराबर गोली बनावे, और सायंकाल प्रातःकाल एकएक गोली खिलावे यदि सरदी अधिक हो तो तीन तीन घंटे उपरांत गरम जलके संग खिलावे तो सरदी, हफनी, और पसलीका रोग शान्त होजाता है ॥

खांसी, ज्वर, उलटी ॥

यदि बालक को ज्वर, खाँसी के साथ उलटीका रोग हो तो काकरासिंगी, पीपल, अतीस, नागर मोथा, इनका चूर्ण शहत में मिलाय चटावे तो खांसी, ज्वर और उलटी दूर होजावे ॥

उलटी ॥

यदि बालक को केवल उलटीका रोग हो तो पोदीने का अर्क बालक को पिलाना चाहिये ॥

खाँसी ॥

यदि बालकको खाँसी आती हो तो फटकरी की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खील एक एक चांवल प्रमाण सायंकाल प्रातःकाल खिलावे. यदि बालकको खाँसी और ज्वर एक साथ होतो अतीस, पीपल, काकरासिंगी पीसकर शहत में चटावे. वा कटेहरी के फूलों की बुट्टी शहत में चटावे अथवा कालीमिर्च और सुहागा बराबर लेकर घीग्वा-रके रस में चना बराबर गोली बनाय खिलावे, अथवा बादाम की मींगी जल में पीसकर चटावे ॥

तथा यदि केवल खाँसी हे तो वंशलोचन शहत में चटावे, अथवा अनारका छिलका नमक में पीसकर चटावे, अथवा अतीस पोहकर मूल, पीपरि, काक-रासिंगी इनको पीसकर शहत में मिलाय चटावे, अथवा आककी सुहंमुदी बुट्टी लेकर उतनी ही मिर्च गिन पांचों लवण डाल एक कुल्हडमें रख कपरोटी कर अग्नि में फूंक देवे सो भस्म चटावे बहेड़े को भूभल में भून नमक मिलाय चटा दिया करे ॥ तथा यदि बालक को खाँसी ज्वर, अतीसार साथ हो तो काकरासिंगी अतीस, मोथा, पीपरि इनको शहत के संग चटावे ॥

दुर्बलता निवारण ॥

यदि बालक बहुत दुबला होय तो उसको नित्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रातःकाल गायका वा बकरीका दूध पिलाना चाहिये।

कर्ण रोग निवारण ।

यदि बालकके कानमें पीड़ा होतो सुखदर्शनका पत्ता गुनगुनाकर कानमें निचोडे, प्रायः बालकों के कानमेंसे पीव वहा करती है इसमें कारण यह है कि बालककी माता बालककों औंघाते समय दूध पिलाती है तो दूध बहकर कान में जाता है और जमकर फुड़िया फुन्सी पैदा कर देताहै जिससे कान बहने लगता है, धुनी हुई रुई बालकके कान में लगाये रहना, और फटकरी के पानी से बहुत धीरे धीरे कान में पिचकारीसे धो देना अथवा समुद्रफेन, सुपारीकी राख, कत्था यह सब महीन पीसकर कानमें डाले, तथा मोटी सीपको कड़वे तेलमें पकाकर उस तेलको डाले, यदि कानमें दर्द होतो चार पाँच बूंद बालककी माताका दूध कान में डाल देवे, अथवा नींबकी कोपलका रस शहत में मिलाकर डाले । यदि बालकके कानके पीछे कटा होतो सफेद कत्था एक माशे जस्तकी खील (सफेद) एक माशे, छः माशे मक्खनमें धोयके तीन दिन तक लगावे तो वह घाव अच्छा होवे ।

फुड़ियोंके दूर करने का उपाय ।

यदि बालकके फुड़ियां निकलती होंतो सफेदा ६

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माशे माखन८ माशे मि ाकर चुपड़ देवे, यदि फुड़ियां भरती फूटती होतो किसी चतुर वैद्यसे चिगकर नींबके पानीसे धोवे और नींबहीकी पुलटिस बांधे, यदि नेत्र सुर्ख हों और फुड़ियां होगई होतो एकरत्ती फटकरीको ढाई तोला निर्मलजलमें मिलाकर एकया दो बूंद डाले, अथवा त्रिफलाका निर्मल जल दिन में दो तीन बार सहता सहता डालदिया करे।

पेटमें के छारुये निकलनेका उपाय।

बालकके पेटमें ठीक ठीक पचाव न होनेके कारण छारुये पड़ जाते हैं लक्षण यह है कि जो बालक सोते समय गुदाको खुजाने लगे नाकको मीड़े, दांत करैं तो जाने कि छारुये पड़ गये हैं प्रायःयह रोग दांत निकलनेके समय होता है, उपाय यह है कि कांजीका जल पिलावे सुनका में वायविडंग रख कर पाँच सात दाने खिलावे, अथवा शीतल जलके छींटे मुखपर देवे इन्द्रजब पिसकर पिलावे अथवा हींगका फोहा वा कड़ुये तेलकी फोहा वा नमक के पानीका फोहा बनाकर गुदापर रक्खे, वा वत चीनी २ चांवल, रोहिणी दो चावल, मिला कर देवे।

कोथियों के दूर करने का उपाय।

यदि बालकके नेत्रोंमें कोथिया होगई होंतो लोध

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुनर्नवा सिंवाड़ा कटैया, त्रिफला. बनभाँटा इन सब को बारीक पीस गरमकर नेत्रों के पलकपर लेपे, और हाथपर कपड़ा रगड़ २ कर सेंकै तथा रात्रि समय गुनगुना जल लगावे तो कोथियों का रोग अच्छा होवे ।

लारगिरना ।

यदि बालकके मुखसे लार बहुत गिरे तो जवा-रसा मस्तंगी कुछ थोड़ी खिलाया करे ।

तालू बैठना ।

यदि बालकको तालू का रोग होगया होतो मुल-तानी मिट्टीको तालूपर कई बार लगा दिया करे और तालुको उठा दिया करे तो अच्छा होजायगा ।

गला आनेपर ।

यदि बालकका गला आगया होतो शहत का शर्वत चटाना अच्छा होता है ।

जूड़ी का दूर करना ।

यदि बालकके जूड़ी आती होतो तुलसीके पत्ता आधा माशा, शहत डेढ़ माशा मिलाय जूड़ी आने से दो घंटा पहिले एक और दुसरी मात्रा समय पर देवे, तो जूड़ी अच्छी हो जावेगी परन्तु तीन चार दिन तक औषध देवे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुखरोज (मुहा) निवारण।

यदि बालकके मुहा होगया हो तो शहत ३ माशे चौकिया सुहागा ३ माशे इन दोनोंको घेयके प्रातः काल और सायंकाल ऐसा लगावे कि बालक चाटने न पावे, अथवा दूधिया कत्था शहतके साथ चटावे, अथवा गूलरका दूध मिलाकर चटावे अथवा शीतल चीना और पपरियाकत्था पीसकर शहतसंग चटावे।

मूत्ररोग निवारण।

धाय के फूल, मिश्री, मिर्च, पीपरि इनको शहत के साथ पिलावै, तो मूत्ररोग जाय, यदि बालकको मूत्र उतरता न होय तो मूसे की लेंडी मठामें पीस नाभि से पेडू तक गरम करके लेपे, अथवा टेसू के फूल पीस कर पिलावै, किंवा रेहूको पीस गर्म कर के लेपे तो बालकका मूत्र खुले।

दन्तरोग निवारण।

जब बालकके दांत निकलने लगतेहैं तब बहुत ही क्लेश होताहै, उस समय बालकके तेल लगाता रहे, जन्म से छठे या सातवें मासमें दांत निकलते समय बालक अपनी माताका स्तन काटने लगता है, उँगली दाबने लगता है, दस्त पीला, हरा, और फटा तथा बीजसा होने लगता है, ज्वर आने लगता है, और बहुत दुर्बल हो जाता है बालक की माता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को योग्य है कि खटाई न खाय, खटाई खानेसे दांत देरमें निकलते हैं, दतौनाकी जड़, मोरेठी, धाय के फूल, पीपरी, इनको आंवलाके रसमें चटावै, अथवा किसी चतुर वैद्यसे मसूडों को चिरवाय देवे ।

विशूचिका (हैजा) निवारण ।

यदि बालकको हैजा होजायतो पोदीना इलायची सौंफ, खसखस, इन सबको आध पाव अथवा अधिक गुलाब जल में उबाल कर दो दो घण्टे उपरांत पिलावे अथवा हैजा होते ही जीरा, सेंधालवण, लहसन, सोंठ गंधक, कालीमिर्च, पीपरी और हींग इन आठ औषधियों का चूर्णकर नीबू के रस में खरल करे और गोली बना लेवे इस गोलीसे हैजा बहुत शीघ्र जाता रहताहै हैजा में पानी नहीं देना चाहिये पानी के बदले अर्क मकोय, अर्क पोदीना अथवा बर्फ देना चाहिये ।

वर्षाकालकी फुंसीका दूर करना ।

यदि बालकके शरीरमें वर्षा समय फुंसियांनिकल आवेंतो मसूरके छिलके और आंवले जलाकर उनके बराबर मँहदी कवीला पीसकर घीमेंमिलाय बालकके शरीर पर मले और मँहदीके पानी से स्नान करावे

बालक के फफोले दूर करना ।

यदि शीतला की नाई बालक के फफोले निकल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आवें जो नितनये निकलतेहैं इन फफोलोंकी खाल बहुत पतली सपेदसी होती है और चारों ओर ललाई होतीहै,यह फफोले नित फूटते हैं इसकी औषध यह है कि अफोह नाम का एक वृक्ष होताहै इसकी डाली चलनी में रख प्रातःकाल जल उसमें डालकर उसी जल से तीन दिन तक स्नान करावे तो फफोले दूर हो जाते हैं।

ज्वर निवारण।

यदि बालक एक वर्षसे सात वर्ष तक का हो तो मरोर फली,अमलतास,हर्रके बीज,सोफ,इंद्रयव यह तीन तीन माशे और मुरदाशङ्ख १ रत्ती यह सब लेकर पावभर जल में काढ़ा बनाय पैसा भर काढ़ा रहने से उतार लेवे,और बालकको पिलावे और जो बालक ७ वर्षसे १० वर्षतक का होतो मुर्दाशङ्ख, हर्र, अदरख सोंचर लोन लौंग, काली मिर्च इलायची यह औषध एकएक रत्ती ले काढ़ाकर पिलावे,तो ज्वर दूर होजावे

मशान रोग।

मशान रोग बालक को प्राय सौरि अर्थात जन्म दिनसे १महीना के भीतर हुआ करता है यह रोग कोई भूत प्रेत नहीं होता जब सरदी, गरमी अथवा किसी प्रकारकी अपवित्रता होतीं है तबयह रोग प्रगट हो जाता है इस रोग में ज्वर आने लगता है पसली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चलने लगती है, दस्त आने लगते हैं अथवा कफ़ जम जाता है, कभी कभी बालक मूर्छित हो जाता है, यदि दस्त न आते हों तो इस रोग में दस्त करा देना चाहिये, वह रोग गर्मी से हो जाने में तो कुछ भय नहीं, परन्तु सर्दी से होने में भय रहताहै, उसका उपाय यहहै कि चूना, नीलाथोथा बड़ीहर्र बहेड़ेका छिलका, कबीला, पपरियाकत्थाइन सबको बराबरले कूट छानकर गोली बनालेवे और उस गोलीको घीमें मिलाकर पसलीपरलेप करदेवे।

अथवा एलुआ जमाल गौटा इनको बछिया के मूत्र में लोहेसे पीसकर मूंग बराबर गोली बनावे एक गोली नित्य खिला देवे। अथवा सूखेकेचुवा पानी में पीसकर बालक के मुख में एक बूंद टप काय देवे अथवा अरंडी का तेल बालक के पेटपर मलकर बकायन के पत्ते गरम कर के बांध देवे अथवा तेलीया, शंखिया, जमाल गोटे की मींगी, इनको थूहरके दूधमें पीसकर नाभिपर लेपे। तथा जिसके बालक इसरोगसे मर जातेहों तो जन्महोते ही जिस समय नालकाटाजाय उस समय नाभिपर उत्तम कस्तूरी एक चांवलभर थोड़ेसे लकड़ीके कोइले महीन पीस उसपर लगादे तो रोग उस बालक को नहीं होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शीतला रोग चिकित्सा।

माताके पेटमें रुधिरपान करने से उनकी गरमी फूटकर बालकके निकलती है, इसीको शीतला रोग कहतेहैं इस रोगसे कोई बालक नहीं बचता, यह रोग उड़ना भी होताहै एक बालकके होकर उसके समीप बालकके भी होजाती है, इस रोग में प्रायःटीका लग जाना मुख्य है यदि टीका अर्थात् गौस्तन शीतला का प्रकार यहाँ लिखें तो ग्रन्थ बढजाता इसकारण लिखने की आवश्यकता नहीं सरकार की ओरसे जो टीका लगानेमें नियतहै जो परीक्षामें उत्तीर्ण हैं, टीका लगानेसे शीतला नहीं निकलती, और यदि निकलती भी है तो कम निकलती है, और बालकको कष्ट बहुत ही कम होता है इस रोग के प्रायःदिन चत्र वैशाख हैं यह रोग गरमी से ही होता है इससे बालक और उसकी माताको शीतल वस्तुयें खिलावे, और औषध ऐसी खिलावे जो रुधिर विकार को दूर करे जैसे सन्ध्या समय चिरायते को भिगोकर ओस में रात भर रक्खा रहने दे और प्रातःसमय उसको छानकर शहत मिलाय पीवे बालक और बालककी माता औषध भक्षण करे यदि बालक दूध न पीता होतो केवल बालक ही औषध खाय उरद और माठा न खाय यह शीतला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो प्रकार की होती है एक खसरा जिसके दाने बहुत छोटे २ होतेहैं जिनसे कुछ भय नहीं होता, दूसरी मोतिया बड़े २ दानेकी होती हैं, यह दोनों सामान्य दुर्लभ होती हैं जो शीतला अपवित्रता और दुर्गन्धि के कारण नीले और काले रङ्ग की दानादार हो जाती हैं उनसे बालक का बचना कठिन होजाता है, शीतला निकलनेसे पहले बालकको तीन दिन ज्वर आताहै बालक मूर्छित रहताहै उस समय किसी प्रकारकी औषध नहीं देना चाहिये, पोस्त १ भाग, कंद २ भागका शर्वत बालकको पिलावे जब दाने निकलने लगेतो माता को चार चार तोला गोला खिलावे जो बालक दो वर्षका होतो दो तोला गोला उसको भी खिलादे वे एक वर्ष पीछे एक तोला गोला बढाय देवे इस से दाने कम निकलते अथवा रुद्राक्षका दाना पानी में घिसकर देवे अथवा मुलहठी और अनारदाना बराबर कूट औटय शहतराके अर्कमें मिला कर देबे और बच्चे को अधेरेमें रक्खे परछाहीं न पड़ने दे इससे मुखपर दाग नहीं पड़तेहैं बच्चेको दुर्गन्धिसे बचाये रहे और उसके समीप बैठे जिससे डरन जाय डर जानेसे उसके प्राणोंका भय रहता जिस कोठे मेंबच्चाहो उसकेद्वारपर पत्थरकाकोयला अथवागंधक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का धुवां अवश्य रहे, परवल, कुटकी, अडूसा, नीमकी छाल नागरमोथा, पित्त पापरा, गुर्च, चिरायताधमासा इन औषधियों का काढ़ा पिलानेसे कच्चीशीतला पक जाती हैं और पकी हुई शीतला फूटकर बहजाती है, तथा वनफशा, मुलहटी, मुनक्का अमलतास कंजे केबीज, इन सबको एक२ माशा चीनी चार तोले पानी में मिलाय औटाय छानकर बालकको पिलावे, शीतकाल में अजवायन, उष्णकाल में गुलकन्द को काढा में मिलाना चाहिये आठवें दिन यह घूटी अवश्य देवे, जब शीतलाके दाने फूटजांल तब सिरस पीपरी लिशोड़ा, और गूलर इनकी छालको जलाय कूटपीस छानकर घी में मिलाय फफोलों पर लगावे तो अच्छी हो जायगी ॥ बहुधा लोगोंका मत है कि शीतला रोग में शीतला देवी का पूजन करना और नीम वृक्षकी हरी डाली बालकके समीप रक्खी रहने देना तथा पवित्रता पूर्वक शीतलास्तोत्र का पाठ करना चाहिये आगे शीतला स्तोत्र लिखते हैं ॥

ओं नमः शीतलायै ॥ स्कन्द उवाच ॥ भगन्देवदेवेश शीतलायाः स्तवं शुभम् ॥ वक्तुमर्हस्यशेषेण विस्फोटकभयापहम् ॥ १ ॥ ईश्वर उवाच ॥ वन्देऽहं शीतलां देवीं सर्वरोग भयापहाम् ॥ मायासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयं महत् २ शीतले शीतले चेति यो ब्रूयादाहपीडितः ॥ विस्फोटकभयं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घोरं क्षिप्रं तस्य विनश्यति ॥ ३ ॥ यस्त्वामुदकमध्ये तु धृत्वा पूजयते नरः ॥ विस्फोटकभयं घोरं भयं तस्यनजायते ॥ ४ ॥ शीतले तनुजान् रोगान्नृणां हरसि दुस्तरान् ॥ विस्फोटक विशीर्णानां त्वमेकाऽमृतवर्षिणी ॥ ५ ॥ गलगण्डग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणानृणाम ॥ त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यांति संक्षयम् ॥ ६ ॥ न मंत्रं नौषधं किं चित्त्वापरोगस्य विद्यते ॥ त्वमेक शीतले त्राता नान्यं पश्यमि देवताम् ॥ ७ ॥ मृणालतन्तुसदृशी नाभिहत्पद्म संस्थिताम् ॥ यस्त्वांसंचिन्तयेद्देवि तस्य मृत्युर्न जायते ॥ ८ ॥ अष्टकशीतलादेव्या यः पठेन्मानवः सदा ॥ विस्फोटकभयं घोरं कुले तस्य न जायते ॥ ९ ॥ श्रोतव्यं पठितव्यंचश्रद्धाभक्तिसमन्वितैः॥ उपसर्ग विनाशाय परस्वत्वयनंमहत् ॥ १० ॥

यह शीतलास्तोत्र संस्कृत मात्र पाठ करें, अथवा किसी ब्राह्मण देवि भक्त से करावे, परन्तु इसका अर्थ भाषामें लिखते हैं स्कन्दजी बोले–हे भगवान! हे देव देवेश! आप विस्फोटक रोगको नाच करने वाले शीतला के उत्तम स्तोत्रको कथन करौ ॥१॥ यह प्रश्न सुनकर श्री शिवजी बोले में सर्व रोगोंके भय की दूर करने वाली शीतला देवी को प्रणाम करता हूँ जिसके आश्रय से महान विस्फोटक भय दूर होता है ॥ २ ॥ जो पुरुष दाहसे पीड़ित हो वह शीतले २ ऐसा कहे तो उसका घोर विस्फोटक रोग शीघ्र ही नाश होजाता है ॥ ३ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हे शीतले जो तुमको जलमें स्थापितकर पूजताहै, उसके घोर विस्फोटक भय नहीं होता ॥४॥ हे शीतले तुममनुष्योंके दुस्तर रोगोंको नाश करतीहो, विस्फोटक रोगसे दुःखितहुए पुरुषोंको तुमही एक अमृत वर्षाने वाली हो ॥५॥ गलगण्ड आदि जो अन्य दारुण रोग मनुष्योंके होतेहैं, हे शीतले! वेसबरोगतुम्हरे ध्यानमात्रसे नाश हो जातेहै ॥३॥ हे शीतले ! इस पाप रोगका कोई मंत्र औषध नहींहै, हे शीतले! तुम एकही रक्षा करनेवाली हो, अन्य कोई देवता इसरोगसे रक्षा करने वाला नहीं देखपड़ता है ॥ ७ ॥ कमलनालके तंतुकी नाईं नाभिस्थित हृदय कमलमें जो तुमको ध्यावताहै, देवि ! विस्फोटक रोगसे उसका मरण नहीं होता ॥ ८ ॥ इस शीतलाष्टक को जो मनुष्य सदा पढ़ताहै उसके कुलमें विस्फोटक का भय नहीं होता ॥९॥ पुरुषोंको यहस्तोत्र श्रद्धा और भक्तसहित सुनना पढ़ना चाहिये महा उद्रव शान्तिके निमित्त कल्याणका स्थान है ॥ १० ॥

बालतंत्र।

ईश्वर उवाच-बालतंत्रं प्रवक्ष्यामि समासाद्रक्षणोदिते ।
पूजाद्रव्यं दिशोभागं मंत्रं तद्ग्राह्यलक्षणम् ॥ १ ॥

अर्थ-अब बलतंत्रको संक्षेपसे कहूँगा, बालरक्षाके अर्थ पूजा और पूजाके द्रव्य दिशा विभाग मंत्र और उसका ग्राह्य अर्थात् पूतनाका लक्षण वर्णन करताहूँ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मू०--प्रथमे दिवसे मासे वर्षे गृह्णाति बालकं ।
नन्दा नाम्नी समाख्याता योगिनी तस्य लक्षणम् ॥२॥
द्वितीये दिवसे मासे वर्षे गृह्णाति बालकम् ।
सुनन्दा योगिनी नाम प्रथमं जायते ज्वरः ॥ ३ ॥
संकोचो हस्तपादाना मक्षिरोगोतिछर्दनम् ।
ममयत्त्वं कृशत्वं च तद्ग्रस्ते इति लक्षणम् ॥ ४ ॥

अर्थ--प्रथमदिन, प्रथम मास, प्रथम वर्षमें नन्दा नामा योगिनी बालक को ग्रहण करती है उसका लक्षण ।२।औरद्वितीयदिन,द्वितीयमास द्वितीयवर्ष मेंसुनन्दा नाम योगनी बालकको ग्रहणकरती है इन दोनोंके लक्षण यहहै कि प्रथम ज्वर होताहै ।३। हाथ पांव सिकुडने लगतेहैं,नेत्र दुखने लगतेहैं,वमन होती है, और बालक डरता तथा दुबला होजाताहै, यह लक्षण दोनौ योगिनियोंके ग्रसने से होतेहैं । ४ ।

मू०--तृतीये दिवसे मासे वर्षे गृह्णाति बालकम् ।
पूतना योगिनी नाम गात्रभङ्गो ज्वरोऽरुचिः ॥ ५ ॥
प्रलापं कंधराशोथछर्दिरित्यादि लक्षणम् ।
अपराण्हे च वारुण्या पंचरात्रं बलिं क्षिपेत् ॥ ६ ॥

अर्थ--तीसरे दिन, मासऔर वर्ष पूतना नामा योगिनी बालकको ग्रहणकरतीहै जिससे बालकको गात्रभंग,ज्वर,अरुचि, प्रलाप,सूजन,वमन,आदि रोग होतेहैं, इस योगिनीके निमित्त पाँच रात्रि पर्यन्त पश्चिम दिशामें अपराह्न (दुपहर बाद बलिदान करे)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मूल–चतुर्थे दिवसे मासे वर्षे गृह्णति बालकम् ॥
बिडाली नाम तद्ग्रस्ते चक्षुशूलं ज्वरोऽरुचिः ॥ ७ ॥
गात्रस्फोटनमित्यादि विवर्णेन बलिं क्षिपेत् ॥

अर्थ–चौथे दिन, महीना, व वर्षमें बालक का विडाली नामा योगनी ग्रहण करती है उसके ग्रसने से नेत्रपीड़ा, ज्वर, अरुचि ॥ ७ ॥ अंगोंका फूटना आदि रोग प्रगट होतेहैं इसके निमित्त बलि प्रदान करै।

मूल–पंचमे दिवसे मासे वर्षे गृह्णति बालकम् । ८ ॥
पूतना मातृका नाम योगनी तस्य लक्षणम् ॥
अथ षष्टे दिने मासे वर्षे गृह्णति बालकम् ॥ ९ ॥
योगिनी शकुनी नाम कास श्वासोऽरुचिर्ज्वरः ॥
हस्तपादादिसंकोचश्चक्षुपीडेति लक्षणम् ॥ १० ॥
पंचरात्र बलिं तस्यै वारुण्यां दिशि निःक्षिपेत् ॥

अर्थ–पांचवें दिन, महीना, व वर्ष में बालकको ॥ ८ ॥ मातृका नाम पूतना, ग्रहण करतीहै उसका लक्षण और छटे दिन महीना और वर्षमें ॥ ९ ॥ शकुनी नाम योगनी जो बालकको ग्रहण करतीहै उसका भी लक्षण यह है कि बालकको खांसी, दमा अरुचि, ज्वर हाथ पांवमें ऐंठन, नेत्रपीड़ा यह रोग प्रगट होजाते हैं ॥ १० ॥ पाँच दिन पश्चिम दिशा में उसको बलि देवे।

मूल–सप्तमे दिवसे मासे वर्षे शुष्का शिवा शिशुं ॥ ११ ॥
गृह्णाति रोदनं कम्पो ज्वरशोषदि लक्षणम् ॥
पश्चिमायां दिशि पंचबलौ दत्ते शिशुः सुखी ॥ १२ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्थ–सातवें दिन, महीना व वर्ष में बालक को शुष्का नाम योगिनी ॥११॥ ग्रहण करती है, उसके ग्रसने से बालक रोता है, कांपता है, ज्वर से पीडित होता है, और सूख जाताहै,इत्यादि लक्षण जानना इसके निमित्त पश्चिम दिशामें पाँचदिन पर्यन्तबलि प्रदान करे तो बालक सुखी होवे। ॥ १२ ॥

मूल–अष्टमे दिवसे मासे वर्षे गृह्णति जृम्भिका ॥
तया गृहीतमात्रत्य प्रथमं जायते ज्वरः ॥ १३ ॥
शिरः पीडाक्षिरोगश्च चक्षुरुत्पाटचेष्टितम् ॥
दक्षिणां दिशमाश्रित्य बलिं तस्यै प्रदापयेत् ॥ १४ ॥

अष्टमे दिन,मास, वर्षमें जृम्भिका नाम योगिनी और बालक को ग्रहण करती है। उस के ग्रसनेसे बालक को पहले ज्वर होता है ॥ १३ ॥ शिरपीड़ा नेत्र रोग और आँखों के उखाड़ने की सी चेष्टा होती है उसकी शान्ति के अर्थ दक्षिण दिशा में जाकर बलि प्रदान करे ॥ १४ ॥

भूल–नवमे दिवसे मासे वर्षे गृह्णति बालकम् ॥
अचिंता योगिनी नाम गात्रभङ्गः शिरोक्षिरुक् ॥ ५ ॥
छर्दिः प्रलाप इत्यादि तत्गृहीतस्य लक्षणम् ॥
उत्तरां दिमाश्रित्य बलिं तस्यै प्रदापयेत् ॥ १६ ॥

अर्थ- नवमदिन,मास वर्ष में बालकको अचिन्ता नाम योगिनी ग्रहण करती है, गात्रभंग,शिर और नेत्रों में रोग ॥ १५ ॥ छर्दिः बकवाद, इत्यादि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लक्षण होते हैं, उसकी शांतिके अर्थ उत्तर दिशा में जाकर बलिदान देवे ॥ १६ ॥

मू०—दशने दिवसे मासे वर्षे गृह्णाति बालकं ॥
नाम्ना कापालिका ख्याता योगिनी तस्य लक्षणं ॥१७॥
रोदनं कम्पनं छर्दिर्ज्वरो दुर्बलता क्षिरुक् ॥
पूर्वादिशं समाश्रित्य पंचरात्रं बलिं क्षिपेत् । १८॥

अर्थ-दशमदिन, मास वर्षमें बालकको कापालिका नाम योगिनी ग्रहण करती है, उसका लक्षण यह है ॥१७॥ कि बालक रोता है कांपता है, वमन, ज्वर दुबलता, नेत्ररोग होता है, उसकी शांति के निमित्त पाँच रात तक पूर्व दिशा में बलिदान देवे ॥१८॥

मू०—एकादशे दिने मासे वर्षे गृह्णाति लिप्सिता ॥
गात्र कम्पो ज्वरस्तीव्रस्तद्ग्रहीतस्य लक्षणम् ॥१९॥
भानुसंख्ये दिने मासे वर्षे गृह्णाति बालकम् ॥
पीतली योगिनी नाम रोदने वेदना ज्वरः ॥२०॥
निद्रा क्षीणस्वरः पीतो वमनाहार शून्यता ॥
उत्तरां दिशमाश्रित्य सप्तरात्र बलिं क्षिपेत् । २१॥

एकादश दिन, मास, वर्ष में बालकको लिप्सिता नाम योगिनी ग्रहण करती है उसके ग्रसनेसे बालक के अंग काँपते है तीव्र ज्वार आता है यह लक्षण जानना ॥१९॥ बारहवें दिन, महीना और वर्ष में पीतली नाम योगिनी बालकको ग्रहण करती है उस के ग्रसने से बालक रोता है, पीड़ा होती है, ज्वर आने लगता है ॥ २ ॥ निद्रा नहीं आती और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बोली क्षीण होजाती है, रंग पीला होजाताहै तथा बमन आने लगती है और आहार नहीं किया जाता है, इसकी शान्ति के अर्थ सात रात तक उत्तर दिशा में जाकर बलिदान देबे ॥२१॥

मू:—नदीतीरद्वयाकृष्टमृदा देवीस्वरूपकं ॥ कृत्वा पूजा च कर्तव्या धूप पुष्पक्षतादिभिः ॥ २२ ॥ वटकालडूका पूपा अन्न भक्तं गुडं दधि चातुर्वर्ण्यपताकाश्च प्रदीप्ता पुष्पचन्दनम् ॥ २३ ॥ पूजयेत्सर्व रोगा नामपराह्ने यथा बलिः सर्वत्रनामभेदेन वलिदान प्रजायते ॥ २४ ॥ ओंनमोभगवति अमुकीदेवी बालकं मुंचबलिं गृहाण स्वाहा ॥ सर्वत्र बलि समर्पणे मन्त्रोऽयम् ॥ २५ ॥

अर्थ—नदी के दोनों किनारों की मृतिका लेकर देवीजीकी प्रतिमा बनाकर धूप, फूल, अक्षत आदि सामग्रीसे पूजाकरे॥२२॥ और बड़ा,लड्डू, मालपुआ भात,गुड़,दही और चार रङ्गकी ध्वजा चढ़ाबे तथा अनेक दीपक प्रदीप्त करे और फूल, चन्दन चढ़ाबे ॥२३॥ अपराण्ह समय अर्थात् दिनके दो प्रहर उपरांत पूजन करै,योगिनी नाम उच्चारण करतेहुयेपूजा और बलिदान देवे ॥२४॥ ॐ नमो भगवति अमुकी देवी बालकं मुंच बलिं गृहाण स्वाहा ॥ सब योगिनियों के बलिदानमें यही मंत्र है, अमुकीके स्थानमें योगिनी का नाम लेना ॥ २५ ॥

दोहा—नारायण धरिध्यान उर, नारायण करतार ॥
पूर्ण कियो लिखि प्रेमयुत, यह चतुर्थ अधिकार ॥२६॥

इति श्री रसराज महौषधि वैद्यकग्रन्थे स्त्री रोग चिकित्सा नाम चिकित्सा वर्णन नाम चतुर्थो धिकारः ॥ ४ ॥

❀ इति ❀

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीहरिः ॥

रसराज महोदधि

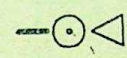

तृतीय भाग

जिसको —

लखीमपुर निवासी पं० नारायणप्रसाद सीताराम मिश्र ने

अनेक ग्रन्थों के अधार से बनाया ।

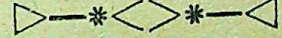

उसको—

किशनलाल द्वारकाप्रसाद ने अपने

बम्बई भूषण यन्त्रालय में छापकर

प्रकाशित किया ।

———

सर्वाधिकार सुरक्षित है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीः ॥

रसराज महोदधि के—

तृतीय भाग की

अनुक्रमणिका ।

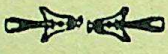

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
अथ मंगला चरण	१	वर्षा ऋतु में पथ्य	२७
तत्रादौ समय विचार	३	वर्षा ऋतु में अपथ्य	२७
अथ देश विचार	६	अथ शरद ऋतुचर्या	२८
अथ प्रकृति विचार	७	शरद ऋतु में पथ्य	३०
अथ अवस्था विचार	८	शरद ऋतु में अपथ्य	३०
अवस्था प्रतिकार	११	अथ हेमन्त ऋतुचर्या	३१
एक दिनमें ऋतुओं का विचार	१२	हेमन्त ऋतु में पथ्य	३१
ऋतुपरत्व दोष और समय	१३	हेमन्त ,, अपथ्य	३२
दूषित जल लक्षण	१६	अथ शिशिर ऋतुचर्या	३२
दूषित पवन लक्षण	१७	शिशिर ऋतु में पथ्य	३४
अथ बसंत ऋतुचर्या	१८	शिशिर ,, अपथ्य	३४
बसन्त ऋतु में पथ्य	१६	दन्त धावन	३७
बसन्त ऋतु में अपथ्य	२०	कुल्ला करना	३८
अथ ग्रीष्म ऋतुचर्या	२१	तेल उवटन लगाना	३६
ग्रीष्म ऋतु में पथ्य	२१	कानों में तेल डालना	४०
ग्रीष्म ऋतु में अपथ्य	२३	अभ्यंग के अयोग्य पुरुष	४०
जल शीतल करने का उपाय	२४	स्नान करना	४०
अथ वर्षा ऋतुचर्या	२५	स्नान निषेध	४१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
ऋतु पंरत्व वस्त्र धारण	४२
सुगन्ध लेपन	४३
सन्ध्या बन्दन	४३
ब्राह्मणादि पूजन	,,
पुष्प धारण	४४
पुष्पधारण की अवधि	४४
भोजन स्थान	४५
भोजन समय	४५
भोजन समय जलपान	४६
भोजनकेपूर्वभक्षणयोग्यपदार्थ	४७
बिषमिश्रित अन्न परीक्षा	४७
घी की प्रधानता	४८
मांसभक्षण निषेध	४८
मसाला	५१
धूपनप्रकार	,,
लवणादि सम्मेलन	५२
अन्नपाचन प्रकार	५३
षड् विधिभोजन	,,
भोजन समय कर्तव्य कर्म	,,
अप्रमाण भोजन दोष वर्णन	,,
भोजन का प्रमाण	५४
भोजनोत्तर दोषवृद्धि	,,
ताँबूल सामग्री	,,
चूना आदिका प्रमाण	,,
ताँबूलगुण	५५
ताँबूल भक्षण काल	,,
चूनाआदिकी न्यूनाधिक्यता	,,
पानकी पीकके गुण	,,
ताँबूल निषेध	५६
भोजनांते शतपद गमन	,,

विषय	पृष्ठ
दिनमें शयन निषेध	,,
शयन क्रम	५७
अजीर्ण में भोजन	,,
दिन में स्त्री गमन निषेध	५८
शरीरको दृढ़ रखने का उपाय	,,
तत्रादौपाक स्थान वर्णन	,,
अथ भोजन प्रकार वर्णन	५९
पाक समय वर्णन	६०
रोटी बनाने की विधि	६१
अरहर की दाल बनाने का प्रकार	६२
तथाच	६३
अथवा	,,
उड़दकी दाल बनानेकी विधि	६४
मूंगकी दाल बनाने की विधि	६५
मटरकी दाल बनानेकी विधि	,,
मसूरकी दाल बनानेकी विधि	,,
चनाकी दाल बनानेकी विधि	६६
मौठको दाल बनानेकी विधि	,,
हंसराज चाँवलका भात बनाने की विधि	,,
साधारण चाँवल का भात बनाने की विधि	६७
केसरिया चाँवल बनाने की विधि	,,
मीठे चाँवल बनाने की विधि	,,
उड़द की खिचडी बनानेविधि	६८
अरहर की खिचड़ी बनाने की विधि	,,
मूंगकी खिचड़ी बनानेकीविधि	,,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
खीर बनाने की विधि	६६
सत्तू बनाने की विधि	,,
सत्तू खाने की विधि	७०
द्रव्ययुक्त सत्तू के गुण	७१
सत्तू खाने का समय	,,
बेसन मूंग की कढी बनाने की विधि	७२
उड़द के करायल की विधि	७३
रायता बनाने की विधि	,,
मूंग के लड्डू बनाने को विधि	,,
साधारण हलुवा बनाने की विधि	७४
गुलगुला बनान की विधि	,,
सादी पूरी बनाने की विधि	,,
कचौरी बनाने की विधि	७५
गुंझिया बनाने की विधि	७६
प्रामठे की विधि	,,
चीला की विधि	७७
पापड़ की विधि	,,
आलू की तरकारीकी विधि	७८
समूचे आलू बनाने की विधि	,,
कटहल बनाने की विधि	७६
करेला बनाने की विधि	८०
तथाच	८१
अथवा	,,
समूचे बेंगन व भिन्डी बनाने की विधि	८२
सूरन (जिमीकन्द) की तरकारी बनाने की विधि	,,

विषय	पृष्ठ
मूली की तरकारी की बिधि	८२
मखाने को तरकारी बिधि	८३
आम का गुरब्बा बनाने की विधि	८३
आम के अचार की विधि	८४
नीबू के अचार की विधि	८५
चटनी बनाने की विधि	८६
इमली सार	,,
अथ संक्षिप्त दिनचर्या	८७
अथ रात्रिचर्या	६०
पद्मिनी स्त्री लक्षण	६१
चित्रिणी स्त्री लक्षण	६२
शंखिनी लक्षण	,,
हस्तिनी लक्षण	,,
अथ पुरुष लक्षण	६३
शशक पुरुष लक्षण	६३
मृग पुरुष लक्षण	,,
वृषभ पुरुष लक्षण	६४
अश्व पुरुष लक्षण	,,
वात प्रकृति स्त्री लक्षण	,,
पित्त प्रकृति स्त्री लक्षण	६५
कफ प्रकृति स्त्री लक्षण	,,
पद्मिनी चित्रणी का भेद	,,
शंखिनी हस्तिनी का भेद	,,
बात प्रकृति पुरुष लक्षण	६६
पित्त प्रकृति पुरुष लक्षण	,,
कफ प्रकृति पुरुष लक्षण	,,
स्त्री पुरुष का जोड़ा	६६
पुरुष योवन काल	,,
पर स्त्री गमन निषेध	६७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
वीर्य रक्षा	९७
मैथुन काल	९९
गर्भवास दिनफल भेद	१००
रति प्रदान	१०१
कामस्थान	१०२
गर्भ परीक्षा	१०४
गर्भ परीक्षा	१०५
इच्छानुसार सन्तान उत्पत्ति करने की विधि	,,
बिना समागम के सन्तान होना	१०६
गर्भ बढ़ने का क्रम	१०७
दम्पति प्रीति	१०८
षोडश शृंगार	१०९
द्वादश आभूषण	,,
प्रसव काल	११०
बालक होने से दिन संख्या	,,
प्रातःकाल में जल पान	९११
नासिका द्वारा जलपान	,,
तथाच	११३
बसन्त ऋतु में पथ्य	,,
वसन्त ऋतु में अपथ्य	११४
ग्रीष्म ऋतु में पथ्य	,,
ग्रीष्म ऋतु में अपथ्य	११५
वर्षाऋतु में पथ्य	,,
वर्षाऋतु में अपथ्य	,,
शरद ऋतु में पथ्य	११६
शरद ऋतु में अपथ्य	,,
हेमन्त शिशिर ऋतु में पथ्य	,,
हेमन्त शिशिरऋतुमें अपथ्य	११७

विषय	पृष्ठ
मधुराष्टि षट रसों का पथ्यापथ्य	११७
मधुर रस के गुण	,,
अतिसेवित मधुर रस के अवगुण	११८
अम्ल खट्टे रसके गुण	११८
अति सेवित अम्ल रस के अवगुण	,,
लवण रस के गुण	,,
अति सेवित लवण रस के अवगुण	११९
कटु रस के गुण	,,
अतिसेवित कटुरसके अवगुण	,,
तिक्त रस के गुण	,,
अति सेवित तिक्त रस के अवगुण	१२०
कषाय रस के गुण	,,
अति सेवित कषाय रस के अवगुण	,,
वैद्य को अवश्य विचार योग्य उपदेश	,,
वैद्यको आवश्यकीय उपदेश	१२१
तरुण ज्वर में पथ्य	१२२
सन्निपात तथा आम ज्वर में पथ्य	,,
तरुण ज्वर में अपथ्य	१२३
मध्यम ज्वर में पथ्य	,,
ज्वरमें पत्रशाक आदिका पथ्य	,,
द्वन्द्वज ज्वर में पथ्य	१२४
आगंतुक ज्वर में पथ्य	,,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
जीर्णज्वर में पथ्य	१२४
औषधि गंधज में पथ्य	१२५
अभिचारी दिशापोत्थ ज्वर में पथ्य	,,
भूताभिषंग ज्वर में अपथ्य	,,
श्रमज और विषमज्वर में पथ्य	१२६
सम्पूर्ण ज्वरों सामान्य पथ्यापथ्य	,,
ज्वरान्त में अपथ्य	,,
अतिसार रोग में पथ्य	,,
अतिसार रोग में अपथ्य	१२७
संग्रहणी रोग में पथ्य	१२८
संग्रहणी रोग में अपथ्य	१२९
बवासीर रोग में पथ्य	,,
बवासीर रोगवाले को अपथ्य	,,
मन्दाग्नि और अजीर्ण रोग में पथ्य	१३१
मन्दाग्नि और अजीर्ण रोग में अपथ्य	,,
कृमि रोग में पथ्य	१३२
कृमि रोग में अपथ्य	१३३
पांडुरोग में पथ्य	,,
पांडुरोग में अपथ्य	,,
रक्तपित्त रोग में पथ्य	१३४
रक्त रोग में अपथ्य	१३५
क्षयरोग में पथ्य	,,
क्षय रोग में अपथ्य	१३६

विषय	पृष्ठ
कास (खांसी) रोग में पथ्य	१३७
कास रोग में अपथ्य	,,
श्वास (दमा) रोग में पथ्य	,,
श्वास रोग में अपथ्य	१३८
हिचकी रोग में पथ्य	,,
हिचकी रोग में अपथ्य	१३९
स्वर भेद में रोग पथ्य	,,
स्वर भेद रोग में अपथ्य	१४०
अरुचि रोग में पथ्य	,,
अरुचि रोग में अपथ्य	,,
छर्दि वमन रोग में पथ्य	१४१
वमन रोग में अपथ्य	,,
तृष्णा प्यास रोग में पथ्य	१४२
तृष्णा रोग में अपथ्य	,,
मूर्छा रोग में पथ्य	१४३
मूर्छा रोग में अपथ्य	,,
दाह रोग में पथ्य	१४४
दाह रोग में अपथ्य	,,
उन्माद रोग में पथ्य	१४५
उन्माद रोग में अपथ्य	१४६
अपस्मार मृगी रोग में पथ्य	,,
मृगी रोग में अपथ्य	१४७
बात रोग में पथ्य	,,
बात रोग में अपथ्य	१४८
शूल रोग में पथ्य	,,
शूल के रोग में अपथ्य	,,
हृदय रोग में पथ्य	१४९

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
हृदय रोग में अपथ्य	१४६
मूत्रकृच्छ (सुजाक) रोग में पथ्य	,,
सुजाक में अपथ्य	१५०
पथरी रोग में पथ्य	,,
पथरी रोग में अपथ्य	१५१
प्रमेह रोग में पथ्य	,,
प्रमेह रोग में अपथ्य	,,
उदर रोग में पथ्य	१५२
उदर रोग में अपथ्य	,,
शोथ रोग में पथ्य	,,
शोथ रोग में अपथ्य	१५३
उपदंश (आतशक) रोगमें पथ्य	,,
उपदंश रोग में अपथ्य	,,
कुष्ट रोग में पथ्य	,,
कुष्ट रोग में अपथ्य	१५४
शीत पित्तादि रोग में पथ्य	,,
शीत पित्तादि में अपथ्य	,,
विस्फोटक रोग में पथ्य	१५५
विस्फोटक रोग में अपथ्य	,,
मुख रोग में पथ्य	,,
मुख रोग में अपथ्य	१५६
कर्ण रोग में पथ्य	,,
कर्ण रोग में अपथ्य	,,
[illegible]सारोग में पथ्य	,,
[illegible]सारोग में अपथ्य	१५७
नेत्र रोग में पथ्य	,,
नेत्र रोग में अपथ्य	,,
शिर रोग में पथ्य	१५८
शिर रोग में अपथ्य	,,

विषय	पृष्ठ
गर्भवती को पथ्य	१५८
गर्भवती कोअपथ्य	,,
प्रसूत रोग में पथ्य	१५६
प्रसूत रोग में अपथ्य	१६०
बाल रोग में पथ्यापथ्य	,,
विषरोग में पथ्य	,,
विष रोग में अपथ्य	१६१
रोग शंकर में पथ्य	,,
रोग शंकर में अपथ्य	,,
बात रोग में पथ्य	,,
बात रोग में अपथ्य	१६२
पित्त रोग में पथ्य	१६३
पित्त रोग में अपथ्य	१६४
कफरोग में पथ्य	,,
कफ रोग में अपथ्य	१६५
मासप्रति अहित पदार्थ	,,
अहित वैद्यादि	,,
अथ द्रव्यगुणनिघंटु वर्णनो नाम पंचमाधिकारः	
पंच गव्य	१६६
षडूषण	,,
अष्टवर्ग	,,
दशमूल	१६७
सोना	,,
चाँदी	,,
ताँबा	,,
कांसा	१६८
पीतल	,,
रांग, जस्त, लोहा, पारा	,,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
अभ्रक	१६६
गन्धक, सोनामक्खी, मैनसिल	
हरताल	,,
गेरू कसीस,सिगरफ सिंदूर	१७०
सुरमा, रसोत, पुष्पांजन	,,
शिलाजीत, फिटकरी	१७१
समुद्रफेन,मूंगा,मोती,मणि,शंख,	,,
लघुशंख, खड़िया कीचड़	,,
बाल, चुम्बक, काचकदंब	१७२
अरजुनशिरस वड़	१७३
पीपर, गूलर, पाकरि	,,
पंचक्षीरी वृक्ष	,,
नन्दी वृक्ष	१७४
वेतस	,,
जल वेतस	,,
लसोड़ा, साग, शाल	,,
खैर, सफेदखैर	१७५
खैरजड़	,,
बबूल, विजयसार पीलू	,,
तेंदू भोजपत्र ढाँक	१७६
धव, धामिन, सोजा	,,
सोहरा, वरना, झींगण	१७७
सालक, हिंगोट, कटहा	,,
माषा नींव पहाड़ी	१७८

विषय	पृष्ठ
सेमर, तुनि, सातल	,,
हारिद्र	१७९
कजा, करंजी	,,
तिरगिछी जड़ी रीठा	,,
शीसम, अगस्त	,,
दाख, आम, जाभुन	१८१
नारियल	,,
छुहारा केला, अनार, बेर	१८१
खिन्नी, चिरौंजी, फालसा	१८२
तेंदूवा	१८३
काँकई, महुआ,कटहर, बडहर	,,
ताड, खरबूजा, सेव	१८४
नासपाती	,,
बादाम, पिस्ता, आंडू, अखरोट	
पालेबत	१८५
सहतूत, गंगेरुवा;	,,
तुम्बर, बिजारा	१८६
मधु ककड़ी, नारंगी	,,
जंभीरी, अम्लवेत, साराम्ल	१८७
नीबू राजनाबू	,,
कमरख, इमली, तितडीक	,,
करौंदा, कैथ	१८८
कैथपत्री गुणा गुणविचार	,,

॥ इति सम्पूर्ण ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीः ॥

वैद्यकग्रन्थ

रसराज महोदधि भाषा

तृतीय-भाग।

अथ मंगलाचरण।

दो०-बन्दौ श्रीगणपतिचरण, सकल सुमंगल मूल।
सुखदायकजग जीव कहं रहत सदा अनुकूल॥१॥
नारायण गुरु पद सुमिर, धन्वन्तरिपद ध्याय।
भाग तृतीय रसराज को, लिखौं ग्रन्थ मनलाय २॥

सो०-प्रातहर्र को खाय, करै नीम दातून नित॥
एकवार जो खाय, ता घर वैद्यन जावही॥३॥
डारै निर्मल नीर, मिश्रीयुत गौ दुग्ध में॥
करै पान ततिधीर, बढै बुद्धि बिवेक बल॥४॥

दो०-पथ्य सहित जगनरनको, रहिं औषधसों काम॥
बिना पथ्य औषध वृथा, समुझिलेहु बुधिधाम॥५॥
अन्धियारे घर में पवन, आवै जहाँ न जाय॥
भूतवसै त्यहिगेह में, मानुष चुनि २ खाय॥६॥
दिवाशयननिशिजागरण, क्षुधा रहित कछुखाय॥
निश्चय उपजै रोगतन, कहत वैद्य मन लाय॥७॥
नरहित कर दोहा लिखे, नारायण सुख कन्द॥
सोचि समुझि बरतैं सुजन भोगै परमानन्द॥८॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मू०—धर्मार्थ काममोक्षाणामारोग्यं कारणंयतः ।
तस्मात् यत्नेन कर्तव्या देह रक्षा सदा बुधैः ॥ १ ॥

भाषार्थ—धर्म, अर्थ, काम, मोक्षइन चारों पदार्थों के साधन का कारण आरोग्य ही है इस कारण बुधजनों को सर्वदायोग्य है यत्न पूर्वक देह की रक्षा करैं ॥ १७ ॥ शरीर आरोग्य रहने से मनुष्य का चित्त प्रसन्न रहता है आरोग्य रहना ही मनुष्य का पूर्ण सुखी होना है सो इसमें शरीर का पुष्ट होना ही कारण है, अर्थात् जिस मनुष्य का शरीर हृष्टपुष्ट होता है, उस मनुष्य के समीप रोग कभी नहीं आता और निर्बल मनुष्य के शरीर में सर्वदा रोग उत्पन्न होने का भय रहता है, हृष्टपुष्ट होने पर भी नियमोंके अनुसार बर्ताव नहीं करने से मनुष्य को रोग आक्रमण करने लगते हैं इस कारण धर्म पूर्वक नियमों को परिपालन करना भी परम आवश्यक है, मनुष्य को वही करना चाहिये, जिससे शरीर आरोग्य रहे ।

अधिक मलीन रहने व चिन्ता करने से तथा नियम विरुद्ध आहार करने से रोग होने का भय रहता है,इस कारण समय, देश प्रकृति, अवस्था, ऋतुचर्या, दिनचर्या, रात्रिचर्या इनका विचार अवश्य करता रहे, सो कमशः हम यहाँ लिखते हैं, संक्षेपरीति से तो हम इस ग्रन्थ के द्वितीय भाग में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिख चुके हैं, अब इस तृतीय भाग में विस्तार पूर्वक लिखते हैं परन्तु यहाँ इतना ही विस्तार किया जायगा कि जिससे बुद्धिमान जन समझ लेवें तहाँ प्रथम समय, देश प्रकृति, अवस्था का विचार करते हुए ऋतुचर्या को लिखते हैं।

अथऋतुचर्यानाम प्रथमाधिकार प्रारम्भः

दोहा—नारायण धरिध्यान उर, नारायण हुलसाय।
लिख्यो प्रथमअधिकार में, ऋतुचर्यामनलाय १॥

तत्रादौ समय विचार।

एक वर्ष में दो दो मासकी एक एक ऋतु होकर छः ऋतु होती हैं, ऋतुओं का राजा बसन्त ऋतु है, इस कारण बसन्त ऋतु से ऋतुओं का वर्णन है, ॥ सुश्रुत के मत से, चैत्र बैशाख में बसन्त ऋतु, ज्येष्ठ अषाढ़ में ग्रीष्म, ऋतु, श्रावण भाद्रपद मास में वर्षा ऋतु, आश्विन कार्तिक में शरदऋतु, मार्गशिर तथा पौषमास में हेमन्त ऋतु, माघ फाल्गुण में शिशिरऋतु, यही छः ऋतुऐं हैं, यह ऋतु व्यवहार श्री गंगाजी के उत्तर देशों में ही है, जैसे आसाम देश में चेरापूंजी के समीप आठ आठ मास पर्यन्त वर्षा होती है, बैसी वर्षा कहीं नहीं होती, एवम् उत्तर खण्ड के पर्वतीय देशमें सदा सरदी पड़ती है, ऐसे ही अमेरिका में तथा हबशी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुल्क में गरमी बहुत होती है, इस कारण ऋतु व्यवहार प्रायः गंगाजी के उत्तर के देशों में अधिक हैं। शार्ङ्गधर का मत टिप्पणी में देखो तथा ये ऋतु शीतकाल (सरदी) है। उष्णकाल (गरमी) और वर्षाकाल (बरसात) इन तीनों के लक्षणों से जानी जाती है. इनमें वायु करके सरदी, सूर्य करके गरमी और चन्द्रमा करके वर्षा होती है, कोई आचार्य वर्षा व सरदी को चन्द्रमा करके होना मानते हैं इन्हीं पूर्वोक्त शीत, उष्ण वर्षा इन लक्षणों वाली ऋतुओं से चन्द्रमा और सूर्य के काल विभाग करने से दो अयन होते हैं, १ दक्षिणायन, २ उत्तरायण। दोनों अयनों में वर्षा शरद, हेमन्त इन तीन ऋतुओं का दक्षिणा-

---

शार्ङ्गधर में लिखा है कि मेषको सूर्य संक्राति ग्रीष्मऋतु, मिथुन कर्क की संक्रान्ति प्रावृष्ट ऋतु, सिंह कन्या की संक्रान्ति वर्षा ऋतु, और तुला वृश्चिक की संक्रान्ति शरद ऋतु, धन मकर की संक्रान्ति हेमन्त ऋतु, तथा कुम्भ मीन संक्रान्ति बसन्त ऋतुः । कुम्भ की संक्रान्ति प्रायः फाल्गुण में होती है कभी कभी माघ शुक्लपक्ष से ही प्रारम्भ होती है, इसी से माघ शुल्क पंचमी को बसन्त पंचमी कहते हैं इस गणना से फाल्गुण चैत्र बसन्त, वैशाख ज्येष्ठ ग्रीष्म, और अषाढ़ श्रावण भाद्र आश्विन वर्षा कार्तिक माघशरद तथा पौषमाघ शिशिर ऋतु कही है यहाँ तीन दोषों में वायु प्रधान माना है। अतएव ग्रीष्म ऋतु से आरम्भ कर अन्त में बसन्त ऋतु कही है गोदावरी के दक्षिण भाग में चार महीने निरन्तर वर्षा होती है, इसी से चातुर्मास्य में प्रावृट और वर्षा ये दो ऋतु कल्पना की गई है, हेमन्त और शिशिर इन दोनों ऋतु के गुण दोष समान है इस कारण शिशिर ऋतु को छोड़कर हेमन्त मात्र माना है एवम् बसन्त ग्रीष्म को ग्रीष्म माना है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यन होता है इनमें चन्द्रमा का बल क्रम से बढ़ता है, और खट्टा, लवण व मधुर ये तीनों रस क्रम पूर्वक बली होते हैं, तथा सम्पूर्ण प्राणियों का बल उत्तरोत्तर बढ़ता है इन तीनों ऋतुओं को विसर्ग काल कहते हैं, यह चरक में लिखा है।

शिशिर बसंत ग्रीष्म इन तीनों ऋतुओं का उत्तरायण होता है, इसमें सूर्य भगवान का बल क्रमसे बढ़ता है, और तिक्त, कषाय, कटुरस बली होते हैं, तथासबप्राणियोंकाबलक्रमसेघटताहै,इस उत्तरायण को आदानकाल कहते हैं वाग्भट्टजी लिखते हैं कि इस आदान काल में सूर्य भगवान उत्तर गोलार्द्धव लम्बी होने से सूर्य और पवन अत्यन्त तीक्ष्ण उष्ण और रूखे होकर पृथ्वी के शीतल गुणों का नाश करते हैं। हेमन्त और शिशिर ऋतु में मनुष्य बलबान रहते हैं।

वर्षा और ग्रीष्म कालमें बल कमती होता है, और बसन्त ऋतु में मध्यम बल होता है। बसन्त ग्रीष्म शरद इन ऋतुओं के सन्धिकाल में कफ का कोप होता हैं, ग्रीष्म काल में वायु का संचय मनुष्य की देह में होता है और गरमी की अधिकता होती है प्रावृट् और वर्षा की सन्धि में वायु का कोप होता है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हेमन्त और शरद ऋतु में पाचक जठराग्नि बलवती होती है और कफका संचय होता है ।

अथ देशविचार

आयुर्वेद (वैद्यकशास्त्र) में देश तीन प्रकार के वर्णन किये हैं तहाँ १ अनूप, २ जङ्गल, ३ मिश्री, नाम से जानना, अनूपदेश वह होता है, जो नदी, नाले, झील को पर्वतोंसे युक्त और फूले हुए कमलों के समूह से व्याप्त, हँस, सारस, चक्रवाक, चकोर कारण्डव, वतक, तीतर, चाष. इत्यादि पक्षियों से सेवित हो, औरशश, वराह, अनेक प्रकार के मृग, महिष अदि पशु जहाँ होवें, तथा बहुत वृक्ष, व कदली आदि लता, औषधी, अन्न, पुष्प, फल सेव अनेक प्रकार के धान (शालिआदि) के क्षेत्रों से सुशोभित हो, विशेष कर अनूप देश में बात, श्लेष्मआम विकार अधिकता से होता है ।

जांगलदेश वह होताहै कि जहाँ सूखे रेतीले मैदान हों, और करौंदा, झरबेरी, मकुइया करील तेंदूऐनुआ, बेल मदार, पैरा आदि वृक्ष बहुत हों जांगल देशकी प्रकृति गरम, पाचक और पित्तकारक होती है ।

तथामिश्र अर्थात् साधारण देश वह होताहै कि जो देश अनूप और जांगल इन दोनों के लक्षणोंसे युक्त हों और साधारण देशकी प्रकृति भी मिलहुई होतीहै ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और जहाँ भूमि खोदनेसे जलसमीप (दशहाथतक) निकले, वहाँ की प्रकृति वादी और जहाँ दूर (तीस हाथ तक) निकले वहाँ की प्रकृति पैत्तिक जानना यह वाग्भट्ट के मत से देशका विचार वर्णन किया, जिस देशका जो मनुष्य हो उसको उस देश की औषध परम हितकारी होती है सो वैद्यजन को ध्यान रखना योग्य है। अन्य देश वाले को अन्य देश की औषध पूर्णफल नहीं देती।

अथ प्रकृति विचार

जो मनुष्य दुबला, रूखा हो, जिसके केश कड़े हों, और बहुत बोलता हो तो उसकी प्रकृति बात (सौदावी) जनना।

तथा जो मनुष्य दुबलाहो, परंतु रूखानहो क्रोधीहो, पाँचकशक्ति अधिकहो, बुढ़ापे से पहलेही बाल पकने लगें उस मनुष्य की पित्त (सफरानी) प्रकृति जानना।

एवं जो मनुष्य मोटा हो, गम्भीरनाभि वाला हो, जिसके केश नरम हों, बात चीत कमती करे और शयन अधिक करे तथा जिसकी बुद्धि स्थिर हो उसकी प्रकृति कफ (बलगमी) जानना।

यह प्रकृति वाले पुरुष को बादी, ठण्डा, रूखा भोजन अहित कारी जानना, और गरम तर हित कारी जानना। और पित्त प्रकृति वाले वाले पुरुष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को ठण्डा, पतला. और तर भोजन हितकारी, और कड़ा, चरपरा गरम हितकारी जानना।

कफ प्रकृति वाले पुरुष को पतले, ठण्डे अति चिकने व गरिष्ट भोजन अहितकारी, और श्रम, गरम, रूखा, तथा शोषण वस्तु हितकारी जानना। मनुष्य को उचित है कि देह को स्वस्थ्य रखने के निमित्त इन बातों का विचार अवश्य करे।

अथ अवस्था विचार

अवस्था तीन प्रकार की होती है, १ वाल्यावस्था २ मध्यावस्था, ३ वृद्धावस्था, तहाँ जन्म से लेकर सोलह वर्ष पर्यन्त बाल्यावस्था तथा और सोलह वर्ष से सत्तर वर्ष पर्यन्त मध्यावस्था तथा सत्तर वर्ष पश्चात् वृद्धावस्था जानना।

श्लोक—कौमारं पंमाब्दान्तं पोगण्डंद्शमावधि।
कैशोरवापंचद्रशा यौवनंतु ततः परम्॥ १॥

वाल्यावस्था में जन्म से पांच वर्ष पर्यन्त, कौमार संज्ञा, और दशवर्ष से पन्द्रहवर्ष पर्यन्त किशोर संज्ञा, और पन्द्रह वर्ष के उपरांत यौवन (जवानी) आदि संज्ञा ग्रन्थान्तर में लिखी है॥१॥

इसीप्रकार स्त्रियोंकी जन्मसे आठवर्ष पर्यंत कन्या संज्ञा और आठवर्षसे ग्यारहवर्ष पर्यंत गौरीसंज्ञा, एवं ग्यारह वर्षसे सोलहवर्ष पर्यंत वाला संज्ञा, सोलहवर्ष से तीसवर्ष पर्यंत तरुणी संज्ञा, तथा तीसवर्षसे पच-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पनवर्ष पर्यंत प्रौढा संज्ञा, इसी प्रकार पचपनवर्ष के उपरान्त वृद्ध संज्ञा जानना।

अब हम शरीरकी गति लिखते हैं सो इसप्रकारकी जन्मसे दशवर्ष पर्यंत कोमलता, बीसवर्ष पर्यंतवृद्धिपन, तीसवर्ष पर्यंत शरीरकी मुटाई, चालीसवर्षपर्यंत बुद्धिका आगमन, तथा पचासवर्ष पर्यंत त्वचा खाल को दृढ़ता रहती है, साठिवर्ष पर्यंतनेत्रोंमें ज्योतिरहती है सत्तरवर्ष पर्यंत शरीरमें वीर्य रहता है, तत्पश्चात् अस्सीवर्ष पर्यंत वीर्य शरीरमें क्रमसे न्यून होते होते नष्ट होजाता है, और नब्बेवर्ष पर्यंत ज्ञान रहता है, सौवर्ष पर्यंत भाषण (बातचीत) हाथ पाँव आदि में कुछबल और मलमूत्र आदि त्यागका ज्ञान रहताहै, एकसौदशवर्ष पर्यंत कुछ स्मरणमात्र ज्ञान रहताहैं, और एकसौबीसवर्षपर्यंत शरीरमें प्राणमात्र रहताहै, जोरोगी आरोग्य रहे तो उक्तक्रम से मनुष्य की जीवन जानना, शास्त्रप्रमाणानुसार मनुष्यको आयु एकसौ बीसवर्ष की कही है, यहाँ रोगयुक्त होने और शास्त्र बिरुद्ध बर्ताव करने से आयु कमती होजाती है।

शुभकर्म करना और सत्यबोलना, देवब्राह्मणदेवादिकी निन्दा न करना, ब्रह्मचर्य पूर्वक वीर्य धारण करना परउपकार करना, वृद्ध पुरुषों को सर्वदा बंदना पूर्वक प्रसन्न रखना, उत्तमशास्त्रोंकेअवलोकनसे, तद-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नुसार बर्ताव करना एवंऋतुचर्या दिनचर्यारात्रिचर्या नुसार रहना और पथ्यापथ्य आहार विहारादि पर परिपूरनध्यानरखनेसेमनुष्यपूर्ण आयुको प्राप्तहोता है,तथाउक्तआचारणोंसेविरुद्धकर्मकरने से मनुष्यकी आयुअल्पहोजातीहै,क्योंकिविरुद्धआहार विहार से मनुष्यकेशरीरमेंरोगउत्पन्नहोते हैं औरउनमेंपथ्यापथ्यपरपरिपूर्णध्यान नरखनेसेवह रोग साध्यसेयाप्य औरयाप्यसेअसाध्यहोकरइसशरीरकोनाशकर देता है,इसकारणमनुष्यकोअपनेशरीरकीरक्षाके निमित्त आयुर्वेदोक्तरीत्यनुसारअवश्यचलनाचाहिये क्योंकि धन्वन्तरिमहाराजनेसुश्रुतमेंएकसौएकमृत्यु लिखी हैं,जिनमेंसौआगन्तुकमृत्युहैंजोकिप्रयत्नकरनेसे दूर होजाती हैं,औरएककालसंज्ञकमृत्युहैजोकिब्रह्मा आदिदेवोंकोभीआयुष्यकेअन्तमेंनष्टकर देतीहै, इसपर कोईप्रयत्ननहींचलता,अतएवप्रत्येकमनुष्यकोउचित हैकिजहाँतक शरीर रोगरहितरहै,जहाँतकवृद्धावस्था प्राप्तनहोवे,तथाजहाँतकइन्द्रियोंकी शक्तिन्यूननहोवे औरजबतकआयुकाक्षयनहोवे.तबतकअपनीआत्मा केकल्याण निमित्ततपश्चर्या योगाराधनादिसत्कर्मों कोकरलेवे, क्योंकियोगाराधन, तपश्चरणादिसत्कर्मोंकेकरनेसेहमारेमार्कण्डेयआदिमहर्षियोंकी आयुवृद्धिकोप्राप्तहुईहै,मनुष्यदेहकोपाकरजहाँतक होसके
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आयु बढ़ानेका उपायकरना चाहिये, और धर्मानुसार बर्ताव करनाचाहिये, क्योंकिमृत्युकेपश्चात केवलधर्म हीपुरुष के साथ जाताहै, यदि आयु बढ़ानेकी सामर्थ न होतो नियमानुसार चलकर जितनी आयु आयुर्वेद में नियत की है, इतनी तो अवश्य होनी चाहिये।

आधुनिक समयमें कईएक बातें ऐसी हैं कि जिनसे आयुकी वृद्धितो पृथक् रही पूर्ण आयु तक भी पुरुष नहीं पहुंचते, जैसे बालविवाह अधिक विषय भोग करना, भक्ष्याभक्ष्य और पथ्यापथ्य का विचार न करना, शास्त्रोक्त नियमों पर ध्यान न धरना इत्यादि

तथाच—अवस्था प्रतीकार ॥ चौपाई ॥

भेदअवस्थासुनियेसोई। प्रकृति वयसमें उपजैजोई। प्रकृति समयपर परिहर आया। अबसब बिधिहौं देऊँ बताय॥वर्षदशकलाकीड़ाकरे।वर्षबीसलौबलकोधरे॥ शीतउष्णतेश्रमनहींमाने।अहितप्रकारकछूनहिजाने

दो०—वर्ष बीसके ऊपरे, तीसवर्ष लगसोय।
समभोजन ताको कह्यो, वैद्य ग्रन्थसबजोय।१।

❀ चौपाई ❀

करेदाह रुधिन उर करे। दिनदिन मंदअग्निहै जरे। ऊपर तीसचालिसोंई। देहीरुक्षउष्णतासोई। भोजन स्निग्ध कह्यो पर धान। हरे रक्तता कर बलवान॥ चालिस ऊपर लग पंचास। रूखी देह शीतल कास।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो०—वर्षगये पंचास जब, अर्द्ध वृद्धिता होय ।
जरा आयु घेरति भई, गई तरुणता रोय ।२।

॥ चौपाई ॥

भोजन स्निग्ध उष्ण कहुं होइ।शीत तासुकी व्यापति सोइ॥ जोयाते ऊपर बढ़िचलै। ताको आय वायु तन-दलै। ताको भोजन उष्ण बखान।कीन्हो वैद्यजनन परमान॥श्लेष्मा प्राणरन्ध्रप्रगटाय।कफप्रगटै मुखमा-रग आय।दोहा—सत्तरहू के बीच में, साठिवर्ष उपरांत होयँ सभी इन्द्रिय शिथिल, नारी सो एकांत ।३।

॥ चौपाई ॥

या उपरान्त सौतेहू ऊन।गई वीति आयू भाई न्यून। गयोतेज सबही यह देह। उपजें शीत वायुकर गेह॥ उगले भोजनजो कछुखाय। मैथुन इच्छावृथाकराय॥ ताकी औषध दई बताय। लै मालाहरिके गुणगाय॥ दोहा—कह्यो समय अनुसार यह, समुझि आपु प्रति-कार॥घटति आयुनर है ये, मिथ्याहार बिहार ॥४॥

एक दिनमें ऋतुवों का विचार

एकदिनरात्रिमेंछओंऋतुवर्तती हैं, सोइसप्रकारकिदि नकेपूर्वान्हमेंवसंतऋतुकेलक्षणहोतेहैं, मध्यान्हमेंग्री-ष्मऋतुके, प्रदोषसमयमेंवर्षाऋतुके, अर्धरात्रिमेंशरद ऋतुके, औरचारघड़ीकेहेमंत ऋतुके लक्षणहोते हैं॥

ऋतुपरत्व दोष और शम।

वर्षा, हेमन्त, और ग्रीष्म ऋतु में संचित हुए दोष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शरद आदि ऋतुओंमें कुपितहोतेहैं जैसे वर्षाऋतुका संचितदोषशरदऋतुमेंकुपित होताहै, और हेमंतऋतु का संचितदोष वसंत ऋतुमेंकुपितहोताहै, तथा ग्रीष्म ऋतुका संचित दोष प्रवृट ऋतुमें कुपित होता है. उस दोषका क्रमसे शरद, वसंत और प्रावृट ऋतुमें वमन विरेचनद्वारा शोधनकरना चाहिये। पैत्तकव्याधियां की शांति हेमन्त ऋतुमें और कफजनित रोगों की शांति ग्रीष्मऋतु में, तथाबातजनित रोगोंकी शान्ति शरद ऋतुमें स्वयंही होजाती है। शरदी, गरमी और वर्षाके विपरीत होनेसे जलऔर औषध दूषित होजाते हैं, अर्थात् कुसमय वर्षा होने वा जाड़ा गरमी पड़नेसे जल दूषित होजाताहै, जल दूषित होनेसे औषधियोंमें दोषआजाताहै, जिनकेसेवनसे महामारी आदिअनेक रोगोंकेप्रगट होनेकाभय रहताहै, इसकारण योग्यहैकि कुसमयमेंवर्षा आदिदेखकरअपनाआहारविहारठीक रक्खे, वैद्यकोउचित है कि उत्तमऋतुओं में जल (अर्क आदि) औरबाहरकी औषधियोंकासंग्रहकरलेवैजो रोगऔरविपत्तिआनेसेपहले उपायकरतेहैं, वहीवैद्यऔर मंत्री उत्तम कहतेहैं, अर्थात् जिसवर्षमें उत्तमऋतु हो, वैद्यउसी समयमेंसब औषधियोंकाऔर जलका संग्रह कर रक्खे, और राजाके मंत्रीको उचितहै कि जबतक कोई शत्रु प्रगट न हो. उससे पूर्वही सेना आदि का प्रबन्ध भली भांति कर रक्खे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कभी कभी उत्तम ऋतुओं में भी गुरु पिता माता ब्राह्मण सिद्ध आदिकों के शाप व अधर्म से लोक पीड़ित होते हैं।

जिस देशमें विषैली औषधी कीपुष्पगन्ध को वायु लेजाकर प्रास करती है,वही दोष प्रकृत्तिके बिना भी लोकखांसी श्वासवमन,मस्तकपीड़ाऔर ज्वरसेतपायमान होतेहैं कोई आचार्य ऐसाभी कहतेहैं किश्वांस लेने से जी नाकके छिद्रद्वारा विषयुक्त पवन आता है, खाँसी,श्वास,प्रलेष्मा,गंधका ज्ञान न होना, भ्रमऔर मस्तकपीड़ा आदि रोग प्रगट होते हैं, और वही विष युक्तपवन त्वचामें लगनेसे ज्वर शीतला आदिकरोग होते हैं, तथा शनैश्चर आदि पापग्रहोंके दुष्टस्थान में स्थितहोनेसेऔर अश्विनीआदि नक्षत्रोंके उल्कातापआदि चरित्रसे,व जन्मनक्षत्र आदि वृद्धिहोनेसे तथा घरस्त्री व शैयावाहन आदिगृहपदार्थ और गौ व अश्व आदि पशुओंके दुष्टलक्षण रूप कारणकरके ऊत्पत्ति जिनकी ऐसी व्याधियों करके लोक पीड़ित होते हैं।

तथा जिससमय राजा धर्म को त्यागकर अधर्म को प्रवृत करता है, उस समय उसके देश और पुरवासी प्रजा धर्म मर्यादाको उल्लंघन करतीहै,जब इस प्रकार राजाऔर प्रजादोनों अधर्मी होजातेहैं,तब उसराजा और जनपदों को ग्रामदेवता और कुलदेवता त्याग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देते हैं, उससमय उन अधर्मी प्रजाओं का काल, देश जल और पवन बिध्वंस करते हैं इसकारण राजा को योग्यहै कि अपने राज्य में अधर्म को प्रवृत्त न होनेदेवे

तथा जिस समय सुगंधित वस्तुओंमें दुर्गन्ध और दुर्गन्ध वाली वस्तुओंमें सुगन्धी आवे, उत्तक रंग दुष्ट और दुष्ट रंग उत्तम प्रतीत होवे, उसी प्रकार कटु कषैले रस मिष्ट और मिष्ट रस कटु प्रतीतहों तृण लता गुल्मआदि जाल और बेलसे युक्त होजावे, डांस मच्छर, मक्खी आदि कृमि जीव उपद्रव युक्तहोंटीडी घुघ्घू और श्मशान बासीस्यार भेड़िया आदि जीव बहुत बढ़जावें और कुसमयपर बहुतबोलें औरआँधी बौंडर भूचाल उल्कापात वर्षा आदि करके पीडित तथा वन उपवन और धान्यआदिकेवृक्षफलहीनहोवे जलाशय काई वांशेकरआदिसे आच्छादित होजावे गरमी की ऋतुमें फूलने फलने वाले वृक्ष शाद ऋतु में फूलें फलें, और शरद ऋतु में फूलने फलने वाले वृक्ष गरमी का ऋतु में फूलें फलें।

तथा गर्मीसे अद्भुत अर्थात् दांतों वाले, हँसते नेत्र खुले, दो मुंड़, छःछः उगली वाले जुड़ेहुए, बिनाशिर कबन्धरीघोड़ाआदिकेसमान बालकप्रगटहोवेंइत्यादि अन्य भी ऐसे ही उपद्रब होवें, पशुगण पीढित होवें कुत्ता आदि जीव रुदनकरें, घोड़ा आदि स्थानत्याग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर भागने लगे जिस देशमें ऐसे उपद्रव दीखपड़े तो जानना कि अब यह देश दूषित होगया है ।

दूषित जल लक्षण ।

जलके जोरस, स्पर्श, गन्ध और वर्ण वर्णनकियेहैं उसअपने स्वभावसे जो हीनहो. जिसका स्वाद खारी हो शरीरमें स्पर्श होतेही खुजली पड़ने लगे, चकत्तोपड़ जावैं दुर्गन्धि आती हो, अथवा जो जल दीखने में अच्छा न लगे, जिसमें कोई पशु गिरकर मरगयाहो कीड़े पड़गये हों, पत्ता, तिनका. मिट्टी व पत्थरसे घिर गया हो, ऊपरसे जिसपर मलाईसी जमरहीहो अथवा जिस जलको जलचर जीव (मेढ़क, कछुवा, चकवी, बतक, सारसआदि) त्याग गये हों, अथवा जिसजलमें कोई जलचर जोव नहीं रहताहो और वहाँ अकस्मात आकर रहने लजे, तथा जिसमें मक्खी गिरने से मर जावे, वा जहाँ तटके वृक्ष गिरपड़े, वा जलाशय सूख गया हो, ऐसा जल मनुष्यों को रोग प्रगट करनेवाला होता है और दूषित कहता है ।

दूषित पवन लक्षण ।

जो वायु बौंडरके रूपमें हो, त्रीस दायक, प्रचंड हो घोर वेग व घोर शब्द युक्तहो, और अत्यन्त शीतल अतिउष्ण. और अतिरूक्ष व अतिकठोर. दुष्टगन्ध में युक्त और रेत धूल. धुवाँ इनसे मिली हुई पवन होवे, अथवाऋतु विपरीतिपवन वईतो दूषितजानना पवन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से दूषित होता है, और जल दूषित होता में, पवन और जलसे पृथ्वी दूषित, होती है पृथ्वीके दूषित होने से तज्जनित औषधियां दूषित होजाती हैं, यहाँ कालसे देश, देशसे जल, जलसे पवन अधिक बली जानना अतएव बुद्धिमान पुरुषको उचित है कि अकाल मृत्यु से अपने जीवनकी रक्षाकरे, रसवीर्य विहोन औषधियोंका परित्यागकरे, और उत्तम ऋतुमें होनेवाले और उत्तम ऋतु गृहीत औषध जल आदिका सेवन करे, तथा ऋतु चर्या आदि के करने से देह रक्षा करे।

जिस स्थान में रोग आदि उपद्रव होते हों, उस स्थान को त्यागकर दूसरे स्थान में चला जाय। जिस समय महामारा आदि रोग होवें उस समय ग्रह पूजा करना, दूषितवस्तु न खाना, स्त्रीप्रसंग अधिकन हीं करना, चान्द्रायण आदि वृत करन, उत्तम औषधियों का धारण करना, ओंकार और व्याहृति पूर्वक गायत्री मंत्रका जप करना, हिंसा नहीं करना क्योंकि, अहिंसा परमो धर्मः अर्थात किसी जीवको नहीं सताना ऐसा धर्मशास्त्र का वचन है यथाशक्ति अनाथों को देना परंतु हृष्टपुष्ट वकवृत्ति और विडाल वृत्ति वालोंको देना उचित नहीं है देव ब्राह्मण, गुरू आदि की सेवा करना, इत्यादि तुम कर्मों के करने से ऋतु जनित महामारी आदि उपद्रवों की शांति होत है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ बसन्त ऋतु वर्या ।

तत्र बसन्तऋतु आगमन वर्णन—कवित्त ।

आई है बहार वनवेलिन नवेलिन में बहुधा चमेलिनमें भीर भौंर छाई है छुपाकर मरीचिका दरीचिन में तिनहू लखत के अतन ताप ताई है । ताई है सुधिबुधि बलबन्त मेरी जीवते पियारे प्राण प्यारी विसराई है । राई है न नेक कहूँ नव में कलेवर में कहियो कन्त सों वसन्त ऋतु आई है ॥ १ ॥

दोहा—यह मधुऋतु में कौनके, कढ़त न मोद अनन्त ।
काकि लगावत है कहुकि, मधुप गुञ्जारत तन्त ॥

दिशदिश कुसुमित देखियत, उपवन विपनसमाज
मनो वियोगन को कियो, शरपंजर ऋतुराज ॥ ३ ॥
अलि गुञ्जतकुञ्जत विहंग, प्रफुलित कुसुम अनन्त
शीतल मन्द सुगन्ध वह, पौन बखान बसन्त ॥४॥

श्लोक—कफश्चितोहिशिशिरेवसन्तेऽकांशुतातापित ।
हृत्व ग्नि कुरुतरोगानत स्तत्वस्याजयेत ॥ ५ ॥ वाग्भट्ट

शिशिर ऋतुमें जो कफ संचित होता है वह सूर्यकी किरणोंसे संतप्तहो जलके समान पतला होजताहैऔर जठराग्निको नष्टकर अनेकरोगों को उत्तन्न कर देताहै इस कारण दुष्टकफको जीतनेका प्रयत्न अवश्यकरे । प्रबल कफको तीक्ष्ण बमन नस्य विरेचनादि करके तथा लघु और रुक्ष करके एवं व्यायाम उद्धर्तन और कुस्तीलड़ना इनकरके कफको जीते६सोंठकोऔटाया हुआजलअथवाखैरसार चन्दनआदि सारकोमिलाय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

औटाया हुआ जल तथा शहत अदरख काली मिरच अथया नागरमोथा मिलाय औटाये हुये जलको पीवे, और कफकोजीते ॥ रूखा व कषैला पदार्थ कडुवा, तीखा चर्परा पदार्थ कपूरपान स्वरूपको मनोहर रखना शहत मिला हर्रका चूर्ण बसंत ऋतुमें सेवन करे।

वसन्त ऋतु में पथ्य।

केशर काला अगर चन्दन इनको एक में मिलाय लेपकरना और त्रिफला (आंवला, हर्र, बहेड़ा) हलदी अडूसा भांग त्रिकुटा (सोंठ मिर्च पीपर) असगन्ध पीपलामूलजीराअजबायनअदरखसोंठ, मूलीपेठा, हींग मेंथी पकाखीरा, छोटीबड़ीदुद्धी, बथुआ कचनारकीफली चौलाई, परवल, जिमीकन्द, मरसेका साग, करेला, घीया, तुरई, शहत युक्त पीपर, सांठी चांवल, सरसों, चना, मटर, जौ, मूँग, अरहर, कोदों समखिया अन्न, राई, ज्वार, मसूर, चूकाकासाग, लालचांवल, सहजना पकातरबूज, सहजनेकेफूल, लहसन ये सब बलंत ऋतुमें हितकारीहैं एवं अन्यभी अनेकपदार्थ इस ऋतु में हितकारी हैं जो विस्तार भयसेयहां नहींलिखे खान पानमें इसका ध्यानरहे किजो वस्तु शीघ्र पचने योग्य होवह सबऋतुओंमें पथ्यहै औरजो खाद्यपदार्थ गरिष्ट

---

१ भांग लहसन को औषधिमात्र ग्रहण करना इसी से यहाँ इनका नाम लिखा गया है मांस भक्षण करना हमारी सम्मति नहीं इस कारण इस नाम तृतीय भाग में ऐसे अभक्ष्ण पदार्थ की आज्ञा हम न लिखेंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और बहुत वादी हो उसको सर्वदा विचार कर खाना चाहिये और शरदी की ऋतुमें गरम पदार्थ और गरम ऋतुमें शीतल पदार्थ सेवन करना चाहिये तथा बला बल के अनुसार जिसप्रकार जैसी जिसकी प्रकृति हो उसी अनुसार खान पान हितकारी जानना।

बसन्त ऋतु में अपथ्य।

गलका तुरई, पोईका साग, नारी का साग, दही, उडद, सिंघाड़े, आलू, ईख, बड़े उड़द, समापसाई के चांवल, हाला (चने की फली)

खट्टे और चिकने पदार्थ, दिनमें शयन, खिचरी भैंसका दूध, ये पदार्थ बसंतऋतुमें अहितकारी है कोई उत्तम वैद्य ऐसाभी कहतेहैं कि बहुतशीतल और बहुत मीठे पदार्थ बसंतऋतु हितकीकामना से त्याग देवे।

अथ ग्रीष्म ऋतुचर्य्या।

तत्रादौ ग्रीष्म आगमन वर्णन ॥ कवित्त ॥

ग्रीष्म समारतोषी तीरसी लगत अङ्ग भूमिमहिमंडल में तपनतपीर है। असनबसन पान पानी सुखदानी वस्तु तमकै घनेरी सबै यदपि ढपीर है। ब्याकुल कुरंग दौरैं वनमें चहूँदिशान मान अकुलात जौपै तीर में खपी रहै। कहते नारायण संगलीने निज प्रीतम को खूब खसखानन में नवला छपीर है ॥ १ ॥

दो०—खुब चटक कर चेटकनि, फांसीपवन चल ॥
भारत दुपहर बीच में, तकि ग्रीषपठगभाय ॥ २ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाहिन यह पावक प्रबल, लुवें चलैं चहूँ पास।
मानहुँ विरह बंसतकी, ग्रीष्म लेत उसास ॥३॥
तियछीटतयों पियहिकर, लहि जलकेलिअनंद।
मनौ कमल फहुं आरते, मुक्तन तोपत चंद ॥४॥

पद्य-तीक्ष्णा शुरतितीक्ष्णां शुग्रीष्मे संक्षिपतीवयत्।
पत्यहं क्षीयते श्लेष्मा तेन वायुश्च बर्द्धते ॥४॥

गीष्मऋतु सूर्य तीक्ष्णकिरणों वाला होकर जगत की चिकनाईको दूर करताहै, अतएव नित्यप्रतिकफ क्षीण होताहै,और बातक वृद्धि होती है ॥४॥

इसीकारण इसऋतुमें लवणकेचरपरे खट्टे रसोंकी व दंडकसरत,तथासूर्यकी धूपका सेवनकरनावर्जित है, इसऋतु में मीठाअन्न,हलका चिकने, शीतल और पतलेपदार्थ सेवनकरे, सरोवर, बावड़ी, नदी, वन, फूलमाला,चंदन, और शीतलघर गुडके साथ हर्रका चूर्ण तथामंथये सबपदार्थ ग्रीष्मऋतुमें सेवनकरना।

सक्तवः सर्पिषाभ्यक्ता शीतोदक परिप्लुताः।
नातिद्रवा नातिसांद्रा मंथइत्यभिधीयते ॥ ५ ॥

घी मिले, शीतल जलसे युक्त न बहुत गीले न बहुत गाढ़े ऐसे बस्तुओं को मंथ कहते हैं ॥५॥

ग्रीष्म ऋतु में पथ्य।

कुन्दपुष्पके समानउज्वल चांवलोंकाभातशिखरन मुरब्बा,पना,पंचसारक जौ दाखऔर खजूरआदिसे बनताहै,तिंतडीक(इमली)की खटाईभी मिलाईजाती है सो मिट्टीके सकोरोंमें रखखावे,अथवा पीवै।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चन्द्रमा की चाँदनी से सेवित कपूर युक्त शीतल गुलाब जल अथवा पाढर पुष्पवासित जल पीवे, तथा रात्रिमें कपूरमिश्रित तरावट करने वाले पदार्थों को भक्षणकर मिश्री मिलाकर रात्रिमें शीतलकरने को धरे हुए भैंस के दूधको पीवे ।

तथा कमल फूल, और बेला आदि सुगंधित फूलों से युक्त कोमल शय्या, चारों ओर खशकीटट्टी लगी हुई तिन में सुगंधित गुलाब जल का छिडकाव हो, ऐसे स्थान में मध्यान्ह समय शयन करना ।

तथा चन्द्रमाकी किरणों से व्याप्त ऐसे महलों की छत्तपर रात्रिमें निवासकरे, और चंदन व चंपापुष्प माला व कपूरमाला धारण करे, तथा बहुत पतलेव उज्जवल बस्त्रपहरे और कस्तूरी मिला चंदन लेपकरे ।

शाली और साठीचाँवलोंका भात जौ, ग्वार, मूंग, नीवारगेहूँ, मटर, कोदो, अरहर, मसूर कच्चा तरबूज, कच्चाककड़ी, कच्चे खीरे, पेठा, करेला, बथुआ, चौलाई, चूका, घीया, परवर, शक्कर मिला हुआ गाढ़ा दही, या मलाई समेत मीठादही एवं मिश्री मिलामठा गलका तुरई मरसेका साग पोईका साग, सिंघाड़े कसेरू, ये पदार्थ गीष्मऋतुमें हितकारीहैं, परन्तुएकबातकाध्यान सब ऋतुओं में रहे कि हितकारी पदार्थभीअत्यंत सेवन नहीं करना कहावतहै कि 'अति सर्वत्रवर्जयेत्' सर्वत्र अतिका परित्यागकरे, अन्नही मनुष्यकेनिमित्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अमृत है, और अन्न ही अति सेवन किया हुआ विष समान होकर रोग जनक जानना।

ग्रीष्म ऋतु में अपथ्य।

ग्रीष्मऋतु में खट्टे पदार्थ और अति लवण वाले पदार्थ, कडुये पदार्थ, गरम पदार्थ व्यायाम मैथुन रात्रि में जागना अग्नि सेतापना अत्यंत पवन, सूर्यकी किरणों से संतप्त जलसे स्नान, ये पदार्थ ग्रीष्मऋतु में अहित कारी हैं, मदिरा तो किसी समय कभी नही पीना चाहिये परंतु यदि प्राण संकट समय प्राण रक्षानिमत्त पीने की आवश्यक्ता होवे तो औषधमात्र पीनेमें कोई हानि नहीं सोभी जल मिलाकर पीये। औषधि से पृथक् नहीं पाना, और ब्राह्मण को तो कभी नही पीना चाहिये, चाहे प्राण चले जांय।

इस ऋतुमें मद्य पीने से सूजन, शिथिलता, दाह मोह सूजन आदि रोग प्रगट होजाते हैं, तथा पका तरबूज बेंगन, लहसन, सहिजाना, उड़द, काँगनी, चौरा, खिचड़ी राई, सरसों, मैदा, मैथुन, उपवास, परिश्रम, भाग चलना, दही, ये सब अहितकारी जानना, मनुष्यों की आरोग्यता के निमित्त गरमीकी ऋतु सामान्य है इन दिनों में गरमी के कारण प्यास बहुत लगती है शरीर से पसीना निकलता है दो बार स्नान करने से भी कोई हानि नहीं पहुंचती,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस ऋतुमें शीतल पदार्थ भोजन करना बारीक वस्त्र पहिनना और सूर्य की धूप और गरमी से बचना।

जल शीतल करने का उपाय।

गरमी की ऋतु में शीतल जल बहुत कम प्राप्त होता है, इस कारण यहाँ जल के शीतल करने के उपाय लिखते हैं, एक कोरा घड़ा, वा झम्झर अथवा सुराही को दिनके समय धूपमें रखदेवे संध्या समय उठा उसमें जल भरकर हवादार ऊँचे स्थानमें रात्रि को रख देवे प्रातःकाल किसी छाया वाले शीतल स्थान में रख छोड़े तो जल शीतल रहेगा।

अथवा जलको औटाकर रात्रि समय मिट्टीके पात्र में ऊँचे स्थान में जहाँ पवन का झकोरा आता हो वहां रखने से जल शीतल व पाचक हो जाता है।

अथवा एक गड्ढा खोदकर उसमें मिट्टी का एक कोरा मटका गाढ़देवे, उसके चारों ओर मिट्टी लगा कर जौ बो देवे, और उन जौ को प्रतिदिन जलसे सींचता रहे, तो उस मटकेका जल बहुत ही शीतल रहता है. एक महीना के उपरान्त मटके को बदल देवै मिट्टी भी नवीन डाले, और जौ भी नवीन लाकर बो वै, तो जल शीतल रहेगा।

तथा मिट्टी के कोरे पात्रमें जलभर कर दिनभर धूप में धरे और रात को हवादार ऊँचे स्थान में धरे तो जल शीतल हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथवा शोरा और नौसादर पांच भाग, जल सोलह भाग एक में मिलाकर मिट्टी की नाँदमें व पीपा में भर कर उसके ऊपर मोटा कपड़ा लपेट देवे, अथवा टाट लपेट रक्खे तो जल अतिशीतल हो जाता है।

प्रायःमनुष्य जलमें वर्फके टुकड़ोंको मिलाकरजल शीतल करके पीते हैं ऐसा जल पीने से थोड़ी देरमें फिर प्यास लगती है, और चित्तमें शीतलता नहीं आती इससेठण्डके स्थानमें गर्मीका निवास हृदयमें होजाता है, इसलिये चित्तको शीतल करने का यह उपाय ठीक नहीं किन्तु जलकी सुराही को वर्फ में ठण्डा करे फिर उस सुराहीका जलपीवे तो ठीकहै।

अथ वर्षा ऋतु चर्य्या—तत्रादौ वर्षाऋतु वर्णन

कवित्त—आई ऋतुपावस अषाढ़ सुधरा घरवाढि ललित कदंवन लतानललिताई है। कहते नारायण जोरदाहन दरपजैसी तैसी ये तड़प तड़िता की अति छाई है। छोड़ेकौन मान काम रतिसों वगोडे आली उनई घटा की छिति छवि अति छाई है। मेघन की झुकनझकोरन प्रभंजनकी झिल्लनकीझलकझुकान की अवाई है॥ १॥

वरषै सघन घन सावनसुहाई बूंद कुञ्जनमें पवन चलै लहर झकोरे में। कुहकें पपीहा मोर दादुर करत शोर गुञ्जतभँवर बिज्जू नचत बिजोरेमें। कहत नारा-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यथ सखी चहुँधा चंवर ढोरें हाथन ललाई मानोलाल रंग बोरे में लहाके ढरकि जाती अलकें कपोलनपै लपिक लचकि झूलैं मचकि हिंडारे में ॥२॥

दो०—द्रुमउखारि डारतमही, फेंकत जल कनसाज।
पावस मारुत मत्त चलि, आवत जनु गजराज॥३॥
सुमन सुगन्धसों सनी, मन्द मन्द चलि आय।
प्रौढा लौं मनको हरति, हिय लगि वर्षा वाय॥४॥
पावस में सुरलोक ते, जगत अधिक सुख मानि।
इन्द्रवधू जिहि ऋतुसदा, क्षित विहरतिहैं आनि॥५॥
अरुण चीर तन में सजे, इमि विहरति हैं नारि।
मानों आई हैं सुरी, बसुधा हरो निहारि॥६॥

मेघविस्फूर्जित छन्द—कफादेही मन्दा जठर ज्वलना होय वर्षा सुनीरा। उठे भूमी भाफा जलद टपकै दोषकोपैं शरीरा। करे ताते ऐसा उदर अनलानित्य बाढे जिसी ते। नहीं होने पावे प्रकुपित कभी दोष तीनों इसी ते॥७॥ आती ठंडी वायु जिस दिन चलै होय अत्यन्त वर्षा। मधु स्निग्धा षट्रस युता वस्तु भक्षै सहर्षा। पुराने जौ गेहुँ उडद कुलथी शालिसेवे सराइ। सभीही द्रव्योंमें शहतमिलायखाय-दे चित्तभाई॥८॥ कचौरी खस्ताकी गलक तुरई खीर लड्डू बनावै। पके कोषी चूसैं अमचूर परी दारिको छौंकि खावे। सुशाका कालिदा शुभ सहजना नागरै

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कामलावै। तनुछोरी चूकालवण छिरिकाचाखिआनन्द पावै९। पिय पानी ठंडा गरम करके स्वच्छ आनन्दकारी। पका पेठाखीरादधियुडयुताशाकपोईप्यारी। पुआ फैंनी लपसी सघृत कृशरा सेमई शाक नारी॥ मिलै सेंधौ मट्ठा सुखदबथुआ खाइये दुःखहारी।१०।

मू०—वर्षासुगेहं निचितं सुयुक्तं पीने जलंसारसमावृतंवा।
स्यात्पचकोलं सततं च सेव्यं तैलतिलानामपियोजनायम्॥२१॥

बर्षाऋतुमें चित्रविचित्र पदार्थों से सुशोभित स्थान में रहना, ढके हुए सरोवर वा बावड़ो का जल पीना, पंचकोल व तिलका सेवन करे॥ ११॥

तथा सेंधालवण मिला हर्रकाचूर्ण, अगर, कस्तूरी आदिकीसुगन्धि सुगन्धितस्थानमें शयन और हल्दी व केशर की शरीर में मालिश ये सब वर्षा ऋतु में सेवन करने योग्य जानने।

वर्षा ऋतु में पथ्य।

साठी, चांवल, लाल चाँवल, उड़द, कुलथी, राई अलसी, सरसों, गेहूँ, पकापेठा, पक्का तरबूजा, खीरा गलका, तुरई, बैंगन, बथुआ, मरसेकासाग पोई का साग, सहिजना, चूका, परवल, शिखरन, चूका व सरोवरका जल, ईख, खिचड़ी, घेवर, मालपूआ घृत, दूधकी खीर ये सब वर्षाऋतु में हितकारी हैं।

वर्षाऋतु में अपथ्य।

कच्चाखीरा, कच्चीककड़ी, रामतुरई, जौ, घीयातुरई, चचेड़ा, करेला, नारीकासाग, बनकरेला, भैंसकादूध

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आलूकसेरू अरहरकीदाल, कोदों, समखिया पासही, ज्वार, अधपकेजौ, कुलथी, लंघन, अतिमैथुन, बलवान से कुश्ती, बहुतदंडकसरत, बारबारभोजन, दौड़करचलना तापना, ऊँचेपरचढ़करफलांगमारना, धक्कालगनेवाला कामकरना देहकोक्लेशहोऐसाकामकरना उलझना कूदना, जलमेंतैरना, रातकोजागना, बोझालेचलना अधोवायु, मलमूत्र, छींक, डकार, आँसू वमन और वीर्य इनके वेग को रोकना कषैले चरपरे, कड़ुये, हलके, शीतल, रूखे, तथा सूखे साग ये सब वर्षा ऋतु में अहितकारी है इन सबका परित्याग करै, यदि इनमेंसे किसीकी अधिक आवश्यकता हो तो एक दो बार सेवन करने से कुछ हानि नहीं ।

अथ शरदऋतु चर्य्या ।
तत्रादौ शरदऋतु वर्णन

कवित्त–चन्द्रमा प्रकाशन में चन्द्रमुखी हासनमें अवनिअकाशनमें कासनमेंछाईहै। सीतारामतालन में ईदीबन मेलनमें चंचरीक जालन में अधिक अमाई है। मैत्रकाकी डारिन में मालती कियारिन में फूली फुलवारिन में सौ गुनीसुहाई है। कामकेसी खेतिन में बालुकासमेंतिनमेंवृन्दावनमेंबीथिनमेंशरदसमाईहै। फूले आसपा सकास विमल विकास वास रही नहीं न निसानी कहूँमहीमें गरदकी। राजत कमलदल, ऊपर मधुपमैन छापनीदिखाईछविविरहफरदकी। श्रीपति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रसिक बनमाली बिन कछू न उपाय मेरे जीय के दरद की। हरद समान तन भयो है जरद अब करदसी लगति है चाँदनी शरद की ॥ २ ॥

दोहा—चन्द्रछत्र धरि शीशपै, लहि अनंग उपदेश।
कमल शस्त्रगहि जीत जग, लीन्हो शरद नरेश ॥३॥
पथिक सुखद विकसित कमल. अमल काम आकास।
कुमुद बन्धुयुत कौमदी, वरनियशरद विलास ॥४॥
उयो शरद राकाशशी, क्यों न करत चितचेत।
मनहुँ मदन क्षिति पालको, छाँहगीर छविदेत ॥५॥
चन्द्रबदन दरशाइ अरु, खंजन चखनि चलाय।
सकल धराको छलतमन, शरद अप्सरा आय ॥६॥
अरुण सरोरुह कर चरण, दृगखंजन मुखचन्द।
समय आय सुन्दर शरद, काहिनकरति अनन्द ॥७॥

मू०—पित्तोसान्द्रम् रुधिरं शरत्सु वृद्धिसमागच्छित सूर्य रश्मिभिः ॥
तदाशुरक्तं परिमोक्षणीयं पाने जलंसार समृद्दिशान्ति ॥ ८ ॥

शरद ऋतुमें पित्त से गाढा रुधिर सूर्यको किरणों द्वारा बढ़ताहै, इसकारण बढाहुआ रुधिर शीघ्र फस्द से निकलवाना और सरोवर का जलपीना ॥ ८ ॥

तथा मूंग लालचांवल ईख विकार (गुड़ शक्कर आदि गौकाघी, मिर्चमिले चटपटेभोजन करना, और मिश्री मिला हर्र का चूर्ण खाना। एवं रात्रि समय चन्द्रमाकी चाँदनी में बैठना सूर्य की धूपको बर्जित करना अर्थात् सूर्यकी धूपमें बहुत न चलना फिरना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व काम न करना और हरे हरे वृक्षों की छाया का सेवन तथा अधिक परिश्रम मनुष्य को नहीं करना चाहिये मिश्री मिला औटाया हुआ दूध पीना केशर लिम चन्दन लगाना चाहिये।

शरद ऋतु में पथ्य।

शक्कर मिला आंवले का चूर्ण और शक्कर मिला हर्र का चूर्ण, धनियां, आंवला, सेंधालवण, कमल गट्टा, गोभी, भसीडे, मुनक्का, नारियल, शिखरन, कैथ, आमकी खटाई, हरा तरबूज, परबल, बकरीका दूध, वथुआ पाईका साग, नारी का साग, मरसे का साग, पना, खीरसांठी चांवल व शालि चांवल फैनी, जलेबी जामुन, केलेकी गहर, कसेरू, गुड़ मिला हर्र का चूर्ण, चूकाका साग, सिंघाड़े, तुरई, बिजौरा नीबू, अनार, तथा जुलाब लना शरद ऋतुमें हितकारी है परन्तु अति शरद में जुलाब नहीं लेना।

शरद ऋतु में अपथ्य।

शरद ऋतुकी गरमी मध्यम बल देनेवाली व पित्त-कारक होती है इस कारण पित्तकारक सब पदार्थ नित्यप्रति यत्न से त्याग देवे, और मिर्च, पीपल, भांग सोंफ हींग व मठा, बैगन दही मिली खिचड़ी, बहुत खट्टा चपेरा कडुआ, धूपमें घूमना, गुड़, दण्ड कसरत दिनमें सोना, रात्रिमें जागना, उडदके पदार्थ, मछली पका तरबूज, खीरा ये सब शरद ऋतुमें अहित हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ हेमन्त ऋतुचर्या—तत्रादौ हेमन्तऋतु वर्णन।

कवित्त—आया है हिमन्त जोर जाड़ेके प्रसंगनसों रेशम के झंगनमें अङ्गन दुरायेदेत। कहत नारायण त्यों हमामहू न कामसरे धाम२ आला पौन पालाको उसायेदेत। तूलपेट पीठिन अङ्गीठिन में दीठि लगी तरुणी बिहीन तनकंप सरसायेदेत। दोगुनों कहोतो चित्त चौगुनो चुरात हेरि नौगुनो न सौ गुनौसमीर शीतनायेदेत॥ १॥

दोहा—कियोसबे जग काम वश, जीतेजिते अजेय।
कुसुम शरहिशर धनुषकर, अगहन गहन नदेय॥२॥
निशिदिन शशिरवि लहत हैं, सेमशीत के योग।
भरमचकोरन भोग है, कोकन भस्म वियोग॥३॥

शार्दूल विक्रीडित छन्द।

वायू शीत महा चलै चहुँदिशा, अत्यन्त जाडो परै।
ताते भीतर देह पावक रुकै, सोई क्षुधा को करै॥
उष्णास्निग्धसमिष्ट अम्ललवण, खानाहि खावेसभी।
पश्मीनादिक गर्म वस्त्र पहिरे, ना बात कोपै कभी॥
गेहूँ सैंधव लौन चावल नये, मेवा पकोरी वरी।
खाजा केसरि कन्दडारि हलुआ घीमें कचौरीकरी॥
बूराश्वेत गुलाब जामुनसभी, मिष्टान्न लड्डू वली
गट्टासेव कपूर कन्द मिसिरी जो खाय होवे बली।५।
मर्दे तेल शरीर में सब कहीं, मूर्द्धा तले पैर में।
सीखे पेचन मल्ल सङ्ग लरिके, काढै पसीना रमै॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फेरै मुद्गर लेजमे निशिदिवा, निश्शोक दण्डै करै।
सेवैधाम चढ़ै तुरङ्ग हितसों, हेमन्तदुःखै हरै॥ ६॥

२ वली नाम उड़दका भी है, उड़द के लड्डू बनाये जाते हैं।

मू०—बलिनःशीत संरोधाद्धेमन्ते प्रबलोऽनलः।
भवत्यल्पेन्धनो धातुः सपचे द्युनेरितः॥ ७॥

हेमन्त ऋतुमें शीत के प्रभाव से रोधको प्राप्त हो बलवान पुरुष की जठराग्नि प्रबल होती है यदि उस समय भोजन रूप इन्धन न प्राप्त होवे तो वह वायु प्रेरित रस रक्त आदि को पचाता है॥ ७॥

इसकारण उस ऋतुमें स्वादु और खट्टे और लवण से बने हुये पदार्थ सेवन करना योग्य है, और रात्रि के बड़ी होने से प्रातःकाल ही क्षुधा लगती है अतएव प्रातःकाल ही से मनुष्य आवश्यकमलमूत्रोत्सर्गादि कृत्य से निवृत होकर प्रथम भोजन करे पित्तर तैलाभ्यंग कर्म करे, हेमन्तमें क्षुधावान मनुष्य भोजन के समय भोजन नहीं करता है तो उसकी जठराग्नि मन्द होजाती है जैसे बिना इन्धन के अग्नि बुझ जाती है, इस ऋतुमें प्रायः चाय पीने का प्रकार है उसके पीने की विधि इस ग्रन्थ के द्वितीय भाग में लिख चुके हैं।

हरे, आँवला, वेलफल, गुड़मिलीहर्र, बहेड़ेकीमिगी, सोंठ अदरख, लोंग, सोंफ, पीपरी, मेथी, कैथ, कमल गट्ठा, इलायची, सेंधालवण, जायफल, चीतेकीछाल,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दही, चूकेकासाग, जिमीकन्द, मठा, दाख जलेबी, ये सब हेमन्त में पथ्य है तथा पकातरबूज, बथुआ, तुरई, खीरा, तेल, मूंग, शक्कर मिला बकरीका दूध, अग्नि से तापना ये सब हेमन्तऋतु में हितकारी हैं अथवामूली, जंभीरी, बिलायतीअनार, भय नयाअन्न तिल, प्रातःसमय भोजन, ये सब हितकर हैं।

हेमन्त ऋतु में अपथ्य।

नारीकासाग, सिंघाड़े, कसेरू, आलू, खसखस, उड़द गलकातुरई, केलेकीफली, नदी, तालकाजल, बड़ेउड़द के, भैंसकादूध, मोंठ, जौ, पुरानअन्न, दिनकोशयन, लंघन, निकृष्टभोजन, सत्तू आदिऔरकषैलेरूखेकडुये, वरपरेहल्केपदार्थयेसबइसऋतुमेंअपथ्यहैं, इसऋतुमें शीतल वस्तु का सेवन न करना व शीतल बगीचे जहाँ सूर्य्य की धूप न आती हो वहाँ नहीं रहना।

अथ शिशिर ऋतु चर्य्या।

तत्रादौ शिशिर ऋतु वर्ण।

कवित्त-असनमेंआसनमेंअमलअवासनमेंसासन में कछुक हुतासनमें आईगौ फूलनमें तूलनमें मंजुमख तूलनमें दोहरे दुकूल में कूलन अघाइगौ॥ सेजन में सीखे सुर तेजन उताजन में मदन मजेजन करेजन कंपाइगो। नीरन में त्योंही जग मोहन समीरन में जहाँ जहाँ देखौ तहाँ शिशिर समाइगो॥ १॥

दो०-लगत सुभगशीतलकिरण, निशिसुखदिनअब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गाहि । माह शशीभ्रम सूरत्यों, रहतिचकोरी चाहि २
मान न काहू को रहत, ल्याइ दूतिघा घात ।
लिखैदेति यो शिशिर की, सीसीसी की बात ।३।

मू०—शिशिरे वातमधिकं व त वृष्टया कुशादिशः ।
शेषं हेमन्तवत्सर्वम् विज्ञेयं लक्षणं बुधैः ॥ ४ ॥

शिशिर ऋतुमें, शीत अधिक होता है और तथा वर्षा (अकालवृद्धि) करके दिशा व्याप्त होता है शेष सब लक्षण हेमन्त ऋतु के समान जानना ॥ ४ ॥

शिशिर ऋतुमें पथ्य ।

जो वस्तुहेमन्त पथ्य है वहाँ शिशिर ऋतुमें जानना विशेषकर पीपल और हर्का चूर्ण कुछ२ गरम भोजन अदरख सहित जलका अचार सेंधा व घी मिला पदार्थ खिचड़ी ये सेवनकरे । (खिचड़ी की विधि) पुराने चाँवलों की खिचड़ी यदि एकसेर हो तो ढाई सेर जल चढ़ावे खिचड़ी में हींग मसाला अदरखताजा घी डाले चाँवल चना की दाल घी मिश्री मेवा, दूध मिलाय जोखिचड़ी बनती है सोभी बहुतस्वादिष्टहोती है । खिचड़ी के चार यार । घी पापर दही अचार

जो वस्तु हेमन्त ऋतु में अपथ्य है सोई शिशिर ऋतु में भी अपथ्य जानना ।

शिशिर ऋतुमें अपथ्य ।

बसन्त ग्रीष्म वर्षा आदि ऋतुओं के आदि अन्तके सातसात दिनका समयही ऋतुसन्धिकाहै इस सन्धि में ऋतु की विधि क्रमसे त्याग करे और आगे की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋतुमें जो विधि कही है उसका सेवन क्रम से क्योंकि सहसा विधि छोड़ देने से असात्म्यज रोग प्रगट हो जाते हैं जब ऋतुसन्धि प्रवृत्त हो, वहींसे वर्तमान ऋतु की अभ्यास की हुई विधि को धीरे धीरे घटावें और आनेवाली ऋतुकी विधिको थोड़ा थोड़ा अभ्यास के अर्थ साधन करे वसंत ऋतुमें कफको शरद ऋतुमें पित्त को वर्षाऋतुमें वादीको वमन विरेचनादि द्वारा शमन करना चाहिये परंतु यह विधि जबतक कोई ऋतु विकार [सरदी गरमी आदि] न उत्पन्न हो उससे पहिले ही करना चाहिये अनेक देशोंमें अनेक प्रकार के स्वभाव वाले व अनेक प्रकारके आहार विहार वाले मनुष्य होतेहै, जो मनुष्य जिसवस्तुको अधिक और सदैव सेवन करताहै उसको वह वस्तु पहले देकर फिर औषध देना योग्यहै अथवा उसी में मिलाकर देवे जिस प्रकार नदीके जलमें मछलीरह कर नीरके आश्रय जीवित रहतीहै बिना नीरके मीन का जीवन नहीं होसकता यदि नीरमेंसे निकाल कर डाल दियाजाय तो तड़फड़ाकर मरजातीहै इसीप्रकार वायुबिना मनुष्य घड़ी भरभी नहींजीसकता.जगतमें पृथ्वीके समीप आकाशमेंवायु इस प्रकार व्याप्त है जैसे नदीमें जल, सब मनुष्य वायु से घिरे हुये सदा रहते हैं, वायुके आश्रय मनुष्य जीता है इसकारण मनुष्यके जीवनमें वायुसबसे अधिक प्रधा-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न है वायु को सर्वदा प्रधान मान कर शुद्ध वायु का सेवन करना योग्य है, प्राचीन समय में वायु को शुद्ध करने के निमित्त मनुष्य घरों में सुगन्धित पदार्थों से हवन किया करते थे और घरों में सुगन्धित फलोंके हरेहरे वृक्ष लगाते थे जो वायु हरे हरे वृक्षों में होकर आती है वह शुद्ध और जल के उपरांत तीसरा पदार्थ अन्न है कि जिससे मनुष्य का जीवन होता है अन्न भी शुद्ध और ठीक प्रकार से बनाकर खाना चाहिये, इस ऋतुचर्य्या के विषय में जो बात हम इस ग्रन्थ के द्वितीय भाग में लिख चुके हैं उसको लिखना यहाँ उचित नहीं समझा, इस कारण दूसरे भाग में भी देखना ।

दो०—नारायण धरि ध्यान उर, नारायण करतार ॥
ऋतुचर्या नामक लिख, यह पहला अधिकार ॥१॥

इति श्रीरसराज महोदधि भाषायां तृतीय भागे ऋतुचर्या वर्णनो नाम प्रथमोधिकारः ॥ १ ॥

अथ दिनचर्या नाम द्वितीयाधिकारः प्रारभ्यते ।

दो०—धन्वन्तरिपद ध्याय उर, नारायण मनलाय ।
दिनचर्या अधिकार अब, लिखत सुअवसर पाय ।२।
प्रात समय उठि स्वस्थ जन, करें ब्रह्म का ध्यान ॥
धर्म तजे नहिं एक क्षण, यह व्रतधारि समान ॥३॥

नजातु कामान्न भयान्न लोभाद्धर्म त्यजेज्जी वितस्यापिहेतोः ।
धर्मो नित्यः सुख दुःखेत्वनित्ये जीवो नित्यो हेतुरस्यप्यनित्यः ॥ ३ ॥

काम, भय, लोभ और अपने जीवन के हेतु भी धर्म त्यागना नहीं योग्य है, क्योंकि धर्म नित्य है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्थात् सदा एकसा ही रहता है और सुख दुख अनित्य है तथा जीव नित्य है और इसका हेतु (शरीर) अनित्य (नाशवान) है, इस कारण धर्मका नित्य सेवन करना मनुष्यमात्र का कर्तव्य है ॥ ३ ॥

उस समय जो पड़ा रहताहै तो आलस्य शिथिलता और प्रमेह आदि रोग प्रगट होने का भय रहता है सूर्योदयसे पहले उठ ब्रह्मका चिन्तन करने के अनंतर प्रथम अग्निगौ वेदपाठी ब्राह्मण व मांगलिक पदार्थों का दर्शन करे, और शक्ति हो तो सुवर्ण अन्न आदि दान करे, परन्तु पापी, रोगी, और अधर्मी पतित आदि कुपात्रों को न देवे।

फिर मलमूत्र आदिका त्यागकरे, मलमूत्रादित्याग से आँतों में शब्द नहीं होता, पेट नहीं फूलता, और हलका होजाता है, अधोवायु, और मलमूत्र के रोकने से पेटमें पीड़ा व बातजन्य रोग, तथा अफरा, क्लम् ये रोग प्रगट हो जाते है, मलमूत्र त्याग करते समय शिर को अवश्य ढाँप लेना योग्य है, क्योंकि मलके अणु मूर्द्धा को हानि पहुँचाते हैं, सूर्य के सन्मुख और देवालय के समीप मलमूत्र त्याग न करै।

दन्त धावन।

तीखे वृक्षों में कञ्जा, मीठे वृक्षों में महुवा, कषैले वृक्षों में खैर और कडुये वृक्षोंमेंनीम, की दातौंन भी अच्छी होती है कीकर और बटकी दतौंन भी अच्छी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होतीहै दाँतोंकोपुष्टकरने केनिमित्त बबूलकी दातौन भी श्रेष्ठ होती है, विद्या वृद्धिके निमित्त अपामार्ग (चिरचिरा) की दातौन को वैद्य श्रेष्ठ कहते हैं।

दाँतों को शुद्ध करने वाले चूर्ण से दाँतों को शुद्ध करे, परंतु दाँतोंके माँसको नष्ट देवे, मांजूफल, पुरानी सुपारी, और बादाम के छिलके अधजलाकर पीस ले उसमें अनुमान से कालीमिर्च और सेंधालवण मिला इस चूर्ण से दाँतों को मले तो दाँत पुष्ट रहते हैं।

अथवा सोंठ शहत बीपज, कालो मिर्च के चूर्ण से सेंधालवण और तेलसे दाँतों को शुद्ध करे। दाँतौन करने से मुखकी दुर्गन्धि और विरसता दूर होजाती है जिव्हा और मुख के रोग नहीं होते और रुचि, पवित्रता, वा हलकापन ये गुण होते हैं परन्तु तालु, ओठ, गला, जीभ इनका रोगी और दाँतों का रोगी अथवा जिसका, मुख पका हो तथा सूजन दमा खाँसी. वमन हो. दुर्बलहो, अजीर्ण हो, भोजन कर चुकाहो, शिररोग हो, हिचकी मूर्छा और मदहो परिश्रम कर चुकाहो मार्ग चलता हो ग्लानि युक्त हो बात रोग से पीड़ित हो. नेत्र रोगी हो, कान में पीड़ा हो, नवीन ज्वर हो, हृदय में दाह हो तो ऐसा मनुष्य दातौन न करे।

कुल्ला करना

कुछ कुछ गरम जल के कुल्ला करने से कफ, अरुचि दाँतों का जकड़ना और मुख का मैल दूर हो मुख

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हलका होजाता है तथा मूर्छा विष और मदसे पीड़ित नेत्र रोगी शोषी रक्तपित्त विकार वाला मलजीर्ण व रूक्षरोगी मनुष्य को गरम जल से कुल्ला न करना चाहिए शीतल जल से कुल्ला करने से रक्तपित्त न्यून होजाते है और मुख सूजन, मुँहा से मुखपर स्याही और झांई रोग दूर हो जाते हैं तथा गरम जल से मुख धोनेपर कफवात रोग दूर होजाताहै मुखकी सूजन दूर होजाती है और मुखपर चिकनापन आजाता है।

तेल उबट लगाना

शरीर में प्रतिदिन तेल लगावै तहाँ मस्तक कान और चरणों में विशेष करके तेल अच्छी तरह मलै तेलके मलने से सब अंग पुष्ट होते हैं जब तेल लगा चुके तब उबटन करे उबटन कफ और मेदको हरण करता है बल वीर्य और रुधिर को बढ़ाता तथा त्वचा को नरम व उज्वल करता है यदि प्रतिदिन तेल न लगा सके तो गरमी की ऋतु में चौथे व आठवें दिन और सरदी में तीसरे दिन अथवा सोम बुध शनिवार को लगावे, पटोतिथिहो व्रणरोग होती छटके दिन तेल न लगावे। सरसों का तेल, फुलेल, अगर हिना, अम्बर, मुश्क, सन्दल, गुलाब केवड़ा आदि का इत्र अथवा नारायण तेल चन्दनादि तेल प्रसारणी तैल लगाना आरोग्यता में तेल व फुलेल ही लगाना हितकारी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कानों में तेल डालना

कानों में प्रतिदिन तेल डालने से कान में कोई रोग नहीं होता तथा कानका मैल, ऊँचा सुनना बहरापन व मन्यानाड़ी का जकड़ना ये रोग कभी नहीं होते हैं यदि कान में रस आदि डालने हों तो भोजन से पहले सबेरे डालना और तेल रात्रि में डालना उचित है।

अभ्यंग के अयोग्य पुरुष

तरुणज्वर अजीर्ण इनमें से कोई रोग हो और मले उबटन लगावे तो कृच्छ्र साध्य और असाध्य पीड़ा प्रगट होती है एवं मन विरेचन और निरूहण क्रिया करने के उपरान्त तेल मलने से अग्निमान्द्य आदि रोग प्रगट होते हैं।

स्नान करना

रोग रहित मनुष्यों को प्रतिदिन स्नान करना योग्य है स्नान करने से जठराग्नि प्रदीप्त होती है बल की उत्पत्ति होतीहै तेज और आयु की वृद्धि होतीहै मैल खुजलीपसीना प्यास दाह तन्द्रापाप इनका नाशहोता हैठंडे जलसे स्नान करनेपर रक्त पित्तरोग दूर होता है गरम जलसे स्नान करने पर बात कफका नाशहोताहै परन्तु बहुत गरम जलसे स्नान न करे अधिक गरम जल शिरनेत्र और केशोंकोसदा अहितकारी जानना परंतुकफके प्रकोपमें मस्तकपरडालना हितकारीहोता है। गरम जल से स्नान, दुग्धपान, नवयौवना स्त्री से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रमण-चिकनेऔरथोड़ाभोजन पेचारपदार्थसदाहित कारी जानना परन्तु यहाँ अपनी हीत्री में रमण कहा है पर स्त्री गमन के दोष द्वतीय भाग में लिख चुकेहैं, और रात्रि चर्याधिकार में पुनरपि लिखेंगे।

जो मनुष्य प्रतिदिन आँवलों के कल्कको शरीर में लगाकर स्नान करताहै उसकी आयु बढ़ती है और बली होता है, तथा आँवला माजूफल और कड़ुये तेल कोशिर से मल कर स्नान करता है, उस के मस्तक में बल बढ़ता है, नेत्रोंकी ज्योति मन्द नहीं होती, और बालभी सफेद नहीं होते हैं यदि वायु अवस्था प्रारंभ होते ही आंवले आदि से शिर मला करे तो बाल सफेद नहीं होते, परन्तु नजला से बचा रहे।

स्नान निषेध।

नेत्ररोग, कर्णरोग, अतीसार, ज्वर, अफरा, अजीर्ण, वातपीड़ा हो, तथा भोजन करनेके उपरांतस्नान नकरे रोग होने पर स्नान चार प्रकार का कहा है उनमें तीन प्रकार में से तीन स्नान रुचि अनुसार करे।

मू०—आग्ने भस्मना स्नानमवगाह्ये च वारुणम।
आपोहिष्ठे त च ब्राह्मयंवायव्यं गोरजः स्मृतम॥

ईश्वर के स्मरण पूर्वक भस्मलगाना आग्नेय स्नान कहाता है, और जलसे स्नान करना वारुण स्नान कहाता है तथा आपोहिष्टा आदि मन्त्र पढ़कर मार्जन करने को ब्राह्मयस्नान कहा है, और गौओं की रज ऊपर पड़ने से वायु स्नान होताहै ऐसा कहा है॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्नानकरने के उपरांत अँगोछा से शरीरको पोंछना चाहिये परन्तु अँगोछा देशी वस्त्र का हो और वस्त्र ब्राह्मणको सफेद, क्षत्रियको लाल, वैश्यको पीला, शूद्र को नीला धारण करना चाहिये तथा आठ हाथ तक का सफेद वस्त्र नवीन बिना फटा और अछूता जिसको किसी ने धारण न किया हो उसको आहत वस्त्र कहते हैं, यह पवित्र वस्त्र सब कामों में धारण करना योग्य है।

ऋतुपरत्व वस्त्र धारण।

रेशमी, पीताम्बर, रंगीन व चित्र विचित्र रंग का वस्त्र लाल वस्त्र ये बातकफ का शमन करने वाले जानने अतएव ऐसे वस्त्र शीतकाल में धारण करना योग्य है रंगीन वस्त्र से छींट ऊनी वस्त्र, लोई, धुस्सा, बनात कम्बल शाल दुशाला आदि ग्रहण करना, परंतु अति शीतमें रुई पड़े व अग्नि तापन से बढ़कर शीत हारका पदार्थ दूसरा नहीं होता कोकई व गेरुआ रंग का पवित्र व शीतल पित्त नाशक होता है, ऐसे वस्त्र गरमियोंमें धारणकरे परंतुवस्त्र पतलाहो गाढ़ा नहो।

सफेद वस्त्र कुछ शीत व गरमी को निवारण करताहै वह न शीतलहै, न गरमहै, अतएव उसको वर्षा ऋतु में धारण करे विशेषकर नवीन और सफेद वस्त्र सर्वदा हितकारी है। मलीन वस्त्र कृमि, खुजली ग्लानि को करता है मलीन वस्त्र वाला पुरुष दरिद्री कहाता है, यदि सफेद न मिले तो धुलाकर उज्जल रक्खे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुगन्ध लेपन।

सथेद चन्दन, वा केशर अगरु मिला चन्दन उष्णता और वातकफ नाशक कहै, अतएव शीतल कालमें लगावे, तथा नेत्रवाला व कपूर मिला चंदन सुगन्ध कारक और परमशीतल है अतएव इसको गरमी की ऋतु में लगावे। एवं कस्तूरी केशर मिला चन्दनादि अनुलेपन करने से दुर्गन्धित वायु का प्रभाव नहीं होना श्रम, दाह, मूर्च्छा और दुर्गन्ध का नाश होता है परन्तु जिनको स्नान करना निषेधहै उनको चन्दनादि अनुलेपन करना भी उचित नहींहै।

सन्याबन्दन

मू०—कुलाचारमनुकुर्वीत सन्ध्यापासनमादृता।
सूर्योपांस्तितः कुर्यादिष्टदेवस्यपूजनम् ॥ २ ॥

स्नान व सुगन्ध लेपन करनेकेअनन्तर अपने कुलाचार के अनुसार संध्योपासन कर्म करना, और सूर्य की उपासना करकेइष्टदेव की पूजा करना ॥२॥

संध्या आदि पंचमहा यज्ञप्रतिदिन करने में धर्म है अर्थात् सन्ध्या, अग्निहोत्र, तर्पण श्राद्ध बलि वैश्वदेव अतिथि सत्कार ये पंचमहायज्ञ गृहस्थ पुरुष को यथा शक्ति अवश्य करना योग्य है।

सन्ध्या बन्दन आदि कर्म करने के पश्चात् ब्रह्मणादि सुपात्र उनको यथा शक्ति दान देना और आशीर्वाद ग्रहण करना तथा माता पिता गुरु आदि वृद्धजनों को प्रणाम करना, इनके पूजनव सत्कार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से आयु की वृद्धि होती है, तथा अलक्ष्मी और कलह का नाश होता है । पुष्प धारण

सुगन्धित फूल मस्तक पर रखने सुगन्धित फूल पत्र सुगन्धित पुष्प धारण करने से नेत्रों में ज्योति बढ़ती है मन प्रसन्न रहता है दाह शांत हो जाता है बसंत ऋतुमें केतकीका फूल गरमी की ऋतु में नेवार और चमेलीका फूल तथा वर्षा ऋतुमें पाटल का फूल शरद ऋतुमें चंपाका फूल, हेमन्त व शिशिर ऋतु में कमल का फूल धारण करैं, तीक्ष्ण अग्रभाग तोड़कर कोमल केतकी का पत्र धारण करै ॥

बेला, चमेली, गुलाब, मौलश्री, चम्पा, इनके फूल और चन्दनको कस्तूरीके साथ धारणकरैं। तथा नील कमल लालकमल, जूही, कमोदनी, मंदार, मरुआइन फूलोंको कपूर के साथ धारण करै, स्नान से पहले चमेलीका फूल धारणकरै और स्नान करके जूही तथा बेलाका फूल धारणकरै तैलादिकके अभ्यंग में केतकी फूल, और कमलका फूल सब कालमें धारण करै ।

पुष्प धारण की अवधि ।

जुही व निवार ४ घड़ी, जाईका फूल ६ प्रहर तीन रात्रि तक कमल, दो रात्रितक गुलाब, एकदिन रात चम्पाका फूल धारणकरे माधवी (बसन्ती) श्रीपर्णी मौलश्री इनने फूल जबतक इच्छा हो और सुहाय तब तक धारणकरे, तथादोना, मरुआ, पाढर, मंदार इतने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फल जबतक सुगंध रहे, तबतक धारण करे, परन्तु चमेलीका फूल सूँघनेमें उत्तम है धारण करनेसे दृष्टि की हानि होती है चंपा का फूल नेत्रोंको हितकारी है और बातनाशक जाननागुलाबका फूल नेत्रों मस्तक भ्रमणको दूर करताहै, पाटलका पुष्प कानकी पीड़ा को दूर करता है, जूईका फूल दाहनाशक तथा केतीकी का फूल सब में उत्तम है, नेत्रों की ज्योति को बढ़ाता है।

भोजन स्थान।

भोजनका स्थान बहुत साफ सुथरा होना चाहिये शूद्रादिकी दृष्टि बचा ब्राह्मणादि वर्णत्रयको भोजन करना चाहिये विशेषकर भोजन एकान्तमें बनाना और करना चाहिये। भोजन ही मनुष्य का जीवन है इस कारण भोजन पदार्थ बहुत ही उत्तम हो आनन्द पूर्वकभोजनकरेभोजनबनानेकाप्रकरणआगेलिखेंगे।

भोजन समय।

एक याम (प्रहर) दोवार भोजन करे और दो प्रहर उल्लंघन न करे अर्थात् दो प्रहर पहिले ही भोजन करले वे, पहले प्रहरमें भोजन करने से रसकी उत्पत्ति होती है, और दो प्रहरतक भोजन न करनेसे बलक्षय होता है, कोई ऐसे भी कहते हैं कि प्रथम प्रहरमें भोजन न करे और दिनके दो प्रहर व्यतीत न होने देवें क्योंकि रसोत्पत्ति होनेके समय भोजन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करने से भली भांति पचता नहीं है. तथा रसदोष मल इसके पारपक्व होने से प्राणी को क्षुधा लगती है जिस समय क्षुधालगे वही समय भोजन का है, यह सर्व सम्मत है।

दोहा-प्यासलगे पानीपियै, भूखलगे कछुखाय।
तौबाढे बलदेह में, दिनदिनसुख अधिकाय।

परन्तु भोजन समय अति भोजन नहीं करना चाहिये क्योंकि अति भोजन करने से अजीर्ण रोग होकर रोग प्रगट होनेका भय रहता है, भोजनमें प्रथम मधुर रस करै, फिर चरपरे, कषैले खट्टे आदि रसके भोजन करै अन्तमें मधुर रससे भोजनको समाप्त करे यथा, 'मधुरेण समारभ्य मधुरेण सामापेत्'

भोजन समय जलपान।

भोजन से पहले जल न पीवे मध्य में जल पीना उचित है, भोजनके अन्तमें जल पीने से कफ बढ़ताहै, भोजन से पीछे आचमन करके हाथ पांव धोय गीले हाथों से नेत्रों को स्पर्श करे अर्थात् हाथपर हाथमल कर नेत्रोंपर हाथफेरै तो तिमिरादि नेत्र विकार दूर होजाता है, दाख, ईख, दूध, घी, कन्द, दही, तांबूल, औषधि, पत्रइनके खाने के पीछे जल न पीवे, पीने से श्वास खांसी आदि रोगों के प्रकट होने का भय जानना। बहुत जल भोजन समय पीलेने से भली भांति नहीं पचता, इस कारण जठराग्निको प्रबल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करने के निमित्त थोड़ा थोड़ा जल बार बार पीवे, भोजन के आदिमें जल पीने से देहमें दुर्बलता और मन्दाग्नि दोष प्रगट होजाता है, और भोजन के मध्य में जल पीने से अग्नि प्रदीप्त होती है, तथा भोजनके अन्तमें जल पीने से स्थूलता और कफ प्रगट होता है प्यास लगने पर भोजन नहीं करे प्यासा मनुष्य यदि भोजन कर लेवे तो वातगोला रोग प्रगट होजाता है, यदि भूखा मनुष्य जल पी लेवे तो जलन्धर रोग होजाता है।

भोजन के पूर्व भक्षण योग्य पदार्थ।

भोजन से प्रथम सेंधा लवण, और अदरख सदा हितकारी है, इससे रुचि बढ़ती है, जठराग्नि प्रदीप्त होती है, और जीभ व कंठ साफ होता है।

विष मिश्रित अन्न परीक्षा।

ताजा भता विष मिश्रित होने पर भी वासी भातके समान होजाता है विष मिली दाल हरी और झागदार होजाती है, विष मिलने पर ताजा माँस तुरंत रसहीन और नीलीरेखाओं वाला होजाता है दूधआदि पदार्थों में विष मिलने से पीली रेखायें पड़ जाती है फूलमें विष मिलने से दुर्गन्धि व कालापन आजाता है पदार्थ विषसे सूजजाता है एवं अन्य पदार्थों में निरसता व विवर्णता आजाने पर विष जाननेकीपरीक्षा कर लेवे, जहाँ विष मिलने की शंका हो तहाँ अवश्य इस प्रकार परीक्षा पूर्वक देख लेवे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घी की प्रधानता ।

अन्नसे दशगुणा बल आटामें है आटासे दशगुणा बल दूधमें और दूधसे अठगुणा बल माँसमें, माँस से दशगुणाबल घी में होता है, शाक अधिक खाने से रोग बढ़ताहै, दूधसे शरीरमें बल बढ़ता है, घी से वीर्य बढ़ताहै, माँससे माँस बढ़ताहै, यहाँ घी सबसे अधिक बली कहा है, माँस खानेसे स्वभाव निर्दय होजाता है और रोग प्रकट होने का भय रहता है।

माँस भक्षण निषेध ।

"माँस भक्षैः सुरापानै र्मूर्खैश्चाक्षर बर्जितैः ।
पशुभिः पुरुषाकारै भाराक्रान्तारित मेदिनी ॥

चाणक्य मास आदिका निषेद करते हुए कहते हैं कि मांस भक्षण करने वाले, मदिरा पान करने वाले निरक्षर मूर्ख इन पुरुषाकार पशुओं के भारसे पृथ्वी युक्त है वैद्यक शास्त्रके आधुनिक ग्रन्थकारों ने मांस की यत्रतत्र प्रशंसा की है। वस्तुओंका गुणागुणवर्णन करना इस कारण योग्य समझा कि दयालु सब पर दया करते हैं, चाहे कोई देव स्वभाव वालाहो चाहे राक्षस स्वभाव वाला हो वे कभी किसी पर निर्दय नहीं होते मासाहारी पुरुषों पर दया करके मांस के गुणबर्णन किये, कुछ मांस खाने की आज्ञा नहीं दी है, दयालु पुरुष जिनके अन्तःकरणमें परमात्मा ने दया बुद्धिका आवेश किया है, वे तो मांस नहींखाते,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और न किसी को खाने की आज्ञा देते हैं, माँसाहार माँसकी बहुत प्रशंसा करते हुये अनेक दृष्टांत देते हैं, परन्तु दयालु पुरुष उनके दृष्टान्तों पर कुछ भी ध्यान नहीं दे देते।

हठ करने वाले मांसाहारियों से हमारा यही कथन है, कि मांसाहारका प्रचार होने के कारण इस भारत-वर्ष से प्रतिवर्ष हजारों गौ वृष और बकरियों का अभाव होता चला जाता है इसी से इस देशकोदरि-द्रता ने आघेरा है, बिना गौवों के एक दिन ऐसा होगा कि गौ का घी नहीं प्राप्त होगा घी का अभाव सा हो जायगा, बिना घी के माँस भी स्वादिष्ट नहीं हो सकता, गौ आदि पशुओं की रक्षा से घी, दूध, आदि पदार्थों की बहुतायत होती है जिससे मनुष्यों में अत्यन्त पराक्रम होता है। पूर्व समय में वृक्षों के उखाड़ने की शक्ति मनुष्यों में होती थी, आजकल मनुष्यों में छोटे पौधे उखाड़ने की भी शक्ति नहीं है। मनुस्मृतिमें जो मांसाहार विषयमें विधिपूर्वक खानेके श्लोक लिखे हैं, बहुतेरे पुरुष तो यह कहते हैं कि ऐसे श्लोक क्षेपक हैं, परन्तु हम इस बात का प्रमाण नहीं करसकते, क्योंकि मनुजीने मनुस्मृति सुर असुर नरसबके निमित्त निर्माणकी है, जिसको जो अभीष्ट हो वहउसकोग्रहण करै, यहांहमएकदृष्टांतलिखतेहैं, एक ब्राह्मणदेवताके एकही पुत्र था इसकारण उसका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लाड प्यार बहुत था, लाडला होने के कारण पुत्र को खेलकूदमें बहुत रुचिहो गई, जब पुत्रके पढ़ने लिखने का समय आया, और उसका उपनयन संस्कार हुआ तब ब्राह्मण ने अपने पुत्रको संध्यावंदन पढ़ा कर कहा कि बेटा ! बिना सन्ध्यावंदन किये मोक्ष नहीं होताहै और न बुद्धि बढ़ती है, बिना बुद्धि के विद्या नहीं आतीहै बिना विद्याके सुख नहीं मिलता इस कारण दोनों काल संध्यावंदन किया करो, और खेलने की इच्छाहो, तो संध्यावंदन कर अपना पाठ पढ़कर अच्छे कुलीन बालकों के साथ कुछ खेल भी लियाकरो, परंतु सूर्य की धूपमें न खेलाकरो, ऐसा उपदेश करके ब्राह्मणने शनैःशनैः अपने बालकको अच्छे ढंग पर डाल दिया, कुछ कालमें वह बालक सुबोध पंडित होगया इसकारण शास्त्रकारोंनेविषयी पुरुषकामानरखनेके लिये कुछ नियम कहकर निषेध कियाहै, किजिससे वे स्वयं समझकर कुछदिन उपरांत हिंसा कर्म त्याग देंगे इस प्रकार जो मनुष्य शास्त्रको समझ हिंसा को त्याग देते हैं उनको कोटि धन्यवाद है, और जो शास्त्रके अभिप्रायको न समझ हिंसा कहके मांस भक्षणादि अधर्म करते हैं उनकी बुद्धिको धिक्कार है। एवं यदि इस विषयमें पूर्ण लेख लिखे जांय, तो बड़ी पुस्तक बनजाय, इसलिये इसको समाप्त कर केवल इतना ही लिखना बहुत है कि यदि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब भी मांसाहार का प्रचार बन्द होजाय और गौ आदि पशुवों की रक्षा भली भाँति की जाय तो यह भारतवर्ष प्रतिवर्ष लाखोंमन घी दूध दही से भरजाय जिससे मनुष्य का बड़ा उपकार हो दूध, दही, मलाई, घीखाकर मनुष्य फिर भीमसेन अर्जुन आदि वीरों के समान बलवान हो सकता है

मसाला।

कालीमिर्च,लौंग,इलायची,दालचीनी कालाजीरा धनिया सफेदजीरा, इनको मसाला कहा है।

मूँग उड़द आदिकी धुली हुई दाल और कटहर, आलू गोभी फूलआदिकी तरकारी तथा बरी कचौरी-आदिमें, यह पूर्वोक्त मसाला डालना उचित है।

धूपप्रकार।

घी सर्वोत्तम छौंक देनेके निमित्तहै प्रायःलोग लाल मिर्च नहीं खाते उनको कलीमिर्च खाना योग्यहै लहसनमें जो गन्ध आती है सो बहुतेरे मनुष्यको अच्छी नहीं लगती परंतु लहसन खानेवाले को चाहिये कि दाल सागमें लहसनको छोंकदे ज़ीरा,लौंग,इलायची हींगका छोंक प्रायः सबही दालों में देना चाहिये। अरहरकी दालमें हींगका, आलू और गंगाफल की तरकारीमें मेथीका, घुइयाँकी तरकारीमें अजबायन का, तुरईकी तरकारी में जीरेका छोंकदे। मरसे का साग, नारी का साग, लुनियां, बथुआ, मेथी, सुआ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पालक आदि सब प्रकारके सागोंको तेलसे बघारना चाहिये । तेलसे सागमें सोंधापन आजाता है प्रायः मनुष्य तेल नहीं खाते हैं उनको घी में बघार कर खाना चाहिये अधिक घी जिस वस्तुमें पड़जाताहै वह स्वादिष्ट होजाती है भली भाँति बघारने अर्थात् छोंक देने और मंदमंद आँच देने का विचार सर्वत्र रखना चाहिये क्योंकि जो वस्तु मंदमंद आँचसे बनाई जाती है वह थोड़ा घी पड़ने पर भी स्वादिष्ट होजातीहै ।

लवणादि सम्मेलन ।

कढ़ी दाल आदि में नमक इस प्रकार डाले कि एकसेर दाल कढ़ी आदि में एक छटांक लवण डाले और एकसेर दाल आदि में मिर्च का चूर्ण आधा तोला तथा मिर्चके समानही मसालाडालना चाहिये छोंकदेनेके निमित्त एकसेर दालमें रत्तीभर हींग घी में भूनकर डालना चाहिये और राई, जीरा, मैथी, लहसन ये डालने होंय तो एकसेर दाल आदिमें एक टंक घीमें भूनकर छोंकदेवे परन्तु जब घी भली भांति तप्त हो जाय और धुवाँ निकलने लगे तब छोंकना चाहिये यही लहसन का बघार लिखाहै, सो पुरुष तो लहसन खाते नहीं माँसाहारी लोग प्रायः बहुत ही लहसन खाते हैं उन्हीं के निमित्त अथवा रोगी को लहसन खाना यहाँ लिखा है एक सेर दाल आदि में चार मासा लहसन डालना चाहिये अदरख

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

डालना हो तो चार तोला, धानयाँ डालना हो तो चार तोला महीन पीसकर डालना चाहिये।

अन्न पाचन प्रकार।

अति गरम अन्न बलको नाश करता है अति शीतल अन्न शीघ्र नहीं पचता अति पतला अन्न ग्लानि करता है और अति सूखा अन्न कठिनता से पचता है इस कारण अति गरम अति शीतल, अति सूखा और अतिपतला अन्न नहीं खाना चाहिये।

षड्विध भोजन।

भोजन छःप्रकार का होताहै १ चोष्य जो चूसा जावे जैसे ईख आम आदि। २ पेय जो पिया जावे जैसे दूध आदि, ३ लेह्य जो चाटाजावें जैसे लपसीआदि, ४ भक्ष्य जो खाया जाय जैसे लड्डू पेड़ा आदि, ५ भोज्य जो खाया जावै जैसे दालभात आदि, ६ चर्व्य जो चबायाजाय जैसे चना ये सब उत्तरात्तर भारी हैं।

भोजन के समय कर्तव्य कर्म।

मुख, दोनों हाथ और दोनों पाँव धोकर स्वच्छ चौके में साफ पट्टे पर बैठे और अन्न को प्रणाम कर ग्रास को उठावै, तहाँ प्रथम गौ को ग्रास देकर भोजन करे भोजन करते समय किसी की निन्दा करना वा सुनना व्यर्थ बात करना हँसना जंभाई लेना छींकना बर्जित है तात्पर्य यह कि एकाग्रचित से भोजन करै।

अप्रमाण भोजन दोष वर्णन।

बिना समय थोड़े अथवा बहुत भोजन को विषम-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भोजन कहते हैं, बहुत भोजन करने से देहमें आलस्य भारापन और पेटमें गुडगुडाहट शब्द होता है तथा थोड़ा भोजन करने से दुर्बल हो जाता है और बलका क्षय होजाता है ।

भोजन का प्रमाण ।

कुक्षेर्भागद्वयं भोज्यैस्तृतीयंवार पूरयेत् ।
वायोः संचारणार्थाय चतुर्थं मवशेषयेत् ॥ १ ॥

भोजन करनेवाला पुरुष कोखके दो भाग अन्न से पूर्ण करै तीसरा भाग जलसे पूर्ण करै और चौथा भाग वायु घूमने के अर्थ खाली रहने देवे, बुद्धि मान्यजन इस प्रमाण को भली भाँति जानलेंगे और प्रमाणानुसार भोजन कर सुखी रहेंगे ।

भोजनान्तर दोष बृद्धि ।

भोजन करने के उपरांत अन्न पच जाने पर वात की वृद्धि होती है अन्न पचते समय पित्त की वृद्धि होती है भोजन करते ही कफकी वृद्धि होती है कफ की निवृत्ति के अर्थ ताम्बूल भक्षण करना ।

ताम्बूल सामग्री ।

कपूर कत्था पान सफेद इलायची के दांने दाल चीनी चूना जावित्री, जायफल कंकोल कस्तूरी लौंग, केशर सुपारी के वर्क इन तेरह द्रव्यों से युक्त बीड़ी को ताम्बूल कहते हैं ।

चूना आदिका प्रमाण ।

चूना और कत्था पानमें आधा आधारत्ती लगाना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुपारी का चूरा ६ रत्ती और लौंग कपूर आदि का चूरा ६ रत्ती डालना।

ताम्बूल गुण।

कामां प्रदीपयति रूपमभिव्यनक्ति सौभाग्यमाव हति वक्र सुगन्धिताच।
ऊर्ज करोति कफजीश्च निहन्ति रोगास्तिबूलत्येमर्व राश्चनगुण.नकरोति ॥

ताम्बूल कामको जगाता है रूपको उज्वल करता है सुभगता और मुखको सुगंधित करता है बल करता है और कफजनित रोगों को हरण करता है अन्य गुण भी करता है इस कारण भोजनोपरांत ताम्बूल भक्षण करे।

ताम्बूल भक्षणकाल।

सोतेसे उठकर रात्रिके समय स्नानसे निवृत्त होकर वमन करके युद्ध करते समय भोजन के उपरान्त राजा व पांडतों की सभामें तांबूलका चर्वण करे।

चूना आदि की न्यूनाधिकता।

पानमें चूना ठीकठीक पड़ने से मुखमें रंग करता है सुपारी अधिक होजानेसे रंग फीका होजाता है जो पानमें चूना अधिक लग जाय तो मुख में दुर्गन्धि करता है। पत्र अधिक हो तो सुन्दर गन्ध करता इस कारण चूना कत्था का ध्यान रक्खे।

पान की पीक के गुण।

पानकी पहली पीक विष समान जानना इस कारण उसको थूक देना दूसरी पीक दुर्जर और रेचक होती है तीसरी पीक अमृत के तुल्य जानना, इस कारण तीसरी पीकसे पानका रस ग्रहण करना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताम्बूल निषेध ।

जो भूखा हो जिसको दस्त आते हों उसे बहुत पान नहीं खाना चाहिये क्योंकि दस्त और भूख में बराबर पान खाने से देह, दृष्टि केश. दाँतों में निर्बलता आजाती है अग्नि मन्द होजाती है कानों में शक्ति नहीं रहती कान्ति मलीन होजाती है बल घट जाता है और सूजन पित्त, वातरक्त प्रकट हो जाते हैं जिसके दाँत निर्बल हों नेत्रों में रोग हो विष मूर्छा और मदसे पीड़ित हों तथा क्षति रोगी व रक्तपित्ती को पान नहीं खाना चाहिये ।

भोजनान्तरे शतपदगमन ।

भोजन के पीछे धीरे धीरे सौ पद चलना चाहिये इससे भोजन किया अन्न शिथिल होता है और जानु ग्रीवा कटि इनको सुख होताहै, जो भोजन करके बैठ जाता है उसके तोंद पड़ जाती है जो भोजन करके टहलता है, उसकी आयु बढ़ती है जो सोजाता है उसके मद बढ़कर पुष्टता होती है, जो भोजन करके दौड़ता है उसके संग मानो मृत्यु दौड़ती है ।

दिनमें शयन निषेध ।

ग्रीष्म को छोड़कर अन्य ऋतुओं में सोना न चाहिये दिनमें सोने से कफ बढ़ता है जिन मनुष्यों ने दिनमें अथवा रात्रिमें नींद को स्वाधीन कर लिया है, उनको दिनमें सोना और न सोना तथा रात्रि में जागना वा न जागना दोषकारी नहीं होता ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शयन क्रम।

भोजन के उपरान्त १०० कदम टहल कर आठ श्वास तक चित्त लेट जावे फिर सोलह श्वास तक दाहिनीकरवट लेटै, फिरबत्तीस श्वासतक बायीं करवट लेटै फिर अपनी इच्छा के अनुसार यथा सुख शयन करै। प्राणियों के नाभि के ऊपर बांई ओर अग्नि स्थान है इस कारण भोजन किये हुए अन्नको पचाने के अर्थ बाईं करवट सोना उचित है।

अजीर्ण में भोजन।

यदि भोजन प्रातः समय तकन पचाहो तो भोजन न करै क्योंकि सांयकाल को भोजन न पचा हो तो प्रातःसमय भोजन विष समान होजाता है प्रातःसमय में किया भोजन यदि न पचा हो तो भी सायंकाल में भोजन करने कादोष नहीं होता है।

मन्दाग्नि के कारण पहले दिनका भोजन पचा हो तो दूसरे दिन दो बार भोजन करना योग्यहै क्योंकि पहले दिनका भोजन न पचा हो और भोजन कर लिया जाय तो जठराग्नि मन्द होजाती है।

प्रातःसमय यदि अजीर्ण होनेकी शंकाहोतो छोटी हर्र, सेंधालवण, सोंठ मिला चूर्ण शीतल जलके साथ खावै पश्चात् भोजन समय में परिमित भोजन करै तो अजीर्ण नहीं रहता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिनमें स्त्री गमन निषेध ।

बुद्धिमान् जन दिनके समय स्त्री गमन नहीं करते हैं क्योंकि दिनमें स्त्री गमन करने से आयु घटती है आयु घटने के भय से दिनमें स्त्री गमन नहीं करना केवल सन्तानोत्पत्ति निमित्त स्त्रीगमन करने की आज्ञा शास्त्रकारों नेदी है सो दिनमें रहे हुये गर्भ से यदि बालक उत्पन्न होवे तो वह बालक कुकर्मी होता है अतः कदापि दिनमें स्त्री गमन न करै ।

शरीर को दृढ़ रखने का उपाय ।

जो आवश्यक लेख हम पूर्व लिख चुके हैं ये सब शास्त्र के अनुसार शरीर को दृढ़ रखने के निमित्त लिखे गये हैं इनमें कोई निष्फल नहीं लिखे हैं वैद्यक शास्त्र के नियमानुसार मनुष्यका शरीर दृढ़ रहता है। और आयु भी पूर्ण होती है अब आगे संक्षेप से आवश्यक भोजन बनाने की रीति लिखते हैं ।

तत्रादो पाक स्थान वर्णन ।

पाक (रसोई) बनाने का स्थान बहुत शुद्ध पोता लीपा स्वच्छ हो कोई अपवित्र मनुष्य रसोई को न छूनेपावे एकांत स्थानमें भोजन बनावे भोजन बनाने वाला स्वच्छ वस्त्र पहिर कर भोजन बनावे, तथा वह हृदय से शुद्ध अर्थात कपटी और कुटिल न हो तो भोजन करनेसे आनंद प्राप्त होता है। व्यंजन कितने प्रकारके हैं उनकी गिनती करना दुर्लभहै, देश २ में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भिन्न २ और उनके बनाने की विधि भी पृथक है सो जानना कठिन है कोई कोई रसोइया इस विषय में ऐसे चतुर हैं कि अन्न के छप्पन प्रकार के पदार्थ बना सकते हैं फिर उनके पृथक २ नाम बंगाली, कर्णाटकी, पंजाबी, दक्षिणी, गुजराती आदि देशों की भाषा में हैं सो इस छोटी सी पुस्तक में नहीं लिखे जा सकते हैं, यहाँ तो अति संक्षेप से केवल थोड़ी थोड़ी सी वस्तुओं की विधि लिखते हैं।

अथ भोजन वर्णन।

रसोई तीन प्रकार की होती है १ निखरी, सखरी, ३ फलाहारी, निखर अर्थात् पक्का भोजन उसे कहते हैं जो घी में तलकर बनाया जाय जैसे लड्डू, कचौरी, पूरी आदि सखरी कच्चे भोजन को कहते हैं जो राँध कर बनाया जाय अर्थात् घीमें न तला जाय, जैसे दाल भात, कढी, खिचरी, रोटी आदि, किसी २ देश में चाल और कुल व्यवहार से भोजन को कच्चा मानते हैं. जैसे कोई हल्दी डालने से भोजन को कच्चा मानते हैं, कोई लवण डालने से कच्चा मानते हैं।

फलाहारी भोजन उसे कहते हैं जो कि दूधसे बनाया जाय, जैसे मलाई, रबड़ी, दूध, पेड़ा, बरफी, लड्डू आदि तथा सिंघाड़े व कूट्टू के आटे से जो बनाया जाय वह भी फलाहारी भोजन कहाता है॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भारतवर्ष से जिसप्रकार वैद्यक, ज्योति, न्याययोग वैशेषिक, व्याकरण, वेदान्त, मीमांस आदि सद्ग्रन्थों की उन्नति थी, उसी प्रकार पाकशास्त्र को भी उन्नति थी, प्राचीन समय में नलपाक, सीतापाक, कृष्णपाक, भीमपाक और अर्वाचीन समय में भोजनपाक, वीरपाक पाकेश्वर, रुचिबधू रत्नमाला, क्षेम कुतूहल, पाक माला, पाकसुधार आदि अनेक ग्रन्थ प्रसिद्ध है, परंतु इन ग्रन्थों की प्राप्ति अभी सुलभ नहीं है, कई ग्रन्थ खोजने से भी नहीं मिलते, कई ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं जो भाषामें उल्थाकर व्यंजनप्रकारादिनामसे प्रसिद्धकिये गयेहैं और हम भी यहाँ भाषा में ही लिखते हैं विशेष प्रकार भोजन बनानेकी विधि हम श्रीसुबोधिनी नामी ग्रन्थमें लिखेंगे। रसोई बनानेके दो समयहैं, सूर्योदय से दो प्रहर तक भोजन का समय है "याममध्ये न भोक्तव्यं सामयुग्मनलघयेत्" और चार घड़ी दिन रहे से प्रहररात्रि गयेतक रात्रिके भोजज का समय है जैसे 'यामध्ये रसोत्पत्तिः यामयुग्मं बलक्षयः।' इस का अनेवाद पहले लिख चुकेहैं, भोजन बनाने के पात्र स्वच्छ और लकड़ी कीड़े से रहित हों, रसोई की सब वस्तुओंको पृथकपृथक लिखें तो ग्रन्थ बहुत बढ़ जाय, इस कारण कुछ थोड़ी वस्तुओं की विधि यहाँ लिखेंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रोटी बनाने की विधि।

रोटी दोप्रकारकीहोतीहैं, १ पतली, २ मोटी। पतली रोटी दोप्रकारकी है १ पाटाबेलनसेबेलीहुई, २ हाथसे बनाई हुई इसीप्रकार मोटी रोटी दो प्रकारकी १ पलोथन लगाकर, २ पानी लगाकर। बेली हुई रोटीका आटा कुछ कड़ा गूंधा जाता है और पलोथन लगा चकले पर बेलन से बेलकर बनाई जाती है, परन्तु ऐसी रोटी देरमें पचती है और हाथसे बनाईहुई रोटी स्वादिष्ट होती है और शीघ्र पच जाती है रोटी का बनाना तो सब ही जानते हैं परन्तु विरले ही मनुष्य विधिसे रोटी बना सकते हैं, शीघ्र पचनेवाली और स्वादिष्ट पतली रोटी हाथ से बनाने की यह विधि है कि एक वा दो प्रहर पहले से आटे में थोड़ा जल डालकर लोआसा बांधले, फिर दोनों हाथको मुट्ठी बांधकर आटे को साने जब खूब गुंध जाय तब आटेको थाली भर में फैलादे और ऊपरसे पानी छोड़कर रख छोड़े और दाल भात तरकारी बनाकर आटे को थोड़ा थोड़ा जल हाथों में ले लेकर दोनों मुट्ठियों से गूंदे जब इच्छानुसार गीला होजाय तब चूल्हे पर तवा चढ़ाय ठीक गरम हो जाने पर लोई बना सूखे आटे का पलोथन लगा हाथ से पोकर तवे पर डाल देवे, जब रोटी में कुछ लालचित्ती पड़जाय तब घये में रखकर सेके, भली भाँति फूल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाने पर और दोनों ओर लाल होजाने पर उसकी राख झाड़े पात्र में रख कलछी से रोटी पर घी लगाता जाय अथवा बिन चुपड़ी रखता जाय, दूसरी रोटी होजाने पर पहली रोटी झाड़ कर रखदे, सेक कर रोटी कुछ देर रख देने से उसमें मधुरता आजाती है, पतली रोटी दालके साथ और मोटी रोटी घी चुपड़ी तरकारीके साथ स्वादिष्ट लगती है, बाजरे आदि की रोटी का आटा गरम जल से माड़ा जाता है तो रोटी अच्छी बनती है, एक डबल रोटी कहाती है उसकी विधि बिस्तार भय से नहीं लिखेंगे, यहाँ तो कुछ पदार्थों की संक्षेप विधि लिखना है ।

अरहर की दाल बनाने का प्रकार ।

अरहरकी दाल बिना छिलके के हो, उससे चौगुना जल बटली में चढ़ाकर जल गरम होजाने पर हलदी पिसी हुई छोड़दे जब जल खौल जाय, तब दाल के अनुमान से लवण छोड़ देवे, फिर दाल छोड़ देवे. जब उफान आकर शान्त होजाय और अधचुरी होय, तब कुछ थोड़ा सरसों का तेल डाल देवे, और चुर जाने पर आम की खटाई (अमचूर) डालदे, इससे अरहरकी दालमें से बादीपन निकल जाताहै, अरहरकी दाल भली भाँति गलजाने पर उतार लवे और हींग आदि का छौंक देकर मसाला डाल देवे विशेष प्रकार आगे लिखते हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा च।

अरहर की दाल आधा सेर घी आधपाव दही एक छटाँक, धनियाँ छःमाशे अदरक एक तोला, लौंग एक आना भर, लवण दो तोले, केशर आध आने भर दालचीनी एक आने भर, छोटी इलायची एक आने भर, जल दो सेर इस तरह दाल की कमी बेशी के अनुसार मसाला डाले।

प्रथम बटलोही में अथवा किसी हांडी में पानीभर चूल्हेपर चढ़ावे जब बोलनेलगे तब दाल उसमें डाल कर ढकदे, जब दाल सीज जावे तब उसका यूष किसी दूसरे पात्रमें निकालदालको अलग करले फिर उसमें दही, अदरख का रस और नमक डाले सब मिलाकर एकस्वच्छपात्रमें चारघड़ी ढांककर हाँडी में चौथाई घी दाल में छोड़के उसको भून जब भुनजावें तब धरे हुए यूषमें पिसा धनियां और सेंधानमक डालदे जब दाल अच्छीरीतिसे सिद्ध होजावे तब गरम मसाला और केशर पीसकर डालदे फिर कलछी से मिला पात्रमें निकालले और हाँडी धोकर शेष सबघी दाल उसमेंलौंगका बघार देकर दालछोड़देवे थोड़ीही देरतक मन्द आँच देकर कलछीसे चलाकर उतारले तो परमोत्तम अरहरकी दाल बन जाती है।

अथवा।

अरहरकी दाल जलसहित चूल्हेपर चढ़ावे जबदाल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घुर जावे और जलपृथकरहे तब उतार कपड़ेसे छान जलको फेंकदे दालकोलेकर अलगरक्खे और बटलो हीमें घी छोड़ तप्त होजाने पर लोंग जीरे का छौंक दाल छोडे अनुमान से लवण पीसकर डाले और गरम जल मिला ढकदेवे जब जल और दाल मिल जाय तब उतारले और घीको तपाय हींग डालकर दालको बघार देवे तो उत्तम दाल बन जाती है।

रसोई बनाने से चार व दो प्रहर पहिले उड़दकी दालको जलमें भिगोदे जब वह फूल जावे तो दाल को धोकर छिलका निकालदे जब छिलका न रहै,तब कपड़ासे पौंछले जब फरेरी होजाय तो कुछ घी कड़ाहीमें डालकर अकोरकर निकाल रख छोड़े फिर सेर भर जल पतीली में गरम जल निकाल लेवे फिर चूल्हेपर चढ़ाय थोड़ासा घी डाल देवे जब घी तप्त हो जाय तबसूखी हल्दी कुछजीरा डालदे और चलकर उसमें दालको डालकरभूने जब भलीभाँति भुनजाय तबजो पावभर दालहोतो तीनपाव जलडालेतो दो तीन उफान में गल जायगी तब उतारके आधघन्टे व पाव घन्टे उपरान्त चमचा लालकर घी, मिर्च धनियां हींग डालके छौंकदे यह दाल खानेमें बहुतही स्वादिष्ट होजाती है, उड़दकी दालमें अदरख अवश्य डालना चाहिये,उड़दकी बिनाधोई दाल प्रायः बनाई जातीहै उसमें प्रायःहल्दीनहीं डाली जाती बहुतलोग उड़दकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खड़ीदालखातेहैं अर्थात् बहुत गलीदाल नहींखातेहैं। उड़द की दाल काड़ाकी बहुतअच्छी बनती है, जिसमें छिलका बहुत कम रहताहै एक दिन पहले जल और तेल मिलाकर उड़द भिगोदेवे, दूसरेदिन कुछदेर धूप में रखदेवे और सूख जानेपर उनको दले तो छिलका निकल जायगा फिर हलदी नमक मिलाय अदहन चढ़ा देवे उसके सनसनाने पर दाल छोड़दे चुर जाने पर अदरखमसाला छोड़े और खटाई डाले घृत और हींग से बघार देवे यह दाल पुष्टिकारक बनती है।

मूंग की दाल बनाने की विधि।

लटलोई में घी तपायसूखी हल्दीडाल मूंगकी दाल को भून फिर थोड़ा जल व सेंधा डालकर चुरावे, चुर जानेपर मसालाडाल, फिरउतारकर चमचामेंघीतपाय हींगडालकरदालको छौंकदेवे दालमातदिल होतीहै।

मटर की दाल बनाने की विधि।

मटरकी दालको बराबर जलमें चराबे, चुरजानेपर मसाला डाल देवे फिर पिसानमक और खटाई, डाले और चमचा में घी तपाय हींग डालकर छौंक देवे यह दाल हलकी होती है।

मसूर की दाल बनाने की विधि।

जिसप्रकार मटर की दाल बनाना लिखा है वैसेही मसूरकी दालभी बनावे, यह दालभी हलकी होतीहै और कुलथीकी दाल मटरकी दालकी रीतिसे बनावे.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चना की दाल बनाने की विधि ।

चना की दाल बनाने की यह विधि है कि बटलोई में तपाय सूखी हलदी डालकर दाल को भूने फिर जल डालकर दालको चुरावे, जब चुरजाय तब पिसा हुआ नमक और मसाला डाले, और चमचामें घी तपाय हींग, जीरे का बघार देव, यह दाल पुष्ट होती है और कुछ देर में पचती है ।

मांठ की दाल बनाने की विधि ।

बटलोई में दूना जल चढ़ा सूखी पिसी हल्दी और नमक डालदे जब अदहन बोलनेलगे तब दाल छोड़ दे, जब दाल सीज जावे, तब मसाला छोड़दे व हींग जीरे का बघारदे, यह दाल भी अच्छी होती है ।

हंसराज चावल का भात बनाने की विधि ।

हंसराजके पुराने चाँवलों को तीनवार धोकर आधा घण्टा पर्यन्त भीगने दे और दूना जल बटलोई में चढ़ावे, जब जल बोलने लगे तब चाँवलोंको छोड़दे और चमचासे चलावे, दो तीन उफान आनेपर देखे कि चांवल गले या नहीं जब चांवल में एक कन रहजाय तब उतारले और छन्ना बांधकर मांड़पसाय ले, जब देखे कि जल इसमें नहीं रहा, तब उसमें घी डालकर हिला देवे, कुछ समय तक नहीं ढांपे फिर ढक देवे इस प्रकार बनाया हुआ भात बहुत स्वादिष्ट होता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधारण चांवल के भात की विधि।

बटलोही में अदहन रक्खे, चांवलों को तीन बार धोवै जब अदहन खौलनेलगे तब चाँवलोंको उसमें डालदे चमचे से चलाकर बन्द करदे, जब उबाल आजाय तब थोड़ी देर आंच देकर उसका मांड़नि-कालले और एक चांवल को हाथसे दबाकर देखेकि किनकी है वा नहीं, यदि चाँवल नया है तो एक कन रहने पर उतार ढककर रखदे भात बनजायगा यदि घी डालकर चाँवल बखेर ने की इच्छा हो तो चाँवल की किनकी देखकर ही उसमें घी डालदेवै।

केसरिया चाँवल बनाने की विधि।

उत्तम चांवल लेकर छःगुने जलमेंचुरावै जबचाँवल चुरजाय तब उन चांवलोंका जल निकालकर कपड़े पर चाँवलों के ऊपरसे केसरिया चन्दन कपूरका जल और जीरेकाजल दहीमिलाय छिड़क देवै और इकट्ठा करके रखदेवै तो चाँवल केसरिया बनजाते हैं॥

जो बहुत मोटे चाँवलहो तो बहुत पानीमें चुरावै जो बहुत बारीक हों तो थोड़े जल में चुरावै, और बारीक हो तो छः गुने जल में चुरावै, चुर जाने पर माँड निकाल घी डालकर चाँवलों को हिला देवै तो चाँवलों का भात स्वादिष्ट बन जाता है।

मीठे चाँवल बनाने की विधि।

पहले शक्करका अदहनचढ़ाकर घी तपाय लोंग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इलायची से अदहन को बघार देवै, फिर तीन पानी से चाँवलोंको धोकर बटलेमें डालदेवै और आँच कर देवै जब एक कन रहजाय तब उतारकर ढकदेवै तो मीठे चाँवल अति स्वादिष्ट बन जाते हैं।

उड़द की खिचड़ी बनाने की विधि ।

उत्तम चाँवल तीन भाग, उड़द की दाल दो भाग लेकरधोवै औरखौलतेअदहन में छोड़देवै, जबउफान आ जाय तब पिसा नमक डाल देवै चुरजाने पर हींग घीसे छोंककर डाल देवे, चुरजानेपर उतारकर ढके तो खिचड़ी बहुत अच्छी बन जाती है खिचड़ी में दूना अदहन सर्वत्र जानना ।

अरहर की खिचड़ी बनाने की विधि ।

अरहर की दाल एक भाग, चाँवल तीन भाग लेवे खिचड़ी से दूना जल लेकर बटलोई में चूल्हेपर चढा बे अदहन होजानेपरतीनबार खिचड़ी को धोकरडाल देवे अनुमानसेपिसानमक उसमें छोड़देवै, खिचड़ीचुर जानेपर अदरख, धनियाँ, मिर्च पीसकर उसमें डाले हींग घी से छोंक देवै फिर उतार कर बन्द कर देवै और ठण्डी हो जाने पर खावें यह खिचड़ी बहुत अच्छी शीघ्र पचने वाली बनती है ।

मूंग की खिचड़ी बनाने की विधि ।

मूंग की दाल और चाँवल बराबर लेकर तीन पानी से धोकर खौलते अदहनमें डालदे जब खिचड़ी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घुर जावै तब नदरख मिर्च, धनियाँ मैथी लौंग, दाल चीनी यह मसाला व पिसा नमक डालकर हींग जीरा घी से छौंकदे और उतार कर रख दे इसी प्रकार चना व मटरकी खिचड़ी बनावे परन्तु यह ध्यान रक्खे कि चनाकी खिचड़ी मेंदाल चाँवल बराबर रहे और मटर की दाल से चाँवल ड्योढी रहै खिचड़ी में हलदी डालनाहोतो अदहनकेसाथमें डालदेऔर खिचड़ीको मन्द २ आँच से चुराना मूँग की खिचड़ी मातदिल होती है और शीघ्र पच जाती है और मटर व अरहर की खिचडी गरम होती है पर अरहरकी खिचडीशीघ्र और मटरकी खिचडी कुछ बिलंब से पचती है।

खीर बनाने की विधि।

यदि दूध एकसेर होतो चाँवल एक छटाँक घी से मल दूध कुछ औटा कर चावल छोड़े चमचा से चाँवल हिलाता रहे जब चाँवल गल जाय तब पाव-भर शक्कर और एकछटाँक घी डाले तो खीर उत्तम बन जाती है, परन्तु प्रायः लोग थारो में खीर परोस करशक्कर व घी छोड़ते हैं खीर बनाने की मुख्य विधि यही है, कोई २ चावलों को भूनकर भी बनाते हैं।

सत्तू बनाने की विधि।

सत्तू, गेहूँ, चना, जौ आदि के बनाये जाते हैं जिसका सत्तू बनानाहो उसे भूनाकर पीसकर छानले तो सत्तू उत्तम बन जाते हैं विशेषकर जौ कीदरीके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सत्तू खानेका इधर बहुत प्रचारहै जिस समय जौ पक गये हों परन्तु खेतमें हरे खड़ेहों तो काटकर जौ निकालले और भुनाकर गाली मूशलसे कूटभुसी दूर करदे औरचक्कीमें पीसले यही ददरीके सत्तू कहाते हैं, सूखे जौ के ददरीके सत्तू इसप्रकार बनावे कि सूखे जौ चार प्रहर भिगोकर जलसे निकाल धूपमें थोडी देर डालदे जब जल न रहे तब गाली मूसरसे कूट भुसी निकाल भुना लेवे और पीस कर सत्तू बनावे, फलाहारी सत्तू मखाने के बनाये जाते हैं।

सत्तू खाने की विधि।

सत्तू न बहुत गाढा न बहुत पतला खावे सैंकडों मनुष्य ऐसे हैं जो गाढा सत्तू खाते हैं और सैंकडों पुरुष पतले सत्तू खाते हैं ग्रामीण लोग सत्तूको आटे के समान घोलकर कडी २ पीडियां बनाकर मुँहमें ठूंसठूंसकर खाते हैं परन्तु वे लोग ऐसे सत्तूखाकर परिश्रम पूर्वक खेतीका काम करके पचालेते है, यदि हम लोग ऐसे सत्तू खायँतो दूसरे ही दिन रोगी हो जायं, बहुतेरे ग्रामीण राव का शर्वत बनाकर थोड़ेसे सत्तू डालकर पी जाते हैं यदि हम इस प्रकार पीजायँ तो घडी उपरान्त दस्त आने लगे।

शहर के रहने वाले बहुतेरे लोग कच्चा शक्कर का शर्वत बनाय छान कर उसमें काली मिर्च और इलायची पीसकर मिलाकर कुछ सत्तू ददरीके अथवा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मखाने के डालकर पीते हैं, परन्तु मुख्य रीति सत्तू खाने की यही है कि न बहुत पतले हों न बहुत गाढ़े हों एक अँगुली से खाने योग्य सत्तू खावे।

द्रव्ययुक्त सत्तू के गुण।

इमली गुड़ और कुछ घृत मिले सत्तू खाने से मूत्र कृच्छ्र (सुजाक) रोगशान्त होजाता है, खाँड़ और ईख के रसके साथ खानेसे उदावर्त जाता रहता है दाख के साथ खाने से वातरक्त और दाख व शहत के साथ खाने से पित्त रोग दूर होजाता है. जल में घोलकर खाने से कफ रोग शान्त होजाते हैं, एवं खटाई का रस खटाई, शक्कर, घी, दाख, शहत, गुड़ इनके साथ खाने से वातादिदोष और मल यथा मार्ग निकल जाते है, सत्तू शक्कर और घृत मिला कर ग्रीष्म ऋतु में खाने से वीर्य की वृद्धि होती है ग्रीष्म ऋतु में सत्तू हलके बलकारी, शीतल, तृप्ति और रुचिकारी है, सत्तूको दूधके साथ न खावे और दांतों से चबा कर भी न खावे।

सत्तू खाने का समय।

एक दिनमें दो बार, रात्रि समय सतुआ न खावे भोजन करने उपरान्त तथा बहुत गरम करके सत्तू न खावे, सत्तू खाते समय अलग न जल पीवे, यह सत्तू खानेका प्रकार वैद्यक ग्रन्थों के आधारसे लिखा है इससे विरुद्ध बर्ताव करने से रोग प्रगट हो जाना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्भवहै, ग्रंथकारों के बचन सब मनुष्यों को मानना योग्य है। परन्तु यहाँ किस्सा कहानियों के बनाने वालों की गणना ग्रन्थकारों में नहीं जानना, मुख्य ग्रन्थ वही है जिससे मनुष्यों का हित होवे।

बेसन व मूँग की कढ़ी बनाने की विधि।

थोड़ी सी हींग बेसनमें मिला पानी में घोल भली भांति फेंटे, यदि वह फुलौरी पानी पर तैरने लगे तो उसमें थोड़ासा नमक पीसकर डालदे, और मिलाकर धरे फिर कढ़ाई में घी अथवा तेल छोड़े जब तप्त होजाय तब उसमें फुलौरी तोड़े और भलीभांति सेंक कर निकालता जाय, इस प्रकार जितने धान हों उतने धान फुलौरी सेंककर एक पात्रमें धरे तदनन्तर कढाई में पिसी हल्दी, अजवायन, मिर्च, मेंथी, हींग आदि सब मसाला डाले और बेसन घोलकर उसमें मठा मिलाय दूधकी भांति उसे पतला करलेवें जब देखे कि कढाही का मसाला होगया तब उस मतले बेसनको कढाही में छोड़दे और धीरे २ चलावे, और नमक पीसकर डालदेवे जबतक कढी चरने न लगे जबतक बराबर चलावे, दस बारह उफान आने पर उसमें फुलेरी डालकर चलादेवे और उतारकर ढकदे, इस प्रकार तीनचार घन्टे में बहुत सौंधी कढी बन जाती है, इसी प्रकार मूँगकी दालको धोकर बहुत बारीक पीसकर कुछ हींगको घोलकर मिलादेवे और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थाली में उस पीठी को रख कर भलीभाँति फेंटकर बेसनको कढी की भांति बना लेवे, इसमें गंधा नहीं पड़ती और पाँच सात उफान में हो जाती है।

उड़द के करायल में की विधि।

उड़दकी दालको धोकर बारीक पीस पीठी बनाय हींग और पिसा जीरा मिलाय भलीभाँति फेंटे और बेसन को कढी की भाँति करायल बना लेवे।

रायता बनाने विधि।

रायता कई प्रकार का बनता है परन्तु गंगा फल और रामतुरई का रायता प्रायःलोग खाते हैं राम तुरई के रायते की विधि रामतुरई को लेकर छीले और बीज निकालकर कद्दूदू कसमें कसकर बारीक हो जाने पर बटलोई में भर थोड़ासा जल डालकर चूल्हे पर चढाय गला लेवे, फिर निचोड़ कर रख छोड़े, फिर दही अथवा मठाको कोरी मिट्टीकी हांडी अथवा पत्थरके कुंडामें जीरा व हींगका छौंक भली भांति देवे उसका धुआँ बाहर न निकलने पावे फिर पिसा नमक गली हुई तुरई को उसमें मिला देवे, यह रायता बनाने की साधारण रीति है।

मूंग के लड्डू बनाने की विधि।

मूंगको भाडमें भुनवाकर चक्की से दलडाले और फटक कर छिलके निकाल डाले फिर पीसकर आटा बना कढाही में यथा शक्ति घी डालकर उस आटे को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसमें डालकर सेंधा कर लेवे यदि सामर्थ्य होतो एक सेर आटे को आधा सेर घी में भूने और ढाई पाव शक्कर मिलाय मेवा डाल कर लड्डू बाँध लेवे यदि गुड़ से लड्डू बाँधना हो तो यथाशक्ति घी से आटे को भूनकर गुड़की चासनी बना आटा मिला लड्डू बाँध लेवे इसी प्रकार गेहूँ व चना के लड्डू भी बाँधे जाते हैं बहुतेरे कच्चे आटे को घी में भून कर मीठी चाशनी बनाय उसमें मिलाय लड्डू बाँधते हैं ।

साधारण हलुआ की विधि ।

आटे वा सूजीको घी में भूनकर उसमें शर्वत मिला य बराबर चलातारहे जिससे गुल्ले न पड़ने पावें फिर उतारकर रखदेबे, घी मेवा मिलानाहो तो मिलादे यह साधारण हलुवा है। इसी प्रकार लापसी बनती है।

गुलगुलों की बिधि ।

जितना आटा हो उससे आधे शक्कर व गुड़को लेकर शर्वत बना आटे में मिलाय भली भाँति फेंटे फिर कढ़ाही में चढाय तप जाने पर फुलौरी की तरह गुलगुला छोड़ सिकने पर निकाले ।

सादा पूरी बनाने की विधि ।

गेहूँ की मैदाको भलीभांति माढे यदि हो सके तो घी मिलादेवे सादी पूरी की मैंदा कडी माडी जाती है फिर कढ़ाही में घी तपाय मैदाकी पूरी बेलन से बेलकर घी में छोड़े और दोनों ओर फूल जाने पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निकाल लेवे यही सादी पूरी है मीठी पूरी बनाना हो तो मैदा मांडते समय मीठा मिलाले अथवा शर्बत से मांडे उसकी पूरी को पुआ कहते हैं।

कचौरी बनाने की विधि।

मैदाको कुछ गीली माँड़ उसमें पीठी भरदेवे पीठी में हींग जीरा मसाला पडा हो, चकला बेलनसे बेल कड़ाई में घी तप्त होजाने पर कचौरी छोड़ देवे जब कचौरी फूल जाय दोनों ओर सिकने पर निकाल लेवे, यह साधारण कचौरी होतीहै, यदि खस्ता कछौरी बनाना होतो मैदा मांड़ते समय घी मिलावे और पीठी में भी घी और मसाला सब मिलाय लोईमें भरकर उस का मुँह बंद कर चकले पर बेलन से बेलकर तप्त घी में छोडकर भलीभाँति सेंक लेवे यह खस्ता कचौरी है, खस्ता कचौरी की एकसेर मैदा में एक छटाँक से अधिक घी डाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण कचौरी में नमक नहीं डालते अन्य लोग कचौरीकी मैदा को नमक के जलसेही मांडते हैं और पीठी में भी नमक डालते हैं।

पीठीमें डालने का मसाला धनिया, मिर्च, इलायची, जीरा, अद्रक, लवण, हींगभुनी, अजवायन, बारीकपीस कर मिलावे, अजवाइन धनियां भूनले, घी लगाकर हाथसे बनाई हुई कचौरी भी अच्छी बनती है, बहुतेरे लोग खस्ता कचौरीकी पिट्ठी में मसाला मिला पिठी को घीमें भूनकर उस पिठीको लोईमें भर कचौरी बना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तेहैं कचौरीकी मैदा बहुत नरम मांडी जातीहै, यदि पलोथन लगाकर कचौरी को बेले तो बहुत कम पलोथन लगाना, बनारसी पूरीमें खस्ता कचौरी से भी अधिक घी लगताहै खोवाकी कचौरीभी प्रायः इस प्रकार बनतीमें किआटे व मैदाको अधिक घीडालकर मांडे और छोटीसी लोई बनाकर जीरा, इलायची, मिर्च, कपूर खोवा, शक्कर मिलाय उसमें भरकरकचौरी बना लेवे यह कचौरी बहुत अच्छी होती है ।

गुंझिया बनाने की विधि ।

एकसेर मैदाकी गुंझिया बनाना होतो तीनछटाँक घी डालकर मैदा माँडे परंतु कड़ी मैदा माँडे भली भांति मांडने पर भी नरम न माँडे और सेरभर मैदा में पावभर घी डालकर भून लेवे, जब भली भाँति भुन जाय तब उसमें थोड़ासा कपूर, गोला, किस मिस, और तीनपाव शक्कर मिलाय कसार बनालेवे । फिर मैदा की छोटी २ लोई कर लेवे और कसार भरकर किनारोंपर जल लगा मोड़देवे फिर गुंझिया कड़ाई में छोड़ देवे दोनों ओर सिकने पर निकाल लेवे, यह खस्ता गुंझिया बहुत अच्छी बनती हैं, प्रायः होली के दिन स्त्रियाँ इस प्रकार की गुंझियां बनाती है ।

परामठे की विधि ।

मैदा व आटे को भली भाँति मांडे लोई बनाकर चकले पर बेलनसे जहां तक बढ़सके और उसमें घी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चुपड़देवे फिर उसमें लपेटकर बेले और बढ़ाकर तवा अथवा कढ़ाई में घी चुपड़कर सेकै किनारे पर कुछ २ घी छोड़ता जाय और उलटता जाय, जब सेकते २ बादामी रंगहोजाय तब निकालले ये प्रामठेहैं इसको कोई डोरेकी पूरी कहते हैं बारबार घी चुपड़कर पर्त लगाकर बेलनेसे इसीको चपाती भी कहतेहैं ये तुरन्त खानेसे तरकारी के साथ बहुत स्वादिष्ट लगतेहैं नमकीन प्रामठे बनाना हो तो नमकके जलसे मैदा वा आटा मांडे यह साधारण प्रामठे की रीति है॥

चीलों की विधि।

बेसन वा मूंगकी पीठीको बारीक पीस उसमें अदरक, लवण, मिर्च लौंग, भुनी हींग मिलाय फेंटे और घी अथवा तेल तवेपर चुपड़कर फेंटी हुई पीठी फैला देवे और दो बार उलट देवे परन्तु मन्द मन्द आँच जलावे और सेकले चित्ती पड़ जाने पर जानले कि चीला सिक गया यह चीले बहुत स्वादिष्ट होते हैं, मीठे चीले खाना हो तो गेहुँके आटेके चीले शक्कर मिलाकर बनालेवे, प्रामठे की तरह तवा व कढ़ाई में घी वा तेल चुपड़कर चीला सेके जाते हैं।

पापड़ बनाने की विधि।

पापड़ चना उड़द मूंगके बनाये जाते हैं इस देशमें उड़द के पापड़ बहुरुचिसे खातेहैं इससे उड़द के पापड़ बनाने की विधि लिखते हैं उड़द की दालको

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धोकर छिलका निकाल डाले फिर उसका पानी सुखा पीस लेवे उसमें जीरा भुना हींग, सज्जी, पिसा नमक मिर्च, इलायची मिला गरम जल से सानकर माड़ले परन्तु बहुत गरम न होने पावे फिर उसकी बहुत छोटी २ लोई काट पत्थर के पाटापर तेल चुपड़ बेलन से बहुत बारीक बेले और कपड़ेपर रखता जाय यह पापड़ घी में अथवा गरम तबे पर सेककर खाय ये सेकने पर कुरकुरे और बहुत स्वादिष्ट होते हैं ।

आलू की तरकारी की विधि ।

आलू को छील कतर डाले फिर बटलोही में घी डाले और चूल्हे पर चढ़ाय आंच करदे जब घी तप-जाय तब मेथी और पिसी हल्दी और आलू डाल-कर भलीभांति भूने जब सुरखी आजाय तब गरम पानी और नमक छोड़ ढककर मन्द मन्द आँच देबे आलू चुर जाने पर उसमें मसाला डाल, घी हींग का छोंकदे उतार लेवे ये आलू अच्छे बनते हैं बहुत लोग पहले आलूको बटलोई में उबालकर सीज जाने पर छीलते हैं और कतर कर उक्तरीति से बनाते हैं यह भी अच्छे बनते हैं परन्तु हल्दी के साथ भूनने से ऐसे आलू फूट जाते हैं आलू घी अधिक चाहते हैं ।

समूचे आलू की विधि ।

आलुओंको छील चाकू से गोदे फिर एक सेर आलू हों तो पावभर घी कड़ाही में डाल उसमें आलू धोकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

डाले और मन्द आँच करदे, भुनते भुनते जब आलू गल जाय तब निकाल चूल्हेपर बटलोई में घी चढ़ाय पिसा नमक पिसा धनियाँ जीरा, हींग, मैथी, मिर्च हल्दी, आदि को छोड़दे जब मसाला भुनजाय, तब आलू छोड़दे, और दही डाल कर भली भांति भूने, फिर थोड़ा जल डालकर ढक देवे, और मन्द मन्द आंचदेवे, जब पानी न रहे तब गरम मसाला डालकर उतार लेवे यह समूचे आलू बहुत अच्छे सोंधे बनते हैं इसी प्रकार घुइयाँ बनाई जासकती हैं परन्तु घुइयांमें मैथी नहीं पड़ती, अजवायन डाली जाती है। यदि बिना हलदी के आलू व घुइयाँ बनाना होतो हलदी नहीं डाले, मसीना, परबल आदि की तरकारी भी इसी प्रकार बनाई जाती हैं।

कटहल बनाने की विधि।

हाथमें तेल वा घी चुपड़कर कच्चे कटहल को छील छोटे २ टुकड़े बना बटले में घी छोड़ हींग को डाले जब सुगन्ध उठे तब उसमें पिसी हलदी नमक छोड़ कर चलावे अनन्तर कटहल को छोड़ मन्द २ आँच से भून और गरम जल छोड़कर ढकदे, जब कटहल चुरजाय तब मसाले को गरम पानी से पीसकर उसमें डाले और ढककर उतार लेवे, कोई २ कटहल के टुकड़ों को पीठी वा वेसनमें मिलाकर घी में भून लेते हैं यहाँ मन्द २ आँच देवे तो खाने में सूखे भूने टुकड़े

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहुत स्वादिष्ट बनते हैं पीठी वा बेसनमें पिसा लवण व मसाला हलदी आदि मिलालेवें, निर्धन पुरुष जो तरकारी बनाकर खाते हैं सो तरकारी को छीले और कतर कर कढाही वा बटुली चूल्हेपर चढा थोड़ा घी वा तेलडाल इच्छानुसार छौंकदेते हैं और सीजने पर नमक डाल उतार लेते हैं शाकपत्र भी इसी प्रकार कतर छौंकके बनते हैं कटहलकी भाँति गोभी के फूल आदि तरकारीको बनावे गोभीऔर कटहलकीतरकारी घी लौंग से अवश्य छौंकदे इससे बादीपन निकल जाता है और हीक नहीं आती परन्तु छौंकते बन जाय तो ठीक है ।

करेला की विधि ।

समूचे करेलों के ऊपरसे काटे छीले अथवा चाकू खुरचन कर साफ कर धोडाले और चाकू से चीरकर भीतरके बीज निकाले फिर नमक लगा सूर्य की धूप में धर दे जब उनका जल सूख जाय तब घी डाले, और भुनी मेथी, धनियाँ, सोंफ, हल्दी, मिर्च अमचूर नमक इनको पीसकरेलों मेंभरे और डोरे से उनको बांधदे फिर पतीले में भर चूल्हे पर चढादे जब करेला गल जाय, तब कढाई में घी डालकर उनको भूने परन्तु भूनते समय दही का रायता देता जाय, भुनजाने और सूख जाने पर उतार लेवे यह करेले कडुये नहीं रहते और खाने में बहुत अच्छे होते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा च–करेलों को खुरचनकर साफ करके बीच से चीर देवे और बीज निकाल पिसा नमक लेकर ऊपर मलदेवे फिर पानी डालकर अग्निपर चढा दे और थोड़ा मठा डालदे जब पक जाय तब पानी निकाल कर खटाई धनियां आदि सब मसाला भर कर कडुआ तेल कढाही में चढ़ाय तप्त होजाने पर करेलों को उसमें छोड़ कर भूनले, तो करेला अच्छे स्वादिष्ट बन जाते हैं।

अथवा–करेलों को छीलकर बीचसे कतर बीज निकाल साफ कर लेवे फिर सब मसाले भर डोरे से बांध कढाही वा बटलोई में पानी भर इमली की पत्ती के साथ चुरावे, चुरजाने पर निकाललेे और पत्ती छुटाय साफकर उन करेलों को कढाही में व तेल डाल तप्त होजानेपर भूनले तो भी करेले बहुत अच्छे बनजाते हैं यदि करेला भरने के योग्य न हो और शीघ्र खाना चाहे तो कतर कर धोडाले और कढाही में घी व तेल छोड़कर उसमें हल्दी, मिर्च, धनियां, सोंफ पीस कर भूने और करेले छोड़ देवे अनुमान से नमक और गलने योग्य जल छोड़ देवे जब गल जाय तब दही डाल कर भून फिर गरम मसाला डालकर उतार लेवे यह करेले भी अच्छे बनते हैं!

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समूचे बेंगन वा भिंडी बनाने की विधि।

नरम नरम और छोटे लम्बे बेंगन ले धोकर कपड़े से पोंछ डाले फिर चाकू से तराश कर उनमें जीरा, मिर्च, हल्दी, धनियाँ, हींग, अमचूर आदि पिसा मसाला भर देवे और कढाही में घी डालकर भली भांति भूनले, फिर पिसा हुआ नमक डालकर ढकदे परंतु मन्द २ आंचसे भूने और चुरावे, इसी प्रकार भिंडी भी भरकर बनावे तो बहुत स्वादिष्ट बनती है घीया तुरईभी इसीप्रकार भरकर बनाई जाती हैं।

सूरन (जिमीकन्द) की तरकारी बनाने की विधि।

जिमीकन्द के टुकड़े काटकर इमली के पत्तों के साथ पतेली में भरकर पानी चूल्हेपर चढादे, दो ढाई घन्टे में चुरजाने पर उतारले और साफकर गोले के तेलमें तल दे फिर धनियां, लौंग, इलायची हल्दी मिर्च, दालचीनी, तेजपात यह मसाला पीस घी में भूने, और जिमीकन्द को डालकर दही देकर भूने, रसीला बनाना हो तो जल डाल गरम मसाला डाल कर उतारले इस रीति से बनाने में जिमीकन्द में चर-पर हट नहीं रहता और स्वादिष्ट बनताहै जिमीकन्द का आचार भी बनाया जाता है बवासीर रोग वाले को जिमीकन्द अति हितकारी है।

मूली की तरकारी की विधि।

मूली की जड़ को कतर कर उबाल ले सीजने पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उतार कर पानी निचोड़ डाले फिर बटलोईमें घी चढ़ाय तप्त होने पर हींग अथवा मेथी डाल पिसी हल्दी छोड़े और चलाकर उसमें मूलीके उबाले हुए टुकड़े छोड़कर भूने फिर गरम जल और पिसा नमक छोड़कर ढकदे और मन्द मन्द आंच करदे फिर थोड़ी देर उपरान्त मसाला छोड़ उतार कर रखदे मूली के पत्ते काटकर अलग छौंक देवे जड़ पत्ते एक में छौंककर खाना हो तो साग की तरह काटकर छौंक देवे मूली की तरकारी भी बवासीर के रोगी को अति हितकारी जानना।

मखाने की तरकारी बनाने की विधि।

कभी २ कोई तरकारी न मिलने पर लोग मखाने की तरकारी बना लेते हैं। मखाने लेकर साफ करे और कुछ कूटकर भिगो देवे, दो घन्टे भीगने पर निकालकर सुखाले नरम रहने पर बटलोई में घी तपाय हींग डाल हल्दी सहित छोड़ देवे और भून कर गरम जल डाले चुर जाने पर मसाला डालकर उतार ले यह तरकारी शीघ्र पकती है।

आम का मुरब्बा बनाने की विधि।

आमको छील दो २ टुकड़ेकर गुठली निकाल डाले फिर कांटे से गोद भर मिट्टी के बर्तन में जोश दे, जब कुछ गल जाय तो उसमें उन आमों की तोल से आधा सफेद शक्कर की चाशनी बनाय उसमें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

डालदे यह आम का मुरब्बा ठण्डा कर अमृतवान में भरकर रखदे यदि खटमिट्ठा मुरब्बा बनाना हो तो गुड़ वा शक्कर की चाशनी में नमक मिर्च मसाले में आम के जोश दिये टुकड़े मिलादे और मिट्टीके सोंधे पात्र में अथवा शीशा व अमृतवान में भरकर धूप में रखदे चार छः दिन में यह खटमिट्ठा मीठा मुरब्बा खाने योग्य हो जाता है।

आम के अचार की विधि।

आमको छील कतरकर उसमें पिसा नमक मिलाय धूपमें सुखावे और हलदी मिर्च कलोंजी हींग, सोंफ तेलमें भूनकर पीसले फिर तेलका मोवादे सब मसाला मिला देवे फिर अचारीमें भर धूपमें धरदे और तेल ऊपर तक भरदे यहां तेल सरसों का होवे कभी २ यह अचार धूप में रख दिया करे प्रायः लोगबिना छिले आम काटकर एक गुठली निकाल वहां हलदी सोंफ आदि भुना मसाला भरकर सरसों के तेलमें यह अचार बनाकर धूपमें धरते हैं बहुतेरे लोग तेल का अचार किसी रोग के कारणसे नहीं खाते और बिना जाली आमले छीलकर गुठली निकाल केवल नमक मिर्च मिलाय पात्रमें भरकर धूप में रख देते है दस बारह दिन बाद यह अचारी भी खाने योग्य हो जाती है। कोई २ नमक मिर्च के साथ मसाला भी मिला लेते हैं बहुतेरे लोग लाल मिर्च नहीं खाते,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उनको काली मिर्च खाना चाहिये।

नींबू के अचार बनाने की विधि।

समूचे नीबू जो बहुत साफ़हों लेकर चाकूसेतराश कर दो टुकड़े करले, फिर पत्थर की कूंडी म उनका कुछअर्क निचोड़ले, और कालीमिर्च जीरा इलायची, लौंगचूरा, नमककूटकर नीबूको फाँकोंमें भरकर जोड़ दे और कच्चे सूत से बाँधकर शीशे की अचारीवा अमृतवान में भरदे और पहले निचोड़ा हुआअर्क उस मिट्टी के पात्र में छानकर गरम करले और उसमें छोड़दे, यह नीबूका अर्क ऊपर तक भरारहे औरप्रति दिन धूपमें रखदिया करे तथा कागजी नीबू बिना दागी लेकर मिट्टी के पात्र में निर्मल जल भर उस में एकदिन भीगनेदे और दूसरे दिन पानी बदल ढोरे. फिर निकाल कर निर्मल जलमें भिगोदे, फिर तीसरे दिन मठा में डाल कर ढारे अर्थात् हिलावे, चौथे दिन नमकके पानी में ढोरे, इस प्रकार चार दिन के भिगोने और ढोरनेसे कागजी नीबूखटाई रखने के योग्य होताहै, कागजी नीबू को उसी चौथे दिन कतर कर कालीमिर्च नमक मिलाय अचारी वा अमृतवान में भरकर रखदेवे, और धूपमें रखकर नीबूकाअर्क पूर्वोक्त रीतिसे गरमकर छोड़दे, धूपमेंरखे नीबूका अर्क भरारहे और प्रतिदिन धूपमें रखा करे तो पन्द्रह बीसदिन पीछे वह अचारी खानेके योग्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होतीहै कागजीमें यदि छुआरा रखा चाहेतोकागजी अमृतवानमें रखते समय पर्त लगाता जायतो छुहारे भी अच्छे बनते हैं। दन्त रोगी, आतशक बवासीर तथा रुधिर विकारवालेको खटाई नहींखानाचाहिये।

चटनी बनाने की विधि।

आधा तोला अमचूर को भिगोदे, और तोलाभर पोदीना, स्याहजीरा, कालीमिर्च और नमक व कुछ हींग मिलाकर सिल पर पीस लेवे तो चटनी अच्छी बनती है अदरखकी चटनी बनानी हो तो अदरख को छील कतरकर धोवे और पत्थरकी प्यालीमें रख कर नीबूका अर्क निचोड़दे, इसमें नमक इलायची, जीरा यह अनुमान से डाले यह चटनी कभी कभी रोगी भी खा सकताहै, अदरखकी चटनी कफरोगी को हितकारी है, परन्तु प्रतिदिन नहीं खावे।

इमली सार।

पकी इमली के बीज निकाल पाव भर लेके सेर भर जल में औटावे जब आधा जल रहजाय तब बारीक कपड़ेसे छान उसमें दोतोला कालीमिर्च, हींग सेंधालवण, जीरा अनुमानसे पीसकर मिलादेवे परंतु हींगकोभूनले और अदरखके कतरेभी रसमें डाल देवे फिर कुछ देर चूल्हेपर रख पचावे इसको इमलीसार कहतेहैं यदि इस सारको मधुर करनाहो तो अनुमानसे गुड़ अथवा शक्कर की चाशनी मिलावे, यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वा तरोगनाशक, पित्तकफकारक, रुचिकर और अग्नि को प्रदीप्त करे है यह थोड़ेसे भोजनोका प्रकार लिखा गया विस्तारपूर्वक स्त्री सुबोधनी में लिखेंगे।

अथ संक्षिप्त दिन चर्य्या।

दूध, दही, माखन, मिश्री, पके मीठे फल, काली मिर्च का सदा सेवन करे।

कुछ गरम कोमल, उत्तम और स्वादु भोजन भूख लगनेपर करे। शीतल और निर्मल जल सदा छान करपीवे यदि दैववश गदला रंग बिरंगा, वर्षाका कच्चा जल मिले तोऔटाकर शीतलकरे और छानकरपीवे।

बाल्यावस्था से ही लालमिर्च, तेल, खटाई, कच्चा फल और बहुत मिठाई नहीं खावे।

भाँग, अफीम, गाँजा, चर्स मदिरा आदि नशा वाली वस्तुओं का सेवन नहींकरे।

घी शहत अथवा जल सहित बराबर मिलाकर न खावे क्योंकि विष समान होजाता है।

प्रातः कुछ ठंडा जल पी सुपास को जावे तो दस्त साफ होता है। मल, मूत्र, छींक, डकार, आँसू, भूख प्यास वायु आदि वेगों को नहीं रोके, रोकने से तज्जध्य रोग प्रगट हो जाना सम्भव है। पाँचवें वा सातवें दिनहजामत बनवानाठीक है। प्रातःसायंकाल मन्द सुगंध शीतल वायुमें टहलना ठीकहै सदानिर्मल वस्त्र पहरे। वर्षा में भीगे नहीं। नेत्रों में अंजन और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दांतों में मंजन सदा लगावे। उष्णकाल में शीतल जल से, और शीतकाल में गरम जल से स्नान करे दंड कसरत का अभ्यास रक्खे इससे शरीर हल्का, फुर्तीला और पुष्ट रहता है, परन्तु खांसी, ज्वर रक्तपित्त क्षय आदि रोग हों तो कसरत न करे।

अधिक प्रकाश वाली वस्तु और सूर्य आदि की अधिक धूप को न देखे इससे नेत्र की ज्योति मन्द पड़ जाती है। अपने स्थान को सुगंधित धूप और सुगंधित पदार्थों के हवन से सुगंधित रक्खे।

प्रातः सायं के सन्ध्या समय भोजन अध्ययन (पठन) शयन स्त्री प्रसंग न करे।

ऋतु समय में अपनी स्त्री से प्रसंग करे दूसरी से कभी नहीं। गर्भिणी, रजस्वला और पराई स्त्री से सम्भोग नहीं करे।

शिर पर रख बोझ नहीं ले चले इससे बुद्धि मंद हो जाती है।

अधिक ऊँचे व अधिक नीचे स्वर से और जल्दी जल्दी नहीं पढ़े इससे शब्द बिगड़ जाता है।

ऊँचे और कठोर आसन पर नहीं बैठे।

नंगे पैर नंगे शिर और हाथ में बिना छत्री व छड़ी लिये बाहर को नहीं जावे।

बहुत छोटे गाँव में व तीक्ष्ण वायु में व ओस व

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीक्ष्ण धूपमें शयन न करे और वहाँ बैठकरविश्राम भी न करे, नख से पृथ्वी न खोदे, दांतों को न किटकिटावे नखों को न वजावे जुआ न खेले सूर्य उदय अस्त समय न देखे।

सूर्य, चन्द्र, गौ, ब्राह्मण, वायु, अग्नि, जल, गुरुवृद्धजन इनकी ओर मुखकरके मल मूत्र न करे और न थूके, लोभी, निर्दयी, कठोर, राजद्रोही, चोर, ठग, नपुंसक नशाबाज, निर्लज्ज, नास्तिक, डरपोक, मूर्ख, शठ, उन्मत्त, चुगलभूँठा, महाअभिमानी, ऐसेलोगोंसेमित्रता नकरे और न उनके समीप बैठकरउनकी बातेंसुनें बहुत क्रोध और बहुत हर्ष कभी न करे। राग द्वेष, चिन्ता उत्पन्न होने वाले काम न करे।

छिपी हुई बात को प्रकाशित न करे। स्त्री का विश्वास सहसा न माने, और न छिपी बात कहै इन्द्रिय और मनको सर्वदाअपने वशमें रक्खे। जल में बहुत तैरना, नंगे होकर घुसना, जलमें मल मूत्र करना, अपनी छाया देखना इतने काम न करे।

सर्प और पशुओंके पीछे न दोड़े। सज्जनोंसे मित्रता, भाई, बन्धु, मित्र, सम्बन्धी आदिके साथ उपकार, परस्पर सहायता आदि करे। अपनी स्तुतिऔर पराई निन्दा न करे और न सुने। शांति, धर्म, दया धैर्यको धारण करे, और मधुर वचन सबसे बोले।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपरोक्त लेखके अनुसार बर्ताव करनेवाला पुरुष सदा सुखी रहेगा और विरुद्ध बर्ताव करनेवाला दुखी होकर चिन्ता भय से युक्त होवेगा. पश्चात् रोगी हो जाना सम्भव है मनुष्य को चाहिये कि सदा सुखी रहने का उपाय करे, और वैसा ही बर्ताव करे ।

दो०-नारायण धरि ध्यानउर, नारायण करतार ।
दिनचर्या नामक लिख्यो यहद्वतीय अधिकार।

इति रसराज महोदधि भाषायाँ तृतीयभागे दिनचर्या वर्णनोनाम द्वितीयोधिकारः ॥ २ ॥

अथ रात्रिचर्यानाम तृतीयाधिकारः प्रारभ्यते ।

दोहा-धन्वंतरिपद ध्याय उर,नारायण मनलाय ।
निशिचर्याअधिकारअब,लिखतसुअवसरपाय ।

अथ रात्रिचर्या ।

रात्रि प्रारम्भ होते ही अर्थात् संध्या समय जो कोई भोजन करे तो रोग प्रगट होने का भय रहता है, मैथुन करनेसे गर्भ विकार युक्त होजाता है निद्रा लेने से दरिद्रता आ जाती है पढ़ने से आयुष्य की हानि होती है और मार्ग चलने से भय होता है ।

पहर रात्रि गयेके अन्तरमें कुछ थोड़ा भोजन करे, जो वस्तु कठिनता से पचने वाली हो, सो रात्रि में नहीं खावे, हलका भोजन रात्रि में करना चाहिये ।

ईर्ष्या, भय, क्रोध, लोभ, दीनता, रोग, द्वेष इन करके युक्त पुरुष का किया हुआ भोजन भली भांति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं पचता, इस कारण योग्य है, अति प्रसन्न चित्त होकर विकार रहित पुरुष सावधान मनसे भोजन करै, और शयन करते समय प्रसन्न चित्त हो परमात्मा का स्मरण करके शयनकी इच्छा करै, जिस मनुष्यका चित्त उदग्न होता है और शरीर व शयनस्थान अपवित्र होता है वह शयन, करते समय अशुभ स्वप्न देखता है और डर जाता है, इस कारण योग्य है कि शयनस्थान पवित्र रक्खैं. और शरीर को पवित्ररक्खै किसीप्रकारकी अपवित्रतानहींहोने पावे।

रात्रिमें जागना नहीं चाहिये परन्तु यदि कोई आवश्यक कार्य हो तो एक दो दिन जागने पर दिन को शयन कर लेवै।

रात्रिमें यदि पढ़ने की इच्छा हो तो सरसों अथवा अण्डी का तेल जलाकर उसके प्रकाश में पढै, मिट्टी के तेलके लंप के प्रकाश में कभी नहीं पढ़ना, इससे नेत्रों की ज्योति मन्द पड़ जाती है।

रात्रि को दही नहीं खाना चाहिये।

स्त्री पुरुष के लक्षण हम द्वितीय भाग में लिख चुके हैं इस कारण यहाँ बहुत संक्षेप रीति से लिखेंगे।

पद्मिनी स्त्री लक्षण।

कंज से कोमल अंगसबै गज गौनी सुवास रहै तन छाई। चंद सो आनन कुन्दन सो तन मैन कि भूमि महा सुखदाई। श्वेत दुकूल रुचे सुर पूजन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है कविराज सुबुद्धि सुहाई । रूप सियानी हिया हुलसै जग ऐसी तिया बहु पुण्य सों पाई ॥ १ ॥

चित्रिणी लक्षण–सवैया ।

ऊँचे उरोज विलोचन चंचल लोककी लीक नजात है जानी । कारे महा सटकारे हैं केश किनारे मयूर-नकी कछ बानी ॥ गध लिया मबुको मथि सुन्दरि मैन के मन्दिर मैन को पानी । मित्रको पत्र लिखै कविराज विचित्रिणी चित्रिणी ऐसी बखानी ॥२॥

शंखनी लक्षण – सबैया ।

सूखि रहो तन मांस न ह निकसी सी पर नस खीन खरी है । रोस बडो कुच ओंछन सों कछु पीपर के फल होड परी है ॥ सारी धरै रंग राती मनोज भुताती विगंधिनि भूरि भरी है । शंखनी सों कर तार असंखन शंखनो सो करतार करी है ॥३॥

हस्तनी लक्षण – सबैया ।

ईक्षण है लघु तीक्षण केश सुबेश नये कटु गन्ध सदाई । कान दये कर कान सुनें ध्वनि कानन शेय अनंग भुछाई ॥ मोटी महा कविराज कहा कहों चालु चलै तिय मन्द सुहाई । औनिहई सब छोडि दई करिनी की लई करि नीकी निकाई ॥ ४ ॥

सोलह बर्ष की स्त्री की बाला संज्ञा है, तदुपरान्त बत्तीस वर्ष तककी स्त्री की तरुणी संज्ञा है, तिस पीछे पचास वर्ष तक की स्त्री की प्रौढा संज्ञा है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पचास वर्ष के उपरान्त वृद्धा संज्ञा है, वृद्धा स्त्री से रमण कदापि न करे।

क्योंकि वृद्धापुरुष तरुण स्त्री के साथ रमण करने से तरुणत्व को प्राप्त होता है और तरुण पुरुष वृद्धा स्त्री से रमण करने पर वृद्धत्व को प्राप्त होता है।

अथ पुरुष लक्षण।

जिस प्रकार चार प्रकार की स्त्री हैं, उसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष भी यहाँ लिखते हैं। १ शशक, २ मृग, ३ वृषभ, ४ अश्व।

शशक पुरुष लक्षण।

शशक शरीर शुभ्र अति कोशल चित्तदया अति भारी। शान्त चित्त गम्भीर साधु शुभ लक्षण शुभ आचारी। सत्य बचन रुचि गुणी दयाकर प्रियवादी प्रण बारो। पूजारत मत सत उद्योगी काम स्वल्प अति भारो। परतिय त्यागी सदा जो सत्य बचन भासत रहत। शशक पुरुष संसार मद सत जीवन का सुख लहत।

मृग पुरुष लक्षण।

मृग के दृग मृग सम सुन्दर अति कोमल कनक शरीर। सम कद बदन हास्य मुख दीरघ दया चित्त मति धीर। नृत्यगान प्रिय रुचि अति जाकी मिठे बोला अति प्यारा। कृश्न खेल रत चित अति प्रेम नारी सुरत सत भारा। श्रद्धा वचन गुरू प्रण पाल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न मित्र सुनेहु दुलारा। मृग के लक्षण कहें प्रेम युत कोककला अधारा ॥ २ ॥

वृषभ पुरुष लक्षण।

पूग गंधतन जासु के यग पग होवे छोटे। लाज हीन तिय प्रिय पुरुष वृषभ सुतनु को मोट। तिय लख जाके चित्त में उमगत प्रेम अधीर। मतवारो कामी अधिक पर तिय रति गंभीर। पाप कर्म निर्भय करत स्वल्प नींद सों सुख लहत। वृषभ पुरुष संसार महँ मित्रनसों रत नहिं चहत ॥ ३ ॥

अश्व पुरुष लक्षण।

अश्व पुरुष आलसी महा निद्रा मतवारो। लाज हीन अति खोट क्रूर कर्मन पन हारो। श्याम वर्ण बुधि हीन धर्म और निपट कुकर्मी। परतिय लंपट छली महाकामी हठ धर्मी। तकि परतिय निशिदिन रमत व्याकुल सो अतिही रहत। क्रूर स्वभाव उतावला अश्वन जस भूपर लहत ॥ ४ ॥

वात प्रकृति स्त्री लक्षण।

वात प्रकृति वाली नारीका नहिं कोमल त्यहिअंग
रूखे स्वल्पकेश चंचल चित्त अति प्रलाप बहु रंग।
कारी आंख साख नहिं जाकी भोजन करत अघाई।
श्याम धूसरा रंग गातकर चित अधिकाई ॥
स्वप्न गगनचर बातें रूखी करै प्रीति नहीं धारै।
बात प्रकृति स्त्री को लक्षण ऐसे कोक उचारे। १।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पित्त प्रकृति स्त्री लक्षण।

गोरा रंग अंग उजलासा लोचन चंचल स्यानी।
क्षण में होवे प्रसन्न क्षणक में रूठे रहे दिवानी॥
पानी पयोधर कुचकठिनाई रतिसों हित अतिजाको।
कृशतन कछुक अस्थूल द्रविणतास्वप्नसंगरतताको।
प्रीतिरीति मल रखत सबनसों क्रोध स्वभाव सुभारी।
पित्त प्रकृति कामिनी इहिभांति कामकला आगारी।

कफ प्रकृत्ति स्त्री लक्षण।

कोमल गातदांत चिकने अति, नखशिखलोचनश्वेत।
माननीय मदमत्त करे, अनुराग सुदृढ़कर हेत॥
श्यामरंग मृदुअंग मनोहर लवण सुछवि अतिभारी।
प्रीति रीति अनुराग राग चितस्वल्प सुरत मतवारी।
अति हित चितमें चाव जासुके केलिकाम चतुराई।
प्रेम प्रकृति कफ कामिनी प्यारी प्रीतिकरत सुखदाई॥

पद्मिनी चित्रिणी का भेद।

दो०—बात करत में नहि हँसे, नहिं परसों कछुप्रीति॥
पद्मिनिकी पहिचान यह, कही कोककी रीति।४।
करे प्रीति पर पुरुषसों, बात करत मुसक्याय।
चतुर चित्रिणी नारिजग, कोककह्यो समझाय५
पद्मिनी चित्रणी नारिको इतनोई अंतरमान।
चित्रणी हँसि बातें करे, पद्मिनी हँसे न जान।६।

शंखिनी हस्तिनी का भेद।

अंग स्थूल सु दुहुन के, अन्तर एतो जान।
शंखिनी की पतरी कमर, हस्तिनी मोटी जान ७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बात करत में हँसिपरत, शंखिनी कहिये जांय ।
हँसि हँसि के बातें करे, हस्तिनी सोय कहाय ॥८॥

वात प्रकृति पुरुष लक्षण ।

दो०—कृशतन मोटे बाल अति, रूखा होय शरीर ।
चंचल वाचाली घना, बात मनुज मत धीर ।९।

पित्त प्रकृति पुरुष लक्षण ।

दो०—तरुणाई में श्वेत हो, केश बुद्धि गम्भीर ।
क्रोधी प्रस्वेदी, महा, पित्त मनुज अतिवीर ॥१०॥

अफ प्रकृति पुरुष लक्षण ।

दो०—चिक्कन केश स्थूल तनु, बलयुत बुद्धि गंभीर ।
कफज मनुज लक्षण यही स्वप्ने लखे सुनीर ॥११॥

स्त्री पुरुष का जोड़ा ।

एक स्वभाव और एकही प्रकार के लक्षण वाले स्त्री-पुरुषको जोड़ा कहते हैं जिनका रूप रंग और वय (अवस्था) में कुछ अन्तर भी होता है परन्तु गुण और स्वभाव एकही हो तो जोड़ा मिल जाता है साथ ही इसके यह भी ध्यान रहे कि स्त्री से पुरुष की अवस्था अधिक होवे क्योंकि बारह वर्ष की नारी षोडश वर्ष वाले पुरुष के समान होती है ।

पुरुष यौवन काल ।

पुरुषों का योवन पुरुषार्थ वीर्य है वीर्य को पुष्ट व स्थिर रखना, और संचित वीर्य को उचित काल में व्यय करना ही परम पुरुषार्थ का हेतु है ।

जैसे स्त्रियाँ अकाल ऋतुकी पीड़ाओं की यन्त्रणा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भोगती हैं, उसी प्रकार पुरुष भी अकाल वीर्य नष्ट कर के सदा निर्बल आलसी नपुंसक और सन्तानहीन तथा संसार सुखसे शून्य रहते हैं, इससे वीर्य की सदा रक्षा करना पुरुष मात्रका मुख्य काम है।

पर स्त्री गमन निषेध।

'आयुः क्षतिम्बिकलता त्युपहास्यता च निन्दार्थ हानि लघुता डगतिः परत्र ॥ स्यादेव यद्यपि रतेन परांगनायाः प्राहुस्तथा प्यनव मित्यमि कारणेन ॥ १ ॥

पर स्त्री गमनसे आयु क्षीण होती है, और विकलता संसार में हंसी, निंदा, धनहानि, तुच्छता तथा पीछे दुर्गति होती है, इस कारण पराई स्त्री के साथ रमण नहीं करना ॥ १ ॥

दो०—काम जात निज देहसे, दाम गाँठ से जात।
उत्तम कुलके धर्म सब, सो तुरन्त नश जात ॥ २ ॥
यासों पर रमणी दुखद, भूलि करौ नहिं संग।
नारायन निज बुद्धि सों, समुझि करौ सत्संग ॥ ३ ॥

वीर्य रक्षा।

इस विषयमें हम द्वितीय भागमें लिख चुके हैं परंतु यहाँ एक दृष्टान्त देते हैं। एक वैद्यराजने ४० वर्षकी आयुतक विवाह नही किया, बहुत कुछ मित्रों द्वारा कहा गया तब बिवाह कर केवल एक बार स्त्री समागम किया जिससे गर्भ रहकर एक पुत्र हुआ वह पुत्र जब कुछ समझदार हुआ तब उसकी माता ने उसको उसके पास यह कह भेजा कि अपने पिता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को प्रसन्न जान यह कहना कि पिताजी हम चाहते हैं कि हमारा एक भाई और होवे यह सुनकर बालक पिताके पास गया पिताने पुत्रको देख बहुत आदर किया और गोद में बिठा लिया पिताको प्रसन्न जान बालकने कहा कि पिताजी हम चाहते हैं कि हमारे एक भाई और हो। यहसुन पिताने कहा पुत्र! जब तू उत्पन्न हुआ तब हमारे शरीर का आधा बल जाता रहा, अब आधाबल शेष रह गयाहै सो हम अपना आधा बल नष्ट करना नहीं चाहते। वैद्यराज को इस बात पर ध्यान करना चाहिये कि वीर्य की रक्षाको उनने प्रधान माना है और सूचित किया है कि वीर्यही मनुष्यका बल और जीवन है अधिक विषयी पुरुषों की यह गति है कि जैसे श्वान कोई सूखा हाड़ पाकर चचोड़ता है और कट कटकर अपने ही मुखमें से निकले हुए रुधिर को चूसकर प्रसन्न होता है, यह नहीं जानता कि इस हाड़ में क्या रक्खा है, जो रुधिर मैं चूस रहा हूँ वह मुख में से प्रगट हुआ है।

अंडनिर्माणक यंत्र में रक्त का वीर्य झट बनता है कामेच्छाकी प्रबलता पुरुषांगकी दृढता और स्थिरता यह वीर्यकी शक्तिका कार्य है शरीरमें बल, रक्त, वर्ण ओज, तेज तेज, चंचलता और स्मरण शक्ति कातीव्र होना यह वीर्य का गुण है अतः वीर्य रक्षा करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोहा- बैठे जोनी डार पर, काट सोई डार।
जियन मरनको नहिं डरत यहगति हैसंसार।

यह दोहा उन्हीं लोगों पर घटित होता है कि जो लोग अधिक विषयी हैं, कि जिनको अपने जीवन मरण का विचार नहीं है।

मैथुनकाल।

स्त्री सम्भोग करना केवल संतान उत्पत्ति के निमित्त उचित है, वृथा सम्भोग करना उचित नहीं संभोग से मनुष्यका बल तुरंत घट जाता है, वीर्य नष्ट होता है, वीर्य अधिक होने से पुत्र और रज अधिक होनेसे कन्या होती है अतः वीर्यकी रक्षा करै ऋषिमुनियोंका मतहै संतानोत्पति निमित्तमैथुनकरे जब स्त्री रजस्वलाहो तो पहले चार दिन त्याग दे पीछे यदि कन्या की इच्छा हो तो रजस्वला दिन से विषम दिन अर्थात पाँचवें सातवें नवें अथवा पंद्रहवें दिन मैथुन करे, यदि बेटा की इच्छा हो तो समदिन अर्थात छठे, आठवें, दसवें, बारहवें, चौदहवें, अथवा सोलहवें दिनसे बारदिन प्रथम त्यागदे यदि चारदिन में से किसी दिनभी संभोग करोगे तो रोग प्रगट हो जाना सम्भव है क्योंकि चार दिन तक विकार वाला रुधिर निकलताहै जो अग्निके समान प्रभाव रखताहै रजस्वला के दिन से सोलह दिन तक रज रहता है पीछे चौदह दिन में मैथुन करना वृथा है, उन चौदह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में रज न रहने के कारण गर्भ नहीं रहता।

सहवास दिन फल भेद ।

रजस्नान के पहले दिन सहवाससे संतान नहीं होती दूसरे दिन होती है तो होतेही मरजाती है तीसरे दिन सहवास से मृत सन्तान होती है चौथे दिन दरिद्री, पाँचवें दिन सौभाग्यवती कन्या छटे दिन सुन्दर बेटा सतवें दिन निसंतान कन्या आठवें दिन धनवान बेटा, नवें दिन भाग्यवतीकन्या दशवें दिन उत्तम बेटा, ग्यारहवें दिन अधर्मिणी कन्या बारहवें दिन पुरुषार्थी बेटा, तेरहवें दिन महापापिनी कन्या चौदहवें दिन सुशील और धर्मात्मा बेटा, पद्रहवें दिन पतिब्रता और साध्वी कन्या सोलहवें दिन गम्भीर बुद्धिवाला बेटा उत्पन्न होता है। शेष चौदह दिन सहवास करने से कुछ नहीं होता है। क्योंकि सोलह दिन उपरांत गर्भाशय का मुख बन्द हो जाता है। जो मनुष्य महाकामी हैं और मैथुन न करने से चित्त डामाडोल रहे तथा रोग प्रकट होने का भय हो उनके लिये सुश्रत में लिखा है कि–

त्रिभिस्त्रिभिरहोरात्रैः समयात्ममदांनरः ।
सर्वेष्वृतुषु धर्मेतु पञ्चात्पञ्चाद्वजद्बुधः ॥

सब ऋतुओं में तीन तीन दिन के अन्तर से मैथुन करना योग्य है, और गरमी की ऋतु में पन्द्रह पन्द्रह दिन के अन्तर से स्त्रीरमण करे॥ १॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सद्योबलहरा नारी सद्योबलकरं पयः ।
स्त्रियंगच्छेत्पयः पीत्वा तांत्यक्त्वा पुनः क्षपेत् ॥ १ ॥

स्त्री शीघ्र पुरुषका बल हरलेती है, और दूध शीघ्र बल करता है इससे स्त्री के समीप जाकर सम्भोग के समय और सम्भोग करने के उपरान्त दुग्धपान करे दूध गाय का अधौटा हो उसमें मिश्री अथवा सफेद उत्तम शक्कर पड़ी हो अथवा भैंस का दूध उत्तम शक्कर वा कन्द युक्त हो, स्त्री प्रसंगके पूर्व और पीछे दूध अवश्य पीवे ॥ २ ॥

परन्तु जिन २ रोगोंमें स्त्री गमन निषेध है उन रोगों से युक्त होने पर स्त्री गमन न करे जैसे क्षयी प्रमेह उपदंश (गरमी) मूत्रकृच्छ (सुजाक) बवासीर ज्वर क्षुभित (शोक आदिसे युक्त) क्षधित (भूखा) तृषित (प्यासा) चिन्तित पुरुष स्त्रीगमन न करे इसी प्रकार यदि स्त्री भी रोगिणी, गर्भवती, रजस्वला हो तो चार दिन और ग्यारहवें तेरहवें दिन तथा यदि गुरुजन बहुत समीप हों अर्थात जिस कोठरी अथवा जिस तिदरी में कोई अपने से गुरुजन (माता पिता बड़ा भाई गुरु गुरूपत्नी आदि) हों तो स्त्री संभोग नहीं करना, इसी से एकान्त में स्त्री सेवन करना कहा है ।

रति प्रदेश ।

सहवास में रति प्रधान है वह तीन प्रकार का है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१ उच्च रति २ नीच रति ३ सम रति । उच्च रति में पुरुष बलवान स्त्री निर्बल रहती है परस्पर प्रेम रहता है । ऐसी दशा में पुत्र संतान होती है ।

नीचरति में पुरुष निर्बल और स्त्री सबल होती है परस्पर बैर रहता है संतान कन्या उत्पन्न होती है ।

सम रति में दोनों समान बल होते हैं प्रीति में हानि रहती है और संतान नपुंसक होती है ।

काम स्थान

गर्भाधान के समय स्त्री पुरुष जितने ही अधिक प्रसन्न होंगे उतनी ही उत्तम और प्रसन्नमुख संतान होती है तथा यदि स्त्री में उत्तम संतान प्राप्ति की इच्छा हो तो प्रथम अङ्गों में कामदेव को चैतन्य करे कामदेव के चैतन्य होने के लक्षण यह हैं सबसे अधिक काम चैतन्य करने का विधान चुम्बन किया है चुम्बन करते ही स्त्री के नेत्र लाल होजाते हैं श्वास गरम और बहुत बेगके साथ चलनेलगता है सिसकी आने लगती हैं उसी समय रति दान देवे कोकशास्त्र का मत है कि वनिता के विशेष अङ्गों पर विशेष तिथियों में कामदेव का निबास रहता है, उसी अंग के गहन, स्पर्श मर्दनादि विधि से कामदेव चैतन्य होता है, उन अंगों में से ओष्ट, मस्तक, कपोल, नेत्र कंठ, ठोढ़ी, कुचभाल ये स्थान चुम्बन के हैं ।

और मर्दन करने [मलने] दबाने व सहलाने के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीठ बगल कंठ, जंघा कटि नाभि उदर ये स्थान हैं कृष्णपक्ष में कामदेव ऊपर के अंगों से नीचेको उतरता है और शुक्लपक्ष में नीचेसे ऊपरको चढ़ता है किसी किसीका मत है कि महीना प्रारम्भ होते ही कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से शुक्ल पूर्णिमा तक पन्द्रह पन्द्रह दिन मानना किसीका मतहै कि शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से कृष्ण पक्षकी अमावस्या तकपंद्रह पन्द्रह दिन मिला कर तीस दिन जाने परन्तु जिस दिन स्त्री रजस्वला हो उस दिन को कृष्णप्रतिपदा मानकर पन्द्रह पन्द्रहदिन मिलाकर तीसदिन माने।

कृष्ण प्रतिपदा और शुक्ल पूर्णिमा को सिर और मस्तकपर कामका वास रहता है कृष्ण द्वितीया और शुक्ल चतुर्दशी को नेत्र पर कामका वास जानना।

कृष्णतृतीया शुक्लत्रयोदशीको ओष्टकेनीचे कृष्ण चतुर्दशी शुक्ला द्वादशी को कपोल पर कृष्ण पंचमी शुक्ल एकादशीको कंठ पर। कृष्ण षष्टी शुक्लदशमी बगलमें। बदी सप्तमी शुक्ल नवमीको कुचमेंकाम का वास जानना। बदी औह शुक्ल अष्टमी को छाती पर काम का बास जानना। बदी नवमी शुक्ल सप्तमी को नाभि में काम का बास जानना। बदी दशमी शुक्ल षष्ठी को कटि में काम का बास जानना। बदी एकादशी सुदी पन्चमी को गुप्त अंग में काम का बास

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जानना । बदी द्वादशी सुदी चतुर्थी को जंघा में काम का बास जाने। बदी त्रयोदशी शुक्ल तृतीयाको पिंडुलीमें कामका बास जानना । कृष्ण चतुर्दशी सुदी द्वितीया को चरण तल में कृष्ण अमावस्या सुदी प्रातपदा को बाम चरणांगुली तल में कामका बास जाने काम प्रज्वलित करनेके निमित्त उक्त दिनों में कामका निवास वर्णन किया है इन अगोंको क्रम से मलना सहलना दबाना चुटकी लेना हाथ फेरना गुदगुदाना यह क्रिया क्रमसे सबही जानलेते हैं इस कारण यहां संक्षेप से लिखा है यहाँ काम विषय में कुछ कहा गया सो निजनिज स्त्री में परस्पर प्रसन्नता निमित्त कहा है सो रात्रि के चौथे प्रहर में सहवास करना उचित है और करवट लेटी स्त्री से सहवास नही करना उससे रोग होजाता है चितलेटी स्त्री से सहवास करना कामका बास इस प्रकार भी रहता है कि शीतलकाल में रात्रि समय ग्रीष्म में दिनके मध्यान्ह समय बसंत में रात दिन वर्षा मेंवर्षा समय शरत्कालमें सरोंवर समीप निवसितस्त्री पुरुष के अंगस्थान में काम बास करता है

गर्भ परीक्षा ।

जब गर्भ रह जाता है तब चतुर स्त्री जान लेती है कि वीर्य ठहर गया यदि वीर्य ठहर कर स्त्री की रजमें मेलजाता है तब वही रजवीर्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बुद्बुद् रूपसे मिलकर गर्भ होजाताहै स्त्रीपुरुषके एक साथ स्खलित होने पर स्त्री को उचित है कुछ समय तक चित लेटी रहे जिससे वीर्य ठहर जाय तुरन्त उठ खड़े होनेसे वीर्य गिर जाताहै, जब गर्भ रहजाता है तब कुछपीड़ा नाभिके नीचे अवश्य होती है, और दिन २ स्त्री बलहीन, होने लगती है स्त्रीका चित रति से फिरजाता है धरनीका मुखबंदहो जाताहै, कभी ऐसा भी होता है कि रतिकी बहुतइच्छा प्रकट होजाती है मुखका रंग बदल जाता है नाड़ीकी गति तीव्र होजाती है शरीरमें आलस्य बहुत आता है कभी शिर में पीड़ा जी मिचलना बिना भोजन किये तृप्ति रहना चटपटी और सोंधी वस्तु परचित चलताहै औरदूसरे महिने रजस्वला नहीं होती तभी निश्चय हो जाता है कि गर्भ रहगया।

गर्भ परीक्षा।

यदि गर्भहोने में किसी प्रकारका संदेहहोतो शहत पाँच तोले वर्षाका जल दश तोला एक में मिला पिलाने से शयन करने के समय उदरमें पीड़ा होतो जाने कि गर्भ अवश्य है। आगे गर्भ में कन्या बेटा परीक्षा, गर्भ रक्षा, गर्भिणीधर्म, धात्रीशिक्षा आदि कुछ विषय इस ग्रंथ के द्वितीय भाग में लिख चुके हैं वहाँ देख लेना।

इच्छानुसार संतान पैदा करने की विधि।

जो गोरे रंगका, पुष्ट पराक्रमी तथा सुन्दर बेटा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की कामना हो तो रजस्नान के दिन से स्त्री को जौका मन्थ शहत डाल सात दिन तक सफेद गायके दूधके साथ सेवन करावै तथा सन्ध्या समय अति गोरा बैल अथवा सफेद घोड़े का दर्शन करावे यदि धर्मात्मा बेटा उत्पन्न करने की इच्छा हो तो हरिश्चन्द्र आदि के चरित्र सुनावे तो धर्मात्मा और आज्ञाकारी बेटा उत्पन्न होगा।

यदि वीर बेटाकी इच्छा हो तो महाभारत आदि वीर रसकी कथा सुनावे।

यदि रसिक, और सर्वकला सम्पन्न बेटा की इच्छा हो तो कृष्णचरित्र सुनावे।

यदि गानविद्यामें चतुर बेटा की इच्छा होतो गान सुनावे तात्पर्य यह कि जिस प्रकार की संतान चाहे वैसी ही वार्ता गर्भिणीको सुनाया करे। दृष्टाँत यह कि अभिमन्युने सुभद्राके गर्भ में चक्रव्यूह की लड़ाई को सुना था, महाभारत में यह प्रमाण लिखा है।

बिना समागम के सन्तानहोना।

स्त्रीपुरुष केसमागम बिनाभी संतानपैदा होतीहै सो इस प्रकार कि यदि ऋतुकालमें पुरुषका वीर्य किसी प्रकारसे स्त्रीके गर्भाशयमें पहुँचाया जाय और ठहर जाय तो रजवीर्य के योगसे गर्भ रहसकता है।

तथा ऋतुकाल में कामवती स्त्रीहित पुरुष का ध्यान कर मैथुन होती है अथवा दो कामवती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्त्रियाँ ऋतु काल में संसर्ग करती हैं तब भी गर्भ होजाना संभव है परंतु ऐसे गर्भकी स्थिति नहीं होती ये चरकमें लिखा है।

गर्भ बढ़ने का क्रम—चौपाई।

नारि पुरुष मिलि मैथुन करहीं। शोणित शुक्र परस्पर रहहीं॥ शोणित शुक्र मिलहिं जब दोई। खरल एक निशिदिन भरि होई॥ तंब दिवसमें वर्तुल जानो दशदिनहै जम्बू सम मानो॥ पल पिंडी सम नख दिन बीते। शिव उपजे इक मास बितीते। पग कर मास दूसरे होई। अंगुलि नखरेखादिक जोई॥ तिसरे रोम अस्थित्वच जानो। छिद्र लिंग आदिक सब मानो। चोथे मास धातु तनु छामै। क्षुध तृष पंचममास सतमैं जो कछु जननी करे अहारा। त्यहि अहारमें जो कछु सारा। सोई नाभिनालह्वै धावै। शिशुकेरोम २ मेंछावै॥ भूखप्यासबालककोहरही। अग २ सब पोषणकरही॥ छटेमासपनिदहिने कुच्छा। तडफैजालफसौबलतुच्छा जोकछु जननीकरैअहारा। कटुकषायमृदुचटपटछारा सो लागै सुकुमारी शरीर। मूर्च्छाशोकदाह तनुपीरा गर्भनरकमेंनिसदिनबासा। बिष्टा मूत्रकुगंधनिवासा पडपक्षी लघु पिंजर जैसे। तडपै गर्भ फंसो शिशुतैसे कृमिकाटैतनुअतिखुजआई। विवशनबासकतसहराई

दो०—मास सातबें दैववश उपजे शिशु के ज्ञान।
चीन्हिलेहि शत जन्मके, निज कृत कर्म प्रधान।१।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोचै रोवै यह कहै, कब निकसों वहिरारि ॥
अब न करहुँ संसार संग सुमिरों नाम मुरारि ॥२॥
दशवें मास प्रसूत की, पवन छुटावत नाल ॥
शिर लचाय बाहर करै, मिटै ज्ञान तत्काल ॥३॥

दम्पति प्रीति ।

स्त्री पुरुष में परस्पर प्रीति का होना परम आवश्यक है क्यों कि विना परस्पर प्रीति के पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होता । प्रीति चार प्रकार की, १ नैसर्गिक २ विषयजा, ३ समा, ४ अभ्यासिकी ।

विवाह होते ही जो दृढ़प्रीति स्त्रीपुरुष में होजाता है उसे नसर्गिकी प्रीति कहते हैं और माला, चन्दन भोज्य पदार्थ देनेलेनेसे होती है उसे विषयजा प्रीति कहते हैं तथा जो प्रीति योग्य गुणों के मेल से होती है, उसको समा प्रीति कहते हैं, और जो देवपूजन, गाना बजाना, मैथुन क्रिया आदि के कर्म योग से जो प्रीति होती है उसको अभ्यासिकी प्रीति कहते हैं ।

पद्मिनी स्त्री को सुन्दर वस्त्र, आभूषण, मधुर बचन उत्तम धर्म, उपाख्यान, ज्ञान और सुगन्धित पदार्थ देकर प्रसन्न करे, पद्मिनी स्त्री के संमुख पराई स्त्री नी निन्दा न करे ।

चित्रिणी स्त्रीको प्रेम भरे प्रीतिपूर्वक बचन, सुन्दर मन भवन इतिहास सुनावे, नवीन वस्त्र आभूषण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवे, सुगंधित पदार्थ प्रदान करे, तो चित्रिणी स्त्री परम प्रसन्न होती है, ये दोनों प्रकार की स्त्रियां आदर सहित रखने से ही खुशी रहती हैं।

शंखिनी स्त्री को उत्तम २ गहने और वस्त्र तथा नवीन २ वस्तु लाकर देवे तो खुशी हो हस्तिनी को अच्छे भोजन दे रसीली बातें सुनावे तो खुशी होती है केवल बातों और विनय भावसे खुशी नहीं होती है। भावार्थ--यह जिस पुरुष को भाग्ययश जैसी[जिस लक्षण वाली) स्त्री प्राप्त हो जाय उसको यथा शक्त्यनुसार उक्तरीति से प्रसन्न कर प्रीति रक्खे।

षोडशशृंगार।

आदौ मज्जन चीर चारु तिलकं, नेत्राँजटं कुंडलं।
नासा मौक्तिक हार केश कुसुमं सिंदूर वस्त्रं परम्॥
देहे चन्दन लेप कंचुकमणी, क्षुद्रावली घंटिका।
ताम्बूलं, कर ककणं चतुरता, शृंगारकः षोडशः॥ १॥

मज्जन (उवटन स्नान) चीरधारण, सुन्दर तिलक धारण, नेत्रोंमें अंजन लगाना, कानोंमें कुंडलधारण करना, नासिकामें मोती पहिरना हार पहिनना, केश सम्हारना, फूलोंके आभूषण रचकर पहिनना, सिंदूर लगाना वस्त्र धारण करना, देह में चंदन लगाना, ताम्बूल लगाकर खाना, हाथों में कंकण पहिरना, कंचुकी, मणि, क्षुद्रावली, घंटका धारण करना, चतुरता, ये सोलह शृंगार हैं॥ १॥

द्वादश अभूषण।

शीलंलज्जा च माधुर्यं दृढ़ता आर्जवस्तथा॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पवित्रताच सन्तोषं सुहृदो विनयक्षमा ॥ २ ॥
शुचिता गुरु सुश्रूषा भूषणद्वादशा :स्मृताः ॥ ३ ॥

१ शील, २ लज्जा, ३ मधुरभाषण, ४ दृढता, ५ सरलस्वभाव, ६पवित्रता, ७संतोष, ८सुहृद्भाव, ९ विनय,१० क्षमा, ११पवित्रता,१२बड़ोंकी सेवा, येही १२ आभूषण कहे हैं ॥२॥ ३ ॥

परन्तु रसिक जन प्रायः १ नूपर, २ किंकणी, ३ हार, ४ चूड़ी, ५ मुंदरी, ६ कंकण, ७ कंठश्री ८ बाजूबंद, ९ बेसर, १० बिरियां, ११ टीका,१२ शीशफूल इनको भी बारह आभूषण कहते हैं।

प्रसवकाल ।

गर्भाधान दिनसे नवमासके अन्त और दशममास के आरंभको प्रसव काल कहते हैं इससे आगे पीछे विकार युक्त जन्म जानना। स्त्रियोंके दो स्थन एवं गर्भाशय अधिक जानना गर्भ रहने पर जो मासि रुधिर बंद होजाताहै वही रुधिर दुग्ध बनने लगता

बालक होने में दिन संख्या ।

गर्भाधान दिन से दो सौ अठहत्तर दिन में अर्थात् नव मास आठ दिन पर बालक अथवा बालिका उत्पन्न हो तो जानना कि पूरे दिनों पर जन्महुआहै कातिक कुतिया माह बिलाई चैतचिड़ी बैशाख लुगा

पशु पक्षियोंमें संतान प्रकट करनेका समय नियतहै परन्तु स्त्री जाति में अब नियम नहीं रहा स्त्रियां महीनेके महीने गर्भ धारणके योग्य हुआ करतीहै।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आगे गर्भोत्पत्ति नियम आदि विषय द्वितीय भाग में लिख चुके हैं यदि स्त्री पुरुषोंमेंकिसीप्रकारकाविकारहो उसकी औषधि हम चौथे भागमें लिखेंगे इस कारण इस विषय को यहां समाप्त करते है।

प्रातःकाल में जलपान।

सूर्य उदयसे पहले जो मनुष्य उठकर आठचुल्लू जल पी लेता है तो रोग नहीं होता और वृद्धावस्थासे वह पुरुष रहित होताहै रात्रिके चौथे प्रहरमें जलपीवे पचपन घटी अर्थात् पाँच घड़ी रात शेष रहने पर उषःकाल होताहै, उस समय जो कोई जल पानकरता है तोबवासीर, संग्रहणी, ज्वर, सूजन, उदर, रोग, कोठे के रोग, शिररोग, कटिपीड़ा, नेत्ररोग, और बात पित्त, क्षतज, तथा कफकृत विकार नाश होजातेहै, परन्तु उस समय पर प्रतिदिन जलपान का अभ्यास करे।

नासिका द्वारा जलपान।

विगत घननिशीथे प्रायरुत्थाय नित्यं पिवति खलु
नरोयानासिका रन्ध्रवारि। सभवति मतिपूर्णोश्चक्षु
षा तार्क्ष्यतुल्यो बलिपलितविहीनः सर्वरोगैर्विमुक्तः

जिस दिन बादल और अंधकार अर्थात् आधी रात की सी अंधेरी न हो, प्रातःकाल हो गया हो ऐसे समय प्रतिदिन उठकर जो मनुष्य नासिका द्वारा जलपान करता है वह बुद्धिवाननेत्रोंकीज्योति से पूर्ण गरुड़ समान शीघ्र चलने वाला बली पलित रहित और सर्व रोग हीन होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीन चुल्लू जल नासिका द्वारा पीना उचित है इससे व्यंग, बली पलित पीनस, स्वरभंग, खाँसी, सूजन, आदि रोग नाश होते हैं परन्तु जिसने तेल घृतादि पान किया हो जिसके किसी अंगमें घावहो अफरा तथा उदर रोग, हिचकी कफवात विकार इनमेंसे कोई भी हो तो नासिका द्वारा जल न पीवे यह ऋतुचर्या दिनचर्या रात्रिचर्या मनुष्योंके स्वास्थ्य के निमित्त लिखे हैं इन्हीं के अनुसार बर्ताव करने से मनुष्य पूर्ण आयु पर्यन्त जीवन धारण कर सकता है, और किसी प्रकार का रोग उसके शरीर में नहीं हो सकता।

दो०—नारायण धरि ध्यानउर, नारायणकरतार।
निशिचर्या नामक लिख्यो, यह तृतीय अधिकार।१।

इति श्रीरसराजमहोदधि भाषायां तृतीय भागे रात्रिचर्यो वर्णनोनाम तृतीयऽधिकारः।

अथ पथ्यापथ्य वर्णना नाम चतुर्थो धिकारःप्रारभ्यते।

दो०—धन्वन्तरि पदध्यायउर, नारायण मनलाय।
पथ्यापथ्यऽधिकार अब, लिखित सुअवसरपाय।१।

" पथ्ये सति गदार्तस्य किमोषधिनिषेवणैः।
पथ्येऽसतिगदार्तस्य किमोषधिनिषेवणै॥ २॥

जो रोग पीड़ित मनुष्य पथ्य करता है उसको औषध से क्या! रोग तो बिना औषध के केवल पथ्य ही से नष्ट हो जाता है और कुपथ्य करने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाले को औषधि से क्या ? क्योंकि कुपथ्य करने से प्रतिदिन रोग बलवान् होता जाता है सैंकड़ों औषधि देने से भी नष्ट नहीं होता ॥ २ ॥

तथाच।

'विनाऽपिभेषजैर्व्याधिः पथ्यादेव निवर्तते।
नतु पथ्य विहीनस्य भेषजानां शतैरपि ॥ ३ ॥

सब रोग बिना औषधि के भी केवल पथ्य से ही दूर हो जाते हैं परन्तु कुपथ्य करने वाले रोगी के रोग सैंकड़ों औषधि करने से भी दूर नहीं होते। नियम पूर्वक आहार करने और वर्तमान रोगमें जो वस्तु हित कही है उसको सेवन करने और अहित वस्तु परित्याग करने को पथ्य कहते हैं इससे विरुद्ध बर्ताव करनेको अपथ्य कहते हैं, मिथ्याहार विहार करनेवाला मनुष्य बलहीनहोकर रोगग्रस्त होताहै यथा दो—पथ्यसहित जग नरनको, नहि औष ध सो काम। बिना औषध वृथा, समुझि लेहु बुधिधाम ॥ ४ ॥ स कारण जैसे निदान निघंट चिकित्सा का जानना परम आवश्यक है उसी प्रकार पथ्यापथ्यका जानना भी परम आवश्यक है यह विचार कर यहाँ संक्षेप से पथ्यापथ्य वर्णन किया गया है।

वसन्तऋतु में पथ्य।

बसंत आदि षट ऋतुओंमें पथ्य अपथ्य ऋतुचर्या में लिख चुके है यहाँभी प्रसंग वश लिखते हैं वमन, अंजन, लंघन, उबटन, कुल्ला करना, हाथीघोड़ों की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सवारीमंजन, व्यायाम (दंड कसरत) परिश्रम, इनका मों से कफदूर होनेपर स्नान चन्दनकेशर अगरकपूर इनका लेपन, जौ गेहूँ पुरानेचावल, पुराना घी, खश शहत, अदरख इनकाजल, गरमजल, शहद, कुटकी, कडुये चरपरे, कषेले रस, अजवायन, अदरख, जीरा सोंठ, मूलाईका साग, पेठा, हींग, मेंथी, पकाखीरा, तोंबी डुद्धा, बथुआ कचनारकीफली चौलाई परवल, जिमी कंद, मरसेकासाग, करेला, तुरई पान, अंजन, खील, चीता, कुछ गरम जलसे स्नान बागमें बिहार करना सोंठ मिर्च पीपर, पीपलामूल, असगंध, त्रिफला, हल्दी, अडूसा, भाँग ये सब पदार्थ बसंत ऋतु में पथ्य हैं ॥

बसन्त ऋतु में अपथ्य ।

अतिखट्टा, मीठा, नमकीन, शीतलस्निग्ध, चिकन पदार्थ, भारी भोजन दिनमें, शयन, यह बसंतऋ में अपथ्य हैं ॥

ग्रीष्म ऋतु में पथ्य ।

सफेद चांवल का भात, सफेद शक्कर मूंग पुराने जौ गेहूँ, शिखरन, सत्तू, शर्वत, चद्रमा की चाँदनी, औटा हुआ दूध, मक्खन, घी, मिश्री और मिश्री मिला दूध, खटाई, केला, कटहर, आम दाख, हलके, पतले शीतल और चिकने पदार्थ, पाढर के फूलों से सुगंधित हलका, निर्मल शीतल जल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चंदनादि सुगंधित वस्तुओं से सिंचे हुए स्थान में नदी तट में निवास, लाल नीला और सफेद कमल पत्र की शय्या, मध्यान्हसमय शयन, मेघोंसे आच्छादितवायुब्बारेदार स्थानमें स्थित, जलक्रीड़ा, शीतल चाँदनी, उपवनमें निवास मलमल आदि वारीक वस्त्र धारण कमलकंदके कंकण, कपूरयुक्त चंदनका लेप रत्नादि आभूषणोंका धारण, जलसे सिक्त पंखाकी पवन, नदी तटका जल, मोतियोंका हार, चमेली के फूल, पंद्रह दिन पीछे मैथुन, स्नान, सारसादि पक्षियों के शब्द ये ग्रीष्म ऋतु में पथ्य हैं।

ग्रीष्म ऋतु में अपथ्य।

धूप, दंडकसरत, कडुए, खट्टे, नमकीन पदार्थ स्त्री प्रसंग, गर्म रूक्ष पदार्थ ग्रीष्मऋतु में अपथ्य हैं।

वर्षाऋतु में पथ्य।

वमन विरेचन से शरीर शुद्धि, आस्थापन वस्ति पुराने गेहूँ चाँवल, पुराना शहत, पतले द्रव्य, काला लवण मिला मठा, सरोवर का तथा औटाकर शीतल किया हुआ जल, कुवाँका तुरंत भरा हुआ जल सुगन्धित वस्तुओं से धूपित वारीक वस्त्र खुशबूदार फूलों की माला हवादार महल, छतके ऊपर शयन, ये सब पदार्थ वर्षाऋतु में पथ्य है।

वर्षाऋतु में अपथ्य।

सूर्यकी गरमी, परिश्रम, सत्तूका जल, कुहर, दिनमें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शयन, नदीका जल, शीतल पवन, मैथुन, शीतल रूखे व तीक्ष्ण पदार्थ, ये वर्षाऋतु में अपथ्य हैं।

शरद ऋतु में पथ्य।

नदीका जल, घी, फस्त जुलाब, चाँवल, गेहूँ, मिश्री, मूंग, जौ, खाँड व शहत, दूध, आंवला, परवल शक्कर, हलके अन्न, कषेले रूखे व मीठेरस, ईख, पित्तनाशक रस, कपूर, सरोवर का जल, चंदन, चाँदनी शीतल जल, महीन वस्त्र, खुशबूदार फूलों की मला मोतियों का हार, शीतविधि, गीत श्रवण ये शरद ऋतु में पथ्य हैं।

शरद ऋतु में अपथ्य।

दही, तेल धूप, अतिभोजन, पूर्वकी पवन, काँजी ओस व खार व उड़द व तिल दिन में शयन और रूखे पदार्थ ये सब शरद ऋतु में अपथ्य हैं।

हेमन्त शिशर ऋतु में पथ्य।

बात नाशक सुगन्धित तैल का मर्दन तेल द्वारा शिरोबस्ति, चतुर मनुष्यके साथ कुश्ती लड़ना, बैठक व दण्ड कसरत करना, विधिवत स्नान, हलके गरम वस्त्र धारण केशर कस्तूरी का लेप, अगर की धूप, नवीन अन्न, खट्टे मीठे और नमकीन पदार्थ, गेहूँ उड़द कि पिट्टी, ईख दूधके बने पदार्थ, तेल, चिकने और गरम भोजन, स्वेदक कर्म सूर्य की धूप, कुछ कुछ गरम जल, रात्रि समय गरम घरमें शयन, जूता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खड़ाऊँ पहिरना, रुईके वस्त्र ओढ़ना विछाना, कम्बल, मृगचर्म, ऊन और रेशमी वस्त्र ये सब पदार्थ हेमन्त शिशिर ऋतु में पथ्य हैं।

हेमन्त शिशिर ऋतु में अपथ्य।

बर्फ, सत्तू, बहुत पवन, बहुत थोड़ा भोजन, कड़ुए कषैले हलके और बातकारी अन्न, रुक्षशीतल और आत्मा को अहितकारी वस्तु, हेमन्त और शिशिर ऋतु में अपथ्य हैं।

मधुरादिष्ट रसों का पथ्यापथ्य।

मधुर, खट्टा और लवण ये तीन रस बात नाशक है तथा मधुर कड़ुये और कषैले पित्त नाशक हैं, एवं कटु तिक्त और कषाय, अर्थात् कड़ुए चरपरे और कषैले कफ नाशक हैं।

मधुर रस के गुण।

मधुर रस रुधिर, माँस, मेद, हड्डी, मज्जा, कांति, बल, और स्तनों में दुग्ध इनको बढ़ाता है नेत्रों की ज्योति और केशों को बढ़ाता है, शरीर के रंग को स्वच्छ रखता है, बल करता, और टूटी हड्डी को जोड़ता है, रस रक्तकी वृद्धि करता है, बाल वृद्ध व घावसे दुर्बल मनुष्योंको हितकारी है, तथा भ्रमरादिष्ट पदों व चींटी आदि जीवों को प्रिय है। तृषा, मूर्च्छा व दाहको शान्त करता है चित्तको प्रसन्न करने वाला है परन्तु कृमि और कफ को बढ़ाने वाला होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अति सेवित मधुर रस के अवगुण।

मधुर ही मधुर रस खानेसे श्वास, खांसी, वमन, अलसक, मुखमें मीठापन स्वरभंग, कृमिरोग गल गण्ड, अर्बुद श्लीपद, बस्ति, गुदारोग, अभिष्यन्द (नाड़ियों का रुकजाना) आदि रोग हो जाते है।

अम्ल (खट्टे) रस के गुण।

खट्टा रस अहार को भस्म करता है, बात नाशक है सूजनको बढ़ाता है, दाह करता है, शीत लगाने वाला, क्लेद करने वाला, और प्रायः हृदय को प्रियहै।

अतिसेवित अम्ल रसके अवगुण

अति सेवित अम्ल रससे दाँतों का कुंद व खट्टा होना, नेत्रोंका बन्द होना, रोम खड़े होना, कफनाश शरीर शिथिलता, ये रोग प्रगट होजाते हैं तथा घाव से पीड़ित, अग्निसे दग्ध, सर्प आदि से काटाभया, गिराभया, चोट लगा, सूजा भया जो पुरुष हो, जिसकी हड्डी टेढी होगई हो, हट गई हो, टूट गई हो, शूल की पीड़ा हो इन सबको अम्लरस गरम प्रकृति होने के कारण पाचन करता है, और इसीसे कंठ छाती हृदय में दाहकारक है।

लवण रस के गुण।

लवण रस वमन बिरेचन द्वारा संशोधनकर्ता, पचानेवाला, प्रत्येक अवयवोंको पृथक्पृथक्करनेवाला, तथा गीलापान, और शिथिलता करने वाला गरम और सब रसों का विरोधी अर्थात विपरीत स्वभाव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाला, मूत्र नाड़ी और व्रण आदि का संशोधक सब देह के अवयवों को नरम करनेवाला होता है।

अति सेवित लवण रस के अवगुण।

इस प्रकार पूर्वोक्त गुणों से युक्त होने पर भी यदि केवल लवण रसही सेवन करे तो पित्ती, सूजन, अङ्गों में खुजली, नपुंसकत्व, विवर्ण, नेत्र आदि इन्द्रियों का नाशक, एवं मुख पाक, नेत्र पाक, रक्तपित्त, खट्टी डकार, वातरक्त आदि रोगों को करता है।

कट् रस के गुण।

कटु [कड़वा] रस पाचन, रोचन, दीपन, शोधन इनको करता है, और आलस्य, कफ, कृमि, विष, मोटापन, कुष्ट, खुजली इनको दूर करता है तथा जाड़ों को खोलनेवाला, ग्लानिकर्ता, स्तनों में दूध, बीर्य मेद इनको दूर करता है।

अति सेवित कटु रस के अवगुण।

यद्यपि गुण कटुरसमें है तथापि अतिसेवन किया हुआ कटु रस भ्रम, मद गलशोष, तालूशोष, ओष्ट शोषको करता है, और देह में संताप, कम्प, बल नाशके, सुई की सी चमक, हड़फूटन, हाथ, पांव, कंठ, पीठ इन अंगों में वादीकी पीड़ाको करता है।

तिक्त रस के गुण।

तिक्त रस लोचन, दीपन, शोधन, छेदन, खुजली पित्ती, तृष्णा, मूर्छा, ज्वर नाशक और स्तन में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुग्ध शोधन करता है, तथा मल, मूत्र क्लेद, मेद-बसा, राध इनको शोषण करता अर्थात् सुखाता है।

अति सेवित तिक्त रस के अवगुण।

अति सेवन किया हुआ तिक्तरस देह स्तम्भ, गर्दन का रह जाना मस्तकशूल, भ्रम, छेदन की सी पीड़ा मुख में निरसता आदि रोगों को प्रकट करता है।

कषाय रस के गुण।

कषाय (कसेला) रस संग्राही रोषणकर्ता, देह को स्तम्भनकर्ता ब्रण से निकले हुए मांस को छांट कर निकालने वाला, शोधनकर्ता, द्रव धातु का शोधन और ब्रणके चनेको सुखाने वाला है, तथा ब्रण को और हृदयको पालनकर्ता व क्लेदको शोषणकर्ता है

अति सेवित कषाय रस के अवगुण।

इस प्रकार गुणयुक्त होनेपरभी अति सेवन किया हुआ कषाय रस हृदयपीड़ा, मुखशोष, अफरा उदर रोग, वाणी का रुकना, मन्यास्तम्भ अङ्गोंका फड़कना देहका चिरचिरानादेहका सकोड़ना हाथपांवों का पेंकना इत्यादि रोगों को प्रकट करता है।

वैद्य को अवश्य विचार योग्य उपदेश।

जो भोजन अपनी आत्मा से विरुद्ध हो, उससे प्रकट हुए रोगों का नाश जुलाब से होता है तथा वमनकर्ता और शमनकर्ता पदार्थ भी विरुद्ध भोजन के अवगुण को दूर करता है, यदि विरुद्ध भोजन जन्य पदार्थ सेवनके पूर्व हितकारी पदार्थ सेवन करे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो विरुद्ध दोष दूर होवे, तहाँ बलवान पुरुष का रोग वमन बिरेचन द्वारा शाँति करे और निर्बलको दोषनाशक औषधियाँ देकर रोग दूर करना योग्य है। जो मनुष्य अपनी आत्मा के अनुकूल अर्थात् जितना भोजन पच जाता है उससे थोड़ा भोजन करते हैं, तथा जिसकी जठराग्नि प्रदीप्त है और जो तरुण [जवान] हैं, तथा जो स्निग्ध और व्यायाम (दंडकसरत) करते हैं, तथा जो बलवान हैं ऐसे मनुष्यको कच्चा पक्का विद्ध भोजन सब पच जाता है और रोग करनेवाला नहीं होता तथा जो मनुष्य सदैव दंड कसरत करते हैं और बलवान हैं चिकने देहवाले हैं जिनकी जठराग्नि प्रबलहै तथा जो अति भोजन करने वाले हैं अथवा जिसने विरुद्ध वस्तुओं अर्थात् गांजा भाँग अफीम मदिरा आदिकों का अभ्यास कर लिया हो, तथा जो बिरुद्ध भोजन को थोड़ खावे, वह प्राणी उन विरुद्ध पदार्थ के भोजन से रोग को नहीं प्राप्त होता है, अर्थात् उसको सब पच जाता है इस कारण वैद्य को पथ्यापथ्य देने के समय इन सब बातोंका बिचार कर लेना योग्य है।

वैद्य को आवश्यकीय उपदेश।

वात आदि एक दो अथवा तीनों से उत्पन्न हुए ज्वर आदि रोगों में पथ्यापथ्य कहा गया है, उसको बुद्धिबान् वैद्य बिचार कर अपनी बुद्धि के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुसार सर्वत्र औषधिकी कल्पना करे बात बिकार से उत्पन्न रोगों में बातनाशक पथ्य देवे और पित्त जनित रोगों में पित्तनाशक पथ्य देवे तथा यदि दो दोषों से उत्पन्न रोग हो तो उन दोनों के नाश करने वाला पथ्य देवे तीनों दोषों से उत्पन्न रोग हो तो त्रिदोषनाशक औषधि देवें, और जो लोग रोग के प्रति कुपथ्य कहा है उसको यथा दोषानुसार उस रोग पर वर्जित करे।

अब आगे प्रसिद्ध रोगों में पथ्यापथ्य प्राचीन ग्रन्थानुसार भाषा में बर्णन करते हैं।

तरुणज्वर में पथ्य।

उचित समय में वमन, लंघन, (निराहार) और पतला भात, पसीना, कडुआ रस, तीखा रस, पाचन ये उपचार तरुण ज्वर में करे ज्वरमें लंघन करना हित है, यह समज्वर में जानना, निराम ज्वर में लंघन कराना निषेध है।

सन्निपात तथा आम ज्वर में पथ्य।

जो वमन लंघन आदि क्रिया तरुण ज्वर में कही गई है सोई सन्निपातमें करे तथा आम और कफको करने वाली क्रिया को करे और अवलेह, अंजन नस्यकुल्ला, दागना, आदि करे, और हाथ पाँव की जड़में कंठके कूपमें कनपटी में पसीना आता होवे, तो भुनी हुई कुलथी के चूर्ण का धूरा करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तरुण ज्वर में अपथ्य

स्नान, मेथन, दस्त, काढ़ा, कसरत, उबटन, तैलादि मर्दन दिनमें शयन, घी, दूध, दाल मठा मदिरा आदि मीठी वस्तु, भारीपदार्थ, पतले पदार्थ अन्न, वायु, भ्रमण, क्रोध, इन सबको तरुण ज्वर से पीडित मनुष्य त्यागदे ज्वर आने से सात दिन तक तरुण ज्वर कहाता है, बारह दिन तक मध्यम, और इससे अधिक दिन का ज्वर पुराना कहा है।

मध्यम ज्वर में पथ्य।

पुराना साठी चाँवल, भटा, करेला, सहिजना, आषाढ मासके उत्पन्न फल, परवल, मूली, ककोड पोईका साग, मसूर, मूंग, चना, कुलथी, मोठ इनमें से किसीकायूष, पाढ, गिलोय, बथुआ, चौलाई, जीबन्ती इनका साग, मकोयका साग, दाख, कैथ और अनार की खटाई, उड़द, पाचन हलके और आत्मा के अनुकूल औषध ये मध्यम ज्वर में पथ्य है।

ज्वर में पत्रशाक आदिका पथ्य।

बथुआ, मूली, चौराई परवल, गुर्च के पत्ते, मरसे का साग, नीबू के पत्ता, नारी का साग, गोभी के पत्ता, चूका, डोंढी का साग मकोय, चौपतिया, बैंगन अखरोट, परवल, ककोडा, करेला जिन ज्वर रोगियों को पत्र और शाक फल प्रिय हो तो इनको बिना चिकने से छौंके पत्र शाक फल देवे, जूस देना हितहोतो चना मूंग मसूर कुलथी, मौठका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जूस देना। अन्न देना हितहो तो एक वर्षके पुराने चांवलोंका भात, सो भात देना हितहो तो देवे और जो रोटी हित हो दो वर्षके पुराने चाँवलोंका आटा पीसकर उसकी रोटी देवे, और जो गेहूँ आदि की रोटी देना हित हो तो पुराने गेहूँ आदि की रोटी रोगी के अनुसार थोड़ी थोड़ी देवे।

द्वन्द्वज ज्वर में पथ्य।

आँवला, अनार, मूंगका यूष बात पित्त ज्वरमें देवे। छोटी मूलीका यूष बात कफ ज्वर में देवे, परवल और नीमका यूष पित्त कफ ज्वर में देवे।

आगन्तु ज्वर में पथ्य।

आने वाले ज्वर में मनुष्य लंघन नहीं करे चोट लगने से जो ज्वर आवे तो घी पीना, मालिशकरना खून निकल वाना, भात खाना हितकारी जानना और हथियार लगाने से उत्पन्न ज्वर में व फोड़ा फुन्सी आदि पीड़ा से उत्पन्न ज्वर में क्षत और व्रण की जो चिकित्सा कही है सोई करे।

जीर्ण ज्वर में पथ्य।

खुलब कदेर दस्त कराना वमन कराना, अंजन लगाना नासदेना, हुक्का पीना वस्ति कर्म रुधिर निकलवाना उचितऔषध देनामालिश कराना जल में स्नान शीतल वस्तुओंका सेवन गौ छागका दूध घी हर्र पर्वतके झरने का जल अंडी का तेल सफेद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चन्दन चन्द्रमा की चादनी यह सब वस्तु यथोचित सेवन से जीर्ण ज्वर वाले को पथ्य हैं ।

औषधी गन्धज में पथ्य ।

तीक्ष्ण औषधियों के सूंघने से अथवा बिषसे उत्पन्न ज्वर में पित्त तथा विषको शान्त करने वाली क्रिया को करे और चित्त को प्रसन्न करने वाला कर्म करे।

अभिचारादि शापोत्थ ज्वर में पथ्य

अभिचार अर्थात् मारण प्रयोगसे उत्पन्न अथवा गुरू ब्राह्मण तपस्वी माता पित आदि के शाप से उत्पन्न ज्वर गायत्री आदि मन्त्रों का जप हवन आदि करे और दिव्य भौमान्तरिक्ष आदि तीन प्रकार के उत्पन्न क्रूर ग्रहों की अरिष्टता से उत्पन्न हुए ज्वर में दान स्वस्ति बाचन आदि कर्म करे और इच्छा शोक भय से उत्पन्न ज्वर में बात नाशक क्रिया करे धीरज बंधावे तथा चित्त को प्रसन्न अथवा जो रोगों को अभीष्ट हो सो देवे। क्रोध से उत्पन्न ज्वर में पित्त हरने वाली क्रिया करे काम ज्वर में काम को शान्त करने वाली क्रिया करे क्रोध से उत्पन्न ज्वर में पित्त शांत करने वाली क्रिया करे ।

भूताभिषंग ज्वर में अपथ्य

भूत आदि बाधा से उत्पन्न हुये ज्वर में भूत बन्धन तथा भूत का प्रवेश करना और ताडन पथ्य है, और मन के क्षोभ से उत्पन्न हुए ज्वर में मन को शांत करने वाला उपाय करना उचित है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रमज और विषय ज्वर में पथ्य

मार्ग चलने के श्रम से उत्पन्न ज्वर में तेल का मर्दन और दिन में शयन करे. विषम ज्वर में वमन, जुलाब, और हलके पदार्थसे विषम ज्वरको शांत करे।

सम्पूर्ण ज्वरों में सामान्य पथ्यापथ्य

वेदका श्रवण, विष्णुसहस्रनामका पाठ,देव गुरु ब्राह्मण आदि पूजन,ब्रह्मचर्य,तप जप, दान, हवन साधु सेवा, रत्न और दिव्य औषधियों का धारण मंगल आचारण,ये सब ज्वरों को नाश करने वाले हैं। तथा सुगन्धित फुलेल लगाना,लाल फूलों की माला रक्त बस्त्र धारण, बमन का रोकना दांतन करना,आत्मा के विरुद्ध भोजन,विरुद्ध अन्न और विरुद्ध जलपान, दाहकारी पदार्थ, भारी पदार्थ, दूषित जल, खटाई, खार, पत्ते का साग जिसमें अंकुर निकल आये हों ऐसा अन्न पान, खसका जल, वडहरकाफल,तरबूज, छतोना, तिलोंकी खल मिट्ठी मैदा के बने पदार्थ,कचौरी,बरा आदि और कफकारी पदार्थ, इनको ज्वर रोगी परित्याग करे।

ज्वरान्त में अपथ्य

मैथुन,स्नान, दण्ड,कसरत,भ्रमण ये काम ज्वर छूट जाने पर भी नहीं करे। जब तक पहले समान बल पराक्रम शरीर में न आजावे।

अतिसार रोग में पथ्य

लंघन वमन,निद्रा पुराने साठी चांवल, खीलों का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मांड, चांवलों का यूष. मसूर अरहर की दालका रस तेल गौ का घी माखन दूध दही मठा केलाकी फली केला का फूल शहत जामुन, गज पीपरी. अदरख भसोड़े खटाई सोंठ कैथ. मौलश्री. बेलगिरी खट्टा मीठा अनार तेंदुआ पाढ चूका तालपत्र मजीठ, भांग हाऊबेर, जीरा जायफल धनियां कुडा की छाल वकायन सब प्रकार के कषैले पदार्थों का रस सब प्रकार के अग्नि प्रदीपन हलके अन्न और पीने के द्रव्य तथा नाभि से दो अंगुल नीचे ऊपर अर्द्ध चन्द्राकार दाग ये अब अतिसार रोग वालेको पथ्य है तथा ज्वरातिसार रोग वाले को जितना औठा हुआ जल दिया जाय उतनाही अधिक गुण करने वाला होता है, तहां औटते औटते दशवां भाग वा सोलहवां भाग अथवा सौवां भाग रह जाय उसको शीतलकर पीवै और काममें लावे तो अति हितकारी होता है तथा शहत, अम्बष्टादिगण, पिपिल्यादिगण प्रश्निपर्णी खरैटी, देल, कमल, धनियां, नेत्रवाला सोंठ ये सब पदार्थ मिलाय पीने योग्य बनाकर इसके पान करने से अतिसार रोग नाश होजाता है।

अतीसार रोग में अपथ्य

पसीना निकलवाना, सुरमा लगाना, रुधिर निकल वाना, वहुत जल पीना, स्त्री प्रसंग, स्नान, रात्रि में जागना, धूम्रपान, नास घना, तेलकी मालिस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मूत्र आदि सब बेगों को रोकना, अपनी आत्म के विरुद्ध अन्न, गेहूँ, उड़द, जौ, बथुआ, मकोय, चौला की फली, कन्द शाग, शहत, सहजना, सुपारी, आम कुम्हेडा, काशीफल, तुंबी, बेर, भारी अन्न, जल, ईख, पान, गुड़, पोइ का शाक, अग्लवेत के फल, लहसन आंवला, दूषित जल, नारियल, स्नेहन कर्म, कस्तूरी, पत्तों का शाक, जसे मूली, मैथी, पालक आदि क्षार जैसे जबाखार आदि और दस्त लाने वाले पदार्थ सोंठ ककरी खीरा आदि नमक और खटाई जिसमें अधिक हो ऐसे पदार्थ और क्रोध ये सब अतिसार रोग बाले मनुष्य को अपथ्य है अर्थात् अतिसार रोग वाला ये सब त्याग देवे।

संग्रहणी रोग में पथ्य।

बमन लघन दिन में शयन खीलों का मांड पुराने सांठी चांवल मसूर अरहर मूंग का जूस गौ के मक्खन निकाले दूधका दही बकरी के दूध वा दही से उत्पन्न हुआ मक्खन शहत तिल का तेल कमल का कन्द मौलाश्री खट्टा और मीठा अनार केलेकी फली बेलगिरी सिंघाड़े चूका का साग भांग कैथ कुडाकी छाल कसेरू जीरा छल चौपतिया जायफल धानयां जामन तेंदू के फल कुचला बकायन मजीठ अफीम सब प्रकार के कषेले पदार्थों का रस नाभि से दो अंगुल नीचे हट कर वा रीड़ की जड़ में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्द्धचन्द्रकार गरम लोहे से दाग देना ये सब संग्रहणी रोग में पथ्य हैं।

संग्रहणी रोग में अपथ्य।

रुधिर निकलवाना रातमें जागना बहुत जलपीना स्त्री प्रसंग मलमूत्र आदि वेगोंका रोकना नाक से सूंघना, अंजन स्वेदनकर्म, धूम्रपान, परिश्रम विरुद्ध भोजन, धूप वा अग्निसेवन गेहूँ, लोविया, मटर उड़द, राजमाष, पोई का शाक बथुआ मकोय, पेठा तोंवी, सहजना, कन्द शहत, पान ईख, बेर, खीरा ककड़ी आदि आम, लहसन, सुपारी, धान से बनी काँजी भूसियोंसे उत्पन्न काँजी, दूध दही का तोड़, गुड़ नारियल कटेरी का फल बाँस की कोंपल सब प्रकारके पत्तों का शाक दूषित जल, गौ का मूत्र कस्तूरी जवाखार आदि सब प्रकार के दस्तावर द्रव्य खटाई, दाख, भारी अन्न और जल नमकीन रस पुआ, पूरी मुगौरी आदि ये सब संग्रहणी रोग वाले को अपथ्य (त्याग देने योग्य) है।

बवासीर रोग में पथ्य।

रुधिर निकलवाना लेपन जुलाब, तेजाव से जलाना, दागना चीड़ना फाड़ना, पुराने लाल चाँवल, शालीचाँवल, साँठी चाँवल कुलथी, जौ धतूरे, परवल लहसन चीता जिमि कन्द बथुआ डोंडो, चूका, मूलीकी फली व शाक सोंठ, हर्र मक्खन, मठा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कंकोल आंबले घी, दूध मिलावा गौ का मूत्र, सरसों का तेल काँजी वातनाशक और अग्निकारक अन्न और पान सायं प्रातःभ्रमण हलके भोजन, जो वस्तु शीघ्र पचजाती हो ऐसी बात नाशक वस्तु ये सब बवासीर रोग वाले को पथ्य ।

बवासीर रोग वाले को अपथ्य ।

तिलकीखल, मांस, मछली, दही मैदा व पीठी के पदार्थ, टेंटी, उड़द, मटर रमांसकीफली, बेलगिरी तूंवी पोईका साग, पका आम भैंसीडे कब्ज करनेवाले ब भारी सब पदार्थ, धूपमें विचरना, नदीका जल पीना वमन, बस्तिकर्म अथात् गुदामेंपिचकारीपूर्वदिशाकी वायु बेगों का रोकना, स्त्री प्रसंग, घोड़ा आदि की पीठ पर चढ़के चलना, उकडू बैठना, दोषों को उत्पन्न करनेवाला अन्न, ये सब बवासीर रोग में अपथ्य (अहितकारी) हैं इन सबको त्याग देनायोग्य है, इसीप्रकार रक्तपित्त रोगमें जो २ वस्तु पथ्य और अपथ्य हैं सो खूनी बवासीरमें जानना, सबारीकरना बार-बार जल पीना, दिनमें शयन, भारी अन्न अति भोजन, कलह, ये वादी और खूनी दोनों प्रकार की बवासीर में अवश्य त्याग दे खूनी बवासीर में रुधिर निकलवाना, तेजाब आदिका लगानाये दोनों काम न करे और जो बवासीर में औषधि आदि पथ्य वा अपथ्य कही हैं वही चर्मकील रोग में दोषों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पु के भेद को समझ कर जानना चाहिये।

मन्दाग्नि और अजीर्ण रोग में पथ्य।

कफजनित मन्दग्नि अजीर्ण अर्थात् विशूचिका अलसक, भस्मक आदि में वमन करावे, पित्त जन्य हलका जुलाव देवे, और बातजन्य स्वेदन कर्म करैं तथा अवस्थाके अनुसार जो काम जिससमय हितहो सो करै, और दंडकसरत कुश्ती आदि करै तथा अग्नि प्रदीप्त करने वाले और हलके भोजन बहुत दिनोंके महीन लाल चाँवल, खीलोंका माड़, मूंग का रस शाली चाँवल, शाक, वेतकी कोंपल, बथुआ छोटीमूली, लहसन, पुरना पेठा, नवीन केलाकी फली सहजना, परवल, बैंगन, खसक सुगन्धित जल, ककोड़, करेला, कटेरीका फल अदरख, प्रसारेणी (छुईमुई मेंढ़ासींगी आंवला नारंगी, अनार, चौपतिया जो लनियाँ शाक, हापड़ अमरवेल जँभीरी, बिजौरा नीबू, सहत, माखन घी. छाच तुषोदक, काँजी कटु तेल हींग नमक धान्यकी काँजी, अजबायन, मिर्च मेंथी धनियाँ जीरा दही, पान, गरम जल, कडुये और चरपरे रस ये सब पदार्थ मन्दाग्नि और अजीर्ण रोग वाले मनुष्यको पथ्य अर्थात् हितकारी है।

मन्दाग्नि और अजीर्ण रोग में अपथ्य।

जुलाब मूत्र व वायु के वेग को रोकना भोजन पर भोजन तथा भोजनके समान भोजन और वि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

षम भोजन अर्थात कभी कम भोजन कभी अधिक भोजन करना रुधिर निकलवाना, मूंग मोंठ चना आदि दाल माँस मछली पोई का साग जलपान पिट्ठी के बने पदार्थ सब प्रकार के कमल कन्द दूध खोया इमली आदिका पगा घी में औटे हुए चाँवल तालफल की भींगी, नेत्रवाला, धनियां विकारयुक्त जल चिकने पदार्थ अपनी आत्मा से विरुद्ध अन्न व जल रोकने वाले व भारी पदार्थ ये सब मन्दाग्नि और अजीर्ण में अपथ्य हैं अलसक रोग में वमन पसीना लंघन ये कर्म अवश्य करे और बिशूचिका रोग में अतिसार में कहे हुए, पथ्यापथ्य के समान उचित जानना यदि बिशूचिका अधिक बढ़ जाय तो दोनों एड़ियों को दाग दे और दीपन पाचन औषधियों का सेवन करे ।

कृमिरोग में पथ्य ।

बस्ति कर्म जुलाब धूम्रपान कफनाशक पदार्थ पुराने लाल चाँवल बथुआ लहसन आक के पत्ते चीता सरसों नवीन केला कटेली के फल तालीस पत्र नारीके पत्ते, कडुये द्रव्य वायविडंग नीमके पत्ते हर्र, तिल, सरसोंका तेल, दहीका तोड़ शहत उड़द तालफल भिलावा गौ का मूत्र पान कस्तूरी घी दूध हींग जवाखार ऊँट का मूत्र, मदिरा खैरसार अजमोद कुडाकी छाल जंभीरी नींबूका रस अजवायन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कलौंजी देवदारू का सार अगर का सार कडुये कषैले और चरपरे रस ये सब कृमि रोग वाले को पथ्य है इनका सेवन यथोचित रीति से करे।

कृमि रोग में अपथ्य।

वमन वेगको रोकना वमन करका विरुद्ध अन्न व जल दिन में शयन द्रव पदार्थ पिठ्ठी के पदार्थ (कचौरी बरा आदि) अजीर्ण होने पर भोजन घी उड़द दही माँस पत्तों का साग दूध खटाई मीठे रस ये सब कृमि रोग वाले को अपथ्य हैं।

पाँडु रोग में पथ्य।

पुराने जौ गेहूँ चावल अरहर मूँग मसूर इनका जूस परवल नवीन केला की फली ताल मखाना जीवन्ती मछेछी चौलाई गिलोय सोंठ गोभी बैंगन लहसन हर्र पका आम गोमूत्र कन्दूरीक फल आँवला छाछ घी तेल काँजी तुषोदक मोखन सफेद चंदन हल्दी नागकेशर जवाखार कषैले रस लोह भस्म केशर बमन विरेचन पाँवों की सन्धि में नाभि से दो अंगुल नीचे माथे में हाथोंके पहुँचे में स्तन व कोख के बीच में अग्नि से दागना ये सब पाँडुरोग में पथ्य हैं।

पाँडुरोग में अपथ्य।

हुक्का पीना, रुधिर निकलवाना बमन और मल मूत्रादि बेगों का रोकना, पसीना निकलवाना, स्त्री प्रसंग, सेम की फली पत्तों का शाक, हींग, उड़द

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जलहान, जल पान सरसों मादरा मिट्टी खाना बहुत
लवण वाले पदार्थ दिन में शयन कृष्णा नर्मदा
तार्क्षी का जल सब प्रकार की खटाई भारी अन्न
विरुद्ध भोजन दूषित जल दाह उत्पन्न करने वाले
अन्न ये सब पाँडुरोग वालेको अपथ्य हैं ।

रक्त पित्त रोग में पथ्य ।

गुदा व लिंग द्वारा जाने वाले रक्त पित्त रोग में रोगी को बमन करावे और ऊपर के अंगों में रक्त पित्त वाले को विरेचन देकर दस्त करावे औप अधोगत व उद्धंगत दोनों प्रकार का रक्त पित्त रोग हो तो वंघन करावे तथा पुराने चाँवल साठ काकुन कोदों समा पसाई जौ मूंग मसूर अरहर चना कसेले सब द्रव्य गौ बकरी का घी और दूध भैंस का कटहर चिरौंजी केला की गहर चौलाई परवल जल चौराई अदरख पुराना पेठा बेमकी कोपल अडूसा, कुँदरू, अनार खजूर आंवला, सौंफ नारियल का गोला कसेरू, सिंघाड़ा, भिलावा, कैथा, कमलकन्द फालसा, नीबूकेपत्ते, चिरायते का शाग, सफेद तीबी, तरबूजा इन्द्रजौ, खीलकासत्तू, दाख मिश्री शहत ईख शीतल जल, झरनेके जल का छिरकना, गोतालगाना सौबार धौयाहुआ घी, तेलकी मालिश, शीतल वस्तु का उवटन, शीतलवायु, चंदनलगाना, चाँदना मोती योंका धारण, फव्वारेका घर, केले के कोमल पत्ते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और कमल के पत्तों की शय्या, रेशमी वस्त्र शीतल फुलवारी, प्रियंगु, चन्दन आदिकी सुगन्धि, कमल फूले हुए जिसमें ऐसी झील व नदी, बरफकी फुहार सुन्दर शीतल पर्वतों के झरने, उत्तम गान और शीतल रेत, वा कपूर, ये सब बात रक्तरोग में मित्र के समान हितकारी हैं।

रक्त पित्तमें अपथ्य।

दंड, कसरत, पैदल चलना, धूप में भ्रमण मल मूत्र आदि वेगों को रोकना, बहुत परिश्रम हाथी व घोड़ों पर चढ़ना, पसीना निकलना, फस्त खोलना, हुक्का पीना, स्त्री प्रसंग, क्रोध कुलथी. गुड़ बेंगन, तिल, उड़द, सरसों. दही, दूध, हवा का जल खस का जल, मदिरा, लहसन, सेम विरुद्ध भोजन, चरपरे खट्टे, निमकीन और दाह करने वाले, द्रव्य, ये सब रक्त पित्त वाले को अपथ्य हैं।

क्षय रोग में अपथ्य।

मूंग साठी चाँवल, गेहूँ. जौ, शालिधान, मदिरा ये क्षय रोगोंमें हित हैं. और जो क्षय रोग अधिक दोषों से युक्त बलवान हो तो उसे प्रथक हलके और कोमल जुलाब से शुद्ध करै, और लाल चावल, चना शीतल पदार्थ. गरम मसाला, बालूसाई आदि चन्द्र की चाँदनी. मीठे रस, केलेकी पकी गहर, पका कटहर पकआम, आँवले, छुहारे. कमलकन्द, फालसे, नरियला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहजना. तेंदू. दाख. तालके नवीन फल,सौंफ, सेंधानमक. अडूसाके पत्ते, गौ और भेंस का घी.व करियों में रहना, अथवा बकरियोंकी लेंडी,मूत्रका लेप; मिश्री, सिखरन, रसाला जौ कच्चे दूध मिश्री जल, कालीमिर्च मिलाकर बनता है, कपूर, कस्तूरी सफेद चन्दन, सुगन्धित वस्तुओं का लेप उबटन,स्नान उत्तम वस्त्र, और आभूषण पहिनना. जलमें क्रीडा मनोहर स्थान में निवास, फूलों की माला धारण. कामोद्दीपन बातोंका श्रवण. मन्द सुगन्धित, वायु गीत नृत्य चन्द्रमाकी शीतल किरणों में विहा वीणा आदिकी ध्वनि सुवर्णके वर्क मोती और मणि आदि, आभूषणों का धारण होम, दान, देव और ब्राह्मणों का पूजन.चित्तको प्रसन्न करके अन्न, पान ये क्षय रोग वाले मनुष्य को हितकारी है।

क्षय रोग मेंअपथ्य

मलमूत्रादि बेगोंका धारण, जुलाब, परिश्रमः स्त्र प्रसंग. पसीना रात्रिमें जागना. सामर्थ्यसे अधिक काम करनेमें प्रवृत्त होना. रूखा अन्न विषम भोजन, पान, तरबूज, कुलथी. उड़द. हींग, लहसन, बांस की कोंपल, खट्टे पदार्थ, कडुये कषेले और चरप पत्तोंके शाक, क्षार, स्वभाव विरुद्ध भोजन, कुन्दरू सेम, करेला, सब प्रकार केदाहकारी पदार्थ ये सब क्षयरोग में अहितकारी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कास (खाँसी) रोग में पथ्य।

वमन, विरेचन, स्वेदन, धूम्रपान, नियम पूर्वक भोजन, शालिधान्य, साँठी चांवल, गेहूँ, सामखिया जौ, कोदों कौंचके बीज, उड़द मूँग कुलथी इनका रस, पुराना घी, बकरी का दूध और घी मकोय बैंगन, बथुवा, नरममूली, कसौंदी, कटेरी, डोडीका शाक चौपतिया, बिजौरा नीबू छुहारा कुन्दरूनीबू पुहकर छोटी इलायची, अड्डसा, गोमूत्र हर्र, लहसन, सोंठ मिर्च पीपरि गरम जल शहत धान की खील, दिनमें शयन, हल्के पदार्थ तथा जिस दोष से खांसी की उत्पत्ति हुइ हो उस दोषको नाश करने वाले द्रव्य ये सब कास रोगमें पथ्य है।

कास रोग में अपथ्य।

वस्तिकर्म नस्यकर्म फस्त आदिसे रुधिर निकलवाना दंड कसरत दांतोंका घिसना, धूपकी गरमी दुष्ट पवन, धूल व मार्गका सेवन, रोकने वाले और दाह करने वाले पदार्थ अनेक प्रकारके रूखे पदार्थ मलमूत्र, डकार वमन, आदि बेगोंका रोकना, मछली कंद, सरसों, तावीफल, पोईकाशाक, बिगड़ा हुआ जल और अन्न, विरुद्ध भोजन भारी और ठंडा अन्न ये सब कामरोग में अहितकारी है।

श्वास दमा रोग में पथ्य।

पसीना, वमन, जुलाब, धूम्रपान दिनमें शयन, शालि चाँवल साँठी चांवल, गेहूँ जौ कुलथी पुराना घी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बकरी का दूध, और घी मदिरा शहत, सटाई, बथुआ, चौलई, जीवन्ती पोईका शाक मूली, परवल, बैंगन लहसन हर्र जंभीरी कुन्दरू विजौरा, छुहारा, छोटी इलायची, गरम जल पुहकर मूल, सोंठ, मिर्च पीपल गौमूत्र वातनाशक अन्न पान और हलके पदार्थ तथा छाती से लेकर दोनों पसवाड़ों में तथा दोनों हाथों की पीठ की अंगुलियों में तप्त लोहसे दागना अथवा कंठ कूप में दागदेना, ये सब श्वास रोग में हितकारी हैं।

श्वास रोग में अपथ्य।

बमन, डकार, खाँसी प्यास और मूत्रादि वेगोंका रोकना, बस्ति और नस्तकर्म, दाँतन करना परिश्रम बोझ लेके चलना, कंठ में धूल का जाना धूप में रहना, देर से पचने वाले और दाहकारी पदार्थों का सेवन तेलकी भुनी वस्तु, माँस घौरा, कफकारी पदार्थ उड़द, रुधिर निकलवाना, पूर्वकी पवन, बहुत जल पीना, भेड़का घी और दूध, बिगड़ा हुआ जल, मछली, कन्द, शाक, सरसों, रूखा शीतल तथा भारी पदार्थ ये श्वास रोग में अपथ्य हैं।

हिचकी रोग में पथ्य।

पसीना देना, वमन करना, नस्यकर्म धूम्रपान जुलाब, दिन में चयक चिकने पदार्थ हलका और कोमल अन्न नमक, पुरानी कुलथी पुराने गेहूं पुराने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साँठी चाँवल जौ पका केथ लहसन परवल नरम मूली पुहकरमूल काली तुलसी मदिरा खस काजल गरम जल विजौरा शहत गोमूत्र वात और कफ-नाशक अन्न व पान शीतल जल सहसा त्रास-देना भुलाना, मर्म दिखाना, क्रोध, अति हर्ष प्रिय उद्वेग कारक पदार्थ, प्राणायाम अर्थात् श्वास का रोकना जलो हुई गरम मिट्टी कासुंधना, कुशाकी कूचीसे अथवा धारा से जल डालना, नाभी के ऊपर दावना, दीपकसे जली हुई हल्दीसे दागना और पावों से ऊपरदो अंगुलपर अथवा नाभिके ऊपर दो अंगुल पर दागना ये सब हिचकीरोग में पथ्य हैं।

हिचकी रोग में अपथ्य।

मूत्र अधोवायु (पाद) डकार खाँसी और मल इनका रोकना धूल वायु धूप परिश्रम विपरीत व देरसे पचने वाले भोजन दाहकारी पदार्थ, रूक्ष कफ कारी पदार्थ, चोरा पीठीके पदार्थ तिलके पदार्थ उड़द माँस भेड़का दूध वस्ति कर्म दाँतून करना, मछली सरसों खटाई कंदशाक, तैल की छौंकी हुई चौलाई का शाक, भारी और शीतल अन्न, व पान ये सब हिचकी रोगमें अपथ्य (अहितकारी) हैं।

स्वर भेद रोग में पथ्य।

वस्ति कर्म, स्वेदन कर्म, धूमपान, जुलाव नस्यकर्म मस्तककी फस्त खोलना, औषधियोंका ग्रास बनाकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुख में रखना, जौ लाल चावल गोखरू मकोय मदिरानरमभूली, जीवंती छुहारे, हर्रबिजौरा, लहसन लवण, अदरख, पान, स्याह, मिर्च घी ये सब वस्तु स्वरभेद रोग में पथ्य हैं।

स्वरभेद रोग में अपथ्य।

कच्चा कैथ, मोलश्री, आम भँसीड़े, जामक, तेंदू कषैले पदार्थ बमन, बहुत शयनबहुत बातचीत, विरुद्ध अन्न व पान, ये सब स्वरभेद रोग वालेको अपथ्य हैं।

अरुचि रोग में पथ्य।

वस्तिकर्म रोगीके बलानुसार दस्त कराना, मुखमें औसधका केवल रखना, धूम्रपान ब वमन व नीम नादि वृक्षोंके काठकी दातून, गेहूँ, मूंग, अरहर, शाली धान, साँठी चांवल नवीन कोमलामूलीवेंगन, सहजना केलाअनारपरवल, सेंधालवण, दूधघी, ताड़के कोमल और कच्चेफल व लहसन व जिमीकन्द, दाख आम खसका जल, काँजी व मदिरा, सिखरन, दही व छाछ अदरख कंकोल, खजूर, चिरौंजी, तेंदू, पका कैथ, बेर खटाई ताड़के भीतर की गिरी, शीतल बालू मिश्री हर्र अजबायन कालीमिर्च हींग स्वादिष्ट खट्टे और घरपरे रस, स्नान द्वारा शरीरको साफ रखना ये सब अरुचि रोगें में पथ्य हैं।

अरुचि रोग में अपथ्य।

भूख डकार खांसी आँसू इनका रोकना, रुधिर निकलवाना, आत्मा से विरुद्ध भोजन, कोध लोभ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चन्ता दुर्गन्धित वस्तुओं को सूंघना, अशोभित पदार्थों का देखना, ये अरुचि रोग में अपथ्य हैं।

छर्दि (वमन) रोग में पथ्य।

गुलाब वमन लंघन स्नान जप खीलों का माड पुराने साँठी चाँवल लाल चांवल मूंग मटर गेहूँ जौ शहत धनियां नारियल जंभीरी आँवला आम बेर दाख पका कैथ हर्र व अनारव बिजौरा जायफल नेत्र वाला नींम अडूसा शक्कर सोंफ शतावरी नागकेशर मनको प्रसन्न करने वाले पदार्थ भोजन के परांत मुखमें शीतल जलका भरना कस्तूरी चंदन चन्द्रमा की चांदनी अतर आदि सुगंधितलगाना सुगन्धित पान फूल और फल चित्तको हितकारी शब्द रूप रस गंध स्पर्श और नाभि त्रिक स्थान पसवाडे तथा पीठ में दग्ध करना ये सब वमन रोग में पथ्य हैं।

वमन रोग में अपथ्य।

वस्ति और नस्य कर्म पसीना निकलवाना तेल के पदार्थ खाना फस्त खोलना दातून करना पतले कढी आदि पदार्थ खाना भयंकर पदार्थ को देखना अथवा देखनेकी इच्छा करना भय उद्वेग गरम वस्तुओंका सेवन चिकने पदार्थ व अप्रिय भोजन सेम व कुन्दरू घीया और गलका तुरई मुलहटी महुआ मजीठ इलायची सरसों दंड कसरत छतौना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंजन ये सब वमन रोग में अपथ्य हैं

तृष्णा (प्यास) रोग में पथ्य।

वमन संशोधन क्रिया स्नान कवलधारण, शाली चाँवल कदों खील सत्त दीपक से दग्ध की हुई हल्दी से जीभके नीचे की शिराओं से दग्ध करना चौदह गुने जलमें चाँवलों का बना हुआ मांड मिश्री राव खाडव जौ मीठा दही और शहत मिलाकर बनाया जाता है भुनी मूंग, मसूर व चनों का रस केला के फूल दाख पित्तपापड़ी के पत्ते बेर कमरख कुम्हेडा पोईका साग खजूर अनार आंवले खसखस का जल ककरी जंभीरी करौंदा बिजौरा महुआ के फूल गौ का दूध हाऊबेर चरपरे व मीठे रस छोटे तालफलों का रस, शीतल जल पना शहत सरोवर का जल शतावर नाग केशर इलायची जायफल हर्र धनियाँ सुहागा कपूर, कचरी, चाँदनी शीतल पवन रत्न आदि आभूषणोंका धारण शीतल पदार्थों का लेपन ये सब तृषा रोग में पथ्य हैं।

तृषा रोग अपथ्य।

अंजन स्वेदन धूम्रपान स्नेहनकर्म दंड कसरत नस्यकर्म धूपमें निकलना, दाँतून करना भारी अन्न सेवन अति नमकीन व कषेले रस खटाई सोंठ मिर्च पीपर दूषित जल तीखे पदार्थ ये सब तृष्णा रोग वाले को अपथ्य (अहितकारी) हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मूर्च्छा रोग में पथ्य।

स्नान शीतल जल से छींटा देना मणि और हार
रण करना शीतल पत्तियोंका लेप पंखों का पवन
तल सुगन्धित वस्तुओंसे युक्त पीनेके पदार्थ फ-
वारे वाला घर चन्द्रमाकी शीतल किरणों में विहार
पान अंजन नस्यकर्म फस्त खोलना दागना
सुईचुभोना रोम और बड़े २ बालोंका उखाड़ना ना-
खूनको दबाना दाँतोंसे काटना, नाक और मुख से
निकालनेवाली पवनकोरोकना जुलाबवमन लंघन
बाँधकरानाभयदिखाना दुखदेनेवालीखाटपरसुला-
नाविचित्रकथाओंकाकहनाझिससेरोगियोंकामनल-
गजायछायावर्षाकाजल सौबार धोयागया घी, मूंग
औरमटरकायूष कोमलऔर तीखेरसपुरानेजौखीलों
का मांडलालचाँवल मूंगऔरमटर कायूषमुरब्बागौ
कादूधपुरानापेठामिश्री, परवलकेलाकीगहरअनारहरे
नारियलमहुवाकेफूल पोईकासागचौलाई, हलकेअन्न
नदीतटकेकुयेकाजलसफेदचंदन कपूरकाजलनेत्रवा-
लाठंडीरेत अतिऊँचे स्वरसेबोलना, अनूठीवस्तुओंका
दर्शनगीत मनोहरबाजे जोरसेबजाना परिश्रमकरना
भूली बातका स्मरण करना चिंता करना आत्मज्ञान
धीरजका धारण करना येसब मूर्छारोगमें पथ्य हैं।

मूर्च्छा रोग में अपथ्य।

मेंथी आदि का साग पान दांत का घिसना धूप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में फिरना विरुद्ध अन्न व पान, स्त्री प्रसंग पसीना निकालना चरपरे रस तृषा निद्रा और मलमूत्रआदि का रोकना छाछ पानी ये सब मूर्च्छा रोगमें अपथ्य (अहितकारी) हैं।

दाह रोग में पथ्य।

साँठी ओर शाली चाँवल मूंगमसूर चना जौ खीलाका माँड सत्तू मिश्री सौ बारधोया हुआ घी दूध से निकला हुआ माखनपेठा बकरी केलाकी गहर कटहर मीठा अनार परवल पित्त पापड़ा छुहारा आँबले फालसे कुंदरु तोंबी खुर्चन खजूर धनियाँ सोंफ छोटा ताडफल बिरी सिंघाड़ेकसेरू महुवे केफूल नेत्र वाला हर्र कुटकी, सबप्रकारकेतिक्तपदार्थ, शीतलवस्तुओंका देह में लेप, स्नान, उबटन जलके भीतर घुसकर स्नान करना कमलपत्रऔररेशमीवस्त्रोंसेआच्छादितशय्या शीतलसघन बनमेंनिवास, मनोहरकथा गीता, हृदय को शीतलकरने वाली बातें, खस और, चन्दनका लेप शीतलजल पवन फुहारे काघर, प्यारी स्त्रीका आलिंगन, नदीके किनारे शीतलबालुका मेंरमण काना चद्रमकी चाँदनी, स्नान मणियों का धारण, मीठे रस, पित्तहरण करनेवाले द्रव्य, शंख, शक्कर, चांदी की भस्म, लोह, भस्म गीले वस्त्रोंका धारण ये सब पदार्थ दाह रोग में हितकारी हैं।

दाह रोग में अपथ्य।

विरुद्ध अन्न पान व क्रोध, वेग धारण, हाथी ओर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घोड़ाकी सवारी व मार्ग चलना व क्षार वस्तु और पित्तकारक पदार्थ, दंड कसरत, धूपमें चलना व छाछ पान व शहत हींग स्त्री प्रसंग व कडुए और तीक्ष्ण पदार्थ ये सब दाह रोगमें अपथ्य हैं।

।उन्माद रोगमें पथ्य।

झुलाब, स्नेह व वमन प्रथम कराके फिर वात पित्त कफसे उत्पन्न उन्मादमें वस्तिकर्म व नस्य कर्म डराना व ताडना करना व अंजन लगाना व धीरज बंधाना व प्रसन्न करना, धूनी देना, पीटना, भुलाना लेप करना और फस्त खोलना व शमनऔर धूम्रपान उवटन और स्नान तथा निद्रा और शीतल वस्तुओं का लेपन, गेहूँ, मूंग लाल चावल तुरतदुहाभया गरम दूध, सौ बार धोया भया घी, पुराना घी, शिखरन, पुराना पेठा, परबल, बथुआ, ब्राह्मीके पत्ते चौलाई अन्तरिक्षकाजल, सुवर्णभस्म, नारियलकागिरीदाख कैथ, कटहर, सब उन्माद रोगपर पथ्य हैं, और काम शोकभयक्रोध हर्ष अथवा लोभसेपैदा उन्माद रोगके नाशनार्थ विपरीत करे जैसे कामोन्मादको क्रोध वा अनिच्छासे, शोकोन्माद हर्षसे, भयसे उत्पन्न उन्मादको निर्भयतासे, क्रोधोन्मादकोकामसे, हर्षोन्मादको शांति से, लोभोन्माद को दान से दूर करे, एवं प्रिय वस्तु स्त्री पुरुष बंधु आदि के नष्ट हो जानेसे जो मन व्यकुल होजाय तो उसको वैसेही कोई दूसरी वस्तु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देके अथवा समझा बुझाकर दूर करे, तथादेव ऋषि पितर और गन्धर्वसे पैदा उन्माद में बुद्धिमान वैद्य नस्यकर्म अंजन, तीक्ष्ण और क्रूरकर्मोको त्याग दे तथा उनके समीप पूजा बाले भेद और शान्ति-विधि करे, हवन इष्टमन्त्रका जप दान स्वस्तिवाचन व्रत, नियत, सत्यभाषण जप मंगल प्रायश्चित अंजन विधि रत्न तथा औषध का धारण जैसे देवता का उन्माद हो तदनुरूप क्रिया करना, शिवपार्वती तथा ब्राह्मणों का पूजन ये सब उन्माद रोग में पथ्य हैं ।

उन्माद रोग में अपथ्य ।

विरुद्ध भोजन गरम भोजन मदिरा क्षुधा निद्रा प्यास का रोकना दंड कसरत अषाढी फल करेला पत्रशाक सब प्रकार के चरपरे पदार्थ तीखे पदार्थ ये सब उन्माद रोग में अपथ्य हैं ।

अपस्मार (मृगी) रोग में पथ्य ।

बात बिकार से उत्पन्न मृगी रोगमें प्रथम बस्ति-कर्म पित्त जन्य मृगी में बिरेचन तथा कफ जन्य मृगी में बमन कर्म एवं धूनी तथा अंजन लगाना उत्तम है, तथा नस्यकर्म फस्त खोलना, दान त्रास, बंधन, भय, ताडन, हर्ष, विस्मय, धूम्रपान, बुद्धि को स्थिर रखना धैर्य धारण स्नान, उबटन, लालचाँवल, मूंग गेहूँ पुराना घी ब्राह्मीके पत्ते दूध परवल, बच पुराना पेठा बथुआ मीठाअनार नारियल का जल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व दूध सहजना दाख आँवले फालसे तेल गंध हर्र घोड़े और गधेका मूत्र वर्षाका जल ये सब सेवन करै. मृगी में पथ्य हैं।

मृगी रोग में अपथ्य।

शोक, चिंता, भय, क्रोध, अपवित्र भोजन, मछली मदिरा. विरुद्ध, अन्न, तीखा गरम और भारी भोजन अतिमैथुन, पारश्रम, भूत प्रेतादि का पूजन, सब प्रकारके पत्तोंका शाक, कुंदरू आषाढ मासमें उत्पन्न फल, प्यास, नींद और भूख. इन वेगों का रोकना ये सब मृगी रोग में अपथ्य (अहितकारी) है।

वात रोग में अपथ्य।

वात विकारसे उत्पन्नरोगमें बातनाशक तैलमर्दन बस्तिकर्म, स्नेहकर्म. स्वेदनकर्म, जलमेंस्नान शरीरका दावना, वातनाशक वस्तुओंका सेवन. पूर्व दिशा की वायुका त्याग, पृथ्वी पर शयन. धूपकी गरमी. दही की कूर्चिका, घी तैल चर्बी मीठा जल अर्थात् शर्बत नवीन तिल, निमकीनरस, गेहूँ पुराने शाली चांवल, सोंठी चांवल कुलथीका रस मदिरा परवलसहजना बैंगन लहसन खट्टा मीठा, अनार पका ताल फल. आम, खस का जलफालसे जंभीरीबेर दाख नारंगीमहुआ गोखरू नीम दूध नारियल का दूध कडुवा तेल गोमूत्र मिश्री पान धान की कांजी इमली चिकने और गरम भोजन. व लेप वमन मांस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रुधिर और नसमें वात बिकार हों तो रुधिर निका लने का यत्न करै, ये बात रोग में पथ्य हैं ।

वात रोग में अपथ्य

रात्रिमें जागना चिन्ताकरना मल मूत्र आदि वे गोंका रोकना वमन परिश्रम लंघन चना मटर नीवार माल काँगनी कोदौं सामा चूना मोटे चांवल मूंग तालाब और नदीका जला, जौ टेंटी जामुन कसेरू कमल गट्टे मसीड़े, चौराके बीज ताल फलकी गुठलीका गूदा सेम पत्तोंकाशाक गूलर तेंदू शीतल जल दूध विरुद्ध अन्न फस्द कषैले पदार्थ शहत कड़ुये और चरपरे द्रव्य स्त्री प्रसंग हाथी और घोड़े की सवारी भ्रमण बिन बिछी शय्या बहुत स्नान दांतों का घिसना ये बात रोग में अपथ्य हैं ।

शूल के रोग में अपथ्य ।

वमन स्वेदन लंघन, गुदा में बत्ती डालना जुलाब पाचनद्रव्य चांवल गरम दूध परवल सहिजना करेला बैंगन पकाहुआ आम दाखकैथ कालालवण चिरौंजी पत्र शाक वथुवा समुद्रखार सांभर-नमक हींग सोंठ बावबिडंग शतावरी लहसन लौंग अण्डी का तेल गो मूत्र गरमजल जंभीराका रस जामुनका रस कूठ हल के पदार्थ क्षाररस ये सब शूल रोग में पथ्य हैं ।

शूल के रोग में अपथ्य ।

विरुद्ध अन्नपान विषम भोजन जागरण रूखे तीखे और कषैले पदार्थ शीतल और भारी पदार्थ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दण्ड कसरत मैथुन मदिरा सब प्रकार की दाल नमक तिल मलमूत्र आदि का रोकना क्रोध चिंता शूल रोग में अपथ्य हैं।

हृदय रोग में पथ्य।

वमन लंघन वस्तिकर्म स्नेहकर्म जुलाब पुराने लाल चाँवल मूँग और कुलथी उत्पन्न रस मुरब्बा पीनेके पदार्थ परवल नागरमोथा केलाकीगहर पुराना पेठा आम अमलतास की फलियों का शाक, अनार नवीन मूली अंडीका तेल, वर्षा का जल सेंधालवण मट्ठा छाछ पुराना गुड़ सोंठ अजवायन लहसन हर्र धनियाँ पीपरि अदरख काँजी शिरका शहत मदिरा कस्तूरी चन्दन पान इमली आदि का रस सब द्रव्य हृदय रोग में पथ्य हैं।

हृदय रोग में अपथ्य।

वमन प्यास अधोवायु मूत्र सूखी खांसी डकार श्रमसे उत्पन्न श्वास मल आंसू इन वेगोंका रोकना ताप्ती कावेरी आदि का जल दूषित जल भैंस का दूध, कषेलेरस रस गरम भारी तीखा खट्टा पत्तों का पुरा नाशक जबाखार आदि महुवा दातून फस्त ये सब हृदय रोग में अपथ्य हैं।

मूत्र कृच्छ्र (सुजाक) रोग में पथ्य।

बात बिकार से उत्पन्न सुजाक में तेलादि मर्दन, बस्ति कर्म, स्नेह निरूहण स्नान, उत्तर बस्ति सेचन कर्म कर, और पित्तजनित, सुजाक में जल में घृत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर स्नान, तथा वस्ति और विरेचन विधिकरे परंतु यह विधि ग्रीष्म ऋतु में करना चाहिये, तथा कफ-जन्य सुजाक में विरेचन, बमन, स्वेदन क्षार यवक्षे पदार्थ तीक्ष्ण और गरम द्रव्य दे, तथा त्रिदोष जनित मूत्र कृच्छ्र में पहले मालिश करे फिर जो पूर्व तीनों दोषों पर कर्म करनेके लिखे हैं सो करे मूत्राघातसे उत्पन्न सुजाक में बात जन्य क्रिया करे वीर्य के रुकने से उत्पन्न में शिलाजीत और शहत मिला अबलेह हित हैं, मलसे उत्पन्नमें स्वेदन कर्म चूर्ण किया उबटना और बस्ति कर्म, तथा पुराने ला चाँवल छाछ गो का दूध दही मूँगका रस शक्र पुराना पेठा परबल अदरख ग्वार का पाठा गोखरू खजूर सुपारी नारियल की गिरी, हर्र ताड़के वृक्षों की कोपल, ताल फलकी गुठली का गूदा, खीरा छोटी इलायची शीतल भोजन नदी का तट ये सब सुजाक में पथ्य है।

सुजाक में अपथ्य।

स्त्री प्रसंग, मदिरा, परिश्रम हाथी घोड़े की सवारी विरुद्ध भोजन, विषम भोजन पान मछली तेल की भुनी वस्तु अदरख तिलकी खल तिल सरसों हींग मलमत्रादि रोकना उड़द टेंटी अति तीक्ष्ण रूखेव खट्टे भोजन ये सब सुजाक में अपथ्य हैं।

पथरी रोग में पथ्य।

वस्ति कर्म, जुलाब, वमन लंघन स्वेदन जब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्रीड़ा जो कुलथी पुराने साठी चांवल मदिरा पुराना पेठा कसेरू, जल में उत्पन्न होने वाले शाक अदरक, पाषणभेद रेणुका गिलोय ये पथरी रोगमें पथ्य हैं।

पथरी रोग में अपथ्य।

मूत्र और वीर्य के वेगको रोकना खटाई पेट में गुड़ गुड़ाहट करने वाले पदार्थ, रूखा भारी अन्न पान ये सब पथरी रोगमें अपथ्य हैं।

प्रमेह रोग में पथ्य।

प्रमेह में प्रथम लंघन विरेचन वमन तथा प्रमेह नाशक अग्नि सन्दीपन पदार्थ पुराने तृणधान्य कांगनी जो बांसी चांवल कोदों सामा ज्वार नागर-मोथा पुराने गेहूँ शाली चाँवल कुलथी मूंग चना अरहर इनका यूष तिल खील पुरानी मदिरा शहत छाछ भैंसका मूत्र सरिजना परवल करेला ककोड़ा कटेरी गूलर लहसुननवीनकेला की गहर गोखरू आकके पत्ते गिलोय त्रिफला कैथ जामुन कसेरू कमलभसीडा कमल गट्टा खजूर कलियारी ताड़ वृक्ष की कोंपल सोंठ मिर्च पीपर तेंदू खदिर तरबूज तीखे और कषेले रस हाथी घोड़े की सवारी अति भ्रमण सूर्य की धूप दण्ड कसरत ये प्रमेह में पथ्य हैं।

प्रमेह रोग में अपथ्य।

मूत्र वेग का रोकना, स्नेह करना, धूम्रपान, फस्त अधिक देरतक बैठे रहना, दिन में शयन, नवीन अन्न दही पीठी के पदार्थ स्त्री प्रसंग, काँजी मदिरा मांस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिरका तेल बूध घी गुड़ तोंवी ताल फलकी मींगी विरुद्ध भोजन कुम्हडा ईख दुष्टजल खट्टा और मीठ और नमकीन रस ये सब प्रमेह में अपथ्य हैं।

उदर रोग में अपथ्य।

लङ्घन, जुलाब वमभर की कुलथी मूंग लाल चाँवल जौ मिश्री, शक्कर कच्ची दारू राहत छाछ लहसन अण्डी का तेल अदरख परवल करेला सांठ सहजना हर्र पान इलायची लोहभस्म ऊँटनी गाय भैंस का दूध व मूत्र दागना ये उदर रोग में पथ्य हैं।

उदर रोग में अपथ्य।

धूम्रपान व्यायाम (दंड कसरत) स्नेहकर्म फस्त, बमन पिट्ठी के पदार्थ मांस पत्तोका शाक तिल गरम दाहकारी नमकीन पदार्थ मूंग मोंठ आदि विरुद्ध अन्न दुष्ट जल भरी पदार्थ नदियों का जल पेटमें गुड़-गुड़ाहट करने वाले पदार्थ ये सब उदर रोगमें अपथ्य (अहितकारी) पदार्थ है।

शोथ रोग में पथ्य।

लङ्घन फस्त संशोधन स्वेदन लेपन पुराने शाली चाँवल जौ कुलथी मूंग पुराना घी छाछ, मदिरा राहत आसव करेला सहिजना लहसनकेकोड़ानई पतलीमूली हुलहुल गाजर परवलबेंतकी कोपल आंबले साठी चित्रक वकायन खँभारी, ताल मखाने के पत्ते अंडा का तेल कुटकी हलदी हर्र भिलावा गूगल लोहभस्म कड़ुवे तीखे और जठराग्नि दीपक पदार्थ गौ बकरी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भैंस का मूत्र कस्तूरी शिलाजीत तथा ये सब सूजन में पथ्य हैं।

शोथ राग में अपथ्य।

हवाखाना बहुत जलपीना मलमूत्र आदि वेगोंको कना विरुद्ध जल और भोजन मिट्टी खाना मांस नवीन अन्न गुड़ पिट्ठीके पदार्थ दही खिचड़ी मदिरा खटाई भारी पदार्थ आत्मा के बिरुद्ध भोजन मैथुन दाहकारी पदार्थ ये शोथ रोग में अपथ्य है।

उपदंश (आतशक) रोग में पथ्य।

वमन बिरेचन लिंगकी मध्यम गामिनी नाड़ीका वेधन जोंकें लगवाना सेचन प्रलेप जौ चाँवल मूंग का रस घी करेला सहिजने की फली परवल नवीन मूली कडुये कषैले रस शहत कुआ का जल तिलों का तेल ये सब उपदंश रोग में पथ्य हैं।

उपदंश रोग में अपथ्य।

दिनमें शयन मूत्रवेगका रोकना भारी अन्न मैथुन गुड़ खटाई छाछ ये उपदंश रोग में अपथ्य हैं।

कुष्ट रोगमें पथ्य।

पन्द्रवेंदिन वमन महीना महीना उपरांत जुलाब तीन तीन महीना पीछे नस्यकर्म छठे २ महीने फस्त घी लेप पुराने जौ गेहूँ चावल मूंग अरहर मसूर शहत आषाढ मास के ककड़ी खीरा आदि बेंत की कोंपल परवल कटेरीके फल कसेरू नींबके पत्ते लहसन हुलहुल साँठी मेढासिंगी पँवार के पत्ते भिलावा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पकाहुआ तालफल खैरसार चीता त्रिफला जायफल नागकेसर पुराना घी घीया तिलसरसों दोनों कंजा निबौली का तेल गोंदीके बीजोंका तेल हलक अन्न देवदारु अगरकातेल तथा गौ ऊँट घोड़ा भैंस इनका मूत्र कस्तूरी गन्धक कडुये पदार्थ क्षार कर्म ये सब कुष्ट रोग में पथ्य अर्थात् हितकारी हैं ।

कुष्ट रोग में अपथ्य ।

पापकर्म कृतघ्नता बड़ोंकी निंदा, बड़ों को धमकाना विरुद्ध अन्न जल दिनमें शयन धूप विषम भोजन स्वेदन मैथुन वमन वेगको रोकना ईख दण्ड कसरत खटाई तिल उड़दके पदार्थ पतले भारी तथा नवान्न भोजन दाहकारी और पेटमें गुड़गुड़ाहट करने वाले पदार्थ मूली विन्ध्याचल से उत्पन्न हुई नदियों का जल दूध मदिरा गुड़ ये सब कुष्ट में अपथ्य हैं ।

शीतपित्तादि रोग में पथ्य ।

वमन विरेचन लेप फस्तपुराने चांवल मूंगका रस कुलथी का रस ककोड़ा करेला सहजने की जड़ पोई का कासा बेंत की कोंपल अनार त्रिफला शहत कडुआ तेल गरम जल पित्त और कफके दूर करने वाले तथा कडुए तीखे कषेले पदार्थ ये सब शीत पित्त उदर्द व कोठ वाले मनुष्य को पथ्य हैं ।

शीतपित्तादि में अपथ्य ।

दूध ईखके बने पदार्थ मछली मांस मदिरा वमन के वेगको रोकना पूर्व दक्षिण दिशाकी पवन दिनमें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शयन स्नान विरुद्ध भोजन धूप खट्टे पदार्थ मधुर पदार्थ मैथुन भारी अन्न जलये सब शीत पित्तकोठ पित्त उदर्द इन रोगों में अपथ्य (अहितकारी) हैं।

विस्फोटक रोग में पथ्य।

वमन विरेचन लंघन सांठीचाँवल जौ मूंग मसूर चना मोंठ गौ का घी करेला बेंत की कोंपल आषाढ मास में पैदा होने वाले फल, ककड़ी, खीरा, आदि परबल मालकाँगनी नींमके पत्ते चन्दनतेल सफेद शक्कर तिलों का लेपन नागरमोथा बालछड़ ये सब पदार्थ बिस्फोटक (फोड़ा फुन्सी शीतला रोग) में पथ्य (हितकारी) हैं।

विस्फोटक रोग में अपथ्य!

स्वेदन मैथुन व्यायाम (दंड कसरत) क्रोध, भारी अन्न सूर्य की धूप वमन वेग को रोकना पत्तों के साग हवाखाना दिनमें शयन मांस मदिरा विरुद्ध भोजन तिल उड़द कुलथी अत्यन्त लवण खटाई कडूए पदार्थ दाहकारी रूखे और गरम पदार्थ ये सब विस्फोटक रोग में अपथ्य हैं।

मुख रोग में पथ्य।

वमन विरेचन स्वेदन कुल्ला मंजन केवल धारण फस्त नस्यकर्म धूम्रपान, शस्त्र और अग्निकर्म, जौ, मूग, कुलथी, करेला, परबल, छोटी मली कपूर को जल, गरम जल, पान, कत्था, घी, कडूए और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीखे पदार्थ, यह सब मुख रोग वाले को पथ्य हैं।

मुख रोग में अपथ्य ।

दांतून करना, स्नान, खटाई मछली माँस दही धूप गुड़, उड़द, रूखा अन्न, विषम भोजन कड़ा भोजन नीचे मुख करके शयन, भारी और अभिष्यन्दी पदार्थ दिनमें शयन ये सब मुख रोगमें अपथ्य हैं।

कर्ण रोग में पथ्य ।

वमन विरेचन स्वेदन नस्यकर्म, धूम्रपान, फस्त गेहूँ चांवल जौ मूंग पुराना घी, परवल सहजना बेंगन, चौपतिया, करेला संबप्रकारके रसायन प्रयोग ब्रह्मचर्य, मौन ये सब कर्ण रोग में पथ्य हैं।

कर्ण रोग में पथ्य ।

विपरीत अन्न और जलका सेवन मलमूत्रादि वेगोंको रोकना, बहुत बोलना, दांतन करना शिर स्नान दंड कसरत, भारी पदार्थों का सेवन, कान खुजाना ये सब कान रोगमें अपथ्य हैं।

नासारोग में पथ्य ।

पवनरहित स्थानमें निवास, बहुत बड़ी पगड़ीशिर पर बाँधना, कुल्ले करने लंघन नस्य, धूम्रपान, बमन फस्त चरपरे चूर्णको नाकमें डालकर भीतर चढाना स्वेदन स्नेहन शिर पर मालिश पुराने जौ और चाँवल, कुलथी, मूंगका यूष, बेंगन परवल सहिजना ककोड़ा, मूली, लहसन, दही, गरम जल सोंठ मिर्च पीपल कड़वे खट्टे नमकीन चिकने गरम तथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हलके भोजन ये सब नासा रोग में पथ्य हैं।

नासा रोग में अपथ्य।

विरुद्ध अन्न, दिनमें शयन, भारी पदार्थ, स्नान क्रोध, अधोवायुऔरमलमूत्रकेवेगकोरोकना, शोक, पतले पदार्थ पृथ्वी परशयन. ये नासारोगमें अपथ्य हैं।

नेत्र रोग में पथ्य।

औषधियोंका जल नेत्रोंमें टपकाना, अंजन लंघन स्वेदन विरेचन मंजन घृतादिसे पूर्ण करना रुधिर मोक्षण नस्यकर्म शस्त्रकर्मलेपनघृतपान सेंकमनको एकाग्र करना चरणोंको धोतेरहना मूंगलालचांवल जौ घड़ेका घी वनकुलथी का यूष लहसन परवल बैंगन ककोड़ा करेला नवीन केला नवीनमूली सांठ भाँगरा मकोय पत्तों का शाक ग्बारपाठा दाख धनियां सेंधालबण लोध त्रिफला शहत जूता पहिरना चंदन कपूर स्त्री का दूध सब प्रकार के तीखे और हलके पदार्थ ये सब नेत्ररोग में पथ्य हैं।

नेत्र रोग में अपथ्य।

अक्रोध शोक स्त्रीप्रसंगआँसुवोंकागिरनाअधोवायु मलमूत्र निद्रा वमन इन वेगों क ह। बारीक वस्तुओंको देखनादाँतनकरनास्नान रात्रिमें भोजन धूपमें बिचरना पतले पदार्थ धुवाँ आँखोंमें लगना नेत्रोंमें पसीना आने देना विरुद्ध अन्न वमन बारम्बार जल पीना दही पत्तोंका शाक तरबूज खल माँस मछली मदिरा पान खटाई दाहकारी पदार्थ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीक्ष्ण कड़वे गरम और भारी अन्न पानका सेवन ये सब नेत्र रोग में अपथ्य हैं ।

शिर रोग में पथ्य ।

स्वेदन नस्यविरेचन धूम्रपान लेपन बमन लंघन फस्त खोलना दागना लेप पुराना घी शाली और साँठी चाँवल दूध परवल सहजना दाख बथूआ आम आँबले अनार बिजौरा तेल छाछ काँजी नारियल हर्र कूट भांगरा घी ग्वार नागरमोथा खश चाँदनी सुगन्धित पदार्थ कपूर ये सब शिर रोग में पथ्य हैं ।

शिर रोग में अपथ्य ।

छींक जंभाई आँसू नींद मल इन वेगोंका रोकना दुखितजल विरुद्ध अन्न नदी में स्नान दाँतन करना दिनमें शयन ये सब शिररोग में अहितकारी हैं।

गर्भवती को पथ्य ।

साँठी और शाली चाँवल, मूंग, गेहूँ खील, सत्तू, माखन, घी, दूध, शिखरन, शहत, शक्कर, कटहर, केला, आँवला, दाख खट्टे मीठे और शीतल पदार्थ, कस्तूरी चन्दन, फूलोंकी माला, कपूर, चन्दनादिक का लेप, चाँवल, स्नान, ऊबटन, कोमलशय्या, शीतलवायु, तृप्तिकर्तापदार्थ, मनोहर बाणी, मनको प्रिय अन्नपान ये सब गर्भवती स्त्री को हितकारी हैं ।

गर्भवती को अपथ्य ।

वमन स्वेदन खार कलह विषम और विरुद्ध

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भोजन रात्रिमें भ्रमण करना चौर कर्म में प्रवृत्त होना अप्रिय वस्तुको देखना मैथुन परिश्रम बोझा उठाना भारी वस्त्रको ओढना सोने के समय जागना और जागनेके समय सोना कड़े आसन पर बैठना और सोना शोक भय निराहार मार्ग चलना मल मूत्रादि बेगोंका रोकना तीक्ष्ण गरमभारी और पेटमें गुड़गुड़ाहट करनेवाले पदार्थोंका वासी भोजन फस्त गडहा व कुवाँ में झाँकना माँस मदिरा चित्त लेटकर शयन करना तीखे खट्टे चरपरे कड़ूये कषेले पदार्थ नीचेसे ऊपर चढना, ऊपर से नीचे उतरना ये सब गर्भवती को अपथ्य हैं। आठ महीने पीछे रुधिर निकालने व वस्तिकर्म करनेसे गर्भ से बालक गिर जाता व सूख जाता व गर्भही में मरजाता है और बहुत खट्टे चरपरे कषेले तीखे व कड़वे पदार्थों के सेवन से बालक कुबड़ा लूला अन्धा जड़ तथा बामन (छोटा) प्रगट होता है। पित्तकरने वाले पदार्थों के सेवन से बालक गंजा और पीले शरीर का होता है अधिक कफकर्ता पदार्थों के सेवन से बालक कोढी और पाण्डु रोगी होता है।

प्रसूत रोग में पथ्य।

लंघन स्वेदन गर्भाशय और कोठों को शोधन उबटन तेलपान कड़ूए चरपरे और गरम तथा दीपन पाचन पदार्थ मदिरा पुराने साँठी चाँवल कुलथी लह-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन सहजना बेंगन मूली परवल बिजौरा खट्टामीठा अनार कफवातनाशक द्रव्य ये प्रसूत में पथ्य हैं।

प्रसूत रोग में अपथ्य।

परिश्रम फस्त नस्यमैथुन विरुद्धअन्न विषम भोजन मल मूत्रादि वेगोंको रोकना अपनी आत्माके विरुद्ध और प्रमाण से अधिक भोजन दिन में शयन पेटमें गुडगुडाहट करनेवाले पदार्थोंका सेवन भारी भोजन ये सब प्रसवकालमें स्त्रियोंको अपथ्य हैं।

बाल रोग में पथ्यापथ्य।

जो पथ्य और अपथ्य मनुष्यों के निमित्त ज्वर रोगमें कहाहै, वही अपनी बुद्धि और युक्तिसे बालकों के निमित्त जानना और जो आगन्तुक तथा उन्माद रोग में पथ्यापथ्य कहा है वह बालकों को पूतना आदि प्रसिद्ध रोगों पर पथ्यापथ्य जानना।

विषय रोग में पथ्य।

रक्षाबन्धन, यन्त्रमन्त्रक्रिया, वमन, विरेचन, विषयुक्तरुधिर, मोक्षण. जलछींटा, स्नान, हृदयको ढकना, नस्यकर्म, अंजन, मंजन, उबटन, लेप, दागनाधुआं देना ताकियालगाना, विषसे विषको दूरकरना चैतन्यकारक धूपदेना पुराने पतलेचाँवल, साँठीचाँवल, कोदौं, कांगनी मूंग, मटर, केलपुराना, नयाघी, बेंगन परवल, आंबले, चौरा, चोलाई, बड़ेपत्तेकीब्रह्मी, डौडी, चौपतिया, पोईका साक, नाड़ीकाशाक लहसन, अनार, कटेली, जलआंवले, हर्र, कैथ, नागकेशर, गौवकरी का मूत्र, छाछ शीतल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जव, शक्कर, दाद कोढ़ दूर करने वाले द्रव्य, सेंधालवण, शहत, केशर, पश्चिम और उत्तरकी पवन हल्दी सफेद चन्दन, मोथा, सिरस, कस्तूरी, चरपरे और मधुर पदार्थ, सुवर्ण भस्म ये सब यथा अवस्था यथा विष के अनुसार सब प्रकार के विष रोगमें पथ्य हैं।

विष रोग में अपथ्य।

क्रोध मैथुन पान परिश्रम विरुद्ध भोजन वायु सेवन सब प्रकार के खट्टे पदार्थ, सब प्रकार के नमक स्वेदन कर्म सब प्रकार के अचार निद्रा भय मधु-पान क्षुभित रहना ये सब विष रोगमें अपथ्य हैं।

रोग शंकर में अपथ्य।

इन पूर्वोक्त रोगोंका जो मेल हो जावे, तो वैद्य यत्न पूर्वक जो रोग मिल जाय उस रोगका जो पथ्य है, सो देवे, तथा जो रोग उलट जावे तो जिस जिस रोग में जो जो पदार्थ कहे हैं, उस पथ्य पदार्थ के विपरीत देके चिकित्सा करे।

रोग शंकर में पथ्य।

जिस जिस रोगमें जोजो वस्तु अहितकारी वर्णन करी हैं उस उस रोगमें विशेष करके रोगका वली-बल जाननेवाला वैद्य रोग शंकरमें त्यागकर देवे।

वात रोग में पथ्य।

मालिक उवटन शमन कर्ता पदार्थ स्नेहन स्वेदन एक आसन पर बैठना बहुत सोना हाथ पांव दवाना वस्तिकर्म नस्य कर्म वस्त्र ओढे रहना हवा बचाना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिर स्नान विसरण करना धूप स्नान शयन तेलसे पूर्णकुम्पी रसयुक्त गाढेलेप मदिरा पृथ्वीपर शयन नम कीन मीठे और खट्टे रसोंकासेवन मज्जा तेल चर्बी घी नये उड़द कुलथी तिल गेहूँ कलमी चाँवल सांठी चाँवल काँजी दूध खिचड़ी माँड कुछ गरम जल गौ मूत्र खसकाजल नारियल का जल गौ बैंगन परवल सहजना लहसन दाख आम आँवला अनार अमल बेतका फल बेर कैथ हर पका भया ताड़का फल शताबर गोखरू बथुआ क्षीर काकोली आमके पत्ते पान सफेद शकर अगर देवदारु गूगल पीपलामूल केशर चमेली के फूलोंकी सुन्दर माला ये सबवात-जरोग में पथ्य हैं।

वात रोग में अपथ्य।

रात्रिमें जागना चिन्ता बहुत बोलना फस्त खोलना वमन लंघन दंड कसरत हाथी घोड़े की सवारी मलमूत्र आदि वेगोंको रोकना स्त्रीसंभोग चोट लगना लंघन गिरना धातु क्षीण होना शोक व्यर्थ फिरना विरुद्ध भोजन दोषोंका पकना और बढ़ना वर्षा होना रात्रिका पिछला समय दिनका तीसरा पहर रूखा बहुत थोड़ा कसेला चरपरा कड़ुवा और क्षार ये पदार्थ तथा अति शीतल भोजन सब प्रकार के तुष धान्त (कोदों सामाजौ आदि)सेभी जामुन मटरमांस चना मूँग मटर भैंसीड़े सुपारी दसेरू तिल के बृक्ष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करेला तेंदू ककोड़ा नवीन ताड़ का फल तालफल के गुठली की मींगी नदी का जल तालाब का जल वर्षाकाजल क्षार जल पत्तोंकाशाक निसोत चिरायता कुटकी करीरफल शहद धुआँ बंधी पवन खरदरी खाट ये बात विकार में अपथ्य हैं।

पित्तज रोग में पथ्य।

धूम्रपान जुलाब फस्त मिश्री चाँवल गेहूँ वा तृणधान्य चनामूंग मसूरजौ वासीमांड दूध गिरीकाजल ईख शहत खीलघी शकर सोतेकाशीतलजल ककोड़ा केला कटेरीका फल बेंतकी कोपल आषाढी फलपर बल खीरा तोंबी पित्तपापडा मरसे के पत्तोंका शाक करेला अनार आँबले कोमल तालके पत्ते हर्र खजूर गूलर कुन्दरू कसेले तेल और मधुर रस खश महुआ, शतावरि, काँसा, लोहा, चांदी, और सुवर्णकी भस्म कुटकी, नीम निसोत चन्दन, महल, तहखाने सुन्दरी शीतपवन फुहारेवाला घर, चंद्रमाकी चाँदनी केला, और कमल के नवीन कोमलपत्तों पर शयन. शीतल वस्तुकाओं लेप. पृथ्वी पर शयन. हीरा पन्ना आदि मणियोंका धारण प्रदोष का समय, गीता कासुनना स्नान. प्यारी बातों का कहना और सुनना मंदगंद शीतलपवन, जलका छिरकाव, नीलकमल चमेली व कलिहारी के सुगन्धित फूल कपूर नदी का तट, ये सब पित्त जन्य रोगमें पथ्य हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिर स्नान विस्तरण करना धूप स्नान शयन तेलसे पूर्णकुम्पी रसयुक्त गाढेलेप मदिरा पृथ्वीपर शयन नम कीन मीठे और खट्टे रसोंकासेवन मज्जा तेल चर्बी घी नये उड़द कुलथी तिल गेहूँ कलमी चाँवल सांठी चाँवल काँजी दूध खिचड़ी माँड कुछ गरम जल गौ मूत्र खसकाजल नारियल का जल गौ बैंगन परवल सहजना लहसन दाख आम आँवला अनार अमल बेतका फल बेर कैथ हर पका भया ताड़का फल शताबर गोखरू बथुआ क्षीर काकोली आमके पत्ते पान सफेद शकर अगर देवदारु गूगल पीपलामूल केशर चमेली के फूलोंकी सुन्दर माला ये सबवात-जरोग में पथ्य हैं।

वात रोग में अपथ्य।

रात्रिमें जागना चिन्ता बहुत बोलना फस्त खोलना वमन लंघन दंड कसरत हाथी घोड़े की सवारी मलमूत्र आदि वेगोंको रोकना स्त्रीसंभोग चोट लगना लंघन गिरना धातु क्षीण होना शोक व्यर्थ फिरना विरुद्ध भोजन दोषोंका पकना और बढ़ना वर्षा होना रात्रिका पिछला समय दिनका तीसरा पहर रूखा बहुत थोड़ा कसेला चरपरा कड़ुवा और क्षार ये पदार्थ तथा अति शीतल भोजन सब प्रकार के तुष धान्त (कोदों सामाजौ आदि) सेभी जामुन मटरमांस चना मूँग मटर भँसीड़े सुपारी दसेरू तिल के बृक्ष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करेला तेंदू ककोड़ा नवीन ताड़ का फल तालफल के गुठली की मींगी नदी का जल तालाब का जल वर्षाकाजल क्षार जल पत्तोंकाशाक निसोत चिरायता कुटकी करीरफल शहद धुआँ बंधी पवन खरदरी खाट ये बात विकार में अपथ्य हैं।

पित्तज रोग में पथ्य।

धूम्रपान जुलाब फस्त मिश्री चाँवल गेहूँ वा तृणधान्य चनामूंग मसूरजौ वासीमांड दूध गिरीकाजल ईख शहत खीलघी शकर सोतेकाशीतलजल ककोड़ा केला कटेरीका फल बेंतकी कोपल आषाढी फलपर बल खीरा तोंबी पित्तपापडा मरसे के पत्तोंका शाक करेला अनार आँबले कोमल तालके पत्ते हर्र खजूर गूलर कुन्दरू कसेले तेल और मधुर रस खश महुआ, शतावरि, काँसा, लोहा, चांदी, और सुवर्णकी भस्म कुटकी, नीम निसोत चन्दन, महल, तहखाने सुन्दरी शीतपवन फुहारेवाला घर, चंद्रमाकी चाँदनी केला, और कमल के नवीन कोमलपत्तों पर शयन. शीतल वस्तुकाओं लेप. पृथ्वी पर शयन. हीरा पन्ना आदि मणियोंका धारण प्रदोष का समय, गीता कासुनना स्नान. प्यारी बातों का कहना और सुनना मंदमंद शीतलपवन, जलका छिरकाव, नीलकमल चमेली व कलिहारी के सुगन्धित फूल कपूर नदी का तट, ये सब पित्त जन्य रोगमें पथ्य हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पित्त रोग में अपथ्य।

धूम्रपान, स्वेदनकर्म, धूप, स्त्रीप्रसंग, मलमूत्रादि वेगों कोरोकना, क्रोध क्षारपदार्थ मार्गचलना हाथी व घोड़ा पर सवार होना दाहआदि तेजकर्म, कसरत, दाहकारी अन्न विरुद्ध भोजन, शरदागम, अर्धरात्रि, चाँवल, तेल लहसन, कुलथी, गुड़ भटरमास, मदिरा अलसी, जल, धानों की, काँजी, गरम जल जंभीरी खसका जल हींग कटहल गौमूत्र भिलावा पान दही सरसों बेर तेलपान इमली तथा गरम जल, जंभीरी खश का जल, हींग, कटहल, गौमूत्र, भिलावा, पान दही, सरसों बेर, तेलपान, इमली तथा चरपरेखट्टे नमकीन और दाहकारी रसादिपदार्थ ये सब पित्त रोग में अपथ्य हैं।

कफ रोग में पथ्य।

वमन लंघन अंजन मैथुन उबटन स्वेदन चिन्ता जागरण परिश्रम बहुत फिरना तृषाके वेगको रोकना कुश्ती करना मंजन हाथी घोड़े की सवारी धूम्रपान वस्त्रसे शरीर ढकना कुश्ती लड़ना क्षीर नस्यकर्म भय रुक्ष और उष्णविधि पुरानेशालि चाँवल साँठी चाँवल चौरा तृणधान चना मूंग कुलथी जौ खार गरम जल सरसोंका तेलराई बैंतकी कोंपलपरवल बैंगनगूलर ककोड़ा लहसन केलाकाफूल भांगजिमीं कंद नींम मूली पोईकाशाक, कुटकीनिसोत शहत, पान

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खसकाजल;पुराना मादरा त्रिफला गोमूत्र त्रिकुटा भुनेहुयेचाँवलोंकाकुछगरमभात,अदरख सुखदायक उष्णस्थान, काँस्य लोह सुरमा, मोतीचरपरे कडुये और कषेले रस, ये सब कफरोगमें पथ्य हैं।

कफ रोग में अपथ्य।

स्नेहनकर्म उबटन एक आसनबैठनादिनमें सोना स्नान विरुद्ध भोजन पूर्वान्हसमय शिशिरऋतुबसंत ऋतु,रात्रिजा प्रथम प्रहर, नयेचांवल भोजनसे पहिले नवीनअन्न, जलका सेवन उड़द मांस मछली ईख, दूधके पदार्थ कालफलकीगुठलीकीमींगी,द्रव्य पदार्थ पोईका शाक,कटहर छतौना आषाढ मास के फल, खजूरचन्दनादिलेप दूध,नारियलका जल,खीर,खट्टे मीठे नमकीन और भारी पदार्थ शीतल तथा तृप्ति कर्ता पदार्थ ये सब कफरोग में अपथ्य हैं।

मास प्रति अहित पदार्थ।

सावन दूध भादौं मही ! क्वार करेला कार्तिक दही अगहन धनियां पूसै जीरा। मिसिरी फागुन हीर। चैते गुड़ वैशाखे तेल । जेठे पंथ अषाढे बेल। इन वस्तुनको जोपरिहरै। तौन विपति में क्वहुँनपरै। हीर–चना परिहरै–त्याग करे।

अहित वैद्यादि।

ज्वान योगी वैद्यरोगी। शूर पीठी घावरे। कीमियांगर भीक माँगे, इन्हैं जनि पतियावरे।

यह जो पथ्यापथ्य वर्णन किया गयाहैसोयथोचित

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रीतिसे पथ्यापथ्य द्रव्योंका ग्रहण और त्याग करे जो वस्तु खानेकी है उसको खावे जो वस्तुलेपनकी हैं उस का लेप करे जो वस्तु जहाँ पर समझमें न आवे सो उत्तम वैद्यसे पूछले,क्योंकि एक दृष्टान्त है,कि लिखा देख भूले जनि कोई। बिनगुरु पूर्ण सिद्धि नहि होई

दो०—नारायण धरि ध्यान उर नारायण करतार।
पथ्यापथ्य नामक लिख्यो यह चतुर्थ अधिकार॥१॥

इति श्रीरसराज महोदधि भाषायां तृतीय भागे पथ्यापथ्य वर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकाराः ॥४॥

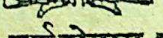

अथद्रव्यगुण (निघंटु) वर्णनोनाम पंचमोऽधिकारः ॥५॥

दो.-धन्वन्तरि पदध्याय;उर नारायण मन लायअब निघंटुअधिकार यह, लिखत सुअवसर पाय ॥१॥

१ पंचगव्य—गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोबर गोमूत्र यह पंचगव्य अनेकदोष नाशक है, अनेक पापों में प्रायश्चित करने को यह पाँच हैं।

२—षडूषड—पीपल,पीपलामूल,चव्य,चित्रक, सोंठ मिर्च,ये छःद्रव्यषडूषण कहाते हैं,यह गरम रूखे तथा विषनाशक हैं, इसमें गुण पंचकोलके समान हैं।

३—अष्टवर्ग—जीवक ऋषभक, मेदा, महामेदा काकोली, क्षीरकाकोली ऋद्धि वृद्धि इन आठों को मिलाकर अष्टवर्ग कहा है यह शीतल है, मधुर है धातुओंकी वृद्धि करने वालाहै भारी है,टूटे हाड़को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जोड़ने वाला है कामदेवको बढ़ाने वाला और कफ व बलको बढ़ाने वाला तथा बातपित्त प्यास, दाह, ज्वर प्रमेह क्षय इनको हरने वाला है।

४–दशमूल–बेल. अरणी, खम्भारि, स्योनाक, पांडरि, ओटीकटाई. बड़ीकटाई, सरिवन, पिठवन, गोखरू इन दशोंको दशमूल कहते हैं, इनका काढा श्वास कास शिरपीड़ा बातरोग तन्द्रा, ज्वर. अरुचि इनको मथा पसली की पीड़ा को दूर करे है।

५–सोना–इनके सुवर्ण कांचन हिरण्य चामीकर हाटक हेम आदि नाम हैं यह ठंडा बलकारी स्त्रीसंग में सुखदायक और भारी होकर बुढापे को दूरकरता है तथा कान्तिकारी होकर विष घबड़ाहट त्रिदोष ज्वर और शोथको जीत लेता है और कषेला व मीठा होकर अतीव लेखन रूप से रहता है।

६–चाँदी–इसके रजत रूप्यक आदि नाम हैं यह ठंडी दस्तावर बातपित्तको हरती बुढापे को नहीं लाती है तथा लेखनी कषेलो होकर पाक में खट्टी है और चिकनी होकर धातुवर्द्धक है।

७–ताँबा–इसके ताम्रआदिकनाम हैं यह दस्तावर हलका मीठा व ठंडा होकर पित्तकफको नाश करता हुआ घावों पर अंकुर जमाता है तथा पाँडु कोढ बवासीर सूजन दमा और खांसीको जीतता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८–काँसा–इनके कांस्य आदि नाम हैं यह गरम भारी और नेत्रोंके लिये हितकारी होकर कफ पित्त को जीतता है और दस्तों को लगाता है।

९–पीपल–इसके पित्तल आदि नामहैं यह ठंडी रूखी कडुवी और गरम है कफ पित्तको दूर करे है।

१०–राँगा–इसके वंग आदि नाम हैं यह हलका दस्तावर रूखा और गरम है प्रमेह कफ पाँडु और श्वास नाशक पित्तको प्रकट है। सीसा (नाग) में राँग के समान गुण है विशेषकर प्रमेह को दूर करता है।

११–जस्त–इसके जसद आदि नामहैं यह कषेला तीखा और ठण्डा होकर कफ पित्तको हरता है और नेत्रोंको हित तथा प्रमेह पांडु व दमाका नाशक है।

१२–लोहा–इसके लोह आदि नाम हैं यह दस्तावर भारी कषेला कफ पित्त हरता है तथा ठण्डा है नेत्रोंको हितकारी रूखा और बलकारकबात विकार को प्रकट करता है और सम रूप से रहता है तथा सूजन प्रमेह कोढ बवासोर कृत्रिम विष पांडु और कृमियों को जीतता है लोहकिट्ट में ये ही गुण हैं विशेषकर लोहकिट पाँडु रोग को जीतता हैं।

१३–पारा–इसके पारस रस आदि नाम हैं यह कृमि व कोढको नाश करता हुआ आंखोंके हितकर है तथा गरम होकर बुढापे को नहीं लाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१४ अभ्रक–इसके अभ्रक आदि नाम हैं यह भारी ठंडा बलकारी कुष्ठ प्रमेह और त्रिदोषों को दूर करता है तथा कृमि कुष्ट और प्रमेह को हरता है और उज्वल वीर्यकारी व मंदाग्नि का प्रकाश करने वाला होकर बल व वीर्य को बढ़ाता है।

१५ गंधक–इसके गंध आदिनाम हैं यह पाकमें कडुवा वीर्यमें गरम पित्तको प्रगट करता हुवा दस्तों को लाता है तथा कोढ खाजी तापतिल्ली कफ वायु और पारे से उत्पन्न रोगों को हरण करता है।

१६ सोनामाखीं–इसके माक्षिक आदिनाम हैं यह कषैलेहोके पुरुषार्थको बढा बिगड़ेस्वरको सुधारती है हलकी है बुढापेको नहींलाती औरनेत्रोंको हितकारी है औरकोढ सूजन बवासीर प्रमेह वस्तिरोग पांडु उदर रोग विषरोग खाजी इनको दूर करता है मैथुन में आनन्द को प्रगट करती है।

१७ मेनशिल–इनके मनशिला आदि नाम हैं यह खाजको हरने वाली दस्तावर लेखनी कडवी तीखी और गरम होकर विष, खाँसी, दमा, भूत दोष लोहू और कफको जीतती हैं।

१८ हरताल–इसके हरिताल गोदन्त आदि नाम हैं यह कडवा चिकना कषैला और गरम होकर विष, खुजली, मुखरोग. कोढ. कफ, पित्त. और बालग्रह दोषों को जीतता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१९ गेरू–इसके गैरिक आदि नाम हैं यह दाह पित्त, कफरक्त, विष और हिचकी को नाशती हुई नेत्रों को हितकारी है यही गुण सोना गेरू में जानना परन्तु विशेषकर वमन को दूर करती है।

२० कसीस–इसके कासीस आदि के नाम हैं यह खट्टा गरम और कडवा होकर केशोंको बढ़ाता है और नेत्रों को हितकारी तथा खुजली विष सफेद कोढ मूत्रकृच्छ कफ और वायुको विनाशकरे है।

२१ सिंगरफ–इसके हिंगुल आदि नाम हैं. यह कफ पित्त को हरता हुआ नेत्रों के लिए हितकारी है तथा विष व कोढ को दूर करता है।

२२ सिन्दूर–इसके सिन्दूर नागज आदि नाम हैं यह गरम होकर कुष्ट, खुजली, बिसर्प और विष को दूर करता हुवा टूटे को जोड़ देता है और घावों को शोधन कर अँकुरों को जमाता है।

२३ सुरमा–इसके सोबीर, अंजन आदि नामहैं, यह मीठी ग्राही नेत्रों को हित बात कफ नाशनी क्षयी और सेहुवा को दूर करता है तथा ठंडा है।

२४ रसौत–इसके रसांजन आदि नाम हैं, यह कडवा होके मुखरोग, कफरोग और नेत्र रोग को जीतता है तथा गरम रसायन तीखा और छेदन होकर घावों के दोषों को दूर करता है।

२५ पुष्पांजन–इसके पुष्पकेतु आदि नाम हैं,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह फुलबा खारा व गरम होकर कफ अर्म व पटल को दूर करता है।

२६ शिलाजीत–इसके शिलाजतु आदि नाम हैं, यह कडवा योगवाही, रसायन और गरम होके छर्दि प्रमेह वादी बवासीर, कोढ, मुखरोग, पांडु रोग, उदररोग, दमा, क्षयो, उन्माद, रक्त, सूजन, कफ और कृमियों को हरता है।

२७ फिटकरी–इसके स्फठिकाख्या आदि नाम है, यह कषैली और गरम होके कफ, पित्त विष, घाव सफेद कुष्ट और विसर्प को दूर करे है।

२८ समुद्रफेन–इसके समुद्रफेन आदि नाम हैं यह नेत्रों को गुण करता है, लेखन है, ठंडा है।

२९ मूँगा–इसके प्रवाल आदि नाम हैं, यह पुष्ट है, काँति बल और वीर्य का वृद्धि करता है।

३० मोती–इसके मौक्तिक, मुक्ताफल आदि नाम हैं, यह मीठा, ठंडा और रोगहारी होकर विष को नाश करता है।

३१ मणि–माणिक्य, सूर्यकान्ति, चन्द्रकान्ति, ा, हीरा, लसुनियाँ, मरकत इत्यादि अनेक मणि हैं और इनके पृथक २ नाम हैं, ये मणियाँ नेत्रों को हित करे हैं, ठंडी, कषैली, मीठी है तथा दाहव विष को शान्त करे हैं।

३२ शंख–इसके कम्बु आदि नाम हैं, यह नेत्रों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को हितकारी पाकमें कडवा, कषैला, औरमीठा तथा ठंडा व हलका है, कफ और रक्त का जीतना है।

३३ लघु शंख व कौडी, लघुशंख आदि छोटे शंख के नाम हैं और कपर्दिका आदि कीड़ों के नाम हैं ये दोनों हलके व ठंडे होकर नेत्ररोग और फोड़ा को दूर करे हैं।

३४ खडिया–इसके खंटी आदि नाम हैं, इसी का भेद गौडपाषाण व क्षीर पाक कहा है, यह दाह व रक्त को हरता है, और ठंडा है।

३५ कीचड–इसके पंक आदि नाम हैं यह दाह रक्तपित्त और सूजन को हरे है, और ठंडा व फैलने वाला होता है।

३६ बालू–इसके बालुका और सिकुता आदि नाम हैं, यह लेखनी व ठंडी होकर दाव और उरक्षत को विनाश करे है।

३७ चुम्बक–इसके कान्त पाषाण आदि नाम है, यह लेखन ठंडा होकर भेद रोग, विष और कृत्रिम विष को हरण करता है।

३८ काँच–इसके काँच आदि नाम हैं, यह व को गुण करता और फाड़ता है, तथा नेत्रों को हितकारी है और लेखन है।

३९ कदम्ब–इसके कदम्ब आदि नाम है, यह ठंडा है, कफ पित्त रक्त रोग को नष्ट करता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४० अर्जुन (कोह) इसके ककुभ आदि नाम हैं, यह ठंडा है और भग्न, क्षत, क्षय, विष और रक्त रोग को दूर करता है।

४१ शिरस–इसके शिरीष आदि नाम हैं, यह ठंडा है विगड़े वर्णको सुधारता है विष, विसर्प और सूजन को हरण करता है।

४२ बड़–(बरगद) इसके बट आदि नाम हैं यह ठंडा है और पाचक है, मलको बांधता है, तथा कफ पित्तव घाव को दूर करता है।

४३ पीपल–इसके पिप्पल आदि नाम हैं यह दुःखों को जीतता है और ठंडा है, कफ पित्त, घाव और रक्त रोगको दूर करता है।

४४ गूलर–उदुम्बर आदि नाम हैं यह ठंडा है घावों को गुण करता है, और कफ पित्त व रक्त रोग को जीतता है, तथा भारी है।

४५ पाकरि–इसके लक्ष आदि नाम है यह ठंडा है, घावों को दूर करता हुआ कफ, पित्त, सूजन और विसर्प को खींचते हैं।

४६ पंचक्षीरीवृक्ष–बट, पीपल, गूलर, पारस, पीपल, पाकरि ये पांच क्षार वृक्ष कहाते हैं इन्ही की छाल पंच बल्कला कहाती है यह ठंडा और पाचक है घाव सूजन और विसर्पको जीते है कोई वैद्य पारस पीपल के स्थान में सिरस और कोई वेतस लेते हैं,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा क्षीरवृक्ष ठण्डे होनेसे घावों को तथा योनि-दोषको दूर करते हुए टूटी हड्डियां जोड़ते हैं इनके पत्ते ठंडे व कब्ज करते हैं कफ पित्त और रक्त को दूर करे हैं और इनके फूल पेटमें गुड़गुड़ाहट करते हुये मलको बाँधते और रक्त पित्तको दूर करते हैं।

४७ नन्दीवृक्ष–इसके अश्वत्थ प्रभेद आदि नाम है यह पीपलवृक्ष के समान गुण करता है विशेषकर हलका व गरम विष नाशक है।

४८ बेतस–इसके बेतस आदि नामहैं, यह ठंडा दाह सूजन. बवासीर सुजान रुधिर विकार, पित्त व दमा कफ और वायुको दूर करता है।

४९ जलवेतस–इसके जलवेतस आदि नाम हैं यह ठंडा, काविज है. वायु और पितको दूर करता है।

५० लसोड़ा–इसके श्लेष्मान्तक आदि नाम हैं. यह बालोंके लिए हितकारी व गरम होकर विष फोड़ा घाव. विसर्प और कोढको जीतता है, तथा इसका फलभी पुरुषार्थ को बढाता हुआ बात पित्त क्षयी व रक्त रोगको जीतता है।

५१ साग–इसके शाक आदि नाम हैं, यह कफ वायु और लोहूको हरे है, गर्भ सन्धान को देने वाला है, ठण्डा है।

५२ शाल–इसके सर्ज रस आदि नाम हैं, यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कब्ज है, फोड़े को, कफ को, दमे को और विष हरे है ठण्डा है।

५३ खैर–इसके खदिर आदि नाम हैं यह ठण्डा है, दाँतोंको हितकारी है और कृमि, ज्वर, घाव, प्रमेह, सफेदकुष्ट, आमवात, रक्त पित्त पाँडू इन रोगों को दूर करता और कफको जीतता है, इसका सार भी विशदब बलकारी होकर मुख रोग कफ व रक्त रोग को जीतता है।

५४ सफेद खैर–इसके स्वेतसार आदि नाम हैं, यह भी खैर के समान गुण करता है।

५५ खैरजड़–इसके और भेद आदि नाम हैं,यह कषेली है, गरम है, मुख रोग और दाँत रोग को दूर करती है, तथा लोहूको खुजली को विष को कफको कृमि व फोड़े को दूर करती है।

५६ बबूल–इसके पीत पुष्पक आदि नाम हैं, यह कफकारी और कावेज है कुष्ट कृमि व विषको दूर करता है, इसका काढा सात दिन पीने से रक्त पित्त विकार को दूर करता है।

५७ बिजयसार–इसके बीजक आदि नाम हैं, यह विसर्प कोढ, प्रमेह, ज्वर, कफको दूर करता है बिगड़ी खालको सुधारता और बालों को बढाता हुआ बुढापे को दूर करता है।

५८ पीलू–इसके पीलु आदि नाम हैं, यह गरम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है, मन्दाग्नि को जगाता है और भेदी होकर रक्त पित्त को करता है, भेदी है, हलका है, गोला तापतिल्ली, वायु पथरी और कफको नाश करता है और रसायन है अर्थात् बुढापे को बिनाशता है।

५९ तेंदू–इसके तिनिश आदि नाम हैं यह कफ पित्त रक्त मेदीरोग कोढ और प्रमेह रोगको नाश करता है।

६० भोजपत्र–इसके भूर्ज आदि नाम हैं यह भूत दोष ग्रह दोष कफ रोग कर्ण रोग और रक्त पित्त को हरण करता है।

६१ ढाक–इसके पलाश आदि नाम हैं यह मन्दाग्नि और पुरुषार्थ को बढ़ाता दस्तावर है गरम है घाव व गोला को जीतता है टूटे हुए को जोड़ता है ग्रहणी बवासीर और कृमियों को नाश करता है इसका फूल कफ पित्त और मूत्रकृच्छ को जीतता मल को बाँधता है ठंडा है इसका फल हलका व गरम है और प्रमेह बवासीर कृमि व दुष्ट कफ को दूर करता है।

६२ धव–इसके नन्दितरु आदि नाम हैं यह ठंडा है प्रमेह रक्त पांडु पित्त और कफको नाश करता है।

६३ धामिन–इसके धन्वन आदि नाम हैं यह कषेला है हलका हैं कफ पित्त रक्त व खाँसीको जीतता है।

६४ सोजा–इसके सर्ज अर्ज कर्ण आदि नाम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं यह बिगड़े वर्णको सुधारता है और कफ पसीना मल पित्त और कृमियों को जीतता है।

६४ सहोरा–इसके शाखोट आदि नाम हैं वह वातरक्त कफवात और अतिसार को जीतता है।

६५ वरना–इसके वरुण आदि नाम हैं यह पित्त कारी व भेदी होकर मूत्रकृच्छ वक्त्रवात गोला वात रक्त कृमि और सूजन का दूर करता तथा मन्दाग्नि को जगाता है।

६६ झीगण–इसके जिंगिणी आदि नाम हैं यह घाव अतिसार हृदय रोग और वायु को जीतता है कड़वा है इसका सत गरम है नस्य लेने से वाहु पीडा को दूर करता है।

६७ सालक–इसके सल्लकी आदि नाम हैं यह घाव पित्त रक्त और अतिसार का जीतता है।

६८ हिंगोट–इसके ईगुद आदि नाम हैं यह ग्रह दोष भूतादिदोष, कोढ घाव. विष और हमियों को हरता है गरम है सफेद कोढ व शूल को हरता है इसका फल भी वायु विकार को दूर करता है।

६९ कटहा–इसके कटंभर आवि नाम हैं यह प्रमेह रक्तरोग, नाडीव्रण विष और कृमियोंको हरण करता है गरम है कफ व कष्ट को दूर करता है इसका फल कफ और वीर्य को हरता है, इसका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सतभारी है पुरुषार्थ वद्ध क व बलकारक व वायु को हरण करता है।

७० मोषा–इसके मुष्क आदि नाम हैं, यह कफ व वायु को विनाशता मल को बांधता और गुल्म विष व कृमियों को हरण करता है, गरम है, इसका वस्तिरोग खुजली, कफ व पित्त को जीतता है इस का सत धातुओं को अतीव पुष्ट करता क्षयी पित्त व वायु को विनाश करता है।

नींव पहाड़ी–इसके पारिभद्र आदि नाम हैं यह कृमि, कफ, मेद और कफ बातको दूर करता है।

७२ सेमर–इसके शाल्मलि आदि नाम हैं यह ठंडा है धातुओंको पुष्टकरता, वीर्यको बढाता, रक्त पित्त को जीतता है इसका गोंद पुरुषार्थको उपजाता हुआ सूजन पित्त और बात रक्तको दूर करता, तथा रसायन होकर चिकना रहता है इसका फूल काबिज होके पित्त को जीतता है।

७३ तुनि–इसके तुणि आदि नाम हैं यह ठँडी है मलको बाँधती है धातुओं को पुष्ट करती घाव, कुष्ट व रक्त पित्त को दूर करता हैं।

७४ सातला (दात्यूण)–इसके सतवर्ण आदि नाम हैं यह दस्तावर है और घाव कफ व कुष्ट राग को दूर करे हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७५ हारिद्र-इसके हारिद्रक आदि नाम हैं यह कफहर्ता घावोंकोशोधता और अंकुरोंको जमाताहै।

७६ कंजा-इसके करंज आदिनामहैं, यहगरम है कडुवा व तीखा है योनिदोषको जीतता है, कुष्ठा, गोला उदावर्त, बवासीर घाव कृमि व कफको दूर करता है, इसका फल कफ बात, प्रमेह, बबासीर, कृमि व कोढ को जीतता है, इसके पत्ते कफ, बात, बवासीर कृमि और सूजन को हरते हैं।

७७ करंकी-इसके करंजिका आदि नाम हैं यह गरम है, वायु, बवासीर, कृमि, कुष्ट, और प्रमेह को हरण करता है।

७८ तिरगिछी-इसके क्षीरिणी आदि नाम हैं, यह कफ,बवासीर,कृमि,कोढ और प्रमेहको हरताहै।

७९ जड़ी (छोंकरि इसके शमी आदि नाम हैं, यह ठंडी,हलकी,दमा,कोढ,बवासीर व कफको हरण करे है,दस्तावरहै, इसका फल पित्तकारी व रूखाहै, बुद्धि वर्द्धक और बालों को दूर करता है।

८० रीठा-इसके आरिष्टादि नाम हैं,यह त्रिदोष नाशकहै, गरमहै, गर्भ व ग्रहदोषको दूर करताहै।

८१ शीशम-इसके शिंशपा आदि नाम हैं, यह गरम है, प्रमेह, कोढ,छर्दि, कृमि, वस्तिरोग, घाव, दाह, रक्तविकार को दूर कर गर्भ गिराता है।

८२ अगस्त-इसके अगस्तादि नाम हैं, यह गरम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है और पित्त कफ को जीतता है, इसका फूल पीनस, कफ पित्त व रतौंधी को दूर करता है।

८३ दाख–इसके द्राक्षा आदि नाम हैं पकी हुई दस्तावर ठंडी नेत्रों को हितकारी हैं, धातुओं को पुष्ट करती है भारी है, प्यास, ज्वर, दमा छर्दि बात रक्त, कामला मूत्रकृच्छ, रक्तपित्त, मेह, दाह क्षयी को हरे है, कच्ची दाख भारी और अल्प गुणकारी है खट्टी दाख रक्तपित्त नाशक छोटी दाख वीर्य रहित होती है, पहाड़ी दाख हल्की होकर खट्टेपन समेत कफ व अम्लपित्त को दूर करती है।

८४ आम–इसके चूत आदि नाम हैं, यह ग्राही है प्रमेह, रक्त, कफ व घावों को जीतता है, कच्चा फल खट्टा रूखा त्रिदोष व रक्तनाशक है पकाहुआ फल मीठा वीर्य वर्धक व चिकना हृदय को हित बल को बढाता है, तथा भारी बातहारी व रुचिकारी है। इसका रस दस्तावर, चिकना और रुचि को बढाता है तथा भोजन की रुचि उपजाता है रंग को अच्छा करता है।

८५ जामुन–इसके जम्बू आदि नाम हैं, यह कविज है कफ को पित्त को फोड़े को लोहू को दूर करे है, छोटी जामुन दाह को दूर करे है।

८६ नारियल–इसके नारिकेल आदि नाम हैं, यहठंडा, मूत्राशयको शुद्धकरताहै, तथा दाहको हरता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है इसका पानी ठंडा है, बलको बढाता है दीपन है, वीर्यको बढाता है हलका है इसकी मींगी वीर्य को प्रगट करे है, और वायु व पित्ताको जीते है।

८७ छुहारा खजूर--इनके श्रेणी खर्जूरिकाआदि नामहैं इनका फल ठंडा, मीठा, व चिकना होकर घाव व रक्तको जीतताहै, तथा बलदायक होकरबात, पित्त मद मूर्च्छा को नाश करता है, इसकी गिरी भी मस्तक रोगको हरती ठण्डी व पुरुषार्थ को उपजाती हुई पित्त, रक्त और दाहको जीतती है।

८८ केला--इसके कदली आदि नाम हैं यह योनि दोष, पथरी और रक्त पित्तको हरती है, ठण्डी है इसका कंद ठण्डा है, बलको करता है, बालों को बढाताहै, और पित्त, कफ व रक्तको जीतताहै, इसका फल मीठा ठंडा कफकारी, भारी और चिकना है पेट में गुड़गुड़ाहट करता है, तथा पित्त रक्त प्यास, दाह क्षत, क्षयी और बात को जीतता है।

८९ अनार--इसके दाडिम आदि नाम हैं, यह मन्दाग्नि नाशक हृदयको हित व रुचिको बढाता है पितको नहीं करता है, और कषेला, खट्टा काविज मीठा है, त्रिदोषको दूर करता है, खट्टा अनार वायु वलको करता है, व रक्तको जीतता है, इसका रस कफ व वायुको विनाशता है।

९० बेर--इसके वदरीआदि नाम हैं, यह बेर कई प्रकारके हैं यह ठंडा, तेज रूखा पित्त व कफको नष्ट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करता है, पका हुआ गूदेदार बेर मीठा होता है सो हलका बलकारी, ग्राही रुचिकारी व गरम होकर वायुको जीतता और कफ पित्तको करता है सौवीर नामक बेर ठंडा भेदी व भारी होकर वीर्य को उपजाता हुआ धातुको पुष्ट करता है, और पित्त दाह रक्त क्षत प्यास, और वायुको हरता है, तथा सूखा बेर भेदी अग्निकारी हलका प्यास, ग्लानि व रक्तको जीतता है, तथा छोटा बेर मीठा चिकना, भारी पित्त व वायुको नाश करता है, इसकी गिरी वात पित्तको जीतती धातुको पुष्ट करती है।

९१ खिन्नी--इसके क्षीरी आदि नाम हैं, इसका फल ठंडा चिकना भारी बलदायकहोकरप्यास, मूर्च्छा मद भ्रम, क्षयी, त्रिदोष, और रक्त रोगको जीतता है।

९२ चिरौंजी--इसके चिरं आदिनाम हैं, यह पित्त कफ लोहूको दूर करे है, उसका फल मीठा है भारी है चिकना है, वायु, पित, दाह, प्यास व क्षतको दूर करता है, इसकी मींगी मीठी है, पुष्ट है वीर्यको बढाती है वायु व पित्ताको जीते है।

९३ फालसा--इसके परूषक आदि नाम हैं यह कषेला है, खट्टा है आंव व पितको करता है, हलका है, इसका पकाफल पाकमें मीठा ठंडा व विष्टम्भी (पेटमें गुड़गुड़ाहट करने वाला) है, धातुको पुष्ट करता है हृदय को बल देता है, प्यास, पित्त, दाह,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रक्त क्षत, क्षयी और वायु को दूर करता है।

९४ तेंदुवा–इसके तिन्दुक आदि नाम हैं, दूसरा विष तिन्दुकभी कहाता है, यह वायु को हरण करता है, इसकासार पित्तरोग नाशक है, इसका कच्चा फल ग्राही तातकारी व ठंडा होता है. हलका पका हुआ फल पित्त, प्रमेह, रक्त और कफको विनास करता है, विशेषकर मलको बोंधता है।

९५ कांकई–इसके किंकणी आदि नाम है यह कषैली है, कडुवी है, पित्त व कफको हरती है ठंडी है, इसका कच्चा फल वायु को करता है त्रिदोष को विनाश करता है।

९६ महुवा–इसके मधूक आदि नाम हैं यह कफ व वायुको हरता है कषैला है, घावों पै अंकुरों को लाता है इसका फूल मीठा बलकारी, ठंडा व भारी होकर धातुको पुष्ट करताहै, इसका फल ठंडा. भारी व मीठा है, वीर्य को बढ़ाता बात पित्त को जीतता और हृदय को हित पहुँचाता है, तथा प्यास रक्त दाह, दमा क्षत व क्षयी को दूर करता है।

९७ कटहर–इसके पनस आदि नाम हैं, इसका पकाफल ठंडा व चिकना है, पित्त व वायुको हरता है बलदायक है, वीर्य को बढाताहै, और रक्तपित्त क्षत व क्षयीको दूरकरताहै, कच्चाफल पेटमें गुड़गुड़ाहट करके वायुको उपजाता है, कषैला व हल्काहै।

९८ वडहल–इसके लकुच आदि नाम हैं, यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भारी, विष्टम्भी, मीठा व खट्टा है, रक्त पित्त और कफ को करता है, वायु को जीतता, गरम होकर वायु व वीर्य को अपहरण करता है।

९९ ताड–इसके ताल आदि नाम हैं, यह ठंडा है, वात पित्तको व घावको जीतता है, मद व वीर्य को करता है इसका फल ठंडा बलकारी चिकना स्वादिष्ट रसवाला, भारी व विष्टम्भी (पेटमें गुड़-गुड़ाहट करने वाला) होकर बात, पित्त, रक्त, क्षत और दाह को दूर करता है इसका बीज मूत्र को बढ़ाता, वात पित्त को हरता है, ठंडा है।

१०० खरबूजा–इसके फलराज आदि नामहैं यह मूत्रकारी, बलकारी, कोष्टशुद्धकारी, भारी चिकना, मीठा व ठंडा होकर पुरुषार्थको बढाताहै, तथावात पित्तको हरता है, और जो सब प्रकार के खरबूजों में से जो खट्टा व मीठा व रससे खारा होता है वह रक्त पित्त और मूत्रकृच्छ को दूर करता है।

१०१ सेव–इसके मुष्टि प्रमाण आदिनाम हैं यह ठंडा, भिरानेवाला, चिकना, मूत्रकारी है, तथा त्वग्दाह अन्तर्दाह व पित्तसे उपजे उत्कम्प संचित मल, ज्वर और विषको दूर करता है, तथा बा. पित्तहारी व भारी होकर धातु को पुष्ट करता है।

१०२ नासपाती--इसके अमृताह आदि नाम हैं यह गरम बातहारी मीठी व खट्टी होकर रुचि व वीर्य को बढाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१०३ बादाम–इसके बादाम सुफल आदि नाम हैं यह गरम है, अत्यन्त चिकना है, वात नाशक है बल और वीर्य को बढाता है।

१०४ पिस्ता–इसके निकोचक आदि नाम है, यह भारी चिकना है स्त्री रमणमें गुणकारी है गरम व मीठा होके धातुको बढाता हैं, रक्तको बदलता बात को नाशता कफ व पित्त का करता है, यही गुण चिलगोजा में भी जानना।

१०५ आडू--इसके आल्लूक आदि नाम हैं, यह रसमें ठंडी,मीठी व खट्टाहोके बात पित्ताको हरताहै।

१०६ अंजीर--इसके अंजीर आदि नाम हैं, यह ठंडा मीठा व भारी होकर रक्त व बातको जीतता है

१०७ अखरोट--इसके अक्षोटक आदि नाम हैं यह मीठा है, बलकारी, भारी व गरम होकर वायु को हरता हुआ दस्तावर होता है।

१०८ पालेबत--इसके पालेबत सिन पुष्प आदि नाम हैं, यह ठंडा मीठा भारी व गरम होके अग्नि वायुको जीतता है, दूसरा महापालेवत हृदय को बल करता हुवा खट्टा होकर तृषाको दूर करता है।

१०९ शहतूत--इसके तूत, तूद आदि नाम हैं, यह भारी ठंडा पका हुआ मीठा होके पित्त व वायु को दूर करता हैं।

११० गंगेरुवा--इसके गंगेरुक आदि नाम हैं यह दस्तावर है, भारी हैं, बात रक्तको जीतता हैऔर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तोदन नाम वाला ग्राही व मीठा होकर बात रक्तको हरता हुआ हलका होता है।

१११ तुम्बर—इसके तुम्बरा आदि नाम हैं, यह खट्टा व गरम होकर पित्तको प्रगट करता हैं, समुद्र में उपजे केशर के समान सुशोभित तुम्बर भिलावे के समान गुण करता है, तुम्बर कफको जीतता, फोड़े व प्रमेह को उपजाता है।

११२ बिजौरा—इसके बीजपुर आदि नामहैं, यस रुचिबर्द्धक है, रस में खट्टा होकर मन्दाग्नि को जगाता हुआ हलका हैं, तथा रक्त पित्त व बिगड़े कंठको सुधारता जीभ व हृदय को शोधता है, इस का गूदा धातुबर्धक ठंडा भारी पित्त व वायुको जीतताहै इसका केशर हल्का मल बन्धनी शूल गोला व उदर रोगको दूर करता है इसका बीज गरम है कृमि कफ व वायुनोशक तथा भारी है, इसका फूल बातकारी मलबन्धक रक्त पित्तकारी व हलका है और शूल अजीर्ण अफरा कफ वायु अरुचि दमा खांसी में इसके रस उत्तम हैं।

११३ मधुककड़ी—इसके मधुकर्कटिका आदिनाम हैं यह ठंडी है, रक्तपित्तको हरती है भारी है इसकी जड़ बिशूचिका और कानकी सूजन को हरती हैं।

११४ नारंगी—इसकेनारंगी नागरंग आदि नाम हैं यह मीठी व खट्टी है गरम है, बात पितको बढाती है, दस्तावर हैं और देर में पचती है बहुत खट्टी नारंगी बातको हरती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

११५ जम्भीरी नींबू-इसके जम्बरिक आदि नाम हैं यह खट्टा शूल नाशक व भारी व गरम होकर बात कफ को जीतता है मुख का विरसपना, हृदय पीड़ा मन्दाग्नि और कृमि रोग को दूर करता है।

११६ अम्लवेत-इसके अम्लवेतस आदि नाम हैं यह गरम भेदन व हलका है मन्दाग्नि को जगाता है हृदय रोग शूल और गोला को दूर करता है तथा भारी होकर पित्त तृषा व कफको दूर करता है।

११७ साराम्ल-इसके साराम्लक आदि नाम हैं यह वातनाशक भारी पित्त कफको दूर करता है।

११८ नीबूराजनिम्बू-इसके निम्बूक राजनिम्बूक आदि नाम हैं यह खट्टा बातनाशक व पाचक है मन्दाग्निको जगाता है, हलका है, राजनिम्बू मीठा भारी है, पित्त वायुको दूर करता है।

११९ कमरख-इसके कर्म रंग आदि नाम हैं, और पित्त को दूर करता है।

१२० इमली-इसके आम्बिका आदिनाम हैं कच्ची इमली भारी है, वायु को हरती है पित्त रक्त को जीतताहै पक्की इमली भारी है रुचि को उपजाती है, अग्निको बढाती है, मूत्राशय को शुद्ध करती है सूखी इमली हृदयको बल देती है व परिश्रम भ्रम प्यास और ग्लानिको हरती हैं, हलकी है।

१२१ तिन्तडीक-इसके तिन्तडीक, वृक्षाम्ल आदि नाम हैं, यह कच्चा बात नाशक व गरम होकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भारी रहताहै, और पका हुआ हलका व कविजहैं ग्रहणी कफ व वायुको दूर करता है ।

१२२ करौंदा इसके करमर्दी आदि नाम है,यह भाराहै खट्टा हैं. गरम है, रक्त पित्त व कफको प्रगट करता है पका हुआ मीठा व रुचिकारी होकर हलका हैं पित्त व वायुको हरता हैं ।

१२३ कैथ-इसकेकपित्थकआदि नाम हैं यह मल बन्धक है त्रिदोष को हरता है, हलका है, पका कैथ भारी है, प्यास व हिचकोको दूर करता है, बातपित को जीतता है, तथा खट्टा कषैला, होकर कंठको शोधता है, मलको बांधता है ।

१२४ कैथपत्री-इसके कपित्थपत्री आदि नाम यह तीखा गरम प्रमेह और विषको हरता है ।

गुणागुणविचार ।

१—शीतकालमें अथवा भोजन करनेके उपरान्त रुधिर निकलवा (फस्त खुलवाना) अयोग्य है ।

२—वर्षाकाल में कोष्ट शुद्ध करना (जुलाब लेना) अत्यन्त हानि कारक है ।

३—बहुत खटाई खाने से पट्ठे शिथिल हो जाते हैं कि जिससे चलना फिरना, बैठना, उठना कठिन हो जाता है ।

४—जिनको माँस खाने में रुचि है उनकी योग्य है कि हींग के सं नहीं खावे हींग के साथ माँस मृत्यु भय को देता है ।

५—बहुत मसूर खाने से बुद्धि मलीन हो जाती है और शरीर क्षीण हो जाता है ।

६—शीतल प्रकृति वाले को शहत सेवन अच्छा है ।

७—बहुत नारंगी खाना व नारंगी रस सेवन करना हृदय को निर्बल करता है ।

इति श्री रसराज महोदधि तृतीय भाग ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीहरिः ॥

रसराज महोदधि

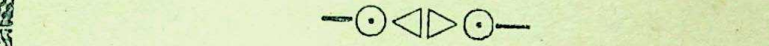

चौथा भाग

जिसको—

लखीमपुर निवासी पं० नारायणप्रसाद सीताराम मिश्र ने

अनेक ग्रन्थों के अधार से बनाया।

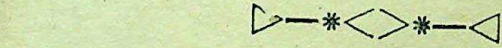

उसको—

किशनलाल द्वारकाप्रसाद ने अपने

बम्बई भूषण यन्त्रालय में छापकर

प्रकाशित किया।

सर्वाधिकार सुरक्षित है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ रसराजमहोदधि के चतुर्थ भागकी

अनुक्रमणिकाः

विषय	पृष्ठ
नं० नाम प्र०	पृष्ठांक
अथ मंगलाचरण	१
सर्व हितकारी दोहा	,,
प्रथमाधिकार प्रारम्भ	
महामारी उत्पत्ति समय	३
,, ,, वर्णन	५
उत्पन्न होने के विशेष लक्षण	१२
द्वितीय अधिकार	
महामारी लक्षण वर्णन	२१
तृतीयोऽधिकार	
हितोहित वायु विचार	२८
वायु शुद्धि कारक यत्न	३३
महामारी से बचनेका उपाय	३५
महामारी रोग यत्न	३८
प्यास और भूख पर विशेष यत्न	४१
वमन होने पर यत्न	४३
वमन में रुधिर गिरने पर औषधि	४४
महारोग शांति निमित्त विशेष यत्न	,,
महारोग की गाँठ गिलटी पर लेप	४५
गिलटी पकाने फोड़ने की औषधि	४८
महाज्वर यत्न	५०

विषय	पृष्ठ
शीतांग और चित्तभ्रम पर औषधि	५०
दस्तकी आवश्यकता पर यत्न	,,
चतुर्थोधिकार	
उपदंश रोगोत्पत्ति लक्षण	५८
बात से प्रगट उपदंश का	,, ५९
पित्त से ,,	,,
कफ से ,,	,,
असाध्य उपदंश	,,
उपदंश में खाने की औषधि	६१
उपदंश नाशक काढ़ा	७१
उपदंश नाशक गोली	,,
,, लेप (मरहम)	७३
,, जुलाब	,,
आतशक पर माजून	७४
मूत्रकृच्छ्र (सुजाक)	,,
रोगोत्पत्ति लक्षण	
मूत्रकृच्छ्र के सामान्य लक्षण	७५
बात मूत्रकृच्छ्र के लक्षण	,,
पित्त से ,,	,,
कफ के ,,	,,
सन्निपातके मूत्रकृच्छ्रके लक्षण	७६
चोट लगने के ,,	,,
मल रोकने के ,,	,,
वीर्य रोकने ,,	,,
पथरी के ,,	,,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) में जुलाब	७६
मूत्रकृच्छ्र रोगमें इन्द्रीजुलाब	७८
वीर्य रुकने से उत्पन्न मूत्रकृच्छ्र का उपाय	७९
मलरुकने से मूत्रकृच्छ्र की औ०	,,
योनि दोष से उत्पन्न मूत्रकृच्छ्र का यत्न	८०
चोट लगने ,,	,,
सर्व प्रकार के ,,	,,
अर्श रोगोत्पत्ति लक्षण	८८
बवासीर का पूर्वरूप	८९
बात की बवासीर के कारण	९०
,, लक्षण	,,
पित्त की बवासीर के कारण	९१
,, लक्षण	,,
कफकी बवासीर के कारण	,,
,, लक्षण	९२
द्वंद्वज बवासीर के कारण	,,
त्रिदोषकी बवासीरके कारण	९३
सन्निपात और सहज बवासीर के लक्षण	,,
असाध्य बवासीर के लक्षण	९४
बात को बवासीर का यत्न	,,
बवासीर के मस्सों पर लेप	९५
अर्श नाशक एलादि चूर्ण	९६
वृहद्सूरण मोदक	,,
खूनी बवासीर की औषधि	९७
कफ की बवासीर का यत्न	९८
सन्निपात ,,	९९
बवासीर की औषधि	,,

विषय	पृष्ठ
बवासीर की गोली	१००
बवासीर रोगमें पथ्यापथ्य	१०१
भगन्दररोग की उत्पत्ति	१०३
,, लक्षण	,,
,, यत्न	१०४
प्रमेह रोग उत्पत्ति	१०६
प्रमेह का पूर्व रूप	१०७
,, औषधि	,,
श्वेत प्रमेह की औषधि	१०८
पीले ,,	,,
मूत्रिया ,,	,,
लवणक्षार ,,	,,
घृत प्रमेह की	,,
बीस प्रकार के प्रमेहों की औषधि	,,
कास (खाँसी) रोग की उत्पत्ति	११०
खांसी का पूर्वरूप	,,
बात की खांसी के लक्षण	१११
पित्त की ,,	,,
कफ की ,,	,,
क्षतज खांसी उत्पत्ति के लक्षण	,,
क्षयी रोग से उत्पन्न खांसी का लक्षण	११२
खांसी के असाध्य लक्षण	,,
खांसी की औषधि	,,
कटेली का अवलेह	११३
खांसी की गोली	११४
कासांतक बटी	११७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
हिक्का (हिचकी) रोग की उत्पत्ति लक्षण	११७
हिचकी का पूर्वरूप	११८
६८ अन्नजा हिचकी लक्षण	,,
यमला हिचकी लक्षण	,,
क्षुद्रा हिचकी का लक्षण	,,
गंभीरी हिचकी लक्षण	११६
महती हिचकी का लक्षण	,,
हिचकी रोग की औषधि	,,
श्वास (दमा) रोग की उत्पत्ति	
लक्षण	१२१
श्वास रोग का पूर्व रूप	,,
ऊर्ध्व श्वास के लक्षण	,,
महाश्वास के लक्षण	,,
छिन्न श्वास के लक्षण	,,
तमक श्वास लक्षण	१२३
क्षुद्र श्वास	,,
श्वास रोग की औषधि	१२४
स्वर भंग की औषधि	१२७
अरुचि रोग की औषधि	१२८
क्षयी रोग की औषधि	१२६
रक्तपित्त की औषधि	,,
अंड वृद्धि निवारण	१३०
कुष्ठ रोग निवारण	,,
अम्लपित्त की औषधि	,,
उदररोग (शूल) की औषधि	१३१
शूला नाशक काढ़ा	१३२
उदावर्त रोग की औषधि	,,
शूला व वायुगोला की	,,
हृद्रोग की औषधि	,,

विषय	पृष्ट
तिल्ली की औषधि	१३४
विषूचिका रोग की औषधि	१३५
कृमिरोग की औषधि	१३६
कोष्टबृद्ध विनाशक चूर्ण	१३७
वमन की औषधि	,,
रोगभय नाशक औषधि	१३८
वायु विनाशक औषधि	,,
मृगोरोग की औषधि	,,
पथरी रोग की औषधि	१३६
वातव्याधिरोग की औषधि	,,
मूर्च्छारोग की औषधि	१४०
शीतांग रोग पर धरा	१४१
सेहुबां की औषधि	,,
शिर पीड़ा पर औषधि	,,
दंत पीड़ा पर औषधि	१४२
नेत्र पीड़ा निवारण	,,
कर्ण पीड़ा औषधि	१४३
शिरगंज की परीक्षित औ०	,,
दाद खाज की औषधि	,,
बालक के ज्वर औषधि	१४४
,, अतिसार की औषधि	,,
बालक के दूध डालने की औ०	,,
,, खाँसी की औ०	,,
सूजन पर औषधि	,,
बालक के अधिक रोने की औ०	,,
बाल लक्षादि तेल	१४५
लाक्षादि तेल	१४६
नारायण तेल	१४७
वात नाशक तेल	१४८
पीनस रोगनाशक तेल	,,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
कर्ण रोगान्तक तेल	१४६
आनंद भैरव गोली	,,
अथ द्रव्यगुण (निघंटु) की अनुक्रमणिका	
अम्बाड़ा, राजाम्र	१५७
सुपारी पान लवली	१५१
कुम्हड़ा पेठा तरबूज	
तुम्बी मोठो	१५२
खोरा गोसव ककड़ी एलुआ	
सेव तुरई	१५३
घिया तुरई रामतुरई, बैंगन सफेद	
बैंगनकुंदरू करेला	१५४
ककोड़ो बांझ ककोड़ी ढेंड़स	
सुआरासेम सेम	१५५
बथुआ लालबथुआ सफेद बथुआ	
नारीशाक चौलाई मरसा	
परवल	१५६
चचेडा पालक पोई लोनियाँ	,,
सुषेण फजी रुटिया नसिया	
कुरण्ये नलवा सरसों	१५८
चना का शाक गाजर मूली	१५६
करीर सहिजना लहसन	१६०
प्याज जिमीकन्द हड संहारी	
बाराहीकन्द मुसली	१६१
कंचुक धरती काफूल मानकंद	
कसरू सिंघाड़ा आलू	१६२

विषय	पृष्ठ
केलूठ जल	१६३
दूध	१६८
गाय दूध बकरी का दूध	१५६
स्त्री का दूध ऊंटणी का दूध	
हथिनी का दूध घोड़ी का	१७०
दही	१७१
गाय का दही बकरी का दही	
भेंड़ी का दही भैंस का दही	
हथिनी का दही	१७२
ऊंटनी का दही घोड़ी काद	१७३
छाछ (मठा) माखन	१७४
घी	१७५
तेल अंडी का तेल	१७६
कडुवा तेल नीम्ब का तेल	१७७
मदिरा अगूरी मदिरा काँजी	१७८
गौ आदिका मूत्र ईख रावड़	
गुड़	१७६
मिश्री शक्कर शहद	१८०
मोम लाल चावल	१८१
साठी चावल गेहूं जौ	१८२
मूग उड़द लोबिया मसूर	१८३
मोठ, मटर, बटरी चना	
कुलथी तिल	१८४
अरहर अलसी सरसों राई	
कुसुम सन	१८५
तिन्नी ज्वार गोहुवा काकुनि	
कोदों श्यामा महुआ	१८६

॥ इतिसम्पूर्ण ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीः ॥

वैद्यकग्रन्थ

रसराज महोदधि भाषा प्रारंभः

चतुर्थ–भाग ।

अथ मंगलाचरण ।

दोहा ब्रह्मसच्चिदानन्दअज, अविनाशी अविकार ॥
नारायणगोविन्दपद, भज मन बारम्बार ॥ १ ॥
नारायण गुरुपद सुमिरि, धनवन्तरि ध्याय ॥
श्री रसराजमहोदधि, भाग चतुर्थ सुहाय ॥ २ ॥
देखि ग्रन्थपर चरक अरु, सुश्रुतादि मनलाय ॥
रोगनाशहित भागयह, लिख्यो सुअवसर पाय॥ ३॥
विघ्नहरण दूषणदलन. गिरिजा रमण कृपाल ॥
लिखित ग्रन्थ भाषासरल, मोपर होउ दयाल ॥४॥
तिमिरहरन संशयशमन, रुजनाशक रविदेव ॥
होय ग्रन्थ सम्पूर्णशुभ, हृदय प्रकाशहु भेव ॥६॥

अथ सर्वहितकारी–दोहा ॥

करैं नींव दातून नित, प्रात हर्र को खाय ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक बार भोजन करै, तावर वैद्य न जाय ।। १ ।।
जबलग शुद्ध क्षुधा नहीं, तब लग कर उपवास ।।
यही एक औषध बड़ी, भाषत करि विश्वास ।।२।।
पथ्यसहित जग नरन को, नहिं औषध से काम ।।
बिना पथ्य औषध वृथा, समुझि लेहु बुधिधाम ।।३।
दिवाशयन निशि जागरण, क्षुधारहित कछुखाय
निश्चय उपजै रोगतन, कहत वैद्य मनलाय ।। ४
व्याधि कष्ट है देहका, त्यहि औषध से टार
आधिकष्ट है चित्तका, ताको हरै विचार ।।
अन्न वस्तु संयोग से, तन में उपजत व्य
बिना विचारे करतजो, मनमें उपजत आधे
एकहि घर में जो बसत, कई गृहस्थी लो
सोवर जानहु नरकसम, नहिंहोवे सुख भोग
झांझियारे घर में पवन, आवे जहँ न जा
भूतबसै त्यहि गेहमें, मानुष चुनि चुनि खाय ।।
असल भूत में शक्ति नहिं, मानुष दूजे दुख दे
दुष्टपवनही भूत हुइ, सकल सौख्य हरलेय ।। ६
नरहित कर दोहा लिखे नारायण सुखकन्द
सोचि समुझि बरतें सुजन, भोगै परमान्द ।।१

अथ प्रथमाधिकार प्रारम्भ ।।

दो०-लिखित प्रथम अधिकार में, नारायणमन लाय ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महामारी उत्पत्ति यहाँ, यथा सुअवसर पाय ॥१॥
अँगरेजी में प्लेग यहि, कहत यवन ताऊन ॥
कालरूप यह रोग है, नाहिं मृत्यु से न्यून ॥२॥
बिगडिजात जब पवन जहँ, तहँ उपजत यहरोग ॥
प्रगट होतही मरणसम, भय पावत बहुलोग ॥३॥
महामारी को सुनतही, सावधान हुइ जाय ॥
दृढ राखै निजचितको, सोचे उचित उपाय ॥४॥
भय उपजत मनमाहि जब, तब निर्बल हुइजात ॥
तातें भय माने नहीं, रहै सुदृढ दिनरात ॥५॥

अथ महामारी उत्पत्ति समय।

महामारी रोगकी उत्पत्ति का ठीक समय किसी को ज्ञात नहीं और न कोई ऐसा इतिहास ग्रन्थ मिलता है कि जिससे ठीक समय इस रोगकी उत्पत्ति का जाना जाय, हाँ यह बात अवश्य है कि यह रोग प्राचीन है, नवीन नहीं क्योंकि इस रोगके लक्षण हमारे प्राचीन (सुश्रुत आदि) में लिखे हैं। चीन के इतिहास से जाना कि सन् ईसवी से दोहजार वर्ष पहले भी रोग यत्रतत्र फैल गया था। यूनान के

जो लोग डरते हैं उनको यह रोग दबा लेता है डर कर मनुष्य रोगी हो मर जाते हैं चाहिये कि अपने चित को रक्खे भय कभी न माने एक दिन मरना ही है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इतिहास से जाना जाता है कि यह रोग बहुत
समय तक कुस्तुन्तुनियां, इटली और मिसर में
रहा और हजारों मनुष्यों का नाश कर डाला
कुस्तुन्तुनियां में एक दिन में हजार मनुष्य तक
मर जाते थे, इङ्गलैण्ड में यह रोग प्रथमवार
सन् ७६२ ईसवी में प्रकट हुआ और पचास व
तक रहा फिर सन् १६६५ ईसवी में यह रो
दुवारा प्रकट हुआ इस वार यह इतना बढा
बत्तीस हजार मनुष्य एक महीने में मर जाते
तभी से इसका नाम प्लेग कहा गया, जो
अब तक प्रसिद्ध है, सन् १८५३ में एशिया
अरब तथा उत्तरीय अफरीका में यह रोग
गया था तदनन्तर रूस और रूम में युद्ध
उस समय रणक्षेत्र में यह रोग प्रकट हुआ
इसका नाम पिस्टीलेन्स कहा गया था हिन्दु
में जहाँगीर बादशाह के समय यह रोग पं
में फैला तब इसका नाम महामारी अर्थात् म
आजम रक्खा गया लाहौर में इस रोग से
हानि हुई थी, प्रतिदिन तीन सौ मनुष्य तक
रोग से मरते थे, दो वर्ष में चौथाई म
रह गये, फिर ईसवी उन्नीसवी सदी में
रोग हांगकांग में फैला कि जिससे चीन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उत्तरीय भाग में बहुत से गाँव नष्ट हो गये, इसी सदीके अन्त अर्थात् सन् १९९४ ई० में कुछ सौदागर लोग इस रोगको अपने साथ बम्बईमें लाये बम्बईमें यहरोग प्रथम ऐसे लोगों में फैलाकि जोलोग मैले कुचैले रहते थे, उनके घरभी मैले रहते थे, कुछ दिन तक उन लोगोंमें रहकर धीरे २ यह रोग शहर-भरमें फैलगया, तब सरकारने रोग की रोक टोकका प्रबन्ध किया कि जिससे यह रोग अन्यत्र फैलने न [illegible]वे, जबतक इस रोगके रोगीकी रोकटोकरही तब [illegible] यह रोग फैलने न पाया, परन्तु जब प्रबन्ध [illegible]ा रहा, तबधीरे धीरे रोग फैलते फैलते सर्वत्रफैल [illegible]ा, क्योंकि यह रोग रोगीके संसर्ग से शीघ्र बढ़ता [illegible] हिंदुस्तान में यह रोग प्रथम ही सर्वत्र फैला कि [illegible]ससे हजारों घर शून्य होगये लाखों मनुष्य [illegible]ंसार से उठगये, यह रोग अति कराल महाकालके [illegible]मान है इनके होने पर पथ्य से रहना उचित है।

अथ महामारी उत्पत्ति वर्णन।

महामारी रोग कई कारणोंसे उत्पन्नहोकर हजारों मनुष्योंकी मृत्युका कारणहोताहै, परन्तु मुख्य कारण वायुका बिगड़ना है जैसे किसी स्थानमें जल बहुत दिनतक बन्द रहने से बिगड़ जाता है अथवा किसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुर्गंधित वस्तुके साथ मिलकर विकारवाला होताहै, और रोग पैदा करताहै, वैसेही वायुभी किसीसे घेरे हुए स्थानमें दुर्गन्धित बस्तुओं से मिलकर विकार वाली होजाती है, तथा दुर्गन्धित चीज के धुआं व दुर्गन्धित भापसे अथवा किसी सडे गले जीवजन्तु वा वनस्पति वा किसी नदी तालाब के निकृष्ट जल वा किसी जलाशय के निकृष्ट काई सिवार के ऊपर होकर आने वाली वायु भी विगड़ जाती है, किसी किसी स्थानपर कभी विष वाले जीव उत्पन्न ज सविष वनस्पति अधिक उत्पन्न होजाते हैं उन भी वायु बिगड़ जाती है, ऐसा भी होता है जिन विष वाले जीवों से वायु बिगड़ती है, उन्हा को उस विषसे मार डालती है, जैसे अग्नि काष्ट प्रगट होकर काष्टको जला देती है, समयके विपरीत होनेसे वायु बिगड़ जातीहै, और वायुके गुण न होकर अवगुण युक्त होजातीहै; विषैले जीव जन्तुओं के लार, वीर्य, मल, मूत्र आदि भोजन पदार्थों में मिलजाते हैं, उनको खानेसे भयङ्कर रोग हो जाते हैं, और कष्ट सहित प्राणत्याग करते है।

कभी कभी सविष जीवजन्तुके सूक्ष्म मृतकशरीर जैसेकि मकडी बारह प्रकारकी होतीहै ये राईभरसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेकर दशाईंच तक की होतीहै, उनमें से कोई ऐसीभी होती है कि जिसके काटने से मनुष्य अति कष्ट से मरभी जाताहैं, ऐसे जीवों के मिल जाने से भोजन दूषित हो जाता है कि जिसके खाने से तथा दूषित जलपान से मनुष्य महामारी रोगसे ग्रसित होजाता है सुश्रुत में लिखा है कि समय के बिपरीत होने से भी अनेक रोग प्रकट हो जाते हैं, सो इसप्रकार कि जैसे जाड़े के दिनों में गरमी और गरमी के दिनों में जाड़ेका होना अथवा जाड़ेमें जाड़ा न हो कर गरमी में गरमी न हो दिन में बहुत गरमी और रातमें अधिक सरदी हो वर्षा ऋतु में जल न बरसे तो वायु बिगड़ कर दोष के अनुसार रोग उत्पन्न करता है, जो कहो कि क्या अब ही वायु बिगड़कर महामारी रोग प्रकट हो गया इससेपहले नहीं होता था क्या आज ही कल वायु बिगड़ गई हैं, तो सुनो, यह महामारी रोग इस संसार में क्रम भी अनेक बारे हुआ है, जब वायु बिगड़ जाती है तबही उत्पन्न हो जाता है, परन्तु सामान्य वायु के बिगड़ने से यह रोग नहीं होता, वायु के बिगड़ने का जितना न्यूनाधिक दोष हुआ करताहै उतना ही रोग उस समय न्यूनता और अधिकतासे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुआ करते हैं वायु के बिगड़ने ही से ऋतु सम्बन्धी (फसली) ज्वर (बुखार) विषूचिका (हैजा) शीतला (चेचक) आदि रोग भी उत्पन्न हो जाते हैं जब वायु में जितना कम बढ़ दोष होता है तब उसी के अनुसार रोग भी उत्पन्न होता है महामारी एक संक्रामक और सामूहिक रोग हैं यह वायु में बहुत दोष होने से उत्पन्न हो जाय करता है, महामारी रोग के दोष से बिगड़ी हुई वायु तथा महामारी स्थान के दोषयुक्त वायुके एक स्थान से दूसरे स्थ॥ में जाने से वहाँ को वायु भी बिगड़ जाती है॥ से वहां पर महामारी रोग उत्पन्न हो जाता॥ महामारी के रोगी एक स्थान से दूसरे स्थानमें ॥ हैं वहाँ विशेष रीति से पवित्रता पर ध्यान ॥ दिया जाता तो वहाँ यह रोग आरम्भ होजाता॥ इसी प्रकार से धीरे धीरे उत्पन्न होकर यह॥ अपना अधिकार कर लेता है, जब जाड़ेके दिन॥ उस स्थान के अनुसार जाड़ा न हो और गरमी॥ दिनोंमें गरमी न होवे, तथा वर्षाकाल में स्थानानुसार जल न बरसे और वायु ऐसी शीतल बहे॥ जलसे भीगी , बारम्बार सरदी और गरमी॥ दिन में अधिक गर्मी और रात में अधिक सर्दी हो॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो ज्वर, शीतला श्वास, वमन अतीसार, महा-
मारी आदि अनेक संक्रामक तथा सामूहिक रोग
उत्पन्न होते हैं। किसी दिन वायु अधिक व कि-
सी दिन न बहे, किसी दिन बहे, किसी दिन गर्द
ग्यारहो रातको तारे अधिक गिरते दिखाई पड़ेंतो
जानना चाहिये कि महामारी आदि भयानकरोग
उत्पन्न होंगे, जब ग्रीष्मऋतु अर्थात बैशाख ज्येष्टमें
वायु अधिक बहे फिर निर्मल और ठंड होजाय तो
र नो कि महामारी रोग उत्पन्न होगा तथा जब
क विपरीत हो और पृथ्वी पर गरमी के जीव
कर क प्रगट होजांय तथा मेंढक व अन्य जल जीव
रहर र्षा के जीव व जङ्गली जीव अधिक होजायँ
में र मूषे व दूसरे जीव जो पृथ्वी के भीतर छिपे
भय हैं वे आपही पृथ्वीपर निकलकर व्याकुल
फि मूर्च्छित होकर घूमने लगें तो महामारी आ-
हैं भयानक रोग उत्पन्न होनेका कारण जान
ध्र उस स्थानको छोडजाना चाहिये और समझ
कि वायु दोषयुक्त होगई है, जिस समय गरमी
दिनोंमें गरमा कमती हो और तारे बहुत टूटें
महामारी आदि भयंकर रोग प्रगट होने का
य जानना चाहिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महामारी रोग यदि किसी जीवमें हो, जिससे वहमूर्च्छितसा हो उसको मारकर यदि मांसविक्रेता उस मांसको वेचें तो उसके खाने से भी महामारीरोग खानेवालेको होजाताहै, और जहां यह वायुविकारसे फैल रहाहो उस स्थान के बनस्पतिमें दोष अजाताहै, उसके खानेसे यह रोग होजाता है

महामारीरोग ग्रसित जीव और मूषक आदि या खाने पीनेकी वस्तुको झूठा करदें, अथवा उसमें लमूत्र करदें, तो उसको व्यवहारमें लानेसे रो गजाताहै, चूहों पर महामारी का प्रभाव श डताहै और चूहे मरने लगते हैं, तब विदित होत है कि यहां रोग प्रगट होगया, इससे उस स्थ परित्याग करदेना उचित है ।

वैशाख में यदि हवा सरद हो, और कुछ दक्षिणी हवा बहनेके पीछे हवा में गँदलापन, फिर निर्मलहोजाय फिर दिनमें गरमी और रा सरदी अधिक पडनेलगे तौ जानले शीतला दि रोग होनेवाले है, और गरमीके दिनोंमें गँदलीहो और अधिक गरमी न हो रातको टूटै तो जानलो कि महामारी आदि भङ्क रोग प्रगट होने वाले हैं, तथा कोई भी ऋ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो जब वायु श्यामता लिये चले, और साफ होकर गरद वाली चलने लगै फिर किसी दिन जलसमान ठंडी किस दिन नमीदार वहै, तो जानले कि वायु बिगड़ गई है, ज्वर शीतला महामारी आदि सामूहिकरोग प्रगट होंगे, जिस स्थान में महामारी प्रगट हो उस स्थान को तुरन्त त्याग दे, परन्तु यह रोग प्रायः उन्हीके शरीर में प्रवेश होकर क्लेश पहुँचाता है, जिनको अजीर्ण रहता है कोष्टमें मल अधिक जमा रहताहै अथवा जो लोग भूखे रहकर स्त्री प्रसंग करते और शीत के समय शीतल जल से स्नान करते है, उनको रोग प्रगट होने के समय रोगसे भय रहताहै, तथा जो रातके समय जागते हैं और दिन में अधिक सोते हैं, उनको भी महामारी से अधिक भय रहता है, हवा बिगड़ जानेसे उस हवाके दोषफल फूल शाखा और जीवोंके शरीरमें प्रवेश करजाते हैं इन दोषयुक्त फल आदि तथा जीवोंके मांस को जो लोग खाते हैं, वे भी इस रोग से ग्रसित होजाते हैं जिन लोगोंको पूर्ण प्रकार से अजीर्ण हो उनको महामारीके रोगीसे स्पर्श होतेही रोग होसकताहै, तथा जिनके शरीर में ज्वरका अंश हो, उदरमें मल जमगया हो उनको भी महमारीके रोगी के स्थानमें रहने से शीघ्र हो सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महामारी उत्पन्न होने के विशेष लक्षण

भूमिके पदार्थ विपरीत रूप स्पर्श गन्ध रसवाले होजावें, अथवा देशमें अधिक सांप आदि विषधर जीव पैदा हों, और नये ढंगके वनस्पति गुल्म, लता वृक्ष अधिक पैदाहो, किंवा सूखी बनस्पति और औषधियां सड़कर गलजावैं भूमि में से विषैली भाफ निकलने लगै अथवा विषके परमाणुओंसे भरी हुई हवासे जीव जन्तु व पक्षीगणों को व्याकुलत होवे कुत्ता चिल्लाने लगे, भयभीत और घबड़ाये हुए के समान पक्षी दीखपडें, अथवा देशमें सत्य, धर्म, लज्जा और आचारहीन मनुष्य होजावैं, वा सहसा जलाशय उलझआवैं, तारे टूट२कर गिरें बिजली कड़के भूकम्प हो, भयंकर ताम्र सदृश लाल या श्वेत बादल होवे और सूर्य चंद्रमा व नक्षत्र बादलसे ढके रहें, तथा भ्रम उद्वेग भय और व्याकुलतायुक्त शब्द मनुष्योंके रोनेका हो, तो महमारी आदि भयानक रोगोंमें से किसी रोगकी उत्पत्ति होवैगी ऐसा जानना, तथा ऋतुसम्बन्धी हवा मनुष्यों को अच्छी न लगै लेकिन उस हवा से मन उचाटहो, ऐसा जाने कि महामारी आदि रोगोंमेंसे कोई होगा, इस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बातका पूर्ण विश्वास हो चुकाहै कि महामारी रोग सरीखे जितने रोग हैं उनकी उत्पत्ति दुर्गन्धित परमाणु तथा विषैले सूक्ष्मातिसूक्ष्म कीड़ोंसे उत्पन्न होकर उन्हीं के द्वारा सहस्रों मनुष्योंके प्राण जाते हैं महामारी रोग विशेष कर नम स्थानमें हुआ करता है, इसी से जब नम स्थान में बिगड़ी हुई वायु रुक जाती है तो वहीं अतिसूक्ष्म कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं, जो लोग वहाँ नंगे पांव से मार्ग चलते हैं और किसी प्रकार का घाव या छाले पांव में होते है तो उनमें लगकर वे कीड़े शरीर हैं प्रवेश करके रोग उत्पन्न करते हैं, यह भी निश्चय हो चुका है कि महामारी निर्धन पुरुषों को अधिक हुआ करती है इसका कारण यहीहै कि वे लोग परिश्रम अधिककर ते हैं इससे पसीना अधिक निकलता है, वस्त्र आदि मलीन हो जाते है उन वस्त्रोंमें वे अति सूक्ष्म कीड़े बसकर लेते हैं जब दूसरा मनुष्य उन वस्त्रों को छू लेता है तो उसके वस्त्र आदि में भी वे कीड़े और विषैले परमाणु प्रवेश करजाते हैं, इसी प्रकार एक से एक दूसरे के दूसरे से तीसरे के तीसरे से चौथे के इस तरह से फैलते फैलते महामारी सर्वत्र फैल जाती है। इससे पृथक् भी अनेक कारण हैं जैसे दुर्गन्धित वस्तुओं का पड़ा रहना पवित्रता (सफाई) का न

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होना कि जिससे इस रोगको सहायता मिलती है।
बहुत घने स्थान अर्थात् जहाँ घर बहुत बने हों कि वायु की रुकावट हो जाय, वहीं यह रोग अधिकतासे होता है तथा जिस घरमें प्रकाश नहीं जाता धूप नहीं पहुँचती है, मनुष्य अधिक उस में रहते हों, स्थान भी छोटा हो तो ऐसे घर में यह रोग होना सम्भव है, ऐसे घर वाले पुरुष को उचित है कि अपना घर छः महीने उपरान्त चूना से पुतवा दिया करे और कूडा कर्कट व कोई भी दुर्गन्धित वस्तु घर में न रहने देवे और प्रकाश आने के निमित्त घरमें जहाँ तहाँ छोटी छोटी खिड़की बनवा कर लगवा देवे, और सुगन्धित वस्तुओं को लेकर जो हम आगे कहेंगे उन को छिड़क दे तथा धूनी देवे, मोरी को साफ रक्खे, जिससे दुर्गन्धित जल और कांच न रहने पावे।

सब से अधिक और मुख्य कारण उस रोग की उत्पत्ति में कीड़े है, ये कीड़े इतने छोटे हैं आँखों से देखने में नहीं आते, इनकी आकृति सीधी डण्डी के समान होती है, कीड़े महामारी रोगी थूक और कफमें दीख पड़ते हैं, परंतु खुर्दबीन लगाने से देखने में आते हैं और गिल्टी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी ये कीडे होते हैं आरोग्य मनुष्यके शरीरमें ये कीडे यदि पिचकारी द्वारा प्रवेश किये जांय तो उसकी भी महामारी होजाती है तथा घावों द्वारा प्रवेश होने से पृथक् ये कीडे नख कान और नाक द्वारा भी शरीर में होजाते हैं, महामारी फैलने में घरमें रहने वाले मूसे भी हैं एक घरसे दूसरे घरमें जाते हैं तोभी यह रोग फैलता है, क्योंकि मूसों के शरीर में महामारीके कीडे अति शीघ्र प्रवेश कर जाते हैं, इस कारण सब से पहले मूसे मरते हैं, जैसे ऋणदाता मनुष्य अपना धन शीघ्र लेनेके लिये ऋणीको प्रथम नोटिस देताहै, इसी प्रकार अधिक मूसों का मरना भी नोटिस समझना चाहिये तथा मक्खीभी रोग फैलाने में कारणहैं क्योंकि मक्खियां मृतक मूषकोंपर बैठकर मनुष्यके शरीरपर बैठती और काटती हैं; कि जिससे विषैले कीडे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।

बनैर शूकर, गिलहारी, शशक (खरगोश) और बिल्ली इन जीवों को महामारी रोग शीघ्र आक्रमण करता है, सांपभी जब रोगी मूसोंको खालेता है तो उसमें भी महामारी रोग होजाता है॥

यूनान के हकीम लोग इस ताऊन रोगको बबाकहते हैं बबारोग फैलनेके तीन कारण हैं प्रथम यह कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुर्गन्धित परमाणु वायुमें मिलकर नम भूमिमें प्रवेश कर जातेहैं, अथवा ऊपरको वायुके साथ चढ़कर उड़ते हैं जिससे विषदार कीडे उत्पन्न होतेहैं और वायु बिगड़कर यह रोग प्रकट होजाता है, दूसरे यहहै कि कूडा करकट आदि दुर्गन्धित वस्तु जहां हों और जलके योगसे दुर्गन्धित होकर वे दुर्गन्धित परमाणु मनुष्यादिकोंके शरीर में प्रवेश करजांय तो रोग प्रगट हो जाता है। जहां चमड़ा भिगोया जाता है तो उसको दुर्गन्धितकर रोग प्रकट होजाताहै,तीसरे भूमि और आकाशके कारण वायु दुर्गन्धित होकर बिगड़जाती है जिससे यह रोग प्रकट होजाता है अथवा जब मनुष्य अधिक अधर्मी होजाते हैं, अर्थात् पाप अधिक करते हैं, तब खुदाताला रियाया पर यह रोग कायम करते हैं, कि जिससे अपने अपने गुनाहों का फल पावें।

जिस शहरमें अथवा जिस मुहल्ले में मकान तङ्ग होते हैं वहां वायु रुककर रोगको प्रकट कर देती हैं अथवा जिन गांवों में समीपही दुर्गन्धित वस्तुऐं कूडाकर्कट डालाजाताहै गांवके नींचेही तालावके पास मलमूत्र करें और मैले कपड़े धोवें तो वहां भी महामारी रोग शीघ्र प्रकट हो सकता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथवा ऐसे शहर अथवा गांवमें महामारी का रोगी जाने से शीघ्र रोग प्रगट होजाना संभव है।

विषधर मूषक १८ अठारह प्रकार के होते हैं, जिनके नाम सुश्रुत में लिखे अनुसार लिखते है, १ लाल न २ पुत्रक ३ कृष्ण, ४ हंसिर, ५ चिकिर ६ छछूंदर, ७ अलस, ८ कषायदशन, ९ कुलिंग, ०१ अजित, ११ चपल, १२ कपिल, १३ काकिल, १४ अरुण, १५ महाकृष्ण, १६ महाश्वेत, १७ महाकपिल, १८ कपोताभ इन्हीं नामों से इनकी आकृति और रंग इत्यादि जाना जा सकता है, जिस स्थान में इन इन विषधर मूषोंका वीर्य गिरे तथा शुक्र से विसे हुए पदार्थों से यद्वानख दंत आदि स्पर्श हो जाने से रुधिर दूषित हो जाताहै, मूषकों के पांच स्थान में विष होता है, शुक्र, विष्टा, नख, दांत, मूत्र इन पांचों में एक भी किसी मनुष्य के शरीर से स्पर्श होता है तो विष शरीर में प्रवेश कर रुधिर को दूषित करदेता और ग्रन्थि-ज्वर आदि दारुण व्याधि प्रगट होजाती है।

जायते ग्रन्थयःशोफाः कर्णिका मण्डलानि च ॥
पिडिको पंचयश्रोग्रा विसर्पाःकिटिभानि च ॥१॥
पर्वभेदोरुजस्तीब्रा ज्वरोमूर्च्छा च दारुणा ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दौर्बल्यमरुचिःश्वासो वेपथुर्लोमहर्षणम् ॥ २ ॥

॥ इतिसुश्रुत ॥

शरीरमें मूषक विषका प्रवेश होनेसे रुधिर दूषित होकर उससे गांठ उत्पन्न होती है, शोथ कर्णिक और मण्डल भी होजाते है अथवा फुंसी विसर्प और कीट होना संभव है। सन्धिस्थानों में भेदन, कठिन पीड़ा, ज्वर, दुःसह मूर्छा. दौर्बल्य, अरुचि श्वास, कंप और रोम हर्ष भी होजाते हैं।१।।२।

कानके नीचे कनपटी और बगल में तथा जंघाओंके बीच इन तीन स्थान में महामारी की गांठ निकल आती है, जिनको गिलटी कहतें हैं, गिलटी में विष भरा होता है, कि जिस विषसे सब शरीर में विष पहुचता है, और रोग बढता है, कफ से लिपटे भये कीडे वमन में निकलते हैं, जो सूक्ष्म दर्पण (खुर्दबीन) से देखनेपर ज्यादा छोटे छछूंदर वा चूहों की आकृत के दीख पड़ते हैं।

कक्षाभागेषुयेस्फोटा जायन्ते मांस दारुणाः ॥
अन्तर्दाह ज्वरकरा दीप्तपावक सन्निभाः ॥ १ ॥
सप्ताहाद्द्वादशाहाद्वा पक्षाद्वा हन्ति मानवम् ॥
तामग्निरोहिणींविद्या दसाध्यां सान्निपातिकीम् २

कांखके आसपास मांसके विदीर्ण करने वाले जो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फोडा होते हैं, तिसके अन्तर्दाह हो बुखार हो अथवा फोडे प्रदीप्त अग्निके समान हों इन फोडों में वायु अधिक होनेसे सात दिन. पित्त अधिक होने से बारह दिन और कफकी अधिकतासे पांच दिन में रोगी मरता है, यह अग्निरोहिणी नामक त्रिदोषज पिडिका असाध्य और कठिनहै, लक्षण से जाना जाता है कि अग्नि रोहिणी रोग माहा-मारी ही का अंश है।

महामारी रोग सबको नहीं होता क्योंकि यह रोग जहां फैलता है वहां महामारी को पैदा करने वाले कीडे हजारों मरे और जीवित वहां रहते है, जब रोग शांत होजाता हैं तबभी कीडे रहते, और आदमी के रुधिर में प्रवेश होकर धीरे२सब शरीर में निवास करते हैं तो जिस आदमीमें उन विषैले कीडों के बिष सहनकी सामर्थ्य जब तक रहती है तब तक उसको यह रोग नही होता, जब सामर्थ्य नही रहती तब रोग आक्रमण करलेता है।

यदि आरोग्य आदमी महामारी के स्थानमेंजाय तोवह जल्द रोगग्रसित होसकता है, क्योंकि उसका रुधिर निर्मल होता है इसी से आरोग्य पुरुष को महामारी रोगके स्थान में जाना उचित नहीं तथा जिस प्रकार अधिकतर विषैली वस्तु भांग, अफीम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गांजा, चर्स आदि इतना खाजाते हैं कि यदि न खानेवाला मनुष्य उतनाही विष खाजाय तो रोगी होकर मरजाय, पावभर भांग एक दिनमें खाते हुए हमने देखाहै, यदि कोई न खानेवाला, आदमी पावभर भांग खाजाय तो बीमार होजाय एक सच्चे और ज्यादा वृद्ध आदमी के मुखसे सुनाहैकि हम इतनी अफीम संखिया खातेथे कि सुनकर आश्चर्य युक्त होजायँगे जिस दिन हमको नशा नहीं मिलाताथा उसदिन एक सर्प से अपने को डसा लेतेथे और विषके नशे से मस्त रहते थे, फिर धीरे २ घटाते २ हमने कम कर दिया है तोभी आधी रत्ती संखिया और चौअन्नी भर अफीम खाता हूँ।

॥ इति ॥

दोहा-लिख्यो प्रथमअधिकार यह, नाराणयमनलाय
महामारी उत्पत्ति कछू, सुन्दर अवसर पाय ॥

इति श्री मदयोध्यामण्डलान्तर्गत लखीमपुरखीरीनिवासी ज्योतिर्वित्पण्डित नारायण प्रसाद लिखितरसराज महोदधिचतुर्थभागभाषायां महामारी उत्पत्ति वर्णनोनाम प्रथमाधिकारः ॥ १ ॥

अथ महामारी लक्षण वर्णन द्वितियाधिकारः।२।

दोहा-अब द्वितीय अधिकार में, नारायणमनलाय।
महामारी उत्पत्ति कही, लक्षण कहत सुनाय।१।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तत्रमहामारी लक्षण वर्णनम्।

महामारी रोग का विष तीन दिन से पांच दिन तक गुप्त रहता है, किसी किसीमनुष्यके शरीर में दश दिनतक यह रोग छिपा रहता है प्रगटमें कोई चिन्ह जान नहीं पड़ता, परन्तु उससे दूसरे मनुष्य को यह रोग लग सकता है माहामारी रोग होनेपर ऐसे लक्षण होजाते हैं जो अकस्मात् सर्दी लगने लगे और रोगी कांपने लगे फिर ज्वर घढ़ि आवै, शिरमें पीड़ाहो शिर चकरानेलगे, वमन करने की इच्छाहो हृदयमें पीड़ाहो अंग शिथिलहो चित्त घबड़ाने लगे, किसी रोगीको सर्दी नहीं लगती. परन्तु ज्वर, शिर पीड़ा, अंग शीलता होकर क्षुधा दूरहो जाती है–किसी रोगीके प्रथम गिल्टी होतीहै और ज्वर पीछेसे चढ़ता है, एकसौ दो दरजे तक ज्वर चढ़ जाता है, इसी को काल ज्वर कहतें हैं।

कोई रोगी इस रोग के आने से अपने विस्तर पर से उठ उठकर भागने लगता है, कभी मूर्छित हो जाता है और जान पड़ता है कि मानों चारों ओर कोई वस्तु दौड़ रही है, जिसको पकड़ने का उपाय वह कर रहाहै। कोई उस रोगमें पहले ही से चलने फिरने में असमर्थ होजाता है पीछे शिर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दर्द होता है. किसी रोगी की जिह्वा सफेद और नाकके किनारे लाल रंगके रहते हैं. फिर रंगबदल जाता है, पीछे से स्याह हो जाती है, और मुखसे बाहर निकलनेपर थरथराती है नाडी बहुत जल्दी चलने लगती है, प्रथम अजीर्णसा होकर पीछे से दस्त आने लगते हैं, किसी रोगी के नेत्र पथरा जातेहैं पहले बहुत सुर्ख फिर पीलापन लिए दीख पड़ते हैं निद्रा भंग हो जाती है भूख नहीं लगती यदि कुछ नींद आभी जावे तो स्वप्न भयंकर देख पड़ते हैं जिससे चित्त विकल हो जाताहै, नींद नहीं आती कभी कभी नेत्र भीतर को घुसे दीख पड़ते हैं मूर्छा आजाती है।

आरोग्य मनुष्य एक मिनटमें अठारह वार श्वास लेता है, परन्तु महामारी का रोगी एक मिनट में चालीससे साठतक श्वास लेता है, कभी मूत्र वन्द होजाता है यह असाध्य रोगीका लक्षणहै. मूत्र लाल रंगका होताहै कभी उसमें सफेदी भी होती है गर्भिणी स्त्री के महामारी से ग्रसित होने पर कभी कभी ऐसा भी हुआ है कि रुधिर के समान रक्तवर्ण मूत्र, हुआ फिर वह मरगई परन्तु बच्चा जीवित रह पूरे दिनों के गर्भ होने से यह बालक जीवित रहता है, और उसको महामारी रोग भी नहीं होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महामारी रोगमें जिन रोगियोंके गिल्टी निकल आती है सौमेंसे नव्वे रोगियोंके गिल्टी निकलती हैं रान, बगल, और गर्दनमें गिल्टी निकलती है. गिल्टी निकलने का स्थान पहले फूल जाता है फिर बारह पहर के भीतर गिल्टी निकल आती है महामारी की गिल्टी में पीड़ा बहुत होतीहै, मानों कोई छुरियोंसे काटताहै और बहुत जलन पड़ती है मानों बिसीने वहांपर जलता हुआ अंगार रख दियाहो. सौ में से पचास रोगियों के गिल्टी रानमें निकलती है और तीस रोगियों के बगलमें तथा पन्द्रह रोगियों के गर्दन में किसी रोगीके कुहनी के सामने घुटनेके पाछे भी गिल्टी निकल आती है, किसी रोगी की जिव्हाके नीचे गिल्टी निकल आती है, बोला नहीं जाता, दम घुटने लगता है, कभी श्वास रुकनेसे ऐसा रोगी शीघ्र मर जाता है. कभी रोगीकी चेष्टासे ऐसा भी जान पड़ता है कि रोगी अच्छा होजायगा, परन्तु पीछे से वह रोगी सहसा मृत्यु समान हो जाता है औषध विशेष प्राप्त न होनेसे रोगी मर जाता है।

महामारी रोगके होनेपर जो गिल्टी निकल आती हैं उसके गिर्द जैसा रंग होता है उसी के अनुसार दोष भी जानना. यह रोग मनुष्य समूह में शीघ्र फैल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाता हैं इसीसे इसे संक्रामक रोग भी कहते हैं।

महामारी रोग की गांठ (गिल्टी) बगल, जंघा और पेडू के बीच और कान के पीछे होने के सिवाय स्त्रियोंकी छाती और पुरुषों के पोते में भी होती है, तथा कभी कभी जीभमें भी हुआ करती है।

जो बगलमें कखौरी, जंघा और पेडू के बीचमें गोहिया, बाधी और कानके पीछे सन्निपात अर्थात् कानमें पीव आदि जमने से गांठ होती है सो महामारी की गांठसे पृथक् है, महामारी एक गांठदार फुंसी है, उसमें बहुत जलन खिचावट घबड़ाहट तथा मूर्छा होती है बगल में होने वाली गिल्टी कखौरी के समान कांग के बीच में नहीं होती, वह कुछ नीचे गुदगुदे मांसमें होती हैं और उसके लक्षण से अर्थात् जलन, खिचावट, घबड़ाहट, मूर्छा से उसकी भली भांति पहिचान हो जाती हैं. महामारी की गांठ जो जंघा और पेडूके बीचमें होती है वह गोहिया वा बाधी के समान ठीक जंघा और पेडू के बीच में नहीं होती, वह जंघा और पेड़ू की संधि से कुछ नीचे उतरकर जंघा के गुदगुदे मांसमें होती है और जलन, मूर्जा आदि लक्षणोंसे जानी जाती हैं, इसी प्रकार छाती अण्डकोष जीभ आदि स्थानों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में जो महामारी की गांठ होती है उसकी पहिचान छलन और मूर्छा आदि से होती है।

महामारी की गांठ जिस स्थान में होती है उसी के अनुसार उसमें दोष भी हुवा करते हैं, सो जौ सेलेकर गूलर के फल के समान अथवा इससे भी बड़ी हुवा करती है इनके लक्षण भी पृथक् पृथक् होते हैं अर्थात् जो गांठ बगल के कुछ नीचे होती है उसमें जलन, घबडाहट, खिंचावट और मूर्छा अधिकता से होते हैं, क्यों कि वह हृदल के समीप होती है, इस कारण जलन शीघ्र हृदय तक पहुँच कर अधिक बेचैन करती है।

महामारी रोग चार प्रकार का जानना, इस रोग में उत्पन्न ज्वर चोदह प्रकार के लक्षणों वाला होता है, कोई कोई रोगी ज्वर के सब लक्षणों से युक्त होता है और कोई दो चार लक्षणों से युक्त होता है।

महामारी की गांठ के चारों ओर चार प्रकार के रंगों में से लाल, पीला, नीला, वा काला होता है, लाल रंग होने से दोष कम होता है, पीला रंग होने से लाल के समान ही दोष होता है, नीला रंग होने से कुछ अधिक दोष होता है, और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काला रंग होने से अधिक दोष होता है, यही चार प्रकार का महामारी रोग है।

महामरी रोग प्रगट होने पर तीन बातों को स्मरण रखना उचित है, १ गांठका स्थान, २ गांठके चारों ओर का रंग, ३ ज्वर के चौदह लक्षण इनतीनों बातों का स्मरण रखने से रोग की न्यूनाधिक्यता साध्यासाध्य का हाल भली भांति जाना जासकता है, और रोग की चिकित्सा करने में सुभीता होता है।

वैद्य को प्रथम निदानही जानना परमावश्यक है निदान जाने बिना चिकित्सा निष्फल जाती है और अयश प्राप्त होता है, अब महामारी में जो ज्वर होता है उसके चौदह लक्षण लिखते हैं, पहिला लक्षण यह है कि शरीर बहुत गरम नहीं होता है, परन्तु शरीर के भीतर बहुत गरमी होती है और घबड़ाहट तथा बेचैनी रहती है, दूसरा लक्षण यह कि श्वास में भेद होजाता है, कभी श्वास प्रबलता से और कभी श्वास न्यूनता से चलता है, किसी को श्वास खिचावट के साथ अथवा ऊंचा चलने लगता है किसी का दुर्गंध युक्त चलने लगता है, परन्तु दुर्गन्धियुक्त श्वास से रोगीको असाध्य जानना, तीसरा यह है कि पसीना में दुर्गन्धि आनेलगता है, चौथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लक्षण यहहै नाडी त्रिदोषयुक्त चलने लगतीहै पांचवां यहहै कि मूत्रकारंग स्याह होजाताहैं, छठा यह हैं कि पेटफूलकर जलन्धरसा जान पडता है और तिल्ली बढजाती है सातवां यह है कि क्षुधा जाती रहतीहै, उककाई वारंवार आतीहैपेटमें हृदयकीओर और शिरमें पीडा होने लगती हैं, आठवां यह है कि स्याहवा पीलेरंगकी वमन होनेलगतीहै, कभी२ वमनमें रुधिर आता है नवम लक्षण यहहै कि प्यास बहुत लगतीहै, जीभ और मुँह, सूखने लगताहै कभी दांतकी जडोंपर और मुखके भींतर सूजन उत्पन्न होतीहै, दशवां लक्षण यहहै कि सूखीखांसी हो जाती हैं ग्यारहवांलक्षण यहहै कि रोगीको कभी मूर्छा आतीहै और नींद नहीं आती बारहवां लक्षण यहहै कि अंग शिथल होजातेहैं कभी रोगी क्रोध तथा इच्छानुसार बातकरने लगताहै और चितभ्रम हो जाता है, तेरहवां लक्षण यह कि स्याह और लसदार कईरंग के दुर्गन्धयुक्त दस्तआने लगते हैं, चौदहवां लक्षण यह कि रोगीके शरीरपर लालरङ्ग कीफुंसियां कभी प्रगट होजातीहैं कभी छिप जाती हैं कभी किसी रोगीको प्रथम कुछ ज्वर आकर हाथ पांव ठंडे और चितभ्रम होजाता हैं, तथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्रोधी स्वभाव हो जाता है कभी शीताग होकर हाथ ऐंठते लगते हैं कभी न तो शरीर के भीतर गरमी होती है और न मूत्र का रंग बदलता है, और रोगी तुरन्त मर जाता है, इसी कारण महामारी के रोगी की चिकित्सा करने में विलम्ब नहीं करना चाहिये, यह संक्षेप से महामारी के लक्षण लिखे हैं।

दो०-लिख्य द्वितीत अधिकार यह, नारयण मनलाय॥
महामारी लक्षण कछुक, सुंदर अबसर पाय।

इति श्रीज्ज्योति र्वित्पंडित नारालण प्रसाद लिखित रसराजम होदधिभाषायां चतुर्थ भाग महामारी लक्षण वर्णनो नाम द्वितीयाधिकारः॥ २॥

नथ महामारी रोग चिकित्सा वर्णनो नाम तृतीय ऽधिकारः॥

दो०-अव तृतीय अधिकार में नारायण मनलाय॥
महमारीगद यत्न कछु, लिखित सुअवसर पात १

हिताहित वायु विचार।

जिस वायु में अधिक गरमी और अधिक सरदी न होवे मनुष्य के शरीर को विशेष लाभदायक होती है, परन्तु रोगी को वह लाभदायक होती है जो रोगी के रोग के विरुद्ध चलती हो ऐसीवायु रोगी के निमित्त औषधिका काम देती है जैसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किसी रोगी के शरीर में गरमी के दोष वाला (पित्त ज्वर आदि) रोग हैं, तो उस रोगी को शीतल वायु हितकारी जाने, एवं शीत विकार वाले को गरम वायु हितकारी जाने परन्तु आरोग्य मनुष्य का ऋतु अनुसार सामान्य वायु हितकारी होती है, यदि गरमी में वायु अधिक समय तक चलती रहे तो मनुष्त का शरीर दुर्बल हो जाता है और रुधिर को गरम वायु ऊपरी भाग में खींचता है इस कारण शरीर की त्वचा लाल हो जाती है, बहुत गरम वायु बहुत समय लगे तो शरीर का रुधिर जल जाता है और पीला पन तथा काला पन छात जाता है गरम देश निवास (बंगाली आदि) इसीसे काले होते हैं, घाव में अधिक गरम वायु लगने से खुजली प्रगट हो जाती है बुद्धि और स्मरण शक्ति घट जाती है हृदय गरम हो जाता है जिससे सारा शरीर गरम हो जात है शरीर के रस आदि धातु बिगड़ जाते हैं गरम वायु आरोग्य पुरुषों को लाभदायक नहीं है गरमी में पाचन शक्ति कम हो जाती है पसीना अधिक निकलता है शरीर अिर्बल हो जाता है मुंह और नाक से रुधिर निकलने से रोग ह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाते हैं रक्तातिसार रोग तथा स्त्रियों को प्रदर हो जाता है, प्यास अधिक लगती है भूख कम हो जाती है इसी कारण गरमी की ऋतु में गरम देश वासी पुरुष पित्तज्वर से अधिक पीडित होते हैं

गरम वायु आरोग्य पुरुषों को हानि कारक होती है परन्तु जिनके शीत रोग बादी के रोग पक्षाघात शरीर जकड़ना, कम्पादि इन रोगोंमें से कोई हो तो गरम वायु लाभदायक हुआ करती है।

शीतल वायु आरोग्य पुरुषों को बहुत लाभदायक हुआ करती है, यह शरीर के रोम के छिद्रों को बन्द करती और शरीर को कडा करती है रोम छिद्रों के बन्द होनेके कारणजठराग्नि अर्थात् पाचन शक्ति शरीर के भीतर भली भांति रक्षित रहती है इसीसे शीत देशों में तथा शीत ऋतु में भूख अधिक लगती है और भोजन शीघ्र पच जाता है शीतल वायु, कफ, पित्त, वात रुधिर आदि को गाढा करती है जिससे वे अपने स्थान पर रुके रहते हैं अनुचित रीति से एक अंग से दूसरे अंग में नहीं जा सकते इसी कारण शीत देशों में तथा शीत ऋतुमें पुरुषों को सूजन घाव रोग अधिकता से नहीं होते और शरीर मेंबल की बृद्धि होती है शीतल वायु लगनेके कारण शरीरके भीतर से पसीना नहीं निकलता है और मूत्र के साथ बारम्बार निकला करता है
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं इसी को जमोवा कहते हैं बुद्धिहीन पुरुष उस समय झाड़ फूंक करते हैं बुद्धिमान् वैद्य द्वारा यत्न कराते हैं ऐसी ऋतु में उत्पन्न बालक प्रायः रोगी रहा करते हैं क्योंकि शीतल समय की शीतल वायु से उन का मस्तिष्क भर जाता है और बसंत ऋतु की शीतल वायु उनको सरदी करती हैं वही सरदी नेत्र में उतरने से नेत्र शूल रोग प्रगट हो-जाता है हवा सेरदी आंतोंपर उतरनेसे रक्त अतीसार रोग प्रगट होजाता है छातीपर उतरने से कफखांसी आदि रोग होजाते हैं, मस्तिष्क में रुकजाने में मूर्च्छा आदि रोग उत्पन्न होजाते हैं तथा मस्तिष्क के आधे भाग में रुक जाय तो पक्षाघात आधा अंग सुन्न ह जाने का रोग प्रगट हो जाता है यदि जाड़े के समय में जल बरषै और उत्तरीय वायु रूखी बहती हो अथवा बसंत ऋतु में जल अधिकता से बरषै तो उसके पीछे गरमीके समय नेत्र पित्तज्वर अतीसार आदि रोग प्रगट होजाते हैं क्यों कि कफ, पित्त, रस आदि धातु शीत समय में जमे रहते हैं, वही बसंतऋतु में धातुपतली होजाती है, यदि वसंत ऋतुमें न बहुत सरदी हो न गरमी हो तो गरमीकी ऋतुमें रोग कम होते हैं।

जब ऋतु विपरीत हो और वायु में दोष जानपड़ता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शीत ऋतुमें दक्षिण की वायु गरम चलकर बादल हो आवै और जलबरषै, फिर बसंत ऋतु में उत्तर दिशा की वायु वहै उस समय वायु में गरमी और सूखापन अधिक हो जाता है ऐसे समय गर्भपात हो जाने का भय रहता है यदि गर्भपात न हो तो बालक उत्पन्न होकर मर जानेका भय रहता है, यदि कुशल पूर्वक बालक उत्पन्न होकर जीवै, तो रोगी रहै, तथा शीतल ऋतु में दक्षिणी वायु वहकर गर्मी के साथ बादल होवे, तब बृद्ध जनों को श्लेष्म रोग विशेष से प्रगट होकर हानिकारक जानना।

उपरोक्त लेखानुसार गर्भपात होनेका कारण यहहै कि स्त्री व बालकों के शरीरमें तरी अधिक हुवा करती में तो ठण्डके समय दक्षिणी वायु उनके शरीर के रोम छिद्रों को खोल देती है फिर बसंत ऋतुमें जो उत्तरीयवायु चलती है वह शरीर में प्रवेश करके गर्भके बालक तक पहुँच जाता है कि जिससे गर्भही में बालक मरजाता है, अथवा अधिक शीत लगने से गर्भस्थ बालक गिर जाता है, जो बालक उत्पन्न होते हैं वे भी प्रायः इसी कारण मरजाते हैं क्योंकि पहले वे माताके उदरमें रहने के कारण सहसा बाहर का वायु सहन नहीं कर सकते, और शीघ्र मरजाते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उस दोषके अनुसार यत्न करना चाहिये जब कफ पित्त वात रुधिर तथा शरीरके धातु आदि जो शीत समय में अधिक तथा दोषयुक्त होगये हों, उस दोष के अनुसार वमन, विरेचन, पाचक आदि द्वारा शुद्ध करलेना चाहिये, इस ऋतु में हलका भोजन करना उचित है, तीखी खारी वस्तु अधिक नहीं खाने योग्य है स्वाभाविक ऋतुओं के परिवर्तनसे दोषयुक्त बात पित्त और कफका जिसके आश्रय पर हम लोगोंका शरीर स्थित है और कोप व शांति हुआ करती है, इन्हीं ऋतुओं के अतियोग होने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं, जिसको फसली बीमारी कहते हैं, दूषित ऋतु में शुद्ध अन्नसेवन करना उचित है यदि ऋतु संबन्धी रोग की अधिकता होतो कोई लाभ दायक औषध सेवन करना चाहिये, दूषित वायु को हवन आदि से शुद्ध करना उचित है, वायु को शुद्ध करने का उपाय संक्षेप से आगे लिखा जाता है।

वायु शुद्धि कारक यत्न।

अम्बर, तगर, कूट मीठा, मस्तंगी, कुन्दुर, शिला रस केसर, चन्द्ररस, आंवला, नागर मोथा, हाऊवेर वच, अगर, कडुआ बादाम, जराकुस (एक सुगंधि तघास) झाऊकी लकड़ी, छडीला, देवदारू ये सब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समान भाग लेकर सब से चौथाई गुग्गल इतनाहीं चंदन चूरा एकत्र कर और घी व कस्तूरी मिलाय कूट पीस रख छोडे दूषितवायु होनेपर द्वारके संमुख धूनी दिया करै और इसी को सदा घर के भीतर सब स्थानों पर कईबार फिरावे, तथा घर के भीतर कूडा कर्कट कीच न रहने दे, यदि किसी स्थान पर कीच व जल रहै तो उस स्थान पर प्रतिदिन गरम राख और पिसा हुआ चूना डालकर कीचड़ और जल को सुखा देना उचित है, घर को पुता देना चाहिये, चूना पुताने की सामर्थ्य न होतो घर को साफ करके सफेद चिकनी मिट्टी से घर को पुताना उचित है दिन के समय दो तीनबार थोड़ी हींग सिरकामें हल करके भीतर सब स्थानों में छिड़क दे घरके समीप सड़ीगली कोई वस्तु कूड़ा कर्कट नहीं पड़ा रहना चाहिए, जिस गांव अथवा शहर में दुर्गन्धित वस्तु न रहें और गली कूचा साफ सुथरे रहैं तो वहाँ का वायु शुद्ध रह कर रोग उत्पन्न हो तो घर के भीतर और बाहर सब छिद्र बन्द कर देना चाहिये, और उपरोक्त औषधियों की धूनी प्रति दिन दिया करें तो हवा कभी नही बिगड़े

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिन कुओंका जल प्रतिदिन पीनेमें आवे उस कुएं में शुद्ध साफ पात्रसे जल भरा जाय, कुऐ में किसी प्रकारकी दुर्गन्धित वस्तु न गिरने पावे, क्योंकि हवा और जल ही मनुष्यका जीवन है हवा और जलके शुद्ध रहने से मनुष्यका शरीर आरोग्य रहकर सुख प्राप्त होता है, आयु की वृद्धि होती है।

जो मनुष्य मैले कुचेले रहते हैं उनकी संगति से बचे और खाने पीने की सब वस्तु देख भालकर काम में लावे, तथा ऐसे स्थान पर रक्खें जहाँ बिष वाले जीव (मकरी, चूहा आदि) स्पर्श न कर सकें। जहाँ बहुत गन्दे बोरे टाट पड़ेहो वहाँ नहीं जाना चाहिये, प्रति दिन निर्मल कुछ गरम जल से औषधियों के जलसे धुलाकर आग जला सुखा कर गरम कर देना उचित है।

महामारी से बचने का उपाय।

महामारी रोग उत्पन्न होने के समय मनुष्यों को उचित है कि भारी तथा अजीर्ण करने वाली वस्तु न खावे और ठंडी वस्तुभी जैसे ककड़ी खीराआदि न खाय और भोजन से अधिक न खावे, रात्रिमें न जागे, दिनमें आकाश में बादल हों उस समय पूर्व

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हवा चलने पर नंगा न रहे, नंगे पांव न चले, अधिक चिन्ता शोक न करे, अधिक परिश्रम न करे निराहार न रहे, शरीर पर सरदी न लगने पावे, विशेष कर प्रातः सरदी से बचना चाहिए, खुले स्थान में जहां मैदान हो और ओस पड़ती हो वहाँ न सोना चाहिए, अधिक मार्ग न चलना चाहिए, अधिक शीतल जल से स्नान न करना चाहिए, आदमियों की भीड़ में न रहना चाहिए, ज्यादा शीतल वा अन्धियारे घरमें जहां हवा का भली भांति आवागमन न हो और गन्दा हो तो उस घर में न रहना चाहिए, स्त्री प्रसंग भी अधिक नहीं करना चाहिए, और शीली वस्तुओं को नहीं खाना चाहिए, कोष्ठमें अधिक मल न जमने पावे शीघ्र पचने वाली वस्तु भोजन करना चाहिए, उपवास करके प्रात समय स्नान नहीं करना चाहिए और भीगा वस्त्र नहीं पहिरना चाहिए।

कुछ क्षुधारहजाय तब भोजन नहीं करे, कमला नीबू कागजी नीबू, सिरका, पोदीना, राई आदि वस्तु भोजन के साथ सेवन करे और बिना भोजन भी इन वस्तुओं को व्यवहार में लावे।

यदि अजीर्ण हो तो छोटी हर्र और लवण आदि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा अन्य कोई पाचक रेचक औषधियों का सेवन करे जिससे दस्त साफ हो और पेटमें मल न रहने पावे, भात, दाल, खाने का स्वभाव हो तो दिन में खाना चाहिए, रात्रिमें हलका भोजनकरे अथवा दूध ही पीकर सो जावे जहाँ तक हो सके पेट को साफ रक्खे, पेट में जितना अधिक मल जमा हो जाता है, उतने ही अधिक दोष से युक्त महामारी रोग प्रगट हो जाने का भय रहता है यदि पेट में मल कम होता है, तो कम दोष वाला रोग प्रगट होता है, कभी ऐसा भी हो जाता है कि रात्रि को भोजन करके जागना पड़ा और प्रातःसमय अजीर्ण होकर महामारी रोग ज्वर समेत उत्पन्न होकर गांठ उठती आरम्भ हो जाती है, तथा रातदिन उपवास कर प्रातःसमय शीतल जल से स्नान करने पर ज्वर और महामारी की गांठ उत्पन्न होने लगती है, ऐसा भी होता है महामारीरोग के समय शरीरपर नीचे महीन और ऊपर मोटा गरमवस्त्र पहरना चाहिये, वस्त्र को पसीना आदिसे साफ रखे। सरसों कडुआ तेल अथवा बात नाशक तेल से मल कर स्नान करना चाहिये, जहाँ तक हो सके कुछ गरम जल से स्नान किया करे, मुलहटी को मुख में रखे कपूर को अपने पास सदा रखे, पहिनने के कपड़े

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खूंटीं पर रख देना चाहिए कि जिससे किसी मकड़ी आदि विष वाले जीव का स्पर्श न होवे और केशर एक भाग, मुर्र जिसको बोल भी कहते हैं सो भी एक भाग, एलुआ पीला दो भाग इन तीनों औषधियों को कूट पीस कर एक शीशीमें रख छोड़े महामारी रोग के समय में प्रतिदिन एक माशे भर औषध थोड़े गुलाब जल के साथ सेवन करना उचित है, इन उपायों को सोच विचार कर इसी अनुसार करने में मनुष्य महामारी से बच सकता है।

महामारी रोग यत्न।

प्रथम इस बात का विचार कर लेना उचित है, कि शरीरो में वात, पित्त, कफ काबिगाड़ तो नही होगया है अथवा इन तीनों दोषों से किसी दोष कीअधिकमता। तो नहीं होगई. यदि किसी दोष का बिगाड़ अथवा अधिकता हो तो प्रथम उसको सुधारने का यत्न करे यदि कोष्ट को शुद्ध करने का समय न हो तो रोगीको उपवास करावे जो रोगी को प्यास अधिक हो तो खट्टे अनार के दाने का रस, खट्टा न मिले तो मीठे अनार के दाने का रस दो दो आने अथवा चारचार आने भर देवे तथासावित अनारदाने दे परन्तु रोगी दाने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरम्भ होते ही करना चाहिए, साधारण औषधियों से समय को नष्ट नहीं करे क्योंकि समय नष्ट होजाने से रोग का असाध्य हो जाना संभव है इस कारण विशेष औषधियों को देना चाहिए, जिस घर में रोगी हो वह घर बहुत साफ लीपा पोता हुआ हवादार होना चाहिए, रोगी के समीप कीच कांदा और मैला नहीं रहना चाहिए, तथा रोगी के समीप दुर्गंधित वस्तु न रहने पावै, जिस कोठरी में रोगी हो उस को चंदन, गुलाब, कपूर आदि से सुगन्धित रखना उचित है, गुलाब जलवे वहां छिड़काब कर देना चाहिए चारों ओर चन्दन- अगर, कपूर, नागर मोथा, अनार की लकड़ी देवदारू. गुग्गुल, शक्कर और घी इन सब धूनी फेरना उचित है।

यदि रोगी के कोष्ट में मल की अधिकता हो तो मल शुद्ध करने के निमित्त दात्यूनी निसोत और त्रिफला का कल्प देना चाहिए, कोष्ट शुद्ध हो जाने के उपरांत आंवला, कैथ. त्रिकुटा, बांस का छिलका चौकाकी लकड़ी कंजा के बीज की गूदी, नूट मीठा इन सब औषधियों को बराबर कूट पीस छान कर मिलाय लेवै और एक माशा प्रमाण रात दिन में तीन बार शीतल जल के साथ देना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रिकुटा गुलाब का रस, दारूहलदी, मुलहट, काला लवण सैधालवण, नाग पंखी, चमेली के फूल, इन सब को कूट पीस कर चूर्ण बना लेवै, और सबकी चौथाई मिश्री मिलाय कैथ के रस और शहत के साथ एक माशा भर चूर्ण चटावै इसी प्रकार रात दिनमें तीन बार चूर्ण देवै, यदि रोगी को मूर्च्छा हो तो खैरसार, सिरसके बीज बारीक पीस कर उसको नास देवै. तथा देव दाली का फल, मीठा कूट, बच इन औषधियों का चूर्ण एक माशा लेके गोमूत्र के साथ देवे यह सुश्रुत में लिखा है।

यदि रोगी को प्यास और घबराहट हो तो केशर चार माशा कपूर तीन माशा, कद्दू के बीजकी गिरी एक माशा खीराके बीज चार माशा, ककरीके बीज चार माशा, इन सबको बहुत बारीक पीस शहत में मिला गोली बना लेवे दिनमें एकएक गोली चार बार खिलावै, तथा सफेद चन्दन, मुलहटी का सत सात२माशाकासनी कतीरा साढे दश माशा बबूल का गोंद सातमाशा, कोहूकेबीज की गिरी साढेदश माशा, कदूके बीजकी गिरी साढेसत्रह माशा केशरएक माशा, गेरू साढे दश माशा तुरंजबीन तीन तोला, कपूर साढेतीन माशा, इन सबको लेकर इनकीगोली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक२ माशा भर की बनावे, रात दिन में चार गोली गुलाब जल के साथ देवे।

महामारीके रोगीको कभीकभी प्यास बहुत लगती है और जलपीने पर बढ़ने लगती हैं अधिक प्यास बढ़जाने पर बेचैनी हो जाती है, प्रायः लोग जलमें बर्फ मिलाकर पिलाते हैं इससे प्यास अधिक बढ़तीहै यदि बर्फ पिलाने कीआवश्यकता हो, तो पेट भरकर बर्फ मिलाजल पिलादेना चाहिये, इससे प्यास रुक कर यदि रोगी के शरीर से पसीना निकलेतो पसीना पोंछदे यदि इससे भी प्यास न रुके तो मूली का रस दो रुपये भर एक पाव अथवा आध सेर बर्फ मिले जल के साथ रोगी को देना चाहिए, इससे प्यास कम हो जाती है और डकार आकर रोगी का चित्त कुछ हलका हो जाता है।

प्यास और भूख पर विशेष यत्न।

यदि महामारी वाला बहुत निर्बल हो और प्यास से बहुत बेचैन हो और उस समय प्यास निवारणार्थ औषध देना उचित न जान पड़े तो ताजा गुलाब के फूल ले उनकी पंखुरियों को फूल से पृथक् कर किसी मिट्टी या पत्थर का बर्तन के पात्र में रख उस पर थोड़ा ऊख का सिरका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और गुलाब जल छिड़ककर रोगी को सुंघावे तो प्यास शांत हो जाती है रोगी के समीप गुलाब, कपूर, सिरका रक्खा रहने दे इसे थोड़ी२ देर हर रोगी को सुघावे।

यदि रोगी को ज्वर हो और भूख प्यास लग रही हो तो खट्टे अथवा मीठे अनार के दाने चूसने को देना चाहिए, परन्तु दाने को चूसकर गुठली थूक दे अनारदाने न हों तो विहीदाना दे, यदि रोगी को ज्वर न हों और रोगी पथ्य देने के योग्य होगया हो तो उस समय पूछलेना चाहिए कि त्यास तो अधिक नहीं है यदि प्यास कम हो और ज्वर न हो भूख लग रही हो तो अरहर की दाल का पानी पहले दिन एक रुपयाभर दे दूसरे समय फिर भूख लगे तो फिर एक रुपया भर दालका पानीदे दूसरे दिन भूख लगने पर दो रुपयाभर दालका पानीदे तीसरे दिन भूख बहुत सतावे तो पांच रुपयाभर दाल का पानी देवे, दूसरे समय भूख लगने पर फिर पांच रुपयाभर दालकापानी देवे, इसी प्रकार ज्यों ज्यों भूख अधिक जान पड़े पथ्य भी बढ़ता जाय जब दाल का पानी आध पाव पचने लगे तो एक समय में दो रोटी के ऊपर का बक्कल दाल के पानी में भिगो कर रोगी को देना चाहिए और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूसरे समय केवल दाल का पानी देना चाहिये, इसी प्रकार भूखके अनुसार पथ्य को बढ़ाना उचित है, रोगी की प्यास को शान्त रखने के निमित्त थोड़ा शीतल जल देकर अनार के दाने देना चाहिए, तथा पानी देके छिली हुई मुलहटी मुख में रखने के निमित्त देना उचित है, यदि पथ्य देने के योग्य रोगी को प्यास अधिक लगती होतो दाल का पानी नदे क्योंकि लवण के योग से रोगी को प्यास बहुत सताती है, उस वक्त दाल के पानी के बदले तुरंत का दुहा गाय का दूध देना उचित है जब एक बार में पावभर दूध रोगी को पचने लगे तो रोटी का छिलका और दूध तथा प्यास कमती होतो दाल का पानी और ऊपर लिखी विधि के अनुसार रोटी का छिलका देना उचित है,इसी प्रकार पथ्य वस्तु धीरे धीरे बढ़ाय देवे, जिसमें प्रति दिन पथ्य पदार्थ पचता जाय।

वमन होने पर औषधि।

जब रोगी को बारम्बार उबकाई आती होतो उबकाईमेंवस्तुका रङ्ग काला होतो महामारी रोगमें दोष बहुत जानना चाहिये, यदि वमन होकर वमनकारंग बदल जायतो जानलेवे कि रोगमें दोष कमहोगया यदि वमनका रंगनहीं बदले और बार २ कै होतीही

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रहे और रोगी के निर्वल होने केभय से उसके बन्द करने की आवश्यकता होतो दरियाई नारियल की गिरी दो रत्ती प्रमाण थोड़े से गुलाब जल में घोट कर रोगी को दो तीन बार थोड़ी २ देर पर देने से कै तुरंत बन्द होजाती है, प्यास मालूम होतो थोड़ा थोड़ा जल पिला कर छीली हुई मुलहटी मुख में रख कर रस चूसने के निमित्त देना उचित हैं ।

वमन में रुधिर गिरने पर औषधि ।

जिस रोग के वमन में रुधिर आने लगे और प्यास लगै तो संगजराव, जहरमुहरा, खताई, कतीरा, सफेदकत्था बबूलका गोंद खतमी के बीज छिली मुलहटी, इन सबको बराबर लेके कूट पीस कर मटरके बराबर गोली बना सुखाले, एक गोली रोगी को मुखमें रख कर चूसने दे, इनका रस चूसने से वमन में रुधिर नहीं आता है ।

महामारी रोग शांति निमित्त विशेष यत्न ।

कतीरा; बबूरकागोंद, खतमीकेबीज, सफेदकत्था छिली मुलहटी, गेरू, संगजराव, जहरमुहरा खताई दरियाई नारियल की गिरी, इन सब को बराबर ले कर कूट पीस मटर बराबर गोली बनाले, एक २ गोली मुख में रख चूसनेके निमित्त तीन तीन घंटे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपरान्त रोगीको देना चाहिये. इस गोलीके सेवन से वारंवार प्यास नहीं लगती, उबकाई नहीं आती, गलेमें दर्द नहीं होता, यदि रोगी को शिरमें पीडा अधिक हो तो मैनफर को पानी में पीसकर शिर पर पतला लेप करना उचित है, ।

महामारी की गांठ पर लेप।

कुन्दरवृक्षकी जड़, कुन्दरवृक्षका गोंद, भेडका दूध अथवा दही लेके उसमें जड और गोंदको बारीक पीसकर गांठपर लेपकरे, अथवा कुन्दर एक भाग, मैनशील आधाभाग, रूमी मस्तंगी एक भाग, इन सब औषधियों को दूध में पानी से बारीक पीस कर आग पर इसमें मोटा कपडा भिगो कर गांठ पर रख देवे और आगकी आंच से सेंक देवे, परन्तु यह उपाय उस समय तक है कि जब तक गांठ कडी रहे और उसमें पीव न आया हो।

महामारी की गिलटी के चारों ओर देखे कि कैसा रङ्ग है, यदि गांठ के चारों ओर सुर्खी और पीलापन हो तो जाने कि रोगमें दोष कमहै, यदि गांठके चारों ओर कला वा नीलारङ्ग हो तो रोगमें दोष अधिक जाने यदि रोगी को दस्त काला हो और वह मूर्छित होजाय, ज्वर कम हो तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जानले कि रोग असाध्य हो गया, जंगार गंदाबि-रोजा जवाशीर बोल प्रत्येक सात माशा, कुदुर साढ़े दशमाशा, गुग्गुल चौदह माशा, जरावन्द तवील साढे दस माशा, मुरदासंख चौदह माशा, स्तीनज चौदह माशा, उशुक दो तोले सफेद मोम चौदह माशा, इन सबको मँगावे उनमें जो मिलसकै उनको बारीक पीसलेवे, गुग्गुल सिरकामें पीस लेवै जो वस्तु गलाने योग्य हो उसको जैतून के तेल में आग पर रखकर गला लेवै, फिर सबको मिलाकर कांच वा चीनी के पात्रमें रखलेवै, इस मलहम को थोड़ा सा लेकर कपड़े पर रखकर गांठ पर चपका देवे, यह मलहम महामारी की गांठ अथवा अन्य गांठ को भी आराम करता है।

तथा जदवार आठमाशा, मोती व सीप एकमाशा इन दोनों को छोटी मकोय के पत्ते के रस में भली भांति घोट कर गिलटी पर दिनमें चारबार पतला लेपकरे, अथवा आंवा हलदी, काला जीरा, जदवार मकोय के पत्तों के रस में वा केवल जल में पीस कर तथा दर्द के स्थान पर लेप करे।

गांठपर ऐसे कोईलेप नहीं करना चाहिये कि जिस से मबाद पीछेको लौट जाय अथवा भीतर हीरहजाय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्योंकि मवाद पीछे लौटने से रोगी को क्लेश होता हैं. विधि पूर्वक यदि गांठ पर लेप किया जाय और उचित समय तक रोगी को उपवास कराय जाय तो महामारी के दोष दूर होजाते हैं, और उसे भूख खुल कर लगती है. उस समय बुखार और प्यास को देखे यदि बुखार वा प्यास हो और भूख अधिक हो तो खट्टे अनार अथवा मीठे अनार के दाने देना चाहिये जैसा कि प्रथम लिख चुके हैं॥

जमाल गोटा, चिउली (कुलबा) मदिरा, चन्दन जायफल इनको बराबर लेके गरम करे और गाँठ पर लेप कर ऊपर से फोहा गरम कर बाँध देवे फिर दूसरे फोहा से सेंके, अथवा लहसनको पीस टिकिया बना गरम गिलटी पर रक्खे जब ठंडी होने लगे तब फिर गरम कर रक्खे, फिर सहत और गुड़ गरम कर वहाँ मले तो पिघल कर गिलटी जाती रहेगी अथवा भृंगराजका तेल आकके पत्ते पर लगा गरम कर बांध ऊपरसे रुई के फोहा से सेंकें।

यदि गाँठ पर लेप करने से गाँठ नरम होजाय तो उसको पकाने और फोड़ने के लिये नीचे लिखे अनुसार उपाय करना चाहिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गिलटी पकाने और फोड़ने की औषध ।

जरावन्द समुद्रफेन राई उटंगन के बीज गन्धक गुग्गुल उशुक प्रत्येक १ भाग, जैतून का तेल १२ भाग, गुग्गुल और उशुक को जैतून के तेल में मल करके उसमें २ भाग सोस मिलाकर सब को मलहम बनालेवे, सो कांच वा चीनी के वर्तन में रख छोड़े, जिस समय लेप करने की आवश्यकता हो तो मलहम को थोड़े गुलरोगन तथा जैतून के तेल में मिलाकर गिलटी पर लेपकरै यदि शीघ्र पकाना हो तो खतमी की पत्ती १ तौला, खतमी के फूल २ तोला दोनों को थोड़े गुलाव जल और पानी में मिलाकर आग पर रक्खै जब पककर गाढ़ा होजाय तब उतार कर उसमें मलहम मिलाकर गिलटी पर गरम गरम बांध देवै इसप्रकार कईबार बांधनेसे गिल्टी बहुत कड़ी होने पर भी पकजाती है, जब पकजावे तो किसी उत्तम डाक्टर से गिलटी पर नश्तर लगवा उस का मवाद निकल वाना चाहिये ।

यदि रोगी नश्तर लगवाने से डरै तो तीसी १ भाग तुलसी की पत्ती आठवां भाग, अंडका बीज ३ भाग सेंधालवण आठवां भाग इन सब को वारीक हीस आग पर गरम करै, और साबुन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१ भाग, कबूतर की वीट १ भाग चूना चोथाई भाग सज्जी १ भाग सब वस्तु पीसकर ऊपर लिखे पुलटि सपर रखकर गिलटीपर बांधदेवे, तथा जवाखारकर तरकी वीटको आटाके हलुवापर छिड़ककर गरम २ बांध देवे, तथा तोसी को पानी में भली भांति बारीक पीसकर आगपर पकाय उसपर थोड़ी वीट कबूतर की और सज्जी व चूना पीसकर छिड़कदेवै और गिलटी पर बांध देवै तो गिलटी फूट जायगी।

फिर इस मलहमको लगावै, चमेली का अथवा मीठा तेल तीन रुपयाभर, सफेद मोम एकरुपयाभर, इन दोनोंको किसी पात्रमें आगपर रखकर गलाले और उतारकर मुरदाशंख १ तोला, जलाहुवा नीलाथोथा १ माशा, समुद्रफेन ६ माशे, राल ६ माशा इनको बहुत बारीक पीसछान मिला लेवै, यह मलहम घावपर लगावै, तथा मुरदाशंख आठ आना भर, कपूर १ रत्ती जलाहुवा तूतिया १२ रत्तीभर इन सबको बारीक पीस गिलटीपर लगावै, यह मलहम सब प्रकार के घावोंको आराम करता है, तथा मुसव्वर को बारीक पीस कर गिलटी पर बुरके और कड़वा तेल गरम कर उसमें मुसव्वर व नमकमिले आटेकी टिकी को गरमकर गिलटी पर बांधे तो गिलटी बैठ जाती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है अथवा फूटकर उसमेंसे मवाद निकलता है, अजूबा की पत्ती पीस कर गरम कर गिलटी पर बांधे तथा बाबूना, मुसव्वर, गिलेअरमनी, नाखूना, अजूबाका पत्ती, इनको पीस मिलाय गरम कर गिलटी पर लेप करे व बांधे इस लेप से भी गिलटी फूट-जाती हैं।

महामारी ज्वर यत्न।

यदि महामारी के रोगी को ज्वर हो तो लाल चन्दन, नीम की जड़ की सफेद छाल, धनियां, पद्माख गिलोय ये सब तीन तीन माशे लेके आ-धसेर जल में चढ़ावै जब छटांक भर रह जाय तब छान कर पिलाय देवे, और कच्ची पक्की भांग को बारीक पीस कर हाथ पांव में उस का धूरा करे।

शीतांग और चित्त भ्रमपर औषधि।

कस्तूरी १ रत्ती, कपूर १ रत्ती, दोनों को मिला एक मात्रा बनाले, थोड़ी थोड़ी देरपर दो तीन मात्रा रोगी के देवे इससे रोगी चैतन्य हो जाय और शीतांग व चित्तभ्रम दूर होजाय तब रोगीकी दोष नाशक यत्न से पीड़ा दूर करनी चाहिये।

दस्तकी आवश्यकता पर यत्न।

यदि रोगीके पेट में कुछ कसर हो तो चिरायता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुहकर मूल, गिलोय, सोंठ, फल कटैयाकी जड, ये छःछःमाशा अंडी का तेल ले इनको आधसेर जल में चढावे जल छटांक भर रहजाय तब १ तोला अंडी का तेल डालकर पीलेवे, ऊपर से इलायची पान आदि खाय तो साफ दस्त आवेगा और पेट की कसर दूर होजायगी अब जो उपाय समाचार पत्रों द्वारा देखने में आये सोभी यहां लिखे देते हैं।

डाक्टरदुवलीप्रसादका एक नुसखा मोहिनी अर्द्ध साप्ताहिक पत्र (पौषवदी अमावस्य सम्बत् १९६२) में हमने देखा, कसीस२माशा, नौसादर २ माशा, हींग २ रत्ती ये बारीक पीसकर ३ तोले पानी के साथ ३-३ घंटे उपरान्त रोगी को दे।

यदि रोगी सन्निपात की दशा तक पहुंच गया हो तो कसीस डेढ तोला नौसादर डेढ तोला हींग डेढ तोले ३ छटांक पानी में भिगो दे, इसी भांति एक घडा तैयार करे और उसमें एक तौलिया वा मोटा कपड़ा भिगोकर लपेट देवे, जब तक ज्वर घटकर अपनी मामूली हालत पर अर्थात् पचानवें डिगरी पर न पहुँचे तब तक उस कपडे को बराबर भिगोता रहे, यदि गिलटी भी निकल आई हो तो ड़ेढ तोला प्रत्येक वस्तु को लेकर पीसले फिर उस सफूफको गिलटी पर रख कर तर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कपड़े की गद्दी रख देवे और गिलटी ठबै जाने तक गद्दी को ताजे जलसे तर करता रहे इस से बहुते रे रोगियों को आराम हुआ ।

पैसा अखबार सन् १९०५ जनवरी तारीख २१ में लिखा कि यह नुसखा ताऊनका सैंकडों रोगियों पर अजमाने उपरांत लिखा गया हैं । कपूर १ तोला निर्विषी, वर्गरीहां पांच पांच तोला गिलेअरमनी, हल्दी, केशर, गेरू एक एक तोला सबको पीस अर्क गुलाब अथवा केवडामें मिलाकर चनेके बराबर गोलियाँ बनावे, प्रतिदिन एक गोली प्रातःसमय बिना कुछ खाये खावे । रोगकी दशामें एक एक घंटा उपरांत अर्क गुलाब वा आलूबुखारे के साथ खाय यदि गिलटी हो तो उसीको गुलाबमें घिसकर लेप करे गिलटी पर लेप करने के लिये सिरका में खाने वाला चूना मिला लेप करना उचित है ।

लहसन १ गांठ, स्याहमिर्च तीन, कुचिला एक इन तीनोंको कूट आगपर गरमकर गिलटीपर बाँधे बारह घंटा पीछे खोल डाले यदि रहजाय तो फिर इसीको बाँधे, तथा कपूर, एलुवा गिले अरमनी, हल्दी, गेरू, एक एक तोला, वर्गरीहां, संदलैन ५ तोला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जदवार, निर्विषी एक एक तोला, केशर १ माशा, बारीक पीस कर अर्क गुलाब व अर्क केवड़ा में मिला कर चना बराबर गोलियां बनावे प्रतिदिन १ गोली प्रायःसमय खाय तो रोग न सतावे, रोग की दशा में एक एक घंटा प्रति अर्क गुलाब वअर्क केवड़ा वा आवजलाल इमली वा आलू बुखार वा जरिश्क के साथ खावे, यदि गिल्टी हो तो इसी गोली को गुलाब में घिसकर गिल्टी पर लेप करे। गिल्टी के शोथ पर डाक्टर लोग टिंचर आइडिन लगाते हैं इससे आराम न होने पर पुलटिस बंधाते हैं, पकजाने पर चीरकर मवाद निकालते हैं फिर उस पर रेजिन पेंटमेंट तथा कार्बलिक आयल लगाते हैं, अन्य डाक्टरी औषधियों को यहां विस्तार भय से नहीं लिखेंगे और जितनी औषधियां महामारी रोग दमनार्थ कहीं है उनको उत्तम वैद्य से पूछकर देना चाहिए, क्योंकि उत्तम वैद्य बहुत सोच समझ दोष विचारकर औषध देने की सम्पति देते हैं अनाड़ी के हाथ की दीहुई औषधि सर्वदा अहित कारी होती है।

महामारी का रोगी जिस समय अच्छा हो जावे तो पुष्टि के निमित्त नीचे लिखी चटनी चाटे तो बल की बृद्धि होता है, वंशलोचन, छोटी पीपरि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सफेद इलायची के दाने अतीस, काकरासिंगी, भार्गी, गुर्चका सतः केशर, दालचीनी, ये नव औषधि-यां छः छः माशालेके बहुत बारीक पीस कपड़छनकर रखछोड़े और बलके अनुसार १ माशा वा दो माशे भर लेके शहतके साथ चाटै और पथ्यके साथ रहे

दोहा-लिख्यौ तृतीय अधिकार यह नारायन लाय।
महामारीगद यत्न कछु. सुन्दर अवसर पाय। १।

इति श्री मदयोध्यामण्डलान्तर्गत लखीमपुरखीरी
निवासी ज्यौतिर्वित्पडित नारायन प्रसाद
लिखित रसराज महोदधिचतुर्थभाग
भाषायों महामारी गदनिवा-
रणोपायवर्णनोनाम तृतीया
ऽधिकारः ॥ ३ ॥

अनेक रोगोंषधि वर्णन नाम चतुर्थाधिकारः ॥ ४ ॥

दोहा-अब चतुर्थ अधिकार में नारायण मनलाय।
नानागदकर औषधी, लिखितसुअवसर पाय। १।

प्रायः देखने में आया है कि बाल बृद्ध युवा सब ही मनुष्य किसी न किसी रोग से पीड़ित रहाही करते हैं ऐसा कोई भी मनुष्य देखने सुनने में न आया कि जो निरन्तर आरोग्य रहता हो, जिस मनुष्य को आरोग्य समझा उससे पूछने पर भी कुछ न कुछ रोग अवश्य सुनने में आया, इस देश में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो प्रायः सबही किसी न किसी रोग से ग्रस्त हैं, क्योंकि रोग उत्पन्न करने वाले पदार्थ प्रति दिन सेवन करते हैं, जैसे मदिरापीना, भांग, अफीम गांजा चर्स इत्यादि उपरोक्त वस्तुओं के प्रतिदिन सेवन करने में जो जो अवगुण हैं उनको यदि हम विस्तार पूर्वक पृथक २ करके लिखें तो एक बड़ा भारी ग्रन्थ बन जाय इस कारण विस्तार पूर्वक न लिख संक्षेप से दो एक वस्तुओं के अवगुण लिखते हैं, जैसे तमाखू पीना, इसमें बड़ा भारी अवगुण यह है कि दूसरे का जूंठा पीना पड़ता है, दूसरे के मुख की भाप अपने मुखमें जाती है, धर्मशास्त्र में मनुस्मृति सबसे मुख्य समझी जाती है उसमें लिखा है कि "नोच्छिष्टं कस्यान्दिद्यात्" अपना उच्छिष्ट किसी को न दे, अपनी२ बिरादरी में हुक्का एक होने को लोग बिरादरी में शामिल होना समझते हैं जिसका हुक्का बिरादरी वाले नहीं पीते उसको बिरादरी से खारिज समझते हैं, न मालूम जिस समय इस देशमें हुक्का का प्रचार न था तब कैसे झगड़ा निबटता था चिलम तो प्रायः सब ही सब की पीने लगते हैं और इस चिलम में भी दूसरे मुख की भाप का अंश आजाता है, इस कारण उसका पीना भी अनुचित है, नारियल और बांस वा लकड़ी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की निगाली से हुक्का पीकर दूसरों को देना और फिर अपने मुखमें लगाकर पीना धर्म शास्त्र और वैद्यक दोनोंसे अनुचित है. यदि दूसरा मनुष्य किसी गुप्त रोग से युक्त है, तो उसके मुख की भाप का अंश अपने मुखमें आनेसे वही रोग अपने भी हो जाना सम्भव है, जबतक तमाखूके खानेपीने वाले तमाखू को नहीं खाते तबतक उनका मुख पनियाया करता है भोजन नहीं मचता दस्त नहीं उतरता इससे तमाखू खाना पीना ऐसा है जैसा गांजा और चसेका पीना। गांजा और चर्स पीनेसे शिरमें गरमी पहुंचनेसे बुद्धि मन्द होजाती में, प्रायः मनुष्य इसीके सेवन से उन्मत्त और पागल होजातेहैं, बार२ तमाखू खाने से मुखमें दुर्गन्धि आने लगतीहै, बार२ थूकनेके लिए उठना पड़ताहै, कंठसे भीतर कलेजे तक स्याह दाग पड़ जाताहै, इसीप्रकार भांग पीनेसे बुद्धिमन्द हो जाती है, भांग के पीने वाले कहते हैं कि भांग पीने से बुद्धि बढ़ती है जो मनुष्य जो वस्तु सेवन करता है वह उसकी निरन्तर प्रशंसा करता ही है परन्तु कहावत भी खूब मशहूर है कि कोई काम किसी से बिगड़ जाय तो कहा जाता है कि क्या भांग खाई है यदि भांग खाने पीने से बुद्धि बढ़ती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो यह कहावत क्यों प्रसिद्ध होती, जितने नशे हैं वे सब बुद्धिको बिगाड़ते हैं और नशे सब स्वपंरोग रूप हैं तो उनका सेयन करने वाला कैसे सुखी रह सकता है, अंग्रेजी डाक्टरोंने भी गांजा, भांग, चरस अफीम, तम्बाखू आदिके खाने पीने में अनेकअवगुण बताये हैं, उनको यहां यम बिस्यार भयसे लिखनहीं सकते, बुद्धिवान स्वपं विचार करलें सैंकड़ों मनुष्यों ने इनके अवगुण जानकर इनका खानापानी त्याग दिया है, परंतु कठिनता यह है कि इन वस्तुओं ने मनुष्यों को अरना पूरा सेवक बना रक्खा है जो मनुष्य जिस वस्तु को खाता पीता है उससे छूट नहीं सकती, खेद है कि लोगों ने अवगुण वाली वस्तुओं को प्रतिदिन के भोजनमें मिलालिया है जिससे व्यर्थ पैया खर्च होताहै और कुछ लाभ नही बहुतेरे कारीगरों को हमने देखा कि दिनभर मिहनत कर गाठ आने पैसा पाए उसमेंसे तीन आनेका मदिरा १ आनेकी भांग गांजा चर्स तमाखू आदि खाया पिया बाकी चार आन कुटुम्ब की पालना में लगाय अब बतलाइए कि आठ आना कमाया और दूसरे दिन के लिए इक पैसा भी न रहा ऐसे लोगों को बुद्धि का क्या ठिकाना, यदि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनर्थ वस्तुओं के खाने पीनेका प्रचार न होता तो काहेको यह भारतवर्ष भिखारी होजाता, दृष्टिपसार कर थुखये इस भारतवर्षमें चौथाईसे अधिक मनुष्य हृष्टपुष्ट बनेहुए भीख मांगते फिरतेहैं, बहुतेरे साधुओंकी ओर देखा तोवे भांग घोटघोटकर पीते और गांजा चर्सकी दम लगाने ही को तपस्या मान रहेहैं, दिनभर मांगते हैंतो भी पेट नही भरता, कहां तक लिखा जाय इस देश भर में आलस्य छा गया है और अवगुण वाली वस्तुओं के खाने पीने से सैंकड़ों प्रकार के रोग मनुष्यों के शरीरमें प्रगट हो गये हैं, जैसे उपदंश (आतशक गरमी) मूत्रकृच्छ (सुजाक) अर्श (बवासीर) क्षयी आदि. अब यहां हम प्रथम उपदंश (गरमी) रोग की औषधि लिखते हैं ।

उपदंश रोगोत्पत्ति लक्षण ।

हस्तमैथुन व गुदामथुन से, और इन्द्री में किसी प्रकार नख व दंत के लगने से अथवा दीर्घ, कठोर केश तथा रोग आदि करके दूषित योनि वाली स्त्री के साथ रसज्वाल के साथ संभोग करने से योनि का छिद्र जिसका छोटाहो उसके साथ संभोग करने से, संभोग के पश्चात् लिंग न धोनेसे बहुत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैथुन करने से, तथा नानाप्रकारके कुपथ्यसे पुरुषों की लिंगेन्द्रियमें पाँच प्रकारका उपदंश (आतशक) अर्थात् गर्मी रोग पैदा होजाता है, १ बात २ पित्त ३ कफ, ४ सन्निपात, रक्त से उपजा हुआ, यह पाँच प्रकार का उपदंश है।

बात से प्रगट उपदंश का लक्षण।

जो लिंगेन्द्रिय में गरमी करके पींडा हो और बिवाईके समान फटजाय और वह फडके तथा उस स्थानपर कजी फुन्सीहों तो बातका उपदंश जानिए

पित्त से प्रगट उपदंश का लक्षण।

यदि पीली फुन्सिया होजांय उनमें चेप बहुत निकले और कंठ में दाह होय अथवा फुंसियां लाल हों तो पित्त का उपदंश जानिए।

कफ से प्रगट उपदंश का लक्षण।

जिसमें खाज जादाहो और सफेद फुंसियांहों और गाढीराद स्रवे उसको कफ का उपदंश जानिए तथा ये सब लक्षणहोंउसे सन्निपात का उपदंश जानो।

असाध्य उपदंश लक्षण।

जोलिंगेन्द्रियका माँस बिखरजाय उसमें कृमि पडजाँय और इन्द्रिगलजाय अंडकोश अवशेषरहजाय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

असाध्य उपदंश जानिए, अथवा उपदंश वालारोगी दमनका उपाय नहींकरे, और विषयकरता रहे, लिंगेन्द्री सूजजाय, वा पक जाय ऐसा रोगी असाध्य होकर मरजाताहै, इसकारणयोग्यहै कि यह रोगउत्पन्न होनेपर तुरंत उचित औषध सेवन करे, परंतु प्रथम सातदिन मलफुलाने की औषधि खावे।

शाहतारा ५माशे उन्नव ५दाने चिरायता ६ माशे गाउजवाँ ५माशे सोंफकी जड ९माशे मकोय खुश्क ४ माशे कासनी की जड़ ९ माशा ये औषध लेकर रात को पाव भर पानी में भिगोय देवे, प्रातःसमय उसका आग पर चड़ा कर औटावे जब आधा पानी रहजाय, तब दो तोला गुलकंद डाल छान पी लेवे।

तथा मुनक्का ९ दाने, गउजवां ६ माशे, गुलाब के फूल ५ माशे, मुलहटी ५ माशे, सोंफकी जड ९ माशे वेदअंजीरकी जड़कीछाल ५ माशे इन औषधियोंको ले पानीमें भिगोय रातभर रक्खा रहने दे सवेरे को पावभर पानीमें चड़ाय औटावे जब आधा पानी रह जाय तब गुलकन्द दो तोले डालकर मलकर छानले और पीलेवे, मूंगकी खिचड़ी खाय, सात दिन यह औषध सेवन करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फिर कालादाना. कत्था शुद्ध जमालगोटा दो दो मासे लेके भली भाँति खरल करे, जमाल गोटा जितना खरल होगा उतनाही अधिक दस्तावर होजायगा और वमनभी नहीं होगी, खरल करने उपरांत मटरकी बराबर गोलियाँ बनावे, पाँच व सात गोली शीतल जल के साथ खाय जब एक दस्त आवे और गरम अधिक जानपडे तो खाँड का शर्वत एक कटोरा भर पीवे, जो दस्त कमती आवें तो कुछ गरम पानी पीवे जब दस्त हो चुकें तो मूंगकी दाल का पानी पीवे, फिर गाउजवाँ एक तोला आधपाव पानीमें रातको भिगो देवे सबेरे उसका लुआब निकाल मिश्रीडाल कर पीवे इस प्रकार तीन वारजुलाब लेकर खाने पीनेकी औषध सेवन करे।

उपदंश में खाने की औषधि।

रसकपूर, स्याह मिर्च, लौंग, अजवायन, देशी अज बायन खुरासानी, ये दोदो माशे ले लोंग और रस कपूरको लोहेकी कड़ाहीमें दशतोले बकरी का दूध डालकर घोटे जब कुछ नरम सा रहे तब सब औषधि पीस छानकर डालदे फिर सबको घोटे दो माशे की गोली गय के दही में खावे, पाँच दिन तक दूध दही, भातखावे जो मुँह आजाय तो लार टपका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वे, जब भली भांति लार निकल जाय, तब कचनार चमेली झरबेरी इनकी छाल को पानी में औटा कर कुल्ले करे मुंह अच्छा होजायगा तथा रसकपूर ४ माशे, फलफेंदने की जड़की वकली ४ माश लौंग ८० कली मिर्च ८० पान २५, सबको लोहेकी कड़ाहीमें लोहेकी मूसलीसे तीन पहर घोटे, इसकी सात पुडिया बनावे, एक पुडिया प्रति दिन दाल के साथ खाय पित्त अधिक हो तो मलाई के साथ खाय, खटाई मिठाई और वादी वस्तु न खाय, खाने को दूध चावल तथा छोटी हर्र दो तोले, नीलाथोथा ६ माशे, इनको लोहे की कड़ाही में लोहेकी मूसली से घोटे जब वह स्याह रंग और खुश्क होजाय तब दो दो माशे की गोली बनाले प्रातःकाल एक गोली प्रति दिन खाय गोली निगलकर ऊपरसे आधपाव दही पीले वे घीमें गेंहूँ के आटे को मलकर उसकी रोटी बना कर खावे और घी अधिक खावे यदि दस्त और वमन तो कुछ भय नहीं करना, उपदंश फुंसियों पर यही गोली नीबूके रसमें घिसकर लगावे।

तथा-रसकपूर छोटी इलायची छः छः माशे पान १० खरलकर सबकी नौ गोली बनावें, एक गोली नित्य मलाई के साथ खाय, दूधभात खाय, यदि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुंह आजाय तो लार टपकावे लार टपकने से मुंह अच्छा हो जाता है।

तथा गेरू, कत्था छोटी इलायची, रसकपूर छः छः माशे पान १ खरल कर गोली छः माशे प्रमाण बांधै प्रातःसमय एक गोली पान के साथ निगल जाय, दूध भात खाय, तथा जीरा, पीपर, रसकपूर, लौंग, छःछः माशे, पान १, शहत १ तोला, खरल करके दोदो माशेकी गोली बांधे, नित्य १ गोली पानी के साथ खाय केवल चनेका सत्तू और घी खाय।

तथा मुरदाशंख धेला भर, पुराना गुड़ पैसा भर गेहूँ को मैदा टकाभर, तीनों मिला सात गोली करे १ गोली नित्य खाय, और शक्कर के साथ चांवल खाइ तथा पपरिया कत्था पैसाभर खुरासानी अजवाइन पैसाभर, बायविडंग पैसाभर, पुराने घरकी ईंटपर से गिरा हुआ रेत दो पैसा भर पुराना गुड़ तीन पैसाभर सबको मिलाकर चौदह गोली बनावै, एक गोली नित्य खाय, सांठी भोजन करै।

स्याह मिर्च, बड़ी हर्र, शिलाजीत, पारा, आंवला, रसकपूर, बनाफशा, सफेद कत्था चार २ माशे इन सबको बारीक पीस कर रोगनगुल से चना प्रमाण गोली बनावै, एक सबेरे एक शामको आम के पुराने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अचारमें लपेटकर खाय मसूर की दाल और लाल मिर्च न खाय, यह गोलियां इस रोगमें परीक्षा की हुई है तथा रसकपूर १२ माशे, काली मिर्च गिनती में २१ फूलदार लौंग७वंशलोचन १रत्ती, सबको बारीक पीस दहीसे घोटकर तीन गोलीबनावै एक गोली नित्यखाय, दांतोंमें न लगने पावै, ऊपर से ९ तोला दही खायका घी और गेहूँकी रोटी बिना नमक की खावे, तथा अकरकरा, पारा, देशी अजवायन, खुराशानी अजवायन, यह औषधि छः छः माशे लेकर बारीक पीस पुराने गुड़में मिला जङ्गली बेरके बराबर गोली बनावे नित्य एक गोली प्रातः समय खाय ।

तथा देशी अजवायन खुराशानी अजवायन, अजमोद एकएक तोला, पुराना गुड़ दो तोला बिसखपरे के रसमें घोटकर सात गोली बनावे, प्रातःकाल एक गोली नित्यखाय दांतोंमें न लगने पावे गेहूँकी रोटी बिना नमक की खाय ।

तथा मिर्च स्याह अकरकरा, रसकपूर एक एक पैसाभर लेके सात पुडिया बनावे एक पुडिया रोज खाय, सेवन की गाय के घी के साथ खाय या काली मिर्च एक पैसा भर, मुरदाशंग एकपैसा भर हलदी प्रत्येक १ पैसा भर इनको मैदाकर चौदह पुडिया बना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वे एक पुडिया सबेरे और एक शाम को खाय, रोटी वेसन की खाय अथवा पतला भात शक्कर के साथ खाय तथा खुरासानी अजवाइन, देशी अजवाइन अजमोद एक२ तोला, मूशली तीनों३ तोले, काले तिल एक तोला, अकरकरार और छः छः माशे, भिलवा दो, और पुराना गुड़ दो तोला शुद्ध जमालगोटा इन सब औषधियों को ले भली भांति घोट जङ्गली वेर के समान गोली बनावे एक गोली प्रतिदिन प्रातःसमय दही में लपेट कर खाय।

दक्खिनी मिर्च, लौंग, कच्चा चौकिया सुहागा, असगंध रसकपूर, औषध तीन तीन माशे ले पानी में डाल- कर घोटे, और जंगली बेर के बराबर गोल बनावे एक गोली नित्य दही में लपेट कर नो दिन खाय, तो उपदन्श का रोगी अच्छा होजाता है, इसमें मुंहनहीं आता है, यह औषध परीक्षा की हुई है।

तथा लौंग, इलायची, रसकपूर पैसा २ भर लेकर पानी के साथ भली भांति खरलकर चने प्रमाण गोली बनाय रख छोड़े, प्रतिदिन एक गोली इक्कीस दिन तक खाय मुंह नहीं आवेगा, यह औषध बहुत दिन के उपदन्श रोग को गुण करती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा छोटी इलायची पांच के दाना, रसकपूर ६ माशे लोंग दो, इन को ले के पानी से खरल कर १२ गोली बनावे एक गोली प्रातःसमय एक सांयकाल, मलाई के साथ खाय, छः दिन तक, फीके चावल खाय तो उपदन्श रोग शांत होजावे।

तथा—काली मिर्च, लोंग, रसकपूर, छः छः माशे लेके इक्कीस पान में भली भांति खरल करके जङ्गली वेर के बराबर बनावे, एक गोली सबेरे एक शाम को पानी के साथ खाय रोटी चने की खाय।

तथा बड़ीहर्र की बकली तुलसी के पत्ते, नीलाथोथा भुना हुवा प्रत्येक १३ माशे कस्तूरी एक रत्ती लेके खरल कर कागदी नीबू के डेढ़ सेर रस में किमाम कर १ माशे प्रमाण गोली बनावे, सात दिन तक मलाई या आमके पुराने अचार के साथ एक गोली प्रातःकाल एक सायंकाल खाय दूध और मूंग की दाल अपथ्य है, परहेज करे तो रोग जाय

तथा देशी खुरासानी अजवाइन, अजमोद, अकरकरा पारा ये सब पैसा भर, पुराना गुड़ सबके बराबर लेकर मिलाय पुराने आमके अचार के साथ एक गोली खाय यो उपदन्श जाय तथा, गूलर, पीपर नीम, वडइन चार वृक्षों की छाल दो दो तोले शिंगरफ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक तोला, इन सबको खरल कर तमाखू की सी टिकिया चिलम में भर दिन भर में पाँच सात बार सात दिन पीवे फिर चमेली के पत्ते उबाल कर सात दिन तक कुल्ला करे, गेहूँ का फीका दलिया बिना घी के खाय इस प्रकार चौदह दिन तक औषधि सेवन करने पर उपदंश रोग शांत होजाता है।

तथा शरफोंका की जड़की वकली एक पैसा भर शिंगरफ, पपरिया कत्था भुना हुआ तूतिया एक २ माशा लेकर मैदा करे और रोज जख्मों पर डाले, तो सात दिन में सब जख्म सूख जाते हैं।

तथा अण्डवृक्ष की कोंपल और कत्था बराबर लेकर खूब बारीक पीस जख्मों पर लगा पट्टी बांधे तो तीन चार दिनमे जख्म सूख जायंगे।

तथा पपरिया कत्था, सुहागा एक२ पैसा भर, भुना नीलाथोथा तीनमाशे, मुरदाशंख धेलाभर संगजराव तथा जली सुपारी एक एक पैसा भर, इन सबको बारीक पीसले पहिले अपने मूत्र से जख्मों को धोकर यह औषध छोड़े तो घाव अच्छे होते हैं।

तथा इसवन्द जलाहुआ एकपैसा भर राल एकपैसा भर, मोम पैसाभर, नीलाथोथा भुनाहुआ चार माशे गौ का घी ४ पैसाभर सबको कढ़ाई में पकाकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिलालेवे, फिर कपड़े पर लगाकर जख्मोंपर लगावे, तो जख्म अच्छे होजाते हैं।

तथा नीलाथोथा आधा कच्चा आधा भुना हुआ सिंदूर, इन तीनों बराबर लेके सरसों के तेल में घोट जख्मों पर लगा धूप में बैठे, लगेगा बहुत, परन्तु आराम हो जायगा और लगाने से जहर का पानी निकले तो इसमें पीली कौड़ी की राख, मुरदाशंख, जली सुपारी मिलावे तब लगावे तो जख्म अच्छे होवेंगे यदि घावों में कुछ हरापन आजाय तो पपरिया कत्था पीसकर घावों पर डालता रहे तो जख्म खुश्क होजावेंगे।

तथा कनेर की जड़ पानी में पीसकर लेप करे तो उपदंशकी पीड़ा जाय, तथा त्रिफला को कढ़ाई में जलाकर शहत मिलाय लेप करे तो घाव शीघ्र भर जराय, तथा इमली की छाल बारीक पीसकर शहत मिलावे, तो उपदंश रोग जाय।

तथा रसौत, सीरकी छाल, हर्र, ये तीनों बराबर लेकर शहत मिलाय लेप करे तो उपदंश संबंधी वहता हुआ राव अच्छा होजाय।

नीम की छाल, पटोल, त्रिफला, चिरायता खैरसार विजयसार, गूगल, इन सबको बराबर लेके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

औटाय पीवे तो उपदंश रोग जाय, तथा वट के कोमल पत्ते, सांठी की जड़, गिलोय (गुर्च) सोंठ, मुलहटी इनको औटाय इन्द्री को धोवे, तो उपदंश रोग जाय तथा वड़ के कोमल पत्ते, महुवे की छाल, लोध हर्र की छाल हल्दी इन सबको जल से बारीक पीस कर इन्द्री पर लेपकरे, तो उपदन्श की पाड़ा जाय।

जिसके शरीर पर उपदन्श के चकत्ते पड़ गये हों, उसको इसवन्द ६ तोले सुरमे के समान पीस छान उसमेंसे तीन तोला अच्छा अच्छा रख लेवे शेष डाल देवे, फिर उसमें शहद मिला तीन गोली बना लेवे तीन दिन खिचड़ी खिलाय चोथे दिन एक गोली गरम जलके साथ निगलादे जो वह गोली रोगीको पच जाय तो अच्छा है। और जो लौटकर बाहर आ-जाय तो गरम जल से धोकर फिर निगला देवे जो दूसरी बार भी न ठहरे तो उसा गोली को धो कर चार टुकड़े करे और एक एक टुकड़ा गरम पानी से निगला देवे, थोड़ी थोड़ी देर में गरमपानी पिलाता रहे जबतक गरम पानी रोगी पीतारहे तव तक दस्तआते रहेंगे सात आठ दस्त आने पर दोपहर पीछे शीतल जल से हाथ पांव धो खिचड़ी खाय और अगले दिन गोली न खावे, परन्तु खिचड़ी खावे फिर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक गोली के तीन टुकड़े करके गरम पानी के साथ निगल जाय इसी प्रकार बीच में एक दिन छोड़ तीसरी गोली भी खावे, इस जुलाबसे उदरके सब विकार निकल जाते हैं, फिर एक तोले अमलतास एक कोरे मिट्टीके प्याले में सन्ध्या समय आध पाव पानीमें भिगोदे, प्रातःकाल उसका पानी उतारकर पीले उसी प्रकार चालीस दिन में चालीस तोले अमलतास का पानी पीवे गेहूँ की रोटी मूंग की दाल और घा जितना पचा सके उतना खाय तो उपदंश सम्बन्धी सम्पूर्ण विकार दूर होकर शरीर शुद्ध होजाता है तथा भांगरा ४ माशे, काली मिर्च १ माशे घोट छानकर चालीस दिन पर्यन्त पीवे, नमक न खाय गरम वस्तु का परित्याग कर देवे।

तथा मुरदाशंख की गोली दस्त लाती है और तीन दिनमें जख्मों को सुखा देती है, मुरदाशंख १तोला शुद्ध जमालगोटा ११ पुराना गुड़ तीन तोला लेवे पहले मुरदाशंख को बहुत बारीक पीस उसमें जमाल गोटा मिला भली भांति घोटे, फिर गुड़ मिला कूटे जब सब इक मिल होय तब जंगली बेर के बराबर गोली बांधे, शीतल जलके साथ एक गोली नित्य तीन छः तथा नौ दिनतक खाय ऊपर ठण्डा पानी पावे दोपहर को घी डालकर खिचड़ी खाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपदंश नाशक काढा।

नीम की छाल कचनार की छाल, फलफेंदवे की जड़, कींकरकी फली, छोटी कटाई जड़ समेत पुरानागुड यह औषध आध,आध पाव लेके तीन सेर पानी में पकावे जब चौथाई जल रहजाय तब छान कर शीशी में भर रक्खे प्रति दिन आधपाव पीवे अथवा पूर्वोक्त औषधियों में जंगली वेर का गूदा पावभर बढाकर आठ सेर पनीमें संध्यासमय भिगोवे प्रातःसमय गुलाब का अर्क जिस प्रकार खींचा जाता है उसी प्रकार दो सेर अर्क निकाल लेवे और प्रतिदिन आंधी छटांक से आधपाव तक पीवे और घी खिचड़ी खावे, तथा चिरायता, शाहतरा. सनाय सात सात माशे हर चारों, फलफेंदवे की जड़, कचनार की छाल तीन तीन माशा उन्नाव ११ दाने, यह सब औषधी सन्ध्या समय तीन पाव गरम पानी में भिगो देवे। प्रतःसमय औटावे जब आधा जल रह जाय तब मल कर और छान कर पीलेवे, यह काढा उपदंश रोग में गुण करता है।

उपदंश नाशक गोली।

पारेकी गोली मुँह नहीं लाती, न दस्त लातीं हैं, और उपदंश की फुंसियों को सुखा देती है, उपदंशसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिसके केश गिरने लगें, हाथ पांव रह जाय, इन्द्री और जांघमें छेद होगया हो तो इस गोलीसे रोगी अच्छा होजातहै, शंखिया १माश, अकरकरा, मस्तंगी पार ये नौनौ माशा लेके पन्द्रह नीबुओं के रसमें खरलकर मोंठके बराबर गोलियां बांधे, पांच गोली प्रातः और चर गोली सायं काल ठंडे जलके साथ निगल जाय दांतोंको न लगने पावे, सातदिन तक खाय मीठा दलिया अथवा गेहूँ की रोटी घी वा मलीदा जिसमें घी शक्कर पड़ीहो सो खावे घी जितना खाया जात उतना ही अच्छाहै, मूंग कीदाल न खाय क्योंकि मूँगकी दाल खानेसे मुँह आजाता है, खटाई और वादीकी वस्तु से बचाव करे ।

तथा शंखियाकी गोली उपदन्श रोगके लिए परीक्षा कीहुई में, शंखिया तीन माशे, खानेका चूना सूखा तीनमाशे, पीली तूतिया भुनी हुई एक दिरम (साढ़े तीनमाशे) पकेहुए २५ पान इन सबको हरी कटेली के पावभर रसमें खरल करके मोंठकी बराबर गोलियां बांधे, एकगोली प्रतिदिन आम अथवा आम के अचार में रखकर तीन वा पांच वा सात दिन तक खाय, घी अधिक खाय, जो रोगी बलवान हो तो तीन गोली प्रति दिन खाय ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपदंश रोग नाशक लेप मरहम।

चोव चीनीका चूर्ण आधा दिरम, शिंगरफ दश दिरम, धूली हुई तूतिया बीस दिरम, मुरगे के अंडेको भूभलमें दवाले उसकी जरदी में सब औषधी मिलाय मरहम बनालेवे, चोबचीनी का चूरा नमिले तो पारेको कपड़ेमें लपेट कर जलावे उसकी भस्म को मिलावे, यह मलहम उपदंश की फुंसियों में लगाने से रोग शांत होता है।

तथा रसोत एक ड्राम, पारा और गूगल आधा२ ड्राम, थोड़ा जल मिलाकर कांसेके पात्रमें नीम की लकड़ी के सिरे पर पैसा जमाकर उससे घोटे, इस मलहम से भी फुंसियां अच्छी होजाती हैं।

उपदंश पर जुलाब।

जाऊ की लकड़ी के सफूफ का जुलाव आतशकसुजाक और कैसी भी फुंसी हो सब को गुण करता है हड़बहेड़ा, झाऊ की लकड़ी का चूना, ग्यारह माशे, आंवला छोटीहड दश दश माशे, रेवन्दुचीनी गुलाब के फूल छः माशे, शाहतरा तीन माशे सनाय वीस माशे हरड की बकली तीन माशे, कूट छान कर सब औषधियों के बराबर खांड़ अथवा मिश्री मिला कर सफूफ बनावे, खुराक चार माशे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आतशकपर माजून ।

उशवा मगरबीं दश तोले छः माशे दाल चीनी, लौंग सोंठ, बड़ी और छोटी इलायची, केसर सात सात माशे, शहत डेढ़ सेर मिश्री सफेद पावभर सबको कूट छान कर शहत मिश्रीको चाशनी करके माजून बनाले, गरम पानी अथवा सौंफवा मकोयके छटांकभर अर्क के साथ एक तोला प्रतिदिन खावे ।

ये औषधियां उपदंश रोग पर लिखी हैं जो जिसको हितकारी जान पड़े औषधी खावे, अनारडी वैद्य से पूछ कर औषधी खावे, जो वैद्य उत्तम हो उससे पूछ कर औषधी खावे, इसी से यहां अनेक अनेक प्रकार की औषधियां लिखी हैं, अब आगे सुजाक रोग की औषधियों को लिखते हैं क्योंकि उपदंश और मूत्रकृच्छ रोग प्रायः मनुष्यों के होने पर वे इसको छिपाते हैं यह रोग छिपाने से बढ़ जाता है ।

(सुजाक) रोगउत्पत्ति लक्षण ।

दंड कसरत करने राई आदि तीक्ष्ण औषधी रूखा पदार्थ खाने से, प्रतिदिन मदिरा पीने से निरन्तर घोड़े पर चढ़ने से, और जल के समीप रहने वाले हंस, सारस, चकवा आदि पक्षियों का मांस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खाने से तथा मछली खाने के उपरान्त भोजन करने से कच्चे पदार्थ खाने से आठ प्रकार का मूत्र कृच्छ् रोग होजाता है, १ बातका, २ पित्तका ३ कफ का, ४ सान्नपात का, ५ चोट लगने का, ६ मल के रोकने का, ७ शुक्र के रोकने का, ८ पथरी का।

मूत्र कृच्छ्र का सामान्य लक्षण।

कोपको प्राप्त हुए जो बात पित्त वह आप अपने ही कारण से पेट में प्राप्त हो मूत्रके मार्गमें बहुत पीड़ा करके मूत्र उतरता है और मूत्र बन्द होने में तो कम और मूत्र करने में अधिक पीड़ा हो उसको मूत्र कृच्छ् कहते हैं।

बात के मूत्रकृच्छ लक्षण।

पेडू और जांघोंकी सन्धिमें और इन्द्री में पीडा अधिक हो और बारम्बार थोडा थोडा मूत्र उतरे तो बातका मूत्र कृच्छ रोग जानना।

पित्त के मूत्र कृच्छ् का लक्षण।

लाल, पीला, और गरम मूत्र अधिक कष्ट के साथ उतरे तो पित्त का मूत्र कृच्छ् रोग जानना।

कफ के मूत्र कृच्छ् का लक्षण।

लिंग और पेडू ये दोनों भारी हों और दोनोंमें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूजन हो मूत्रमें झाग आवे और मूत्र कष्ट से उतरे तो कफ का सुजाक जानना।

सन्निपात के सुजाक का लक्षण।

जिसमें बात, पित्त, कफ, तीनों प्रकार के सुजाक का लक्षण मिले वह सन्निपात का सुजाक होता है।

चोट लगने के सुजाक का लक्षण।

जिन नसों में होकर मूत्र उतरता है उन नसों में किसी प्रकार की चोट लगने से मूत्र रुक जाय तो चोट लगने का रोग जानिए यदि इसमें बात के सुजाक के लक्षण मिल जांय तो मनुष्य मर जाता है।

मल रोकने के सुजाक का लक्षण।

मलकी वाधा को रोकने से वायु कुपित होकर पेडू और पेट में अफरा करे और इन्द्री के स्थान में पीडा अधिक हो मूत्र कष्ट से उतरे तो मलका सुजाक जानिये।

वीर्य रोकने के सुजाक का लक्षण।

वीर्य रोकने से जो मूत्रका मार्ग रुक जाय और पेडु व लिंगमें पीडा हो वीर्य सहित बडे कष्ट से मूत्र उतरे तो वीर्य के रोकने का सुजाक रोग जानिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पथरी के मूत्रकृच्छ्रका लक्षण ।

पथरी व शकरा नाम रेत ये दोनों अण्ड में रहते हैं इन्हींसे मूत्र कृच्छ्र रोग प्रगट होता हैं, वह पथरी पित्त करके पची बायु करके रूखी कफ से रहित पथरी का रूप होय तो मूत्र रोकता है ।

मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) में जुलाब ।

प्रथम तीन दिन तक मूंग चावल की खिचड़ी खाय चौथे दिन एक घड़ा भर पानी में आध सेर गाय का दूध छोड़ देवे, और आध पाव राल मुद्दे की खारी बहुत बारीक पीस कर रखा छोड़ै, उस राल में से एक तोला पिसी हुई राल फांक कर ऊपर से घड़े में से लस्सी पीकर पेट भरले इसी प्रकार दिन के समय आध आध घड़ी अथवा घड़ी घड़ी भर के उपरान्त राल कई बार में फांक कर घड़ा भर लस्सी पीलेवे, जब दीर्घ शंका जाय तब आवदस्त ठंडे जल से लेव, और हाथ भी ठंडे जल से धोवे, जब दस्त बन्द करना चाहै तब गरम पानी से हाथ पांव धोवे और मूंग की दाल पीलेवै, फिर दूसरे दिन सोंफ छोटी इलायची, कासनी बराबर लेके घोट छान मिसरी डालकर, और अगले दिन उसी प्रकार राल और लह-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सी जुलाब लेवे, फिर चौथे दिन ठंडाई पीकर पांचवें दिन फिर जुलाब लेवे उसी प्रकार तीन जुलाब लेकर औषधि खावै।

मूत्रकृच्छ रोग में इन्द्री जुलाब।

शीतजचीनी, सफेदजीरा, छोटी इलायची दाने छोटी हरड, मुलहठी, जवाखार ये औषधी छः छः माशे, रेवन्दचीनी चालीस माशे सबके बराबर मिश्री कूट पीसकर रखछोड़े, जिस दिन इन्द्री जुलाब लेना हो उस दिन एक प्रहर रात रहे एक तोला भर पिसी औषधी गरम जल के साथ खाय, फिर एक तोला औषधी चार घड़ी रात रहे गरम जलके साथ खाय, तदनन्तर दो तोला औषधी सूर्य के उदय समय दूध की लस्सी के साथ खाय तदनन्तर केवल लस्सी को दिन भर पीता रहे, तो इन्द्री जुलाब अच्छा होकर रोग शान्त होने लगता है।

एक पात्र मिट्टी का लेकर उसमें जल भरे और थोड़ा शोरा डाल कर छाया में रख देवे जब मूत्र करना हो तब उस शोरे के जलमें इन्द्री डाल कर मूत्र करे और उस जलको फेंकदे और जल डाल कर शोरा डालदे, फिर मूत्र करना हो तब मूत्रकर के जल और शोरा बदल दे, एवं जब मूत्र करना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तब जल और शोरा डाले, शोरा के प्रभाव से मूत्र कृच्छ का घाव सूख जाता है।

वीर्य के रोकने से उत्पन्न मूत्र कृच्छका उपाय।

चक्रदत्त में लिखा है कि शुद्ध शिलाजीत को बलानुसार लेके शहत में मिलाय खावे तो वीर्य रोकने से उत्पन्न मूत्रकृच्छ रोग शान्त होजाता है।

सर्व संग्रह में लिखा है कि गोखरू का पंचाग १०० टका भर कूट कर अठगुने जल में औटावे जब चौथाई रह जाय तब उस में ५० टका भर मिश्री की चासनी अवलेह समान कर के सोंठ, दो टका भर, पीपल दो टकाभर, इलायची दो टका भर, जवाखार दो टका भर, केशर दो टका भर, काहूबृक्ष के बक्कल दोटका भर, निर्बसी का बीज दो टका भर, बंशलोचन आठ टका भर इन सब औषधियों को बारीक पीस कर चासनी में डाले, फिर एक टका भर प्रति दिन खाय तो मूत्रकृच्छ, दाह, बद्धकोष्ठ, पथरी, रुधिर को मूतना, मधुप्रमेह इन सब रोगों को यह गोक्षुरादि अबलेह शांत करता है।

मल रोकने के मूत्र कृच्छ की औषधी।

शहतऔरजवाखार कोगोखरूके काढ़ामें मिलाकर पीवे, अथवा त्रिफला ५टंक, बेरके जड़कीछाल ५टंक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन दोनों को रात्रिमें भिगोकर सबेरे उसीजलमेंपीस कर सेंधा नमक डाल पीवै, अथवा मुनक्का दाखवा किसमिस ५टंक, मिश्री १० टंक, दहीका मठा ९० टंक,ये तीनों औषधी मिलाकर पीवै, अथवा गोखरू को जड़ सहित काढ़ा कर शहत मिश्री मिलाय पीवै, येयत्न भाव प्रकाश में लिखे हैं।

योनिजदोष से उत्पन्न सुजाक यत्न।

पक्के नीबू का रस, गौ के कच्चे दूधमें डालकर प्रति दिन इच्छा पूर्वक पीवै तो स्त्री का योनि दोष उत्पन्न सुजाकके दोष शांत होजाता है, तथा गिलोय; सोंठ, आवलां असगंध, गोखरू, ये सब बराबर ले और कूट कर २॥ टंक का प्रति दिन काढ़ा कर पीवै तो सुजाक रोग

चोट लगने के सुजाक की औषधी।

आंवलेके रसमें शहत मिलाय पीव अथवा ऊख के रस में डालकर पीवै तो सुजाक रोग जाय।

सर्व प्रकार के सुजाक की औषधी।

बड़े करौंदे के पत्ते एक सेर कूटकर रस निकाल लेवे उसमें चार रत्ती चूना डाल कर दिन में दो तीन बार कर के पीवे तो सुजाक रोग जाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा—आधपाव चने के छुलके धो साफ़ कर सन्ध्या समय मिट्टी के पात्र में भर जल डाल कर भिगो देवे प्रातःकाल मल छान कर मिश्री मिलाय सात दिन पर्यन्त पीवे तो सुजाक चिनग और प्रमेह रोग जाय।

तथा-एकसेरभर गन्नाकी खाई मिट्टीके पात्रमेंजल डालकर रख छोड़ेजब प्यास लगेतब वही जलछान कर पीवे तो सातदिनमें सुजाक चिनग प्रमेह जाय।

तथा-पावभर साठी के चावल मिट्टीके पात्रमें जल डाल रख छोडे जब प्यास लगे तब वही जलछान कर बताशा अथवा मिश्री डाल कर पीवे तो सुजाक, प्रमेह और चिनग रोग जाय।

तथा—शंखाहुली बूटीको कूट छानकर प्रतिदिन गायके दूध के साथ पीवे, खुराक एक धेला भर दूध एक पाव भर पीवे।

तथा—बड़बृक्षकी कोंपलको पीस छानकर मिश्री मिलाय शर्बत करके पीवे, सुजाक रोग जाय।

तथा—नागौरी असगन्ध, नागरमोथा, तालमखाने इन्द्राजवइन औषधियों को बराबर ले कूट पीसकर मैदा करे प्रतिदिन धेलाभर खाय गायका दूध पाव भर ऊपर से पीवे तो सुजाक रोग जाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा-शोराकलमी तीन माशे, भुनी फिटकरी तीन माशे, मिश्री टंका भर इनको पीसकर तीन पुडिया बनावे, प्रातःकाल एक पुड़िया खाय ऊपर थोडा बासी जल पी लेवै तो सुजाक रोग जाय,

तथा-अकरकरा एक पैसा भर, ब्रह्मदण्डी एक पैसा भर, तालमखाने चार पैसा भर, धनिया एक पैसा भर, सफेद जीरा चार पैसा भर, समुद्रशोख टंका भर, बायविडंग टंका भर इनको मैदा कर प्रति दिन एक पैसा भर लेके खाय ऊपर से पाव भर गाय का दूध पीवै तो सब प्रकार का सुजाक रोग जाय ।

तथा-छोटी इलायची, गिलोय (गुर्च) का सत पाषाणभेद, मुलहटी, तालमखाने, वंग, वंशलोचन यह औषधी तोला तोला भर लेके मैदा करे सबके बराबर मिश्री मिला फंकी बना लेवै प्रति दिन नव माशे अथवा एक तोलाभर खाय नया पुराना सब प्रकार के सुजाक जाय, ।

तथा-बिरोजे का तेल दो या तीन बूंद गर्मीमें शर्बत के साथ और जाड़ोंमें बताशेके साथ खावै,

तथा-रसकपूर तीन माशे, कपूर दो माशे, शुद्ध नीलाथोथा एक माशा, कत्था दो माशा, छोटी इला-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यत्री के तीन दाने, शोरा कलमी दो माशे, गायका घी चार तोला, सबको घोट रक्खे प्रातःसायं दोनों साय एक रत्ती प्रमाण पान पर लगा कर ग्यारह दिन खाय तो सुजाक रोग जाय ॥

तथा--बड़ी इलायची के दाने, भुनी फिटकरी दोनों बराबर लेके मिश्री छः माशे लेवे, प्रातःसायं इस फंकी को फांककर गोदुग्ध ऊपरसे पीवे तो आठ दिन में सुजाक रोग शान्त हाजाता है।

तथा--शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, आंवलासा, ये तीनों औषध लेके बहुत बारीक पीस कर घोट प्रातःसायं एक एक रत्ती प्रमाण शहत में चाटे तो ११ दिन में पुराना सुजाक जाय।

तथा--शीतलचीनी पीस छान कर दिनमें चार बार तीन तीन माशे गाय के दूध की लहसीके साथ सेवन करे तीन दिन उपरांत प्रातःसायं दोवार लहसीके साथ सेवन करे कैसाही पुराना सुजाक तीन दिन में अच्छा होजाता है।

तथा-एक छटांक भर सेमल की रुई को फैलाकर उस पर पुहकर मूल एक तोला, कपूर एकतोला, पीसकर बुरकावे, फिर बत्ती बनाकर अंडीके एकछटांक तेलमें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हालकर जलावे, और मिट्टीके साफ चिकने पारे पर काजल पारे उस काजल को गाय के ताजे माखन चार रत्ती में घोटले रात्रि समय आंखों में अंजन लगावे सात दिन अंजन लगाने से सुजाक शान्त होजाता है, यह चमत्कारिक अंजन है।

तथा-मिश्री सोंठ बराबर लेके प्रातः सायं छः छः माशे प्रमाण फंकी फांककर बकरी का दूधपीवे, तो पुराना सुजाक जाय।

तथा-शिलाजीत का सत एक माशा, वंशलोचन एक रत्ती, छोटी इलायची के दाने एक रत्ती, मिश्री तथा गाय का घी एकएक माशा, सब औषधियों कोपीस गायके घीमें मिलाकरचाटे ऊपरसेगायकादूध आधसेर पीवे तो सुजाक रोग शांत होजावे।

तथा-आमके बृक्षकी छाल गीली चारतोला कूट कर मिट्टी के पात्रमें संध्या समय जल डालकर ओस में रखदे, प्रायः समय लुआव उठाके चार रत्ती चूना अथवा चूने का निर्मल जल दो तोला उसमें मिला कर पीवे, सात दिन पीनेसे भीतर का घाव सूख जाता है, और रोग शांन्त होजाता है।

तथा-धनियां एकतोला, नीलोफर छःमाशे, कासनी छःमाशे, लहसोड़े सात दाने कुचलकर सन्ध्यासमय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सब को मिट्टी के एक कोरे पात्र में पावभर जल भर कर भिगोय देवै और प्रातःकाल छान लेवै, फिर दो तोला मिश्री पीस मिलाकर पीलेवै, शेष खोजड़ को फिर भिगो देवे सो सन्ध्या समय मिश्री डाल कर पीवै तो सुजाक जाय।

तथा गुर्च का सत, वंशलोचन, सेलखड़ी, केला कपूर, शीतलचीनी, विरोजाका सत, संगजराव. ये औषधी तीन तीन माशा ले, इनमें समुद्रशोख दो माशे, गिले अरमनी तीन माशे मिलाकर कूटछान लेवे इसमें से दो भाग प्रातःसमय और एक भाग सायंकाल आगे लिखी औषधियोंके अर्क के साथ नौ दिन तक फांके, नीलोफर पुराना धनियां, कासनी, खस, ये चारों औषधि छः छः माशे लहसोड़े दश दाने कुचल कर संध्या समय मिट्टी के कोरे पात्रमें पाव भर जल डाल भिगो देवै, प्रातः समय निर्मल जल उसमें का लेके तीन तोला मिश्री पीस मिलाकर भिगोवे उसको सन्ध्या समय छान मिश्री मिलाय फंकी फांक कर पी लेवै, तो सुजाक शान्त होजाता है।

तथा—सुजाक में शहतूत के कोमल नवीन पत्तो घोटछान मिश्रीमिला पीनेसे रोग शांत होजाता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा–छोटी इलायची चार, सेलखड़ी एक तोला, सांफ सात माशा, तुरन्त के भरे जल में घोट छानकर पीवे, येही औषधियां चौगुणी लेके एक घड़ा जल में घोल देवे और उस घड़ा में दूध डाल देवे फिर उस लस्सी को बारंबार दिन में पावे यदि पथरी होगई होगी तो वह मूत्र द्वारा निकल जायगी।

तथा–भुने चने की खील, संगजराव, कचाविरोजा ये बराबर ले खरल कर, छः छः माशेकी गोली तुरन्त भरे जल के साथ निगल जाया करे तो सात दिन में सुजाक रोग शान्त होजाता हैं।

तथा–सरसों की खल एक तोला भर बारीक पीस कर मिट्टी केकोरे पात्रमें सन्ध्या समय आधसेर जलमें भिगोदे और ओसमें रख छोड़ेः प्रात-समय संगजराव छः माशे पीस कर फांकले ऊपरसे वह खलका जल निर्मल छान कर पीले मूगकी दाल घी और गेहूँकी रोटी खाय तो आठदिन में सुजाक जाय।

तथा–शीतलचीनी, शोरा कलमी, भुनो फिटकरी, सतविरोजा, सबके बराबर मिश्री दोनों समय छः छः माशा फांककर गायके दूधको ऊपर से पीवें तो आठ दिन में नवीन सुजाक जाय।

तथा–अमलतास, जवासा, हरड़, पाषाणभेद, गोखरू

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रुका काढ़ा, शहत मिला पीनेसे सुजाक जाता रहताहै

तथा-काली मिर्च, और तिल की भस्म दूध और शहतके साथ सेवन करे तो सुजाक रोग जाय।

गोखरू के आठगुने काढेमें गूगल कोपकाय उसमें त्रिफला (आवला हरड बहेड़ा) और त्रिकुटा (सोंठ मिर्च, पीपर) नागरमोथाका चूर्ण गोखरूके तुल्यदेवे और गोली बनालेवे इस गोलीके खानेसे प्रमेह स्त्री के रुधिर गिरना, मूत्रका, रुकना सुजाक पथरीऔर वीर्य का दोष दूर होजाता है।

तथा-सफेद इलायचीके दाने वंशलोचन, विरोजा का सत कबाब चीनी, सत गिलोय [गुर्च का सत] प्रत्येक एक तोला, चन्दन का तेल डेढ़ तोला, इन सब औषधियों को लेके बेर की बराबर गोली बनावे प्रति दिन एक गोली सूर्योदय समय गाय के पाव भर दूधके साथ खाय यदि रोगी बलवान हो तो आध सेर दूध गोली खाकर पीवे, परंतु दूध कच्चा पीवै, और यह ध्यान रहे कि दूध गाय का हो आजकल अहीर अथवा दूध बिक्य करने वाले प्राय रोगी को धोखा देते हैं कि गाय का दूध कह कर भैंस का दूध दे देते हैं इसी से रोगी को भली भांति गुण नहीं करता है उचित है कि अपने सामने गाय का दूध दुहा-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करलावे, अथवा किसी पूर्ण विश्वासी जनके द्वारा मंगावे, सुजाक रोग वाला मनुष्य गुड़, खटाई, लालमिर्च तेल, और गरम वस्तुओं को न खावे और जब रोग शांत होजाय तब आगे लिखी हुई फांकी सेवनकरे कतीरा गोंद १२ तोला, शालममिश्री ४ तोला सका कुल मिश्री २ तोला, वंशलोचन ३ तोला, छोटी इलायची ३ तोला, दाल चीनी २ तोला, दक्खिनी मूशली २४ तोला, गुर्च (गिलोय) का सत २ तोला समुद्र शोख ५ तोला, इन सबको कूटपीस कपड़छन कररख छोड़े प्रतिदिन प्रातः समय एक तोलाभर मिश्री मिलाय एक तोला फंकी फांककर ऊपर से गाय का दूध पीवे, ये औषधियां सुजाक रोग निवारणार्थ लिखकर प्रकाशित की हैं जो अभीष्ट हो वही सेवन करे।

अर्श रोगोत्पत्ति लक्षण।

गुदामें शंखके भीतरी भागके समान तथा नाभिके सदृश चार अंगुलके तीन चक्रहैं, एकऊपर, एकनीचे एकबीच में ऊपरके चक्रका नाम प्रवाहिनीहै जो मल पवनको बाहर करता है, बीचके चक्रका नाम सर्जनी है, जो मल पवन आदिको छुटावे है, नीचे केचक्रका नाम अवाहिनी है जोमलपवन निकलनेके पीछे गुदाको

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज्योंकी त्यों ढक देवेहै, इन तीनों चक्रों में बवासीर रोग उत्पन्न होते हैं पहले चक्रमें बवासीर होतो साध्य बीचके चक्रमें हो तो कष्टसाध्य भीतर के चक्रमें बवासीर होतो असाध्य जानना, बवासीर रोग १ बात २पित्त, ३ कफ, ४ सन्निपात, ५रुधिर, ६शरीरकेसाथ उत्पन्न होनेवाले, इन भेदों से छः प्रकार का यह रोग होताहै, वादी अथवा गरम कफकारी चिकनी मीठी वस्तु जो मनुष्य बहुत खाय, और बात पित्त कफके करने वाले मिथ्या आहार मिथ्या बिहार करके कोपको प्राप्त जो बात पित्त कफ दोष वह गुदा के तीनों चक्रोंके ऊपर त्वचा मांस मेदोंको बिगाड़कर नाना प्रकार के मांस के अंकुर अर्थात् मस्से उत्पन्न करे है, उसको वैद्य लोग बवासीर कहते हैं, दो प्रकार का बवासीर रोग प्रसिद्ध है १ वादी, २ खूनी वादी बवासीर में खुजली और चिर चिराहट के साथ पीड़ा होती है, और खूनी बवासीर में रुधिर गिरता है, जब तक रुधिर नहीं गिरता तब तक बहुत पीड़ा होती है रुधिर गिरने उपरान्त पीड़ा कमती होजाती है।

बवासीर का पूव रूप।

जोभोजनपदार्थ भलीभांति नहीं पचे औरकोखही में रहै बद्धकोष्ट और मन्दाग्नि होय, डकारबहुतआवें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शरीर दुर्बल होजाय, कोखमें अफरा होय, अंगमें पीडा रहै इनलक्षणोंसे जानना कि बवासीर रोग होगा।

बातकी बवासीर के लक्षण।

कडुवा, कषैला, तीखा, रूखा, शीतल और अति लघु ऐसे पदार्थोंके खानेसे, वा बहुत थोडा भोजन करने से, भोजन समय उल्लंघन कर भोजन करने से, बहुत मदिरा पीने से, अत्यंत मैथुन करने से, उपवास करने से, शीतदेश और शीतकाल अर्थात् हेमन्त और शिशिर ऋतु में दंड कसरत करने से वायु और सूर्य की धूप में घूमने से, शोक करने से, बात कुपित होकर बवासीर रोग प्रगट हो जाता है, ये बात की बवासीर होने के कारण हैं।

बातकी बवासीर के लक्षण।

जिस अर्श रोग को गुदा के मस्से चिमचिमी और ललाई लिये खरदरे कठोर, तेज, कुछ टेढे, फटे मुख के गुदा के ऊपर होयँ और बेर वा कपास की बुड्डी अथवा कदम के फूल के सदृश होय और शिर, पसली कंधे, कटि, जंघा, पेडू इन में व्यथा होय छींक और डकार न आवे हृदय दुखे भूख न लगे, साथही कास श्वास मन्दाग्नि कर्णमें शब्द, वायु गोला, भ्रम उदर रोग जिसमें लक्षण होयँ तो बात की बवासीर जानो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पित्त की बवासीर के कारण।

खट्टा, कडुआ, लवणका, गरम ऐसे पदार्थोंसे दंड कसरत बहुत करने से, अग्नि के समीप तथा सूर्य की धूप में रहने से, परिश्रम करने से, गरम देश (मारवाड़ आदि देश) और उष्ण काल अर्थात् ग्रीष्म ऋतु में, क्रोध मद्यपान, दाह कारक, तीखी वस्तु खाने से पित्त कुपित होकर बवासीर रोग प्रगट होजाता है, यह पित्त की बवासीर के कारण हैं।

पित्त की बवासीर के लक्षण।

जिस रोगीके मस्सोंका मुख नीला, पीला, लाल और सफेदी लिए हो और उन मस्सों में से महीन धारसा रुधिर निकले, उसरुधिर में दुर्गंधि आवे, और कोमल तथा शिथिल मस्से हों, तथा उन मस्सों का मुखजोंक का साहो और शरीर में दाह ज्वर, मूर्च्छा तथा अरुचि हो और नीला, पीला लाल मल उतरै गरम और संयुक्त हो, त्वचा, नखनेत्र इनका रंग पीला हो ये लक्षण पित्ताधिक बवासीर के हैं।

कफ की बवासीर के लक्षण।

चिकना मीठा, शीतल, खारी भारी, खट्टा, ऐसे भोजनसे, व्यायाम करताहो तो उनके न करनेसे दिन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में शयन करने से बहुत बैठे रहने से पूर्व की बायु सेवन करने से, शीत देश और शीत काल में अधिक परिश्रम करने से, और अधिक शीत सहने से चिंतारहित होने से कफ कुपित होकर जो बवासीर रोग प्रगट होजाता है उसको कफाधिक बवासीर रोग कहिए अर्थात ये कफ की बवासीर होने के हेतु हैं।

कफ की बवासीर का लक्षण।

जिस रोगी के गुदाका मस्सा मोटा और मंदमंद पीड़ा सहित ऊँचा और भारी व कफ से लिपटा, हो खुजली अधिक हो, रोगी को प्यास बहुत लगे, पेडू में अफरा और गुदामें खुजली अधिक हो, तथा कास, श्वास, हृदय पीड़ा अरुचि, मूत्र कृच्छ पीनस मन्दाग्नि हो, मस्तक भारी रहै, शीत लगे, कफ से लिपटा मल उतरे, मस्से से रुधिर नहीं निकले और शरीर का रंग पीला और चिकना हो, आंव गिरता हो, ये लक्षण कफाधिक बवासीर के जानना।

द्वंद्वज बवासीर के कारण।

जो दो दोषों के कारण और लक्षण हों तो द्वंद्वज बवासीर जानना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रिदोष की बवासीर के कारण।

बात आदि बवासीर के जो कारण कहे हैं वे सब होने से त्रिदोष की बवासीर जानिए।

सन्निपात और सहज बवासीर के लक्षण।

जो पूर्व बात आदिके तीनों दोषकी बवासीर के जो लक्षण कहे सो सब लक्षण मिले तो सन्निपातकीबवासीर जानिए, येही लक्षण सहज बवासीर के हैं।

रुधिर की बवासीर के लक्षण।

जिस रोगी की गुदा के मस्से घुंघुची के रङ्ग के समान होंय और मस्सों के रुधिर की धार गरम और बहुत गिरे, और गाढा कच्चा लोहू निकले, रुधिर बहुत गिरे उसका शरीर ढाकके फूलके सदृश होजाय और उसका बर्ण उत्साह, पराक्रम सब जाता रहे शरीर जाय अधोवायु (पाद) भलीभांति नहीं सरे मस्सों में से रुधिर निकलते हुए झाग हों, तथा कटि, जंघा और गुदा में पीड़ा हो, शरीर दुर्बल होजाय, तो रुधिर की बवासीर में वायु का मेल जानिए, एवं जिसका मल चिकना हो भारी हो और ठंडा हो और मस्सों में रुधिर की धार मोटी और गरम हो और गुदा में कफ का सा झाग लगा रहे, तो रुधिर की कफ युक्त बवासीर जानना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

असाध्य बवासीर के लक्षण।

जिस रोगी के बवासीर में सूजन हो, अतीसार और वमन व अंग में पीड़ा हो तथा तृषा, ज्वर, अरुचि, मन्दाग्नि हो गुदा पकगई हो, हृदयमें शूल हो, ये लक्षण होंय तो रोगी अवश्य मर जाताहै।

बात की बवासीर का यत्न।

मिट्टी में जिमीकन्द को लपेटकर भाड में भली भांति भूनकर भुरता बनाले और तेल अथवा घी में भूनकर अथवा सरसों के तेल वा गायके घी से लपेटकर प्रतिदिन १ टंकाभर इकतीस दिन पर्यंत खाय तो वात की बवासीर शांत होजाती है यह भावप्रकाश में कहा है।

वैद्य विनोद में लिखा है कि आक के नवीन पत्तों में पांचों लवण और तेल लगावे और उन को जला कर राख करे फिर गरम जल से वह राख १ टंक अथवा २ टंक प्रमाण पन्द्रह दिन पर्यन्त खाय तो बात की बवासीर जाय तथा गाय के मठे में अनुमान से सेंधा लवण मिलाय बहुत दिन तक सेवन करे तो बातकी बवासीर जाय और शरीर पुष्ट रहे यहभी भावप्रकास में कहा है।

तथा–हरडकी छाल ५टंकाभर, चित्रक १टंकाभर शुद्ध भिलावा ५टंकाभर, सोंठ १टंकाभर, कालीमिर्च

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१टकाभर, पिपलामूल १टकाभर, पीपरि १ टकाभर जीरा१टकाभर, चव्य१टकाभर, पकाया हुआ जिमीकन्द पावभर, जवाखार ४टकाभर इन सब औषधियों को बरीक पीसलेवे, सबसे दूना गुड़ मिला टकाभर की गोली बांधे एक गोली प्रतिदिन खायतो बात की ववासीर जाय, अथवा बंदालके पत्तोंको औटा उसके जलसे आवदस्त ले, वा बंदाल के बुड्डों की धूनी ले तो ववासीर के मरसे दूर होवे।

ववासीर के मस्सों पर लेप

कनेर के पत्ते, नीमकेपत्ते, गुड़, कडवी तोंवी की जड़ इन सबको कांजी खे जल में पीसकर मस्सों पर लेपकरे अथवा–हलदी, कडवी तोंवी की जड़, आक के पत्ते सहजने की जड़ इनको कांजी के पानीमें पीस मस्सेपर लेप करे, तो मस्से दूर हो अथवा–मुलहटी रास्ना (राई) अरण्ड की जड़ अजवाइन, महुवा इन सबको कांजी में बारीक पीस गरमकर मस्सों पर लेप कर अथवा वफाराले तो मस्से दूर हों।

तथा–सेंहुड के दूध में हल्दी घिसकर लगाने से मस्से दूर हो जाते हैं अथवा कुकुरौंधे को मलकर जल में मिला उसीसे आवदस्त ले अथवा फिटकरी के पानी से आंवदस्त ले तो मस्से दब जाते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा-चीनिया कपूर, रसौत, निबौली की मिंगी इन तीनों को पानी में बारीक पीसकर लेप करने से मस्से दूर हो जाते हैं।

अर्श नाशक एलादि चूर्ण

इलायची छोटी १ तोला, तज २ तोला, तेजपात ३ तोला, नागकेशर ४ तोला, काली मिर्च ५ तोला पीपरि ६ तोला, सोंठ ७ तोला, मिश्री डेढ पाव लेवे प्रथम सब औषधियों को कूट पीस कपड़छन करके उसमें मिश्री पिसी हुई मिलाय छः छः माशे की पुडिया बनावे प्रातःकाल और सायंकाल एक पुडिया खाने से दोनों प्रकार का ववासीर रोग शांत हो जाता है तथा-वैद्य रहस्य में लिखा है कि बृहद्र सूरण मोदक सेवन करने से ववासीर रोग समूल नष्ट हो जाता है।

बृहद् सूरण मोदक

पका हुआ जिमीकन्द पाव भर, चित्रक आधपाव सोंठ आध पाव काली मिर्च एक छटांक, त्रिफला आधी छठांक, पिपलामूल, शुद्ध भिलावा शतावरी हर एक आध पाव, बिधारा पाव भर, भांग आध पाव, इलायची एक छटाँक, वायबिडंग आध पाव, इनको बारीक पीस कर सबसे दूना गुड मिलाय सोलह माशे का मोदक (लड्डू) बाधे,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रतिदिन एक मोदक तीस दिन पर्यंत खाय तो बवासीर हिचकी कास (खांसी) श्वास (दमा) राजरोग, प्रमेह इन सब रोगों को यह बृहदसूरण मोदक दूर करे है, परन्तु इस औषध के सेवनकाल में वीर्य बल को बढ़ाने बाली वस्तु भोजन करे।

खूनी बवासीर की औषधी।

परवल के पत्ते, चिरायता, लाल चन्दन, जवासा दारुहलदी, नागरमोथा, खस, दालचीनी औरनीव की भीतरी छाल, इनके काढे में शहत डाल कर जल में मिलाय पीने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

तथा सूखे आंवलाचार, बड़ के पत्ते चार चार पैसे भर गाय के माखन को लोहे की कडाही में चूल्हे पर चढ़ा कर आँच कर जब भलीभाँति तप्त हो जाय तब दोनों औषधियों को घी में डालै जब औषध जल जाय तब उतारकर ठंडा करे और धातु के पात्र में भर रखै फिर इसको खरल में डाल के बारीक पीस एक रस करे, प्रतिदिन नवमाशे प्रमाण प्रातः समय इक्कीस दिन पर्यन्त खाय और जल से कुल्ला करे कुल्ले का पानी पीवै नहीं, गरम वस्तु बाजरा, करेला, पेडा, मिर्च,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनार, बैंगन, उड़द के पदार्थ न खाय तो खूनी बवासीर रोग दूर हो जाता है और बहता हुआ रुधिर थम जाता है।

तथा निवौली की मिंगी, एलुआ इन दोनों को बराबर लेके खरल में डाल कर जल के साथ बारीक पीस कर एक रत्ती प्रमाण गोली बाँधे एक गोली प्रतिदिन प्रातःसमय रसोत के जल के साथ ११ दिन खाय तो, बवासीर का रुधिर बन्द हो जाय।

तथा रसौत को बारीक पीस दो टंक प्रमाण जल में चार घड़ी पर्यन्त भिगो कर उस जल को धान लेबे, प्रति दिन वह जल पीवे तो पित्त और रुधिर की बवासीर जाय, जो बवासीर से बद्धकोष्ट होकर मस्सा ऊंचा हो जाय और खुजली होय रुधिर बहै तो मस्से में जोक लगवाकर रुधिर निकलवा डाले तो बवासीर रोग जाय।

कफ की बवासीर का यत्न

अदरख का काढ़ा एक टका भर इक्कीस दिन पर्यन्त सेवन करे तो कफ की बवासीर जाय।

तथा बृन्दनाम वैद्यक ग्रन्थ में लिखा है कि त्रिफला दशमूल, चित्रक काला निसोत, दात्यूणो, ये पांचौ औषधी सेर भर लेके कूटे और बीस सेर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जल में इक्कीस दिन पर्यन्त रक्खे उसमें सात सेर गुड़ भी डाल देवै, फिर यंत्र के द्वारा उसका अर्क खींचे एक टंक प्रमाण प्रति दिन सेवन करे यह दात्यूणी अर्क कफ की बवासीर को दूर करे हैं।

सन्निपात बवासीर का यत्न।

काली मिर्च टका भर, अदरख टका भर, पीपरि पाव भर, चव्य टका भर, नाग केशर टका भर, पीपला मूल टका भर, इलायची टका भर अजमोद टका भर इन सब औषधियों को बारीक पीस कर तीस टके भर गुड़ में मिलाय दो टंक के प्रमाण गोली बाँधे, प्रातः समय एक गोली खाकर भोजन करे और पथ्य से रहे तो सन्निपात की बवासीर, मूत्रकृच्छ्र बातरोग, विषमज्वर, पांडुरोग, गोला. काँस श्वास, वमन, अतीसार, हिचकी इन सब रोगों का नाश होता है अनुपान के साथ खाने से तत्काल रोग को शान्त करे, यह सर्व संग्रह में लिखा है।

बवासीर की औषधी।

मिश्री और नाग केशर बराबर लेके छः छः माशे प्रमाण प्रतः सायं माखन के साथ खाय तो बवासीर खूनी जाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथवा–निसोत, कलमाशोरा लेके खरलकरे और चना बराबर गोली बनावे प्रातःकाल और सांयकाल एक एक गोली खाय तो बवासीर जाय बादी बवासीर हो तो यह गोली पानी में घिस कर मस्से पर लगावे और खावे।

तथा एक तोला भर काले तिल प्रातःसमय गाय के माखनके साथ खाय तो बवासीर रोग जाय।

तथा जिमींकन्द का भुरता बनाय प्रतिदिन दही के साथ खाय तो बवासीर रोग जाय।

तथा भंगरा की पत्ती पानी के साथ घोट कालीमिर्च डालकर पीवे तो बवासीर रोग जाय।

तथा भांग की धूनी लेने से भी बवासीर रोग शान्त हो जाता है।

तथा गेंदा की पत्ती बबूर का पत्ता बराबर लेके अलाहिदा अलाहिदा पीसकर लुगदी बनावे, और एक मिट्टीके कोरे पात्रमें जल डालकर उसमें दोनों को घोल देवे, फिर बिनुआ कंडा की आंच बनाय उस पात्र को आंच पर रखकर ऊपर से एक सकोरा ढक देवे, जब वफारा लेने योग्य हो जाय तब सहता सहता वफारा लेवे, नीबकी पत्ती का बफारा भी बवासीर रोग को शान्त करता है।

बवासीर की गोली।

आंवलासार गन्धक १ तोला, हरताल १ तोला,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संखिया ६ माशे परन्तु ये सब शुद्ध हों, हरड १ तोला, यह सब औषधी एक में मिलाय परईमें रख कर दूसरी परई ढकदेवे और कपड़ मिट्टीकर सुखा कर चूल्हे पर रखकर पन्द्रह मिन्ट तक आंच देके उतारले दोतोला घी तवापर रखकर दबा डाल दो पहर तक घोटे, अनन्तर बाजरा के बराबर गोली बांधे एक गोली नीबू के रस में घिसकर बवासार के मस्से पर लगावे तो बवासीर जाय।

तथा हींग, सज्जी, लहसन, निबौली की मिंगी, बराबर लेके चौगुना गुड़ मिलाय तीन तीन टंककी गोली बनावे प्रातःकाल, सायंकाल एक एक गोली खाय तो सब प्रकार का बवासीर रोग जावे।

तथा हाथी के नखको भली भांति पीसकर रख छोड़े फिर उड़दके आटेकी टिकिया बनाय एकओर सेंके उस पर पिसानख बुरकाय बवासीर के मस्से पर बांधे परन्तु नखकी धूनी ले लेवे तो बबासीर रोग जाय।

तथा कुकरोंधा, गैंदा और वनगोभी की पत्ती प्याज के बीज, गन्दना के बीज इनको पीसकर टिकिया बना मस्सेपर बांधनेसे बवासीर शान्त होजाताहै।

बवासीर रोग में पथ्यापथ्य।

अति प्रसिद्ध रोगोंपर पथ्यापथ्य तो हम इस ग्रन्थ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के तृतीय भागमें लिखचुके हैं परन्तु यह बवासीर रोग प्रायःमनुष्यों को पीडित कर रहाहै,इस कारण फिर भी कुछ पथ्यापथ्य लिख देते हैं, यदि औषध सेवन करे और पथ्यापथ्य की ओर ध्यान न दिया जाय तो रोग कदापि शान्त नहीं होता, इस कारण योग्यहै कि पथ्यापथ्य की ओर अवश्य ध्यान रक्खे ।

बवासीर रोगमें चना,कुलथी,परबल,गूलर,केलाके फूल जिमीकन्द, कुछआलू, ककड़ी, केलाके फलकी तरकारी,पक्का कुम्हडा,सहजना,मूंग,पुराने चांवलका भात, गायका थोड़ासा दूध, तिलकाले, मिश्री, किसमिस, अंगूर, मठा, सरसों का, तेल, तेलकी मालिश केलाकी पकी फली, गायका, माखन, छोटी इलायची, बहती हुई नदी वा तालाब में स्नान, शुद्ध वायुका सेवन प्रातःकाल और सांयकाल में यथाशक्ति परिभ्रमण निरंतर मूली की तरकारी, ये वस्तु बवासीर रोगमें गुणकारी जानना इस रोगमें प्रति दिन कोठा साफ रहे मल अच्छी तरह अर्थात् सुख पूर्वक उतरै ऐसे आहार पर ध्यान रहे, इस रोग में ऐसी कोई वस्तु न खाय जो देरमें पचै, शीघ्र पचने वाली वस्तु खाना चाहिये, भुनी और जली हुई वस्तु न खाय, दही,पीठी,उडद,खटाई,सेम,अधिक पका हुआ आम,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उकरू बैठना, अधिक मैथुन, घोड़े पर चढ़ना मल और मूत्र का रोकना, सूर्य की धूप और अग्नि का उत्ताह पूर्व की वायु ये सब इस रोग में अहितकारी जानना।

भगन्दर रोग की उत्पत्ति।

एक छोटा फोड़ा, गुदा से दो अंगुल की दूरी पर होजाता है, जिससे अतिक्लेश मिलता है, उसके फूट जाने से भगन्दर रोग हो जाता है सो भगन्दर पांच प्रकारका होता है, १ बात, २ पित्त, ३ कफ ४ सन्निपात ५ शस्त्रादिकी चोट से।

भगन्दर रोग लक्षण।

रूखी और कषैला वस्तुओं के बहुत खाने से वायु कुपित होकर गुदा के समीप फुंसी प्रगट करे है उपाय न करने पर वह फुंसी पके फूटे उसमें राद निकले उसमे चलनी के सदृश छिद्र हो जाय तो उसको शतयोनिक भगन्दर कहते हैं, तथा गरम वस्तुओं से अधिक खाने से पित्त कुपित होकर गुदा के चारों ओर दो अंगुल के स्थान में लाल फुंसी होकर पक जाय और गरम गरम राद निकले ऊट की ग्रीवा ऊंची हो तो उसको पित्त का अष्टग्रीवा भगन्दर कहते हैं।

तथा गुदा के स्थान में खुजली हो गाढ़ी राद निकल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुछ पीडा हो, सफेद फुन्सी हो और स्रवा (पानी निका) करे तो उसको कफ का परिस्रवा भगन्दर कहते हैं ।

तथा जो फुन्सी होकर पीडा बहुत हो कई रङ्गहो और बहा करे मुनक्का दाख के समान वा शंखकी भीतरकी नाभिके सदृशहो तो उसको सन्निपात का शंबूकावर्त भगन्दर जानना, तथा गुदा के समीप कांटे आदि लगे हों वा खुजाते समय नख आदि लग जाय अथवा वहां केश बनाते समय छुरा की धार लगजाय तो फुंसी होकर फूटे और उसकी राद लगकर फुन्सीयां होजांयँ वे बहाकरें तो शस्त्रचोटका भगंदर जानिए, भगंदर रोग किसी प्रकारकाहो, बडी कठिनता से अच्छा होताहै, परंतु सन्निपात और चोट लगने का भगंदर अच्छा नहीं होता हैं ।

भगन्दर रोग यत्न ।

भगन्दर रोग उत्पन्न होनेपर जोंक आदि लगाय वहांकारुधिर निकलवावे, यदि फुंसीपकी नहोतो सांठी की जड़, सोंठ, गिलोय, मुलहटी बटबृक्षके कोमल पत्ते इन सबको बारी कपीसकर गरम करे और सुहाता लेप करे तो भगंदर की फुंसी अच्छी होय ।

तथा नींबका वक्कल, महुवा, तिल इनको बारीक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीस शीतल जल मिलाय लेप करे, तो पित्त का भगन्दर रोग जाय।

तथा वड़वृक्ष के पत्ते चमेली के पत्ते, सोंठ, गिलोय, सेंधा लवण, इन सबको मट्ठे में बारीक पीस कर भगन्दर पर लेप करे तो रोग जाय।

तथा हलदी, सेंधा लवण, आक का दूध, नीबू के पत्ते गूगल, इन सब को औटाकर अनुमान से थोड़ा तेल डालकर पकावे जब जल जाय और तेल रह जाय तब तैल भगन्दर पर मले तो भगन्दर जाय।

तथा गूगल, त्रिफला, पीपरि इनको बारीक पीसकर एक टंक प्रमाण जल के साथ खाय तो गोला, बवासीर, शोथ और भगन्दर रोग जाय।

अथवा दोनों हलदी, मजीठ, रसौत, तेजपत्र, दात्यूणी, नीम के पत्ते इनको बारीक पीसकर भगन्दर पर लेप करे और इन्हीं से धोवे तो भगन्दर रोग जाय।

अथवा—हलदी, आक का दूध, चित्रक, सेंधा लवण, मजीठ, शरफोंका कूट इन सब औषधियों को तेल में सिद्ध कर लगाने से भगन्दर रोग अच्छा होता है।

तथा—कूट, तिल, निसोत, जमालगोटा की जड़

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेंधा लवण, पीपरि, शहत, हलदी, तूतिया, त्रिफला इन औषधियों का लेप करने से भगंदर रोग दूर हो जाता है।

तथा—आंवला, हरड़, बहेड़ा, पीपरि, शुद्ध गूगल इनको कूट पीसकर कपड़े से छाने और दो टंक प्रमाण खाय तो भगंदर रोग जाय।

तथा—पोस्त की गिरी, नागकेशर दो दो टंक ले काढा करे उस काढा को पीने से भगंदर रोग शांत होजाता है, भगन्दर रोग वाला पुरुष मैथुन न करे खेद और युद्ध न करे, नवीन अन्न और बहुत गरम वस्तु व खटाई न खाय, दृढ़ आसन पर न बैठे न घोड़ा पर चढ़े।

प्रमेह रोग उत्पत्ति।

अधिक शयन करने और बहुत बैठने से नवीन जल के पीने से बकरा और भेड़ का मांस व गुड़ आदि बहुत मिठाई तथा बहुत दही व कफकारी वस्तु खाने से और अधिक मैथुन करने, धूप में रहने से विरुद्ध और गरम भोजन करने से, परिश्रम करने से, बहुत मदिरा पीने से, कडुवा रस खाने से प्रमेह रोग उत्पन्न हो जाता है सो प्रमेह बीस प्रकार का होता है उनके लक्षण यहां विस्तार भय से नहीं लिखे, मूत्र में विकार उत्पन्न हो और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीड़ा भी हो उसको प्रमेह कहते हैं।

प्रमेह का पूर्वरूप।

तालू, दांत, जीभ इनमें अधिक मैल हो, हाथ पांव में दाह हो, देह चिकनी होय, प्यास बहुत लगे मुंह मीठा रहे बहुत ठंडा और पतला मूत्र हो तो जानना कि प्रमेह रोग उत्पन्न होगा।

प्रमेह रोग की औषधि।

उत्तम उड़द दश सेर लेके बीस सेर दूध में भिगो भिगोकर सुखावे सूख जाने पर पीसकर मैदा बनावे पावभर मैदा लेके आधपाव घी में भूने और एक सेर दूध, में हलुआ बनाकर उसमें मिश्री ४ तोला, इलायची ६ माशे, लौंग ६ माशे, वंगरस १ रत्ती, कूट पीसकर डाल देवे. एक महीना पर्यन्त यह हलुवा खाय तो सब प्रकार का प्रमेह जाय।

तथा—आंवला चार तोला, आंवा हलदी चार तोले, मिश्री ४ तोला, ये सब औषधी कूट पीसकर कपड़े से छानकर ६ माशे प्रमाण प्रति दिन खाय तो बीस प्रकार का प्रमेह जाय।

श्वेत प्रमेह की औषधी।

एक पके केले में फटकरी का रस ६ माशे प्रमाण बीस दिन तक खाय तो असाध्य प्रमेह भी दूर होय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रक्त प्रमेह की औषधी।

दाख और किसमिसका शर्बत बासी जलमेंकरके उसमें सफेद चन्दन और मुलहटी डाल कर पीवे तो लाल प्रमेह जाय।

अथवा ककई और जसवन्ती की पत्ती आध सेर जल में मल के छान लेवे और तीन तोला मिश्री मिलाय पीवे तो लाल प्रमेह जाय।

पीले प्रमेह की औषधी।

पाव भर ईसबगोल संध्या समय जलमें भिगोदे प्रातःसमय उसमें एक नीबू निचोडे, और एक तोला छः माशा मिश्री मिलाय पीवे तो ग्यारह दिन में प्रमेह रोग जाय।

मूत्रिया प्रमेह की औषधी।

शतावरी, खरेटी गोखरू, सालमकी जड तालमखाना, असगंध, इन सबको दश २ टंक, मिश्री १० टंक, सांठी चावल का चूर्ण १० लेके फंकी बना लेवे इसमें से ६ माशे भर औषधी लेके गाय के दूध के साथ खाय तो मूत्र प्रमेह रोग जाय।

लवणाक्षार प्रमेह की औषधी।

आंवला १० टंक, हर्र १० टंक, वहेड़ा १० टंक, माजूफल १० टंक, आंवाहल्दी १० टंक, मजीठ १० टंक ये सब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

औषधी कूट पीसकर ४ टंक प्रमाण प्रतिदिन शहत के साथ खाय तो खवणाजार प्रमेह जाय।

घृत प्रमेह की औषधी।

ग्वारकोपीसअनिक गोभ केरसमेंसातवारभिगोकर सुखावे और चूर्ण बनालेवे जितना चूर्ण ग्वारका हो उतनी मिश्री मिलाय पांचटंक प्रमाण प्रतिदिन जलके साथ खायतो इकीस दिनमें घृत प्रमेह रोग जाय,

बीस प्रकार के प्रमेह की औषधी।

त्रिकुटा, सोंठ, मिर्च, पीपरि सफेद चन्दन, लोंग, खस, नागरमोथा, काला अगर, छोटी इलायची, अमगन्ध, वंशलोचन, जायफल, गोखुरू, गिलोय निसोत, तगर कमलगट्टा, नागकेशर, इन सब औषधियों को बराबर लेके कूट पीस मिश्री मिलाय तीन टंक प्रमाण प्रातःसमय खाय तो बीस प्रकार का प्रमेह जाय।

तथा—जायफल, लोंग, इलायचीछोटी, जावित्री, दालचीनी अकरकरा, त्रिकुटा, केशर, चीता, नागौरी असगन्ध, गोखरू, शतावरी ये सब औषधी दो दो तोला लोहसार तीन टंक, मिश्री ५० तोला ये सब औषधि एकमें खरलकर दो दो टंककी गोली बनावे सायंकाल और प्रातःकाल एक एक गोली खाय तो बीस प्रकार का प्रमेह जाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा–१ तोला गुड़ के साथ शुद्ध गंधक बला-नुसार खाय और ऊपर दूध पीवे तो १८ दिन में प्रमेह रोग जाय।

तथा–अभ्रकरस; त्रिफला, हल्दी एक में मिलाय शहद के साथ खाय तो १५ दिन में प्रमेह रोग जाय।

तथा मिश्री और दूध के साथ शिलाजीत खाय तो सब प्रकार का प्रमेह २१ दिन में जाय, प्रमेह रोग में पथ्यापथ्य तृतीय भाग में लिख चुके हैं।

कास (खांसी) रोग की उत्पत्ति।

रूखा अन्न खाने से और मुख में धुवां और धूल खाने से भोजन के कुपथ्य से मलमूत्र और छींक को रोकने से, चिकनी वस्तु, और मूली आदि को खाकर ऊपर से जल पी लेने से खांसी उत्पन्न हो जाती है, सो खांसी हृदय के प्राणपवन से मिलती है और प्राणपवन कंठ के उदानवायु से मिल उन दोनों पवनों को बिगाड़े है, तब बिगाड़ी पवन उसके शब्द के कांसे के फूटे पात्र के समान करके मुख में से वेग विलम्बसे निकालेहै उसीको वैद्यजन खांसी कहते है, यह रोग पांच प्रकार का होता है, १ वात २ पित्त ३ कफ, ४ चोट लगने से, क्षयी रोग से।

खांसी का पूर्वरूप।

जिसके कंठमें कांटेसे पड़कर खुजलीहोवे और भली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भांति भोजन न किया जाय तो जानना कि खांसी रोग उत्पन्न हो गया यह रोग बढ़ जाने पर महा भयंकर होजाता है।

वात की खांसी के लक्षण।

माथा कनपटी, हृदय, उदर, पसली इन सब में पीड़ा हो, बल, पराक्रम, स्वर ये क्षीण होजाय मुख उतर जाय, भोजन करते समय कंठ में पीड़ा हो, सूखी खांसी हो, टूटा स्वर बोले ये लक्षण हों तो वात की खांसी जानिये।

पित्त की खांसी के लक्षण।

ज्वर हो हृदय में दाह हो, मुख सूखे और कड़ुवा रहे, प्यास बार बार लगे, कड़ुवा वमन हो और शरीर पीला होजाय तो पित्त की खांसी जानिये।

कफकी खांसी के लक्षण

जो कफसे मुख लिप्त सा रहे मस्तक दुखे, शरीर भारी पड़जाय, भोजनमें अरुचि हो, कंठमें खुजली हो, गाढा कफ थूके ये लक्षण होनेसे कफकी खाँसी जानना।

क्षतज खांसी की उत्पत्ति और लक्षण।

बोझा उठानेसे, मार्ग चलनेसे, युद्ध करनेसे, घोड़ा अथवा हाथीपर चढ़कर दौड़नेसे, अधिक मैथुन (स्त्री प्रसंग) करनेसे, रूखा भोजन करनेसे वात हृदय में जाकर खाँसी को प्रगट करे है पहले सूखी खांसी हो, फिर रुधिर थूके, कंठ दुखे, सन्धि में पीड़ा हो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्वास, ज्वर और प्यास हो स्वर घों घों बोले ये लक्षण हों तो क्षतज की खांसी जानना।

क्षयी रोग से उत्पन्न खांसी का लक्षण।

समय कुसमय भोजन करनेसे और कुपथसे तथा अधिक मैथुन करने से, और मलमूत्र को रोकने से बहुत शयन करने से, मन्दाग्नि होकर वात, पित्त, कफ तीनों के कोप से क्षयी रोग की उत्पत्ति होजाती है, यह खांसी शरीर को क्षीण करके दाह, ज्वर और मोह को करती है, ऐसी खांसी से प्राणनाश का भय जानना, जो खांसी सूखी होय शरीर दुर्बल होता जाय, रुधिर और मांस सूख जाय, राद के समान थूके हो तो खांसी असाध्य जानिये।

खांसी का असाध्य लक्षण।

क्षत रोग और क्षयी रोग के खांसी तथा बूढ़े मनुष्य की खांसी असाध्य होती है, औषधी से प्रायः नहीं जाती है।

खांसी की औषधी।

अदरखके रस को शहतके संग चाटे, अथवा बबूल वृक्ष की भीतरी छाल और बहेड़े के फल की छाल अधभुनी करके थोड़ी२ मुख में रखकर उसका रस चूसे, अथवा अडूसे के पत्तों का रस निकाल कर शहत के साथ चाटे तो खांसी शांत हो जावे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा-कालीमिर्च २॥ टंक, अनार का छिलका १० टंक पीपरि २॥ टंक, जवाखार १ टंक गुड़ २॥टंक इन सबको बारीक पीसकर चना प्रमाण गोली बनावे दो अथवा ४ गोली रोज खाय तो खांसी जाय।

तथा-कटेली, गिलोय, पुहकरमूल. अडूसा इनको बराबर ले, काढा कर पीवे तो खांसी जाय।

अथवा-छोटी कटेली का भुरताकर उसके रस में पीपरि का चूर्ण मिलाय रोज पीवे तो खांसी जाय।

तथा-हरड़ की छाल, सोंठ, पीपरि, कालीमिर्च, अमलबेत चव्य, चित्रक, सफेद जीरा. तंतडीक प्रत्येक २॥ टंक तज, पत्रज, नागकेशर प्रत्येक ४ माशा, इनको बारीक पीस के पाव भर गुड में २॥ टंक के प्रमाण गोली बांधे एक गोली प्रातः समय खाय तो खांसी श्वास जाय।

तथा- कालीमिर्च नागरमोथा, कूट, बच, शोधी हुई सिंगीसुहरा इनको बराबर ले, अदरक के रस में बारोइ पोस मूंग प्रमाण गोली बांधे १ गोली रोज खाय तो खांसी, श्वास. शूल. कफ के रोग, सूतिका संग्रहणी ये रोग शान्त हो जाते हैं।

कटेली का अवलेह।

कटेली का काढा ४ सेर उसमें ४ सेर मिश्री

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की चाशनी करे और गिलोय १ टंकभर, चव्य १ टंक चित्रक १ टंक. नागरमोथा १ टंक, काकरा सिंगी १ टंक, सोंठ १ टंक, पीपर २ टंक, धमासा. १ टंक, भारंगी १ टंक, कचूर १ टंक इन औषधियों को बारीक पीस कर चासनी में मिलावे फिर एक सेर शहत और पाव भर बंशलोचन डालकर एक टंका भर प्रति दिन खाय तो सब प्रकार की खांसी जाय, यह कटेली का अवलेह भाव प्रकाश में लिखा है ।

खांसी की गोली ।

अकरकरा ६ माशे, काली मिर्च ६ माशे, पीपर ३ माशे भर, छोटी इलायची, लोंग, मुलहटी एक एक तोला, मुनका ४ तोला, सबको बारीक पीस शहत के साथ छोटी मटरके बराबर गोली बांधे जो खांसी बहुत बढ़ गई हो तो चार अथवा पांच गोली प्रति दिन खाय तो खांसी जाय ।

तथा—काली मिर्च, लोंग. बहेड़े के फल की छाल तीन तीन माशे, सफेद खैर ९माशे, लेकर चूर्ण बनावे फिर बबूल की भीतरी छाल का काढाकर उसमें चूर्ण को घोटे और मूंग बराबर गोली बना प्रतिदिन सात आठ गोली मुख में रख कर रस चूसा करे तो खांसी जाय ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा-पीपरि २ तोला, अनारदाना ४ तोला, काली मिर्च १ तोला, जवाखार ६ माशा, पुराना गुड़ ८ तोला, लेके चूर्ण बनाय गुड की चासनी में दो दो तोले की गोली बनाले, तीन गोली प्रतिदिन प्रातःसायं और रात्रि में खाय तो खांसी जाय।

तथा-शोधे हुए मैनशिल को जलमें घोटकर बेर की पत्तियों पर लेप करे और धूपमें सुखाय चिलम पर रखकर उसका धुवां पीवे, ऊपर से गुड़ मिला हुआ दूध पीवे तो बहुत दिनकी कष्टसाध्य खांसी भी जाती रहे परन्तु जो खांसी पित्तकी हो अथवा सूखी खांसी हो तो यह औषधी नहीं पीवे।

तथा-छोटी इलायची, तेजपात, जायफल, लौंग दालचीनी, नागकेशर, सफेदचंदन, कपूर बंशलोचन काले तिल सूखा आँवला, तगर, छोटी पीपर, तालीसपत्र, चीते की छाल, स्याह जीरा, वायविडंग, सोंठ, कालीमिर्च इन सबको छः छः माशे भर लेके पावभर धुली हुई भाँग और आधसेर मिश्री लेके चूर्ण बारीक पीसे, बल के अनुसार एक माशे से चार माशे तक चूर्ण को प्रातःकाल और सायंकाल शहत के साथ चाटे तो खांसी रोग जाय।

तथा-सोंठ, छोटी पीपरि, छोटी इलायची, लौंग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कालीमिर्च, अदरख, केशर, वंशलोचन और सेंधा लवण ये एक एक तोला, सौंफ २ तोला, अफीम ३ माशा बनभाटा आध पाव, बेल की पत्ती एक पाव बबूल की पत्ती एकपाव, भटकटया आधसेर, अडूसे की पत्ती आध सेर, शहत आध सेर पहले बनभाटा बेल और बबूल की पत्ती भटकटैया अडूसे की पत्ती इनको अधकुटी कर दस सेर जल में औटावे जब सेर भर जल रह जाय तब आँच से उतार ठंडा कर छान लेवे, उसी जल में सोंठ आदि औषधियों का चूर्ण डालकर पकावे जब गाढ़ा हो जाय तब उतार कर शहत मिलाय बड़ी मटर के बराबर गोली बाँध लेवे, इस गोली के सेवन करने से सब प्रकार की खाँसी जाती रहती है. श्वास (दमा) रोग वाले को भी यह गोली गुण करती है।

तथा-शुद्धकपूर, लौंग, छोटी इलायची, नागकेसर तज, जायफल, खस सोंठ, स्याह जीरा, वंशलोचन, कालाअगर, जटामासी, पीपर, सफेदचंदन, नीलकमल सुगंधवाला, तगर, शीतलचीनी, ये सब छः छः माशे भर लेवे और मिश्री पांच तोला मिलाकर बारीक चूर्ण बना लेवे. दो माशे भर चूर्ण प्रतिदिन प्रातःकाल सायंकाल शहतके साथ चाटे तो खांसी, प्रमेह, अरुचि और क्षयरोग को यह चूर्ण दूर करती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कासान्तक वटी।

शुद्धशिंगरफ, अफीम, कालीमिर्च ये छः छः मा-शेभर लेके बंगलापान के रसमें घोटे और आधी २ रत्तीकी गोली बांध लेवे यह गोली प्रातःकाल और सांयकाल शहद के साथ खाने से खांसी और अतीसार रोग दूर होजाता है।

अथवा—शुद्ध कुचिला, कलीमिर्च, अफीम, छः छः माशेभर बंगलापान के रस में घोट आधी रत्ती प्रमाण की गोलियां बांधे, यह गोली खांसी और अतिसार रोग को हरती है।

तथा—सफेद कत्था, बहेडे की छाल, छोटीइलायची, मुलहटी, एक एक तोला, कालीमिर्च ६माशे भर, सबका चूर्ण बनाय बबूल के स्वरस में एक प्रहरभर घोट कर मटर के बराबर गोली बांधे इस गोली के खानेसे खांसी रोग जाता रहता है, खांसी के रोग में चिकने पदार्थ, और ठंडी वस्तु, कफकारी पदार्थ, तथा खटाई आदि नहीं खाना चाहिये और अधिक परिश्रम भी नहीं करना चाहिये।

हिक्का (हिचकी) रोगकी उत्पत्ति।

भारीरूखी, और गरम वादी, और ठंडी आदि वस्तु खाने से मुखमें धूल जानेसे, मलमूत्रको रोकने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से, भूखेरहने से हिचकी, खांसी और श्वास रोग उत्पन्न होजाता है, दोनों पसली और आंतोंको दुख देती हुई मुख में होकर बडे शब्द सहित मुखमें से प्राणनाशक और भयंकर शब्द निकलेहै उसे वैद्यजन हिचकी कहते हैं, सो वात कफ से मिल कर पांच प्रकार की अन्नजा २ यमला, ३ क्षुद्रजा, ४ गम्भीरा, ५ महती नाम से होती है।

हिचकी का पूर्वरूप।

हृदय और कंठ भारा रहे, मुख में कषेलापन रहे, कोख में अफरा हो तो जानना कि हिचकी रोग उत्पन्न होगा।

अन्नजा हिचकी लक्षण।

जल बहुत पीवे और अन्न बहुत खावे, उसमें वात कुपित होके ऊर्ध्वगामी हो अर्थात ऊपर को चढे तो अन्नजा हिचकी इन लक्षणों से उत्पन्न होती है।

यमला हिचकी लक्षण।

दो दो हिचकी ठहर ठहर कर आवे और हिचकी आते शिर और कन्धा कांपने लगे तो यमला हिचकी जानना।

क्षुद्राहिचकी लक्षण।

कंठ और हृदयकी संधिसे ठरह ठहर कर मन्द २ चलकर हिचकी आवे उसको क्षुद्राहिचकी जानिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गंभीरा हिचकी लक्षण।

जो हिचकी नाभि से भयंकर उठे पीड़ा होवे और अनेक उपद्रव करे उसे गम्भीरा हिचकी कहते हैं।

महती हिचकी का लक्षण।

सब मर्म स्थानों में पीड़ा करती हुई और सब शरीर को कंपाती हुई चले उसको महती हिचकी कहते हैं।

हिचकी का असाध्य लक्षण।

हिचकी आने पर जिसका शरीर कांप उठे, दृष्टि ऊँची हो जाय और नेत्रों में सामने हिचकी आने पर अँधेरा आ जाय, भोजन में रुचि न होय, छींक बहुत आवे ये गंभीरा और महती हिचकी असाध्य जानिये।

हिचकी रोग की औषधि।

किसी प्रकार भयभीत होने से और प्राणायाम करने से, भय देने वाली बात के सुनने से, वात और कफ को घटाने वाली वस्तु को खाने से हिचकी दूर हो जाती है।

तथा—बकरी के दूध में सोंठ को पकाकर सोंठ सहित दूध पी लेवे तो हिचकी रोग जाय।

अथवा—बिजौरा के रस में जौ का सत् और सेंधा नमक मिलाकर खाय तो हिचकी रोग जाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथवा–सोंठ, पीपरि को शहतमें मिला चाटे तो हिचकी रो। जाय।

अथवा–गुड़ और सोंठ, जल में पीस कर नासजे तो हिचकी रोग जाय।

अथवा–पीपरि डेढ टंक मिश्री के साथ, अथवा मुलहटी डेढटंक लेके शहदके साथ चाटे अथवा दूध में घी डालकर गरम गरम पीवे तो हिचकी जाय।

अथवा–निजोरका रस. शहद, और कालालवण मिला कर खाय तो हिचकी जाय, यह वैद्य सर्वस्व में लिखा है।

तथा–इलायची १ भाग, दालचीनी २ भाग, नागकेशर ३ भाग, कली मिर्च ४ भाग, पीपरि ५ भाग सोंठ ६ भाग इन सबको बरीक पीस कर घी मिलावे और इन सबसे दूनी मिश्री मिलाय, ढाई टंक प्रमाण औषधी जलके साथ सेवन करे तो हिचकी अजीर्ण. बवासीर श्वास, खांसी इन रोगों का नाश होवे. यह ऐलादि चूर्ण वृन्द में लिखा है

सन्निपात ज्वर में यदि हिचकी रोग उत्पन्न हो जाय तो छः मासे भर सोंठ को आधपाव जल में पकाकर उसमें एक तोला शहत मिलाय रोगीको कई बारमें पिलावेतो हिचकी रोगकी शान्ति होतीहै।

अथवा–बिनाधुवांकी आगीपर मटरप्रमाण बहुत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अच्छी हींग डाल कर रोगी को घुवां देवे सो घुवां मुख और नासिका में जाय तो हिचकी रोग दूर होजाता है।

जिसको बिना ज्वर हिचकी रोग प्रगट हुवा हो तो एक वर्षका पुराना गुड़ आधापाव, हल्दी एक छटांक, घी एक छटांक लेवे, पहले घी में हल्दी के चूर्ण को भून लेवे और उतार कर उसमें गुड मिलाय दो दो तोले के लड्डू बना कर दिन में चारवार लड्डू खाय तो निश्चय हिचकी जाय।

श्वास (दमा) रोग की उत्पत्ति लक्षण।

हिचकी रोग जिन वस्तुओं के खाने से उत्पन्न होता है उन्हीं वस्तुओं के खाने से श्वास रोग प्रगट होता है, सो १ ऊर्ध्वश्वास, २ महाश्वास, ३ छिन्नश्वास, ४ तमकश्वास ५ क्षुद्रश्वास, नाम से ५ प्रकार का होता है।

श्वास रोग का पूर्व रूप।

शूलहो, अफराहो, हृदयदुखे, मल और मूत्र नहीं उतरे, मुखमें रसोंका स्वाद न जान पडे कनपटी में पीड़ा हो तो जानना कि श्वास रोग उत्पन्न होगा जो वायु सब शरीर में फिरती है वह कफसे मिल के सब नसोंको रोके है सो वायु फिरने से बन्द होकर श्वास रोग को उत्पन्न करती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऊर्ध्व श्वास के लक्षण ।

बहुत देर तक ऊपरको श्वास ले नीचे श्वास नहीं आवे मुख कफसे भरजाय दृष्टि ऊंची होय, कुपित वायुसे पीडित होजाय ऊपरको नेत्र कर चंचल दृष्टि से चारों ओर देखे, मूर्च्छाकी पीडासे अत्यन्त पीडित हो मुख सूखे, ये लक्षण ऊर्ध्वश्वासके जानना ।

महाश्वास के लक्षण ।

जो श्वास युक्तहो थककर ऊंचे प्रकार मस्त बैल के समान निरन्तर श्वास लेवे और ज्ञान जिनका जाता रहाहो श्वास लेते समय नेत्र और मुखफट जाय, नेत्र चंचलहो, मुखसेअच्छे प्रकारबोला न जाय देह दुर्बल होजाय, शरीर दुर्बल होजाय, श्वासका शब्द दूरतक सुनाई देवे ये लक्षण महाश्वासके जानिए, महाश्वासके रोगीको असाध्य जानिये ।

छिन्न श्वास के लक्षण ।

जो ठहर ठहर अपनी शक्तिके अनुसार श्वास को छोडे अथवा दुःखित होकर श्वास नहीं लेवे, और मर्मस्थान(हृदयबस्तिःमूत्रस्थान)को औरनाडियोंको मानो कोई छेदन करताहो ऐसा पीड़ाहोवे, पेट फूल जाय पसीना निकले, श्वास लेते समय नेत्रलाल होजाय चेतन्यता जातीरहै शरीरका रंग बदल जाय,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शरीर के सब बन्धन शिथिल हो जांय, बकवाद बहुत करे, ये लक्षण छिन्नश्वास के जानिए।

तमक श्वास लक्षण।

जो पवन उलटी चले नासिकाको रोक देवे, और मस्तक व कंठके आश्रयसे कफको प्रगटकरे तबकफ से रुक कर अति वेगसे कंठमें घुर घुर शब्द होय, मस्तकपर पसीना आवे मुखसूके धोंकनी के समान श्वास लेवे, श्वासकेवेग से मूर्छित होके पीडित हो, खांसी उठनेसे बड़े मोहको प्राप्तहो,कफ निकलजाय तब कुछ सुख मिले, अच्छी तरह नींद नहीं आवे, मेघ की पवन और शीतल वस्तु तथा मधुर खाने से बढ़जाय कंठ में खुजली हो कष्ट से बोले, शयन करने पर वायु से पसवाड़ों में पीड़ा हो, बैठेही चैन पड़े, गरम पदार्थों से चित्त प्रसन्न होय, नेत्रों में सूजन हो, मस्तक में पसीना छूटे, हाथी पर बैठने के समान सब देह बारम्बार चलायमान हो, ये लक्षण तमकश्वास के जानिये, सो याप्य है।

क्षुद्र श्वास लक्षण।

रूखे पदार्थ खाने से, और श्रम करने प्रगट जो श्वास, सो पवनको ऊपर लेजाय और बहुत दुःख नहीं देवे खान पानको रोके नहीं, इन्द्रियोंको पीडा नहीं करे, ये लक्षण क्षुद्र श्वास जानिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्वांस रोग की औषधी।

अदरखका रस शहतके साथ चाटे तो श्वासरोग जाय अथवा लवण और तेल मिलाय गरम कर हृदय को सुहाता सेके, अथवा मूल दशमूल, कचूर सोंठ, पीपरि, राई, पुहकरमूल, काकरासिंगी, भारंगी, चित्रक, गिलोय इन सबको बराबर लेके काढा ढाई टंकभर का बनाय पीवे तो कास श्वास और पसली की पीड़ा शान्त होवे।

तथा–हलदी, कालीमिर्च, किसमिस, पीपरिराई, कचूर, इन सबको बराबर ले बारीक पीसकर १ टंक प्रमाण गुड़ के साथ खाय तो श्वास जाय।

तथा-एकपावभर भारंगीको औटाकर रस निकाले उसमें एकसौ टका भर गुड़ की चासनी कर उसमें एक पावभर हरड़ की छालका चूर्ण डाले, चासनी ठंडा होने पर ६ टकाभर शहत डाले फिर सोंठ १ टंक,पत्रज १। टंक,तज १। टंक,पीपर १। टंक,नाग केसर १। टंक जवाखार २ टंक,इनकोबारीक पीसकर मिलावे एक पैसाभर प्रति दिन खाय तो खांसी, श्वास, बवासीर, क्षयी, गोला, उदर रोग, ये सब जाय, यह भारंगी अवलेह भावप्रकाशमें लिखा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चक्रदत्तमें लिखा है कि सोंठ,काकरासिंगी, पीपरि, नागरमोथा; पुहकरमूल, कचूर, कालीमिर्च इन सब को बराबर लेके सबके बराबर मिश्री पीस मिलाय चूर्ण बना लेवे, फिर अडूसा गिलोय पीपलामूल, पीपरि, चव्य, चित्रक, सोंठ, इनके काढा के साथ ढाई टंक प्रमाण चूर्ण खाय तो श्वास रोग जाय।

तथा–पींपरि, पुहकरमूल, सोंठ, कचूर, कमलगट्टा हरड की छाल, इन सबको बराबर ले बारीक पीस चूर्ण करे, और सब के बराबर गुड़ के साथ चना प्रमाण की गोलिया बांधे एक दो अथवा तीन गोली प्रति दिन खाय तो श्वास रोग जाय।

तथा–शुद्ध पारा शुद्ध गन्धक,शोधासार, काली-मिर्च सोंठ, नागकेशर, पत्रज, नागर मोथा, वाय-बिडंग, कबीला, सम्हालू, पीपलामूल ये औषधी, पारा, गंधक और सारसे दूनी २ लेवे इन सबको बारीक पीस जल पीपरि के रस में तीन पुट देवे और चना प्रमाण की गोलियां बांधे, एक गोली रोज खाने से खांसी श्वास बवासीर, हृदय और पतली पींड़ा, भगन्दर, संग्रहणी, प्रमेह और उदर रोग जाय यह महोदधिरस सर्व संग्रह में लिखा है।

तथा–दक्षिणी पींपरि,वैसरा सोंठ, छोटी इलायची

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूरी, अकरकरा, अजवायन, तालाव नामवाली हींग, चीता, मुलहटी, कलमीजत, पीपलामूल, जावित्री, जायफल, वंशलोचन और अफीम ये औषधी एक२ तोला कूटपीसकर चूर्ण बनावे फिरआधपाव त्रिफला को दोसेर जलमें औटावे जब पावभर रहजायतब उतारले अनन्तर बंगलापान व अदरखका तीनपाव रस और पावभर लहसनका रस आंच पर चटावे आधा रहजानेपर चूर्ण उसमें डालकर सब एकमें मिलाय आगसे उतार लेवे शीतल होने पर शहद मिलावे छः माशे अवलेह प्रातःसायं दोनों समय चाटने से श्वास रोग शान्त हो जाता है।

तथा—खाली जायफल में धतूरेके शुद्ध बीजों को भरे और सकोरामें थूहरका दूध भरके उसमें जायफलको रक्खे ऊपरसे दूसरा सकोरा ढककर बंदकर देवे फिर कपरौटी सुखाय मन्द २ आग से पकावे शीतल होनेपर सकोरेसे जायफलको निकाल भंगरैयाके रसमें १ प्रहरभर घोटे और छायामें सुखाव फिर बंगला पानके रसमें घोटकर उड़दके बराबर गोली बांधे रात दिन में ४ गोली पान की बीड़ी में खावे तो खांसी श्वास रोग शान्त होजाता है।

अब आगे बिस्तार भय के कारण उत्पत्ति और लक्षण न लिखकर कुछ रोगोंकी औषधी लिखते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वर भंग की औषधी

कटेली १०० टंकाभर, पीपलामूल ५० टंकाभर, चित्रक २५ टंकाभर, दशमूल २५ टंकाभर, इनसबको १ मन जलमें औटाय ४सेर रह जाने पर छानलेवे, उसमें १९,० टंकेभर पुराने गुणकी पतली चासनी करे और कटेली, पीपलामूल, चित्रक, दशमूल जो जल में औटाकर शेष रहगई उनको बारीक पीसकर डाल देवे, १ सेर शहद डाले फिर उसमें से २ टंका भर रोज खाय तो स्वरभंग, कास, श्वास, मन्दाग्नि, गल रोग, अफरा, नूत्रकृच्छ, ये रोग जांय, यह अवलेह भाव प्रकाश में लिखा है।

तथा–हलदी, चित्रक, अजमोद ज़वाखार, आंवला, सबके बराबर ले बारीक पीस २ टंक घी और शहद के साथ खाय तो स्वरभंग जाय।

तथा–हरड की छाल, वच, पीपरि, इनको बारीक पीस कर गरम जलके साथ खायतो स्वरभंग जाय।

तथा–पीपरि, सेंधालवण, बहेडे की छाल, आंवला यन सबको बारीक पीसकर मट्ठे में खाय तो स्वर भंग रोग जाय।

अथवा–कुलंजन को मुख में रखकर उसका रस पीयै तो स्वर भंग रोग जाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अरुचि रोग की औषधी।

भोजन पदार्थ में स्वाद न जान पडै, शरीर भारी रहे और खाने की इच्छा न हो तो अरुचि रोग जानिये, यह रोग बात, पित्त, कफ, सन्निपात, शोकादिके नाम से पांच प्रकार का होता है, पृथक२ लक्षण विस्तार भय से नहीं लिखे।

सेंधा लवण और अदरक भोजन से पहिले खाय तो भूख लगै और कंठ जीभ शुद्ध हो जाय।

तथा-अनारदाना दो टकाभर, मिश्री ८ टंक, सोंठ १ टंक, कालीमिर्च १। टंक, पीपरि १। टंक तज २॥ टंक, नाग केशर २॥ टंक इन सबको बारीक पीसकर २॥ टंक प्रमाण नित्य खाय तो अरुचि रोग जाय. यह दाडिमादि चूर्ण है।

तथा-लौंग, कंकोल, मिर्च, खस, चन्दन तगर, कमलगट्टा काला जीरा, नेत्रवाला, नागकेसर, अगर सोंठ, पीपरि, चित्रक, भीमसैनी कपूर, इलायची, वंशलोचन, जायफल, इन सबको बराबर ले इनसे आधी मिश्री ले के बारीक पीस चूर्ण बनाले और १ टंक प्रमाण प्रतिदिन जल के साथ खाय, तो अरुचि क्षीणता, बद्धकोष्ट, मन्दाग्नि, खांसी, हिचकी राजरोग, अतिसार, संग्रहणी, प्रमेय इन सब रोगों को यह लवंगादि चूर्ण दूर करे है, यह भाव प्रकाश में लिखी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्षयी रोग की औषधी।

अर्जुन वृक्ष की छाल का चूर्ण बनाय अडूसे के रस की अनेकों बार भावना देवै फिर दो माशे चूर्ण दिन में तीन बार शहद और मिश्री केसाथ चटावे तो क्षयी रोग शान्त हो जावे।

तथा-मिश्री, वंशलोचन, तज, पीपरि, सफेद इलायची, इनको बराबर ले चूर्ण करे और शहद व घी में मिलाकर खाय तो क्षयी रोग जाय।

रक्तपित्त की औषधी।

बड़ी हर्र का चूर्ण शहद के साथ खाने से क्षुधा बढ़ती है, और रक्त पित्त कफ शूल और आमाति-सार रोग शांति हो जाता है।

अथवा-गूलर का रस शहत मिलाय पीवे।

अथवा-अडूसा के पत्तों का रस दो तोला शहत मिलाय पीवे।

अथवा-बासा के पत्तों का रस शक्कर मिलाय पीवे तो रक्तपित्त रोग जाय।

सफेद दूब का रस, अनार के फल का रस, इन-का दिन भर में दो तीन बार नास लेने पर नासिका से रुधिर निकलना बन्द हो जाता है।

अंगूर का रस चीनी मिला दूध, गाय का घी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खाय और ऊख के रस में चीनी मिलाय नास लेने से नासिका से रुधिर निकलना बंद हो जाता है, तथा कान से रुधिर बहना बन्द हो जाता है।

अंडवृद्धि निवारण

सेमल, धूप, गूगल, इन तीनों औषधियों का लेप बनाकर तमाखू के पत्ते पर लेपकर आंच पर सेके औप बांध देवे तो अंडकोष नहीं बढे अथवा पीने वाली तमाखू गरम कर अंडकोष पर बांधने से अंडकोष नहीं बढ़े।

कुष्ठ रोग निवारण॥

अमिलतास भिलावा, निवौली, असगन्ध, चीता, जमालगोटा की जड़ इनको कांजी में पीस कर लेप करने से श्वेत कुष्ट रोग शांत हो जाता है।

अथवा—हरताल ४ माशे, बाबचीनी १६ माशे, इन दोनों को गाय के मूत्र में पीसकर लगाने से कुष्ठ रोग शांत हो जाता है।

अम्लपित्त की औषधी।

खट्टे और कच्चे अन्न की डकार वारम्बार और अन्न न पचना यही अम्लपित्त रोग जानना, इस रोग के शांति निमित्त, पीपरि, हर्र, मुनक्का, धनियां, जवासा मिश्री का काढ़ा शहद मिला कर पीवे यह काढ़ा अम्लपित्त रोग को शांत करता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उदररोग (शूल) की औषधी ।०

उदररोग आठ प्रकारका १शूल, २परिणामशूल, ३ उदावर्त, ४ आनाह, ५ गुल्म, ६प्लीहा, ७यकृत, ८ हृदयरोग, नामसे जानना, बारबार पीडाका बढ़ना घटना मलमूत्र का रुकना, सुई गडने के समान उदर में पीड़ा होना इसी को शूलरोग कहते हैं बहुत अच्छी हींग, सज्जीखार. जवाखार, कालालवण, सेंधालवण बिडलवण, छोटी पीपरि, चीता, कालीमिर्च, पिप-लामूल, धनियां, कचूर, इमली, अजमोद, सफेदवच, सोंठ, पुहकरमूल, स्याहजीरा, कंजे की गिरी, हर्र, पाढ जरिश्क इन औषधियों को एक एक तोला प्रमाण लेवे, तहाँ पहले हींग को टुकड़े २ कर घी में पकाय लेवे, सबका चूर्ण कर नीबू के अर्क में घोट कर झर बेरोके बेर बराबर गोली बनावे, यह गोली गरम जल के साथ खाय तो शूल रोग मन्दाग्नि और अजीर्ण रोग दूर हो जाता है।

तथा सोंठ, मिर्च, पीपरि, आंवला, हर्र, बहेडा, वायविडंग, कुटकी, नागरमोथा, सफेदवच, ये सब एक एक तोला लेके बारीक पीस चूर्ण बनाय अदरक के रस में छः प्रहर तक घोटकर उड़द के बराबर गोली बनावे कुछ गरम जल के साथ एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वा दो गोली खाय तो उदर पीड़ा और वायुका कोप शान्त होता है ।

तथा जलमें मिट्टी घोल पकावे गाढा हो जाने पर पोटली बनाय सेंकने से शूलरोग शांत होजाता है ।

शूलनाशक काढा ।

सोंठ, रेंड़ीकी जड़का छिलका छः छः माशे, काला लवण तीन माशे, हींग भुनीहुई ४ रत्ती, पहिले सोठ और रेंडकी जड़का काढ़ा उसमें कालालवण और हींग मिलाकर पीने से शूलरोग शान्त होजाता है।

उदावर्त रोगकी औषधी ।

चक्कर देती हुई वायु ऊपरको उठकर मलमूत्र आदि को रोकती है यही उदावर्त रोग कहाता है इस रोगकी शान्तिके निमित्त वेलकी छाल, गदापुरैनाकी जड़, मूली, अरणी (टङ्कारी) सोनापाढी, खम्भारीकी छाल, अमलतासके फलकागूदा, पांडरि, ये सब छःछः माशेभर लेके कूटे और सेरभर जलमें आंच पर धर कर पकावे जब पावभर जल रहजाय तब एक छटांक भर गायका घी डालकर पकावे घी रहजाय तब उतार कर छान लेवे, इसके बलानुसार खानेसे उदावर्त रोग शान्त होजाताहै अथवा बहुत अच्छी हींग और सज्जीखार आदि औषधियोंकी गोली पूर्व लिख चुके हैं उन गोलियोंसे भी उदावर्त रोग शान्त होजाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुल्म व वायुगोला की औषधी ।

पेडू और हृदयके बीच चलायमान अथवा अचल वटिया के समान गांठ एक होती है उसको वायुगोला कहते हैं, यह वटिया घटती बढ़ती रहती है इसके शान्ति निमित्त अच्छी हींग, जवाखार, सज्जीखार, धनियाँ, पिपलामूल, वच, चव्य, चीता, सफेद जीरा, पाढ, कचूर, समुद्रलवण, अमलवेत, त्रिकुटा, हरड, अनारदाना, कैंचके फलकी गूदी, पुहकरमूल स्याहजीरा ये सब एक एक तोला ले, पहले हींग को घी में भूने फिर सब औषधियों को कूट पीस कपड़े से छान चूर्ण बनावे, अदरख और बिजौरे के रस की भावना एक एक देकर चूर्ण को सुखा लेवे, यह चूर्ण तीनमाशे गुनगुने जलके साथ खाय तो उदावर्त, संग्रहणी, वायुगोला, आध्मान रोग शान्त हो जाते हैं ।

हृदय रोग की औषधी ।

हृदय में वात आदि दोष प्रवेश होके रसको दूषित कर नानाप्रकारकी पीड़ा उत्पन्न करते हैं इसीको हृदयरोग तथा पसलियों में होने से इसीको पार्श्वशूल कहते हैं, यह रोग भयंकर होता है इसकी शान्ति के निमित्त नीचे लिखे अनुसार यत्न करे, अर्जुनबृक्षकी छालका चूर्ण, घी, दूध और गुड़ के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साथ पीने से पार्श्वशूल और हृदयरोग शान्त हो जाता है।

तिल्ली की औषधी।

तिल्ली अर्थात बरबटरोग होजाने से शरीर पीला पड़जाता है, शिथिल हो जाता है, कुछ ज्वर भी आ जाता है, मन्दाग्नि समेत बांई कांख में प्लीहा रोग बढ़ता है, यह रोग प्रायः ज्वर बिगड़ जाने से होता है इसकी शान्ति के निमित्त यह यत्न करना चाहिए कचलवण जो एक प्रकारकी मिट्टी से बनता है, सेंधालवण, समुद्रलवण, कालालवण, जवाखार, चौकिया सुहागा, सज्जीखार ये सब दो २ तोला लेके सेंहुड के दूध में एक दिन खरल कर सुखावे इसी प्रकार मंदार के दूध में खरल करे ऊपर से मंदारके पत्तो को लपेट गोले को हांडी में रख उसका मुख सकोरा से बन्द कर कपरौटी कर सुखा लेवे और पांच उपलों की आँच में पका कर शीतल होने पर निकाले, अनन्तर उसी के बराबर सोंठ मिर्च, पीपरि, आँवला, हरड, बहेडा की छाल, चीता, अजवायन और जीरे का चूर्ण मिलाय पीसकर छान लेवे और सबको मिलाकर यह चूर्ण तीन माशे प्रमाण प्रातः काल और सायंकाल खाय तो वायुगोला, शूल,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उदावर्त, आनाह, तिल्ली आदि रोग जाय, यह वज्रक्षार नामक चूर्ण है।

तथा—शरफोंका की जड़ मठा में पीसकर घलो और उसमें कालालवण और कालीमिर्च मिलाय पीने से भयंकर प्लीहा रोग शान्त हो जाता है, यकृत रोग भी इसी से जाता रहता है इस रोग में घी, दही, शाक और भुना अन्न नहीं खावे।

विषूचिका रोग की औषधी।

विषूचिका अर्थात् हैजा रोग में दस्त और वमन प्यास, मूर्च्छा, शरीर में ऐंठन होती है, मूत्र बन्द हो जाता है ये लक्षण विषूचिका रोग के हैं इसका इलाज बहुत सावधानता के साथ करना चाहिए, शुद्ध शिंगरफ और गुलाब के अर्क में घोटी हुई अफीम छः माशे लेकर अदरख के रस में भली भांति खरल करके सरसों के बराबर गोली बनावे सौंफ और पोदीना को पीसकर गुलाब के अर्क में घोलकर दो गोली खाने के उपरान्त पीवे इसी प्रकार दो दो घण्टे पर दो गोली खाने से यह रोग शान्त हो जाता है, यह औषधी इस रोग को शान्त करने के अर्थ रामवाण के समान है।

तथा—कनेर की जड़ २ तोले, ढाक के फूल ४ तोला ले भर इनको जल में पीस पेडू पर लेप करे अथवा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राई का लेप पेडू पर करे, तो मूत्र उतरता है।

कृमि रोग की औषधि।

कृमि दो प्रकार के कहे हैं, एक जो शरीर के ऊपर भाग में लीख जुवां और स्वेद व व्रण आदि के सड़ने से उत्पन्न होते हैं, और दूसरे वे हैं जो उदर में उत्पन्न होते हैं शरीर के ऊपर वाले कीड़ों से खुजली और फुन्सी होती है और शरीर के भीतर वाले कीड़ों में शूल, हृदय रोग, विवर्णता, ज्वर, भोजन में अरुचि, भ्रम, शिथिलता आदि उपद्रव होते हैं, शरीर के ऊपर भाग वाले कृमियों की औषधी यह है कि पान व धतूरे के पत्तों के रस में पारा मिला शिर पर मलकर कुछ देर तक बांधे तो जुवां और लीख मर जाते हैं. अथवा धतूरे के पत्तों के रस में तेल पकाकर शिर पर मले तो लीख और जुवां मर जाते हैं, जिस वस्त्र में चुलुये व लीख हों उस वस्त्र को जल में रख कर औटावे तो कीड़े मर जाते हैं, यदि इनके काटने से शरीर में खुजली हो तो सरसों और चिरौंजी के उबटन में अजवाइन मिला मलने से खुजली दूर हो जाती है।

तथा–ढाकके बीज, वायविडंग इन दोनों को एक २ तोला भरले कुचले और पावभर जलमें पकावे जब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छटांक भर जल रहजाय तब दो तोला पुराना गुड मिला मलकर छानलेवे, फिर तीन माशे वायविडंग का चूर्ण मिलाकर प्रातःकाल और सायंकालमें ३ दिन पीवे तो उदरके कृमियोंका नाश होजाता है, कृमिरोग वालेका कोठा प्रायः बन्धा रहता हैं, वह कोष्ट वद्ध बिनाशक चूर्ण सेवन करे।

कोष्ट वद्ध बिनाशक चूर्ण।

त्रिकुटा (सोंठ, मिचें, पीपरि) त्रिफला (आँवला हर्ड बहेडा) इनको एकएक तोला लेवे सेंधा लवण, कालालवण, समुद्रलवण, तीन तीन तोला और सनाय की पत्ती नौ तोला, सोंफ और गुलाब का फूल, दो दो तोले लेकर पीस कर चूर्ण बनावे, और कागजी नीबू के रसकी पुट देके सुखायलेवे और रख छोडे, छःमाशे से एक तोला तक वलानुसार खायतो दस्त बिल्कुल साफ आता है और पेट फूलना जाता रहता है।

वमन की औषधी।

कुमुदबीज, नागरमोथा, छोटीइलायची, बेरकीगुठली, सफेद चन्दन का चूरा, पीपरि, धानको खील, लौंग, नागकेशर, ये सब छःछःमाशे पीसछान चूर्ण बनाले और चूर्णकेबराबरमिश्रीको पीसकरमिलाय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवे तीन माशे भर चूर्ण शहत में चाटे तो वमन और दाह रोग शांत होजावे ।

रोग भय नाशक ।

गेरू, कपूर, इन दोनोंको बराबर ले और कागजी नीबूके रसमें घोटकर मूंगकी बराबर गोली बनाले एक एक गोली प्रातःसायं खायतो अरोग्य पुरुष को महामारी रोगसे भय नहीं होता है ।

वायु विष नाशक औषधी ।

हल्दी, अतीस, रेणुका, पीपलबृक्षकी लाख, कुडाकी छाल, केलाकी नाल, मालकांगनी, कूट इनसब औषधियों को कूटकर धूपमें सुखा लेवे, सबके बराबर लोवान, और आधा चन्दनकाचूरा तथा चौथाई घी मिलाय आगपर रख धूनी देने से वायु शुद्ध होजाती है, और विष नाश होजाताहै, अथवा नीव की लकडी जलावे, लोवान की धूनी देवे ।

मृगी रोग की औषधी ।

इसरोग वालेकी स्मरणशक्ति चलीजातीहै, नेत्रनाचने लगते हैं हाथ फेंकने लगताहैं, मुखसे फेन निकलने लगताहै, ऐसा जानपडताहै कि अन्धेरे में पडे है, ये लक्षण मृगी रोगके जानना, इसरोगको नाश करनेके निमित्त, मंदारका दूध एक छटांक, हरसोंठ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिसको पंसारी गोदन्ती हरताल कहते हैं जो सफेद रंग नरमसा होता है एक छटांक इन दोनों को बराबर लेके खरल करे जब टिकिया बनाने के योग्य होजाय तब टिकिया बनाय सुखाकर सरवे में रख सम्पुट कर कपरौटी करे फिर चार ऊपलों की आंच में पकाय शीतल होने पर निकाल ले फिर कपड़े से छानकर शीशी में रख छोड़े जिस समय मृगी आवे उस समय एक रत्ती चूर्ण पियाज के रस में मिलाकर किसी नली द्वारा नासिका में फूंक कर शिर के भीतरी भाग में पहुंचा देवे तो मृगी वाला चैतन्य हो जाता है।

पथरी रोग की औषधी।

सेंधालवण, वायविडंग, कुलथी, पटुये के बीज सफेद कोहडे के बीज, जवाखार, बड़ा गोखरू ये एक एक तोला वरुण की छाल आधसेर पहले वरुण की छाल का काढ़ा बनाय आधसेर गाय के दूध में सब औषधियों सहित पीसकर पचावे जब केवल घी रह जाय तब उतार कर छान ले इस घी के खाने और पिचकारी लेने से पथरी रोग जाता रहता है, सुजाक की औषधी पथरी में हितकारी जाने।

वातव्याधि रोग की औषधी।

वातव्याधि में अंग जकड़ जाते हैं, शरीर शून्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सा जाता है, सूजन आ जाती है, पीड़ा हो जाती है, इस रोग को नाश करने के निमित्त शुद्ध कुचला आधपाव लेके पान के रस में एक दिन भर खरल करके धूप में सुखाय लेवे अनंतर नकछिकनी के रस में एक दिन खरल करे और मूंगा की बराबर गोली बनाय लेवे, एक गोली प्रातःकाल और सायंकाल खाने से वातव्याधि रोग शान्त हो जाता है, यह गोली छोटी इलायची, वंशलोचन, गिलोय का सत और नवीन माखन के साथ खावे ऊपर से गोली खावे, धातु क्षीण के लिए भी यह गोली बहुत गुणकारी है।

मूर्च्छा रोग की औषधी।

काले तिल का तेल ४तोले,ईख का कच्चा सिरका २ तोले, निर्मल जल ६ तोला इन तीनों को फूल की पाली में भली भांति मथ कर रक्खे और रोगी के शिर के केश बनवाय सफेद कपड़ा आठ पर्त करके औषधी में तर करे फिर उसको शिर पर धरे इसी प्रकार घंटा घंटा पर पट्टी को पलट देवे तो मूर्च्छा रोग दूर हो जाय परन्तु यह सन्निपात की मूर्च्छा का यत्न है, महामारी (प्लेग) रोग में जो मूर्च्छा (वेहोशी) होती है उसमें यह औषधी अति गुणकारी जानना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शीतांग रोगपर धूरा।

भुनी हुई अदरख ४ तोले, सोंठ २ तोले इनके चूर्णका धूरा करने से शीतांग रोग जाता रहताहै,

तथा-कुलथी, पीपरि, कायफल, पित्तपापडा, काला, जीरा, वच चित्रक चिरायता लौंकीके बीज, हरड, ये सब बराबर ले बारीक पीसकर चूर्ण बनाय हाथ पांव में धूरा करे तो सन्निपात में जो शीत आजाता है सो जाता रहता है।

सेहुवां की औषधि।

चौकिया सुहागा, मैनशिल, सफेद कत्था इन तीनों को बराबर लेके चूर्ण करे और सहोरे के जडकी छालके रसमें घोटकर गोली बनावे सौ गोली नीबूके रस अथवा जलसे घिसकर लगाने से सेहवां रोग जाता रहता है।

शिरपीडा पर औषधी।

वायविडंग और काले तिल बराबर लेवे और पीसकर लेप करे अथवा सुचुकुन्द के फूलको पानी में पीसकर मस्तकपर लेप करे तो शिर पीडा जाय, अथवा गरमीसे यदि शिरमें पीडाहो तोचन्दन घिसकर लेप करे और यदि सरदीसे शिरमें पीडा होतो सोंठ घिसकर मस्तक पर लेप करे तो शिरपीडाजाय,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दंतपीडा पर औषधी ।

यदि दाँतोंमें पीडाहो तो सुपारी पुरानी आधपाव, कुचिला एक छटाँक, काली मिर्च आधी छटांक, लवण पाव छटाँक, तूतिया कुछ थोडी, पहले सुपारी और कुचिलाको जलाकर कोयला करे फिर उसको पीसे फिर काली मिर्च लवण और तूतिया पीसकर उसमें मिला लेवे यह मंजन प्रतिदिन करने से दंतपीडा दूरहोजाती है, यदि वादीसे दांतोंमें पीडा हो तो सोंठका सेवन करे और उसका अर्क चूसै तो दंतपीडा जाय प्रायः लोग दांतों मे पोडा होनेसे तमाखू खाने लगते हैं, परन्तु जहाँ तक होसके अन्य औषधियों को खावे तमाखूका खाना ठीक नहीं है ।

नेत्र पीडा निवारण ।

त्रिफला और पोस्तके छिलकोंको जलमें भिगोदे फिर उस जलसे नेत्रों को धोवे, अथवा—सेंधालवण, दारूहल्दी, गेरू, रसौत इनको जल के साथ पीस लेप करे तो नेत्र पीडा जाय, यदि शरदी से दुखते हों तो सोंठ और गेरू को, पानी में पीस पलकों पर लेप करे अथवा-शहतमें रसौत मिला कर अंजन करे, तथा-बकरी के दूध का फोहा रात्रि को सोते समय रख कर सोजाय तो नेत्रों की लाली दूर होकर नेत्र पीडा जाती रहती है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथवा-गुलाबके जलमें केशर को पीस उसका फोहा बनाय नेत्रपर रखनेसे नेत्रपीडा शांत होतीहै और नेत्रकी लाली कटजातीहै, अथवा फूलका मैल और जस्तका सफेदा मिलाकर भासी मिला लेवे सो आंजने से नेत्र पीडा शान्त होजाती है ।

कर्ण पीडाकी औषधी ।

आक के पत्ते पर घी चुपड कर अग्नि पर सेकै और उसका रस निचोड कर कानमें डाले अथवा सुदर्शन की पत्ती को कुछ सेंक कर उसका रस निचोड कर कानमें डाले तो कानकी पीडा जाय ।

शिरगंजकी परीक्षित औषधी ।

पुरानी जूती का तला जला कर राख कर लेवे और उसमें रेंडीका तेल मिला कर लेप करने से गंज अच्छा हो जाता है ।

दादखाजकी औषधी ।

कूट, वायविडंग, पंवारके बीज, सेंधालवण, हल्दी सरसों, इनको नीबू के रसमें घोट लेप करे तो दाद खाज जाय, अथवा सिंदूर, गन्धक, कपूर इनको नारियलके तेलके साथ लगाने से दाद खाज जाय ।

अथवा-मोम, कडुवातेल, नींवकीपत्ती, राल, इनको जलाकर भली भांति धोवे और टिकी बनावे उसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुम्भाके रसमें अफीम मिलाकर लगानेसे दादखाज जाता रहताहै, भंगराकी पत्तीका रस, अथवा बालक जोईकी पत्तीकारस मलनेसे दादखाज शांत होताहै।

बालक के ज्वरकी औषधी।

नींवकी छाल, हरड, नागरमोथा मुलहटी और परवलके पत्ते ये एक२रत्ती लेकर जलमें पकाय छानकर पिलाने से बालकका ज्वर शांत होजाता है ये मात्रा एक महीनाके बालककी है, दो महीने का बालाक होतो दो २ रत्ती प्रमाण औषधी लेवे।

बालक के अतीसारकी औषधी।

धाईकेफूल, सुगंधवाला, वेलकीगिरी, गजपीपरि, लोध इनको बनाय शहतके साथ चाटनेसे बालक का अतीसार रोग जाता रहता है।

बालक के खांसीकी औषधी।

अतीस, पीपरि, नागरमोथा, अडूसेकीफुनगी, काकरासिंगी इनको कुचल संध्यासमय थोडे जलमें भिगोदे प्रातःसमय शिल पर पीस कपड़े पर रख रस निचोड ले फिर गरम कर शहत मिला बालक को चटाने से बालककी खांसी अच्छी होजाती है।

अथवा—चमेलीके फूल और जीरेको पीस शहत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में मिलाय चटावै अथवा भटकटैया के फूल को पीसकर शहत अथवा माता के दूध में मिलाकर चटाने से बालक की खांसी जाती रहती है।

बालक के दूध डालने पर औषधी।

शहत के साथ कुटकी का चूर्ण चटाने से हिचकी और वमन शान्त हो जाते हैं, अथवा—चव्य, चीता सोंठ, पिपलामूल, पीपरि इनके चूर्ण को शहत के साथ चटावे तो बालक का दूध डालना बन्द हो जाता है।

सूजन पर औषधी।

सफेद कुम्हडे का बीज, देवदारू, इन्द्रजव, नागर-मोथा इनको जल में पीसकर लेप करने से बालक की सूजन जाती रहती है।

बालक के अधिक रुदन को औषधी।

यदि बालक अधिक रोता हो तो त्रिफला और पीपरि के चूर्ण को शहद में चटावे।

बाल लाक्षादि तेल।

सफेद चन्दन, कूट, असगन्ध, हल्दी, राई, देवदारू, मुलहठी, कुटकी, मूर्वा (मुरा, मुरहरी) रेणुका, कुटकी, ये सब औषधी दो २ तोला भर लेवे, पीपल वृक्ष की लाख पाव भर, काले तिलों का देल तीन पाव दही का तोड़ दो सेर पहले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लाख को १ सेर जल में पकावे जब सवा पाव शेष रहे तब जल निकाल कड़ाही साफ कर लेवे, फिर तेल और दही का तोड़ तथा औषधियों की लुगदी सबको मिलाकर पचावे तैयार होने पर उतार लेवे और शीतल कर छान लेवे फिरबोतल में भर कर रख लेवे इस तेल के मलने से बालकों की राक्षसी बाधा दूर हो जाती है और ज्वर उतर जाता है, बालकों के रोग की कुछ औषधियां हम द्वितीय भाग में लिख चुके हैं, विशेष करके स्त्री सुख बोधनी नामक ग्रंथ में लिखेंगे ।

लाक्षादि तेल ।

पीपल वृक्ष की लाख ६ सेर, काले तिलों का दो सेर, दही का तोड़ ६ सेर, असगंध] हलदी सोंफ, देवदारू, रेणुका, कुटकी मुरा, मुलहठी, कूट, सफेद चन्दन, नागरमोथा, राई इनका प्रमाण तीन २ तोला भर, पहले लाख को २४ सेर पानी में पकावे जब ८ सेर रह जाय तब आंच से उतार कर छान लेवे, और कड़ाही को साफ करे, फिर तिल का तेल और दही का तोड़ तथा औषधियों की लुगदी और लाख का जल इन सबको मिलाय[illegible] तेल में सब पच जाने पर आंच से उतार लेवे फिर शीतल हो जाने पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छान लेवे और उत्तम पात्र (शीशी आदि) में भर कर रख छोड़े, लाक्षादि तेल के मलने से विषम ज्वर, जीर्णज्वर, खांसी, श्लेष्मा, श्वास, मृगी रोग, पीठी और कमर का जकड़ना भूतबाधा और उन्माद इतने रोग शान्त हो जाते हैं।

नारायण तेल

नीव की छाल, असगन्ध, गन्धप्रसारिणी, टेकारी शरफों का, बेल की छाल वनभांटा, भटकटैया, बड़ा गोखरू, बरियारा, ककई, गदहपुरेना की जड़ पाढ इन सबको आध आध पाव ले कुचल लेवे और आठ सेर जल में पकावे दो सेर जल रह जाने पर आंच से उतार कर छान ले, फिर आध सेर शतावरी को कुचलकर आठ सेर जल में पकावे, जब दो सेर रह जाय तब उतार कर छान लेवे फिर तीन सेर गाय का दूध काले तिल का तेल तीन सेर लेवे, और देवदारू, कूट, सौंफ जटामासी, वच, छडीला, लाल चन्दन छोटी इलायची छड, तगर, वनउरदी, सरिवन, पिठवन बनमूंग राई सेंधा लवण, असगन्ध, गदापुरैना की जड़, बरियारा, सुगन्ध वाली ये सब एक २ तोला, पहले तेल, काढा और दूध को कड़ाही में भर कर चूल्हे पर चढ़ावे फिर जल से औषधियों को बा-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रीक पीसकर उसी में छोड़ देवे, मन्द मन्द आंच से पचावे, पच जाने पर आंच से उतार कर छान लेवे और बोतल में भर कर रख छोड़े इस तेल के मलने से कटिपीड़ा, अंगों का जकड़ना, सर्वांग बात, लकवा आदि सम्बन्धी रोग दूर हो जाते है।

बात नाशक तेल।

कचूर, अफीम, हींग, बकायन के जड़ की छाल, लौंग, सांप की केचुली, काले धतूरे के बीज, ये सब औषधी एक २ तोला काले तिलों का तेल एक पाव रेंडी का तेल एक पाव, कडुआ तेल एक पाव सब औषधियों को जल में पीस कर लुगदी बनावे, सब तेल कड़ाही में चढ़ा कर औषधियों की लुगदी डाल कर पचावे, पच जाने पर आँच से उतार कर छान लेवे और बोतल में रख छोड़े यह तेल बात रोग वाले और लकवा रोग वाले को अत्यन्त हितकारी है।

पीनस रोग नाशक तेल।

काले तिलों का तेल भँगरैया का रस एक २ पाव भर लेवे, सेंधालवण दो तोला लेके, पीस लेवे, दोनों तेल कड़ाही में चढ़ाकर सेंधा लवण डाल देवे जब केवल तेल रह जाय तब आँचसे उतार शीतल होजाने पर वस्त्र से छान लेवे और बोतल में भर कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रख लेवे। इस तेल के सूंघने से पीनस रोग जाता रहता है।

कर्णरोगान्तक तेल।

काले तिलों का तेल आधपाव अदरख का रस आधपाव शहद, सेंधालवण दो २ तोले भर, इनको कड़ाही में चढाय पचावे, जब तेल रहजाय तब उतारकर छान लेवे यह तेल कानमें डालने से कान की पीड़ा और बहिरापन रोग दूर हो जाता है अथवा चिरचिरा की पत्ती का रस आधपाव, काले तिलों का तेल आधपाव लेके पकावे, केवल तेल रहजाने पर उतार लेवे और छानकर रख छोडे, यह तेल कानमें डालने से बहिरापन दूर होजाता है, इसको अपामार्ग तेल कहते हैं।

आनन्द भैरव गोली।

शुद्धसिंगिया, शुद्धसिंगरफ, चौकिया सुहागा, कालीमिर्च, पीपरि, एक२ तोला लेके चूर्ण बनावे और अदरख के रस में डेढ़ पहर घोटे और मूंग की बराबर गोली बनावे, फिर इन्द्रयव, दालचीनी और कुरैया की छाल के चूर्ण के साथ खावे तो अतीसार रोग दूर होजाता है, इसमें मीठा भात पथ्य है, सन्निपात ज्वर और शीत सम्बन्धी रोगों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में भी यह गोली स्वारथ्य देने वाली जाननी, तेल और घी चार मास पर्यन्त गोली पाक और अवलेह एक वर्ष भर तक और चूर्ण दो महीने तक व्यवहार योग्य जानना, धातुओं की भस्म और आसव ये जितने अधिक दिन के हों उतने ही गुण को करे है, इस कारण औषधियों के निर्माण के समय का ध्यान रक्खे।

दो०-लिख्योतुर्य अधिकार यह नारायण मनलाय।
नानागदकर यत्नतहँ, सुन्दर अवसर पाय ॥२॥

इति श्रीमज्ज्योतिर्विंत्पण्डित नारायण प्रसाद लिखित रसराजमहोदधिभाषायांचतुर्थ भागे अनेक रोगौषधिवर्णनोनामचतुर्थाधिकारः ॥ ४ ॥

अथद्रव्यगुण (निघंटु) वर्णनं पञ्चमाधिकारः ॥ ५ ॥

दो०-अब पञ्चम अधिकार में नारायण मन लाय।
औषधिगुण कछुहित सहित, लिखित सुअवसरपाय ५

१ अम्बाडा-इसके आम्रातक आदि नाम हैं यह कच्चा वात नाशक, भारी और गरम है, रुचि को बढाता है, दस्तावर पका हुआ मीठा, ठण्डा है पुरुषार्थ को बढाता हैं, बात, पित्त, क्षयीरोग को शान्त करता है।

२ राजाम्र-इसके राजाम्राह्व आदि नाम हैं यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ठंडा है, मीठा है, मल को बांधता है और बात व पित्त को जीतता है।

३ सुपारी—पूगीफल आदि इसके नामहैं,यहठंडी, भारी, रूखी, कषैली है और पित्तको दूर करती है मन्दाग्नि को जगाती है, रुचिको उपजाती है, गीली सुपारी कफको करतीहै दृष्टिको हरती है,पकी सुपारी त्रिदोष को दूर करती है, सूखी सुपारी, वायुको उपजाती है चिकनी सुपारी सब दोनों को हरती है, इसका फूल कषैला, मीठा व भारी रहता है।

४ पान—ताम्बूल आदि इसके नाम हैं यह गरम है, कषैलाहै, हृदयको बल देताहै,अरुचिको बढाता है, फैलनेवाला है और तीखा, कडुवा, खारा, व चर्परा है, काम को उपजाता है, रक्तपित्तको करता है, हलका है, कफ मुखदुर्गन्धि, मल वात और परिश्रमको हरता है इसमें चूना,कफ और वायुको हरता है, कत्था कफ और पित्त तथा, मुख की विरसता को दूर करता है, सुगन्धि कान्ति और शोभा को बढाती है।

५ लवली (हरफारेवडी) घनस्निग्धा आदि इसके नाम हैं, यह गरम है, हलकी है, रुचिको उपजाती है कफको हरती है, पथरी, बवासीर और पित्तको दूर करती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६ कुष्मांड (गङ्गाफल) इसके कूष्मांड आदि नामहैं, यह ठंडा, धातुबर्धकहै, रक्तपित्त और बातको जीतताहै मीठा,हलका, दीपनहै, मूत्राशयको शोधता है, वीर्य सम्बन्धी रोग और त्रिदोषको हरता है, पका हुआ कुष्मांड ठंडा, कफ करता है, बहुत पका कुष्मांड ठंडा नहीं होता, मन्दाग्नि को जगाता, वस्ति को शोधता और हलका है, पथरी व कफ को दूर करता है, इसका गूदा पित्त को हरता, वीर्य को बढाता है, पुष्ट और मीठाहै मूत्राशयको शोधता है,

७ पेठा–ककोरु आदि इसके नामहैं, यह रक्तपित्त को हरता है, कफ और वायु को जीतता है।

८ ककड़ी–कर्कटी, बृहत्फला आदि इसके नाम हैं यह ठंडी है, रूखी है, मल को बांधती है, मीठी व भारी है।

९ तरबूज–कलिंग, फलवर्तुल आदि इसके नाम हैं, यह ठंडा भारी है, मल को बांधता है, नेत्र रोग व पित्त को हरता है, काविज है, कफ और वीर्य को हरता है, पका तरबूज गरम है, वायु के रोगों को शांत करता है।

१० मीठी तुम्बी-तुम्बीमिष्टा आदि इसके नाम हैं, यह भारी है, पुष्ट है, कफ व पित्त को हरती है।

११ कडुई तुम्बी-कटु तुम्बी आदि इसके नाम हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह ठंडी है, हृदय को बल देती है, पित्त, खांसी और विष को हरती है।

१२ खीरा—त्रपुष आदि इसके नाम हैं, यह ठंडा है, रूखा है, पित्त, पथरी और सुजाक को दूर करता है, मूत्र को बढ़ाता है, पका खीरा गरम है, खट्टा पित्त को उपजाता है, कफ और वायु को जीतता है।

१३ गोरख ककड़ी—चिर्भट, गोरक्ष कर्कटी आदि इसके नाम हैं, यह ठंडी है, भारी है, रूखी है, मीठी है, विष्टम्भी होकर मल को बांधती है. पकी हुई गोरख ककड़ी गरम है पित्त को हरती है।

१४ एलुआ—वालुक आदि इसके नाम हैं, यह ठंडा है, मीठा है, भारी है, रक्त पित्त को हरता है, भेदी है, पका हुआ एलुवा अग्नि को हरता है।

१५ सेव—पीतपर्णक आदि इसके नाम हैं यह हलका है, गरम है, भेदी है, मीठा है, पित्त और अग्नि को प्रदीप्त करता है।

१६ तुरई—कोशातकी आदि इसके नाम हैं, यह हलकी है, रूखी है, आमाशय को शोधती है, पाण्डु, सूजन, उदर रोग, तापतिल्ली, बवासीर, कोढ़, कफ और पित्त को जीतती है, इसका फल ठंडा, भेदी, हलका है, प्रमेह और त्रिदोष को जीतता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१७ घिया तुरई–राजकोशातकी आदि इसके नाम हैं यह ठंडी है,ज्वर को दूर करती, कफ और वायु को जीतती है।

१८ राम तुरई–महाकोशातकी आदि इसके नाम हैं, यह मीठी है, चिकनी है, पित्त और वायु को जीतती है।

१९ बैंगन–वृन्ताक आदि इसके नाम हैं, यह गरम है, तीखा है, मीठा है, पित्त को उपजावे है, कफ और वायु को हरती है,हृदय के बल को बढ़ावे है, पाक में कडुवा है, मन्दाग्नि को प्रदीप्त करती है, वायु को उपजावे है, हलका होकर ज्वर, अरुचि और खांसी को दूर करे है, पका हुआ बैंगन पित्त को करती है।

२० सफेद बैंगन–श्वेतबृन्ताक आदि इसके नाम है पूर्वोक्त बैंगन से थोड़े गुण इसमें है, बवासीर रोग वालों को यह सफेद बैंगन गुण करती है।

२१कुन्दरू–बिम्बी, तुण्डी आदि इसके नाम हैं, यह वमनकारी, रक्तपित्त और रक्तरोग व कामला को दूर करता है, इसका फल ठंडा, भारी, मीठा दाह को जीतता है, विष्टंभी होके वायु मल मूत्रावरोध और अफरा को करता है।

२२ करेला–कारवेल आदि इसके नाम हैं, यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ठंडा, भेदी, हलका और तीखा होने पर वायु को नहीं उपजाता है, तथा रक्तपित्त, पांडु, कामला, कफ, प्रमेह और कृमियों को जीतता है।

२३ ककोडी–कर्कोटकी, पीतपुष्पा आदि इसके नाम हैं, यह मल को हरती है, कोढ़, थुकथुका, दमा, अरुचि, खांसी और ज्वर को शान्त करती है, इसका फूल सेहुवां और अरुचि को दूर करती है।

२४ बांझ ककोंडी–बन्ध्याकर्कोटकी आदि इसके नाम हैं, यह तेज है, गरम है, विष को विसर्प को खांसी को दूर करती है।

२५ डोडी–डोडिका आदि इसके नाम हैं, यह करेरुआ, कफ, पित्त, बवासीर, कृमिरोग, गोला, विष को शान्त करता है।

२६ ढेंडस–डिण्डिस आदि इसके नाम हैं, यह तेल और रूखा (खुश्क) है, पथरी को फोड़ता और मूत्र को बहुत लाता है।

२७ सुआरासेम–कोलशिम्बी आदि इसके नाम हैं, यह वायु नाशक और भारी है, आंव, कफ, और पित्त को करती है।

२८ सेम–शिवी आदि इसके नाम हैं, यह ठंडी है, हलकी है, कफ, हवा और पित्त को हरती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२९ बथुआ–वास्तूक आदि इसके नाम हैं, यह पाचक, रोचक, हलका हो वीर्य और बल को देता है, दस्तावर है, तिल्ली, रक्तपित्त, कृमिरोग और बवासीर तथा क्षयी को शान्त करता है।

३० लालबथुआ–जीवन्तक आदि इसके नाम हैं, यह क्षार है, पचने के समय मधुर है, त्रिदोष को हरती है।

३१ सफेद बथुआ–तिल्ली, गौडवास्तुक आदि नाम हैं, यह ठंडा, हलका है, रुचि को उपजावे है, मन्दाग्नि को प्रदीप्त करती है, बल को बढ़ावे है, तापतिल्ली और रक्तरोग व कृमिरोग को हरती है।

३२ नारीशाक–कालशाक आदि इसके नाम हैं यह दस्तावर है, रोचक होके वात को उपजावे है, कफ और सूजन को जीते है, ठंडी है, रुक्ष है, मधुर होके त्रिदोष को हरती है।

३३ चौलाई–तण्डुलीय आदि उसके नाम हैं, यह ठंडी है, हलकी है, कफ, पित्त और रक्त को जीते है, मूत्र और मल को उपजावे, रोचक है, मन्दाग्नि को प्रदीप्त करती है।

३४ मरसा–वाष्पक आदि इसके नाम हैं, यह दस्तावर, ठंडा, भारी व भेदी है, त्रिदोष को हरती है।

३५ परवल–पटोल आदि इसके नाम हैं, यह पांच

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहैं, हृदय के निमित्त बलदायक होकर पुरुषार्थ को बढावे हैं, हलका है, मन्दाग्नि को जगावे है चिकना और गरम होके बात रक्त, त्रिदोष, ज्वर व कृमि रोग को दूर करे है, इसका पत्ता पित्त को हरे है, ठण्डा है इसकी वेल कफ को हरे है, इसकी जड़ दस्तावर है इसका फल त्रिदोष को नाश करता है।

३६ चचेडा-चंचुड आदि इसके नाम हैं इसमें परवलकी अपेक्षा थोडे गुण हैं, विशेष कर दमा को, मद को रक्त पित्त व विषको जीते है।

३७ पालक- पालक्य आदि इसके नाम हैं, यह ठंडा है, बातको उपजाता है, भेदी है, कफको करता है, विष्टंभी व भारी होकर रक्त पित्त को हरता है।

३८ पोई-पोतकी आदि इसके नाम हैं, यह ठंडी है, चिकनी है, कफको उपजाती है, बात पित्तको जीतती है वीर्यको बढाती है।

३९ लोनियां-लोणिका आदि नाम हैं, यह ठंडी है, भारी है, रूक्ष है, कडुवी है, काविज है, पचने के समय मीठी है सलोनी होकर दोषों को उपजाती है, हृदयके रोगों को हरती है दमा खांसी कफ और विषको दूर करती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४० सुषेण (फंजी) तिलपर्णिका आदि इसके नाम है, यह गरम है, वादी है मलको बांधे है, प्रमेह व त्रिदोषों को हरे है रुचिको बढावे है, दमा, खाँसी और कफको जीते है।

४१ रुटिया–सूक्ष्मपत्र आदि इसके नाम हैं, यह कफ और बातको हरे है, तथा बहुत तीक्ष्ण होकर पित्ताको नहीं उपजावे है, इसका फल वादी है, रक्त पित्त और दमाको हरे है, ठंडा है, रूक्ष है ।

४२ नसिया–घनागमभवा आदि इसके नामहै, यह त्रिदोष नाशक है, इसका फूल मीठा, दस्तावर है, फलभी दस्तावर होकर कोठे को शुद्ध करताहै, इसका कच्चाफल वायुको उपजाता है।

४३ कुरण्ड–कुरण्डी, शीतवार इसके नाम है। यह दस्तावर, हलका, पुरुषार्थ को बढाता है, सूजन को हरता है, बात पित्तको उपजाता है।

४४ नलवा–नाडी, नलिका ये दो नाम इसके हैं यह दस्तावर, ठंडा पित्त हरता है, कफ और वायु को उपजाता है।

४५ सरसों–इसके सार्षप आदि नाम हैं सरसों का शाक मल और मूत्रको बाँधता है, भारी हैं, गरम है, वायु तथा त्रिदोषको करता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४६ चना का शाक–वणक शाक इसका नाम है, यह देर में पचता है, कफ और वायु को हरता है, मटर का शाक भेदी और हलका होने से पित्त और कफ को जीतता है।

४७ चूका का शाक–चांगेरी आदि इसके नाम है, यह मन्दाग्नि को प्रदीप्त करता है, रुचि को उपजाता है, हलका गरम, कफ और वायु को जीतता है, तथा पित्त को प्रगट करता है, और संग्रहणी बवासीर, अतीसार व कुष्टरोग दूर करता है।

४७ गाजर–गृंजन आदि इसके नाम हैं. यह हलकी है, बिगड़े कंठ को सुधारती है, खांसी, त्रिदोष, विष और रक्त को विनाश करता है, मदाग्नि को प्रदीप्त करती है, तथा हलकी है, और रक्त पित्त, ग्रहणी, बवासीर को जीतती है।

४६ मूली–मूलक, कफान्तक आदि इसके नाम हैं यह वायुकारक, रुचिवर्द्धक, बिगड़े स्वर को सुधारती है तथा गरम, पाचक है, हलकी होने से त्रिदोष कारक है, नेत्ररोग, श्वास, गुलरोग, व पीनस को दूर करती है, घी में सिद्ध की हुई मूली त्रिदोष को हरती है; सूखी मूली सूजन को दूर करती है इसका फूल कफ पित्त को हरती है, इसका फल वायु व कफ को हरता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५० करीर—करीरक आदि इसके नाम हैं यह मरम, भेदी, तीखा, कडुवा है, वात को जीतता है, और घाव, सूजन, विष व बवासीर को शान्त करता है, इसका फूल कफपित्त नाशक है, और इसका फल कषैला, ग्राही, मीठा तथा गरम होने से कफ पित्त प्रगट करता है।

५१ सहिजना—शिग्रु आदि इसके नाम हैं, इसके बीज सफेद हैं वे तेज और गरम हैं, नेत्रों के लिये हित हैं, काबिज हैं अग्नि को बढ़ावे हैं कफ वायु को जीते है विद्रधि तापतिल्ली और फोड़े को दूर करता है, मन्दाग्नि को प्रदीप्त करता हैं, दस्तावर है, इसका फूल भारी, वादी, काबिज है, कफपित्त को जीतता है, सूजन को हरता है, इसका फल गरम, कसैला, मल को बांधता है, मीठा, कफपित्त को हरता है।

५२ लहसन—उग्रगन्धा आदि इसके नाम है, यह गरम,पाचक,पौष्टिक,पुरुषार्थ को बढ़ाता है, चिकना है, टूटे हुये को जोड़ता है, बालों को बढ़ाता है भारी है, भेदी है पित्त लोहू को उपजाता है रसायन रूप होकर कफ, दमा, खांसी, गोला ज्वर, अरुचि, सूजन, प्रमेह, बवासीर, कोढ, शूल, वात

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और कृमि रोग को दूर करता है, इसका नाल मीठा होकर पित्तको उपजाता है, इसका पत्ता मीठा है खारी है।

५३ प्याज–पलाण्डु आदि इसके नाम हैं, इसमें लहसन के समान गुण हैं, बहुत गरम है, पित्तको नहीं उपजाता है, पचने में मीठा है, कफ कर्ता है।

५४ जिमीकन्द–सूरण आदि इसके नामहैं एक जिमीकन्द बनमें उपजताहै उसको बज्रकन्द कहते हैं, तीसरा जिमीकन्द का सुरेन्द्र नामहै,यह रूखा दीपन कषैला, दस्तावर कडुवा हलका है, बवासीर को दूर करता है इसका नाल कफ वायुको हरता है, कामाग्नि का प्रकाश करता है बज्रकन्द नामक जिमीकन्द कफ को दूर करता है।

५५ हडसंहारी–अस्थिसिंही आदि इसके नामहैं, यह ठंडी, मीठी, पुष्ट है, कफको करे है, टूटे को जोडे है, बल करे है, पित्त रक्त वायुको दूर करे है,

५६ वाराहीकंद–मागधी आदि इसके नाम हैं, यह मधुर है, तीखा है, रसायन है, वायु वीर्य व अग्निको बढावे है, पित्तको उपजावे है, प्रमेह, कफ, कुष्ट और वायुको विनाश करे है।

५७ मुसली–तालिपत्रिका आदि इसके नाम हैं, यह गरम, पुष्ट है, बवासीर और वायुको दूर करे है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसका कन्द वीर्यको बढावे है, बालको करे है, वायु और पित्त को जीते है।

५८ कंचुक–पीलु आदि इसके नाम हैं, यह मल को बांधता है, बातको उपजाता है, मन्दाग्नि को प्रदीप्त करता है, कफ और पित्त को हरता है।

५९ धरती का फूल–भूच्छत्र आदि इसके नाम हैं, यह ठडा है, बलकारी है, भारी व भेदी होने से त्रिदोष को जीतता है।

६० मानकन्द–स्थूलकन्द आदि इसके नाम हैं, यह कफ वायुको उपजाता है, भारी है पित्त और सूजन को जीतता है, ठण्डी, मीठा है रुधिर विकार को दूर करता है।

६१ कसेरू–कसेरू के स्वल्पकन्द आदि इसके नाम हैं, यह ठंडा है, मीठा है, भारी है, पित्त, रक्त और वायु को जीतता है।

६२ सिंघाडा–जलकन्द, त्रिकुट आदि इसके नाम हैं, यह मलको बांधता है, वीर्य वायु और कफ को प्रगट करता है।

६३ आलू–पिण्डालुक आदि इसके नाम हैं इसके पाँच भेद हैं, आलू सब खाने में गरम और लगाने में ठंडे हैं, आलू मीठा, काविज है, मूत्र और मल को उपजाता है, रूखा रक्तपित्त नाशक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कफ और वायु बर्द्धक है, स्तनों में दूध को बढाता है, बल कर्ता है, लाल आलू कफ को दूर करता है।

६४ केलूट--केयूर आदि इसके नाम हैं, यह ठंडा ग्राही पित्त उत्पादक वायु नाशक है मूली के बिना ये सब शाक बहुत पुराने सूखे, दूषित भूमि में उपजे, बहुत कठोर, बहुत नरम, वातादि से दूषित, सर्प आदि के सूंधे नहीं खाना चाहिये, सर्प आदि के सूंघेकी परीक्षा यह है कि वस्तुका स्वाद बदल जाता है, और विषैली दुर्गन्धि आने लगती है।

६५ जल--उदक नीर आदि इसके नाम हैं, यह ठंडा हृदय को बल कर्ता, पित्त, बिष और भ्रम नाशक है, दाह अजीर्ण वमन मूर्च्छा और मदात्यय (नशा) को जीतता है, खाँसी, प्रमेह, अरुचि श्वास, पाण्डु रोग, वायु रोग, पसली पीड़ा, घी व तेल के पीने के पीछे, गलरोग, नवीन ज्वर में संग्रहणी, श्लेष्मा, अफरा, हिचकी गोला जुलाब इन रोगों के ऊपर अवगुण करता है तथा दिव्य, तुषारज, धार, हैम, ये चार भेद जल के हैं, इनमें हलका होने से दिव्य जल उत्तम कहा है, दिव्य जल भी दो प्रकार का होता है, एक गङ्गाजी का दूसरा समुद्र का इन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोनों में गंगा जल उत्तम कहाता है, आश्विन मास में बरषे हुए जल को सोने चाँदी व मिट्टी के पात्र में भर रक्खे इसको ठण्डा जाने यह त्रिदोष व विष और श्रमको हरता है आकाश से पृथ्वी पर बरसा हुआ जल भूमि में पड़कर भौम कहाता है दिव्य जल के अभाव में गुण व दोषों को विचार कर भूमिका जल लेना चाहिये, गंगा का जल रसायन है प्यास मूर्च्छा, तन्द्रा दाह और ग्लानि को दूर करता है, कूप का जल कफ हर्ता है, पित्तको उपजाता और मन्दाग्नि को प्रदीप्ति करता है, भारी है तालाव का जल वादी है, बावडी का जल पित्त करता और वात कफ नाशक है, झरने का जल मेदी हृदय को बल करता है, हलका रहता है, कफ को नशाता है, मन्दाग्नि को जगाता है, कुण्ड का जल हलका पित्त नाशक है दाह को न करता हुआ अग्नि को प्रदीप्त करता है, सरोवर का जल प्यास को दूर करता है, हलका रहता है, पाक में भारी होकर दोषों को उपजाता है पहाड से झरा हुवा जल भारी कफ और वायु को हरता है वर्फ का जल भारी और ठण्डा है, पित्त को हरता है, चन्द्रकान्त जल रूखा हलका है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पित्त विष व रक्तनाशक है, दिनमें सूर्य की किरणों से और रात्रि में चन्द्रमा की किरणों से युक्त जलको हंसोदक कहते हैं, यह चिकना, त्रिदोष हर्ता है, आकाशीय जलके समान ठंडा हलका अमृत के तुल्य कहाता है, बर्षा में आकाश का जल उत्तम कहाता है, शरद में अगस्त्य ताराके उदय होनेसे विष रहित हुवा जल स्वच्छ कहाता है, हेमन्त में सरोव अथवा तालावका जल गुणदायक है, वसन्त व ग्रीष्म में कुवा बावड़ी और झरनेका जल उत्तम है, शीघ्र बहनेवाली और निर्मल जल वाली नदियों का जल हलका होता है, मन्द बहने वाली. मैली व सिवारयुक्त नदियों का जल भारी होता है. हिमालय से निकली हुई नदियोंका जल पथ्य है, गंगा.सरयू.सतलज, यमुना ये नदियां उत्तम गुणवाली हैं. यह कुछ पित्त कारकहैं स्वच्छ व पवित्र होनेसे वीत कफ को हरतीं हैं, मलयाचलसे उत्पन्न नदियां हलकी होकर शीघ्र बहनेवाली हितकारी हैं, कृतमाला व ताम्रपार्णी आदि नदियां निर्मल जलबाली हैं, स्थिर जलवाली व मलयाचल से निकली नदियां पीलपांव. अपची,सूजन; शिररोग, पादरोग, गलरोग,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कंठरोग, गांठ और कृमिरोगको उत्पन्न करती है। पर्वतों से निकली गोदावरी, आदि नदियां कुष्ट रोगोत्पादक और वात कफनाशक हैं विन्ध्याचल से उत्पन्न हुई क्षिप्रा व नर्मदा आदि नदियां पाण्डु व कुष्टको उपजाती हैं तथा पारिपात्र पर्वत से निकली चम्बल आदि नदियां और जो पथ्य त्रिदोष नाशक और बलकारक हैं कन्दराओं से निकली नदियां मन्दाग्नि, कोढ, कफ और पीलपांव को करती है, पूर्व अवन्तिदेशकी नदियां गुदारोग को, करती हैं, मरुदेशसे निकली नदियां मीठी बलदायक हलकी तथा अग्निको प्रदीप्त करती हैं. पश्चिम समुद्रमें गिरनेवाली गोमती नर्मदा आदि नदियां पथ्य होकर वातरक्त व पित्तको हरती हैं, तथा बल को देती है और खुजली व कफ को हरती हैं, दक्षिण समुद्र में गिरती हुई नदियां बलकारक पित्त नाशक, और कफ वायु वर्द्धक हैं पृथ्वी से उपजे समस्त जलों का ग्रहण करना प्रात समय उत्तम कहा है, परन्तु निर्मल और शीतल जल बहुत उत्तम कहा है भोजन के आदि में पिया हुआ जल कृशता और मन्दाग्नि को उपजाता है। भोजन के मध्य में पिया हुआ मन्दाग्नि को प्रदीप्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करता है, भोजनके अन्तमें पिया हुवा जल मोटाई व कफ को करता है, जल ही सबका जीवन है, इस कारण जलको पंडित लोग कभी वर्जित नहीं करते कहीं गरम कहीं ठंडा, कहीं औटाया हुवा जल ग्रहण करे, अजीर्ण व आमरोगमें औटाहुआ जल दे, पके हुये अजीर्ण में निर्मल जल विदग्ध अजीर्णमें ठंडा जल लेने से दाह शान्त होता है, तथा अनूप देशको जलदोष कर्ता व कफोत्पादक निन्दित कहाता है, जांगल देशका जल सब दोषों को नाश करता है, और मन्दाग्निको जगाता है, साधारण देशका जल प्यासको नसाता और आनंद को देता हुवा हलका रहता है, बरसाती जल के स्नान से, नवीन जल के पीने से पत्ते आदिकों से बिगड़े हुये जलसे शरीरमें भीतर और बाहरी रोग प्रगट होजाते हैं तथा मैल कमल के पत्ते सिवार व तृणादिकोंसे अच्छादित व दुष्टगंधादिकों से दूषित जल सब दोषोंको कुपित करता है, बिना समय वर्षे हुये जलको त्याग दे, तथा लोहसे तपाया हुवा, सूर्य से तप्त बालू आदि से बुझाया हुवा व कपूर, केसर, पाटलादिकों से सुगंधित व निर्मल व सोने चांदी मोती आदिकों से युक्त ठंडा जल कभी दोषकारी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं होता है, औटाया हुआ फेनोंसे रहित, निर्मल जल त्रिदोष नाशक है मंदाग्नि प्रदीपक, पाचक, हलका है, गरम किया जल हलका अग्नि वर्द्धक है. और पसली.शूल, पीनस, अफरा. हिचकी, वात व कफको हर्ता है, जलानेसे चौथाई भागहीन जल वायुनाशक है,अर्द्ध भाग से हीन पित्तको हर्ता है, तीन भागों से हीन कफ को हर्ता मलको बांधता अग्नि को प्रदीप्त करता और हलका है, रात्रि में पिया हुवा गरम जल कफको नाश करता वायु को हर्ता, और अजीर्ण को शीघ्र ही जलाताहै चौथाई भाग शेषरहाजल ग्रीष्म व शरदऋतुमें उत्तम कहा है अर्द्ध भाग शेष रहा जल हेमंत, शिशर व वर्षामें भी श्रेष्ठ कहाहै गरम करके ठंडा किया हुवा जल सदैव पथ्य व हलका होने से तीनों दोषोंको हरता है, वही रात्रि भर धरा हुवा जल भारी व खट्टा होके त्रिदोष को करता है, दिन में गरम किया जल रात्रिमें भारी होजाता है,तथा रात्रि में गरम किया जल दिन में भारी हो जाता हैं, और दोषों को करता है।

६६ दूध–दुग्ध, क्षीर आदि इसके नाम हैं यह ठंडा मीठा बलकारी, बात पित्त को जीतता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चिकना है, रसायन है, बुद्धि को बढाता है, जीवनरूप होकर धातु बृद्धि करता हैं, रक्तरोग क्षयी, दमा, बवासीर भ्रम, और बिगडे चित्तको हरता है, भारी है, बालक बूढे, दुबले और स्त्रियासक्त पुरुष इन सबको दुग्ध हितकारी है।

६७ गायका दूध—गोदूध ठंडा है, मीठा है, भारी है, चिकना होके बुढाप को दूर करता है, धातु को बढाता है, स्तनों में दूध को उपजाता, जीवन रूप होकर बात पित्तको हरता है।

६८ बकरीका दूध—अजादुग्ध में गौदुध के समान गुण है, परन्तु यह हलका है, मलको बाँधता है, मन्दाग्निको जगाता है, क्षयी, बवासीर, अतीसार, भ्रम, ज्वर, और रुधिर विकार व नेत्रपीडाको हरताहै,

६९ भेडका दूध—मेषा दूध मीठा है चिकना होकर बात कफको नशाता हुवा भारी रहता है, बालोंको बढाता है, तथा बातकी खांसी को हरता है, केवल बात रोगों में यह उत्तम कहा है।

७० भैंसका दूध—महिषी दुग्ध मीठा है चिकना है भारी है, बलको करता है, नींद को लाता है, वीर्य को बढाता है, और आभष्यन्द (काविज) है, ठंडा है, अग्निको हरता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७१ स्त्रीका दूध-स्त्रीदुग्ध ठंडा है, हलका है, दीपन है, बात पित्तको जीते है, सूंघने से अर्थात् इसका नास लेने से नेत्र विकार दूर होजाता है।

७२ ऊँटणीका दूध–उष्ट्रीदुग्ध रूखा है बहुत गरम है, सलोना है, हलका है, वायु, कफ अफरा कृमि, उदररोग, सूजन, बवासीर इतने रोगों को हरता है, और दस्तावर होता है।

७३ हथिनीका दूध–मीठा बलकारी होकर नेत्रों को गुण करता है, भारी ठंडा, रूखा, सलोना, हलका और दीपन है, कुष्ट, कफ कृमि, अफरा और उदर रोगको हरता है।

७४ घोडीका दूध–गरम, रूखा, बलकारी वायु कफ हरता है, सूजनको दूर करता है एक खुर-वाले सब जीवों का दूध सलोना, खट्टा, हलका ह, धारका गरम दीपन, हलका, बल करता ठंडा और त्रिदोष नाशक है।

गायका धारोष्ण दूध गरम और अच्छा है, भैं-सका ज्यादा बलकारी है, औटा के ठंडा किया हुवा बकरी का दूध अच्छा है, पित्तको जीतता है, औटाकर गरम पीनेसे कफवायुका दोष शांत होता है, बहुत औटाया हुवा दूध भारी चिकना पुष्ट है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आमवात कारक, अभिष्यन्दी है, प्रातःसमय दूध पीना कबज करता है, भारी और पुष्ट है रात्रि समय दूध अधिक गुणकरी जानना, धूप से तपा हुआ दूध न पीवे, जिस दूध का रंग बिगड़ गया हो दुर्गन्धि आती हो खट्टा हो गया हो, लवण पड़ने से फट गया हो उसको न पीवे ऐसा दूध कुष्ट आदि रोगों को बढ़ाता है, दूध के ऊपर की मलाई को संतानिका कहते हैं यह ठंडी भारी, पुष्ट रक्त पित्त और वात विकार को दूर करती है, सात रात्रि का बासा दूध और लवण मिला दूध अच्छा नहीं होता है, तुरंत की व्याई गाय के दूध को पीयूषधन कहते हैं, पके दूध की जलन को दधि कूर्चिका कहते हैं।

बिना पकाये दूध को जमावे उसको किलाट कहते हैं सो ओज को बढ़ाता है नींद को हरता है, पुष्ट है, चित्त में बल को बढ़ाता है।

७५ दही–इसके दधि आदि नाम हैं और ३ भेद हैं खट्टा, मीठा, ज्यादा खट्टा, दही कसैला, चिकना, दीपन, गरम, भारी, पाक में खट्टा मल पित्तरक्त, सूजन, मेद और कफ को उपजाता है, सुजाक पीनस शीतज्वर, विषमज्वर, अतीसार अरुचि और कार्श्य (दुर्बलता) रोग में दही गुण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करता है, बल को बढ़ाता है, मन्दक दही त्रिदोष वद्धक है, मीठा दहा वात पित्त नाशक है खट्टा दही पित्तरक्त और कफ को करता ज्यादा खट्टा दही रक्तपित्त को उपजाता है।

७६ गाय का दही–गोदधि बल करता है, पचने के समय मीठा है भोजन से रुचि कराता है, दीपन है तर है, वायु को बिनाशता है।

७७ बकरी का दही–अजादधि अभिष्यन्दी है (काविज) है, हलका है, त्रिदोष को हरता है और दमा, खांसी, बवासीर और क्षया रोग को दूर करता है, दीपन है।

७८ भेड़ का दही–मेषादधि अभिष्यंदी है पचने के समय मीठा है,कफ और वायु को कुपित करता है, तथा सब दोषों को उपजाता है।

७९ भैंस का दही–महिषीदधि ज्यादा चिकना और कफकारी होके वात पित्त को हरता हुआ वाय को पुष्ट करता है, पचने के समय मीठा है, भारा है, रुधिर को दूषित करता है।

८० हथिना का दही–हस्तिनी दधि पचने में कड़ुवा और वीर्य में गरम है, अग्नि को नशाता है, पीछे से कषैले रस वाला होकर मल को बढ़ाता और कफ वायु को जीतता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८१ ऊँटनीका दही-पचने में कडुवा, भेदी, खट्टा खारी और उदर रोग, कुछ बवासीर शूल, वायु व कृमिरोग को दूर करता है।

८२ घोड़ी आदि का दही-घोड़ी आदि एक खुर वाले पशुओंका दही रूखा अभिष्यन्दी है, दोषोंको उपजाता है, मन्दाग्निको प्रदीप्त करता है मीठा है नेत्रको हितकारी है, बातोत्पादक है कफ और मूत्रको हरता है, गौका दही सबसे अच्छा होता है, कपडे से छाना दही बहुत चिकना बात नाशक कफ कारक, भारी बलकर्ता, रुचि उत्पादक है, मीठा होने से पित्त को बहुत नहीं करता है, पकाये दूधका दही रुचि दायक व चिकना होकर उत्तम गुणों को धारण करता है, मलाई रहित दही मलको बांधता है, कषैला है, वायु को उपजाता है और हलका व दाह नाशक विष्टम्भी, दीपन, रोचक, ग्रहणी रोग को हरता है खांड मिला दही तृषा, पित्त रक्त व दाह को नशाता है, गुड़ मिला दही भारी है, हवाको हरता है, पुरुषार्थ को प्रगट करता और तृप्ति करता है बसन्त ग्रीष्म और शरद में दही का खाना अच्छा नहीं जानना, हेमंत शिशिर और वर्षा में दही का खाना अच्छा है, तथा सुजाक, अरुचि, दुबलापन, शीतांग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषमज्वर, अतिसार, श्लेष्मा (जुखा) इन रोगों में दही का खाना दिन के समय अच्छा है, रात्रि के समय दही खाना हो तो दूध और घी मिला हुआ खाना उत्तम है।

८३ छाछ—यह मलको बांधती है कषैली गरम, खट्टी, मदाग्नि प्रदीपक है हलकी है बलदायक है रूखी है, तृप्तिकारी होकर बातको हरती है, कृत्रिमविष, सूजन, छर्दि, विषमज्वर, प्रसेक, पांडु, संग्रहणी, मेद, मन्दाग्नि बवासीर, मूत्रावरोध, प्रमेह, गोला, भगन्दर, बातरोग तापतिल्ली, शूल, कफ, कृमिरोग, सफेद कोढ उदर रोग प्यास, अपची इन को दूर करती है, गरमी के समय, आश्विन और कार्तिक में दुर्बल शरीर होने पर भ्रम, मूर्छा, पित्त रक्त, मद, शोथ इन रोगों में मठा, कभी अच्छा नहीं होता है, मीठा तक्र सब प्रकार के बात पित्त को हरता और कफको करता है, खट्टा तक बात हारी होकर रक्त पित्तको कुपित करता है, सेंधालवण मिला मठा पित्त में हित है, सोंठ, मिर्च, पीपरि जवाखार मिला मठा गुण करता है, जैसे गुण जिसके दही में हैं वैसे गुण उसके मठा में जानना।

८४ माखन—नवनीत आदि इसके नाम है यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हलका है, मलको बांधता है, तुरन्तका माखन ठंडा है, काविज है, कषैला है, बुद्धिको बढाता है, मीठा है पुष्ट है, अग्निको प्रदीप्त करता है, नेत्रों को हित है, पित्त और वायुको हरता है, क्षयी, बवासीर, फोडा और खांसी को दूर करता है, देरका निकला माखन भारी है कफको करता है, सूजन को दूर करता है वीर्य व बल को बढाता है, बलकोंको अमृतके समान है, दूध से निकाला माखन बहुत चिकना होनेसे नेत्रोंको गुण करता है, रक्त पित्त को जीतता है, वीर्य को पुष्ट करता है, बलको धरण करता है, मलको बांधता है, मीठा है और बहुत ठंडा रहता है।

८५ घी-घृत, आल्य आदि इसके नाम हैं यह रसायन, मीठा, भारी, नेत्ररोग को हारक, मंदाग्निको प्रदीप्त करताहै, ठंडा होके वीर्यको बढाताहै, बातपित्त व हवाको विनाशताहै, काविजहैं, कान्ति, ओज, तेज सुन्दरता व बुद्धिकी बृद्धि करता हैं, और उदावर्त उन्माद, शूल, ज्वर अफरा व ब्रणरोगको हरता हैं, घावोंको जीतता हैं, चिकना हैं, कफकारी हैं, रूखा होकर क्षयी विसर्प व लोहूको हरताहैं, बिगडे स्वर को सुधारता, बाल बृद्ध जनों को बल देने वाला होता हैं, दूधसे निकाला घी ठंडा व ग्राही होने से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नेत्र रोग नाशक है, और पित्त, दाह, रक्त, मद भ्रम मूर्छा और वायुको दूर करता है, पुराना घी पाक में कडुआ होकर त्रिदोष को नाश करता है और कुष्ट रोग, कर्ण रोग, शिरशूल, मृगी और सूजन को जीतता है, तथा ज्वर, दमा योनि रोग गोला बवासीर, कुष्ट और पीनस रोग को दूर करता है, मन्दाग्निको प्रज्वलित करताहै, वस्तिकर्म नस्यकर्म में उत्तम कहा है, दशवर्ष के घी को कौम्भ कहते है, यह हलका है राक्षस दोषों को दूर करता है, गुणों में परमोत्तम होने से महाघृत कहाता है, घी के गुण व दोष दूधके समान कहे है, सब घृतों में गौका घी सबसे उत्तम है, और भेड का घी निन्दित माना गया है ।

८६ तेल-तेल भारी है, गरम है, पुष्ट है, बल और रंगको बढाता है विशद, विकाशी है, पचने के समय मीठा, कषैला, कफ हवा को हरता है, रक्त पित्त कर्णपीडा, शिर व नेत्र रोगको दूर करता है, मथा हुआ तेल टूटेको जोड़ता है, विषको हरता है घाव को अग्निसे जलेको पथ्य है, पका वा बिना पका तेल पुराना होने से भी गुण करे है ।

८७ अंडीका तेल–एरण्ड तेल गरम हैं, दीपनहै, मीठा है, शोधन है, उदररोग, हवा, अफरा, गोला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अष्टीला, सूजन, शूल, आम, विद्रधि, इनको नाश करता है, रुचि उपजाता है, बुद्धि, कान्ति और बल को बढ़ाता है, वीर्य को शुद्ध करता है।

८८ कडुआ तेल—सरसों और लाही का तेल विशेष करके कटु तेल कहाता है, यह कृमि रोग को दूर करता है, खुजली को दूर करता है, तेज है, गरम है, हलका है, कुष्ट, कर्ण, शिर रोग कफ प्रमेह और मूर्च्छा को दूर करता है।

८९—नीम आदि का तेल—नीम का तेल कुष्ट, घाव, ज्वर, कफ और कृमिरोग को जीतता है, अलसी का तेल चिकना है, गरम है, अग्निरूप है, कफ पित्त को हरता है, नेत्रों को हितकारी है। माल कांगनी का तेल पित्तकारक है, बुद्धि और स्मृति को बढ़ाता है। कुसुम का तेल कडुवा: नेत्रों को औगुण करता, वादी को हरता है, त्रिदोष-नाशक है। नारियल का तेल पित्त बात को हरता, बालों को बढ़ाता है, कफ को करता है, ठंडा है, भारी है। तिल का तेल ठंडा हलका है, त्रिदोष हरता है शीशम आदि का तेल भारी है, सरल है, कसैला है, बात रोगों को हरता है, तेज है कुष्ठ व फोड़े को दूर करता है, बातरक्त विष, कफ, खुजली को हरता है, भिलावा का तेल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गरम है, कसैला है, मीठा है, तेज है, कुष्ठ, रक्त, प्रमेह, कृमि और त्रिदोष का नाश करता है ढाक, महुआ आदि का तेल कसैला है, मीठा है, दाह, पित्त कफ को दूर करता है, बादाम का तेल गरम है, भारी है. शीत वात को शान्त करता है यह संक्षेप से थोड़े तेलों का गुण लिखा है।

९० मदिरा—मद्य आदि इसके नाम है यह पित्त को करे है, फैलने वाली होकर रुचि को उपजावै है, दाप और मन्दाग्नि को प्रदीप्त करे है, मल मूत्र को उपजावे है, तीखी होकर वायु और कफ को विनाशे है, अन्न से युक्त विधि पूर्वक पी हुई मदिरा अमृत के समान होवे है. पान की हुई मदिरा अनेक रोगों को उपजावे है, बहुत पी हुइ मदिरा विष के समान गुण को करे है।

अंगूर की मदिरा विदाही नहीं है, रक्त पित्त के विकार को दूर करे है, लोहू व बवासीर को शांत करे है, महुवे की मदिरा में अंगूर की मदिरा से कुछ कमती गुण हैं. खजूर की मदिरा बादी है एवं अन्य मदिरायें हैं विस्तार भय से उन सबके गुण नहीं लिखे, औषधि के समान इसको बर्तें।

९१ कांजी—कांजिक आदि इसके नाम हैं, यह ठण्डे स्पर्श वाली हैं, रोचक हैं, हलकी हैं, विनाभूसी के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कच्चे जवोंसे बनाई कांजीको सौवीर कहते हैं. यह हृदयको हितकरती मन्दाग्निको जगाती. पांडु और कृमि रोगको हरती है, संग्रहणी व बवासीर को दूर करती है, कुल्ला करने से मुख की विरसता और दुर्गंधिता दूर होती है, कफ का नाश होता है।

९२—गौ आदिका मूत्र—गौ, हाथी, भैंसा, बकरी भेड़, गर्दभ, ऊँट, घोड़ा इनका मूत्र पाचक है, मंदाग्नि प्रदीपक, हलका, पित्तोत्पादक नाडियों के स्रोतों को शोधता है. वायुगोला, बवासीर, सूजन, उदर रोग, कफरोग, कृमिरोग, कुष्टरोग पांडु, अफरा, विष, शूल और अरुचिको हरताहै सबमें गौमूत्र श्रेष्ठ है गौमूत्र पीने और लगाने आदि के काम में लावे शेष मूत्र लगाने के काम में लावे।

९३ ईख—इक्षु आदि इसके नामहैं. यह भारी है, मीठी, ठंडी, चिकनी, बलवर्द्धक, बात पित्तकारक, मूत्र, कृमि और कफ को उपजाता है।

९४ राव—मत्स्यण्डी, सिता आदि इसके नाम हैं यह बलको करती है, मल को बांधती है भारी है पित्त और वादी को शान्त करती है।

९५ गुड़—यह गरम है. गुदा के रोगों को कम्ल बात, प्रमेह. गोला, पांडु. हलीमक, राजयक्ष्मा बात

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पित्तको हरे हैं, दस्तावरहै, मूत्र व लोहू को शोधे है।

९६ मिश्री–सितोपला, सहा इसके यह दो नाम हैं, यह ठंडी है, भारी है, बातपित्त को हरती हैं पुष्टि को उपजाती है।

९७ शक्कर–इसके सिता आदि नाम हैं यह भारी है, हृदयको हित करे है रक्त पितको हरे है।

९८ शहत–मधु और माक्षिक आदि इसके नाम हैं यह चार प्रकारका होता है तेलके समान शहत को माक्षिक कहते हैं, घीके समान शहतको पैत्तिक कपिल रंगके शहतको क्षौद्र, और स्फटिकमणि के समान चमकीले शहतको भ्रामर कहते हैं, यह ठंडा है, हलका है, भारी है. मलको बांधता है, नेत्रोंको हितकारी है, मंदाग्निको प्रज्वलित करता है, बिगड़े स्वरको सुधारता घावोंकोशोधता, वर्णको निखारता बुद्धिको बढ़ाता, पुरुषार्थको जगाता, रोचक होकर कोढ खांसी, बवासीर, पित्तरक्त, कफ, प्रमेह, ग्लानि और कृमियों को हरता है, तथा मद. प्यास दमा हिचकी, वमन, अतीसार, हृदयरोग, दाह, क्षत, क्षय और रुधिर विकारको जीतता है, योगवाही, वातोत्पादक है माक्षिक नाम वाला शहत उत्तम कहा है, यह नेत्र रोगों को हरता है. हलका है. पैत्तिक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शहत रूखा, गरम दाह, पित्त और रक्तवात कारक है, क्षौद्रमें माक्षिकके समान गुण है, क्षौद्र शहत प्रमेह को दूर करता है, भ्रमर रक्त पित्तको हरता, मूत्र और जडताको करता है और भारी है नवीन शहत अभिष्यन्दी और चिकना है कफको हरता है, दस्तावर है, पुराना शहत हलका ग्राही, लेखन, भेदरोग को हरता है, विषयुक्त फूलों के रसका शहत तथा घाममें तपाया हुआ शहद भी विष समान जानना, अग्नि से पकाया शहद योनिरोग को हरता है, वमन में शहद को गरम करके न दे, गरमी के समय और गरम देश में शहद को गरम औषधियों से युक्त कर ग्रहण करे।

९९ मौम–मदन, मधुज आदि इसके नाम हैं, यह ज्यादा चिकना है, कोमल है घावों पर अंकुरो को लाता, टूटे को जोड़ता है और कुष्ट, वात, विसर्प, रक्तरोग को दूर करता है।

१०० लाल चांवल–इसको शालि कहते हैं साठी आदि चाँवलों को व्रीही कहते हैं, मूंग आदिको वदैल व शैल कहते हैं. ककुनी आदिकों को तृण-धान्य, क्षुद्राधान्य और कुधान्य भी कहते हैं, यव आदिकों को शूकधान्य कहते हैं, यही धान्य पंचक हैं सो कहा भी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शालिधान्यं व्रीहि धान्यं शूकधान्यं तृतीयकम् ।
शिम्बीधान्यंक्षुद्रधान्यं मित्युक्तं धान्यं पंचकम् ॥१॥

शालि चावल, मीठा चिकना, बलकारी मलको बांधता है, मूत्रको उपजाता है हलका ठंडा अल्प-वात और कफवाला है, लालशाली त्रिदोष नाशक नेत्रों को हित बिगड़े स्वर को सुधारे है, वीर्य को प्रगट करे है, प्यास और ज्वर को हरे है।

१०१ साठी चावल–कर्मुक आदि नाम इसके हैं यह हलका मीठा ठंडा, मलको बांधता है, बात पित्तको शांत करता है, त्रिदोष को जीतता है, पाकमें मीठाहै, बलको बढाता है।

१०२ गेहूँ–गोधूम आदि इसके नाम हैं, यह ठंडा भारी, मीठा है, बातपित्तको हरता है, कफ व वीर्य को बढाता है, बलदायक और चिकना है, टूटे हुये को जोडता है, दस्तावर है, धातुको बढाता और वर्णको निखारता है, रुचिको उपजाता है, मोटे गेंहूँ से छोटे गेहूँ में गुण कम हैं।

१०३ जौ–यव आदि इसके नाम हैं, यह मीठा, कषैला है ठंडा होने से पित्त, कफ व लोहू को जीतता है तिलों के समान रूखा है, फोड़े में पथ्य है बुद्धि और जठर की अग्नि को बढाता है, लेखन है, बिगड़े स्वर को सुधारता है, बात व

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मल को धारता है, प्रमेह व प्यास को हरता है वर्णको करता है।

१०४ मूंग-बनमूंग—मुद्गवान मुद्ग आदि इसके नाम हैं यह ठंडी रूखी हलकी काबिज है, कफ पित्तको हरती है, नेत्रों के लिये हित है, विगडे वर्णको सुधारती है, हरीमूंग बहुत उत्तम होती है। शीघ्र पचती है, मसाला आदि के योग्य से मूंग की दाल गरमतर हो जाती है।

१०५ उडद—माष आदि इसके नाम हैं यह गरम है भारी है, मीठा है, चिकना है, पुरुषार्थ को बढाता है, वायुको हरता है, धातुको बढाता है, पित्त व कफ को करता है, गुदकील, दमा, लकवा और शूलको बिनाशता है।

१०८ लोविया—राजमाष इसका नाम है, यह रूखा है कषैला है स्वादिष्ट है, हलका है, मलको बांधता है, वात, कफ दृध अधिक मल और लोहू को बढाता है।

१०७ मसूर—मसूरिका आदि इसके नाम हैं, यह वादी है भारी है, ज्वर, छर्दिको जीते है, मलको बांधे है, कफ पित्तको हरे है, ठंडा है।

१०८ मौठ -मटरमास. निष्पाव इसका नाम हैं, यह बिदाही, गरम, भारी है पित्त रक्त मूत्र वायु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व दूध को उपजावे है, कफ व सूजन को करे है, वीर्य को विनाशे है।

१०९ मटर-वर्तुल आदि इसके नाम हैं कविज है कफ पित्तको हरती है, हलकी, पाकमें मीठी, रूखी है।

११० चटरी-कलाय आदि इसके नाम हैं, यह कफ पित्त नाशक, ठंडी, मल बंधक वातोत्पादक हैं।

१११ चना-चणक आदि इसके नाम हैं, यह ठंडा रूखा हलका, वादी है, पित्त लोहू व कफको हरे है वायु को उपजाता और कोढ को दूर करता है।

११२ कुलथी-कुलत्थ आदि इसके नाम हैं यह पचने में कडवी है, कषैली है, रक्त पित्तको दूर करती है, हलकी है, दादकारिणी व वीर्य में गरम होकर कफ, वायु खांसी, हिचकी, पथरी, अफरा, नेत्ररोग व विषको नाश करती है।

११३ तिल-तेलफल आदि इसके नाम हैं यह कषैला है, तीखा है, मीठा है, रसमें कडुवा होनेसे मलको बाँधता है, भारी है, चिकना है, रक्त कफ व पित्तको उपजाता है, बालों को बढ़ाता है, घावों को अच्छा करता है, बन्यतिल मन्दाग्नि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को जगाता है, कालेतिल तिलों में उत्तम हैं सफेद तिल मध्यम, लाल तिल स्वल्प गुण वाले कहे हैं।

११४ अरहर—आढकी आदि इसके नाम हैं, यह हलकी है, ठंडी है, मल को बाँधती है, कफ, विष व रक्त रोग को जीतती है।

११५ अलसी—अलसी आदि इसके नाम हैं, यह वीर्य व दृष्टिको विनाशती है बातरक्त को जीतती है, भारी है।

११६ सरसों—सर्षप आदि इसके नाम हैं, यह कफ बात हारी तीखा व गरम होकर रक्तपित्त को करे हैं और खुजली कोढ, कृमिरोग को दूर करे है।

११७ राई—राजिका आदि इसके नाम हैं, यह तीखी है, तीव्र है, इसमें गुण सरसों के समान है।

११८ कुसुम—कुसुम्भ आदि इसके नाम हैं, यह बातको उपजाता है, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त व कफ को हरता है, इसके बीज में अलसी के समान गुण हैं और विष को दूर करता है।

११९ सन—शण आदि इसके नाम हैं, यह ठंडा है, भारी है, मल को बांधता है, इसका फूल प्रदर रोग व रक्त रोग को जीतता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१२० तिन्नी–नीवार आदि इसके नाम हैं, यह ठंडी है, ग्राही है, पित्त को हरे है कफ वायु को उपजावे है।

१२१ ज्वार–यावनाल आदि इसके नाम हैं, यह ठण्डी है, मीठी है, बादी को उपजाती है, कफ और पित्त को जीतती है।

१२२ गोहुआ–गवेधुका आदि इसके नाम हैं, यह कडुआ, मीठा, कफ को हरता है, दुबला करता है।

१२३ काकुनि–प्रियंगु आदि नाम हैं, यह हलकी रूखी, गरम है। बात पित्त को बिगाडती है।

१२४ कोदों–कोद्रव आदि नाम हैं, यह पुष्ट, ठंडा भारी, टूटे को जोड़े है, पित्त को जीते है।

१२५ श्याम–श्यामाक आदि नाम हैं, यह शोषक ठंडा, रूखा, पित्त और कफ को हरता है।

एवं मंडुआ, झरुआ आदि तृण धान्य भी रूक्ष हलके, ठंडे, कफ, पित्तको हरने वाले हैं, बिना समय भूमि से अन्य स्थान में उत्पन्न नवीन व कीड़े आदि से युक्त जो अन्न होता है वह गुणकारी नहीं है और नया अन्न अभिष्यन्दी भारी, मीठा, कफ को करता है एक वर्ष के पीछे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सब धान्य भारीपन को त्याग देते हैं, परन्तु अपने अपने वीर्य को नहीं त्यागते हैं, वरन क्रम से दो वर्ष के पीछे वीर्य को त्याग देते हैं और इनमें भी जौ गेहूँ, तिल, उड़द ये ही हितकारी होते हैं, तथा पुराने विरस व रूखे होकर यथार्थ गुणको नहीं करते ।

दो०-यह पंचम अधिकार वर, नारायण मनलाय ।
गुणयुत द्रव्य निघंटु यह, लिख्यों सुअवसर पाय १

चतुर्थ भाग समाप्ति समय ।

सम्वत् वाणरसांकशशि १९६५ विक्रम जेष्ठ सुमास ॥
कृष्ण नवमि रविवार में पूर्यो चित्त हुलास ॥
नारायण अत्तिप्रेमसों लिख्यो ग्रन्थ मनलाय ॥
कृष्णलाल हित बम्बई भेज्यों मोद बढाय ॥३॥
श्रीरसराज महोदधि, लिख्यो ग्रन्थ सुविचारि ॥
भूलचूक जो होय कछु लेहें सुजन सुधारि ॥४॥

इति श्री मज्ज्योतिर्वित्पंडित नारायण प्रसाद लिखित
रसराज महोदधि भाषायां चतुर्थभागे द्रव्यगुण
(निघंटु) वर्णनं नाम पंचमाधिकारः ५

॥ इति श्री रसराज महोदधि चतुर्थ भाग समाप्त ॥ ४ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीहरिः ॥

रसराज महोदधि

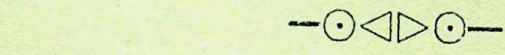

पाँचवाँ भाग

जिसको –

लखीमपुर निवासी पं० नारायणप्रसाद सीताराम मिश्र ने

अनेक ग्रन्थों के अधार से बनाया ।

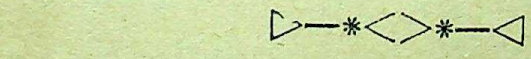

उसको—

किशनलाल द्वारकाप्रसाद ने अपने

बम्बई भूषण यन्त्रालय में छापकर

प्रकाशित किया ।

———

सर्वाधिकार सुरक्षित है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्री ॥

रसराज महोदधि के

पाँचवे भाग की

अनुक्रमणिका।

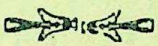

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
रोग निर्णय	१	योनि का तीक्ष्ण वरम	२८
उदर परीक्षा	५	प्रदर रोग	३०
दर्शन	६	योनि मुख प्रदर	३५
अनुभव	६	बाल प्रदर	३५
स्तन परीक्षा	८	योनि प्रदर	३६
स्तनों की आकृति	८	रक्त प्रदर	४०
बाह्य जननेन्द्रिय व भगपरीक्षा	९	योनि भ्रंश	४१
तर्जनी प्रवेश परीक्षा	११	पेडू के भीतर का वरम	४३
दर्शक यन्त्र द्वारा परीक्षा	१२	पैलाविक हिमाटोसील	४५
योनिरोग योनिकंडु	१३	पैलविक हिमाटोसील के लक्षण	४६
कंडू चिकित्सा	१५	हिमाटोसील की चिकित्सा	४७
योनि मुख ग्रन्थी	१७	आर्तव और उसके दोष	५०
योनि मुख शोथ	१७	नष्टार्तव ऐमेनोटियां)	५४
योनि का कैन्सर	२२	गुप्तार्त्तव	५५
योनि लिंग	२२	नष्टार्त्तव के कारणों का श्रेणी विभाग	५९
गुदास्थिशूल (कोन्सी गोडिनियाँ)	२३	नष्टार्त्तव का लक्षण	६१
मूत्र मार्ग की व्याधि	२४	नष्टार्त्तव की चिकित्सा	६२
मूत्रमार्ग का वरम	२४	अन्य डाक्टरों का मत	७१
अश्मरी अथवा पथरी	२५	पीड़ितार्त्तव	७७
योनि मार्ग का रोग	२५	वरम से पीड़ितार्त्तव	८१
योनिहर्ष (स्पर्शासहयोगिनी)	२७		

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
लक्षण	८२
इलाज	८३
न्यूरेलजिया डिसमैनोरिया	८७
कनजैस्टिव डिसमैनोरिया	८६
ओव्सट्राकटिव डिसमैनोरिया	६१
डिसमैनोरिया को चिकित्सा	६६
अति आर्त्तव	१००
अति आर्त्तव का कारण	१०१
अति आर्त्तव के लक्षण	१०१
अति आर्तवकी चिकित्सा	१०२
अन्य डाक्टरों का मत	१०४
उक्त रोग के कारण	१०४
बाईकेरियस मेन्सटरूएशन	११०
ऋतुकालकेअवसानकीपीड़ा	११५
मिथ्या गर्भ	११७
गर्भाशय का वरम	११८
गर्भाशय का प्रदर	११६
लक्षण	१२०
चिकित्सा	१२१
जरायु का तरुण प्रदाह	१२४
प्रदाह की उत्पत्ति	१२५
लक्षण	१२५
चिकित्सा	१२८
क्रोनिक सारवाईकैल एन्ड मैट्रीटिस इरोशन	१३२
लक्षण	१३५
चिकित्सा	१३८
औपदंशिक घाव	१४५
क्रौनिक एन्डो मैट्राइटिस	१४३
लक्षण	१४७
चिकित्सा	१४६
लगाने की दवा	१५०
अलसर औफ अ	१५०
चिकित्सा	१५२
गर्भाशय अर्बुद	१५३
उपाय	१५५
गर्भाशय ग्रंथि	१५६
लक्षण	१५७
चिकित्सा	१५८
गर्भाशय अर्श	१५८
लक्षण	१५६
गर्भस्थान की रसौली	१५६
उपाय	१६०
गर्भाशय स्थलांतर	१६०
गर्भाशय भ्रंश	१६०
लक्षण	१६१
गर्भाशय का बांकपन	१६३
कारण	१६४
लक्षण	१६४
चिकित्सा	१६५
गर्भाशय विवृत	२६६
लक्षण	१६७
उपाय	,,
स्त्री अंड की व्याधि	,,
लक्षण	१६८
उपाय	

* इति *

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीः ॥

वैद्यकग्रन्थ

रसराज महोदधि भाषा प्रारंभः

पंचम-भाग।

स्त्री रोग चिकित्सा

इस ग्रंथ में स्त्रियों के होने वाले मुख्य मुख्य रोगों का वर्णन किया जायगा प्रथम ही इस बात पर विचार करना चाहिए कि कोमलांगी स्त्रियों के जितने रोग होते हैं उनमें से प्रायः बहुत से सांसारिक कुकृत्यों से हुआ करते हैं। एक तो हमारे यहां बाल बिवाह का ऐसा पचड़ा लगा हुआ है जिसके कारण बहुत से रोग उत्पन्न होजाते हैं, यदि बाल बिवाह की कुप्रथा किसी कारण से दूर होजाय तो स्त्रियों के बहुत से दुख दायक रोग अपने आपही पास न आवें। इसलिए इसका रोकना अत्यन्त आवश्यकीय है।

रोग निर्णय।

रोग का निर्णय हुए बिना प्रकृति चिकित्सा का होना महा कठिन है, चिकित्सा प्रारम्भ करने से पहिले बहुत सावधानी से रोग का निणय करना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चिकित्सक का सर्व प्रधान कर्तव्य है, जहां तक हो सके रोगिणी को लज्जा और संभ्रम की रक्षा करना उचित है, इस पर ध्यान रखते हुए रोगिणी की जैसी चाहिये वैसी परीक्षा द्वारा रोग का निर्णय किये बिना कदापि चिकित्सा करना आरम्भ न करे यदि चिकित्सा करने लग जाय तो सफलता मिलना कठिन है।

रोग निर्णय के आवश्यकीय उपायों के अतिरिक्त परीक्षा करना अत्यन्त आवश्यकीय है। रोग का संपूर्ण विवरण सुनकर तुम्हारे मन में यह हो कि योनि की परीक्षा के बिना रोग का मूल कारण ज्ञात नहीं हो सकता है, तो रोगिणी स्त्री से अथवा उसके रक्षक से स्पष्ट शब्दों में सब बात कह दे, यदि उनको स्वीकार न हो तो चिकित्सा ही न करें।

प्रथम रोगिणी से उसके रोग के संबन्ध में प्रश्न कर करके सब बातों को जान ले, फिर रोगिणी की परीक्षा करे। इस तरह रोग का विवरण अच्छी तरह जान लेने पर नीचे लिखे विषयों का जान लेना परमावश्यकीय है।

(१) रोगिणी की अवस्था कितनी है (२) वह सधवा, विधवा अथवा कुमारी है (३) संतान हुई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है या नहीं। (४) यदि सन्तान हुई है तो कितनी हुई हैं। (५) सब से पिछली संतान की अवस्था कितनी है। (६) जो सन्तान न हुई होय तो विवाह हुए कितने दिन हुए। (७) कभी गर्भस्राव हुआ है या नहीं।

तत्पश्चात रोगिणी से उसकी व्याधि के संबंध में प्रश्न करना चाहिए। उत्तर में रोगिणी अपनी व्याधि के प्रधान लक्षणों को कहे, जैसे वेदना, स्राव, रक्तस्राव आदि। फिर उस प्रधान लक्षण के संबन्ध में विशेष रूप से अनुसंधान करे। यदि कोई प्रधान लक्षण वाली वेदना हो तो स्त्री को उचित है कि ठीक स्थान पर अंगुली रख कर दिखा देवे।

वेदना की सूरत कैसी है, वेदना कभी २ होती है अथवा सदा होती रहती है। वेदना सामान्य है व असह्य है। वेदना से उपस्थित होने पर रोगिणी को निद्रा आती है व नहीं। वेदना के वक्त वमन अथवा पसीना होता है व नहीं। रोगिणा कोई ऐसा उपाय जानती है व नहीं कि जिससे वेदना में न्यूनता व अधिक्रता हो। कितने दिन से वेदना होती है और वेदना का आरंभ किस रूप में हुआ है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐसे प्रश्नों के द्वारा प्रधान उपद्रव के सम्बन्ध में जहां तक निर्णय हो सकता हो करे। पश्चात रोगिणा को जननेन्द्रिय के संबन्ध में प्रश्न करे। (१) रोगिणी मासिक धर्म से होती है व नहीं (२) हर महिने में ऋतु नियमित समय पर होता है व नहीं। (३) रजः स्राव अधिक होता है व कम (४) स्राव के साथ दर्द होता व नहीं स्राव के दिन रहता है। (५) वेदना किस रूप में होती है। (६) रोगिणी प्रथम ही कितनी वयस में ऋतुमती हुई। (७) ऋतु सदा एक रूप में हुआ है व बीच में कोई परिवर्तन हुआ है परिवर्तन हुए कितने दिन हुए हैं और परिवर्तन किस रूप में हुआ है। (६) दो ऋतुकाल के मध्यवर्ती समय में रोगिणी की दशा कैसी हो जाती है, उस समय में किसी प्रकार का स्राव होता है व नहीं। (१०) रोगिणी को पेशाव करने में कष्ट होता है व नहीं। (११) पेशाव बहुत बार होता है व नहीं। (१२) पेशाव के साथ रुधिर का मिलाप होता है व नहीं (१३) रोगिणी का कोष्ठ शुद्ध है या नहीं। दस्त के समय कोई कष्ट होता है व नहीं। मल के साथ रुधिर पीव आदि मिला हुआ आता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वा नहीं। जननेन्द्रिय के ऊपर के भाग में कहीं फुलावट, घाव वा दर्द होता है वा नहीं।

तत्पश्चात् रोगिणी के साधारण स्वास्थ्य के संबंध में प्रश्न करना चाहिये (१) क्षुधा लगती है वा नहीं (२) भोजनके पीछे पेट फूलना, कलेजे में जलन, वेदना अथवा वमन होते हैं वा नहीं (३) नींद आती है वा नहीं। (४) शरीर दुर्बल तो नहीं होगया है। (५) खांसी, हफहफी, धड़कन होती है वा नहीं (६) पांवों में सूजन है कि नहीं?

उदर परीक्षा।

उदर रोग के निर्णय करने का एक प्रधान उपाय है इसके द्वारा रोग के संबंध में अनेकानेक ठीक बातें मालूम होजाती हैं। उदर परीक्षामें किसी प्रकारसे लज्जा शीलता का व्याघात नहीं होता है इसलिये रोगिणी इस बातको सहज ही स्वीकार कर लेती है। जो चिकित्सक उदर परीक्षा करने में विशेष पारदर्शी हो तो किसी किसी जगह योनि परीक्षा के बिना ही रोग का निर्णय हो सकता है, इसलिये उदर परीक्षा में प्रत्येक चिकित्सक को विशेष रूप से मनोयोग करना चाहिये।

नीचे लिखे उपायों से उदर की परीक्षा होती है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दर्शन, अनुभव, परकशन, तथा स्टेथिककोप के योग से वा श्रवण से।

दर्शन।

नीचे लिखे हुए विषयों की जांच अच्छी तरह करना चाहिये (उदर का आकार—स्वाभाविक से बड़ा है वा नहीं। (२) उदर का पसवाड़ा या मध्यभाग अधिक फूला हुआ है वा नहीं (३) नाभि भागकी अवस्था—नाभि ठीक बीच में है वा नहीं अथवा किसी एक तरफ को सरक गई है। (४) नाभि स्वाभाविक नीची दशा में है, उदर में कोई बड़ा अबुर्द अथवा अधिक जल जमा हुआ तो मालूम नहीं होता है। उदर में विशेष करके नाभि और प्यूविकसंधि के बीचके भाग में किसी प्रकार का रंगमें अन्तर है वा नहीं। पेटमें साधारण दाग है वा नहीं। किस कारण से पेट के अधिक फूल जाने से तदाकार त्वचा फटकर ऐसे दाग उत्पन्न हुए हैं। साधारणतया गर्भ से पीछे ऐसे दाग दृष्टि गत होते हैं। उदर के ऊपर वाली शिराऐं अधिक फूली हुई और मोटी हैं वा नही।

अनुभव।

दोनों हाथों से उदर के समस्त भाग को विशेष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सावधानी और धीरता से अनुभव करना चाहिये। हठात अधिक जोर से दवाने पर उदर की सब मांस पेशियां सुकड जाती हैं इससे अच्छी तरह परीक्षा नहीं हो सकती। ऐसा करने से रोगिणी को भय और कष्ट होता है। इसलिये धीरज से काम लेना चाहिये इन उपायों से नीचे लिखी बातों का ज्ञान हो जायगा।

(१) उदरस्थ रैक्टस नामक दोनों मांस पेशी एक दूसरे से अलग हैं या नही। किस कारण से उदर अधिक फूल जाने से ऐसी घटना की संभावना हुई हैं। रोगिणी को आधी उठी हुई अवस्था में बैठावे, इस तरह बैठाने से हाथों द्वारा अनुभव करे कि रैक्टस मांस पेशियों के बीच में अन्तर हैं वा नहीं।

(२) उदर में कोई स्थान वेदना युक्त हैं वा नहीं। धीरे छूने से वेदना होती हैं वा जोर से दावने पर वेदना होती हैं।

(३) उदर का कोई सा भाग अस्वाभाविक रूप में फूला है या नहीं अथवा किसी तरह का अर्बुदया ट्यूमर है वा नहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्तन परीक्षा।

रोगिणी गर्भवती है वा उसके पेट में अर्बुद होगया है, चिकित्सक को इस प्रश्न की मीमांसा कितनी ही बार करनी पडती है। गर्भ के कितने ही लक्षण स्तनों से मिलते हैं इसलिये सन्देह की जगह स्तनोंकी परीक्षा करना उचित है इससे रोग का यथार्थ निर्णय करने में बड़ी सहायता मिलती है स्तनों की परीक्षा के समय नीचे लिखे हुए विषयों पर विशेष दृष्टि रखना चाहिये।

स्तनों की आकृति।

स्तनों का बडे, तलतल अथवा शुष्क तथा लटकना स्तन दो ही कारणसे बडे वा तलतल होते हैं (१) स्तन में अधिक मेद का सञ्चार हो (२) स्तन के दोनों कोषमें यथार्थ बृद्धि हो यदि पिछले कारण से बृद्धि हो तो ऐसा होने पर स्तन को हाथ से दबाने पर उसके भीतर कठोर गांठ के समान कोई वस्तु अनुभव होगी। गर्भ के संचारित होने पर स्तनकोष की ऐसी ही यथार्थ बृद्धि हुआ करती है।

स्तनों के ऊपर त्वचा फट जाने के दाग हैं वा नहीं। चूचुक (स्तन का अग्र भाग) उत्तम रूप से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गठित है वा नहीं। इन चूचुकों के चारों ओर की त्वचा काले रंग की हो गई है वा नहीं। यह भी गर्भ की एक पहचान हैं। स्तनों के ऊपर फूली हुए शिराओं का जाल दिखाई देता है वा नहीं। जो गर्भ होता है तो ऐसी नसें दिखाई पडती है।

स्तनों के दवाने पर दूध अथवा जल के समान रस निकलता है वा नहीं। गर्भ है या नहीं ऐसे सन्देह की जगह स्तनसे दूध निकलना गर्भ रहने का लक्षण हैं।

वाह्य जननेन्द्रिय वा भगपरीक्षा।

योनिकी परीक्षा करने से पहिले वाह्य जननेन्द्रिय व भगकी परीक्षा करना उचित है।

भगको परीक्षा करने के समय दोनों हाथों की उंगलियों से भगोष्ट वा दोनों लेबिया को खोल कर भगपरीक्षाक यंत्रको प्रवेश करे। रोगिणी को इस रीति से सुलावे कि जिससे भग के ऊपर यथेष्ट चांदना पडे। नीचे लिखी हुई बातों की परीक्षा ध्यान लगाकर करना चाहिये।

(१) सतीच्छद वा हाइमेन को दशा तथा आकृति पर ध्यानदे कि यह छिन्न होगई है अथवा अपनी स्वाभाविक दशा पर अच्छिन्न है। अथवा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सतीच्छद एक बार बिलोप होकर इसके स्थान पर कितने ही छोटे छोटे गुटिका के समान मांसपिंड मौजूद हो गये हैं।

सतीच्छद के स्थान में कैरेक्यूलिमारटफर्मिस मौजूद होने पर पूछना चाहिये कि रोगिणी के सन्तान हुई है वा नहीं अथवा सन्तान के मस्मक के सदृश कोई बडा पदार्थ (फाइब्रोइड पौलिपस) योनि के द्वार से बाहर निकला है।

(२) भग की श्लेष्मिक झिल्ली (म्यूकस मैम्ब्रेन) की दशा यह स्वाभाविक से अधिक लाल रंग की है या नहीं, तथा इससे पीव निकलता है वा नहीं जो पीव निकलता हो तो पूछना चाहिये कि रोगिणी की भग में दाह होता है।

(३) मूत्र नालीका मुख (१) स्वाभाविक आकारमें है वा नहीं। मूत्रनाली के मुखमें बाटे (२) अथवा वैसक्यूलर कैरंकिल (३) उत्पन्न हुआ है वा नहीं तथा उसमें से पीव निकलता है वा नहीं।

(३) भगके भीतर किसी प्रकार की फुलावट अथवा अर्बुद (४) है या नहीं। वार्थोलिन के ग्लान्ड का नल (५) बन्द होकर बृहत् भगोष्ठ (६) का पीछे वाला भाग फूल जाता है। योनि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्राचीरका निम्न अवतरण (७) जरायु का निम्न अवतरण (८) वंजिना का अर्बुद (९) जरायु का पौलिपस (१०) इत्यादि का उद्भव दूसरी जगह होनेपर भी भगके भीतर देखनेमें आता है। स्त्रीरोगाधिकार में स्त्री की जननेन्द्रियकी व्याधियों का समावेश है। इन व्याधियों की परीक्षा के लिये अधिकतर यह बात है कि अवयवों को आंख से देखने की आवश्यकता पड़ती है। इस हेतु से जिस स्त्री के गुह्य भागों को देखना पड़े उस स्त्री को बांये पसवाडे सुलाकर जांच करनी चाहिये। जो व्याधि योनि के बाहरी भाग पर होती है वह तो देखने से मालूम होजाती है परंतु जो रोग भीतर के भाग में होते हैं उनकी परीक्षा दो तरह से हो सकती है एक तो केवल तर्जनीका प्रवेश करने से तथा दूसरी दर्शक यंत्रों द्वारा।

तर्जनी प्रवेश परीक्षा।

ऊपर कही हुई रीति के अनुसार स्त्री को बांई करवट से शयन कराकर वस्त्र उढाकर चिकित्सक पीछे की तरफ खड़ा होकर पहली दो उंगलियों से तेल चुपड़ कर योनि में प्रवेश करे और इस तरह भीतरकी ओर हर एक तरफ तथा कमल को टटोल कर परीक्षा करे। ऐसा करने से यदि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किसी ओर गांठ हो व कमल पर सूजन हो अथवा नरम या कठिन हो तो सब स्थिति मालूम हो जायगी।

दर्शक यंत्र द्वारा परीक्षा।

योनि दर्शक यंत्र तीन प्रकार के होते हैं, एक नलिकाकार यन्त्र, दूसरा चंच्वाकृति यन्त्र तीसरा द्विभित्ति यन्त्र। इन यन्त्रों से योनि मार्ग और कमल दृष्टिगत होजाते हैं, गर्भाशय के भीतरी भाग की परीक्षा के लिये. एक बांकी शलाका (सलाई) आती है उसे गर्भाशय शलाका कहा है।

१–नलिकाकार चार पांच इंच लम्बा होता है। इस यन्त्र से कमल तथा योनि का वाह्य भाग देखने में आता है।

२–चंच्चाकृति यन्त्र यह वतककी चोंचके समान दोनों ओर मोटा पतला होता है, इस यन्त्र के द्वार योनि का अग्रभाग तथा कमलका भाग दीख पड़ता है।

३–द्विभित्ति यन्त्र–यह आमने सामने दो पंखडी वाला होता है इस यन्त्र की पंखडियां बन्द करके योनि में प्रवेश की जाती है। पीछे उसके सम्बन्ध बाला पेच या इस्क घुमाने से पंखडियां खुलजाती हैं, इससे जांच की जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इनमें से किसी प्रकार का यन्त्र प्रवेश करने से पहिले उसको वाह्य भाग पर तेल चुपड़ लेना चाहिये फिर तर्जनी उङ्गली प्रवेश करके उसके सहारे सहारे यन्त्र प्रवेश करना चाहिये।

गर्भाशय शलाका मूत्र शलाका के आकार से मिलती झुलती होती है पर उसके सिरे का बांकपन थोड़ा होता है, उसकी मूठ चपटी पकड़ ने के लायक होती है, इसके सिरे का भाग अनुमान से ढाई इंच लंवा होता है और गर्भाशय की स्वाभाविक गहराई भी इतनी होती है, और सलाई का जितना थोड़ा वा अधिक भाग भीतर जाता है उसी से कितने ही रोगों की जाच करने में आ सकती हैं। सलाई को प्रवेश कर ने से पहिले उसमें तेल चुपड़ कर दाहिने हाथ में पकड़ बांये हाथ की तर्जनी योनि में कर के गर्भाशय के मुख पर लगा कर उसके सहारे से सलाई प्रवेश कले तर्जनी के सहारे बिना योनि दर्शक यंत्र के सहारे इस सलाई का प्रवेश हो सकता है।

योनिरोग—योनिकंडू।

योनि के बाहरी भागमें खुजली अधिकता सेचलती हो तो इसे योनिकंडू कहते हैं। यह रोग कभी तो प्रधान रूप से होता है और कभी दूसरे रोग का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चिन्ह स्वरूप होता है, जब यह रोग प्रधान रूप से होता है तब स्त्री की तबियत बिलकुल ठीक नहीं होती है। निर्बलता वा अजीर्णादि दोष उसके साथ होते हैं।

गर्भाशय के तथा कमल के रोगों के साथ वे मालूम होते हैं, मूत्र द्वार में मस्सों के होने से बड़ी खुजली चलती है, प्रदर और बवासीर के साथ भी योनिकंडू होता है, गर्भावस्था में कितनी ही बार अधिक खुजली चलती है। स्त्री का आर्तव बन्द होने के समय अथवा हर महिने ऋतुमती होने के समय थोड़ी बहुत खुजली चलती है। कृमि रोग में भी खुजली चला करती है।

चिन्ह – योनि के बाहरी भाग में बड़ी खुजली चला करती है। बिना खुजाये स्त्री को चैन नहीं पड़ता है। खुजाते खुजाते त्वचा में छाले हो जाते हैं जिससे जलन होने लगती है। कभी कभी खुजली के बदले केवल जलन हुआ करती है अथवा चींटी वा बिच्छू के डंक मारने के समान वेदना होती है। गरम पदार्थ खाने से वा शराब पीने से भी बहुत खुजली चलती है, गर्मी से इस रोग की वृद्धि होती है, ऐसा होने से बहुत कपड़े पहनना भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं सुहाता है, कभी २ रात्रि में नींद नहीं आती, देखने पर योनि के वाह्य भाग पर खुजाने से ललाई और सूजन मालूम होती है। यदि यह रोग पुराना हो तो रूक्ष तथा सफेद रंग का हो जाता है।

कंडू चिकित्सा।

हलका जुलाब देना हित कारक है। जैसे रूवर्व, मैगनेशिया गंधक, हीमज और सोना मक्खी। पावन दवा जैसे नाइट्रो म्यूरिआटिक ऐसिड को चिरायते की चाय के साथ देवे।

१ – लाइकर आर्सेनिक ८ मिनिम, क्विनाइन २ ग्रेन, टिंकचर आफ स्टील २० मिनिम, पानी २ आउन्स इन सब दवाओं को मिलाकर भोजन के समय १ आउन्स लेना चाहिये।

पथ्य–गरम पदार्थ, चाय, काली मिरच, शराब आदि का सेवन नहीं करना चाहिये। कितनी ही लगाने वाली ठंडी दवाओं के लगाने से खुजली कम हो जाती है, अथवा मिट जाती है।

एक पौइन्ट पानी में आधा आउन्स लेकर ग्लम्बी सब ऐसेटेटिस डाल कर मिला कर योनि में लगावे, योनि में ठंडे पानी की पिचकारी लगाने से आराम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मालूम पड़ेगा। कार्बोलिक लोशन लगाने से भी खुजली कम हो जाती है।

(२) लिनिमेंट बिलेडोना तथा लिनिमेन्ट एकोनाइट समान भाग मिलाकर दिन में दो चार बार लगावे, इससे आराम न हो तो।

(३) डायल्यूट हायड्रोश्यैनिक ऐसिड ३ ड्राम, शुगरलेड ६ ग्रेन, रैक्टीफाइड स्पिरिट १ आंउस पानी ८ आंउस इन सब दवाओं को मिलाकर लगाना चाहिये, अथवा।

(४) टंकणखार दो ड्राम, ग्लिसरिन १ आउंस, धमासे का पानी ८ आउन्स। इन सबको मिलाकर लगाना चाहिये, अथवा।

(५) लाइकर मौरफिया, डेढ आउन्स, लाइकर पोटास २ ड्राम, ग्लेसरिन १ आउन्स, धमासे का पानी १० आउन्स, इन सब दवाओं को मिलाकर प्रक्षालन करे।

(६) तमाखू २ ड्राम, गरम पानी १ सेर, तमाखू को गरम पानी में डबोकर उस पानी से योनि को धोवे बादाम का तेल लगावे, ग्लैसरीन और गुलाब जल इम दोनों को समान भाग लेकर लगावे यदि योनि कंडू का कोई कारण मिल जाय तो उस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को दूर करे गर्भाशय का केन्सर न मिटने के कारण से खुजली हो तो बेलेडोना की बत्ती योनि के भीतर लगाने से खुजली मिटजाती है।

योनिमुख ग्रन्थी।

योनि के वाह्य भाग में कितनी ही तरह की गांठ पैदा हो जाया करता है, कभी कभी रसौली भी होजाती है, कभी यह रसौली पककर उसमें पीव पड़ जाता है, उस रसौली को फोड़ दे अथवा काट डाले, कितनी ही वार एक या दोनों ओष्ठों पर मस्से होजाते हैं, इनको यातो काट डाले या दग्ध करदे, कभी कभी योनि का एक या दोनों ओष्ठ बढ़कर बहुत बड़े बड़े होजाते हैं, इनको काट देने के सिवाय दूसरा उत्तम उपाय नहीं है।

योनिमुखशोथ।

योनि प्राचीर की श्लेष्मिक झिल्ली के प्रदाह को वैजाइनाइटिस कहते हैं, योनिमुख के अर्थात् लेविया मैजोरा, बैसटीब्यूल और उनके पास वाले स्थान की श्लेष्मिक झिल्ली के प्रदाह को वैलवाइटिस कहते हैं।

इस रोगमें अनेक कारण हैं, इसमें से गनोरिया की पीड़ा सबसे प्रधान है, गनेरिया से ही योनि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की श्लैष्मिक झिल्ली में प्रदाह होता है, अन्यान्य कारण जैसे १–किसी प्रकार की चोट २–अत्यन्त पुरुषसंगम, ३–योनि में ठंडी हवा लगना ४–योनि के भीतर अत्यन्त गरम व ठंडे जल की पिचकारी वा डूस ५–कभी कभी दुर्बल प्रकृति वाली बालिकाओं के वेलबाइटिस होना इस पीड़ा को गनोरिया बतलाना भ्रमात्मक है, बालिकाओं की योनि के भीतर कभी छोटे छोटे कीड़े होजाते हैं जिन से वैलवाइटिस रोग उत्पन्न होता है।

योनि के सम्पूर्ण वाह्य भाग में अथवा किसी एक भाग में वरम अथवा दाह पैदा होजाता है, यह वरम अत्यन्त पुरुष सहवास, उपदंश तथा गन्दगी के कारण हुआ करता है, इससे थोड़ी बहुत सूजन भी हो जाती है और उस भाग में ललाई हो जाती है, फिर वेदना होने लगती है, पेशाब करने में जलन होने लगती है, जांघ में दर्द होता है, योनि से सफेद स्राव होने लगता है इसी को श्वेत प्रदर कहते हैं ऐसे समय सहवास नहीं हो सकता है।

इस रोग में योनि की श्लैष्मिक झिल्ली लाल और उत्तम होती है तथा फूल भी जाती है, प्रदाह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की अत्यन्त तरुण अवस्था में श्लैष्मिक झिल्ली सूखी मालूम होने लगती है फिर दो तीन दिन में ही पीव के समान स्राव होने लगता है, गनोरिया के कारण पैदा हुए प्रदाह में मूत्रनाली की श्लैष्मिक झिल्ली में भी प्रदाह होने लगता है, गनोरिया का स्राव कुछ हरिद्रा वर्ण वा सब्ज रंग का होता है, योनि प्रदाह बहुत पुराना होने पर योनि की श्लैष्मिक झिल्ली में घाव हो जाता है।

प्रदाह की तरुण अवस्था में रोगिणी को ज्वर होता है, योनि ज्वलित होकर दप करने लगती है, हल्दी वा अल्प सब्ज रङ्ग वा पीव के सदृश तरल पदार्थ निकलने लगता है, पेशाब करने में बड़ा कष्ट होता है और पेशाब थोड़ा थोड़ा उतरता है।

अन्यमत—मूत्रमार्ग में तीक्ष्ण वरम और जलन के साथ सूजन होती है। खुजली के चेप अथवा गरम पदार्थों के खाने से, मद्यपान से, मैलापन से, और सांसारिक भोगविलास की सीमा को पारकर जाने से यह रोग होता है, लक्षण—खुजली, दाह, कमर और जांघ में दर्द, दस्त होने में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दर्द, भीतर सूजन होकर फिर स्राव होना तथा पुराना होने पर यह रोग प्रदर का रूप धारण कर लेता है।

चिकित्सा—कमर तक गरम पानी में बैठने से आराम मिलता है, इस गरम पानी में थोड़ा सोड़ा तथा अफीम के डोडे डालने से विशेष उपकार होता है, शुगर लेड अथवा फिटकरी के पानी से योनि को धोना चाहिए अथवा गरम पानी की पिचकारी लगाना हित है, शुगरलेड के पानी से लाभ न हो तो योनिरोग में लिखे हुए नम्बर २, ५ और ६ की दवा लगावे।

नीचे लिखी दवाओं से भी लाभ होता है।

७—लिनीमेंट एकोनाइट २ ड्राम तथा क्योरिन औइल १ आउन्स मिलाकर लगावे।

८—डिल्यूट हाइड्रोशोनिक ऐसिड १ ड्राम, आट्रोपीन मरहम २ ड्राम, सादा मरहम १ आउन्स इन तीनों दवाओं को मिलाकर लगावे।

९—आयोडाइड औफलैड ९० ग्रेन, लिनीमेंट बिलेडौना १ ड्राम, सादा मरहम १ आउन्स, मिलाकर चुपड़े।

१०—अफीम और शुगरलेड प्रत्येक २ रत्ती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोकम के तेल में मिलाकर ४ गोली बनाकर एक एक भीतर रक्खे।

११—जिक औक्साइड ४० ग्रेन ऐक्सट्रक्ट बिलेडोना १२ ग्रेन, इनको मिलाकर गोंद के पानी अथवा शहत के साथ ४ गोली बनाकर एक एक गोली योनि के भीतर रखै।

१२—एक पाइन्ट खरम जलमें १ ड्राम टिंकचर ओपियम मिलाकर धोनेसे आराम मालूम होगा।

१३—सुहाग, बाइ कार्बोनेट आफ, सोड़ा, एसिटैट आफलैड, फिटकिरी, टौकिक ऐसिड, अथवा सलफेट औफर्जिक इन सबका लोशन (१ ड्राम १ पाइन्ट) तयार करके इससे योनिको धोवे।

छोटी अवस्था वाली बालिकाओं के बलवाइटिस रोग होने पर गरमजल, कारबोलिक लोशन-टौनिक एसिड लोशन से सदा धोता रहै।

खानेकी औषधों में प्रथम ही विरेचक दवा देकर दस्त करादे, जो ज्वर हो तो साइट्रेट आफ पुटास, ऐसिकेठ आफ पुटास, खाने को दे, तरुण अवस्थामें हलका पथ्य दे। उत्तेजक औषध और पथ्य कदापि न दे। शरीर दुर्बल हो और रोग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुराना पड़ गया होइससे स्राव अधिक हो तब पुष्टि-कारक खाद्य पदार्थ देना चाहिये ऐसी लड़कियां जिनकी प्रकृति दुर्बल हो उन्हें कौडलिवर आइल तथा आयरन प्रभृति खाने को दे यदि रोगिणी बात, गाउट, डायबिटीज आदि रोगों से पीडित हो तो उन रोगों की चिकित्सा करनी चाहिये।

रोग पुराना हो और योनि में पुराना घाव हो तो घाव के सब स्थानों पर काष्टिक लोशन का प्रयोग विशेष उपकार होता। काष्टिक लोशन १० ग्रेन, परिश्रुत अर्थात् टपका हुआ जल १ पौंड।

योनि का कैन्सर (१)

योनि के ऊपर एक अर्बुद रोग होता है जिसे कैन्सर कहते हैं। तथा और भी, कितनी ही तरह के दुष्ट क्षत होते हैं, इनको काटना, दग्ध करना, तथा भरना ये ही योग्य उपाय करने चाहिये। यदि कैन्सर दूर न हो तो अफीम की दवा खाने को दे और स्थानिक लगाने वाली दवा का प्रयोग करे।

योनि लिंग (क्लीटोरिस २)

कभी कभी यह रोग बढ जाता है, अथवा इस में गांठ हो जाती है, इस व्याधि को शस्त्र से काट कर दूर करदे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुदास्थिशूल।

कोक्सी गोडिनियां (३)

गुदास्थि अर्थात् रीडका पिछला हाड जो मल द्वार के पीछे की ओर है उसमें कभी कभी दर्द होने लगता है इसको देशी भाषा में चिक जाना भी कहते हैं। धक्का लगने से वा ऊंची नीची जगह पांव पड़ने से वा गिर पड़ने से अथवा ऐसे ही किसी और कारण से हड्डी में कुछ हानि पहुँच जाती है इससे उस स्थान में टीस मारने लगती है (१) कैक्सर आव वैजिनी (२) योनिलिंग। कौक्सी गोडिनियां का लक्षण, बैठते उठते चलते फिरते, दस्त जाने में उस स्थान में पीड़ा होती है, अधिकतर एक ही पसवाड़े बैठा जा सकता है॥ बैठने के पीछे धीरे धीरे खड़ा होने में आ सकता है कौक्सीकस को दावने से दर्द होता है मैथुन के समय कष्ट होता है।

उपाय—सेक करना, अफीम और बिला डोना का लेप करना। ब्लिस्टर लगाना, ऐट्रोपीन अथवा मौरफिया की पिचकारी लगाना, जोक लगाना इन ऊपर लिखे उपायों से आराम न हो तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सबसे पिछला उपाय यह है कि कोक्सीकस को काट डालै ॥

मूत्र मार्ग की व्याधि ।

मस्सा–बार्ट कभी कभी स्त्री के मूत्रमार्ग पर मस्सा देखने में आता है, यह मस्सा छोटा बड़ा, राई के दाने से बड़ा बेरके बराबर होता है, मस्से का चिन्ह मूत्राश्मरी के समान होता है बार बार पेशाब होताहै, पेशाब करते समय जलन होने लगती है उसमें से कभी कभी रुधिर निकलता है और पेशाब में धातु दिखलाई देती है ।

उपाय–मस्से को कैंची से काटकर उसकी जड़ को दग्ध करदे । केवल काटने के पीछे बहुधा फिर पैदा हो जाता है इसलिये इसकी जड़को निकाल देनेकी अपेक्षा जला देना आवश्यक है ।

मूत्रमार्ग का वरम ।

जब मूत्रमार्ग में वरम पैदा होजाता है तब पेशाबकी हाजत के संग बहुत देर तक जलन हुआ करती है, पेशाबमें कभी कभी रुधिर आने लगता है, जांच करनेसे मूत्र मार्गका वह भागलाल सूजा हुआ मालूम होता है यह नरम तीक्ष्ण और दीर्घ होता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपाय–गरम पानी में बैठे व सेक करे, खाने में गरम वस्तुओं का त्याग करदे। अफीम तथा बिलेडोना की गोली योनि में रख दे। गोखरू अथवा बहुफली का लुआव पीनाभी हितकारी है। जो वरम दीर्घ हो तो दिनमें दो बार को पेवाकी दस से बीस मिनम पीना चाहिये, कभी मूत्रमार्ग रुक जाता है तब सलाई डाल कर मूत्र मार्ग को विस्तृत कर देना चाहिये।

अश्मरी अथवा पथरी।

स्त्री के पथरी रोग शायद ही कभी होता है, क्यों कि स्त्री का मूत्र मार्ग पोला होता है, यदि यह रोग हो जाता है तो उसके लक्षण पुरुष की अश्मरी के समान ही होते हैं।

योनिमार्ग का रोग।

दृढयोनिपटल–योनिद्वार से गर्भाशय तक मैथुन का जो रास्ता है उसे योनिमार्ग कहते हैं, बाल्या-अवस्था में इस मार्ग के द्वार पर स्वाभाविक रीति से नीचे की ओर एक अर्द्धचन्द्राकार परदा होता है, और प्रथम संयोग के समय विशेष करके फट जाता है, कभी ऐसा भी होता है कि यह परदा दृढ और मजबूत होता है इससे फटता नहीं है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा पुरुष के सहवास के समय रुकावट करता है, इसको तर्जनी उंगली तथा नश्तर से चीर दे और फिर जुड़ न जाय इसलिये योनि के भीतर लिंट का कपड़ा तेल में भिगोकर रख दे ।

कभी ऐसा भी होता है यह परदा अपने स्वाभाविक अर्द्धचन्द्रकारको छोड़कर सम्पूर्ण योनि द्वार पर आजाता है, यदि बाल्यावस्थामें इस स्थितका हाल मालूम होजाय तो इसके चीरने में किसी प्रकार की जोखम नहीं है, चीरने के पीछे उसके भीतर लिंट का कपड़ा भरदे जिससे घाव भरने न पावे, यदि युवावस्था तक यह परदा इसी तरह रहा आवे तो मासिक धर्म का प्रतिबन्ध करता है, हर एक महिने इस स्त्री को मासिक धर्म के चिन्ह दिखलाई देते हैं परन्तु उसका स्राव होने के बदले वह भीतर भरा रहता है, कहीं यह रक्त भरते २ गर्भाशय तक फूल जाता है और पेडूके ऊपर एक गांठ सी पैदा होजाती है, परीक्षा करने से योनिद्वार पर उभरा हुआ परदा दिखाई देगा । इसपरदे का चीर देना बहुत सहज है पर इसमें जोखम अधिक है, इसके चीरनेके पीछे कितनी ही स्त्रियां गर्भाशय अथवा पैरिटोनियमका वरम होकर काल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ग्रस्त हो जाती हैं, इसलिये इस जोखम को सदा ध्यान में रखते हुए इस परदे को चीरने का प्रयत्न करना चाहिये (विशेष हाल नष्टार्तव में देखो)

योनिहर्ष—स्पर्शासह्ययोनि।

(वैजीनिस्मस)

कभी ऐसी व्याधि होजाती है कि योनि द्वार के स्पर्श करने से बडी पीडा होती है और द्वार संकुचित हो जाता है इससे सहवास करना अशक्य हो जाता है, इसको स्पर्शासह्ययोनि कहते हैं, कभी यह व्याधि अलग ही दिखाई देती है और कभी उसके साथ ही आस पास के भाग में वरम होजाता है, इसी पीडा के कारण स्त्री सदा चिन्तत रहती है, उसकी कमर में दर्द होने लगता है, क्षुधा कम हो जाती है और चलने फिरने में भी कष्ट होता है।

उपाय—बहुधा इस व्याधि का निवारण होना साधारण उपायों से संभव नहीं है, इसमें शस्त्रक्रया की आवश्यकता पडती है, ऐसा करना होतो रोगिणी को पहिले दिन जुलाब देकर दूसरे दिन क्लोरोफोर्म सुंघाकर योनिद्वार के पश्चिम भागमें आधा इंच गहरा छेद करना चाहिये फिर छेद में रुई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भरकर कोपीन (लंगोटी) के आकार की पट्टी बांध दे, पेशाब न उतरता हो तो सलाई डालकर पेशाब करादे, पीडाकी शांति के लिये अफीम का प्रयोग करता रहे तीसरे दिन पट्टी बदलदे। इसके पीछे योनिद्वार को खुला रहने के कुछ दिन तक एक मोटी सलाई लगी रहने देना चाहिये. शस्त्र-क्रिया करने से पहले बेलेडोना, अफीम एकोनाइट आदि तेल लगाकर परीक्षा करना चाहिये।

योनि का तीक्ष्ण वरम।

कारण–योनि का तीक्ष्ण वरम शायद ही देखने में आता है यह रोग सुजाक आदि मूत्र संम्बन्धी रोगों के सिवाय अन्य कारणों से भी हुआ करता है, गरम पदार्थ खाने से, शराव पीने से, मैलापन से, अति मैथुन और बलात्कार संभोग से तथा प्रसव काल में योनि में कोई कष्ट पहुँचा हो तो तीक्ष्ण वरम हो जाया करता है।

लक्षण–योनि में पीडा होती है खुजली चलती है, कमर तथा जांघ में दर्द होता है, शौच (टट्टी फिरना) के समय पीडा होती है पहिले योनि का भीतरी भाग सूजा हुआ और रूखा लगताहै पर थोडे समय पीछे उसमें से गरम स्राव होने लगता है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधिकतर यह देखने में आया है कि आठ दस दिन में यह रोग मिट जाता है अथवा इसके दर्द पीड़ा आदि कम होकर प्रदर का दीर्घ रूप धारण कर लेता है।

उपाय--दिन में दो बार गरम पानी में बैठे पानी में सोडा और अफीम के डोडे डाल लिये जांय तो विशेष गुण करता है योनि के भीतर गरम पानी की पिचकारी लगावे तथा अफीम और शुगरलेड की बत्ती योनि में रक्खे।

नं० १० अफीम १२ग्रेन शुगरलेड १२ग्रेन इनको कोकम के तेल के साथ मिलाकर चार बत्ती बनाकर हर रोज रात्रिके समय एक एक भीतर रक्खे।

नं० ११--औक्साइड आफजिक ४० ग्रेन, ऐक्स-ट्रैक्टआफ बेलेडोना १२ ग्रेन मिलाकर कोकम का तेल, गोंदका पानी अथवा शहदके साथ चार बत्ती बनाकर प्रत्येक रात में एक एक अन्दर रक्खे।

अरण्डी के तेल आदि का हलका जुलाब दे साधारण हलका पथ्य दे। गरम पदार्थों का त्याग करदे। ग्लसरीन तथा टौनिक ऐसिड में भिगोकर रुई का फाहा भीतर रक्खे। सिलवर नाइट्रेट अथवा टिंकचर आयोडाइनका एक दिन के अन्तर से योनि में बुरुश करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रदर रोग।

जो जरायु और योनि से सफेद रंग का स्राव अधिक परिमाण में निकलता हो उसे ल्यूकरिया वा श्वेत प्रदर कहते हैं। इस स्राव के निकलने के तीन मुख्य स्थान हैं, यथा योनिमुख योनिमार्ग और गर्भाशय तथा स्थान के अनुसार इसके तीन प्रकार होते हैं। योनिमुख प्रदर और गर्भाशय प्रदर इनका स्थानानुसार अनेक रोगों में स्राव होता है। इनमें से हरएक भाग में अबुंद, ग्रन्थि, मस्सा आदि व्याधियों के साथ पानी निकलता है, परन्तु उस समय मूल व्याधि के साथ उसका सम्बन्ध समझ कर प्रदरवर्ग में उस स्राव का गिनना उचित नहीं, योनिमुख प्रदर का स्राव चिकना पानी की तरह होता है, योनि प्रदर का स्राव खट्टा (ऐसिड) सफेद रंगका दही के माफिक गाढा होता है, गर्भाशय प्रदर का प्रवाह चिकना, स्वच्छ और ऐलकैलाइन होता है, योनिदर्शक यन्त्र डालकर देखने से उनका अन्तर मालूम होता है, कभी इनमें से हर एक प्रकार का स्राव अलग देखने में आता है, कभी संग संग होता है और उनका स्राव मिला झुला होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उत्पत्ति स्थान के दीर्घ वरम, रक्त के भारापन और निर्बलता के कारण से स्राव हो उसे प्रदर रोग कहना उचित है।

इस विषय में वैद्य जटाशंकर लीलाधर कहते हैं कि स्त्री के सम्बन्ध मार्ग के जुदे २ भागोंसे और कमल के मुखमें से पानी का थोड़ा थोड़ा स्राव तो निरंतर ही आया करता है, जिससे वे भाग गीले तथा भीगे हुए रहते हैं, जब कितने ही कारणोंसे यह स्राव बढ़जाता है और प्रवाह की तरह बाहर निकल कर कपड़ों को बिगाड़ता है तब इस स्राव को प्रदर कहते हैं।

कारण–सांसारिक विषयों के भोगने में नियम के उल्लंघन होजाने से, बारबार थोड़े थोड़े समय में गर्भके रहजाने से, उष्ण वस्तुओं के सेवनसे मासिक धर्म बन्द होजाता है, बालकों को बहुत कालतक स्तनपान कराने से अधिक परिमाण में मासिक रुधिर निकलने से, गर्भावस्था में किसी अन्य रोग के कारण निर्बलता होजाने से, अत्यन्त पौष्टिक पदार्थों का सेवन करते हुए उचित शारीरिक व्यायाम न करने से और मद्यपानादि गर्मी पैदा करने वाली वस्तुओं के सेवन से यह रोग पैदा होजाया करता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लक्षण—पानीके माफिक अथवा गाढी चिकनी और सफेद पीली या भदमैली रसीली वस्तु बहा करती है यह इस रोग का प्रत्यक्ष चिन्ह है, धातु दो रस्तेसे बहती है, सम्बन्ध मार्ग में होकर और गर्भस्थान में से। सम्बन्ध मार्गकी धातु पहिले पानी के माफिक होती है और बाहर निकलते ही दूधके माफिक अथवा पीलाई पर होती है, उसकी गंध खट्टी होती है, ऐसे धातु स्राव में भीतर के भागों में किसी प्रकार की सूजन व दर्द नहीं होता है, केवल कमर और पेडूमें कुछ दर्द होता रहताहै और बहुत दिन का होने पर निर्बलता मालूम होती है गर्भस्थान की धातु कमलके मुखमें से निकलती है तो वह अंडे के भीतर के रस के समान होती है बाहर आने पर साबुन के झाग क समान और कभी पीले रंगकी भी होती है, कभी बहुत गाढी भी होती है, गर्भस्थान और कमल मुख के पुराने बरम से यह रोग उत्पन्न होता है और उसके साथ माथे में दर्द मन्दाग्नि, अरुचि, पेट में गुड़गुड़ाहट, थकावट, श्वास, जीभपर मैल, फीकापन, दस्तकी रुकावट, छाती में धड़कन, मूर्च्छा, माथे और दहिने पसवाड़े में दर्द तथा समय पर हिजटीरिया के से चिन्ह होजाते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

डाक्टर पुलिनचन्द्र सान्याल कहते हैं कि ल्यूकोरिया स्वयं कोई रोग नहीं है, यह तो योनि और जरायु से सम्बन्ध रखने वाले अनेक रोगोंका परिचायक मात्रहै, किसी२ स्थल में इसी को निजी रोग में गिनते है और इसी को यथार्थ ल्यूकोरिया बताते हैं। यह जरायु और योनिकी सर्दी विशेष का एक रूप है। जिस कारण से सर्दी रोग उत्पन्न होता है उस कारण से यह भी पैदा होता है। जैसे शीत लगने से, अथवा एकदम गर्मी के पीछे ठंडी हवा वा ठंडा जल शरीर पर लगने से पसीने रुक कर श्वेतप्रदर रोगको पैदा करते हैं पर आधुनिक चिकित्सक सर्दी के लगने से इस रोग का पैदा होना नहीं मानते हैं।

गर्भावस्था में जरायु और योनिद्वार की उत्तेजना से अधिक परिमाण में सफेद रंग का पदार्थ निकलता है, यह रोग नहीं है और न इसकी चिकित्सा की आवश्यकता है।

हमारी स्त्रियों के ऋतु काल से पहले वा अव्यवहित पीछे सफेद रंग का तरल पदार्थ अल्प परिणाम में निकलता है, यह भी रोग की गिनती में नहीं है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिन स्त्रियों के मासिक धर्म अच्छा तरह नहीं होते है, उसके रक्त के बदले ल्यूकोरिया निकलता है, इसको रोकनेके लिये वह उपाय करना चाहिये जिससे ल्यूकोरिया दूर हो जाय परन्तु ऐसी जगह ल्यूकोरिया का स्रावा बन्द करने के लिये खट्टी औषधी के प्रयोग से विपरीत फल होता है।

कभी २ ल्यूकोरिया और किसी शारीरिक रोग का भी परिचायक होता है, जैसे स्क्रोफुला पीडा से ग्रस्त स्त्री को ल्यूकोरिया होता है। यक्ष्मा की खांसी में यह रोग होता है। गाउट, रूमैटिज्म, अत्यन्त मद्यपानादि कारणोंसे श्वेतप्रदर होताहै रक्तहीनता, शारीरिक दुर्बलता, बुढापा आदि से भी ल्यूकोरिया होता है। बहुत दिन तक पीडा भोगनेसे, वा रक्तस्रावके कारण रोगिणी के क्षीण होजाने से अथवा बहुत सी संतान को माता होने के कारण शरीर की दुर्बलता से श्वेतप्रदरका जन्म होता है। अजीर्ण, क्षुधामांद्य, कोष्ठबृद्धता, वा प्रदर समय रोग से भी ल्यूकोरिया हो सकता है।

ऊपर हम तीन प्रकार का प्रदर कह चुके है अब हम उनमें से हर एक का अलग अलग वर्णन करते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योनिमुख प्रदर—यह बालक लड़कियों के होता है तथा बड़ी उम्रवाली स्त्रियों के भी होता है।

बाल प्रदर—यह छोटी उमर वाली लड़कियों के होता है प्रदर के कारण खुजली चलती है और खुजाने से योनि ओष्ठ छिल जाता है, सूजन चढती है, घाव हो जाता है स्क्रौफयूला रोगवाली तथा निर्बल लड़कियों के इस रोग का होजाना बहुत सम्भव है, त्वचा रोग तथा आस पास के भाग की व्याधियों के कारण यह दर्द पैदा होता है. इसकी आकृति और प्रवाह खुजलने की सी होती है, बालक लड़कियों के ऐसा रोग हुआ करता है, यह बात ध्यान में रखनी चाहिये क्योंकि ऐसा होने से लड़की पर लोगों को बलात्कार का वहम होजाता है। पर बलात्कार से योनि मुख अधिक भ्रंश होने से सूजजाता है। बाल प्रदर में योनिमुख को गरम पानी और बोरासिक ऐसिड से धोकर साफ रखना चाहिये। एक आउन्स वैसलिन में एक ड्राम जिंक ऑक्साइड मिलाकर लगावे, कम्पाउन्डर आयडोफौर्म पाउडर लगाना हितकारी है।

कम्पाउन्डर आयडोफौर्म—आयडोफौर्म कत्था का चूर्ण, मैगनेशिया कार्बोनस, विजियेश सब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाइट्रस जिंक आकसाइड इन सबको एक एक ड्राम लेकर मिलाले।

बड़ी अवस्था वाली स्त्री को योनिकंडू के साथ यह दर्द हो तो योनिकंडू में लिखे हुए उपाय करे।

योनिप्रदर—सगर्भावस्था में सफेद पानी बहता है, आर्तव से पहिले और पीछे न्यूनाधिक प्रवाह होता है, जो आर्तव बिल्कुल न आवे तो सफेद पानी बहता है। इस प्रवाह को रोगकी गिनतीमें न ले।

कारण—इसके दो कारण हैं, एक स्थानिक, दूसरा सार्वदैहिक। स्थानिक कारण में योनि कमल, गर्भस्थान आदि का वरम, घाव आदि व्याधियां हैं।

सार्वदैहिक कारण में निर्बलता, रक्तौकूला, उपदंश, क्षय और पाण्डु आदि रोग हैं, बहुत दिन तक बच्चे को स्तनपान कराने से प्रदर होता है, ऋतुकाल बन्द होने के समय कितने ही दिन प्रदर मालूम होता है, आर्तव सम्बन्धी विकार से भी प्रदर देखने में आता है।

लक्षण—योनि से सफेद पानी बहता है इसे साधारणतया धात कहते हैं, कमर में दर्द होता है निर्बलता होती है, चुधा मन्दी पड़जाती है, मन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चिन्तित रहता है विशेष कर के योनि मार्ग के ऊपर वाले भाग में तथा कमल कंद पर वरम होता है, वह भाग कुछ लाल सूजा हुआ मालूम होता है, उसमे धातु बहती है, कभी इस भाग की उपत्वचा (ऐपथीलियम) के परदे की खाल उतर जाती है, कभी इन दोनों प्रकार के प्रदर एक ही साथ होते हैं।

उपाय—तबियत सुधारने तथा पाचन के लिये किनाइन, लोह, ऐसिड, पैपसीन और अन्य पाचक द्रव्य देवे।

मैथुन की जितना रुकावट हो सके उतना रुकना, ठंडे खारी पानी में बैठना, योनि को ठंडे पानी से धोना, दवा की पिचकारी मारना, कम से कम दिन में एक दो वार औषध के एक पाइन्ट पानी की पिचकारी लगाना।

(नं० १२) लाइकर प्लंबाई सब ऐसेटेटिस ४ से ३ ड्राम पानी एक पाइंट, इन दोनों दवाओं को मिलाकर योनि में पिचकारी लगावें, इससे आराम न हो तो।

(नं० १३) जस्त का फूल आधे से १ ड्राम फूली हुई फिटकरी आधा ड्राम, टोनिक ऐसिड १

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ड्राम, पानी १ पाइंट इस दवा को मिला कर योनि में पिचकारी लगावे।

जो ऊपर लिखी दवाओं में से केवल एक ही दवा काम में लानी हो तो उसको एक से दो ड्राम तक लेकर उतना ही पानी मिलाकर ऊपर लिखी रीति से काम में लावे।

प्रदर मिटजाने पर कुछ दिन तक ठंडे पानी की पिचकारी स्त्री की योनि में लगाता रहे।

योनिग्रन्थि—योनि के भीतर गांठ, मस्सा वा रसौली हो जाया करती है. उसकी जाति तथा आकार के अनुसार जैसी हो वसी शस्त्र क्रिया करनी चाहिये।

अब हम श्वेत प्रदर के अन्य वैद्यों के मतानुसार कुछ उपाय लिखते हैं।

वैद्य जटाशंकर ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि प्रदर रोग के असंख्य उपाय हैं, योनि मार्ग के स्राव में बाहरा उपाय जल्द असर करते हैं और गर्भाशय क धातु स्राव में पौष्टिक दवा, भीतर के दर्द के उपाय तथा नियमित आहार विहार के योग्य सेवन से सुधार होता है।

बाहरी उपचार—(१) पंचवल्क के पानी से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धोना अथवा उसकी पिचकारी लगाना (ध्यान रहे कि स्त्रियों के लिये एक विशेष प्रकार की पिचकारी मिलती है उसका प्रयोग करे) (२) त्रिफला के पानी या क्वाथ की पिचकारी लगाना। (३) फूली हुई फिटकरी १० से ४० ग्रेन और पानी १० आउंस की पिचकारी लगाना। सल्फेट ऑफ जिंक और पानी मिला कर पिचकारी लगाना।

भीतर की लगाने की दवा-(५) मुलतानी मिट्टी की गोलियां बना कर भीतर लगावै [६] टौनिक ऐसिड, कत्था, मोम, तथा सालोड का तेल इन सबको उचित प्रमाण से मिलाकर गोलियां बनाकर भीतर रखे।

भीतर के उपचार-[७] धातु स्राव के जो जो कारण लिखे गये हैं उनमें से जिस कारण से धातुस्राव हुआ हो पहिले उन कारणों को दूर करे, आहार बिहार में बहुत नियमित रहै, बालक स्तन पान करता हो तो दूध पीना छुड़ादे योग्य शारीरिक परिश्रम करना चाहिये। खुली हवा में फिरना, क्षयादि रोग हो तो उसका उपाय करना, स्वास्थ्य बिगड़ने वाले कारणों का रोकना और स्वास्थ्य सुधार ने वाले उपायों का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करना उचित है। (८) प्रमेह के बहुत से उपाय प्रदर में काम देते हैं।

सुवर्ण मालती रस इस रोग में अधिक लाभकारक है, उसके बनाने की यह विधि है-सुवर्ण का बुरादा, अथवा वरक १ तोला, मोती का बुरादा २ तोला, हींगलू ३ तोला, सफेद मिर्च ४ तोला, खपरिया ८ तोला, इन सबको गो के मक्खन ढाई तोले में एक दिन खरल करके फिर ४२ दिन तक नीबू के रस में खरल करके गोली बना लेवे, मात्रा १ से ३ रत्ती तक, इसका अनुपान चांवलों के धोने का पानी है।

रक्त प्रदर।

जैसा श्वेत प्रदर होता है वैसा ही जुदे २ यंत्र मिले हुए रंगों का स्राव होता है। इसी तरह से लोहू का स्राव भी होता है इसी को रक्त प्रदर कहते हैं। रक्त प्रदर, रक्तपित्त तथा अति आर्तव ये तीन जुदे २ रोग हैं, इन तीनों में ही लोहू पड़ता है इसलिये इनका पहचान में गड़बड़ हो जाना संभव है इसलिये कारणों और अन्य लक्षणों द्वारा निर्णय हो सकता है।

लक्षण-निर्बलता भ्रम, मूर्च्छा, तृषा, दाह, फीका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पन और तन्द्रा ये अतिरक्त प्रदर के लक्षण हैं।

उपाय-[१] अडूसे के पत्तों का व गिलोय का ४ तोले रस लेकर मुलहटी का चूर्ण पाव तोला से आधा तोला, शक्कर दो तोले से ४ तोले इन सबको चांवलों के धोवन में पीस छान कर पीवे [२] चांवलों के धोवन में मुलहटीका चूर्ण और शक्कर मिलाकर पीवे [३] दाभकी जड़ चांवलों के धोवन में मिलाकर पीवे। रक्तप्रदर वाली रोगिणी को अच्छा खाने को दे, दूध का सेवन अच्छी तरह करावे, गरम पदार्थ न दे। मुंह जलता हुआ गरम पीने का पदार्थ चाय आदि बन्द कर दे। ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक है।

योनि भ्रंश।

लक्षण-कितनी ही बार योनिमें जरायु बाहर निकल आता है इसे गुजराती भाषा में आमण कहते हैं। विशेष करके ऐसा होता है कि योनि की सम्पूर्ण परिधि तो बाहर निकलती नहीं है अगला अथवा पिछला भाग नीचे उतरता है। जब अगला भाग बाहर उतरता है, तब उसके पास वाला मूत्राशय का भाग भी उतर आता है। उसके भीतर मूत्र भरा रहता है, समय पाकर उसमें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुर्गंध आनेलगती है और पेशाबमें धात बहतीहै।

जब पिछाड़ी का भाग नीचे उतरता है तब उसके साथ आंतों का कुछ भाग भी आ जाता है उसके भीतर मल भरा रहता है। आमण धीरे २ बढ़ता जाता है। पेड़ू में मरोड़ा की तरह दुख होने लगता है, बाफा मालूम होता है और धात जाती है। तर्जनी उंगली को प्रवेश करके परीक्षा करने से ठीक स्थिति मालूम होजाती है।

उपाय–मूत्र व दस्त खुलासा हो उसके लिए सलाई व पिचकारी का उपयोग करे। कितने ही दिन तक बिछौना में पड़ा रहना चाहिए। ठंडे पानीमें बैठना और नम्बर १२ तथा १३ में लिखी हुई औषधी की पिचकारी लगाना हित है।

[नं० १४] टौनिक ऐसिड ६० ग्रेन, कत्थाका चूर्ण ३० ग्रेन इन दोनों दवाओं को कोकम के तेल में मिलाकर बत्ती बनाकर रात में एक गोली योनिके भीतर रक्खे। तथा लोह, किनाइन, फासफारिक ऐसिड आदि पौष्टिक दवाओं को देता रहे। पथ्य अच्छा दे और स्त्री को यह शिक्षा देनी चाहिए कि वह किसी कारण से भी जोर न मारे। इसके सिवाय योनिका भाग नीचे न उतरने पावे। इसके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिए योनि में लगाने के लिए पैसरी लगावे। पैसरी एक प्रकार का बंधन होता है।

पेडू के भीतर का वरम।

पेडू के भीतर गर्भाशय के बंधनादि के संयोजक स्थानमें जो वरम होता है उसे पैलविक सेल्यूलाई टीज कहते हैं

कारण—यह व्याधि विशेष करके प्रसव अथवा गर्भ स्थित होने के पीछे हुआ करती है। गर्भाशय पर शस्त्र क्रिया करने से, सलाई डालने से गरमी से और स्त्री अंड तथा गभस्थान की व्याधियों के कारण यह रोग होता है। जोस्त्री कई बालकजन चुकी हो उसकी अपेक्षा प्रथम बार जनने वाली स्त्रीके यह रोग अधिक देखने में आता है। वरम एक ओर थोडे भाग में होता है अथवा पेडू में चारों ओर होता है।

लक्षण—कभी कभी यह व्याधि गुप्त रीति से होती है। और थोडे दिनतक जब तक पेडू में गांठसी बंधे तब तक रोगका खबर नहीं पड़ती है परन्तु विशेष करके रोगका आरम्भ होतेही उसके लक्षण मालूम पडने लग जाते हैं, जैसे कुछ ज्वर होने लगताहै, कमरमें दर्द होता है अग्नि मंद पडने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगती है, बेचैनी, निर्बलता, नाडी में तीव्रता, चहरे पर उदासी आदि लक्षण दिखाई देने लगते हैं, योनि के भीतर तर्जनी उंगली डालकर देखने से एक या दोनों ओर सूजन और दर्द मालूम होता है, पेडू के ऊपर हाथ लगाने से दर्द और गांठ सी मालूम होती है, पैलविक सैल्यूलाइटीज १४ से २१ दिनमें मिट जाता है, कभी पककर फूटने से पाव भी बहने लगता है, जाडे से कपकपी आती है, पसीना आता है नींद आना बन्द हो जाता है, प्यास लगती है, तथा पेडू में पीव पडने पर पीव की लपक के समान दर्द होता है, जो यह पेडू के अन्दर होता है तो पेट में, नहीं तो पेट के बाहर फूटता है अथवा अफरा या मूत्राशय में फूटता है तो इसका परिणाम बुरा निकलता है।

चिकित्सा—पेडू पर अलसी की पुलटिस बांधे अथवा गरम पानी से बार बार सिकताव करे। योनिमें नंबर १० और ११ के अनुसार बिलेडोना अथवा योनि में इसकी पिचकारी लगानेसे स्त्रीको बहुत आराम मालूम होता है, बिछौने में पडे रहना, उठने, बैठने चलने फिरने में रुकावट करना चाहिए, पेडू में बहुत दर्द होता हो तो एक्सट्रेक्ट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बिलेडोना चुपड़ कर पुलटिस लगावे, यदि आवश्यकता मालूम होतो थोड़ी जोक लगावे, दस्त बंद हो तो पिचकारी लगाकर दस्त करावे. जिस पथ्य से देह में बल बढ़े वह दे, पीव पड़ने के पीछे किसी जगह ऊपर दिखाई दे तो कश्तर लगाकर जैसी स्थिति हो वैसी मरहम पट्टी करे, शक्ति बढ़ानें वाली पौष्टिक दवाओं का सेवन करावे।

[पैलविक हिमाटोलसील]

इस रोग को गुजराती भाषा में मक्कलरोग कहते हैं, स्त्रियों के पेड़ू के गह्वर में यदि किसी स्थान में रक्त जम जाता है और निकलना रुक जाता है तब इस रोग को पैलविक हिमाटोलसील कहते हैं। यह रक्त पेरिटोनियम में भी जम जाता है अथवा उसके बाहर वाले सैल्यूला केटिश्यू में भी संचित हो जाता है, विशेष कर के यह रोग ऋतुकाल में होता है, ऋतु समय में यकायक आर्तव के रुकजाने से स्त्री अंड, गर्भाशय तथा उसके बन्धन की कोई शिरा फट जाने से पेड़ू में रक्त इकट्ठा हो जाता है इस रोग के और भी कई कारण हैं जैसे ऋतुकाल में १–विशेष परिश्रम, भारी बोझ उठाना, अतिरिक्त पुरुष संगम, सर्दी लगना आदि कारणों से भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह रोग हो जाता है, २-प्रेफियन फैलीकल के फटने के समय अत्यन्त रक्तस्राव, ३-जरायु के बाह्य प्रदेश वाली शिरा के फटने से अत्यन्त रक्तस्राव, ४-गर्भायुक्त जरायु के फटने से अत्यन्त रक्तस्राव ५-जरायु के भीतर ठीक गर्भ संचार न होकर ओवरी फैलपियन ट्यूब अथवा पैरीटोनियम में गर्भ का संचार होना। ऐसे गर्भ को ऐक्सट्रा यूटीरन प्रैगनैन्सी, कहते हैं ऐसा गर्भ अधिक नहीं बढ़ने पाता है और विदीर्ण होकर रक्तस्राव होने लगता है, ऐसे अनेक कारणों से पेडू में रुधिर जम जाता है, यदि तहसा कोई धमनी कट गई हो अथवा जरायु से बाहर वाला गर्भ विदीर्ण होकर अधिक रुधिर निकले तो वह स्त्री तत्काल मौत के मुँह में चली जाती है।

पैलविक हिम टोसील के लक्षण।

ऋतुकाल बीतनेके कुछदिन पीछेही जब रोगिणी अपने लिये गर्भवती जाने ऐसेही समय में रोगिणी को वेदना अधिक हो, वमन होने लगे, रोगिणी अकस्मात् अत्यन्त दुर्बल हो जाय, नाड़ी सूक्ष्म और वेगवती होजाती है, नाडी की गति एक मिनट में १२० वार से भी अधिक होजाती है, मुख की कांति विवर्ण अर्थात् फीकी पड़जाती है जलकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्यास अधिक हो जाती है, अत्यन्त रजःस्राव होने पर जैसे लक्षण होते हैं ठीक वैसे ही लक्षण इस रोग में भी प्रगट होते हैं, रजःस्राव एक दम कम होकर बन्द हो जाता है, यह इस रोग की प्रथम अवस्था है, तत्पश्चात् थोड़े दिन पीछे ऐसा मालूम होने लगता है कि पेड़ू में कोई एक पदार्थ इकट्ठा हो गया है मल मूत्र के त्याग में भी बहुत वेदना होती है, कभी कांच भी निकल आती है। पेड़ू के ऊपर एक फुलावट सी हो जाती है, यह फुलावट नाभि पर्य्यंत फैल जाती है। पहिले ही पहिले जब रोगिणी सहसा दुर्बल हो जाती है, उस समय शारीरिक गर्मी स्वाभाविक की अपेक्षा भी कम हो जाती है, किन्तु दो तीन दिन के बीच में ही ज्वर प्रकट हो जाता है, इस रोग के कारण पेड़ू में भयानक व्यथा होती है और पैलविक पेरीटोनाइटिस के सम्पूर्ण लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

यदि जरायु से बहिस्थ गर्भ विदीर्ण होकर रक्तस्राव हो तो ऐसा होने पर रोगिणी प्रथम अपने लिये गर्भवती समझती है तथा रोग ऋतु समय के बीत जाने के दो तीन सप्ताह पीछे होता है, यदि रक्तस्राव थोड़ी मात्रा में हो तो रोगिणी सहसा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुर्बल नहीं होती है। एक बार रक्तस्राव होकर वह रक्त पैलविस के भीतर जमा हो जाता है, इससे पीछे फिर रक्तस्राव होता है इस तरह हिमाटोसील धीरे धीरे बढ़ता चला जाता है, यदि फिर रक्तस्राव न हो तथा हिमाटोसील का आकार और न बढ़े तो धीरे धीरे रक्त का जलीय भाग बिलीन हो जाता है और हिमाटोसील का आकार छोटा हो जाता है और कठोर भी हो जाता है कभी पक भी जाता है और उसमें पीव पड़ जाता है। स्राव की अधिकता से एकाएक पेड़ू में दर्द होने लगता है, जो शरीर में भारी ढक्का लगा हो तो वमन, हाथ पांव का ठंडा होना, नाड़ी की मन्द गति, चहरे पर फीकापन और व्याकुलता के ये लक्षण होते हैं, जो स्राव थोड़ा होता है तो ऊपर कहे हुए कठिन लक्षण नहीं होते केवल पेड़ू में दर्द और बोझ मालूम होता है योनि में तर्जनी डालकर परीक्षा करने से पिछले भाग में गांठ सी पड़ जाती है और कमलकंद प्यूबिक (आग्रास्थि) की ओर झुका हुआ मालूम होता है।

हिमाटोसील की चिकित्सा।

रोग की प्रथमावस्था में रोगिणी के सहसा दुर्बल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो जाने पर यथोचित उत्तेजक औषध देना चाहिये जैसे ब्रांडी, ऐमोनिया आदिका प्रयोग करना चाहिये रोगिणी को स्थिर भाव से सुलाना चाहिये पेडू पर बर्फ लगावे। आर्गट गैलिक ऐसिड आदि रक्तस्राव को रोकने वाली दवाओं का प्रयोग करे। अत्यन्त वेदना हो तो खानेको मौरफिया दे अथवा मौरफिया का इंजैकशन देवे। इसके पीछे रोग की प्रथमावस्था बीत जाने पर ज्वर प्रकट होता है उस समय पैलविक पैरीटोनाइटिस के सदृश चिकित्सा करे। पहिले ही पहिले अस्त्र चिकित्सा कभी न करनी चाहिये। बीच बीच में परीक्षा कर के देखना चाहिये कि हिमाटोसील का आकार कम से छोटा होता जाता है वा नहीं, इससे पीछे जो पक उठे तो अत्यन्त सावधानता से जैसे पैलविक सैल्यूलाइटिस के फोड़े से पीव बाहर की जाती है, वैसे ही इससे भी पीव बाहर करनी चाहिये। जो क्रम से फुलावट कम होती हुई मालूम होने लगे तो अस्त्र चिकित्सा का कुछ भी प्रयोजन नहीं है।

यदि गर्भयुक्त जरायु विदीर्ण होकर अथवा अन्य किसी कारण से अधिक रुधिर निकलने लगे तथा पूर्वोक्त चिकित्सा से बन्द न हो तो ऐसा होने पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अस्त्र चिकित्सा की सहायता से रुधिर बन्द न किया जाय तो रोगिणी की मृत्यु अवश्यभावी है इस तरह की अस्त्र चिकित्सा बड़ी कठिन और विपत्ति पैदा करने वाली होती है, इस लिये इस प्रकार की अस्त्र चिकित्सा में जिनको पूरा अभ्यास नहीं है उनको ऐसी रोगिणी की चिकित्सा में भूलकर भी हाथ न डालना चाहिये।

आर्तव और उसके दोष।

जब स्त्री युवावस्था पर पहुँच जाती है तब वह ऋतुमती होती है। तेरह से लेकर पन्द्रह वर्ष की अवस्था होने तक ऋतु आरम्भ हो जाता है और तीस वर्ष तक जारी रहता है अर्थात् पैंतालीस वर्ष के समय में यह बन्द हो जाता है। कभी दो वर्ष पहिले वा पीछे भी रजोदर्शन होता है, उष्णदेशों में पहिले और ठण्डे देशों में देरसे होता है। धनी लोगों में यह पहिले होता है और मेहनत मजूरी करने वाले लोगों में देर से होता है।

हर महिने वा अठ्ठाइसवें दिन रजोदर्शन होता है गर्भस्थान का रंग लाल होजाता है और उसमें से रुधिर बहने लगता है यह रुधिर कालापन लिये हुए होता है और जमता नहीं है। इस रुधिर के न जमने का कारण यह है कि उसके साथ योनि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में ऐसिड मिला हुआ होता है। यह प्रवाह तीन से पांच छः दिन तक जारी रहता है और सब मिलाकर तोलने पर अनुमान तीन से चार आउंस तक होता है।

उसी समय ओवरी लाल वर्ण की होकर सूजी सी होजाती है उसमें से ओवम (स्त्री बजिक) छूट कर फलवाहिनी द्वारा गर्भस्थान की तरफ बहता है अर्थात् ओवरी और गर्भाशय एक ही समय में आरक्त होजाते हैं। सब प्राणियों और वनस्पति वर्ग में मादा (स्त्री जाति) की तरफ का बीज नियम पूर्वकपक्व होकर छूट पड़ता है और पुलिंग बीज का संयोग करता है। प्राणी में मादा का बीज पक्व स्थिति में आवे तब उसके चिन्ह से पहचानने में आता है, इसी तरह स्त्री में रजोदर्शन भी पक्व स्थित का एक चिन्ह है।

रजोदर्शन के समय स्त्री के देह में स्फुरण होता है, इससे उसका रुधिर जोश में आता है और मज्जातन्तु भी जोश खाते हैं।

ऋतु के समय ओवरी और गर्भस्थान आरक्त हो जाते हैं और उनके साथ साथ स्तन भी आरक्त और कठोर हो जाते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋतु के आरम्भ में समय के विषय में कोई नियम स्थिर दिखाई नहीं देता है, महिने की जगह दो तीन महीने भी चढ जाते हैं उस समय रुधिर अधिक प्रमाण में जाता है, पेडू फूल जाता है और बैठ जाता है तथा स्तनों के कठोर हो जाने से उनमें पीड़ा होने लगती है, वैसे ही चिन्ह पैंतालीस वर्ष के अनुमान ऋतु बन्द होने के समय मालूम होते हैं।

ऋतु बन्द होने का समय साधारण तथा पैंतालीस वर्ष की अवस्था है, तो भी कभी २ पचास वर्ष की अवस्था तक प्रसव देखने में आता है। अनुभव, न्याय, वैद्यक और शारीरिक धर्म के अनुसार ऐसा सिद्ध मानने में आता है, कि पचपन वर्ष के पीछे स्त्री को प्रसव नहीं होता है।

सगर्भावस्था में और बालक को दूध पान कराने के समय ऋतु नहीं आता है, जब तक सगर्भावस्था रहती हैं तब तक ऋतु बन्द रहता है। फिर गर्भस्थान में जो रुधिर हर महिने बहता है वह ऐसा मालूम होता है कि वह गर्भ के पोषण की ओर जाता है।

गर्भस्थान की अंतरत्वचा की रचना बदलकर और गर्भ के उछलने के अनुसार उसमें फेरफार होता है। उसमें से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रुधिर बहता रहे तो गर्भ नीचे को धसक जाता है कहीं कहीं इसके बिपरीत गर्भ रहने के पीछे एक दो महिने तक हर महिने ऋतु के सदृश प्रवाह जारी रहता है

दूध पिलाने के समय में जब तक बालक दूध पीता हो तब तक ऋतु नहीं आता है। आठ दस महिने से डेढ दो वर्ष तक बंद रहता है, तथापि इसके अपवाद भी बहुत हैं। किसी किसी स्त्री को प्रसव होने के पीछे दूसरे तीसरे महीने ही ऋतु आने लग जाता है। ऋतु आरम्भ होने से फिर गर्भ रहने की संभावना होती है, जो बालक मरा हुआ पैदा हो तो ऋतु जल्दी आरम्भ होजाती है, इसी तरह दूध पीते हुए बच्चे के मरजाने पर भी ऋतु शीघ्र प्रारंभ हो जाता है।

ऋतु के हुए बिना भी स्त्री को गर्भ रह जाने के उदाहरण देखने में आते हैं, इनके विषय में ऐसी धारणा होती है कि ऋतु का समय होने पर गर्भ रहजाने से आता हुआ ऋतु रुक जाता है।

कोई कोई ऐसा मानते हैं कि स्त्री को ऋतु न दिखाई देने पर भी बीज पकता [ओव्यूलेशन] जारी रहता है, इतना ही नहीं, किन्तु महीने के बीच में भी यह क्रिया तो चलती ही रहती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋतु काल में गर्भ स्थान, ओवरी, फलवाहिनी तथा स्तन में रक्त का भराव होता है और वे सूज जाते हैं, इससे पेड़ू में भारापन मालूम होता है, कमर दुखती है, शरीर में ग्लानि मालूम होती है, मनमें भी कुछ व्यग्रता होती है समय पाकर वमन भी हो जाती है, किसी को हिस्टीरिया सा हो जाता है। अत्यन्त परिश्रम करने वाली स्त्रियों के कुछ भी नहीं होता है।

जिस तरह गर्भावस्था में चहरा कृष्ण वर्ण धारण कर लेता है वैसे ही ऋतुकाल में कितनी ही औरतों के होजाता है। और आंख के नीचे कालापन की झलक मारती है।

आर्त्तव विकार के तीन भेद हैं, यथा (१) नष्टार्तव (२) पीडितार्तव (३) बहु आर्तव।

नष्टार्तव (ऐमेनोरिया)

यदि आदि से ही रजःस्राव न होता हो तो इसीको प्राकृतिक ऐमेनोरिया कहते हैं, इसमें थोड़ा खून निकलता है तथा कभी बिलकुलही बंद रहता है, इस रजःस्राव न होने के तीन कारण हैं।

यदि रजस्राव पैदा होता हो पर यह जरायु व योनि के छिद्र के अभाव से जो आर्तव के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निकलने के मार्ग में अड़चन होने से बाहर न निकल सकता हो तब इसे प्राकृतिक ऐमेनोरिया नहीं कहते हैं।

स्त्रियों की गर्भावस्था में तथा बालक के जन्म से कुछ दिन तक पीछे भी आर्तव नहीं निकलता है, यहभी प्राकृतिक ऐमोनोरिया नहीं है इससे पीछे स्त्री की आयु बड़ी होजाने पर जो अपने आप ऋतु बन्द होजाता है, वह भी प्राकृतिक ऐमेनोरिया नहीं है।

ऐमेनोरिया व रजोहीनता अनेक कारणों से पैदा होजाती है, जरायु व ओवरी की असंपूर्ण अवस्था में ऋतु नहीं होता है, इसी तरह जिन स्त्रियों को जन्म से ही ऋतु नहीं होता है, उनकी पीड़ा को प्राकृतिक ऐमेनोरिया कहते हैं जिनके सदा नियम के अनुसार ऋतु होते होते अन्यान्य कारणों से बन्द हो जाता है, उनकी पीड़ा को निमित्तज ऐमेनोरिया कहते हैं।

गुप्त र्तव।

इसमें आर्तव पैदा होजाता है पर कमलमुख व योनि मार्ग के संकोच से व योनि पलद की वर्तमानता से आर्तव बाहर निकलने नहीं पाता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और गर्भाशय में भरकर ऊंचा होजाता है और पेड़ू में गांठ सी हो जाती है और यह हर महिने ऋतु के चिन्ह के संग बढता जाता है।

समय पाकर फलवाहिनी मार्ग द्वारा रुधिर पेड़ू में जाने लगे तो विशेष हानिकारक होता है। आर्तव के इकट्ठा होनेके समय ज्वर आता है और पाइम्पा तथा सैप्टीसिमिया के सदृश विषमय रुधिर के चिन्ह उत्पन्न होजाते हैं । ऋतु बन्द होजाय और पेड़ू बढ़ने लगे तो ऐसा विचार होने लगता है कि गर्भ की स्थिति होगई है, गर्भ स्थान के बढ़ने से दस्त और पेशाव की रुकावट होजाती है अथवा बार बार जाना पड़ता है हर महिने पीडि-तार्तव के सदृश लक्षण पैदा होते हैं। वास्तविक रीति से इस नष्टार्तव को गुप्तार्तव कहा जाय तो भी चल सकता है क्योंकि आर्तव के चिन्ह होते हैं, पीड़ा होती है, आर्तव पैदा होता है पर बाहर नहीं निकलता है।

गुप्त आर्तव आरम्भ ही से व जन्म ही से अथवा प्रसव होने के पीछे होता है। गर्भाशय, योनिमार्ग और योनि मुखके चाहे जिस स्थान में संकोच हो जाता है, जिसके कारण रुधिर बाहर नहीं निकल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सकता है संकोच पूर्ण भी होता है और अपूर्ण भी। अपूर्ण संकोच का समावेश पीडितार्तव में होता है।

योनि पलट या दोनों ओर के ओष्ठों के संयोग से योनिमुख बन्द होजाता है। योनि मार्ग जन्म से ही सकडा हो तथा विशेष करके प्रसव काल में उसमें गडबड होने से आमने सामने की दीवाल चिपटी रहती है। पर कितनी ही बार गर्भस्थान का मुख प्रसव होने के पीछे बन्द होजाता है, इस के सिवाय गर्भाशय की गांठ टेढी होने अथवा और किसी कारण से उसका मुख बन्द रहती है।

जन्म ही की असंपूर्णता के कारण कभी ऐसा होता है कि योनि मार्ग अथवा गर्भस्थान, अथवा ओवरी का अभाव होता है और ऐसा भी होताहै कि जननेन्द्रि का मार्ग मल अथवा मूत्रके मार्गके साथ सम्बन्ध रखता है।

रुधिर के भीतर भरे रहने से योनिमार्ग, ग्रीवा गर्भाशय तथा अन्त में फलवाहिनी रुधिरसे भरी रहने के कारण फूल जाती है, और यह भी माना जाता है कि रुधिर पर दवाब पडने से उसका कोई अंश गर्भस्थान में आर पार होजाता और कभी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फलवाहिनी में रहकर रक्त पेडू में उतरता है।

हाइमेन को फोड़ने से गर्भाशय एक दम सुकड़ जाता है इसके कारणसे रक्त का प्रवाह तीन ओर को जाता है और पैरिटोनियम में जाने से उसमें वरम पैदा हो जाता है।

रक्तका अधिक भराव होजानेसे गर्भस्थान अथवा फलवाहिनी कभी कभी फट जाते हैं, गर्भस्थान में वरम हो जाता है, तथा ओवरी, फलवाहिनी गर्भ-स्थान आदि एक दूसरे से चिपटे रहते हैं।

गुप्तार्तव का प्रवाही पदार्थ काले रंग का नरम गुड़ के सदृश चिकना होता है। आर्तव के रुधिर का अधिकतर जलीय भाग सूखजाने से यह गाढा गाढा रह जाता है।

कोई कोई स्त्री बड़ी मोटी हृष्ट पुष्ट तथा सबल होती है इस कारणसे भी आर्तव बन्द होजाता है। इस तरह रज के बन्द हो जाने पर रोगिणी की देह और भी स्थूल हो जाती है इस अवस्था को पिथोरा कहते हैं पिथोरा होने से सब शरीर भारा-क्रांत हो जाता है, सिर में दर्द मुख आदि लाल रंग के हो जाने से नाना प्रकार के उपद्रव खड़े हो जाते हैं। जो हिस्टिरिया का रोग हो तो वह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी प्रबल होजाता है। तत्पश्चात् और २ स्थानों से भी रक्त निकलने लगता है, जैसे नाक से, मुख से व मलद्वार से रुधिर की वमन व खांसी भी होती है। रज का रक्त स्वाभाविक द्वार से न निकल कर अन्य स्थान से निकलने लगता है, ऐसी अवस्था को अंग्रेजीमें वाइकेरियस मैन्सट्रएशन कहते है।

नष्टार्तव के कारणों का श्रेणी विभाग।

(क) अन्यान्य व्याधियों के निमित्त से उत्पन्न रजस्राव का अभाव नीचे लिखी हुई व्याधियों के कारण हो सकते हैं।

१—रक्ताल्पता अर्थात् रज का कम होना थोड़ी अवस्था वाली स्त्रियों में क्लोरोसिस नामक रक्ताल्पता ही साधारणतया देखने में आती है।

(२) क्षय रोग जैसे यक्ष्मा, बहुमूत्र, पुराना ज्वर आदि।

(३) अर्श [बवासीर] स्करवी हिमोफिलिया पाकस्थली का घाव, पुराना उदर रोग, दुष्टक्षत बिगड़ा हुआ घाव (टयूबर कलौसिस) इत्यादि।

(४) स्नायुसम्बन्धी पीड़ा उन्माद, मैलैंकोलिया (मालीखोलिया)।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(ख) सुस्थकाय अथवा देखने में सब तरह से तन्दुरुस्त स्त्रियों की रजोहीनता। इसके तीन कारण हैं।

(१) गर्भावस्था। (२) जरायु अथवा योनि-द्वार में छिद्र का अभाव। ऐसी अवस्था में रितु तो ठीक समय पर होता है पर रज बाहर नहीं निकल सकता है। इस लिए रक्तस्राव भीतर ही रुककर हिमाटोकौलप्स अथवा हिमाटोमेट्रा रोगों को उत्पन्न करता है।

(३) जरायु अथवा ओवरीका अभाव अथवा असंपूर्णता अथवा वाद्धक्य, इन कारणों से दोनों यंत्रा का छोटा होजाना।

इन कारणों के सिवाय ठंड लगजाना, पलांवसक भीतर प्रदाह होना, ओवरी का प्रदाह अथवा अर्बुदादि कारणों से आर्तव नष्ट होजाता है।

रोग निर्णय-यदि बालिका की रितु होने की वयस बीतने पर भी रितुवती न हो तथा यौवन का विकाश भी न हो तब यह अनुमान करना चाहिए कि ओवरी व जरायु अच्छी तरह वृद्धि को प्राप्त नहीं हुए हैं। यदि प्रति मास किसी निर्दिष्ट समय पर यातना हो पर रितु न हो तो यह अनुमान करना चाहिए कि जरायु का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुख वा योनि अवरुद्ध हो गया है। पहिले नियमित रूप में प्रत्येक मास में ऋतु होता रहा हो किन्तु सहसा बंद हो गया हो तो समझ लेना चाहिये कि गर्भ का संचार हो गया है। तत्पश्चात् यह देखना चाहिये कि जरायु का प्रदाह, पैलविक पैरीटोनाइटिस आदि कोई रोग तो नहीं हुआ है। यह भी देखना चाहिये कि किसी प्रकार की शारीरिक पीड़ा तो नहीं है। यह बात रोगिणी की अवस्था देखने ही से मालूम होगा कि क्लोरोसिस वा रजोहीनता का रोग हो गया है।

नष्टार्तव का लक्षण।

ऋतु के समय जब जननेन्द्रिय के मार्ग के संकुचित होने के चिन्ह दिखाई दें तब उस समय हर महिने पेड़ू में चमक दर्द और चुभने की सी पीड़ा होती है। ऋतु काल बीत ने पर सब दुःख दर्द मिट जाता है और दूसरा महिना आता है तब ठीक उसी समय पहिले के समान लक्षण होते हैं थोड़े दिन पीछे पेड़ू में भराव होता है और ऐसा संदेह होता है कि गर्भ बढ़ गया है। गर्भ स्थान मोटा होकर नाभि पहुंच जाता है और कभी उससे भी ऊंचा हो जाता है। योनि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माग आर्तव से भर कर दस्त और पेशाव को रोकता है। फलवाहिनी के फूल जाने से गर्भस्थान की बगल में जुदी गांठ मालूम होती है। ज्वर आजाता है, बार बार बमन होतीं है, इसके फूट जाने से फलवाहिनी मार्ग द्वारा यह प्रवाही पेड़ू में जाता है तो पैरीटोनियम का बरम होजाता है। ऐसी रोगिणी के चहरे का रंग फीका पड़ जाता है। शरीर रक्तहीन हो जाता है, थोड़ा परिश्रम करने ही से उसे थकावट मालूम होने लगती है, दुर्बलता, सिर घूमना, कान में तें तें होना, शरीर के अनेक स्थान में वेदना. इत्यादि नष्टार्तव के लक्षण हैं। पिथोरा होने पर स्त्री स्थूल हो जाती है और उसके सिर में दर्द आदि होता रहता है ।

नष्टार्तव की चिकित्सा ।

इस रोग के उत्पन्न होने के विविध कारण ऊपर दिखाये गये हैं, उन्हीं उन्हीं कारणों के अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये ।

यदि किसी बालिका के ऋतु का समय उपस्थित होने पर भी ऋतु न हो तब उसके देह में साधारण तया बल पहुंचाने की चेष्टा करे, यहां पुष्टकारक खाने के पदार्थ हलका व्यायाम, मन में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्फूर्ति बढ़ाने वाले उपायों का विधान करना चाहिए अत्यन्त मानसिक परिश्रम, रात्रि जागरण अपौष्टिक द्रव्यों का आहार, प्रभृति कारणों से ऐसी दशा हो जाया करती है, अत्यन्त बाल्यावस्था में कठोर परिश्रम तथा पढ़ने लिखने में घोर परिश्रम करने से ऐसी घटना होजाया करती है अनेक स्त्रियों के जन्म से ही दोनों ओवरी अपरिपक्व रहती हैं. इस कारण से भी ऋतु नहीं होता है, इन सब स्थलों में भी पुष्टि कारक आहार, बल कारक औषधादि के सेवन से साधारण स्वास्थ्य की उन्नति करने पर कुछ फल निकल आता है, यदि बालिका क्लोरोसिस पीड़ा से ग्रस्त हो तो उस रोग का प्रतीकार करना चाहिए। क्लोरोसिस तथा रक्त हीनता रोग की प्रधान चिकित्सा अच्छे लोह से बनी हुई दवाओं के सेवन से करावे।

लोह अनेक प्रकार का होता है, इनमें से फैरीसल्फेट, टिंकचर फैरी पार क्लोराइड आदि उग्र लोह है। तथा साइट्रेड आफ आइरन, टारटरेट आफ आयरन, डायोकाइज्ड आइरन आदि मृदु लोह हैं।

उग्र लोह के सेवन से कोष्ठबद्धता, शिरः पीडा,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अजीर्ण आदि उपद्रव हो जाते है, मृदुलोह से ये नहीं होते हैं ।

यदि उग्रलोह सहन हो सकता हो तो मृदुलोह की व्यवस्था करना चाहिये, लोहनिर्मित औषध के सेवन काल में उन उपायों का भी अवलंबन करना चाहिये जिनसे प्रति दिन दस्त साफ होता रहे और अजीर्णादि न होने पावे, लोह निर्मित औषध बहुत अधिक मात्रा में देना उचित नहीं है, क्योंकि इसका संपूर्ण देह में परिपाक नहीं होने पाता और अधिकांश मल के साथ बाहर निकल आता है । लोह का निरंतर सेवन करते २ मल का रंग काला हो जाय तो लोह की मात्रा कम कर देनी चाहिये, रक्त हीनता रोग की सलफेट आफ आयरन सबसे उत्कृष्ट दवा है, सलफेट आयरन किसी तिक्त बलकारक औषध के साथ मिलाकर देनी चाहिये, फैरीसलफेट २ ग्रेन, इनफूजन कैलम्बा अथवा इनफूजन कैशिया १ आउंस प्रतिदिन तीन बार सेवन करावे ।

यदि ऊपर के प्रयोग से रोगिणी को खुलकर दस्त न आता हो तो नीचे लिखा हुआ प्रेशक्रिपशन (प्रयोग) दे, इस से अधिक उपकार होगा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फैरीसलफेट २ ग्रेन, ऐसिड सल्फ डायल्यूटेड ५ मिनम मैगसलफेट १ड्राम, स्पिरिट क्लोरोफौर्म २० मिनम, ऐक्वेया मैन्थपिप १ आउन्स, इसको दिन में तीन बार सेवन करे, फैरीसलफेट तथा एलोज इनकी गोलियां बनाकर देने से लोह सेवन का फल तथा कोष्ट शुद्ध होजाता है। फैरीसलफेट एक्सीकेटाल २ ग्रेन और ऐक्सट्रैक्ट एलोज चौथाई ग्रेन, यह गोली की परिमाण है, भोजन से पीछे दिन में तीन वार सेवन कराना चाहिये। इसके सिवाय ऐलोज जरायु को भी उत्तेजित करता है।

लायकर फैरी पारक्लोराइड के व्यवहार करने से भी बहुत लाभ होता है, लाइकर फैरीपारक्लोराइड २० मिनम. टिंकचर नक्सवोमिका ३ मिनिम, मैगसफलेट १ ड्राम, स्पिरिट क्लोरोफौर्म ५ मिनम, जल १ आउन्स, यह भोजन के पीछे दिन में तीन बार सेवन करावे।

क्विनाइन, स्ट्रिकिनिया, नक्सवोमिका, आरसेनिक प्रभृति भी रक्तहीनता से उत्पन्न हुए ऐमेनोरिया के पक्ष में बहुत उपकारक है।

फैरिएट क्विनाइन साइट्रास इस रोग में बहुत लाभदायक दवा है, साथ ही पुष्टिकारक भोजन, वायुसेवन, आदि की व्यवस्था करना उचित है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यथेष्ट परिणाम में मछली का मांस, दूध, ताजा फलमूल आदि सेवन करना उचित है।

रजोहीनता के पक्ष में पारमैगैनिट आफ पुटास नाम वाली औषधि विशेष गुणकारक होती है इस की एक दो ग्रेन की मात्रा गोली के रूप में प्रति-दिन दो तीन बार सेवन कराना चाहिये।

यदि प्लियोरा से उत्पन्न हुआ ऐमेनोरिया हो तथा रोगिणी की देह बहुत स्थूल और बलवान हो तो घी, चीनी, मिष्टान्न आदि मेदा को बढाने वाले आहार जहां तक हो सके वहां तक कम देना चाहिये। साधारण भोजन की व्यवस्था उपकारी होगी व्यायाम और परिश्रम हितकारी होता है। बीच बीच में विरेचक औषध देना भी हितकारी है। यकृत पर जो दवा उपकारी होती है उसका प्रयोग करे क्योंकि प्लियोरा पर प्रायः यकृत के रक्त की अधिकता होती है, यह डाक्टर, आइस्ट का मत है।

यदि मासिक रजःस्राव के समय सर्दी लगगई हो और सहसा रजःस्राव बन्द हो गया हो तो सिरमें दर्द, मस्तक में भारापन, कटि प्रदेश में वेदना, पेडू में भारापन आदि उपद्रव उपस्थित होते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि रोगिणी हिसटीरिया रोगसे पीडित हो तो भी ऊपर कहे हुए उपद्रव प्रगट होते हैं।

ऐसी अवस्था उत्पन्न होने पर गरम जल में कमर तक डुबोकर बैठा देनेसे बहुतही शीघ्र फिर ऋतु होने लगता है और संपूर्ण उक्त लक्षण जाते रहते हैं। पेडू पर गरम जल से पसीने देना और पुलटिस लगाना भी उपकारक होता है, गर्म जल में मष्टर्ड मिलाकर उसमें कमर तक डुबो कर बैठा रखने से भी बहुत लाभ होता है, ५ सेर जल में एक आउंस मष्टर्ड मिलाई जाती है। इस क्रिया को मष्ठर्डहिप बाथ कहते हैं। एक बडे टब में गरम जल भरके आधे घंटे तक रोगिणी को कमर तक डुबाकर बैठाये रखना चाहिये, डाक्टर वारिंग कहते हैं कि एक मुट्ठी तिलको बारीक पीसकर गरम जल में मिलाकर उस स्त्री को कमर तक डुबाकर बैठाने से रज भी निकलने लग जाता है।

जो ठंड लगजाने से सहसा रज निकलना बंद हो गया होतो पसीना लाने वाली दवाओं का प्रयोग करना चाहिये, इस दशा में लाइकर ऐमन ऐसीटेटिस का अधिक मात्रा में देना विशेष उपकारक होता है, लाइकर ऐमन ऐसीटेटिस, तथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाइट्रिक ईथर, वा सलफूरिकईथर एकत्र देना भी उपकारी है।

लाइकर ऐमन ऐसिटेटिस ४ ड्राम, नाइट्रिकईथर आधा ड्रम, एक्यूआ कैम्फर १ आउंस, यह सब एक मात्रा है, यह चिकित्सा प्रत्येक रितुकाल से पहिले कई दिन तक करना उचित है, प्रत्येक रितु काल में तीन चार दिन तक रोगिणी को प्रतिदिन प्रातःकाल के समय मष्टर्डहिप बाथ देना चाहिये तथा रात्रि के समय पेड़ू पर गरम गरम पुलटिस लगावे, हर एक रात के समय ४ ग्रेन पिलऐलोज ऐटमार नामक औषध की एक मात्रा देने से बहुत लाभ होता है, जरायु का रक्ताधिक्य होने पर पूर्वोक्त रीति से चिकित्सा करे तथा सङ्ग सङ्ग विरेचक औषधियों का व्यवहार भी करतारहे, ऐ-लोज तथा सलफेट औफ मैगनेशिया आदि सब अवस्थाओं में उत्तम विरेचक है, जरायु का रक्ता-धिक्य तथा उसके कारण से उत्पन्न लक्षणों के उपस्थित होने पर रोगिणी के ऊरुदेश, वा गुप्त स्थान में दो तीन जोंक लगा कर रुधिर निकाल डालने से भी उपकारी होता है, इसके सिवाय योनि के बाहर लेविया पर अथवा जरायु के मुख पर जोक लगाना हितकारी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्लिथोरा से उत्पन्न ऐमोनोरिया तथा वाइकेरियस मैन्सटरूएशन हो जाने पर भी इसी तरह जरायु में जोक लगाकर प्रत्येक रितुकाल में दो चार वार रक्त मोक्षण करने से उपकार होता है।

जरायु व ओवरी की गड़वड़ होने से रजोहीनता उपस्थित होने पर जो संपूर्ण दवा जरायु को उत्तेजित करने वाली होवे सब दवायें सेवन कराई जा सकती हैं, इस विषय में ऐलोज सबसे अच्छी औषध है इसके अतिरिक्त आइज़ औफ़ सेवाइन ५ से १० मिनिम तक देना भी हितकारक है, किसी किसी जगह आर्गट भी उपकारक है, इन सब उपायों से रजोहीनता में आराम न होने पर कोई कोई जरायु में स्थानीय चिकित्साका परामर्श देते हैं वाइलेटर द्वारा जरायु का मुख खोल देना, जरायु के भीतर स्टैम पैमारी का लगाए रखना, आदि इन सब उपायों से जरायु से रक्तस्राव कराते रहना परन्तु इस प्रकार से रक्त निकाल देना प्राकृतिक रितु नहीं कहा जा सकता, रितुकाल के समय अन्यान्य सब परिवर्तनों से कुछ भी नहीं होता, ऐसी सब आसुरिक चिकित्साओं से किसी प्रकार का प्रकृत फल नहीं मिल सकता किन्तु बहुत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बार यह होता है कि इससे रोगिणी का उपकार के बदले अपकार होता है, इसलिए ऐसी चिकित्सा कदापि न करे।

क्रौनिक मेटराइटिस से जो ऐमेनोरिया होता है उसमें टिंक्चर आयोडाइन की ५ से १० मिनिम की मात्रा देना विशेष उपकारक है।

जरायु व ओवरी की असंपूर्णावस्था में चिकित्सा का कोई विशेष फल नहीं होता है। ऐसी अवस्था में ऐलेकट्रिसिटी [बिजली] का प्रयोग करके ओवरी को उत्तेजित करने से कभी कभी उपकार होता है। फैरोडाइजेशन यन्त्र को एक ऐलेक्ट्रेड सेक्रम नाम की अस्थि पर और एक ओवरी के ऊपर लगाकर स्रोत का प्रयोग किया जाता है। यदि जरायु में प्रदाह होता हो और रोगिणी दुर्बल हो तो ऐसी अवस्था में बिजली लगाना उचित नहीं है।

पैलविक सैल्यूलाइटिस पैरीटोनाइटिस, अथवा ओवेराइटिस रोगों के कारण जो ऐमेनोरिया राग पैदा हुआ हो तो इन सब अवस्थाओं में रोग का प्रतिकार करने की चेष्टा करना चाहिए। किसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और प्रकार की शारीरिक पीड़ा हो तो उसका भी प्रतिकार करना चाहिए, जो शरीर की दुर्बलता से ऐमेनोरिया हुआ हो तो बल कारक औषध और बल कारक पथ्य का विधान करना चाहिए।

अन्य डाक्टरों का मत।

योनि स्रावके मूत्रमार्ग तथा मलमार्ग के बीचमें नश्तर लगाकर उंगली से ही गर्भस्थान तक रास्ता करके उसमें नली डाले रखना चाहिए, योनि मार्ग में कोई परदा आमने सामने की दीवार के संयोग में हो तो उसे काट डाले और फिर न जुड़ जाय इस लिए उसमें लिट भरता रहे।

जो योनि मुख के ओष्ठ जुड़ गये हों तो उनको काट कर जुदा करदे। जो योनिपटल में जुड़ापन हो तो उसे फोड़दे। उसके फोड़ने से पेड़ू में वरम होकर मृत्यु होजाना संभव है। अब यहां यह प्रश्न उठता है कि किंचिन्मात्र फोड़ कर स्राव को धीरे धीरे बहने देना चाहिए अथवा बड़ा काटकर के एक दम निकाल देना चाहिए, उसको फोड़ने में भीतर हवा न जाने पावे इसकी सावधानी रखनी चाहिए।

असिपिरेटर से थोड़ा थोड़ा स्राव निकाल कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीछे हाईमेन को काट दे, यही उत्तम बात है।

किसी किसी को आर्तव दो वर्ष आगे पीछे आता है इसको नष्टार्तव मान लेना न चाहिए।

युवावस्था वाली स्त्री को क्लोरीसिस होने पर पांडु रोगीवत होजाने से आर्तव दिखाई नहीं देता है, रुधिर पतला हो जाता है उसमें रज का कण भाग कम होजाता है, शरीर फीका दिखाई देता है, सुस्ती आजाती है नाड़ी जल्दी जल्दी चलती है, डोलने फिरने में दम चढ़ता है, दस्त में कब्ज हो जाता है, भूख लगती नहीं है। धूल मिट्टी, खटाई आदि व्याधिकारक वस्तुओं के खाने पर मन दौड़ता है, पांव और देह पर लाल नीले चकत्ते उठ आते हैं, आर्तव के बदले सफेद पानी अधिकता से जाता है, पांडु रोग और इस रोग में इतना ही अन्तर है कि पांडु रोग में रक्त कण और पानी का प्रमाण रुधिर में एकसा होता है लाल कण घटते जाते हैं और सफेद कण बढते जाते हैं, परन्तु इस रितु पांडु में रक्तकण बिलकुल कम हो जाते हैं और पानी का प्रमाण बढ़ जाता है।

युवावस्था के समय शरीर में बड़ा फेरफार होता है, ओवरी और गर्भस्थान प्रफुल्लत होकर अपना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काम आरंभ कर देते हैं, इतना ही नहीं बल्कि बालिका का स्वरूप, देहकी गठन बदल कर युवती की दिखाबट धारण करती है। शरीर, छाती, रुधिर, समझ, मन आदि जोर पर आकर प्रफुल्लित हो जाते हैं, इस क्रम में कुछ फेर फार पड जाने से शरीर फीका और तेजोहीन हो जाता है। रितु आता नहीं है, रितु न आने से रितु-पांडु रोग हो जाता है। रितु पांडु होने से रितु बन्द रहना है यह कहना कठिन है, ये दोंनों बातें सङ्ग देखने में आती है,रितु आरम्भ होने के पीछे कभी कभी आर्तव पांडु हो जाता है और रितु बन्द हो जाता है। आर्तव के आरम्भ होने से लोहू सुधरता है और लोहू सुधारने पर आर्तव आरम्भ होता है।

बहुत बार ऐसा होता है कि नष्टार्तव के साथ बांई तरफ के स्तन के नीचे कमर में छाती में दर्द हुआ करता है। आर्तव पांडु के साथ कुछ ज्वर का आरम्भ भी हो जाता है।

नष्टार्तव का दूसरा कारण गर्भस्थान अथवा ओवरी का विकार और न्यूनता भी है।

आर्तव पांडु की चिकित्सा में लोह पधान है। पर बिलकुल अकेला लोहका व्यवहार करना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुकूल नहीं होता है और उलटा इससे ज्वर, अजीर्ण तथा दस्त हो जाते हैं। लोह के साथ क्षार की आवश्यकता है। ऐसे टेटआफ ऐमोनिया के साथ लोह का व्यवहार करे और उसके साथ ही टिंकचर डिजीटेलिस तथा विरेट्रम और कलम्बा लाभकारक है। जुलाब का क्षार देने के पीछे कम्पाउन्ड आयरन मिक्सचर, ईस्टन सिरप तथा कैमिकैल फूड देना चाहिये। कम्पाउन्ड आयरन मिक्सचर की विधि—हीरा कसीस २५ ग्रेन, कार्बोनट आफ पुटाश ३० ग्रेन, हीरा बोल ६० ग्रेन, धोई हुइ शक्कर ६० ग्रेन जायफल को स्पिरिट ४ ड्राम, गुलाबजल साड़े नौ आउंस, इन सबको मिलाल। मात्रा एक से दो आउन्स तक।

आयोडाइड आफ पुटेशियम ५ ग्रेन, दिन में दो तीन बार देने से उपकारक होता है।

केशर, इसट्रिकिनिया तथा थोड़ा अर्गट लोह मिलाकर देना अधिक लाभकारक है।

दस्तकी रुकावट हो तो ऐलुआ हीराबोल तथा केसर की गोली करके देते रहना चाहिये।

पिलफैरिएट ऐलौज ५ ग्रेन दोनों समय देना चाहिये। नीचे लिखी गोलियां भी लाभकारक हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नं० १५ एलुआ १ ग्रेन, हीराबोल २ ग्रेन, केसर १ ग्रेन। ऐक्सट्रैक्ट जैनशन १ ग्रेन इन सबको मिलाकर एक गोली बनावे और दिन में ३ बार ले ले।

[नं० १६] फैरी सल्फस १ ड्राम, पोटास बाई-कार्बोनस १ ड्राम, पोटास टारट्रस १ ड्राम, गम ट्रागाकान्थ २४ ग्रेन। इन सबको मिलाकर २४ गोलियां बनावे और दिन में दो तीन वार दो दो गोलियों का सेवन करावे।

दवा के साथ पौष्टिक पथ्य देवे और तन मनकी स्फूर्ति के लिये योग्य व्यायाम करने में चूकना नहीं चाहिये।

ऋतु काल आवे तब उसको उत्तेजना देने के लिये गरम पानी और राई टबमें डालकर कमर तक बैठना चाहिये।

कभी जांघके मूलमें जोक लगावे। गैलवैनिक पसरी पहने, अथवा ग्रीवा में ल्यूनर कास्टिक लगावे।

ऋतु कालमें सर्दी में बैठने से, ठण्डे पानी में नहाने से, ऋतु बन्द हो जाता है। आर्तव के एका एक बन्द हो जाने से ज्वर, पेडू में दर्द

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होता है। जो पेडू से रक्तस्राव हो तो विशेष हानि कारक है। गर्भस्थान तथा ओवरी में दर्द होता है योनि लालवर्ण हो जाती है। बुरे समाचारों के सुनने से आर्तव बन्द हो जाता है। ज्वर से भी आर्तव रुक जाता है।

आर्तव के बन्द हो जाने से मन और शरीर सुस्त रहते हैं। काम की इच्छा नहीं होती और न गर्भ ही रहता है।

हृदय, फेंफड़ा, गुर्दा आदि के रोगों के कारण शरीर के निर्बल पड़जाने से आर्तव बन्द रहता है। रोग के चले जाने पर जब देह में शक्ति आ जाती है, तब आर्तव फिर आने लग जाता है बहुत मोटे देह वाली स्त्री को आर्तव कम आता है। ऐसी स्त्री के आर्तव बन्द हो जाने से उसके शरीर में उतना ही रुधिर बढ जाता है और वह बढा हुआ रुधिर अपने निकलने के लिये कोई न कोई मार्ग निकाल लेता है किसी स्त्री के ऋतुकाल के समय धातु बहा करती है, किसी के नाक, वमन, दस्त आदि के रस्ते से रुधिर निकलता है, कभी फेफड़े में होकर कफ के द्वारा निकल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाता है, कान में होकर मुख में रुधिर आ जाता है, एक ऐसी रोगिणी देखी गई जिसकी त्वचा में से रुधिर के कण निकलते थे, इस तरफ किसी न किसी प्रकार रुधिर को रास्ता देकर कुदरत अपनी तराजू के पलड़े बराबर कर लेता है।

इलाज–लोह, आयोडाइड ऑफ पुटाश, इसट्रिकिनिया आदि पहिले कही हुई दवा देना चाहिये, शारीरिक और मानसिक कसरत करना, ऋतुकाल के समय सर्दी से बचना और देह को आराम देना जरूरी है।

ऐलुआ २० ग्रेन, सेबीन आइल १२ मीनिम, हीराबोल ६० ग्रेन, इस दवा को कोकम के तेल के साथ चार गोली करके प्रतिदिन रात के समय एक एक लगावे और पथ्य भी उचित देवे।

(पीडितार्तव)

स्वाभाविक रितुस्राव में किसी प्रकार की पीड़ा नहीं होती है और रितुमार्ग में भी किसी प्रकार की रुकावट नहीं होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रितुकाल में दर्द के साथ आर्तव निकलने का नाम पीडितार्तव कष्टरज और डाक्टरी में डिसमैनोरिया कहते हैं। पीडितार्तव एक प्रकार का रोग है पर इसके उत्पन्न होने के कारण जुदे २ हैं, १–बादी, २–वरम, ३–गर्भस्थान, ४–फलवाहिनी मार्ग का उपद्रव तथा ५– ओवरी का दोष।

१–बादी (न्यूरेलजिया) के कारण से आर्तव के समय चबक मारती है यह कोमलांगी श्रीमती शहर में बसने वाली औरतों के विशेष करके होता है, ऐसी औरत दर्द सहने में असमर्थ होती है, इस लिये थोडा दर्द होता हो तो भी बडा दीखता है, रितु समय के एक दो दिन पहिले पीडा होने लगती है, पेडू में चवक और टीस मारा करती है, पेडू में से पांव तक दद फैल जाता है, प्रसव बेदना कासा दर्द होता है, कभी कभी पीडा इतनी बढ जाती है, कि रोगिणी पृथ्वी पर इधर की उधर लेटने लगती है, पेडू पर हाथ लगाने से दर्द होता है।

पीडा के कारण से रोगिणी कायर होजाती हैं, वमन, हिसटीरिया, मस्तकशूल, हिचकी, भ्रम आदि उपद्रव होते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर्तव के शुरू होने पर, पीडा विशेष कर कम होजाती है और रुधिर का जमा हुआ गुटका निकल जाता है। कभी पीडा कम न हो तो जब तक आर्तव जारी रहता है, तब तक पीडा रहती है।

आरंभ में गर्भस्थान स्वाभाविक स्थितिपर होता है, पर धीरे धीरे उसकी बृद्धि और वरम हुए बिना नहीं रहते, विवाह के पीछे गर्भ रहने पर यह पीडा बंद हो जाती है, कभी ऐसा भी होता है कि न तो दर्द बन्द होता है न गर्भ ही रहता है और रोगिणी का सब जीवन दुखदायक हो जाता है।

इलाज-अत्यन्त पीडाहोती है क्लोरोफार्म सुंघाना चाहिये पर ऐसा समय कदाचित् ही आता है; तथा अन्य इलाजों से भी वेदना शांत हो सकती है। डोवर्स पाउडर ४ से १० ग्रेन, लाडनम देने से पीडा कम हो जाती है।

जो औरत हिसटीरिया वाली हो तो कस्तूरी १ ग्रेन, कपूर २ ग्रेन और हींग २ ग्रेन, इन तीनों की एक गोली बनाकर उसके साथ दे, पुटास ब्रोमाइड २० ग्रेन तीन तीन घंटे के अंतर से देवे,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मौरफिया को पिचकारी पेडू की त्वचा में लगावे, अफीम तथा वेलोडोना की बत्ती योनि में लगावे ।

गर्भस्थान बाहर के वरम के कारण चलायमान न हो इससे ऋतु के समय पीडा होती है, गर्भस्थान की गांठ और मसाने के कारण वह बांका होजाय अथवा उसका मार्ग रुकजाय तो ऋतु के समय पीडा होती है ।

पीडतार्तव में विशेष करके मार्ग संकुचित हो जाता है, इसका विशेष प्रमाण रुधिर के बाहर निकलने पर से होता है, उस रुधिर में रुधिर की गांठें होती है अथवा चाशनी के समान गाढा होता है, रुधिर के भीतर रुके रहने के कारण यह फेरफार होता है ।

प्रसव अथवा गर्भपात होने के पीछे गर्भस्थान फिर ठीक समय तक संकुचित न होकर अपनी पूर्वस्थिति में न पहुँचे तो उसमें सूजन रहजाती है ।

गर्भस्थान की परीक्षा करने पर वह स्थूल मालूम होता है और दवाने पर दुखता है ।

गर्भस्थान के रूधिर के निकलने में जो कठिनता होती है वह उसके मुखके संकोच के कारण से होती है, गर्भस्थानका आगे पीछे वा वगलकी ओर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ढलाव होजाने से बांका होजाने से, उसके वरम से, उसकी दीवाल में जो गांठ हो जाती है उस पर दवाव पड़ने से अथवा बाहर के वरम के कारण गर्भाशय के जकड़ जाने से रुधिर के बहने में हानि पहुँचती है !

आयोडाइड औफ लैड ४० ग्रेन अफीम ४० ग्रेन ऐक्सट्रेक्ट बेलेडोना १२ ग्रेन, कोकम का तेल आवश्यकतानुसार। कोकम के तेल में ऊपर लिखी सब दवा मिला कर आठ बत्ती बना कर रात के समय एक एक योनि में धरे।

पेडू पर गरम पानी का सिकताव, लाडेमन डाल कर पुलटिस लगाना, पादस्नान करांना, पेडू पर ब्लिस्टर लगाना इनसे भी लाभ होता है।

वरम से पीडितार्तव।

वरम या रक्तसंचय के कारण से गर्भस्थान सूज जाता है और इसलिये ऋतु कालमें पीड़ा होती है यह दर्द औरत के शुरू से होता है, या ऋतु होने के पीछे या प्रसव के पीछे होता है। सूजन के कारण गर्भाशय का मुख सुकड़ जाता है, इससे आर्तव निकलने में रुकावट और कष्ट होता है।

गर्भस्थान सूजकर बदनमें भारी होने के कारण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीछे या आगे की ओर झुक जाता है, और बांका होने के कारण उसको अंतर्मुख संकुचित होजाता है। आर्तव के प्रवाह की रुकावट पीडितार्तव एक स्थूल कारण है।

गर्भस्थान का बाहर वाला मुख कभी कभी स्वाभाविक छोटा होता है अथवा ग्रीवा लम्बी तथा जकड़ी हुई होती है, इस कारण से वह पोली नहीं होती। गर्भस्थान के भीतर वाले मुख का संकोच विशेष करके गर्भस्थान के बांकपन अथवा घूम जाने के कारण हुआ करता है।

ऐसी रुकावट के कारण गर्भाशय को जोर मारना पड़ता है और वह सूज कर मोटा होजाता है, इससे आर्तव अधिक आता है। इसी रीति से फलवाहिनी तथा ओवरी सूज जाती है, विवाह होने के पीछे इस स्थित में वृद्धि होती है, इस अवयव में वरम होजाता है प्रदर उत्पन्न होता है, संभोग के समय कष्ट होता है, गर्भ रहता नहीं है और रहता भी है तो जल्द गिर जाता है।

लक्षण—आर्तव के साथ पेडू में दर्द, कमर में फटने की सी पीडा, जांघ में टीस मारना आदि उपद्रव होते हैं। जो प्रवाह अच्छी तरह होता है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो दर्द भी कम होजाता है। परन्तु उसमें प्रसवकी सी वेदना होकर रुधिर की गांठ पड़ती है। रुधिर की गांठ के गिरने के कारण से स्त्री को गर्भ गिरने का वहम होजाता है, पीड़ा के होने से वमन होती है, शरीर में ग्लानि, बेचैनी और चित्त में व्यग्रता होती है, स्तनों में दर्द रहता है, ऋतुकाल में भी थोड़ा दर्द होता रहता है, प्रदररोग जारी होजाता है, उंगली डालकर परीक्षा करने से गर्भाशय में दर्द होता है। मुख में सूजन मालूम होती है, सलाई डालने पर दुःख होता है, रक्त अधिक निकलता है।

इलाज—गर्भाशयके मुखको चौड़ा करना चाहिये, यह किसी शस्त्र कुशल डाक्टर से कराना चाहिये, अनाड़ी के द्वारा कराने में जान की जोखम होती है।

ओवरी के दोष से भी पीडितार्तव होता है आर्तव का खास सम्बन्ध ओवरी के साथ है, । ओवरी में बीज के पक जाने पर छूटने के समय आर्तव आता है, ओवरी की रचना में फेरफार होने से वह रक्त वर्ण रहती है। और बीज के पक्व होने पर अलग पड़ने की क्रिया में अन्तर पड़ता है इस से दर्द होता है, यह दर्द पेड़ू के बीच में नहीं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किन्तु एक तरफ को होता है। हाथ से परीक्षा करने पर ओवरी पर हाथ लगाने से दर्द होता है योनि में तर्जनी के प्रवेश करने से एक ओर की ओवरी दुखती है और गर्भाशय की तरफ झुकाव रहता है, ऋतुकाल के बीच में दुख रहता है, ओवरी के सूजे रहने से गर्भाशयमें सूजन आजाती है तथा दर्द के साथ रुधिर बहुत बहता है। ओवरी के दर्द के साथ हिजटीरिया का सम्बन्ध रहता है और ओवरी की व्याधि से पीडित औरतों को हिजटीरिया का रोग होजाता है हिजटीरिया वाली औरत का पेडू देखने पर अधिकतर एक ओर अथवा दूसरी ओर भी हाथ लगाने से दूखता है। ओवरी के ऐसे वरम के कारण अनेक तरह की मानसिक व्याधियां पैदा होजाती हैं, तथा ज्वर भी आ जाता है।

इलाज–ओवरी के स्थान पर जोंक लगाना, ब्लिस्टर लगाना, सेक करना हितकर है। योनि में अफीम की बत्ती लगाना गरम पानी में थोड़ा लाडमन डाल कर पिचकारी लगाना लाभदायक है,। फ्लोरस हाइड्रस, तथा ब्रोमाइड और पुटास पीने को देना चाहिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फल वाहिनी के सुकड़ जाने से भी आर्तव दर्द के साथ हुआ करता है।

पीड़ितार्तव में ऐसा हुआ करता है कि गर्भाशय के भीतर की खोल उतर आया करती है। गर्भाशय के भीतर के परदे में से ऐपथीलियम हर समय आर्तव के रक्त में मिलती रहती है, गर्भ के रहने तक इस भीतर के पर्दे में बड़ा फेर फार होता हैं और उसकी थैली गर्भ के साथ बाहर आ जाती है तथा दूसरा परदा पैदा होजाता है।

बहुत पीड़ा होने पर आर्तव के साथ कभी कभी बाहर निकल पड़ता है। अधिकतर उसके साथ गर्भाशय का वरम होजाता है। दो तीन दिन बहुत कष्ट होने के पीछे प्रसव वेदना होने पर खोल निकलता है, तदनन्तर रक्त बहुत बहता है। इस दर्द वाली औरत को भारी कष्ट होता है। आतव बहुत निकलता है और गर्भ भी नहीं रहता है. गर्भ रहता भी है तो गिर पड़ता है। तथा जो गर्भ पूर्णावस्था पर पहुंच जाय तो आराम भी होजाता है।

इलाज–पीड़ा के लिये मौरफिया, क्लोरल आदि दवाइयां देनी चाहिए। जोक लगावे, सेक करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अफीम की बत्ती लगावै। गर्भाशय का मुख चौड़ा करके उसके भीतर ल्यूनर कास्टिक अथवा टिंकचर आयोडीन लगावे, क्लोरेट आफ पुटास देने से भी लाभ होता है।

जितने समय तक दवा चल रही हो उसके बीच में संभोग की मनाई है।

डाक्टर पुलिनचन्द सान्याल कहते हैं कि इस रोग में रजःस्राव के समय बड़ी यंत्रणा होती है।

शरीर के जिस किसी अंग में कोई कष्ट होता है उसी के साथ यह वेदना भी मिल जाती है, जैसे पाकाशय दुर्बल हो तो किसी प्रकार को गरिष्ठ वस्तु खाने से पेट में वेदना होती है। आंख की ज्योति कम पड़ जाती है।

दृष्टि अच्छा काम नहीं करती है। यदि ठीक रीति से देखने की चेष्टा की जाय तो कपाल और आंखों में दर्द होने लगता है, इसी स्वाभाविक नियम के अनुसार यदि ओवरी अपना काम सुचारु रूप से न करती हो यदि रज की हीनता वा अधिक रजःस्राव हो तो इन सब दशाओं में थोड़ी थोड़ी बेदना होती रहती है।

ऐमेनोरिया तथा मैनजोरिया पीड़ाओं के साथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रायः थोडे विस्तार वाली वेदना हुआ करती है, इन दो अवस्थाओं में वेदना होती तो है परन्तु यह वेदना उक्त दोनों पीडाओं में अनेक प्रकार के लक्षणों के बीच में एक ही होती है, इन दो अवस्थाओं के अतिरिक्त ऋतु सम्बन्धी एक और अवस्था होती है, जिसका प्रधान लक्षण रजःस्राव के समय की दारुण वेदना होती है, प्रायः इसी पीडा का नाम डिसमैनोरिया होता है। डाक्टर मैथ्यूस वैनकन कहते हैं कि ऋतुकाल में जरायु बीच बीच में संकुचित होकर भीतर वाले रक्तादि को बाहर करता है। जरायु का यह संकोचन वेदनायुक्त होने पर डिसमैनोरिया कहलाता है।

डिसमैनोरिया चार प्रकार का होता है न्यूरेलजिक डिसमैनोरिया, वा स्नायविक कष्टरज। कनजैसटिव डिमैनोरिया व रक्ताधिक्यजनित कष्टरज-औब्सट्रकटिव डिसमैनोरिया वा व्याधिजनित कष्टरज, स्पैसमोडिक डिसमैनोरिया आक्षेपयुक्त कष्टरज

न्यूरैलजिक डिसमैनोरिया।

जो स्त्रियां देर में ऋतुवती होती हैं अथवा जिनकी ओवरी विलंब से परिपक्व अवस्था में पहुंचती है उन सब के इस प्रकार की डिसमैनोरिया हुआ करती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋतुकाल में ऋतु के प्रगट होने से दो एक दिन पहिले ही से वेदना का प्रारम्भ होता है, फिर रक्त दिखाई देने के पीछे पहिले तीन दिन इस वेदना की भारी वृद्धि होती है, यहां तक होता है कि रोगिणी दर्द के मारे छटपटाती है और धरती में लोट पोट होजाती है । तत्पश्चात् धीरे धीरे वेदना कम होती चली जाती है, वेदना पेडू, पीठ, कमर, जांघ और उरुओं में हुआ करती है ।

बीच बीच में वेदना कभी कम होजाती है और कभी बढ जाती है, कभी कभी प्रसव वेदना की तरह ठहर ठहर कर वेदना होती है पेडू पर हाथ लगाने से दर्द होता है, इसके सिवाय सिर में दर्द और हिजटीरिया की वेदना भी प्रगट होजाती है। जिन सब स्त्रियों के यह रोग होता उनके माथे में दर्द रहता है उनका काम में जी नहीं लगता है। धारणा और स्मरण शक्ति जाती रहती है मृगी आदि दौरा के वेगों का आक्रमण होते हुए अन्यान्य स्नायविक व्यधियां उपस्थित होजाती हैं। किसी किसी स्त्रीको अपने पतिके साथ सहवासकरने में भी वेदना होने लगती है। जो ऐसी स्त्री को गर्भ रह जाताहै तो प्रसव वेदना की भी अत्यन्त वृद्धि होतीहै।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थोड़ी अवस्था वाली स्त्रियों जिनके दो एक वर्ष चढ़कर रितु होता है, उन्हीं को अधिकतर यह रोग हुआ करता है, इसके सिवाय किसी किसी स्त्री के बहुत दिन तक बिना कष्ट रजःस्राव होता रहता है और सहसा यह रोग आक्रमण कर बैठता है। रितु काल में सर्दी आदि के लगने से सहसा रितु बन्द हो जाने से भी इस रोग की उत्पत्ति हो जाया करती है, प्रसव होने पर अथवा गर्भ गिरने पर जरायु का प्रदाह भी इस रोग का कारण हो सकता है। जरायु का प्रदाह अच्छा भी हो जाता है पर रितु काल के समय रोग आही जाता है।

कनजैस्टिव डिसमैनोरिया।

इस प्रकार के डिसमैनोरिया में जरायु से रक्त अधिक परिमाण में निकला करता है। यह पीड़ा छोटी अवस्था वाली स्त्रियों की अपेक्षा बड़ी अवस्था वाली स्त्रियों के अधिकतर देखने में आती है जिनके यह पीड़ा होती है, उनके पेड़ू और कमर में सदा ही बोझ मालूम हुआ करता है, अनेकों के बवासीर का रोग भी हो जाता है। प्रत्येक रितु काल में दो तीन दिन तक रजःस्राव अच्छा नहीं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होता है और पेड़ू तथा कमर में दर्द होता रहता है वेदना रितु के आरम्भ होने से दो एक दिन पहिले आरंभ होजाती है और रितु काल में तथा दो एक दिन पीछे तक बनी रहती है।

वेदना हर समय बनी रहती है, जब रोगिणी को नींद आजाती है तब बेदना कम होजाती है। एक ही समय में अधिक परिमाण में रक्त निकल जाने पर भी वेदना कम हो जाती है। इस तरह रक्त स्राव होने पर जरायु के रक्त की अधिकता भी कम हो जाती है, और इस कारण से वेदना भी कम हो जाती है, कभी कभी प्रथम स्राव अच्छी तरह नहीं होता है और वेदना भी शान्त नहीं होती है, इस सूरत में रितु के कई दिन तक पेड़ू में जरायु के स्थान पर एक प्रकार की ऐसी वेदना होती है जिस में दप दप शब्द निकलता है, पेशाव करते समय भी अनेक बार रोगिणी को वेदना का अनुभव हुआ करता है, पेड़ू में हाथ से दबाने पर वेदना होती है, इस के पीछे जब फिर रितु काल आता है तब अत्यन्त यन्त्रणा उपस्थित होती है।

इस प्रकार के डिसमैनोरिया की पीड़ा में किसी को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रजःस्राव अधिक होता है और किसी को इतना कम होता है कि वह नहीं के बराबर है, किसी के एक बार रजःस्राव होकर कुछ काल के लिए बन्द होजाता है। और फिर एकसाथ अधिक परिमाण में निकल जाता है। किसी के रक्त के साथ रक्त की ग्रन्थियां भी निकला करती हैं।

प्रसव के पीछे जराय जब स्वाभाविक रीति से सकुंचित नहीं होती है तब वह स्वाभाविक की अपेक्षा बड़ी होती है, ऋतु काल में सर्दी लगने व मानसिक उद्वेगादि कारणों से ऋतु के सहसा बन्द होने पर इस प्रकार की डिसमैनोरिया होती है, इसे सब इनबौल्यूशन कहते हैं।

बात व गठिया से जो स्त्रियां ग्रसित होती हैं उनके भी एक प्रकार की पीड़ा होती है जिसमें रज कष्ट से निकलता है तब यह कनजैसटिव डिसमैनोरिया का रूप धारण करके प्रकाशित होती है।

औब्सट्रक्टिव डिसमैनोरिया।

जरायु से रक्त निकलने का द्वार संकुचित व रुका हुआ होने के कारण इस प्रकार की बाधक वेदना उपस्थित होती है। अस इनटार्नम व अस एक्सट्रार्नम संकीर्ण होनेपर अथवा बांका होनेपर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐसी घटना हो जाया करती है, इसके सिवाय और भी बहुत से कारण उपस्थित हो सकते हैं। जैसे रक्त का छींछड़ा आदि अस के मुख पर अटक कर अस के छिद्र को बन्द कर देता है, सारविक्स के भीतर अस्त्र का प्रयोग सारविक्स का कैनसर अथवा फाइब्रोइड आदि कारण से सारविक्स का नाला बन्द होकर इस पीड़ा को उत्पन्न कर सकता है।

इस प्रकार के पीडितार्तव में ऋतु के समय अत्यन्त वेदना होती है और रक्त थोड़ा थोड़ा कर के निकलता है।

ऐसा होने पर सारांश की बात यह है कि जो कष्ट रज के साथ अनेक प्रकार की स्नायु सम्बन्धी यंत्रणा और उपद्रवों की अधिकता हो तो सिरमें दर्द, कमर और ऊरूओं में चवक, कमर, पीठ, जांघ में वेदना तथा हिजटीरिया आदि व्याधियां खड़ी हो जाती है तब इसका नाम न्यूरैलजिक व वातज पड़ता है। यदि कष्ट रज के साथ जरायु का रक्ताधिक्य बर्तमान होता है तब इसकोकंजैस-टिव नाम दिया जाता है और जरायु के छिद्रकी संकीर्णता के कारण यदि बाधा हो तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रक्त स्राव अच्छी तरह नहीं होता है तब इसको औब्स्ट्रकटिव डिसमैनोरिया बोलते हैं यदि जुदी २ डिसमैनोरिया के भिन्न भिन्न लक्षण दिखाये गये हैं, तो भी स्वाभाविक रीति से विचार करने पर ये ही तीन प्रकारके लक्षण सब प्रकार की डिसमैनोरियाम कुछ न कुछ पाये जाते हैं। जिन सब स्त्रियों के स्नायुयंत्र सहज ही में उत्तेजित होजाते हैं। ऐसी स्त्रियों के किसी कारण से भी पीडितार्तव हुआ हो वा नहीं, वेदना के समय उनके अनेक प्रकार की स्नायु से उत्पन्न पीडा उपस्थित होती है और कष्ट भी बहुत होता है।

और किसी प्रकार की बाधा से प्रेरणा किया हुआ रक्त अच्छी तरह न निकल सकता हो तो जारायु हाइपैरिमिटया (उत्तेजना) हो जाती है। जो ऐसा हो कि किसी प्रकार की बाधा से रक्त न निकल सका हो केवल अस की संकीर्णता से ऐसा हुआ हो तो यह भी नहीं है तब इसके और और भी सामान्य कारण वर्तमान हो सकते हैं। जैसे रक्त का छींछडा अस के मुख पर अटक गया हो, और उसके कारण से थोडी देर के लिये छिद्र का अवरोध हो सकता है। साराविक्स के नाले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की श्लेष्मिक झिल्ली के फूल जाने से भी ऐसी अवस्था हो जाया करती है जरायु का प्रदाह होने से सारविक्स का नाला फूलने से भी छिद्रकी रुकावट होजाती है तब देखना चाहिये कि जरायु के रक्त की अधिकता के कारण जरायु की श्लेष्मिक झिल्ली के फूल जाने से औव्सट्रकटिक डिसमैनोरिया हुआ है ।

यदि पीडितार्तवकी व्यथा के साथ पेड़ू में अधिक दर्द हो और उसके संगज्वर भी हो तो इस अवस्था को प्रदाह युक्त पीडितार्तव कह सकते हैं इसे अंग्रेजीमें इनफ्लेमेटरी डिसमैनोरिया कहते हैं ।

यदि पीडितार्तवके साथ ठहर २ कर प्रसव वेदना की तरह दर्द उठे, तब इस अवस्था को आक्षेप युक्त पीडितार्तव कहते हैं,इसी को डाक्टर स्पैजमोडिक डिसमैनोरिया कहते हैं । इस रोग में वेदना अधिक होती है, यह वेदना हर समय नहीं रहती प्रसव वेदना की तरह रुक रुक कर उठती है, इस तरह वेदना बहुत समय तक स्थायीरूप में नहीं रहती है । रोगिणी के सोने पर भी वेदना कम नहीं होती जरायु के भीतर रक्त के टुकड़ो के अटक जाने पर ऐसी वेदना रुक रुक कर हुआ करती है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जरायु की उत्तेजना के कारण पीड़ितार्तव हो तो ये लक्षण होते हैं कि ऋतु के होने से दो तीन दिन वा एक सप्ताह पहिले ही से वेदना आरम्भ हो जाती है। तथा थोड़ी थोड़ी वेदना तो हर समय ही हुआ करती है। तत्पश्चात् ऋतु होकर रक्त स्राव होने पर वेदना की निवृत्ति हो जाया करती है, यदि रक्त के निकलने के कष्ट के कारण डिसमैनोरिया उत्पन्न हुई हो तो कुछ घंटे पहिले व्यथा होती है और यह व्यथा बीच बीच में कम होकर फिर होती है। इससे रक्त अच्छी तरह न निकलने के कारण जम कर जरायु के भीतर रुधिर का लोथरा बना देता है। अतएव यदि रक्त थोड़ा निकले और उसके संग रक्त का लोथड़ा निकले तब ओब्सट्रकटिव डिसमैनोरिया के होने का अनुमान किया जाता है।

कभी कभी डिसमैनोरिया रोग में अधिक रक्त स्राव होता है और उसके संग जरायु की उत्तेजना वा सामान्य प्रदाह का लक्षण वर्तमान होता है, रोगिणी को थोड़ा ज्वर होता है, कमर और पेड़ू में दर्द तथा रुक रुक कर प्रसव वेदना की तरह पीड़ा उठा करती है। अर्थात् इनफ्लेमैटरी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

डिसमैनोरिया [प्रदाह युक्त पीड़ितार्तव] के संपूर्ण लक्षण उपस्थित हो जाते हैं। और रक्त स्राव भी अधिकता से होता है। इस तरह की पीड़ा को मैट्राइटिस हिमरेजिया अर्थात् रक्त स्राव युक्त जरायु का प्रदाह कहते हैं।

पीड़ितार्तव के अनेक कारण योनि की परीक्षा करने के सिवाय अच्छी तरह जानने में नहीं आ सकते हैं। योनि परीक्षा करने में नीचे लिखी बातों पर ध्यान देना चाहिये।

[१] असकी संकीर्णता [२] जरायु अथवा पैलविक का प्रदाह। [३] जरायु वा ओवरी की अनेक प्रकार की पीड़ा (४) फ्राइब्रोइड (५) जरायु रिट्रोफ्लैक्शन आदि आदि।

डिसमैनोरिया की चिकित्सा।

जिन जिन सब कारणों से डिसमैनोरिया होती है उन उन कारणों को ठीक करके उसके अनुसार ही चिकित्सा करने से प्रकृत फल की आशा होती है।

असकी संकीर्णता आदि चिकित्सा यथास्थान वर्णन हुई है और आगे की जायेगी अन्यान्य कारणों से उत्पन्न हुए रोगों की चिकित्सा भी यथा स्थान वर्णित है। सुतरां इस जगह हम केवल उन उपायों को लिखते हैं जो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शीघ्रफल देने वाले हैं। जरायु के रक्त की अधिकता के कारण रोग होने पर सल्फेट औफ मैगनेशिया का जुलाब दे। ब्रोमाइड औफ पुटेसियम की पूरी मात्रा खाने को दे। रोगिणी को आधे घंटे तक गरम जल के टपमें कमर पर्यन्त डुबाकर बैठाये रखने से ऋतु खुलासा होगी। रोगिणी को सर्दी न लगने दे, स्नान गरम जल से करावे। योनिमें ग्लैसरीन की टैन्फस का प्रयोग करे। ग्लैसरिन रक्त के जल के अंश को सोख कर रक्त की अधिकता को कम कर देगी। साफ रुई की बत्ती ग्लैसरिन में भिगो कर योनि के भीतर प्रवेश करदे। इस पोटली में एक लंबा डोरा बांध कर बाहर लटकता रहने दे जिससे उससे बाहर खींचने में सुगमता हो। पेडू पर गरम पुलटिस बांधना चाहिये। रक्त मोक्षण अर्थात ब्लडलैटिंग कनजैसटिव डिसमैनोरिया की प्रधान चिकित्सा है। सारविक्स में जोंक लगा कर रक्तमोक्षण करना ही सब से उत्तम है।

जोक लगाने का विवरण यथास्थान वर्णित है। सारविक्स में जोक लगाना असंभव हो तो योनि में फरग्यूसन का स्पैक्यूलम प्रवेश करके तीक्ष्ण छुरी के अग्रभाग से सारविक्स में तीन चार जगह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छेद करना भी ठीक है रक्त मोक्षण के पीछे रोगिणी को दो तीन बिछौने पर पड़ी रहने देना चाहिये।

लाइकर ऐमन ऐसेटेटिस, ईथर प्रभृति खाने को देने से लाभ होता है। सलफूारक इथर ३० बूंद स्पिरिट क्लोरोफोर्म १५ बूंद। लाइकर ऐसेटेटिस आधा आउन्स, जल १ आउंस यह एक मात्रा है, दिन में तीन बार देना चाहिये। ऐसेन्स आफ जिंजर यथा गरम जल दोनों को मिलाकर पीने को देने से यंत्रणा कम हो जाती है। ऐक्सट्रेक्ट बिलेडोना आधा ग्रेन, इसकी गोली बनाकर प्रति दिन में तीन बार ऋतु काल के तीन दिन खाने को देने से अच्छी तरह रक्त स्राव होगा और वेदना भी जाती रहेगी। ब्रोमाइड औफ कैम्फर मात्रा २ से १० ग्रेन तक। ब्रोमाइड औफ पुटास मात्रा ५ से ३० ग्रेन। कैनाविस इंडिका। ये दवा सब उपकारक हैं।

जो रक्त स्राव की अधिकता हो और दर्द भी हो तब कैनाविस इंडीका बहुत गुणकारक होती है। वेदनाको रोकने के लिये ऐंटी पाइरन [मात्रा] ५ से २० ग्रेन] फैनासिटिन (मात्रा ५ से १०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ग्रेन) प्रभृति। कोलटार से प्राप्त हुई सब औषधें अत्यन्त उपकारी होती है।

डाक्टर हारमेन के मतमें गुइलाकम डिसमेनोरिया की अत्यन्त उत्कृष्ट औषध है। गुइयाकेम १० ग्रेन की मात्रा में दिन में तीन बार सेवन करना चाहिये। ऋतुकाल के सात आठ दिन पहिले ही से यह चिकित्सा आरम्भ कर देनी चाहिये हिजटीरिया हो तो हींग खिलाना विशेष उपकारक है। इसकी मात्रा ५ ग्रेनकी ३ बार में दे। रोगिणी दुर्बल हो तथा स्नायुजनित पीड़ा आदि हो तो बहुत दिन तक बलकारक औषधियों का सेवन करावे। यंत्रणा रोकने के लिये अफीम तथा मारफाइन दवा उचित है। अफीम की पिचकारी लगाना भी विशेष गुणकारक है। रोग के पुराने पड़ जाने पर अफीम से बनी हुई औषधियां जहां तक हो सके वहां तक कम देना ही भला है। स्पैजमोडिक डिसमैनोरिया में टैन्ट अथवा डाय लेटर देकर अस का मुख चौड़ा करने से सब यंत्रणा जाती रहती है। मैट्राइटिस हिमरेजिका होने पर लिक्विड एक्सट्रेक औफ आरगट मात्रा आधाड्राम) तथा टिंकचर औपियम मात्रा २० से ३० मिनिम मिलाकर देना चाहिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हेगार के वाइलेटर द्वारा जरायु का मुख चौड़ा करके क्योरेट नामक यंत्र द्वारा जरायु में गहराई करने से बहुत बार उपकार हुआ है। अनेक स्त्रियों के ऐसा भी हुआ है कि संतान होने पर मामूली आकार वाला ओव्सट्रकटिव डिसमैनोरिया में आराम हो गया है, किन्तु गुरुतर प्रकार की बाधा होनेपर गर्भ रहने की संभावना कम होजाती है तथा प्रायः स्त्रियां वन्ध्या रहजाती हैं।

उपरोक्त किसी प्रकार की चिकित्सासे डिसमैनोरिया को आराम न हो तथा वेदना असह्य और तन्दुरुस्ती में हानिकारक हो तो अस्त्र चिकित्सा द्वारा जरायु अथवा ओवरी को काटकर ठीक कर दे इससे ऋतु बन्द होता है और साथ साथ डिसमैनोरिया में भी आराम हो जाता है।

अति आर्तव (मेनोरेजिया)

ऋतुकाल में जितना स्वाभाविक आर्तव बहता हो उससे अधिक परिमाण में बहने लगे अथवा प्रवाह बहुत दिन तक होता रहे अथवा थोड़े २ दिन के अन्तर से आर्तव दिखाई दिया करे इसे बहु आर्तव या मैनेरोजिया कहते हैं।

अति आर्तव का कारण।

कमलमुख अथवा गर्भाशय का कैन्सर [अ-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बुंद] गर्भाशय का मस्सा अथवा उसको किसी प्रकार की गांठ हो गई हो तो बहुत परिमाण में और बार २ रक्त स्राव हुआ करता है।

गर्भाशय का अथवा कमल का बड़ा वरम और स्त्री अंड के वरम के कारण आर्तव का प्रवाह अधिकता से होता है। गर्भाशय में शेष रह गया हो उस कारण से अथवा गर्भाशय किसी ओर को झुक गया होय उस कारण से बहुत दिन तक आर्तव बहता रहता है, कभी ऐसा भी होता है, कि पांडु रोग और प्लीहोदर इत्यादि रोगों में रुधिर फीका पड गया हो इससे भी आर्तव अधिक बहता है।

अति आर्तव के लक्षण।

रुधिर थोड़ा थोड़ा आया करता है, अथवा रुधिर का बहाव एक साथ होकर फिर बन्द हो जाता है अधिक रुधिर बहने में शरीर खाली हो जाता है और फीका पड जाता है श्वास चढ़ता है, और कभी जाडा चढता है, वमन होती है, मन्दाग्नि हो जाती है मल का अवरोध हो जाता है, तथा मन बेचैन और व्याकुल रहता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अति आर्तव की चिकित्सा।

रोगी को आराम देना, अच्छा पथ्य, तथा ग्राही औषधियों का देना हितकारी हैं, जैसे गैलिक ऐसिड शुगर लेड, सलफूरिक ऐसिड, तज, लौह इत्यादि, रुधिर को रोकने के लिये आरगट एक बड़ी उत्तम दवा है।

गैलिक ऐसिड ४५ ग्रेन, डाइल्यूट सलफूरिक ऐसिड ४५ मिनिम, लिक्विड ऐक्सट्रेक्स औफ आरगट डेढ़ ड्राम, तज का पानी३आउस, इन सब दवाओं को मिलाकर इसमें से एक तिहाई दिन मे तीन वार देवे।

शुगर लेड १२ ग्रेन, डायल्यूट ऐसेटिक ऐसिड २ ड्राम, लाइकर मौरफिया ४ मिनिम, टिकचर सिनेमन २ ड्राम, तज का पानी ४ आउन्स, इस दवा को मिलाकर इसमें से चौथाई भाग हर तीन घण्टे में देवै, योनि पर ठंडे पानी का कपड़ा रक्खे, जो वरफ मिल जाय तो थोड़ा योनि में रखना चाहिये, टौनिक ऐसिड की पिचकारी लगाना हित है, अथवा इसकी बत्ती योनि में प्रवेश करे, यदि इससे रुधिर बन्द न हो तो योनि में स्पंज या रुई का फोआ भरदे, आर्तव न हो इतने समय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में टिंकचर आफ स्टील, हीरा कसीस, फिटकरी और रस कपूर आदि दवाइयों का प्रयोग करे।

फिटकरी ३० ग्रेन, हीरा कसीस ८ ग्रेन, डाइल्यूट सलफूरिक ऐसिड ३० मिनिम, तज का पानी साढे चार आउन्स, इन सब दवाओं को मिलाकर हर चार घण्टे में इसका तिहाई भाग देवे।

रस कपूर १ ग्रेन, नव सागर १० ग्रेन, टिंकचर औफ स्टील २ ड्राम, पानी १२ आउन्स, इस दवा को मिलाकर इसका बारहवां भाग दिन में तीन वार देना चाहिये।

(नोट) नवसागर को लैटिन में ऐमोनीक्लोरीडम और अंगरेजी में क्लोराइड औफ ऐमोनियम कहते हैं, यह हाइड्रोक्लौरिक ऐसिड और ऐमोनिया को मिलाने से बनता है, इसकी मात्रा ५ से ३० ग्रेन तक है।

जो अर्बुद मस्सा व गांठ आदि रक्त प्रवाह का कोई कारण मालूम हो तो उसका योग्य उपाय करना चाहिये, जो वाहर से कोई कारण न मालूम होता हो तो स्त्री अंड की परीक्षा करे अथवा कमल मुख को चौड़ाकर गर्भस्थान के भीतर की परीक्षा करे और जो कारण मालूम हो तो उसके अनुसार चिकित्सा करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्य डाक्टरों का मत।

डाक्टर पुलिनचन्द्र सान्याल अपने ग्रंथ में लिखते है कि ऋतुकाल में अधिक स्राव होने को मेनोरीजिया कहते हैं, तथा अनिश्चित समय में जरायु से जो रक्तस्राव अधिक परिमाण में होता है इसे मैट्रोरेजिया वा रक्त प्रदर कहते हैं।

वे दोनौं प्रकार के रोग एक ही कारण से उत्पन्न होते हैं।

उक्त रोग के कारण।

[१] रक्त की हीनावस्था, जैसे स्कार्वी, पारपूरा आदि।

[२] जरायु की धमनी और शिरा आदि किसी कारण से शिथिल अथवा व्याधिग्रस्त हो जैसे गरम देश में निवास, दुर्बलता, किडमियों में प्रदाह।

[३] शरीर में रुधिर की बृद्धि, भोगबिलास से रुकावट, परिश्रम न करना।

[४] हृदय, फुसफुस, और यकृत की उत्तेजना तथा पीडा।

[५] जरायु के रक्त की अधिकता, जरायु का स्थान से हट जाना, खाशकर रिट्रोफ्लैकशन, जरायु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में पलपिस वा और किसी प्रकार का ट्यूमर वा जरायु का प्रदाह।

(६) ओवरी की पीड़ा।

(७) फैलोपियम ट्यूवर का प्रदाह।

(८) स्त्रीसहवास में अधिकता।

(९) जरायु के बीच में फूल का टुकडा वा और किसी पदार्थ का होना।

(१०) जरायु का बडा हो जाना।

(११) जरायु का श्लैष्मिक झिल्ली की पीडा, जैसे बाइलसएनमैट्रीटिस इत्यादि।

(१२) अत्यधिक परिश्रम और मानसिक उत्तेजना,

(१३) प्रथम ऋतु के प्रारंभ होने का समय अथवा ऋतु का एक साथ बन्द होने का समय।

रितु विशेष में किसी को कम और किसी को अधिक रजःस्राव होता है। यदि स्त्री बलवान हो, डिम्बकोष अत्यन्त उत्तेजित हो, और जननेन्द्रिय बहुत ही अधिक उग्रहो तथा पुरुष संगम की इच्छा बहुत बलवती हो. तब ऋतु अधिक परिमाण में होता है। ऐसी स्त्रियों में से किसी का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महिने में दो बार ऋतु आते हुए देखा गया है। रोगिणी के गर्भवती हो जाने के निकट पास भी जरायु से रक्त स्राव हो सकता है । इस प्रसंग में विशेष रूपसे धात्री विद्या की पुस्तकों में लिखा गया है उनको देखना चाहिये किन्तु जरायु से अत्यन्त रक्तस्राव होने पर वह गर्भ से संश्लिष्ट है वा नहीं, इस बात को सबसे पहिले स्थिर करना चाहिये । रक्तस्राव के गर्भ संश्लिष्ट होने पर गर्भके अन्यान्य लक्षण भी दिखाई देने लगते हैं । रोगिणी के गर्भवती होने पर साधारण तथा गर्भ स्राव वा उसका उपक्रम, जरायु से बाहर स्थितगर्भ प्लेसेंटा प्रिविया प्रसव आदि कारणों में भी रक्त स्राव हुआ करता है ।

रोगका अच्छी तरह प्रतीकार करने के लिये रोगके कारण का अनुसंधान करके चिकित्सा करना उचित है । ये सब उपाय यथास्थान इस पुस्तक में लिखे गये हैं । इस जगह केवल उन उपायों का वर्णन है जो शीघ्र आराम करने वाले हैं । सबसे प्रथम रक्त स्रावकी अधिकता रोकने का प्रबंध ही प्रधान चिकित्सा है । इसका कारण यह है कि रक्तस्राव की अधिकता से रोगिणी मृत्यु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पथका अवलंबन भी कर जाती है। रोगिणी को बिछौने पर निश्चल भावसे शयन करादे, रोगिणी जितना गरम सह सकती हो उतने ही गरम जलका डूश योनि के भीतर देने से बहुत बार लाभ होते हुए देखा गया है किसी प्रकार का मद्यादि उग्र पेयद्रव्य अथवा उत्तेजक आहार देना निषिद्ध है। यदि कोष्ठबद्धता या दस्तकी रुकावट हो तो सलफेट आफ मैगनेशिया खाने को देकर दस्त करावे, टिंकचर डिजिटैलिस (१० से १५बूंद) तीन चार घण्टे के अन्तर से देना भी हितकारक है। आर्गट, स्ट्रिकिनिया, क्विनाइन तथा डिजी-टेलिस मिलाकर देने से रक्त बन्द हो जाता है। ऐक्सट्रेक्ट आर्गट लिक्विड आधा ड्राम, टिंकचर डिजीटेलिस १० मिनिम, लाइकर स्ट्रिकिनिया ३ मिनिम, टिंकचर ओपियम १५ मिनिम, जल १ आउंस, इसकी १ मात्रा दो दो घन्टे के अन्तर से दो तीन बार देने से ही रक्त बन्द होजाता है।

रक्त स्राव के संग यंत्रणा हो तो कैनेवस इंडिका भी विशेष उपकारक है। टिंकचर कैनेविस १५ मिनिम की मात्रा में देना चाहिये, ओवरी की उत्तेजना वा रक्त की अधिकता होने पर ब्रोमाइड आफ पुटेसियम की पूरी मात्रा देने से विशेष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपकार होता है। इस पीड़ा में हाइडेसटिस फैलोडेनसिस एक विशेष उपकारी दवा है, अत्यन्त रक्तस्राव होता हो तो अफीम की पूरी मात्रा देना भी हितकारक है। पेडू के ऊपर ठंडे जल की पट्टी रखना अथवा बरफ रखना भी उपकारक है, योनि के भीतर बरफ का एक टुकड़ा रखने से भी लाभ होता है। ऋतु के प्रथम तीन दिन ठंडे जल वा बरफ का प्रयोग न करना चाहिये, गैलिक ऐसिड २० ग्रेन की मात्रा में तीन तीन घण्टे के अन्तर से दे। ऐरोमैटिक सलफूलरिक ऐसिड २० मिनिम की मात्रा में चार चार घण्टे के अन्तर से दे। टिंकचर हैमोमैलिस ५ मिनिम की मात्रा में दिन में तीन बार दे ऐसी औषध भी इस रोग में उपकारी होती है।

इन सब उपायों से रक्त बन्द न होने पर स्पंजका टेन्ट लगाकर इससे सारविक्स का मुख प्रशस्त करने से भी उपकार होता है। इन सब उपायों के निष्फल होने पर यन्त्र (औजार) की सहायता से जरायु का मुख फैलाकर उंगली के द्वारा जरायु की गहराई की परीक्षा करके देखना चाहिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जरायु गह्वर में किसी प्रकार का अर्बुदादि न होने पर क्योरेट नामक यन्त्र द्वारा जरायु के गह्वर को अधिक करदे, फिर टिंकचर आयोडीन और कारबौलिक ऐसिड समान भाग मिलाकर इसे जरायु के सब गहराव में लगादे। इस तरह करने पर कुछ दिन के लिये रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

अत्यन्त अधिक रक्तस्राव होने पर झटपट जरायु का मुख प्रसारित करके आयोडाफरमे गज का पतला लम्बा टुकड़ा लेकर उससे जरायु का गह्वर भरदे, इसको प्लुगिंग दी यूटीरस कहते हैं, प्लग को लगातार २४ घण्टे से अधिक जरायु के गह्वर में नहीं रखना चाहिये, रक्तस्राव के बन्द होने पर अन्यान्य उपायों का अवलंबन करना चाहिए। पुनर्वार ऋतु होने का समय आने पर रोगिणी को बिछौने पर शयन कराना चाहिये, ठंडे जल में स्नान करना गुणकारक है, यदि रोगी रक्त हीन और दुर्बल हो तथा जरायु का रक्ताधिक्य वा प्रदोह दूर हो गया हो तो बहुत दिन तक लौह से प्रस्तुत की हुई औषधों का प्रयोग करना चाहिए टिंकचर फैरीक्लोराइड तथा आरगट मिलाकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देना उपकारक है, सिनकोना, क्विनाइन, नाइट्रिक ऐसिड, डाइल्यूक्लोरिक, वा सलफूरिक ऐसिड आदि बलकारक औषध उपकारी होती हैं।

वाईकेरियस मैन्सट्रूएशन।

रजःस्राव न होने पर कभी कभी भिन्न भिन्न स्थानों द्वारा रक्त निकलता है, ऐसी अवस्था को वाइकेरियस मैन्सट्रूएशन कहते हैं, यह रोग ऐसे नोरिया रोग का साथी है।

इस प्रकार का रक्तस्राव जिन जिन स्थानों द्वारा निकलता है, वे ये हैं, रक्त वमन, रक्त दस्त, रक्तकी खांसी, इनके सिवाय नाक के द्वारा, आंखों के कौनों के द्वारा और कभी कभी स्तनों की बीट नियों द्वारा भी रक्तस्राव हुआ करता है, युवावस्था के उपस्थित होने के समय ऋतु दिखाई न दे अथवा पीछे अन्य कारण से सहसा ऋतु बन्द हो जाय तब यह घटना हुआ करती है। किसी किसी स्त्री के ऐसा रक्तस्राव ऋतु होने की तरह ठीक नियमत समय पर भी हुआ करता है। किसी के अनियमित रूप से भी होता है। वायकेरियस हिमरेज कभी कभी अत्यन्त अधिक होता है, यहाँ तक कि प्राणों के वियोग की भी नौवत आ जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वायकेरियस मैन्सट्ररूएशन के रक्त को सहसा बन्द करने की चेष्टा न करना अच्छा है बहुत ही अधिक परिमाण में रुधिर बहता हो तो रक्तावरोधक दवाओं का प्रयोग करना चाहिये, जिन उपायों से रक्त स्राव नियमित रूप से हो उन पर दृष्टि रखना प्रधान उपाय है। ऐमेनोरिया रोग में जो जो उपाय लिखे गये हैं वे सब इस रोग में भी करने चाहिये।

किसी कारण से भी ऋतु बन्द होकर पेट के किसी अवयव द्वारा रक्त निकलते ही जो शीघ्र ही उसका प्रतीकार न किया जाय, तब प्रत्येक ऋतुकाल में ऐसी ही अवस्था उत्पन्न हो जाना सम्भव है और वाइकेरिलस मैन्सट्ररूऐशन का रोग जड़ पकड़ जायगा। इसलिये इक बार वाइकेरियस मैन्सट्ररूशन होते ही फिर रजःस्राव होने के समय रोगिणी को गरम जल के टब में बैठाने आदि के उपायों को अवलम्बन करना चाहिये। किंतु किस चिकित्सा के करने से पूर्व ऋतु बन्द होने के निकट ही अन्य स्थान से रक्त स्राव हुआ है, अथवा अन्य स्थान से किसी रोग होने के अनन्तर ही रक्त स्राव न होने पर रजःस्राव बन्द

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुआ है, यह बात निश्चित रूप से स्थिर करनी चाहिये ।

मेम्ब्रेन डिसमैनोरिया ।

कभी कभी ऋतु के समय यन्त्रणा होती है तथा जरायु की श्लैष्मिक झिल्ली का संम्पूर्ण अंश रक्त के साथ बाहर निकल आता है, इस अवस्था को मैम्ब्रेनस डिसमैनोरिया कहते हैं, यह बात याद रखना चाहिये कि स्वाभाविक अवस्था में प्रत्येक ऋतु के समय जरायु की श्लैष्मिक झिल्ली उठ आती है और इस का अंश रक्त के साथ मिलकर अदृश्य भाव में बाहर निकलता है इसलिये आंखों से दिखाई नहीं देता ।

किन्तु मैम्ब्रेनस डिसमैनोरिया होने पर यह श्लैष्मिक झिल्ली बड़े बड़े टुकड़े होकर वा कभी कभी धीरे धीरे निकलती है, कभी कभी जरायु की सी त्रिकोणाकार सूरत में मेम्ब्रेन बाहर निकलतीं है, यह फैलपियन ट्यूबर के छिद्र तक देखने में आती है, तथा मैम्ब्रेन के ऊपर वाले भाग में जरायु की श्लैष्मिक झिल्ली की ग्रन्थिका सब छिद्र भी दिखई देने लगता है, मेम्ब्रेनस डिसमैनोरिया के साथ साथ जरायु की उत्तेजना तथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐन्डोमैट्राइटिस रोग हुआ करता है। ऋतुके दूसरे तीसरे दिन सब मेंमब्रेन बाहर आजाती है। इस रोग में जो मेंमब्रेन का खंड निकलता है उसमें जरायु की श्लैष्मिक झिल्ली की ग्रन्थिमय बनावट देखने में आती है। अनेक स्त्रियों के प्रायः महिने के भीतर ही गर्भ गिर जाया करता है। इससे भी मेंम्ब्रेन रक्त के टुकड़े के साथ निकलती है और उसके संयोग से वेदना होती है। इस तरह महिने के भीतर ही गर्भस्राव की अवस्था और मैम्ब्रेनस डिसमैनोरिया दोनों एक ही व्याधि हैं, ऐसा अनुमान किया जाता है। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। क्यों कि अविवाहिता स्त्रियों को भी मेंम्ब्रेनस डिसमैनोरिया होती है। जिन स्त्रियों के पति का वीर्य अपरिपक्व होता है उनके इसी तरह प्रत्येक महिने में गर्भ का संचार होकर गर्भ नष्ट हो जाता है और मैमब्रेनस डिसमैनोरिया का भ्रम हुआ करता है। डाक्टर जौन विलियम्स कहते हैं कि जिन स्त्रियों के जराय की श्लैष्मिक झिल्ली में बिशेष फाइब्रस टिश्यू [सौत्रिक तन्तू] होते हैं उन्ही के यह पीड़ा हुआ करती है। फाइब्रस टिश्यू की अधिकता के कारण ऐसा प्रदाह उत्पन्न होकर रोग हुआ करता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस रोग के होने पर ऋतु काल में बड़ा कष्ट होता है । रजस्राव होने के चार दिन पहले से ही यंत्रणा होने लग जाती है, पहिले थोड़ा थोड़ा स्राव अधिक होता है तथा यंत्रणा अधिक होती है । तत्पश्चात् स्राव अधिक होने लगता है और वेदना कम होती चली जाती है । रोगिणी किंचती है तथा रुधिर के साथ मैम्ब्रेन बाहर निकल पड़ती है । इस पीड़ा के होने पर स्त्री बन्ध्या हो जाती है । यह व्याधि बहुत दिन तक रहती है ।

मैम्ब्रेन के जो टुकड़े निकलते हैं, उनको आंखों से देखने ही से रोग का निर्णय होता है । क्योंकि उसके ऊपर जरायु की सब ग्रंथियों के छिद्र देखने में आते हैं । यदि प्रत्येक महिने में गर्भ स्राव होता है, ऐसा मालूम हो तो कई एक महिने तक पति पत्नी को अलग अलग रखने से ही रोगका निर्णय करने में कुछ भी संदेह न रहेगा ।

चिकित्सा–यंत्रणा रोकने के लिये ओपियम, कैनेविस इंडी का, ब्रोमाइड औफ पुटेसियम, क्लोरेल हाइड्रेट फैनासेटिन, ऐंटी आइरन आदि । मारफिया सफोजीटरी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इससे पीछे अरोग्यता करने वाली चिकित्सा करे। इसमें शरीर का संशोधन करने वाली औषध उपकारक होती है। सिरप फैरी आयोडाइड, कौडलिवर औइय, तथा आरसेनिक उपकारक होते हैं।

औषध से लाभ न होने पर बाइलेटर अथवा टेन्ट द्वारा जरायु का मुख प्रसारित कर देना चाहिये, इससे भी लाभ न हो तो जरायू का मुख प्रसारित करके क्यूरेट द्वारा जरायु का गह्वर चौडा करे, पीछे टिंकचर आयोडीन, और कारबौलिक ऐसिड समान भाग में मिला कर जरायु का गह्वर बडा करके लगा देवे।

ऋतुकाल के अवसान की पीडा।

प्रायः ४५ या ५० वर्षकी अवस्था में स्त्रियों का ऋतुकाल व्यतीत हो जाता है। यह समय भी पीडा का एक समय है।

लगातार ३५ वर्ष तक रक्त स्राव होने के पीछे रक्त बन्द होने के कारण शरीर में एक बडा भारी परिवर्तन होता है। बहुत सी स्त्रियों के इस समय अनेक तरह के उपद्रव उपस्थित होते हैं, जैसे शरीर का मोटा हो जाना वा सूख जाना,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिर दर्द श्वेत प्रदर, संपूर्ण देह में भारापन हो जाना नाक अथवा मल द्वार से रक्त बहना आदि होते हैं। हिजटीरिया, स्नायविक आदि पीड़ा हो जाती है। कोष्ठबद्धता तथा क्षुधामान्द्य होता है सम्पूर्ण हफ हफता है ऋतु काल के अन्त में जरायु स्वाभाविक की अपेक्षा छोटे आकार की हो जाती है, योनि भी छोटी और चिकनी हो जाती है।

यदि ठीक समय पर ऋतु बन्द हुआ हो तो ऋतु को फिर लगने का उपाय औषधादि के प्रयोग से करना उचित नहीं है। यदि कुसमय बन्द हो गया हो तो ऐमोनोरिला के सदृश चिकित्सा करे। नाक अथवा मलद्वार से रुधिर निकलता होतो उसके रोकने के लिये एक दम चेष्टा नहीं करनी चाहिये सिर दर्द और स्नायु घटित कोई उपद्रव हो तो ब्रोमाइड औफ पुटेसियम पूर्ण मात्रा में देना उपकारी है। थाइमल २ ग्रेनकी मात्रा में ३ बार सेवन करने पर कितनी ही बार लाभ होते देखा गया है। क्षुधामान्द्य और यकृत की क्रिया में व्यतिक्रम हो तो यथोचित औषध देकर प्रतीकार करना, चाहिये। ऐमोनियम कार्ब २ ग्रेन, टिंकचर रिआई ३० बूँद, सोड़ा वाई कार्ब १० ग्रेन, टिंकचर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिंजर ३० मिनम पिपरमेंट वाटर १ आउंस, दिन में तीन वार दे, शरीर सतेज, रक्त बृद्धि के चिह्न होने पर सलफेड ओफ मैगनेशिया आदि विरेचक औषधियां देवे, शरीर दुर्बल होने पर नक्स वोमिका, नाइट्रिक ऐसिड आदि बलकारक औषधियों का सेवन कराना चाहिये।

मिथ्यागर्भ (फौल्स प्रैगनैन्सी)

अनेक स्त्रियों क ऐसा होता है कि रितुकाल के व्यतीत हो जाने पर पेट में चर्बी बढ़ जाती है व वापु जम जाती है इससे पेट फूल उठता है। इस से स्त्रियों को मन ही मन में यह अनुमान होता है कि गर्भ का संचार हो गया है, हिजटोरिया रोग वाली स्त्रियों को मिथ्यागर्भ का ध्यान रहता है। जो स्त्रियां परपुरुषगामिनी होती हैं उनके मन में मिथ्यागर्भ की आशंका और भय बना रहता है, ऐसा अवस्थाओं में रितु बन्द न होने पर भी रोगिणी के मन का सन्देह किसी तरह भी दूरनहीं हो सकता है, कितनी ही जगह ऐसा भी देखा गया है कि रोगिणी के स्तन तक सचमुच बड़े हो गये हैं, और इनके दवाने पर एक तरह का रस निकलता है, पेट भी बढ़ा हुआ मालूम होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योनि परीक्षा करने ही से रोग पकड़ने में आता है, जरायु जैसे छोटी होती है वैसा ही अच्छा होता है, परकशन करने पर उदर के भीतर सब जगह शून्य मालूम होती है, फां फां शब्द सुनने में आता है, इस बात से यह जानने में कष्ट नहीं उठाना पड़ता है कि पेट में वायु भर गई है, क्लोरोफार्म के सुंघाने से वायु के कारण जो पेट बड़ा हो गया हो वह कम हो जाता है।

चिकित्सा–ब्रोमाइड ओफ पोटेसियम पूरी मात्रा में देना चाहिये, ऐसेफैटिडा (हींग) की गोली बनाकर ५ ग्रेन की मात्रा में तीन बार देना चाहिये, हिजटीरिया में जो उपाय होते हैं, वे करने चाहिये, हींग की पिचकारी भी गुणकारी है।

गर्भाशय का वरम (मैट्रीटिस)

गर्भाशय का वरम तीक्ष्ण और दीर्घ होता है, यह प्रसव के सम्बन्ध में विशेषता से होता है।

जो वरम तीक्ष्ण हो तो उसका परिणाम भयंकर होता है, गर्भाशय सूज जाता है, उसमें पीड़ा बहुत होती है, पेशाब और दस्त में रुकावट होती है, और ज्वर भी तेज आता है, दीर्घ वरम के कारण गर्भाशय मोटा और सूजा हुआ रहता है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर्तव अधिक जाता है, प्रदर बहता है और गर्भ भी नहीं रहता, तीक्ष्ण वरम पर सेक करना हितकारक है, पुलटिस लगा कर बिलेडोना लगाना चाहिये, यथा ज्वर दूर करने का उपाय करे, दीर्घ वरम पर आयोडाइड औफ पुटास देवे कमल के ओष्ट पर कास्टिक पुटास लगावे।

गर्भाशय प्रदर—गर्भाशय के भीतर के पर्दे में वरम हो तो उसमें से सफेद चिकनी धातु बहतीहै, इसको गर्भाशय प्रदर कहते है, यह रोग तरुण अवस्था के पहले स्त्रियों को नहीं होता है, बारंबार गर्भ रहनेसे वा गर्भस्रावसे यह रोग होता है।

गभस्थान में मस्सा वा और किसी प्रकार की ग्रन्थि हो उसके कारण से, अति मैथुन से वा सर्दी के कारण योनि के वरम से, गर्मी से, तथा ज्वर के कारण भी अन्तर पट का वरम होता है और इस कारणसे धातु बहने लगती है, पांडु रोगमें कई बार नष्टार्तव के बदलेमें, कितनी ही बार उमर पर पहुँचनेके पीछे आर्तव,के बंदहोने के समय गर्भाशय प्रदर उत्पन्न होता है.वरम तीक्ष्ण अथवा दीर्घहोताहै, गर्भस्थान के पूरे अंतरपट में वरम होजाताहै, अथवा केवल ऊपर वाले अथवा कमल के भाग में वरम होता है, जैसे जैसे कमल के भाग में वरम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधिक होता है, वैसे ही वैसे धातु अत्यन्त चिकनी होती है और कपडे पर लीला पीला दाग पड जाता है, कमलकन्द सूजा हुआ तथा उस छाले से निकल कर गीला रहता है, अन्तरपट का वरम बहुत दिन तक रहे तो उसमें मस्सा, रसौली अथवा और किसी दूसरे प्रकार की ग्रन्थि पैदा हो जाती है, तथा ऋतुस्राव अधिक होता है।

लक्षण—जो तीक्ष्ण वरम होता है, तो थोडा बहुत ज्वर आता है, पेडू कमर तथा जांघ में दर्द रहता है, पेडू भरा हुआ और गरम मालूम होता है, पेशाव बार बार होता है।

गर्भाशय तथा स्त्री अंड के दवाने से दर्द विशेष होता है, गर्भस्थान स्थूल तथा सूजा हुआ मालूम होता है, दो तीन दिन में उसक भीततर से धातु निकलने लगती है, तब दर्द कम होजाता है और कमल का मुख खुल जाता है।

दीर्घ वरम में धातु अधिकता से बहती है और आर्तव भी अधिक आता है, तथा इसके साथ दर्द भी अत्यधिक होताहै, जठराग्नि मन्द पड जातीहै, अन्न नहीं पचता है, दस्त में गडबड रहती है, कमर और माथे में दर्द रहता है, शक्ति कम होती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चली जाती हैं, चहरा फीका पड़ जाता है, तथा तन और मन से किसी प्रकार का परिश्रम सहन करने में असमर्थता होती जाती है, सलाई प्रवेश की जाय तो वह बहुत भीतर को लम्बी चली जाती है।

गर्भस्थान के भीतर वाले सम्पूर्ण पर्दे में वरम हो तो विस्मृत होती है, पेट फूल जाता है, हिजटीरिया के चिन्ह दिखलाई देते हैं, स्तन मोटे और दृढ़ हो जाते हैं, तर्जनी अंगुली प्रवेश करने से या सलाई डालने से दर्द बहुत होता है, केवल कमल के भाग में वरम हो तो इतना दर्द नहीं होता और न कोई और तीव्र लक्षण होते हैं।

चिकित्सा—जब तक तीक्ष्ण वरम रहे तब तक स्त्री को बिछौने में पड़ी रहने दे, पथ्य साधारण दे प्रथम ही एक जुलाब देवे और प्रातःकाल वा सांयकाल दोनों समय गरम पानी के टब में बैठावे और जब पानी में बैठी हो तब गरम पानी की पिचकारी योनि में लगावे और रात के समय नीचे लिखी दवा की बत्ती योनि के भीतर रक्खे।

पारे का मरहम ४० ग्रेन, ऐक्सट्रेक्ट औफ लिले-डोना २० ग्रेन, ऊपर की दवाओं को कोकम के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तेल में मिलाकर चार बत्ती बनाकर प्रत्येक रात एक एक योनि में धरनी चाहिये, विशेष दर्द हो तो पेडू के ऊपर अलसी की पुलटिस लगावे आवश्यकता मालूम हो तो कमल मुख पर जोक लगावे और पुरुष सहवास का परित्याग करदे ।

पुराना वरम बहुत दिन का हो तो उसका मिटना कठिन हो जाता है, बहुत दिन तक पारे की दवा, कौडलिवर ओइल और आयोडाइड पुटेशियम का प्रयोग करने से लाभ होता है ।

कमलमुख को चौड़ा करके गर्भाशय के भीतर सिलवर नाइट्रेट, सलफेट औफ जिंक अथवा टिंकचर आयोडीन लगाना चाहिये ।

लिकर हाइड्राजरी परक्लोराइड डेढ ड्राम, कम्पाउड टिंकचर औफ सिनकुना डेढ ड्राम, कंपाउन्ड डिकौकशन औफ सारसपरीला ३ आउन्स, इन दवाओं को मिलाकर इसका तिहाई भाग दिन में तीन बार देवे ।

आयोडाइड औफ पुटेशियम ६ ग्रेन, कौडलिवर औइल ३ से ९ ड्राम, करीयात (चिरायता) की चाह ३ आउन्स, इन दवाओं को मिलाकर इसका तिहाई भाग दिन में तीन बार देवे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्वोक्त पारे की मरहम, तथा बिलेडोना की बत्ती लगाते रहना चाहिये, जो गर्भाशय के ऊपरले भाग में वरम हो तो दवा नहीं लग सकती है, पर नीचे के भाग में वरम हो तो सिलवर काष्टिक लगाना चाहिये, अथवा स्ट्रोंग लाइकर फैरी लगावे, अथवा टौनिक ऐसिड या जस्त का फूल कोकम के तेल में मिलाकर भीतर चुपड़ दे। रक्त न बहता हो और कमल का भाग सूजा हुआ हो तो जोक लगावे। वरम के कारण से कितनी ही वार कमल का मुख बंद हो जाता है, इसके कारण से स्त्री बंध्या रहती है और पीडितार्तव रोग होजाता है।

अपने ग्रंथ में डाक्डर पुलिन चन्द्र सानयाल लिखते हैं कि जरायु तरुण प्रदाह को एक्यूट मैट्रीटिस और पुरातन प्रदाह को क्रौनिक मैट्री-टिस कहते हैं।

यदि जरायु के टिश्यू अर्थात् उन तन्तुओं में जिनसे जराय निर्माण हुआ है, प्रदाह हो तो उसे मैट्रीटिस कहते हैं यदि केवल जरायु की श्लैष्मिक झिल्लीमें प्रदाहहो उसे ऐन्डोमैट्रीटिस कहते हैं, जरायु के तरुण प्रदाहमें जरायु का संपूर्ण भाग। (बौडी, सरविक्स, तथा श्लैष्मिक झिल्ली (पीडित होता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैट्रिटिस और ऐन्डोमैट्रीटिस प्रायः एक साथ ही होते हैं, इस लिये इन दोनों का वर्णन एक साथ ही किया जायगा, जरायु का पुरातन प्रदाह व क्रोनिक मैट्रिटिस और क्रौनिक एन्डोमैट्रीटिस होने से समस्त जरायु प्रायः पीड़ित नहीं होती है, क्रौनिक मैट्रीटिस व क्रौनिक ऐन्डोमैट्रीटिस केवल सारविक्स व केवल बौडी में होती है । अथवा सारविक्स और बौडी दोनों को मिलकर पीडित होते हैं । सारविक्स के पुरातन प्रदाह को क्रौनिक इन्फ्लेमेशन औफ दी सारविक्स व क्रौनिक सारवाइकैल ऐन्डोमैट्रीटिस कहते हैं । जरायु की बौडी और सारविक्स एकसाथ पुरातन प्रदाह से पीड़ित हों उसको क्रौनिक मैट्रीटिस व जरायु का पुरातन प्रदाह कहते हैं ।

जरायु का तरुण प्रदाह ।

अनेकानेक प्राकृतिक पकाने वाले अथवा पीव पैदा करने वाले वे कीटाणु जो केवल अणुवीक्षणयंत्र से देखने में आते हैं उन्हीं के द्वारा यह रोग पैदा होता है अर्थात यह बात हाल में स्थिर हो गई है कि ये ही इस रोग के मूल कारण हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रदाह की उत्पत्ति।

प्रसव के पीछे जो घाव आदि पकने वाले हो जाते हैं, वा जरायु में और किसी प्रकार का आघात लगने से वा कभी टैन्ट, स्टेम पैसारी आदि के व्यवहार से यह रोग उत्पन्न हो जाया करता है। ऋतु काल में सर्दी लगने से वा पुरुष संगम करने से जरायु का तरुण प्रदाह आंशिक रूप में पैदा हो जाता है। गनोरिया वा और किसी प्रकार का प्रदाह युक्त रोग हो तो वह धीरे धीरे जरायु पर आक्रमण कर सकता है। असावधानी से जरायु में पिचकारी का प्रयोग करने से भी पिचकारी के जल के साथ सूक्ष्म कीटाणु प्रवेश करके जराय में प्रदाह पैदा कर देते हैं कभी कभी दोष युक्त ज्वर में जराय का तरुण प्रदाह हो जाता है।

लक्षण-ऐक्यूट मैट्रीटिस में संपूर्ण जरायु लाल और ललाई लिये हुए दाह युक्त होती है। आकार भी कुछ बड़ा हो जाता है। कभी जराय की पेशी के बीच में पीव पड़ जाता है। जरायु का प्रदाह फैल जाने पर पास वाली पैरीटोनियम में तथा ब्रौड लिगेमैन्ट में फैल जाता है। जरायु में प्रायः ऐबेसिस [पीव से भरा हुआ गह्वर] प्रायः नहीं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होता है। तब पास वाले स्थान में जैसे ओवरी में वा ब्रौड लिगेमेंट में ऐवेसिस होता देखा गया है।

जरायु की श्लष्मिक झिल्ली फूलकर लाल वर्ण हो जाती है ऐसा होने पर पतले पीव के समान एक तरह का रस निकला करता है, इसमें रक्त भी मिला होता है। सारविक्स से पतला सफेद रंग का तरल पदार्थ अधिक परिमाण में निकलता है यह सारविक्स के स्वाभाविक म्यूकस स्राव की तरह का नहीं होता है।

यदि जरायु में किसी भयानक आघात के लगने से प्रदाह हुआ हो अथवा प्रसव वा गर्भस्राव के पीछे जरायु में घाव आदि पक कर (सैपटीसि-मिया) जरायु में का तरुण प्रदाह हो ऐसा होने पर रोग के आरम्भ में ही अधिक कंपन होता है और उसके संग गात्र उत्ताप होता है। रोगिणी की दशा जल्द जल्द विगड़ती चली जाती है। संग संग पैरीटौना इटिस रोग भी हो जाता है, पेट फूल उठता है और पेड़ू में भयानक कष्ट होने लगता है।

अन्य कारण द्वारा प्रदाह हो और प्रदाह के संग पैरीटोनियम पीड़ित न हो तो तो नीचे लिखे लक्षण प्रकट होते हैं। जरायु प्रदेश में पेड़ू में व्यथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होती है। दप दप होता है तथा पेडू और कमर में बोझ सा मालूम होता है।

उरू में जाघों में, नितंबों में व्यथा और बोझ मालूम होता है। इसके साथ ज्वर भी खूब चढ़ता है, चढने उतरने में अधिक कष्ट होता है। पेशाब थोडा और कटु होता है तथा पेशाव करने में दर्द भी होता है। जरायु के संकुचित होने के साथ ही कभी कभी प्रसववेदना के समान कष्ट उपस्थित होता है। यदि ऋतु के समय जरायु का प्रदाह उपस्थित होता है तो ऐसे होने पर रुधर का निकलना सहसा बन्द हो जाता है। प्रसव के पीछे जो स्वाभाविक स्राव [लोकिया] हुआ करता है वह सहसा बन्द हो जाता है जरायु में कास्टिक लगाने से रक्त स्राव होता है। साधारणतया मैट्रीटिस होने पर लाल रंग का तरल पदार्थ निकलता है, इसके पीछे पीव के सामन दुर्गंधित जल के सदृश पदार्थ निकलता है। इसके साथ रक्त भी मिला रहता है।

पकने वाले घाव आदि से उत्पन्न जरायू का तरुण प्रदाह बड़ा भयानक रोग होता है। इससे पैरी टोनाइटिस होकर रोगिणी प्रायः मर जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्य कारण से उत्पन्न हुए तरुण प्रदाह में आराम हो जाता है अथवा पुरातन रूप धारण करके रोगिणी को बहुत दिन पर्यन्त भोगना पड़ता है।

जरायु के प्रदाह में साउन्ड पास करने का निषेध है। हाथ से परीक्षा करके देखना चाहिये कि सारविक्स सूजा हुआ तो नहीं है। जरायु को दबाने पर भारी वेदना होती है। यदि केवल जरायु का प्रदाह ही हो तो उसे छूने में बेदना होती है।

चिकित्सा—प्रसव के पीछे वा गर्भ स्राव के पीछे मैट्रीटिस होने पर जरायु के भीतर प्लेसेन्टा [फूल] के जो टुकड़े होते हैं, अथवा रक्त के छीछड़े आदि अटक जाते हैं। इन सब को बाहर निकाल देना उचित है तथा और कोई पदार्थ जैसे पलमिस प्रभृति पककर रोग उत्पन्न हुआ है। ऐसा मालूम हो तो इस सब पके हुए द्रव्यादि को जरायु से बाहर निकाल देना चाहिये। प्रदाह के आरंभ होने के साथ ही ऐसी चेष्टा करना उचित है। इस का कारण यह है कि यदि प्रदाह पूरी मात्रा में हो जायगा तो उंगली भीतर प्रवेश करना सहज न होगा तथा प्रवेश करना उचित भी न होना जो उंगली सहज में न घुस सके तो क्लोरा फौर्म द्वारा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रोगिणी को अचेत करके अंगुली के प्रवेश करने की चेष्टा करना वर्जित है। प्रसव के अंत में जरायु में प्रदाह होने पर जरायु का भीतर वाला प्लेसेन्टा का टुकड़ा बाहर निकालने में इतना कष्ट नहीं होता है, कारण यह है कि उस समय जरायु बड़ी होती है और अस भी चौड़ा होता है।

जरायु के साफ करने के पीछे कार्बोलिक लोशन १ भाग जल ४० भाग मिलाकर जरायु-को धोना चाहिये। टिंकचर आयोडीन २ ड्राम एक पाइंट जल में मिलाकर इस जल से भी धोना उचित है। पिचकारी का नियम क्रोनिक मैट्रीटिस में लिखेंगे।

पेडू के ऊपर पुलटिस लगाना उचित है। तरुण प्रदाह वर्तमान हो तो पेडू में जरायु के ऊपर टिंकचर आयोडीन ब्लिसटर आदि उग्र औषध कभी न लगाना चाहिये। इससे प्रदाह बढ़ जाता है। पेडू के ऊपर बिलेडोना व लिनिमेंट बिलेडाना देना उचित है।

जो जलन बहुत अधिक हो और रोगिणी बल-वान होतो कुछ गरम जल में रोगी का सब अङ्ग करदे तथा जलन को दूर करने वाली और औषधियों का भी प्रयोग करे। अफीम तथा मौरफाइन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेवन द्वारा वेदना को रोकना चाहिये। गुह्यद्वार में अफीम सपोजीटरी, व गुह्यद्वार में टिंकचर ओपियम की पिचकारी देना भी अच्छा उपाय है, इससे वेदना कम हो जाती है और प्रदाह भी शान्त हो जाता है।

४० मिनिम टिंकचर ओपियम तथा १ आउंस जल मिलाकर गुह्यद्वार में पिचकारी लगावे और औषध बाहन न निकल सके इसलिये पांच सात मिनिट तक बड़ी उंगली से दबाये रक्खे। पेट के अत्यन्त फूल जाने पर दस पन्द्रह मिनिम की मात्रा में टरपैन्टाइन म्यूसलेज को एकेशिया के संग में मिलाकर हर तीन या चार घंटे के अंतर से दे। जो रोगी बहुत दुर्बल हो तो ब्रांडी के साथ अंडे की जर्दी दूध मिलाकर पथ्य देवे। मांसयूष भी दिया जा सकता है। ऐमनिया ब्रांडी तथा सलफूरिक ईथर अति उत्तम उत्तेजक दवा है।

प्रति दिन कार्बोलिक अथवा अन्य लोशन जो पकने को रोकने वाले हों उनसे जरायु को धोते रहना चाहिये, जल के व्यवहार से देह की जलन दूर करे और बलकारक औषधियों का प्रयोग करे। ये हीं तीन उपाय जरायु के प्रदाह के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। प्यूआर पूरैल फीवर की जो चिकित्सा है। वही चिकित्सा इस रोग की भी है।

उग्र रूपधारी तरुण प्रदाह में विरेचक औषध द्वारा दस्त करना वर्जित है। यहां कोष्ट बद्धता में ऐनिमा (पिचकारी) से दस्त करना चाहिये।

यदि प्रदाह अत्यन्त उग्र रूप का न हो अर्थात् जरायु की श्लैष्मिक झिल्ली पर अधिक आक्रमण होकर तरुण ऐन्डोमैट्रीटिस हो जाय तो भी ज्वर और पेडू में वेदना होती है, परन्तु ज्वर और वेदना वैसी अधिक तो नहीं होती और न पैरीटोनाईटिस होता है। ऐसी दशा में विरचेन औषध देना और सारविक्स से रक्तमोक्षण करना उत्तम उपाय है। इसके सिवाय पेडू पर गरम जलका स्वेदन तथा पुलटिस लगाना भी उपकारी है, गरम जल में कमर पर्यन्त बैठाने से भी लाभ होता है, नाइट्रेट औफ पुटास, साइट्रेट औफ पुटास, वा लाइकर ऐमन ऐसीटेटिस उपकारी होते हैं ऐकोनाइट बहुत अच्छी दवा है, इससे प्रदाह और ज्वर दोनों ही शान्त हो जाते हैं। टिंकचर एकोनाइट एक दो मिनिम की मात्रा में एक एक घन्टे के अन्तर से देना चाहिये। पसीना हो तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐकोनाइट देकर बन्द करे। रोगिणी को बिछौनों में पडी रखना चाहिये। कुछ गरम जल से योनि धोते रहना चाहिये।

क्रोनिक सारवाई कैल ऐन्डो मैट्रीसिस इरोशन आफ सारविक्स अर्थात् सारविक्स का पुराना प्रदाह और सारविक्स का घाव।

सारविक्स का पुराना प्रदाह दो तरह का आकार धारण करता है। (१) सारविक्स का कैटरेल इन्फ्लेमेशन वा सर्दी (२) प्रसव के समय सारविक्स में जो घाव हो जाते हैं वे सब धीरे धीरे पुरातन आकार में बदल जाते हैं।

पहिले प्रकार का प्रदाह अनेक कारणों से हुआ करताहै। जिन जिन स्त्रियोंके बादी, गठिया आदि रोग होते है अथवा जिनका शरीर किसी कारण से दुर्बल हो गया है उनकी सारविक्स की श्लैष्मिक झिल्ली सर्दी की तरह सहज ही में प्रदाह के द्वारा आक्रान्त हो जाती है। यह (ल्यूकोरिया प्रकरण में देखो) गनोरिया की पीडा होने पर यह प्रदाह बहुत फैल जाता है। और सारविक्स पर आक्रमण करता है। सर्दी लगने से सारविक्स का प्रदाह होता है। टेन्ट आदि के प्रयोग करने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से भी यह रोग होता है। अधिक सहवास भी रोग का एक विशेष कारण है। जरायु के स्थान से हट जाने के कारण से भी सारविक्स पीड़ित होता है।

दूसरी प्रकार की प्रदाह उन घाव आदि के कारणसे उत्पन्न होता है जो प्रसवकालमें होजाया करते हैं। प्रसव कालमें जो घाव होजाते है, उन सब में आराम न होकर वे पुरानी सूरत धारण कर लेते हैं, प्रसव के पीछे सारविक्स चारों ओर से फट जाता है ये सब फटे हुए घाव थोड़े यदि होते हैं तो इनमें धीरे २ आराम हो जाता है।

यदि सारविक्स के दोनों ओर गहरा फटगया हो तब एक नयारोग उपस्थित होजाता है। इन फोड़ों के पास सारविक्स ऊपर को उठ जाता है व उलट जाता है जैसे आंख के पलकों के उलट जाने से भीतर वाला दिखलाई देने लगता है। सारविक्स की भी ऐसी ही दशा हो जाती है। सारविक्स इन फोड़ों के इस उलट जानेको अंग्रेजी में एकट्रोपियम औफ सारविक्स कहते हैं। इस तरह से उलट जाने पर सारविक्स की श्लेष्मिक झिल्ली फूल उठती है, उसमें ऊपर छोटे छोटे घाव हो जाते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ये घाव बहुत गंभीर नहीं होते। अथवा श्लैष्मिक झिल्ली असमान और ऊँची नीची हो जाती हैं और उसके ऊपर मांस के छोटे छोटे अंकुर बाहर की ओर होते हैं। जरायु के मुखके पास सारविक्स की म्यूकस मैम्ब्रेन के सामान्य क्षत होते हैं जो गहरे नहीं होते। इनको ईरोसन औफ सारविक्स कहते हैं। ईरोसन औफ सारविक्स ठीकक्षत नहीं होता है। इसमें जरायु मुख के पास वाले सारविक्स के किसी किसी भाग की स्वाभाविक झिल्ली ऊपर को उठ आती है और एक प्रकार की नई श्लैष्मिक झिल्ली पैदा हो जाती है। ये अंगभीर घाव जो समान न हों तथा उनके ऊपर ऊँचे ऊँचे दाने बाहर हों तो इनको ग्रेन्यूलर इनफ्लेमेशन कहते हैं।

सारविक्स का पुराना प्रदाह हो तो म्यूकस मेंम्ब्रेन फूली हुई और लाल रंग की हो जाती है। इसमें जो स्राव निकलता है वह गाढ़ा होता है।

यह स्राव गाढा होकर असके मुख पर जम जाता है। जो अधिक हो तो बाहर निकलता है जो प्रदाह बहुत दिन तक स्थाई रहे तो सारविक्स कुछ बड़ा और छूने में कड़ा होजाता है। बहुत सी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जगह केवल मात्र एक या दो छोटे २ क्षत देखने में आते हैं। कभी क्षत के ऊपर जगह २ म्यूकस मैम्ब्रेन ऊँचे ऊँचे छोटे २ लाल रंगका अर्बुद का रूप धारण करती है, इसमें से अत्यन्त मामूली कारण से रक्त पड़ा करता है, ऐसे क्षतको भाइलस ईरोसन पैपिलैरी इरोसन कहते हैं।

सारविक्स की श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर हारपिस नाम का भी एक रोग होजाता है, ये सब हारपिस के पास फट जाने से छोटे छोटे क्षत हो जाते हैं, यह एक प्रकार का चर्म रोग है जो बिना चिकित्सा के ही अच्छा हो जाता है।

लक्षण—सारिविक्स का प्रदाह पुराना हो जाने पर यन्त्रणा बहुत कम होती है, इसका कारण यही है कि सारविक्स की ज्ञानशक्ति घट जाती है, सारविक्स के प्रदाह में कमर और पीठ में दर्द होता है।

क्षतादि होने से सहवास के समय कष्ट मालूम होता है, सारविक्स के प्रदाह का मुख्य लक्षण श्वेत प्रदर का होना है, सारविक्स में केवल मात्र सर्दी होने से एक प्रकार का कफ के सदृश सफेद रंग का पदार्थ निकलता है, जो यह अधिक हो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो योनि द्वार में होकर निकलता है, थोड़ा हो तो सारविक्स के मुख पर लगजाता है, जो सारविक्स में घाव अधिक हो तो रक्त मिला हुआ पीव के समान स्राव होता है, जो यह स्राव बहुत दिन तक जारी रहे तो शरीर धीरे धीरे क्षीण होता चला जाता है, ये स्राव योनि में लगकर उसमें भी जलन पैदा कर देते हैं, सारविक्स की जलन फैल कर जरायु की बौडी तक फैल जाती है। ऐसा होने से मैनरेजिया, डिसमैनोरिया आदि रोग हो जाते हैं, सारविक्स की जलन में और और बहुत से उपद्रव खड़े हो जाते हैं, जैसे पेड़ू में दर्द, पेट में बेचैनी, सिर दर्द, हिजटीरिया, न्यूरेलजिया आदि स्नायु यन्त्र में पीड़ा, तथा वमने रोग उपस्थित हो जाते हैं, सारविक्स में जलन होने के कारण गर्भावस्था में जो वमन होती है वे दुगुनी बढ़ जाती हैं, सारविक्स के इधर उधर जलन होने पर सहवास के समय रक्त निकलता है।

सारविक्सकी जलनसे पीडित स्त्रियां प्रायः बन्ध्या रहती हैं, इसका यही कारण है कि सारविक्स का मुख सदा कफ से रुका हुआ रहता है, इस लिये मनुष्य का वीर्य सहज में प्रवेश नहीं कर सकता है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि दैवात गर्भका संचार होने पर प्रदाह न घटे बल्कि बढे तथा इस कारण से गर्भावस्था में समय समय पर रक्तस्राव होता रहता है अथवा एक ही बार गर्भस्राव होजाता है।

सारविक्स के पुराने प्रदाह में प्रायःशीघ्र आराम नही होता है चिकित्सा करने पर भी आराम होने में बहुत दिन लगते हैं। चार पांच वा छः महीने लगातार चिकित्सा करने की आवश्यकता होती है अनेकों का रोग एक साथ किसी उपायसे भी नहीं जाता है, पुराने प्रदाह में जब सारविक्स बहुत कठोर होजाता है तब शीघ्र आराम होना महाकठिन है, सारविक्सका घावजो बहुत दिन तक रहे तो उसमें कैन्सर रोगकी उत्पत्ति हो जाया करती है जो स्त्रियां कैन्सर रोगकी धातु से युक्त होतीं हैं; इनके सारविक्स के घाव के कारण कैन्सर रोगका हो जाना कुछ आश्चर्य की बात नहीं है।

सारविक्स में ईरोशन अथवा पुराना प्रदाह हो तो स्पैकूलम यन्त्र द्वारा परीक्षा करने ही से रोग पकड़ने में आता है, स्पैकूलम प्रवेश करके देखना चाहिये कि सारविक्स फूला तो नहीं है और उस के मुखपर सफेद रंग का कोई पदार्थ लगा है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

या नहीं, किसी काठ की मुलायम सलाई पर रुई लगाकर उस श्वेतवर्ण स्राव को पोंछ कर देखना चाहिए कि मूकस मेम्ब्रेन फूली हुई और लाल रंग की है, जो ईरोसन होगा तो भी साफ दिखलाई देगा ।

चिकित्सा–इस रोग में दो प्रकार की चिकित्सा करनी चाहिये, साधारण चिकित्सा तथा स्थानीय चिकित्सा अर्थात् खाने की दवा और लगाने की दवा, जिससे शरीर में बल की बृद्धि हो और रक्त शुद्ध हो, ऐसी दवा खाने को दे, शरीर में और किसी प्रकार की पीड़ा हो तो उसका प्रतीकार करना चाहिये, तन्दुरुस्ती बिगड़ने न पावे इस बात पर रोगिणी का विशेष ध्यान रखना चाहिये, नीचे लिखी दवा इस रोग पर उपकारी है, ऐसिड नाइट्रोन्यूरियेटिकर्डिल १० मिनिम, टिंकचर नस्क-बौमिका १० मिनिम, टिंकचर जैनसियान को १ ड्राम, जल १ आउंस इन सब दवाओं को मिलाले यहबएर का खाने की औषध है, इसको रोज दिन में तीन बार सेवन करना चाहिए ।

अथवा टारटरेट आफ आइरन ५ ग्रेन, ग्लीसरिन १ ड्राम, रैक्टीफाइड स्पिरिट आफ आयरन आधा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ड्राम, जल १ आउंस, यह एक बार की औषधि है। इतनी २ दवा रोज दिन में तीन बार देनी चाहिए डिसपेसिया, क्षुधामान्द्य हो तो पहिली प्रकार की दवा हितकारी है। लाइकर सिनकोना, टिंकचरसिनकोना, क्विनाइन और लोहदिक प्रयोग करना चाहिए, टारट्रेट आफ आइरन डायोलाइज्ड आयरन ये अन्य लोहों की अपेक्षा अच्छे हैं. इसका कारण यह है कि ये बहुत दिन तक सह्य है और कोष्ट बद्ध नहीं करते हैं यदि जरायु का उग्र प्रदाह हो तथा ज्वर हो तो इस अवस्था में लोह देना बर्जित है।

यदि सारविक्स फूला हुआ और वेदना युक्त हो तो सारविक्स से थोडा सा रक्त मोक्षण करने से रोग का उपशम हो जाता है, एक लम्बी हथेले वाली छुरी द्वारा स्पैक्यूलम को भीतर देकर सार-विक्स को थोडा थोडा चीरने से कुछ रक्तस्राव हो जाने पर पीडा की शान्ति हो जाती है, सारविक्स के ऊपर कोई कोई ग्रन्थि आदि ऊंचा पदार्थ दिखाई दे तो उसे छुरी के द्वारा काट कर उस पर कास्टिक लगाकर सुलादे, यदि सहवास में विशेष दुख न होता हो तो कभी सहवास की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुमति देना चाहिये ।

योनि में संकोचक लोशन आदि की पिचकारी लगाकर सारविक्स को धोना चाहिऐ, अनेक रूप के लोशन का व्यवहार हो सकता है, केवल गरम जल से प्रति दिन धोने से लाभ होता है, इस तरह की पिचकारी करने के लिये हिगिंसन की सिरिंज [पिचकारी] वा डूश का व्यवहार करने से विशेष सुविधा होती है, इस सिरिंज को रोगिणी स्वयं ही काम में ला सकती है, जो यह पिचकारी न हो तो अनेक तरह की स्त्रियोपयोगी पिचकारियां व्यवहार में आसकती है, जिन पिचकारियों के माथे पर तीन चार छेद होते हैं वे ही अच्छी होती हैं, जिन पिचकरियों में एक ही छेद होता है उनसे जल बडे वेग से निकलता है, सुतरां जरायु के भीतर जल जोर से प्रविष्ट होकर अनेक प्रकार के उपद्रव खडे कर देता है, परन्तु बहुत से छेद वाली पिचकारी का जल इधर उधर निकल जाता है इसलिए जरायु में प्रवेश नहीं करता है, यदि पिचकारी का जल जरायु में फैलपियन नल में जोर से प्रवेश करे तब भयानक प्रदाह वा पैरीटोनाइटिस रोग होना संभव है, रोगिणी को चित्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करके सुलादे और नितंब भाग को कुछ ऊंचा कर के औषधि की पिचकारी लगाने से सारबिक्स धुल जाता है।

पिचकारी के जल में अनेक प्रकार की औषधियां मिलाई जाती हैं, उनमें से ग्लीसरिन, बोरोक्स (सुहागा) कार्बोनेट औफ पुटासटौनिक ऐसिड, ऐलम (फिटकरी) आदि न्यूनाधिक अपना काम करने वाली दवाइयां हैं, एक पाइंट जल में १ ड्राम क्लौरेट औफ पुटास अथवा १ ड्राम बोरोक्स व कार्बोनेट आफ पुटास मिलाकर देवे, इस जल की पिचकारी देने से ल्यूकेरिया और प्रदाह इन दोनों ही में लाभ होता है, अथवा ऐलम (फिटकरी) सलफेट औफ जिंक और टौनिक ऐसिड द्वारा जल तयार करना चाहिये, सलफेट और जिंक १ पाइन्ट जल में २० से ६० ग्रेन तक की मात्रा में मिलाना चाहिये। लाइकर प्लम्बाई सब एसिटेट को जल में मिलाकर पिचकारी लगावे, इससे लाभ होता है। बबूल की छाल को जल में काथ करके इसमें १ आउंस जल मिलाकर इस जल की पिचकारी देने से बहुत लाभ होता है, यदि योनिद्वार से निकले हुए पदार्थ में बहुत दुर्गंध

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आती हो तो कार्बोलिक लोशन से धो डालना चाहिये, कार्बोलिक औफ लोशन २० ग्रेन, जल १ पाइंट मिलाकर व्यवहार करना चाहिये ।

कोई कोई पारक्लोराइड औफ मरकरी लोशन ३ ग्रेन को १ पाइंट जल में मिलाकर प्रयोग करने की अनुमति देते हैं । इससे दुर्गंध जाती रहती है। क्षत होने पर संकोचक दवा, जैसे टौनिक ऐसिड, ऐसटेट औफलेड, आदि ग्लीसरिन में मिलाकर रुई के फोए के द्वारा घाव की जगह लगाना चाहिये । आइडोफौर्म को ग्लीसरिन में मिलाकर घाव की जगह लगावे सारविक्स के मुख पर दवा लगाने के लिये ग्लेफेयर प्रोव नामक एक प्रकार का प्रोव होता है । सारविक्स के पुरातन प्रदाह में एक प्रोव के [जैसे ग्लेफेयर का प्रोव] अग्रभाग में रुई लगाकर उसके द्वारा जरायु के मुख और सारविक्स के भीतर वाले नल को साफ कर दे । तत्पश्चात् इस रुई को फेंक कर दूसरी नई रुई लेकर प्रोव में लगाकर उसे कार्बोलिक ऐसिड में भिगोकर जरायु के मुख और सारविक्स के भीतर वाले नाले में अच्छी तरह से लगा देना चाहिये । कार्बोलिक ऐसिड के बदले में लिनिमेंट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

औफ बुडिन काम में लाने से भी उपयोगा होता है।

अथवा एक आउंस जल में कीपर सलफेट [नीला थोथा] ४० ग्रेन मिलावे। इसका विधि यह है।

रोगिणी की योनि में फरगूसन का स्पैकूलम प्रवेश करके सारविक्स और जराय के मुख का रुई से साफ करले। फिर स्पैकुलम के भातर थाड़ा सा ऊपर कहा हुआ लोशन भरदे तथा एक प्लफयर के प्रोव के सिरे पर मामूली परिमाण में रुई लगाकर इसको बार बार स्पैकूलम में भरे हुए लाशन में भिगोकर सारविक्स क नाले के भीतर प्रवश करदे इस बात पर विशेष ध्यान रखना चाहिये कि प्रोव इनटरनैल अस को पार करके जरायु की गहराई में प्रवेश न कर सके। ऐसे उपाय से बहुत बार उपकार हुआ है।

पुरातक इरोसन के होने पर कास्टिक लोशन को व्यवहार में ला सकते हैं। १ आउंस परिष्कृत जल में ३० से ६० ग्रेन तक कास्टिक [आरजन्टि नाइट्रास] मिलाकर इस लोशन को घाव पर लगा देवे एक प्रोव पर रुई लगाकर उसके द्वारा लगाना चाहिये। इस तरह पांच सात दिन के अन्तर से एक बार करना चाहिये। सारविक्स में ग्रेन्यूलर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इंनफ्लेमेशन हो तो काष्टिक की बत्ती बड़ी सावधानी से घाव के स्थान के ऊपर लगादे। स्पैकूलम की सहायता से सारविक्स को देखकर कास्टिक के एक होलडर में काष्टिक की बत्ती लगाकर ईरोसन की जगह लगावे। इसे अधिक न लगावे, अधिक लगाने से दाह अधिक, होता है, एक बार कास्टिक लगाकर पांच सात दिन तक लगाना उचित नहीं है। कार्बोलिक ऐसिड और ग्लीसरिन को समान भाग में मिलावे। यह मिली हुई दवा कास्टिक के बदले व्यवहार में लाई जाती है। कास्टिक की अपेक्षा यह दवा उत्तम है। यह दवा दो तीन दिन के अंतर से लगानी चाहिये। दो अथवा तीन दिन देकर फिर तीन सप्ताह तक न दे। आयोडाइन लिनिमेंट भी व्यवहार में आ सकता है [आयोडाइन ७५ ग्रेन, पुटास आयोडाइड ३० ग्रेन, रैकटी फाइड स्पिरिट १ आउंस।

डाक्टर गुडौल नीचे लिखी हुई दवा की बड़ी प्रशंसा करते हैं। टौनिक ऐसिड ६० ग्रेन, आयोडीन ३० ग्रेन अथवा आइडोफौर्म १२० ग्रेन कालोडियन १ आउंस मिलाकर लगावे।

बाइलस ईरोसन हो तो बहुत से चिसित्सक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाइट्रिक ऐसिड लगाने की सलाह देते हैं। डाक्टर सिम्स क्रमिक ऐसिड लगाने के लिये कहते हैं समान भाग में क्रमिक ऐसिड और जल मिलाकर वाइलस ईरोसन के ऊपर लगाना चाहिये।

कोई २ वाइलस ईरोशन सारविक्स तक फैल जाता है, ऐसा होने पर टौनिक ऐसिड तथा ग्लिसरीन मिलाकर लंबा करके सारविक्सके नाले तक पहुँचा देना चाहिये इससे लाभ होता है, ३० ग्रेन टौनिक ऐसिड तथा ३ मिनिम ग्लीसरीन इनको मिला कर सुई के आकार का लंबा करले।

सिलफैटिक अलसर (औपदंशिक घाव)

यह रोग प्रायः सारविक्स में नहीं होता है, यदि हो तो इसी सूरत का होता है, क्षत कुछ गहरा होता है हाथ लगाने पर कठोर मालूम होता है, मामूली कारण से ही क्षत से रक्त स्राव होता है, इस क्षत से रोगिणी को विशेष कष्ट नहीं होता है और इस प्रकार के घाव से जो स्राव होते हैं इस में दुर्गंध नहीं आती है, रोगिणी की पहली अवस्था देखने से ही रोग का पता चल जाता है, औपदंशिक क्षत अस के मुख से थोड़ी ही दूर पर होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्रौनिक ऐन्डोमैट्राइटिस ।

क्रौनिक मैट्राइटिस ।

क्रौनिक ऐन्डोमैट्राइटिस श्लैष्मिक झिल्ली का पुराना प्रदाह होता है। यह पुराना प्रदाह श्लैष्मिक झिल्ली से फैल कर जरायु के टिश्यू से भी कुछ विस्तृत हो जाता है, तब इसे क्रौनिक मैट्राइटिस कहतेहैं। वास्तवमें ये दोनों रोग एकही हैं साधारण पुराना ऐन्डो मैट्राइटिस हो तो जरायुकी श्लैष्मिक झिल्ली लाल वर्ण और कुछ फूली हुई होती है। कभी प्रदाह वाली झिल्ली पर छोटे छोटे दाने हो जाया करते हैं। ऐसा होने पर इसे वाइलस ऐन्डो मैट्राइटिस कहते हैं। इस रोग में प्रधानतया रक्त स्राव हुआ करता है। साधारण रोगमें एक प्रकार का स्राव निकलता है जो सारविक्सके स्रावकेसदृश नहीं होता। प्रदाह अधिक हो तो पीव के समान ललाई युक्त जल निकलता है। जरायु कुछ बड़ी और भारी हो जाती है, जो यह रोग बहुत दिन रहता है तो छूने में कड़ा मालूम होता है।

इस रोग के उत्पन्न होने के अनेक कारण हैं, जो स्त्रियां दुर्बल और रक्तहीन होती है, तथा जो गठिया आदि बातरोग से पीडित होती हैं, इनकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जरायु साधारण कारण से ही पुराने प्रदाह से आक्रान्त होजाती है। उपदंश रोगसे प्रायःक्रौनिक मैट्राइटिस होता है। प्रसव के पीछे व गर्भस्राव के पीछे जरायु में रक्तकण व फूल के टुकड़े आदि होने से भी पुरातन प्रदाह होता है। कभी यह तरुणरोग भी पुरातन आकार धारण करलेता है। जरायु स्थान भ्रष्ट होकर बड़े आकार का होजाता है तब भी यह रोग होता है। ऋतुकाल में सर्दी व आतप लग जाने से भी यह रोग होता है।

अधिक सहवास व असम्पूर्ण सहवास से भी यह रोग होता है। गनोरिया व प्रमेह से भी यह रोग होता है।

साउन्ड, स्टैम पैसारी, टैन्ट आदि के अघात से भी यह पीड़ा होती है।

लक्षण–इस पुरातन रोग में जरायु के मुख से पीव के सदृश जल निकलता है। कभी दो चार दिन स्राव दिखाई नहीं देता, जितना निकलता है वह जरायु में ही जम जाता है कभी अधिक परिमाण में निकल पड़ता है। कभी ऋतुकाल में अधिक निकलता है तब बड़ी वेदना होती है। बहुत दिन का हो जाने पर इसमें अच्छी तरह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आराम नहीं होता है। ऋतुकाल में रजःस्राव ठीक नहीं होता और दर्द भी विशेष होता है, कोई कोई कहते हैं कि इस रोग में स्त्रियां बहुधा बांझ हो जाती हैं।

पेडू में भारापन, उर, पीठ, पीछे का भाग, कमर आदि स्थानों में दर्द होता है। मलमूत्र के त्याग में भी कष्ट होता है।

जरायु के पीड़ित होने पर देह के अन्य यंत्रों में भी अनेक उपद्रव प्रकट हो जाते हैं। जैसे योनि कंडूयन, योनि आपेक्ष (वैजीनिसस) कोकसीकस अस्थि में व्यथा स्तनों में दर्द आदि होते हैं।

जरायु और पाकस्थली आदि का बड़ा संबन्ध है, इसलिये जरायु में प्रदाह होने से वमन, क्षुधा-मन्द्यादि उपद्रव होते हैं। जरायु का अन्य स्नायु मंडल से संबन्ध होने के कारण डिसपैपसिया, अरुचि, क्षुधामान्द्यादि रोग हो जाते हैं।

इन अनेक कारणों से रोगिणी का देह दिन २ क्षीण होता जाता है। न्यूरेलजिया, स्तनमूल में वेदना, शिर पीड़ा तथा स्नायु सम्बन्धी अन्य व्यथा पैदा हो जाती हैं।

इस रोग में स्त्रीकी आंखों के चारों ओर काला-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पन हो जाता है, ऐकजिमा आदि चर्म रोग हो जाते हैं। इस रोग में जरायु वा ओवरी को हाथ से दावने पर वेदना होती है। किसी किसी रोगी को मूर्छा भी आ जाती है।

चिकित्सा—यदि सारविक्स का प्रदाह क्षत से हो तो पीछे उसका प्रतिकार करे, यदि जरायु स्थान भ्रष्ट गई हो तो पहिले उसका उपद्रव शांत करे। रोगिणी को अधिक परिश्रम न करनें दे। विरेचक औषध देकर दस्त करावे, आयोडाइड औफ पुटेसियम, आरगट, विजिटेलिस स्ट्रिकिनिया आदि दवा खिलाने से आराम होता है। कभी कभी सहवास भी युक्तियुक्त है। यदि ओवरी वा डिम्बकोश में उत्तेजना हो तो सहवास उपकारक होता है।

रोगिणी दुर्बल हो तो केवल लाइकर हाइड्रारजिराइ देकर उसमें किनाइन वा लौह मिला देना चाहिए पुरातन प्रदाह में जरायु के कड़ी और बड़ी होने से प्रायः रजःस्राव नहीं होता है, इसमें आयोडाइड औफ पुटेसियम महा उपकारी है, पुरातन प्रदाह में वेदना को रोकने के लिये ब्रोमाइड औफ पुटास, क्लोरेल हाइड्रेट, कैनावस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इंडीका वेलेडोना आदि उपकारी दवा हैं, विलेडोना ऐक्स ट्रेक्ट की आधे ग्रेन की गोली बनाकर प्रतिदिन दिन में तीन वार देने से विशेष लाभ होता है, पेशाब के समय वेदना हो तो वेलेडोना देना उपकारी है, ब्रोमाइड औफ कैम्फर भी गुणदायक है, रोगिणी को गरम टब में बैठाने से वेदना कम हो जाती है योनि में गरम जल का डूस देने से भी लाभ होता है।

लगाने की दवा—पेडू और ओवरी के ऊपर लाइकर लिटि, लिनिमेंट आयोडाइन, टिंकचर आयोडाइन समय समय पर लगाना अच्छा है, कमर और उरूओं के आस पास दर्द हो तो मस्टड पुलटिस वा तारवीन का सेक करना अच्छा है, लिनोमेंट बिलेडोना और लिनिमेंट एकोनाइट को मिलाकर मालिश करावे।

अलसर औफ अस।

कितनी ही बार कमलकन्द के ऊपर छोटे बड़े घाव दिखलाई देते हैं, उनके कारण प्रदर अथवा रक्त स्राव होता है, कभी गहरे घाव के बदले छाले देखने में आते हैं, ये छाले कभी कभी कमलमार्ग में होते हैं, इस रोगमें कमल के एक वा दोनों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओष्ठों की ऊपर वाली त्वचा उधड़ आती हैं और इसके नीचे का भाग लाल कोमल और मखमल सा दीखता है कभी छाला इतना नाजुक होता है कि यह कहने में नहीं आसकता कि कमल का भाग लाल है या उस पर छाला पड़ गया है, इसकी परीक्षा के लिये सिलवर काष्टिक लगाने से जितने भाग में छाला पड़ा होगा उतना भाग अधिक सफेद दिखाई देगा। इस रोग में आर्तव अधिक और अनियमित रूप से आता है, कमर में भयानक दर्द होता है, सदा धातु बहती रहती है, कभी धातु के साथ रुधिर भी आता है, इस कारण से थोड़े ही समय में निर्बलता आ जाती है।

चिकित्सा—जो कमल कन्द पर अधिक सूजन हो तो जोक लगाकर अथवा छोटा छेद करके रज निकालना चाहिए, फिर फिटकरी अथवा जस्त के फूल की पिचकारी लगाना चाहिए, अथवा टौनिक ऐसिड की बत्ती लगावे।

कभी सिलवर काष्टिक या लाइकर प्लम्बाई सबऐसीटेटिस लगावे, कभी ऐसिड नाइट्रेट आफ मर्करी लगावे, इस तरह किसी तरह का काष्टिक लगाने के पीछे तुरन्त तेल लगा देवे, ऊपर लिखी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगाने की दवाओं के सिवाय खाने के लिए पौष्टिक पथ्य तथा पाचक औषध देवे, पेपसीन, क्विनाइन, नाइट्रीक ऐसिड, कौडलिवर आइल आदि प्रतिदिन रोगिणी की दशा के अनुकूल देवे।

क्षत–ऊपर वाली त्वचा का अधिक भाग निर्जीव पड़ जाता है, इससे कमलकन्द पर चन्दोले पड़ जाते हैं. इनको क्षत कहते हैं, बहुत बार क्षत कमल के मार्ग में पहुँच जाते हैं, क्षत के कारण से ग्रीवा में सूजन आ जाती है, जब क्षत बहुत गहरा हो तब उसके ऊपर निर्जीव मांस आ जाता है और जांच करने से मालूम होता है कि उसमें से विशेष करके रक्त बहती है, उसमें पीवके सदृश बहुत सी धातु बहती है, क्षत के कारण ग्रीवा सूंजी हुई रहती है, इतना ही नहीं, पर गर्भाशय तथा स्त्री अंड भी सूज जाता है, पेडू में दर्द होता है तथा जलन होती है, कमर दुखती है, बोझ लगता है कुन्थन होता है, रक्त स्राव होता है, मस्तक में दर्द और मन्दाग्नि हो जाती है, निर्बलता मालूम होती है, चहरा फीका पड़ जाता है, और दस्त अनियमित रूप से होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चिकित्सा–इसमें ऊपर लिखे हुए छाले के अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये, क्षत में रुधिर अपने आप निकला करता है रुधिर निकालने की आवश्यकता नहीं है, योनि में प्रदर अथवा धातु भरी न रहने पावे, इसके लिये प्रातःसयं दोनों समय योनि को धोना चाहिये पीड़ा को रोकने लिये आयोडाइड औफ लैड, तथा बेलेडोना की बत्ती प्रवेश करे जो क्षत गहरा हो तो काष्टिक पुटास अथवा ऐसिड नाइट्रेड औफ मककरी लगावे। ग्लीसरीन, सुहागा, टौनिक ऐसिड के साथ लगावे।

गर्भाशय अर्बुद।

(यूटीराइन कैन्सर)

अर्बुद अथवा कैन्सर–इस नाम की सुखदायक व्याधि कितना ही बार गर्भाशय पर देखने में आती हैं। यह व्याधि बहुधा आरम्भ में ग्रीवा पर होती है और फिर गर्भ स्थान के ऊपर वाले भाग तथा आस पास के भाग के ऊपर फैल जाती है।

लक्षण–गर्भस्थान के कैन्सर के कारण दुर्गंधित गाढा पानी निकलता है। कभी थोडी बास मारती है और कभी इतनी दुर्गंध निकलती है कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उस स्त्री से अथवा आस पास के आदिमियों से सही नहीं जाती है ।

जब कभी एकाएक रक्तका प्रवाह होता है उस समय घोर वेदना होती है, पीछे यह वेदना इतनी बढ जाती है कि नशा लाने वाली दवा देने के सिवाय नींद नहीं आती है, पाचन शक्ति मन्द पड जाती है, वमन होती है खाने की रुचि बिल कुल जातीरहती है, मनमें ग्लानि रहतीहै, दिन २ निर्बलता बढती जाती है तथा शरीर क्षीण होता चला जाता है, चहरा फीका, पीला, चिंतायुक्त और दुखद दिखाई देता है ।

जांच करने पर कमल के स्थान पर छोटा बडा अनियमित आकार वाला कठोर क्षत उंगली के लगता है, गर्भ स्थान स्वाभाविक ही चलित होता है. वह अर्बुद के कारण अचल हो जाता है। ज्यों ज्यों अर्बुद फैलता है त्यों त्यों योनि और मूत्राशय इत्यादि आस पास वाले भाग कठिन होते जाते हैं और क्षत फैलता जाता है। गर्भाशय का कितना ही भाग निर्जीव हो जाता है तथा मूत्राशय और सफरा का भाग सडकर उनका मार्ग मिलकर एक हो जाता है । ऐसी भयदायक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्थित को बरस दो बरस भोगते हुए रोगी मृत्यु पथ का अनुसरण करता है।

उपाय—अर्बुद का यही उपाय हो सकता है कि उसकी पीडा की शांति का उपाय करता रहे और अर्बुद को मिटा देने की आशा बहुत कम रखनी चाहिये। जिससे देह में शक्ति बनी रहै ऐसा खाने को दे। पाचक तथा पौष्टिक दवा देता रहै। ऐमोनिया, सिनकोना, फासफारिक ऐसिड क्विनाइन कौडलिबर आइल और पेपसीन इत्यादि औषधी का प्रयोग करता रहै। पीडा की शांति तथा निद्रा लाने के लिये नशाकारक दवाओं का प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ती है। अफीम, मौरफिया, भांग अथवा क्लोरेल हाइड्रेट की योग्य मात्रा देना चाहिये। मोरफिया की पिचकारी देना भी उचित है।

टिंकचर हायोसाइमस ६० मिनिम, लाइकर मोरफिया २० मिनिम। कम्पाउन्ड टिंकचर औफ क्लोरोफौर्म ३० मिनिम, टिंकचर औफ इंडियन हैम्प २० मिनिम, गोंद का पानी २ ड्राम, चांवल का पानी १ आउंस। इन सब दवाओं को मिलाकर रात को सोते समय दे, इससे नींद आजायगी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योनि के भीतर बिलेडोना की बत्ती लगावे।

रक्त स्राव रोकने के लिये गैलिक ऐसिड, शूगर-लेड, दालचीनी इत्यादि दबा देनी चाहिये। फिट-करी अथवा गैलिक ऐसिड के पानी की पिचकारी लगाने से भी रुधिर बन्द हो जाता है, दुर्गंधि दूर करने के लिये स्त्री को प्रति दिन स्नान करने की शिक्षा देनी चाहिये तथा योनि में नीचे लिखी हुई दवाओं की पिचकारी लगावे।

कार्बोलिक ऐसिड ३० ग्रेन, क्लोराइड औफ जिंक २० ग्रेन, क्रियासोर १ ड्राम, परमेगेनेट ओफ पुटास ४० ग्रेन।

ऊपर की दवाओं में से कोई सी दवा लेकर उसमें एक पाइन्ट पानी मिलाकर योनि को धोना चाहिये, सहवास का परित्याग करदे। अर्बुद आरम्भ में छोटा हो तो उसको शास्त्र क्रिया से दूर करदे।

गर्भाशय ग्रंथि।

(यूटीराइन ट्यूमर्स)

गर्भाशय के सम्बन्ध में तीन प्रकार की गांठ हुआ करती हैं यथा (१) ग्रंथि, (२) मस्सा, (३) रसौली।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ग्रंथि (फाइब्रोमा) यह सफेद तन्तुओं की एक गांठ होती है जो कड़ी हो जाती है, कभी इसमें मांसमय भाग अधिक होता है। और कभी पार्थिव पदार्थ मिला हुआ होता है। यह गांठ गर्भाशय के बाहर बधकर मोटी हो जाती है अथवा गर्भाशय के भीतर बढ़ती है, विशेष करके तरुण अवस्था पर पहुँचने के पीछे स्त्री के यह गांठ उत्पन्न होती हैं, गांठ छोटी बड़ी सब प्रकार की होती है, सुपारी से लेकर पूर्ण गर्भ के बड़े होने तक बड़ी देखने में आती है। जब यह गांठ गर्भस्थान के भीतर उत्पन्न होती है तब गर्भस्थान बढता चला जाता है एक ही स्त्री के एक की अपेक्षा कई ऐसी गांठ हो जाती हैं, कितनी ही बार गांठ की जड पतली होती है और लटकती रहती है।

लक्षण—जो गाँठ छोटी होती है तो कभी कभी उसके कोई चिन्ह जानने में नहीं आते परन्तु जो बड़ी हो तो बहुधा आर्तव और प्रदर का कारण हो जाती है इसके सिवाय कमर में दर्द होता है, पेडू में बोझ लगता है, एक या दोनों जांघों में चवक और टीस चलते हैं, दस्त की कब्जियत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रहती है, पेशाव बड़ी कठिनता से होता है, अथवा बार बार होता है ।

जब यह गांठ गर्भस्थान के भीतर बढ़ती है तब रक्त स्राव हुए विना नहीं रहता, प्रथम वार रक्तस्राव होने पर स्त्री को ऐसा लगता है कि गर्भस्राव हुआ परन्तु गर्भपात में स्राव के संग प्रसव वेदना होती है और कमल मृदु, स्निग्ध और प्रफुल्लित लगता है तथा इस गांठ के कारण जो स्राव होता है उसमें कमलकंद स्वाभाविक ही कठोर स्थिति में होता है, स्राव वार बार होता है उसमें रुधिर की गांठ देखने में आती हैं ।

चिकित्सा—इस गांठ को काट कर निकालने का काम महा भयंकर है, इस लिये ऐसा कभी न करना चाहिये, तथा औषध द्वारा भी यह गांठ नहीं गलती है इसलिये इसके लक्षणों का इलाज करना ही संतोष जनक है, रक्तस्राव के लिये गैलिक ऐसिड, सलफूरिक ऐसिड, भांग, शुगर लेड आदि उपाय जो पहिले कहे गये हैं वे ही करना चाहिये ।

गर्भाशय अर्श ।

जो गांठ गर्भस्थान के भीतर लंबी पतली जड

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाली लगी हुई होती है और लटकती रहती है उसका मस्सा वा गर्भाशय अर्श कहत हैं यह बेर की बराबर होती है, पर गर्भस्थान से कमल में आती है, अथवा लम्बा होकर योनि में आ जाती है।

लक्षण—बार बार रक्त स्राव होता है कुछ दिन पीछे प्रदर आता है, कभी प्रसव का सा दर्द होने लगता है, कमर में दर्द होता है, पेशाव बार बार आता है, कम उमर वाली स्त्रियों के मस्से हों तो रुधिर अधिक बहता है, परन्तु ५० वर्ष से ऊपर वाली स्त्री के स्राव नहीं होता है।

गर्भस्थान की रसौली।

रसौली नामक ग्रन्थि गर्भस्थान में होती है, वह उसके भीतर अथवा बाहर होती है। इस रसौली के भीतर पानी अथवा तेल के सदृश प्रवाही पदार्थ रहता है कितना ही बार कमल मार्ग में रसौली देखने में आती है, उसका आकार चने से लेकर जामन फल के समान होता है, जब तक रसौली छोटी है तब तक उसका चिन्ह मालूम नहीं होता परंतु जब मोटी हो जाती है तब प्रदाह तथा बहु आर्तव होने लगता है, जो रसौली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कमल के बाहर आगई हो तो उंगली लगाने से मालूम पड़जाती है, यदि गर्भस्थान के भीतर होतो कमल को चौड़ा करने से मालूम होती है।

उपाय–जो रसौली ऐसे स्थान पर हो जहां हाथ पहुँच सकता हो चीरने, काटने आदि उपायों को काम में लावे आवश्यकता मालूम होतो काष्टिक लगाना चाहिये।

गर्भाशय स्थलांतर।

गर्भाशय कितनी ही बार अपनी स्वाभाविक जगह से हटकर नीचे उतर आता है, आगे की तरफ अथवा एक ओर को ढलक जाता है, अथवा बांका हो जाता है।

गर्भाशय भ्रंश।

(प्रोलेप्सस यूटिराई)

योनि में गर्भाशय नीचे उतरता है अथवा नीचे उतर कर योनि द्वार से बाहर आता है इसे गर्भाशय भ्रंश कहते हैं।

कारण–बहुधा ३० या ३५ वर्ष की उम्र के पीछे वाली स्त्रियों के यह व्याधि होजाया करती है, महनत मजूरी करने वाली स्त्रियों के जोर करने के कारण गर्भाशय नीचे उतरता है, जिन स्त्रियों के बालक होजाते हैं तथा वस्ति का भाग विशाल होजाता है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उनको यह व्याधि विशेष करके हो जाया करती है गर्भस्थान का वजन बढ़ जाने से, अथवा उसमें सूजन हो जाने से अथवा गांठ पड़ जाने से अथवा कूंथ मारने से तथा भारी बोझा उठाने से गर्भस्थान नीचे उतरता है। नाजुक और निर्बल स्त्रियों के गर्भस्थान का बन्धन ढीला हो जाने से अथवा योनि के शिथिल हो जाने से गर्भाशय नीचे उतरता है।

लक्षण—गर्भाशय के नीचे उतरने पर स्त्री को कितनी ही तरह के कष्ट भोगने पड़ते हैं. पेड़ू के भीतर बोझ सा भरा हुआ मालूम होता है, कूंथन के समान दर्द होता है,कमर दुखती है, धातु बहती है विशेष करके आर्तव में कोई हानि नहीं पहुँचती दस्त की रुकावट बहुत रहती है, पेशाव बार बार होता है अथवा रुक जाता है; बहुधा जितनी देर तक स्त्री सोती रहती है नीचे जाता हुआ गर्भ स्थान अपने आप भीतर चला जाता है, धीरे २ हाथ के द्वारा भी भीतर चला जाता है, परीक्षा करने से गर्भ स्थान नीचे उतरा हुआ दिखाई देता है और नीचे आया हुआ भाग गर्भाशय ही है, जो इसके साथ कमलमुख हो तो निश्चय जान लेना चाहिये कि गर्भाशय ही है। इसके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिवाय यदि और कोई भाग नीचे उतरा होगा तो उस पर कमल मुख दिखाई देगा। उसमें सलाई डालने से पूरी दिलजमई हो जायगी। कितनो बार गर्भाशय के बाहर रहने पर उसमें रिगड़ लग लग कर चन्दोले पड़ जाते हैं।

उपाय—प्रथम ही गर्भाशय को हाथ से दबाकर ऊपर चढ़ाना चाहिये, जो इस काम में कठिनता पड़े तो स्त्री को सुलाकर घुटने ऊँचे करदे और तेल लगा कर भीतर को प्रवेश करे।

जो बहुत दिन तक बाहर रहने के कारण इन प्रयत्नों से गर्भाशय ऊपर को न चढ़े तो बाहर के भाग को तान कर उस पर राल के लेप का बंधन लगावे, दो तीन दिन तक इस बन्धन के लगाने से उसका आकार कम हो जायगा, फिर दवाने से ऊपर चढ़े बिन न रहेगा। ऊपर चढ़ने के पीछे रोगिणी को कुछ दिन तक बिछौनों में पड़ी रहने देना चाहिये।

गर्भाशय के ऊपर का बोझ और दबाव दूर करने के लिये पेट पर पट्टी और नीचे लंगोट बांधना चाहिये, गर्भाशय का बंधन तथा योनि का भाग ढीला पड़ गया हो तो ठंडे पानी में बैठावे। ग्राही

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

औषधों की पिचकारी लगावे अथवा उननी बत्ती योनि में प्रवेश करे। जो चन्दोले पडगये हों तो कास्टिक लगावे। देह में शक्ति बढाने के लिये टिंकचर औफ स्टील, नाइट्रिक ऐसिड फासफौरिक ऐसिड आदि दवाइयां दे। गर्भाशय को योनि के भीतर रहने देने को पैसारी का प्रयोग करे जिससे गर्भाशय नीचे न उतरने पावे। इन उपायों के करते रहने से फिर गर्भाशय नीचे न उतरेगा, यदि इन उपायों से लाभ न हो तो किसी सुयोग्य डाक्टर से इलाज करावे।

गर्भाशय का बांकपन

(यूटीराइन फ्लैकशन)

गर्भस्थान आगे वा पीछे की तरफ के भाग में बांका होकर उलट जाता है, कमलकंद स्वाभाविक स्थिति में रहता है पर उसके ऊपर का भाग उलट जाता है इसी को गर्भाशय वक्र कहते हैं।

जब ऊपर का भाग पीछे को उलटता है तब उसे पश्चात् वक्र कहते हैं और जब आगे को उलटता है तब उसे अग्र वक्र कहते हैं।

पश्चात्वक्र—कारी लडकियों के तो यह कदाचित ही होता है, परन्तु मध्यम वय वाली तथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बालक वाली स्त्री के यह रोग विशेषता से होता है। कारण–गर्भस्थान की ऊपर वाली भाग ग्रंथी वा सूजन के कारण भारी होने से उलट जाता है अथवा दूसरी बाहर वाली गांठ तथा मैल आदि के बोझ से वा बारबार गर्भ रहने से, गर्भाशय के नरम पड जाने से अत्यन्त किंचने से बोझ उठाने से गर्भाशय बांका हो जाता है, मूत्रावरोध से मूत्राशय के फूल उठने पर गर्भाशय पीछे को बांका हो जाता है।

लक्षण–थोडी बकृता तो मालूम ही नहीं होती पर जब गर्भस्थान उलट जाता है तो लक्षण छिपे भी नहीं रहते।

बांके हुए स्थानों में रक्त का संचार कम होने से वह भाग पतला पड जाता है इससे कमर में फटने की सी पीडा होती है। जंघा और पेडुओं में चबका चलता है, दस्त की हाजत होने पर भी दस्त के समय बडा दर्द होता है। मैथुन में कष्ट होता है, गर्भ नहीं रहता आर्तव कठिनता से आता है, थोडा वहुत प्रदर भी बहता है, मन्दाग्नि ग्लानि आदि द्वारा स्त्री अप्रसन्न रहती है।

जांच करने पर योनि में कमल मामूली स्थिति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में होता है, पर पीछे की तरफ उंगली से एक गांठ सी लगती है उसके छूने में बडा दर्द होता है। इस गांठ को गर्भाशय का ऊपर वाला उलटा हुआ भाग समझो, विशेष दिल जमई के लिये उसको दावकर गर्भाशय में सलाई डालने से वह सीधी रीति पर प्रवेश नहीं करती है, पर उलटी फेरने से प्रवेश करती है, प्रवेश करके सलाई को सीधी करने से गर्भाशय सीधा होकर ठीक स्थिति में आ जाता है और गुदा की तरफ वाली गांठ नहीं मालूम होगी, सलाई निकालने पर पहली सी अवस्था हो जायगी।

अग्रवक्रता—इसमें इतना अंतर है कि गांठ कमल के अग्रभाग में मालूम होती है, तथा दस्त में गडवड न होते हुए पेशाव की हाजत हुआ करती है, सलाई डालने से ठीक पता चल जाता है अग्रवक्रता की अपेक्षा पश्चात् बक्रता विशेष देखने में आती है।

चिकित्सा—वक्रता यदि थोडे दिन की हो तो सलाई डालकर गर्भाशय को सीधा करे और स्त्री को कुछ दिन तक बिस्तर पर पड़ी रहने दे, इससे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कभी कभी आराम हो जाता है, विशेष करके गर्भाशय तुरंत ही फिर कर बांका हो जाता है, इस लिये गर्भाशय में दो सवा दो इन्च लम्बी सलाई (स्टेम) कई सप्ताह तक प्रविष्ट रक्खे और कुछ दिवस विस्तर पर पड़ी रहने दे, जो भीतर के भाग में पुरानी सूजन हो तो यह सलाई सहन न होगी, इस लिये प्रथम कमलमार्ग में वक्रता तर्क छेद करके थोड़े थोड़े २ दिन तक सलाई लगी रहने दे, वक्रता बहुत दिन की होजाने पर उलटा हुआ भाग इधर उधर चिपट जाता है, और सलाई से सीधा नहीं हो सकता है।

गर्भाशय विवृत (यूटीराइन वर्जन)

कितनी ही बार गर्भाशय आगे व पीछे ढलक जाता है, पीछे की ओर ढलने पर ऊपर वाला भाग गुदा पर पड़ता है और कमल मूत्राशय की तरफ झुकता है. इसे पश्चात् विवृत कहते हैं, जब आगे को ढलकता है तो इसकी स्थिति विपरीत होजाती है, अर्थात गर्भाशय का ऊपर वाला भाग मूत्राशय पर पड़ता है और कमल गुदा की ओर फिरता है, इसे पूर्व विवृत कहते हैं।

पूर्व विवृत की अपेक्षा पश्चात विवृत अधिक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देखने में आता है, विशेष करके पश्चात् विवृत गर्भाधान से पहिले दो तीन महिने में ही होजाता है, इसके कारण वक्रता के कारणों से मिलते झुलते होते हैं।

लक्षण—कमर में दर्द, थोड़ा घना प्रदरका स्राव मल मूत्र के होने में कठिनता होती है, आर्तव में कुछ गड़वड़ नहीं होती, गर्भ भी रह जाता है, पर गर्भ रहने के पीछे जो विवृत स्थिति ठिकाने न आवे तो गर्भपात होने का कारण होजाता है।

उपाय—इस रोग में स्त्री अधिक निर्बल होती है। इस लिये उसे पौष्टिक औषध और पथ्य देवे, गर्भाशय सो सीधा करनेके लिये एक योग्य प्रकार की रबड़ की थैली चढ़ावे, प्रथम आगे के भाग को दवा कर अथवा सलाई से गर्भाशय को सीधा करके फिर उस थैली को चढावें।

स्त्री अंड की व्याधि [ओवेरिन डिजीज

स्त्री अंड का वरम तीक्ष्ण और जीर्ण दो प्रकार का होता है तीक्ष्ण वरम की अपेक्षा जीर्ण वरम कम देखने मे आता है तीक्ष्ण वरम—पेडू पर चोट से, कमल में काष्टिक लगाने से तथा कमल और गर्भाशय पर शस्त्र क्रिया करने से, सर्दी से आर्तव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के एकाएक बन्द होजाने व अन्य कारणों से यह रोग होता है।

लक्षण-पेडू में दर्द होता है, तथा जिस तरफ स्त्री अंड का वरम होता है उसमें चवका चलता है, दावने से दुख होता है, पेशाब बार २ लाल रंग का उतरता है दस्त में कष्ट होता है, ज्वर आता है, उबकाई आती हैं, पेट में गुड़गुड़ होती है, योनि में उङ्गली डालने से वरम वाली तरफ दर्द होता है, एक चलती हुई गांठ मालूम होती है, पेडू पर हाथ लगाने से गांठ मालूम होती है और उसमें बहुत दर्द होता है, कभी यह वरम पक कर फूट जाता है, बांये स्त्री अंड के वरम की अपेक्षा दाहिने ओर विशेष देखने में आता है।

उपाय-पेडू अथवा कमल के ऊपर थोड़ी जोक लगावे, दोनों समय गरम पानी में बैठावे, अफीम तथा बेलेडोना की बत्ती प्रवेश करे, पेडू पर सेक करे, अलसी की गरम पुलटिस लगावे।

जीर्ण वरम-यह बरम बहुत बार देखने में आता है, ऋतुकाल में ओवरी में रुधिर भरजाता है और किसी कारण से उसमें वृद्धि होजाय अथवा रुधिर बहुत काल तक भरा रहे तो वरम होजाता है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋतुकाल में सर्दी लगने से, अति मैथुन से, गर्भाशय में काष्टिक आदि लगने से अथवा सलाई डालने से और गर्मी से वरम होजाया करता है, यह जीर्ण वरम ओवरी के एक अथवा दोनों ओर साथ होता है।

लक्षण—पेडू और कमर में मंदा मंदा दर्द तथा एक व दोनों जांघों में दर्द रहता है, आर्तव थोड़ा थोड़ा कष्ट से उतरता है, अंगडाई उबकाई तथा अजीर्ण होता है। हिजटीरिया के लक्षण उपस्थित होते हैं, पेशाब बार बार आता है, कभी प्रदर भी दिखाई देता है, सहवास में कष्ट होता है, योनि में उंगली डालने से एक या दोनों ओर वरम वाली गांठ सूजा हुई लगती है तथा दाबने से दर्द होता है।

उपाय—इस रोगवाली स्त्री प्रायः सुकुमार प्रकृति की होती है, इस लिये शक्ति वर्द्धक पथ्य दे; उस के पेट और पेडू पर सरदी से बचाने के लिये गरम फ्लानेल (फ्लैनल) बंधा रक्खे, सप्ताह में एक दो बार गरम पानी में बैठावे, ठंडे पानी से स्नान न करने दे। जहां तक हो सके सहवास से बचावे। इसको क्लोरेट ओफ पुटास २० ग्रेन एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आंउस पानी में मिलाकर दिन में चार बार दे। यदि इससे लाभ न हो तो आयोडाइड पुटास ५ ग्रे॰ दिन में तीन बार दे, अधिक दर्द होता हो तो उसके साथ ५ मिनट टिंकचर ऐकोनाइट मिलाता रहे, कौडलिवर औइल अगर पच जाय तो अधिक लाभ कारक है योनि में अयोडाइड औफ लैड तथा बेलेडोना की बत्ती लगावे, कमर दुखती हो तो उस पर बेलेडोना का पलस्तर लगावे पेडू के ऊपर स्त्री अंडकी जगह ब्लिस्टर लगावे।

स्त्री अड का जलंधर—स्त्री की ओवरी के भीतर कोई तरल पदार्थ इकट्ठा हो जाता है, उसके कारण जलंधर के सदृश पेट बडा हो जाता हैं, ऐसा कह सकते हैं कि ओवरी के संबन्ध में यह एक प्रकार की रसौली होती है, जो यह रसौली एक ही हो तो बडी होती है और जो बहुत हों तो एक बडी और बाकी छोटी होती हैं ये जुदी जुदी होती हैं अथवा एकके भीतर एक होती है, इसमें पानी के समान तरल पदार्थ भरा रहता है। इस पानी में आव्यूमिन होता है। बहुत रसौलियों के भीतर विशेष करके गाढा, चिकना, काले रंग का स्निग्ध तरल पदार्थ होता-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है, यह रोग २० से ४० वरस वाली स्त्रियों के विशेष करके होता है, यह रोग विवाहित और अविवाहिता दोनों के होता है।

लक्षण-प्रारंभ में कोई चिन्ह मालूम नहीं होता जब रसौली बढती हुई पेडू में से पेट में आती है तब स्त्रीका पेट बडा लगने लगता है। और ऐसी भूल होने लगती है, कि पेट गर्भ से वा बादी से वा मेदोबृद्धि से बडा हो रहा है। पेडू में रसौली हो तब दस्त अथवा पेशाव कभी कम और कभी अधिक होता है।

कमर में दर्द और चबका चलता है, पर यह बात स्त्रियों के बहुतसी बीमारियों में हुआ करती है इसलिये इन पर विशेष ध्यान देने की कोई बात नहीं। कभी आर्तव बराबर आता है और कभी बिलकुल नहीं आता, जब रसौली से पेट बहुत मोटा होजाता है, तब थोडा बहुत दर्द होता है। स्त्री की शक्ति कम होजाती है, तथा शरीर में दुबलापन दिखाई देता है, अजीर्ण और मलावरोध होता है, पेशाव बहुत बार करना पढता है। थोडा बहुत श्वास चढता है, जलंधर के सदृश पेट मोटा हो जाता है, एक ओर ठोकने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से पेट के सामने की ओर प्रत्याघात लगता है, ठोकने से चारों ओर पोला शब्द होता है। कुछ समय पीछे पांवों पर सूजन आती है, और इससे निर्बलता, श्वास, मन्दाग्नि, निद्रानाश इत्यादि चिह्न होकर स्त्री के जीवन पर धक्का पहुँचता है।

ओवरी के जलंधर की परीक्षा अवश्य करना चाहिये साधारण जलंधर से तथा पेट की कितनी ही अन्य व्याधियों से उसको जांच करने पर उसका उपाय हो सकता है।

पेडू के भीतर हो तो यह रसौली की गांठ योनि के भीतर परीक्षा करने से एक तरफ लगती है यह बढ़कर नाभि तक आवे तब तक पेडू का सब भाग तथा विशेष करके दोनों ओर भरे हुए लगते हैं और किस तरह की गांठ है यह कहने में नहीं आ सकता है।

नीचे लिखे हुए लक्षणों से ओवरी के जलंधर को पहंचानना चाहिये। इस रोग के कारण पेट भरा रहता है, विशेषतया पेट एक सा गोलाकार होता है, जो रसौली बहुत हों तो किसी जगह पेट ऊंचा नीचा मालूम होता है, स्त्री खड़ी हो चित सोती हो तो गांठ आगे की तरफ मालूम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होता है, पेट के ऊपर काली नसों की रेखाऐं दिखाई देती है, पेट को दवाने से कड़ा मालूम होता है, एक ही रसौली हो तो प्रत्याघात स्पष्ट दीखता है, बहुत रसौली हों तो कम प्रकट होता है, विशेष करके पसवाड़ों प्रवाही का भराव नहीं लगता है, परंतु यदि रसौली बहुत मोटी हो गई हो तथा उसके साथ पेट का थोड़ा जलंधर हो तो पसवाड़ों में प्रवाही का भराव मालूम होता है, भीतर का पदार्थ अत्यन्त चिकना हो अथवा रसौली का पर्दा बहुत मोटा हो तो प्रत्याघात ओछा मालूम होता है, पेट पर ठोकने से ठोस शब्द होता है, पर कहीं एकादि आंत उसके ऊपर आ गई हो अथवा उस के फोड़ने के पीछे हवा भीतर घुस गई हो तो केवल अपवाद की तरह पोला शब्द आता है, ठोस शब्द चारों ओर से आता है और स्त्री के सोने बैठने से उसमें कुछ फेरफार नहीं होता है।

चिकित्सा—ओवरी का जलंधर दवाओं से नहीं मिटता है। जलंधर साधारण हो और तन्दुरुस्ती में कोई विकार न हो तो इलाज की आवश्यकता नहीं, परन्तु उसके बोझ के कारण कुछ कठिनता पड़ती हो, श्वास लेने में हानि हो तथा तन्दुरुस्ती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में बिगाड़ हो तो उसके दो ही उपाय हैं, (१) उसे फोड़ना, (२) पेट में चीरा लगाकर उसे निकाल देना।

जलंधर के फोड़ने का काम बहुत सहज है यह काम किसी सुयोग्य डाक्टर से कराना चाहिये, आयोडाइड पुटास बहुत दिन तक देता रहे, फोड़ने के पीछे बरस २ बरस में फिर भर जाती है, इसके फिर न भरने देने के दो उपाय हैं। एक तो यह है कि फोड़ने की जगह नली लगी रक्खे जिसमें होकर पानी निकलता रहे। दूसरा उपाय यह है कि फोड़ने के पीछे तुर्त भीतर आयोडीन की पिचकारी मारनी चाहिये, पर इन दोनों उपायों से पेट पर वरम आ जाने का डर रहता है और ये दोनों ही एक रसौली में लागू पड़ते हैं, रसौली बहुत हो तो निकम्मे होते हैं।

पेट चीर कर ओवरी की रसौली निकाल लेने से फिर नहीं होती है, परन्तु इसे करने में जोखम अधिक है। तो भी इस जलंधर से शरीर क्षीण होता चला जाता है। और फोड़ने से भी लाभ नहीं होता इस लिये काटकर निकाल देने के सिवाय दूसरा उपाय नहीं है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रसौली काटने व पेट चीरने के काम किसी विशेष शस्त्र कुशल डाक्टर से कराने चाहिये।

कामाभाव।

स्त्रियों के काम का अभाव कितने ही कारणों से होता है [यथा-शरीर की दुर्बलता, रजहीनता, दुश्चिन्ता, अतिशय शारीरिक परिश्रम, योनि प्राचीर की शिथिलता, जरायु और योनि का प्रोलैप्स, पुराना ल्यूकोरिया, आक्षेपयुक्त कष्टरज (स्पैस मौडिक डिसमैनोरिया)।

चिकित्सा—जो प्रथम से ही कामाभाव हो तो चिकित्सा का कुछ फल नहीं होता। अन्य कारणों में उन कारणों का उपाय करे जिससे यह रोग उत्पन्न हुआ है, शरीर की दुर्बलता में बलवर्द्धक औषध और पथ्य दे। कौडलिवर आइल, आयरन, नक्स वोमिका आदि उपकारी है जरायु और योनि की पीड़ा में उसका प्रतीकार करे।

❀ इति ❀

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

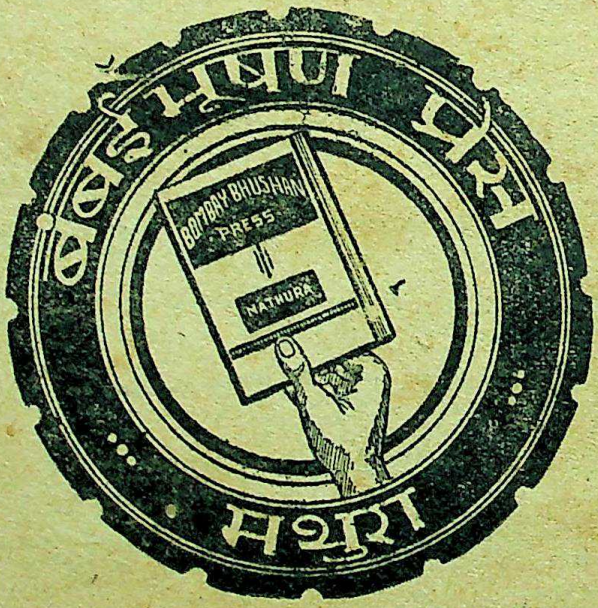

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नूतन अमृत सागर

यह पुस्तक बड़े ही परिश्रम से तयार की गई है। अनेक असाध्य रोगों के लक्षण, उनके उपचार एवं औषधि का अनूठा संग्रह है। मूल्य ८)

वृहद् बूँटी प्रचार वैद्यक

अनेक जड़ी बूँटियों के गुण अवगुण आदि का वर्णन सचित्र किया जाता है।

मूल्य २)

अर्क प्रकाश

इसमें विविध प्रकार के अर्कों द्वारा रोगों के इलाज का वर्णन करते हैं। मूल्य २)

सचित्र सुखसागर भाषा

यह पुस्तक अत्यन्त सरल भाषा में छापी गई है। कई चित्र दिये गये हैं। पुस्तक सब प्रकार से संग्रह करने योग्य है।

मूल्य १२)

पुस्तक मिलने का पता-

बम्बई भूषण प्रेस.

मथुरा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh